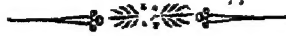
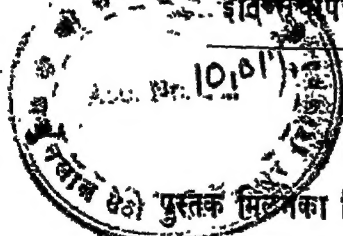
श्रीः ।

अथ ब्रजविलासकी लीलाओंका सूचीपत्र.



इति सूचीपत्र ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा.	पं. श्रीधर शिवलाल ज्ञानसागर प्रेस बम्बई.

श्रीनिकुंजविहारिणेनमः

❋ अथ व्रजविलास । ❋

सोरठा–होत गुणनकी खान, जाके गुण उर गनतहीं ॥
द्रवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवंत हरि ॥ १ ॥
मिटत ताप[1]त्रय फांसि, जासु नाम मुखसों कहत ॥
वन्दौं सो शुभराशि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमल दलनैन, गोपवृन्द[2] मंडन शुभग ॥
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्बर वर वेणुधर ॥ ३ ॥
वन्दौं जगत अधार, कृष्णाग्रज बलदेवपद ॥
अभिमत[3] फल दातार, नीलाम्बररेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कृपानिधान, वन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु वचन जलयान[4], नर चढ़ि भव[5]सागर तरहिं ॥ ५ ॥
वंदौं संत कृपाल, पद सरोज[6]रज राखि शिर ॥
जग हितरत शुभमाल, जिन निजगुण हरि वशकरे ॥ ६ ॥
पुनि वंदौं व्रजदेश, परमरम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ विहारथल ॥ ७ ॥

प्रथम कृष्णको तात मनाऊं । श्रीवसुदेव चरण शिरनाऊं ॥
बहुरि देवकी पद जलजाता । वंदन करौं कृष्णकी माता ॥
इनते और कौन बड़भागी । ब्रह्म धरयो नरतनु जिनलागी ॥
वंदौं नंद महरके चरणा । सहित यशोमतिमंगल करणा ॥

---

१ अध्यात्म । अधिभूत । अधिदैव । २ समूह । ३ वांछित । ४ नौका ।
५ संसारसागर । ६ कमल ।

जिनकी महिमा भारय बड़ाई । निगमागमे शिव शारद गाई ॥
वंदों रोहिणि पद जलजाता । कृष्णाग्रज बलदेवकि माता ॥
कीरतियुत वृषभानु गोपवर । वंदौं चरणकमलरज शिरधर ॥
तात मात राधा रानीके । त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके ॥
कृष्ण कमल दृगकी कुमलाके । कलुष विभंजन सब विमलाके ॥
वंदौं श्रीराधापद अम्बुज । जिनके ध्यान मिटत भव भैरुज ॥
होत कृष्ण सहजहि वश ताके । प्रेमसहित गुण गावत जाके ॥
वन्दौं सो वृषभानु दुलारी । कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी ॥

दोहा–राधाकृष्ण पदाम्बुजन, वन्दौं महि शिर टेक ॥
ब्रजविलास हित दोयतन, प्रगट कियेहैं एक ॥
सो०–वन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनंदघन ॥
दोऊ चंद्रचकोर, प्रीति रीति रसवश सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला । जिनके सँग विचरहिं नँदलाला ॥
गाय बच्छ बालक ब्रजवासी । जिनके सखा कृष्ण अविनासी ॥
और जात जो ब्रजहि निवासी । वंदौं सकल सुकृतकी रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर । गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुनासरि पर्व पुनीता । जासु दरश नाहि यमपुर भीता ॥
पर्वत वापी कूप तडागा । श्रीवृंदावनादि वन बागा ॥
खग मृग जलचर जीव विभागा । वंदौं सकल सहित अनुरागा ॥
वंदौं गिरि गोवर्द्धन देवा । अपर देव तिन सम नहि केवा ॥
सुरपति भेटि जाहि हरिपूजा । आनदेव तिन समको दूजा ॥
अति रमणीय रेत यमुना तट । उपवन अमित सुभग वंशीवट ॥
जहँ जहँ श्रीहरि धेनु चराई । सुन्दर श्यामल कुँवर कन्हाई ॥
रासविलास जहां हरि कीन्हों । भक्तवच्छल भक्तन सुख दीन्हों ॥

दोहा–जड़चेतन ब्रजदेशके, तृण तरु महिरज जेत ॥
वंदौं कीट पतंग सब, पुनि पुनि प्रीति समेत ॥

---

१ वेद पुराण । २ पृथ्वी । ३ बावडी । ४ तलाव । ५ पखेरू । ६ इन्द्र । ७ तिनका । ८ पृथ्वी ।

सो०—ब्रजजनपद शिरराख, विनय करौं करजोरि पुनि ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिये जानजन ॥
ब्रजविलास कछु कहौं बखानी । करन पुनीत जान निजवानी ॥
सो तबलों नाहिं उरमें आवै । जबलग तुह्मरी कृपा न पावै ॥
मैं मन वच क्रम तुह्मरो दासा । ताते पुरवहु मोरी आसा ॥
यद्यपि मति इतनी मोहि नाहीं । करौं उक्ति कछु निज तेहि माहीं ॥
तहां एक मैं कियो विचारा । या विधि बल अपने उर धारा ॥
श्रीशुकदेव कही हरिलीला । सुनी परिक्षित सब गुणशीला ॥
सूरदास सोइ हरि रससागर । गायो बहुविधि परम उजागर ॥
फैल रह्यो सो त्रिभुवन माहीं । गावत सुनत सुयश हरषाहीं ॥
विविध प्रकार चरित हरिकेरे । तामहि वरणे सूर घनेरे ॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई । मेरे मन अतिशय करि भाई ॥
सो तो कथा अमित विस्तारा । मोपै पायो जात न पारा ॥
तामें ब्रजविलास सुखदाई । सो कछु कहिहौं कर चौपाई ॥
दोहा—भाषाकी भाषा करौं, क्षमियो कवि अपराध ॥
जिहि तिहिं वधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुतिसाध ॥
सो०—हरिपद प्रीति न होय, विन हरि गुण गाये सुने ॥
भवते छुटत न कोय, विना प्रीति हरिपद भये ॥
ताते मैं सन्तन शिरनाई । गावौं हरियश जन सुखदाई ॥
जो ब्रजमें हरि कियो विलासा । सो कछु कहिहौं सहित हुलासा ॥
यामें इतनी + कथा बखानौं । ताकी सूचनका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी व्याही । चल्यौ कंस पहुँचावन ताही ॥
तहां भई नभवाणी वाही । सुनिके कंस डर्‍यो पुनि ताही ॥
अठयों गर्भ होयगो याके । तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तबै देवकी हतन विचार्‍यो । करि विनती वसुदेव उबार्‍यो ॥

---

१ कविता । + यहांसे श्रीव्रजवासीदासजी ब्रजविलासको कथोंकी सूचना-करतेहैं । २ आकाशवाणी ।

सब सुत ताहि देन को भाखे । नृप तब दुहुँन बन्दिमें राखे ॥
षट् बालक तिनके नृप मारे । पातक भये भूमिपर भारे ॥
दुखित गई सो हरिके पासा । हरि ताको जिमि दई दिलासा ॥
पुनि संकर्षण गर्भहि आये । तिनको बहुरि रोहिणी जाये ॥
सो सब कहिहौं मति अनुमाना । जैसी भांतन सुन्यो पुराना ॥

दोहा–पुनि भगवान अनादि अज, ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
प्रगट भये वसुदेव गृह, निज इच्छा सुखकन्द ॥

सो०–तात मात सुखदैन, सुंदर रूप दिखायकै ॥
कियो परम उरचैन, दूर किये दुखदंद्व सब ॥

तात मात पुनि जिमि समझाये । लै गोकुल वसुदेव सिधाये ॥
यशुदा गोद राखि घनश्यामहि । कन्या तासु गये लै धामहि ॥
कंसासुर सो कन्या पाई । सो जैसे आकाश सिधाई ॥
तासु वचन सुनि अति भयमाना । बालकहतन मंत्र तब ठाना ॥
बजे नन्दघर अनँद बधाये । ब्रज युवतिन मिल मंगल गाये ॥
भयो नन्दघर अति उत्साहू । ब्रजवासिनको परम उछाहू ॥
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं । जितनो निजमति को बल पैहौं ॥
बहुरि कंस पूतना पठाई । सो जैसे हरिके ढिग आई ॥
ताहि मारि जननीगति दीन्ही । प्राण पान करि पावन कीन्ही ॥
कागासुर पुनि जाविधि आयो । ताको पुनि हरि मारि बहायो ॥
बहुन्यो शकट चरणते डान्यो । तृणावर्तको जाविधि मान्यो ॥
अन्न पराशनादि जे कर्मा । किये नंद जिमि निजकुलधर्मा ॥

दो०–बालचरित्र[1] पवित्र[2] पुनि, जिमि कीने अभिराम ॥
जानु[3] पाणि चलि सुखदियो, तात मातको श्याम ॥

सो०–ब्रज जनके मनमोद, चले बहुरि पाँयन कछुक ॥
कीने बालविनोद, नन्द यशोमतिके अजिर[4] ॥

गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे । पुनि सब ब्रजवासी अभिलाषे ॥

---
१ माता । २ पवित्र । ३ घुटरुअन । ४ आंगन ।

पुनि बालनसँग खेलन लागे । बालखेल लीला अनुरागे ॥
विषपाक जैसे छुइ लीनो । चन्द्राहेतु बहुरि हठ कीनो ॥
कनछेदन लीला सुखदाई । कहिहैं सब आनन्द बधाई ॥
पुनि हरि खेलत माटी खाई । यशुमति लै सांटी उठिधाई ॥
माता आगे मुख जिमि बायो । ताही में त्रिभुवन दिखरायो ॥
शालग्राम मेलि मुख लीन्हों । नन्दहि पूजामें सुख दीन्हों ॥
अन्हवावनहित जिमि मचलाये । बहुत भांति यशुमति फुसलाये ॥
ग्वालन संग बहुरि अनुरागे । माखन चोरीके रस पागे ॥
बहुरों माता क्रोध उपायो । भक्तिहेतु दावरी बँधायो ॥
यमलाअर्जुन वृक्ष ढहाये । धनद सुतनके पाप नशाये ॥
पुनि वनगोचारन मन आन्यो । ग्वालन संग जान हठ ठान्यो ॥

दो०—बहुरि जाय वनमें हन्यो, वत्सासुर नँदनन्द ॥
ग्वाल संग आनँद सहित, घर आये सुखकन्द ॥

सो०—सो करिकै विस्तार, प्रेम सहित सब वरणिहौं ॥
निज मतिके अनुसार, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ॥

गोदोहन जैसे पुनि कीनो । तात मात ब्रजजन सुख दीनो ॥
मोती बये नन्दके धामैं । सुर नर लखि चकृत भये जामैं ॥
बहुरि जाय वन नन्दकुमारा । बका असुरको वदन विदारा ॥
बहुरों बालचरित चित दीने । भौंरा चकई खेलन लीने ॥
श्रीराधा सों प्रीति बढाई । कीने चरित ललित सुखदाई ॥
अघा असुर मान्यो पुनि जाई । ग्वालन संग छाक वन खाई ॥
भयो मोह जिमि विधिके मनमें । बालक वत्स हरें तिन वनमें ॥
तिनको रूप आप प्रभु कीनो । ब्रजके वासिनको सुख दीनो ॥
सो सब कहिहौं कर विस्तारा । अघनाशन प्रभु चरित उदारा ॥
श्री वृषभानु लली पुनि आई । जैसे हरिसों गाय दुहाई ॥
कहिहौं सो रसकथा सुहाई । अति विचित्र जनमन सुखदाई ॥
बहुरो धेनुकको वध कीनो । विष जलते ग्वालन रखलीनो ॥

---

१ कर्णछेदन । २ कुबेर । ३ ब्रह्मा । पाप ।

दो०-पुनि नाथ्यो काली उरग, जलमें पैठि मुरारि ॥
यमुनाजल निर्मल कियो, ब्रजते दियो निकारि ॥
सो०-कियो दावानल पान, राखिलिये ब्रज लोग सब ॥
जिनके कृपानिधान, सदा भक्ति संकटहरण ॥

बहुरि मलंब असुर ब्रज आयो । खेलतमें हरि ताहि नशायो ॥
पनघट यमुनातट पुनि जाई । गोपिनसों रसकियो कन्हाई ॥
चीरहरण लीला पुनि कीनी । कहिहौं सकल प्रेम रसभीनी ॥
पुनि वृन्दावनमें सुखशीला । ग्वालनसंग करी जो लीला ॥
वृन्दावनकी महत बडाई । श्रीमुख श्रीबलजू सों गाई ॥
ऋषिपत्निनसो भोजन लीनो । भक्ति दान तिनको प्रभु दीनो ॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरिराई । ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई ॥
सुरपति कोप कियो यह जानी । बरष्यो मलय कालको पानी ॥
तब प्रभु गिरिकरधरि ब्रजराख्यो। जै जै सब ब्रजवासिन भाख्यो ॥
सो सब अनुपम कथा सुहाई । कृष्णकृपाते कहिहौं गाई ॥
नन्दहि पकरि वरुणके दासा । जिमि लै गये वरुणके पासा ॥
लाये श्याम तहां ते जाई । ब्रजमें भइ आनन्द बधाई ॥

दोहा-बहुरों पुर वैकुंठजो, अति पुनीत निजधाम ॥
ब्रजवासिनको करि कृपा, दिखरायो घनश्याम ॥
सो०-सो सब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम ॥
कहिहौं मति अनुरूप, सन्तजनन मन भावनी ॥

पुनि जो करी श्याम सुखशीला । अति अद्भुत ब्रजमें रसलीला ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी । और सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
तिनसों मिल श्रीकुंजविहारी । रस शृंगार लीला विस्तारी ॥
आनँदमयी सकल सुखकारी । गाय तरत भव सब नर नारी ॥
जिमि गोपिन हरिसो मन लायो । प्रेम पंथ दृढकरि दिखरायो ॥
गोरस लै निकसीं ब्रजनारी । जिमि दधि दान लिये बनवारी ॥

१ सर्प । २ माथुरद्विजनकीस्त्री । गोवर्द्धन ।

भई प्रेम उन्मत्त गुवारी । लोक लाज तनु दशा विसारी ॥
बहुरि चरित्र कुँवरि राधाके । परम पवित्र हरण बाधाके ॥
जैसे मिली श्याम सों जाई । बहुरौं जैसी प्रीति दुराई ॥
पुनि संकेत चरित्र विविधवर । किये प्रिया प्रीतम अतिसुन्दर ॥
गर्व विरह अभिलाष परस्पर । अति रहस्य लीला सुंदरवर ॥
कहिहौं सकल कथा सुखदाई । भक्ति रसज्ञ[1] के मन भाई ॥

दोहा–देखि मुकुर[2]में लाडिली, पुनि जैसो निजरूप ॥
विवश भई सो गायहौं, लीला परम अनूप ॥

सो०–पुनि नैनन अनुराग, अरु मुरलीकी प्रियकथा ॥
कहिहौं सहित विभाग, प्रेम सुधारससों भरी ॥

बहुरौं शरदरैनि अति पावन । श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तहाँ श्याम बाँसुरी बजाई । घर घर ते ब्रज नारि बुलाई ॥
कियो रास रस रसिक बिहारी । भई प्रेम गर्वित तहँ नारी ॥
अन्तर्ध्यान चरित तब कीनो । गर्व[3] गोपिकनको हरिलीनो ॥
कियो महा मंगल पुनि रासा । बाढ्यो परमानन्द हुलासा ॥
पुनि जलकेलि[4] करी मनभावन । कहिहौं चरित सकल अतिपावन ॥
मान[5] चरित लीला सुखदाई । करी बहुरि जिमि कुँवर कन्हाई ॥
विस्तर सहित कहौं सो वरनी । भरी प्रेमरस आनँद करनी ॥
बहुरौं जाय हिंडोला झूले । भये सकल गोपिन अनुकूले ॥
ऋतु बसंत फागुन जब आयो । कियो फाग रँग सब मन भायो ॥
सो रसकथा सकल सुखदानी । मति समान सब कहौं बखानी ॥
पुनि विद्याधर[6] शाप नशायो । अजगर तनु ते ताहि छुड़ायो ॥

दो०–शंखचूड मारयो बहुरि, अधम निशाचर नीच ॥
पुनि मारयो वृषभा असुर, हरि ब्रजवासिन बीच ॥

सो०–वध्यो बहुरि गोपाल, केसी व्योमा असुर जिमि ॥
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब ॥

---

१ भक्तिरसक जाननेवारे । २ दर्पण । ३ अभिमान । ४ जलविहार ।
५ मानलीला । ६ सुदर्शनविद्याधर ।

बहुरि आय नारद यश गायो । सुनिके श्याम बहुत सुख पायो ॥
तबहि कंस अक्रूर पठायो । लैन कृष्ण को सो ब्रज आयो ॥
भये सुनत ब्रज लोग उदासी । मधुपुरि चले बहुरि सुखरासी ॥
जब अक्रूर हृदय दुख पायो । तब हरि जलमें दरश दिखायो ॥
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई । सो सब चरित कहौं सुखदाई ॥
गये बहुरि मथुरा[1] रजधानी । मार्‍यो प्रथम रजक[2] अभिमानी ॥
बसन लुटाय सखन पहिराये । बहुरि सुदामाके घर आये ॥
कुबजाते चन्दन हरि लीन्हों । ताको रूप अनूपम दीन्हों ॥
तोर्‍यो धनुष असुर बहु मारे । द्विरदजीति[3] पुनि दंत उखारे ॥
भिरे बहुरि मल्लन सों जाई । कियो युद्ध तिनसों दोउ भाई ॥
जीति मल्ल सब असुर संहारे । डर्‍यो कंस लखि अति बलभारे ॥
गये नृपति पहँ तब दोउ भाई । दियो मंचते भूँमि गिराई ॥

दो०—मारि कंस पुनि केश धरि, दियो यमुनजल डारि ॥
उग्रसेन राजा कियो, चमर छत्र शिर ढारि ॥
सो०—बहुरि दियो सुख जाय, बन्दि काटि पितु मातकी ॥
सुंदर दरश दिखाय, भयो तहां मंगल परम ॥

कहिहौं सकल चरित विस्तारी । भवभयभंजन मंगलकारी ॥
करि मधुपुरिके लोग सनाथा । कुबिजासदन बसे ब्रजनाथा ॥
नंद विदा करि ब्रजहि पठाये । बिछुरत ब्रजबासिन दुखपाये ॥
हरितजि नंद आये ब्रज जबहीं । भई यशोदा व्याकुल तबहीं ॥
गोपी सुनि हित कुबिजा हरिको । कियो परेखो अति गिरिवरको ॥
भई विरहवश सब ब्रजबाला । कहिहौं सो सब प्रेम विशाला ॥
पुनि कुल रीति जानि बसुदेवू । हरि हलधरको कियो जनेवू ॥
विद्या निधि पुनि जानतराई । विद्या पढन लगे दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरुके कीन्हे । मरे पुत्र प्रभु तिनके दीन्हे ॥
ज्ञानगर्व उद्धव मन जानी । पठये ब्रजहि श्याम सुखकानी ॥

१ मथुरा । २ धोबी । ३ कुवलयापीडहाथी । ४ नांघ्यो । ५ पृथ्वी ।
६ बुद्धिया । ७ संसारभय । ८ कुब्जाके घरमें ।

सो उद्धव गोपी सम्वादा । प्रेम भक्ति रसकी मर्य्यादा ॥
कहौं सु कथा विचित्र सुहाई । भक्त जननको अति सुखदाई ॥

दो०—पुनि उद्धव जैसे गये, प्रेमभक्तिको पाय ॥
व्रजवासिनकी सब कथा, कही श्यामसों जाय ॥

सो०—व्रजहिं रहे व्रजराज, व्रजवासिनके प्रेमवश ॥
किये सुरनके काज, धारि चतुर्भुज रूप पुनि ॥

सो द्वारका चरित्र सुहाये । प्रकट पुराणनमें सब गाये ॥
अति विचित्र हरि चरित अपारा । काहू गाय लह्यो नाहिं पारा ॥
मति समान बुध जन सब गावैं । गाय गाय तनु पाप नशावैं ॥
हरिपदपंकज प्रीति बढ़ावै । मन चंचलको तहां रमावै ॥
व्रजविलास हरिको अतिपावन । रस माधुर्य चरित्र सुहावन ॥
ताते कछुक कहत हौं गाई । सब सन्तनके पद शिरनाई ॥
यामें कछुक बुद्धि नाहिं मेरी । उक्ति युक्ति सब सूरहि केरी ॥
कियो सूररस सिंधु उधारा । तामें प्रेम तरंग अपारा ॥
हरिके चरित रत्न विधि माना । व्रजविलास सो सुधा समाना ॥
पद रचना करि सूर बखान्यो । कोमल विमल मधुर रस सान्यो ॥
समय समयके राग सुहाये । अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई । कहत सुनत श्रवणन सुखदाई ॥

दो०—अतिशय करि मोहत मनहिं, गंध्रवगुणके संग ॥
कहत बनै तामें नहीं, क्रमसों कथा प्रसंग ॥

सो०—मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसो भयो ॥
कहिहौं यह रस भाष, क्रमसौं कथा प्रसंग सब ॥

तातें निजमनकी रुचि जानी । यहि विधि करौं प्रबंध सुबानी ॥
द्वादश चौपाई प्रति दोहा । तहँ पुनि एक सोरठा सोहा ॥
कहूं कहूं शुभ छन्द सुहाई । भाषा सरल न अर्थ दुराई ॥
कहत सुनत समुझत मनभाई । ध्यान रूपमय कथा सुहाई ॥

१ देवता । २ चरणकमल । ३ अमृत । ४ ग्रंथकार अपने ग्रंथके लिये प्रतिज्ञा कर्ता है ।

कर्म्म धर्म्म नहिं नीति बखानी। केवल भक्ति प्रेम सुखदानी॥
जानि कृष्णके चरित पुनीता। कहिहैं सुनिहैं सन्तसप्रीता॥
बहुरि कहत दोऊ करजोरी। सुनियो विनय कृपा करि मोरी॥
चूकपरी जो मोतन होई। सुजन सुधारि लीजिये सोई॥
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊं। कृष्णविलास प्रीति करि गाऊं॥
सो विचारके श्रवणन कीजै। काव्य दोष गुण मन नहिं दीजै॥
ऐसे सबको विनय सुनाई। कृष्णचरित वरणौं सुखदाई॥
कृष्णचरित आनँदके रासा। मंगल करण हरण भवबासा॥

दो०–विघ्न विनाशन शुभ करण, हरणताप त्रयशूल॥
चरित ललित नँदनन्दके, सकल सुखनके मूल॥

सो०–चरण कमल उरधार, श्रीराधा नँदलालके॥
सुन्दररस आगार, ब्रजविलास अब वरणिहौं॥

सम्बत शुभ पुराण[1] शत जानौ। तापर और नक्षत्रहि[2] आनौ॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा। तिथि पंचमी सुभग शशिवारा[3]॥
श्रीवसन्त उत्सव दिन जानी। सकल विश्व मन आनँद दानी॥
मनमें करि आनन्द हुलासा। ब्रजविलासको करौं प्रकासा॥
वन्दौं प्रथम कमलपदनीके। श्रीवल्लभ आचारज जीके॥
श्रीलक्ष्मण भट कुँवर उदारा। जन उद्धारन हित अवतारा॥
माया व्याधि मिटाय अनेका। कियो प्रेम मारग दृढ़एका॥
श्रीगोकुलवसि सुख उपजायो। कृष्ण नामको दान चलायो॥
विरहानलमें[4] सुभग शरीरा। वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा॥
हरिप्रापतिकी रीति बताई। विरह रूप करि प्रगट दिखाई॥
विरह भऱ्यो जिनको सब नेमा। विरह रूप करि जिनको प्रेमा॥
विरहै भरी भक्ति विस्तारी। ताते गोकुल गैल निहारी॥

दोहा–द्वापरतनु धरि सुरनहित, कृष्ण सँहारे दुष्ट॥
श्रीवल्लभ वपु धरि कियो, प्रेमपंथ कलिपुष्ट॥

---

१ अठारह। २ सत्ताईस, अर्थात् १८२७ के संवतमें इस ग्रंथको बनायो है। ३ चंद्रवार। ४ विरहरूप अग्नि।

सो०—मन वचक्रमसों चित्त, श्रीवल्लभ चरणनलग्यो ॥
वही आश वही वित्त, वहिसाधन वहि युक्तफल ॥

पुनि श्रीवल्लभ कुलहि मनाऊं । चरणकमल तिनके शिरनाऊं ॥
श्रीगोकुलमें जिनको धामा । विश्व विदित सुन्दर गुणग्रामा ॥
प्रेम भक्तिकी ज्योति विराजै । तेज प्रताप जगतपर राजै ॥
जिनके सदन देखिये ऐसे । नन्द महरिके सुनियत जैसे ॥
तहां कृष्णकी नितनवलीला । बाल विनोद भरी सुक शीला ॥
तिनकी शरण जीव जो आवै । तौ दृढ भक्ति कृष्णकी पावै ॥
देत श्रवण मग अति सुखदाई । कृष्ण नाम रस सुधा पियाई ॥
भक्ति दानको परम उदारा । जगत विदित श्रीगोकुलद्वारा ॥
तामहँ मंगल वंश मझारी । परम कृपालु दीन दुखहारी ॥
श्रीमोहनजी नाम गुसाईं । सुन्दर श्याम श्यामकी नाईं ॥
परमविशाल कमलदल लोचन । दया दृष्टि उरताप विमोचन ॥
मधुर मनोहर शीतल बानी । प्रेम सुधारससों लपटानी ॥

दोहा—तिन तीरथपति मधि दियो, कृष्ण नाम मोहिं दान ॥
दीन जानि राख्यो शरण, लगिकै मेरे कान ॥
सो०—तिनके पद उर राख, व्रजविलास वर्णन करौ ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिहैं जानि जन ॥

वन्दतहौं सब सूर सुजानै । जिन्हैं सूर सम सबकोउ मानै ॥
प्रेम रूप वाणी परकासा । प्रफुल्लित अम्बुज सुनि हरिदासा ॥
कृष्णरूप बिन और न देख्यो । जगत विषय तृणसम करि लेख्यो ॥
राखे नैन सदा करि ध्याना । दिव्य दृष्टि करि सुयश बखाना ॥
लीला श्याम जन्म भरगाई । रहसकेलि सब प्रगट जनाई ॥
बाणी भांति अनेक बखानी । कृष्ण प्रेम रससों लपटानी ॥
चढे कठोर मोह वश जेऊ । होत प्रेमवश सुनिकैं तेऊ ॥
कीन्हों अति उपकार जगतको । मारगदयो चलाय भगतको ॥

---

१ धन । २ घर । ३ अमृत । ४ हृदयको दुःख । ५ मथुरापुरी वा प्रयागराज ।
६ सूर्य । ७ कमल ।

मोहिं बडाई करि नहिं आवै । जिनको गायो सब कोउ गावै ॥
चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊं । यह अपराध क्षमा करि पाऊं ॥
मोते यह अति होत ढिठाई । करत त्रिष्णु पदकी चौपाई ॥
सो मम दोष न उरमें धरिये । सफल मनोरथ मेरो करिये ॥

दोहा–अब सन्तनकी मण्डली, वन्दतहौं शिरनाय ॥
विना कृपा जिनकी भये, हरि यश गाय न जाय ॥

सो०–करिहैं मोहिं सहाय, गुणगाहक परहित करन ॥
तिनको सहज सुभाय, संतत[1] संत कृपालुचित ॥

संत मण्डलीको शिर नाऊं । जिनकी कृपा विमल मति पाऊं ॥
जिनकी कृपा विघ्न सब नाशै । जिनकी कृपा कृष्ण गुणभाशै ॥
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई । जिनकी कृपा कुमति मिटिजाई ॥
जिनकी कृपा होंय गुणनाना । जिनकी कृपा सर्व कल्याना ॥
जिनकी कृपा मोहतम[2] नाशै । जिनकी कृपा ज्ञान परकाशै ॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला । होहु सो सन्त मोहिं अनुकूला ॥
जय जय जय श्रीकुंज बिहारी । नँदनंदन बृषभानु दुलारी ॥
मंगल मूरति आनँद कारी । लीला ललित भक्त भयहारी ॥
रूपनिधान प्रेम की रासी । श्रीवृन्दावन धाम निवासी ॥
अखिल नाम गुण सुखके धामा । पूरणकाम श्याम अरु श्यामा ॥
युगल किशोर ध्यान उर धरिकै । सुभग कमल पद वन्दन करिकै ॥
ब्रजविलास रस परम हुलासा । गावतहै ब्रजवासी दासा ॥

अथ कथाप्रसंङ्गवर्णनम् ॥

दोहा–तत्व नाम पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद, सकल देव मणि शीश ॥

सो०–वन्दौंनन्दकिशोर, वृन्दावनवासी सदा ॥
श्रीराधा चितचोर, आनँद घन भवभयहरण ॥

---

१ निरंतर। २ मोहरूपीअंधकार।

कहौं कथा सुन्दर सुखदेनी । अघहरणी वैकुण्ठ निशेनी ॥
कृष्णचरण पंकज रति देनी । जन पावन करती जिमिवेनी ॥
श्रीकलिन्दतनया तट पावन । बसत मधुपुरी परम सुहावन ॥
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं । तीनिलोक पर वेद बतावैं ॥
दरशन ते नर पावन होई । कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई ॥
उग्रसेन तहँ बसै नरेशा । नीतिनिपुण सह धर्म सुवेशा ॥
ताको सुवन कंस अतिपापी । असुर बुद्धि भौ विश्व संतापी ॥
कियो तात गहि वन्दीशाला । आपन भयो कंस भूपाला ॥
तात अनुज तहँ देवक नामा । सुता + तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहि ताही । लोक वेदकी रीति विवाही ॥
दायज दियो अनेक विधाना । हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास बहुत सँग दीनो । दान मान परिपूरण कीनो ॥

दोहा—तब चढ़ाइ रथ देवकी, आप भयो रथवान ॥
पहुँचावन अति हेतुसों, चल्यो सहित अभिमान ॥

सो०—तेहि क्षण गिरा विशाल, होत भई आकाशते ॥
होय कंस को काल, देवकिके सुत आठवें ॥

कंसासुर सुनि वचन अकाशा । भयो चकित मन मिव्यो हुलाशा ॥
शत्रु समान देवकी मानी । रथते उतरि पन्यो अभिमानी ॥
खड्ग निकासि हाथमें लीन्हों । यह विचार अपने मन कीन्हों ॥
अब ही याहि मारि दुख मेटों । पुनि कलेश काहेको भेटों ॥
केश पकरि देवकि गहि लीन्ही । नाहें कछु कानि बहिनकी कीन्ही ॥
तब वसुदेव दीन है कहहीं । तिय वध नही भूप यश लहही ॥
बहुरो यह पुनि स्वसा तिहारी । राजन कीजै काज विचारी ॥
सुन वसुदेव भई नभ बानी । तुमहुं सुनी कछु नाहिं छिपानी ॥
ताते उग्र शोच किन करिये । पाछे काहेको दुख भरिये ॥
वृक्ष फलै जो विषफल आगे । ताहि बनै पहिलेही त्यागे ॥

१ पापा २ त्रिवेणी । ३ यमुना । ४ राज । ५ पुत्र। ६ पिता । ७ कैदखाना। ८ पिताका छोटाभाई। + पुत्री(बेटी)। ९ आकाशवाणी । १० तरवार। ११ बहिन।

जो नहिं हतौं आज यह बाला । मिटै न उरसों शोच विशाला ॥
कन्या और ब्याहि तोहिं देहौं । याहि मारि उर शोच नशैहौं ॥

दोहा–मुनिजन गुरुजन संगजे, तिन्हहि कह्यो तिहिकाल ॥
वृथा होत है यज्ञफल, यह न उचित महिपाल¹ ॥

सो०–यहै तुम्हारे मान, आनकदुन्दुभि देवकी ॥
इन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यो करजोरी । राजन सुनिय विनय कछु मोरी ॥
वृथा देवकीको जनि मारो । याको सुतहै शत्रु तुह्मारो ॥
सब सुत याके हमसों लीजै । जीवदान याको प्रभु दीजै ॥
यह वाचा हम तुमसों भाखैं । चन्द्र सूर साखी दै राखैं ॥
भली बात यह सब दिन जानी । भावी² विवश कंसहू मानी ॥
हरि कीनो चाहैं सो होई । ताहि मिटावन हार न कोई ॥
तिन्हैं सहित नृप घर फिरि आये । करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकि जायो । लै वसुदेव कंस पहँ आयो ॥
बालक देखि कंस हँसि दीनो । इन तौ कछु अपराध न कीनो ॥
आठवों गर्भ शत्रु है मेरो । सो दीजो तुम मोहिं सबेरो ॥
यह कहि अपनो पापक्षमायो । तव वसुदेव हर्षको पायो ॥
ऐसे बाल फेरि जब दीनो । तब वसुदेव गमन हँस कीनो ॥

दोहा–तब ऋषि नारद कंस पहँ, लिये हस्ततल³ वीण ॥
गुण गावत गोविन्दके, आये परम प्रवीण ॥

सो०–उठ्यो देखिकै कंस, शीशनाइ पद वन्दिकै ॥
बैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु है आये । सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनि नृप वचन बिहँसि ऋषि बोले । तुम कत रहत शत्रुसों भोले ॥
जाके भय तुम अति भय मानो । अठवौं कौन सु तुम कछु जानो ॥

---

१ हे राजन् । २ होनहार । ३ कर ।

जो वह प्रथमहि आयो होई। दैवचरित्र जान कछु कोई॥
आठलकीर खैंचि दिखराई। गिनतीमें सब आठौं आई॥
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी। कंसासुर उर अति भयमानी॥
तेहि क्षण बालक फेरि मँगायो। लै वसुदेव तुरतही आयो॥
लियो मूढंगहि करमें ताही। पटकत भयो शिलापर वाही॥
याही विधि षट् बालक मारे। मात पिता अति भये दुखारे॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी। तुम बिन कासों करहिं पुकारी॥
यह सन्ताप मिटै कब भारी। बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी॥
केहि विधि नाथ राखिय प्राना। करत कंस निरवंश निदाना॥

दोहा–विपति विनाशन दुख दमन, जनरंजन सुरराय॥
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय॥

सो०–विनती प्रभुहि सुनाय, मनमहँ दम्पति दुखित अति॥
होत न प्रकट जनाय, कंस असुरके त्रासते॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी। बढ्यो पाप असुरनको भारी॥
सहि न सकी तब गोतनुधारी। शिव विरंचिपै जाय पुकारी॥
सकल सुरनमिलि कियो विचारा। हमते नाहिं उतरै भुविभारा॥
विनय करिय चलि श्रीपति पाहीं। कृपा करै तब सब दुख जाहीं॥
भूमि सहित सुर सकल सिधारे। क्षीर सिंधु तट जाइ पुकारे॥
जहँ श्रीपति श्रीसहित निवासी। पुरुषोत्तम अविगति अविनासी॥
धेनु अग्र करि विनय सुनाई। जय जय जय त्रिभुवनके साईं॥
जय सुखकन्द संत हितकारी। जय जगवन्द्य भूमि भयहारी॥
जय जय असुर समूहनिकन्दन। जय जय भक्तनके उर चंदन॥
जय जय जय प्रणतारतमोचन। दैत्य दलन सुर शोच विमोचन॥
जय जय जय प्रभु अंतर्य्यामी। सुनिय विनय सचराचर स्वामी॥
करिये प्रभु सो वेग उपाई। हरिये नाथ भूमि गरुवाई॥

दो०–धरिय मनुजतनु दनुजहति, करिय धरणि उद्धार॥

---

१ हाथमें। २ छःबालक। ३ पृथ्वी। ४ ब्रह्मा। ५ भगवान्। ६ पृथ्वी।
७ बोध ८ मनुष्यदेह।

परशत पदपंकज मिटहिं, सकल भूमि अघ भार ॥
सो०-पाहि पाहि भगवंत, शरणागत वत्सल हरे ॥
क्षमा करहु अब कंत, दीन दुखित जन जानि हरि ॥
दीन वचन जब धेनु पुकारी । भई गिरा[१] नभ मंगलकारी ॥
जाहु सकल सुर घर भय त्यागी । धरिहौं नरतनु तुम हित लागी ॥
प्रथम जन्म देवकि वसुदेवा । मोसन मांगलियो करि सेवा ॥
तुमसम पुत्र हमारे होई । मैं तिनको वर दीनो सोई ॥
तैसे नन्द यशोदा जानौ । दूध पियावन उनहिन मानौ ॥
गर्भ देवकीके अवतरिहौं । बालचरित गोकुलमें करिहौं ॥
तुमहूं गोप वेष ब्रज होऊ । मम सँग सुख पावौ सब कोऊ ॥
यह कहि सुरन[२] बिदा हरि कीन्हो । आयुसु योग शक्ति[३] कहँ दीन्हों ॥
सप्तम गर्भ देवकी केरा । तहां शेष मम अंश बसेरा ॥
सो आर्कर्षण[४] कै क्षण माहीं । राखो गर्भ रोहिणी पाहीं ॥
शक्ति जबहि हरि आयसु पायो । तत्क्षण ताहि वहीं पहुँचायो ॥
हरि चरित्र कछु जान न कोई । जो कछु करन चहैं सो होई ॥
दोहा-तब कृपालु जनके सुखद, अविगति कमलाकन्त ॥
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त ॥
सो०-तनु द्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब ॥
आनन मुकुर[५] निहार, अति प्रसन्न मन देवकी ॥
निजमुख मुकुर देवकी देख्यो । शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो ॥
मिट्यो तिमिर[६] भ्रम अति सुखपायो । जान्यो कंस काल हरि आयो ॥
प्रभु आगमन जानकर देवा । आये सकल जनावन सेवा ॥
नँभते[७] गर्भ स्तुति सब करहीं । जय जय जय जय जय उच्चरहीं ॥
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई । जय वेदान्त वेद सुरसाई ॥
जय तीरथ पद भवनिधि वोहित । प्रणतपाल जय दीननके हित ॥

---

१ आकाशवाणी । २ देवताओंको । ३ योगमाया । ४ खींचकर । ५ दर्पण ।
६ अंधकार-भ्रम । आकाशमें खड़े होकर ।

जय संकल्प सत्य गुणधामा। जय मन वांछित पूरण कामा॥
जय गो द्विजहित नरतनु धारी। जय सन्तन पतिगति अपहारी॥
जय कृपालु आनन्द वरूथा¹। वन्दत चरण सकल सुर यूथा॥
जय पुरुषार्थ अमित अनूपा। महापुरुष सचराचर भूपा॥
जय अहीश² नित नव गुण गावैं। तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं॥
जो मुनिजन मन ध्यान न आवैं। भक्ताधीन वेद यश गावैं॥

दोहा—अलख अरूप अनीह³ अज, प्रभु अद्वैत अनादि॥
गर्भवास सो देवकी, कौतुकनिधि सर्वादि॥
सो॰—किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश विधि॥
नमो नमो तिहि देव, परम विचित्र चरित्र शुभ॥

करि विनती सुरसदन सिधारे। परमानंद मगन मन भारे॥
तब देवकि पतिपास बखाने। कोमल वचन प्रेमते साने॥
हो पिय सो उपाय कछु कीजै। अबकै यह बालक रखलीजै॥
बुधि बल छल पिय कीजै सोई। जामें कुलको नाश न होई॥
मैं मन वच अबकै यह जाना। है मम उदर देव भगवाना॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं। कौन भांति यह गर्भ दुराऊं॥
सत्य धर्म बरु जाय तौ जाऊ। पति यहि सुतहित करिय उपाऊ॥
कर्म धर्म सब हरि हित भाखै। सो हरितजि कहुँ धर्महिं राखै॥
सुनहु पिया अस को हितकारी। जो यह बालक लेहि उबारी॥
शिर ऊपर बैठे रखवारे। पाँयन पड़े निगड⁴ अति भारे॥
कंस असुर अपवंश विनाशन। केहि विधिसों उबरे तियत्रासन॥
ऐसो को समरथ जग पाई। जो इहि अवसर होय सहाई॥

दो॰ षट् बालक वध सुरतिकरि, दम्पति दुखित विचार॥
अति आकुल भय कंसके, दृगन⁵ चली बहि धार॥
सो॰ करुणासिन्धु दयाल, तात मात अतिदुखतलखि॥
प्रगट भये तिहि काल, दुखमोचन लोचन सुखद॥

---

१ समूह। २ शेष। ३ चेष्टारहित। ४ पहतकडीबेडी। ५ नेत्रोंसे।

योगे शक्ति हरि आयसु पाई । प्रगटी नन्द भवन सो जाई ॥
ताके प्रकटतही नरनारी । भये नींदवश देह विसारी ॥
भादों कारी निशि अति पावन । आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिललोकपति जन सुखदायक। आये जन्म लियो सुरनायक ॥
शीशमुकुट कल कुण्डल कानन । शरदमयंक सरस शुभ आनन ॥
चारु चरण पंकजदल लोचन । चितवन सुखद तापत्रय मोचन ॥
कुटिल अलक भ्रूमेचकताई । जन मन हरण परम सुखदाई ॥
पीतबसनतनु श्यामलमाला । उरश्रीवत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी । शंख चक्र गद अम्बुज धारी ॥
अंग अंग सब भूषण नीके । परम विचित्र भावते जीके ॥
चरणसरोज उदित नख जोती । कमल दलन राखे जनु मोती ॥
परम प्रताप शुभग शिशु वेषा । अद्भुत रूप देवकी देखा ॥

दो०देखि अमितछवि चकितमति, पति ढिगलिये बुलाय ॥
दम्पति परमानन्द मन, परे हर्ष सुत पाय ॥

सो०–भरे प्रेम जल नयन, अति सनेह आकुल शिथिल ॥
बोले गद्गद बैन, जोरि पाणि विनती करत ॥

प्रभु किहि विधि तुम गणन बखानो।तुम मायावश तुमहि न जानो ॥
सहसानन जाके गुण गावैं । नेति नेति जेहि निगम बतावैं ॥
जाकी भ्रूविलास अनयासा । अखिललोक उपजै अरुनासा ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं । कृपा करहु तब दरशन पावैं ॥
जो सबतेपर अज अविनाशी । सो किमि कहिय उदर ममवासी ॥
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे । मोहतहैं प्रभु मनहि हमारे ॥
तात मातके वचन सुहाये । सने प्रेम वश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी । मधुर मनोहर अमृतबानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहि सुनाऊं । प्रथम जन्मकी कथा बताऊं ॥
तुम यांच्यो मोहि कर तप भारे । तुम समान सुत होय हमारे ॥

१ आज्ञा । २ शरदका चन्द्रमा । ३. जुल्फ । ४ श्यामता । ५ वसुदेवको । ६ शेषजी ।

जन हित विरद मोर श्रुति गायो । सो कैसे करि जात लजायो ॥
ताते मैं वर तुमको दीन्हों । सो हम आय सत्य अब कीन्हों ॥
दो०-शिव ब्रह्मा सनकादिमुनि, ध्यानसकत नहिं पाय ॥
सो मैं तुम्हरे प्रेम वश, दियो दरश निज आय ॥
सो०-कौतुकनिधि सुरराय, करत चरित मुनि मनहरण ॥
महा मोह उरझाय, दियो बहुरि पितु मात मन ॥
करहु तात अब वेग उपाई । हमहिं कंस ते लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई । तहां यशोदा कन्या जाई ॥
मोहिं राखि कै यशुदा पासा । कन्या लै आवहु अनयासा ॥
सो कन्या लै कंसहि दीजै । तात हमारो नाम न लीजै ॥
ऐसहि मात पिता समुझाई । भये तुरत शिशु[1] यदुकुलराई ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता । विस्मय हर्ष विवश पितुमाता ॥
सुतउठाय उरसों लपटायो । प्रेम विवश लोचन जल छायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजै । गमन वेग गोकुलको कीजै ॥
जबलगि सुनहि न वह हत्यारो । मन वच क्रम नृप को न पत्यारो ॥
बनै नाथ उर धीरजधारे । नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जो यह सुख नयनन पुट पीजै । ऐसे सुतको यश सुनि लीजै ॥
दरशन सुखित दुखित महतारी । शोचत विकल कंस भयभारी ॥
दो०-अति अँधियारी अर्द्ध निशि[4], भट घेरे चहुँओर ॥
कौन भाँति जैहैं दई, पाँय निगड अति घोर ॥
सो०-बरषत अतिजल जोर, घन गरजत चमकत चपलै[5] ॥
बीच यमुन अति घोर, पार कवन विधि पाइहैं ॥
कहा करौं अब काहि पुकारौं । कौन भांति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहि किन मारी । विनती करि पति वृथा उबारी ॥
ऐसो. सुत बिछुरत महतारी । कौन भांति जीवै दुखभारी ॥
कृपा समुद्र भक्त सुखदानी । सुनत मातुकी आरतबानी ॥

---

१ बालक । २ संदेह । ३ भरोसा नहीं । ४ आधीरात । ५ बिजली ।

कृपाकरी सब भ्रम भय टारे । गिरे निगड पाँयनते भारे ॥
तब वसुदेव हर्ष तिहि ठाहीं । लक्ष धेनु मनसी मन माहीं ॥
पुत्र गोदलै तुरत सिधाये । द्वार कपाट खुले सबपाये ॥
रखवारे सब सोवत देखे । सपदि चले उर हर्ष विशेखे ॥
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी । मन्द समीर भई श्रमहारी ॥
हरिमुख चन्द्रप्रभा तम नाशै । क्षण क्षण तडित पंथ परकाशै ॥
प्रभु पर शेष छांह फनछाई । आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो वसुदेव न जानत भेवा । पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥

दो०-सरित देखि गम्भीर अति, मनमें शोच विचार ॥
गोकुलके सम्मुख धँस्यो, प्रभु प्रताप उरधार ॥
सो०-यमुनापति पहिचानि, मन अनंद हुलस्यो हियो ॥
परसन हितपदपानि, अति प्रवाह ऊंचो उठ्यो ॥

गुल्फ जंघ कटिलौं जलआयो । तब हरिको कछु ऊर्ध्व उठायो ॥
ज्यों ज्यों वसुदेव सुतहि उठावै । त्यों त्यों जल ऊपरको आवै ॥
नाक प्रयन्त नीर जब आयो । तब हरिपद अधको लटकायो ॥
परशि नीर हुंकारहि दीनो । तुरतहिं भयो गुल्फते हीनो ॥
भयो पार लैके घनश्यामहि । गये वसुदेव नन्दके धामहि ॥
तहां सकल जन सोवत पाये । सुत लै यशुमति पास सिधाये ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी । लई उठाय राखि हैत्यारी ॥
फिरि फिरि सुतको वदन निहारी । चले तुरत भय कंस विचारी ॥
जो सम्पति निगमागम गाई । योगी जनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरबस विधि माना । शंकर जासु धरतहैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं । सहसवदनहू पार न पावैं ॥
अहो विलोकहु भाग्य बड़ाई । सोई सोवत यशुमति माई ॥
दो०-वहां देवकी प्रेम वश, अति व्याकुल अकुलात ॥

१ संकल्पकी । २ शीघ्र । ३ इन्द्र । ४ पवन ५ बिजली । ६ टकना । ७कृष्ण ।

बालक अरु वसुदेव कहँ, पठै बहुत पछितात ॥

सो०—बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोइँ सेजपर ॥
पोंछत नयनन नीर, बोलि सकत नहिं कंस भय ॥

सनमन सुर मनाय सनमानै। मत यह भेद दई कोउ जानै ॥
रखवारे कहुँ जान न जाहीं। मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं ॥
याते अधिक शोच मोहिं भारी। क्यों ह्वै रहैं शशिमुख उजियारी ॥
मग महँ यमुना अति गम्भीरा। केहि विधि पहुँचैंगे वहितीरा ॥
गोकुल पहुँचे धौं मग माहीं। भई बेर पति आयो नाहीं ॥
यहि विधि शोच विवश अकुलाई। इकक्षण कल्प समान विहाई ॥
पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई। बूझत उठी पुत्र कुशलाई ॥
केहि विधि पुत्र राखि पति आये। समाचार वसुदेव सुनाये ॥
कन्या दई देवकी जबहीं। द्वार कपाट गये लगि तबहीं ॥
बेड़ी ह्वैगई पग ततकाला। कन्या रोय उठी तिहि काला ॥
चहुँ दिशि जागि परे रखवारे। तुरत कंस पहँ जाय पुकारे ॥
सुनतहि उठि अति आतुर धायो। लीन्हें खड्ग तहां चलि आयो ॥

दोहा—कन्या लै तब देवकी, आगे राखी आय ॥
दीन वचन आधीनह्वै, कंसहि कही सुनाय ॥

सो०—अहो भ्रात यह दान, तुम हम कहँ अब दीजिये ॥
है कन्या जिय जान, याते भयँ तुमको नहिं ॥

सुनत कंस भैगिनी की बानी। मृत्यु त्रासते शठ रिसमानी ॥
यामें कछू होय छल कोई। कोजानै विधनागति गोई ॥
यह विचार कन्या गहिलीनी। पटकनकी मनसा तिहि कीनी ॥
करते छूटिगई आकाशा। दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलति भई गगनते बानी। अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ॥
ममहत्या तैं लई वृथाहीं। तेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥

१ वृत्तान्त। २ चन्द्रमा। ३ तलवार। ४ डर। ५ बहन। ६ आकाश।

सर्प ग्रसित जिमि दादुर होई । माखी खान चहत शठ सोई ॥
तैसे तू चह मारन मोही । आयो काल निकट शठ तोही ॥
ऐसे कहिकै स्वर्ग सिधारी । कंसहि शोच भयो सुनि भारी ॥
पर्यो देवकी चरणनमाहीं । मैं मारे तुवपुत्र वृथाहीं ॥
क्षमा करौ मेरे अपराधा । है विधिकी गति अलख अगाधा ॥
वसुदेवहुसन क्षमा कराई । निगडदिये पगते कटवाई ॥
दोहा–गयो शोच व्याकुल सदन, पर्यो सेजपर जाय ॥
जागतही बीती निशा, नींदपरी नहिं ताय ॥
सो०–हरिके चरित अनूप, असुर विमोहन सुर सुखद ॥
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं ॥
यशुदा जब सोवतते जागी । सुत मुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अंग उर आनँद भारी । देखि रही मुखशशि उजियारी ॥
गद्गद कण्ठ न कछु कहि आयो । हर्षवन्त है नन्द बुलायो ॥
आवहु कन्त पुत्र मुख देखो । बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा । सफल भई सबहिनकी सेवा ॥
सुनत नन्द प्रिय तियकी बानी । प्रेम मग्न तनुदशा भुलानी ॥
हर्षित है उठि आतुर धायो । यशुमति सुतको बदन दिखायो ॥
देखत मुख उर सुख भयो जैसो । कहि न सकहि श्रुति शारद तैसो ॥
कहा कहौं तिहि क्षणकी शोभा । मनहु महा छवितरुके गोभा ॥
आनँद मगन नन्द मननाहीं । जानत नहिं हमको कहि ठाहीं ॥
रोय उठे तब नन्दके लाला । जागि परे सब ग्वालिन ग्वाला ॥
जित तितके हर्षित उठ धाये । मनहु रंक धन लूटन आये ॥
दोहा–देहिं बधाई नन्दको, परैं यशोदा पाव ॥
कहैं पियारे लालको, नेक हमहिं दिखराव ॥
सो०–अति हर्षित नँदराय, कह्यो बजावनसोहिलो ॥

१ मेंडुक । २ अदृश्य । ३ बेडी । ४ घर । ५ पति । ६ स्त्री । ७ इरिकी ।

नारि उठीं सब गाय, लाग्यो वजन वधावनो ॥
छं०-सुरसिद्धमुनिन्दापरम अनन्दासुनगोकुलहरि आये ॥
दुन्दुभी वजावत मंगल गावत तियन सहित उठि धाये ॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठवर करत गान सचुपाये ॥
गरजत तिहिकाला मधुररसाला घनगति जनन जनाये ॥
वाजत करताला वरषन माला सुरतरुसुमन सुहाये ॥
सब करैं किलोलैं हर्षित वोले जय जय जय सुखपाये ॥
नभ महँ ध्वनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये ॥
संतन हितकारी असुर सँहारी आवत क्षितिदुखछाये ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता ॥
गुणिगण सब गावैं प्रभुहि सुनावै आनँद उर न समाता ॥
भएमन चीते सब भय वीते प्रगटे दनुजनिपाता ॥
अतिमनमें हर्षें पुनि पुनि वर्षें सुमन जो सुरतरु जाता ॥
सुरतियमनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमतिके वड़ भागा ॥
इनसमहमनाहीं पुण्यनमाहीं कहैं सहित अनुरागा ॥
योगी जेहि ध्यावैं ध्यान न पावैं करि करि योग विरागा ॥
जो वेद न जानै नेति बखानै सो सुतह्वै उरलागा ॥
दोहा-भरे परम आनन्द सुर, उपजावत अनुराग ॥
वार वार वर्णन करैं, नन्द यशोमति भाग ॥
सो०-रहे सदन सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि ॥
जन्म मंगल मूल, ब्रजवासी हर्षित सबै ॥
ब्रजबासिन सबहिन सुनि पायो। नन्दमहरघर ढोटौ जायो ॥
परमानन्द लोग सब धाये। नन्दराय तब विप्र बुलाये ॥
काढ़ि लग्न ग्रह योग सुधायो।अति विचित्र सब द्विजन सुनायो॥

१ कल्पवृक्षके फूल। २ पृथ्वी। ३ हृदय। ४ प्रेम। ५ पुत्र।

करत वेद ध्वनि अति सुखपाई । देंहि नन्दको सकल बधाई ॥
तव स्नान महरि उठि कीन्हों । भाल तिलक चन्दन लैलीन्हो ॥
जाति कर्म करि पितर पुजाये । भूषण वसन द्विजन पहिराये ॥
गैया लक्ष सवत्ससुहाई । ब्याही दूध नवीन मँगाई ॥
सब विधिसकल अलंकृतकीनी । करि संकल्प द्विजनको दीनी ॥
मुदित विप्र सब देई अशीसा । चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा ॥
हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई । हितकुटुम्ब सब निकट बुलाई ॥
बहु सुगंधि मथि तिलक बनाये । भूषण वसन विविध पहिराये ॥
हुते ज कुलमें वृद्ध जिठेरे । हित सों पाय परे सब केरे ॥

दोहा–बंदी मागधं सूत गण, भरे भवन बहु आय ॥
लैलैनाम बुलाय सब, परि तोषे नँदराय ॥
सो०–मन वांछित सबलेहिं, जो जाके भावै मनहिं ॥
नन्द भरे रस देहिं, किये अयाचीयाचकनि ॥

सुनि सुनि धाई ब्रजकी नारी । लेकर कमलन कंचन थारी ॥
मंगल साज साज सब लीन्हें । सहजश्रृंगार सुभगतनु कीन्हें ॥
चारु चीरतनु दृग कजरारे । भालतिलक कुच शिथिल सँवारे ॥
मांग सिंदूर तरोना कानन । रोरी रंग किये कछु आनन ॥
अँगिया अंगकसे छबिछाजे । विविध भांति उर हार विराजे ॥
अति आनन्द मगन मनफूली । अंचल उड़त सँभारन भूली ॥
निज निज मेल मिलीं सब गावें । विहरत नन्द धामको आवें ॥
इक भीतर इक आंगन माहीं । इक द्वारे मग पावत नाहीं ॥
सबको यशुमति निकट बुलावे । मुख उघार सुतको दिखरावें ॥
देंहि अशीश परो शिशुपायन । जीवहु जबलग नभ तारागन ॥
पूरण काम भयो ब्रजसारो । धन्य यशोदा भाग्य तिहारो ॥

---

१ बछड़ासहित । २ आभूषित । ३ वर्ष । ४ भाट । ५ प्रसन्नकिये । ६धनवान् ।

धन्यसो कोखि जहां सुत राख्यो। पुण्य तिहारो जात न भाख्यो॥

दोहा–धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथिवार॥
जहँ जायो ऐसो सुवन, थिरथाप्यो परिवार॥

सो० पुनि पुनि शीश नवाय, देहिं अशीश मनाय सुर॥
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल कुलकी थुनी॥

परमानंद नंद अनुरागे। चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे॥
सारी सुरंग कसबके लहँगे। अति चटकीले मोलन महँगे॥
सिगरी बधू बोल पहिराई। जो जैसी जाके मनभाई॥
देहिं अशीश मुदित ब्रजनारी। फूली कमल कलीसी न्यारी॥
एक रहँसि निज निज गृह जाहीं। इक हुलसी आवैं गृह माहीं॥
एक कहैं एकनसों धाई। हों यह बात भली सुनि आई॥
महरि यशोदा ढोटा जायो। नंदद्वार सखि बजत बधायो॥
चलो वेग सखि देखिये सोई। विधना चाहतहीहै जोई॥
इक नाचैं इक ढोल बजावैं। एक नन्दको गारीगावैं॥
एक साथिये द्वार बनावैं। एकै वंदनवार बँधावैं॥
ध्वज पताक तोरण छबिछाई। घर घर होत अनंद बधाई॥
पुनि पुनि सुमन देव वर्षावैं। फूलनसों सब गोकुल छावैं॥

दोहा–ध्वज पताक तोरण कलश, बंदवनार दुवार॥
गोपनके घर घर बँधे, तोरण मंगलचार॥

सो०–नंदसदनसविचार, वरणिसकै सो कौन कवि॥
लियो जहाँ अवतार, छबिसागर त्रिभुवन धनी॥

ग्वाल वृंद सब सुनि उठि धाये। बाल वृंद सब निकट बुलाये॥
घसि बन धातु चित्र सब कीन्हे। गुंजा भूषित भूषण लीन्हें॥
यद्यपि अरु भूषणों तनु माहीं। तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं॥
एक कहैं एकन समुझाई। आज वनहिं कोऊ नाहिं जाई॥
गैया लेपन सहित बनावो। चित्र विचित्र वेगि लै आवो॥

१ पुत्र। २ प्रसन्नहोहो। ३ बन्दनवार। ४ गेरू। ५ गहने। ६ चिरमिठी।

पूत नन्दके घर है जायो । भयो सबनके मनको भायो ॥
कितनो गहर करत बिन काजा । वेगि चलो सब सहित समाजा ॥
दधि माखनके माट भराये । कछु इक हरदी रंग मिलाये ॥
लिये शीशपर केतिक गावें । केतिक ताल मृदंग बजावें ॥
मिल मिल निज निज यूथन नाहीं । नंद सदन निरखत सब जाहीं ॥
देखि नन्द अति आनँद पावें । हँसि हँसि सबको निकट बुलावें ॥
छुइ छुइ चरण भेंट धरिआगे । देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दोहा–नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर ॥
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोप शरीर ॥

सो०देहधरे आनन्द, मनहुँ नंद तिन मधि लसैं ॥
जन्मे आनँदकन्द, कहि न सकहिं सुखसहसमुख ॥

इक नाचत इक गावत ठाढे । इक कूदत अति आनँद बाढे ॥
छिरकत एक दूध दधि डोलैं । एक कुहाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंद घर दधिको कांदों । बरसत दूध दही जनु भादों ॥
एक धाय एकन पै जाहीं । एकै मिलत डारि गलबाहीं ॥
एक एकके पायँन परहीं । इकदधि दूर्वाक्षत शिरधरहीं ॥
अति उछाह सबके मन माहीं । राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुल मध्य देखिये जितहीं । करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नंदको लेहीं । एकै एकनको धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावें । पट भूषण तिनको पहिरावें ॥
एक कहैं हम तब कछु लेहैं । जब लालन मुख देखनदेहैं ॥
एक जो एकन ते कछु लेहीं । ते निशंक एकन को देहीं ॥
अति आनंद मगन पशुपालक । नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक ॥

दोहा–गोकुलको आनँद सब, कापै वर्यो जाय ॥
जहां परम आनंद मय, लियो जन्म हरि आय ॥

---

१ देर । २ घर । ३ कीच । ४ दूध और चांवल । ५ क्रीडा । ६ गोपग्वाल । ७ हुवा ।

सो०–नितनव होत विलास, हरि मुकुंदके जन्मते ॥
ब्रज संपदा सुपास, सुर भूलहिं कौतुक निरखि ॥
जबते जन्म लियो हरि आई । सुख संपति ब्रज घर घर छाई ॥
सब उदार सब परमप्रवीना । सब सुंदर सब रोग विहीना ॥
मुदित जहाँ तहँ सब ब्रजबासी सब यशुमतिसुत प्रेम उपासी ॥
नंद सदन वर्ण्यों किमिजाही । शतसुरेशलखि विभ्रमजाही ॥
अति प्रकाश मन्दिरके माहीं । फैलिरही हरि छबि की छाहीं ॥
ग्वाल गाय गोपन की भीरा । कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ क्षीरा ॥
भूमि बाग बन गिरि रमणीया । खग मृग सर सरितो कमनीया ॥
विटपवेलि सब सहित फूल फल । दिशा प्रकाशित निर्मल जल थल ॥
सुरभी सुर सुरभी सम तूला । भयो सकल ब्रज मंगलमूला ॥
विभैव भेद यह कोउ न जाने । आदिहिते हम ऐसे माने ॥
कृष्णजन्म आनंद बधाई । सुर पुर नाग तिहूं पुर भाई ॥
ब्रज बासिन गण अधिक उछाहू । करि नहि सकहिं सहसमुख काहू ॥
दोहा–ब्रजको सुख को कहिसकै, सुखमा बढी अपार ॥
सुखनिधानभगवान जहँ, लियो मनुज अवतार ॥
सो०–प्रकटे गोकुलचंद, संत कुमुद वन मोदकर ॥
तम कुल असुर निकंद,ब्रज जन चारु चकोरहित॥
नित नव भीर नंदके द्वारे । याचक जन सब होंय सुखारे ॥
गाँव गाँवते सुनि सुनि आवें । मन भायो सब कोऊ पावें ॥
पाँचदिवस इहिविधि सुख पायो । छठयों दिवस छठीको आयो ॥
मन्दिर सकल सुवास लिपायो । जहाँ तहाँ चित्रित करवायो ॥
बीथी चारु सुगंधि सिंचाई । द्वारन बंदनवार बँधाई ॥
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते । नंदराय न्योते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई । भोजन कहँ आये सब कोई ॥

१ सौ इन्द्र । २ सरोवर । ३ नदी । ४ वृक्ष और लता । ५ वैभव ।

गोप वधू सब बनि बनि आवैं । लालन को पहिरावन ल्यावैं ॥
जरिकंस कुरता भूषण टोपी । रत्न समेत प्रेम रँग ओपी ॥
रोरी अंक्षत पान मिठाई । धरि धरि कंचन थारिन लाईं ॥
गावहिं मंगल कोकिल बानी । नंद भवन आवहिं हर्षानी ॥
करि आदर यशुदा बैठावैं । देखि श्याम घन सब सुख पावैं ॥

दोहा०–वृषभानादिक गोपवर, व्रजवासी समुदाय ॥
आये सब नंदराय गृह, भूषण बसँन बनाय ॥
सो०–अति आदर करि नंद, शुभ आसन दीने सबन॥
सबके मन आनंद, बजत दुदुंभी नवत नट ॥

कहूं ग्वाल गावतहैं हेरी । कहूं खिलावत गाय घनेरी ॥
वंश प्रशंसा भाट सुनावैं । कितहूं ढाढी ढाढिनि गावैं ॥
देहिं गोपगण तिनको दाना । भूषण वसन धेनु मणि नाना ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं । अति अद्भुत कापै कहि आवैं ॥
धरहिं नंदके आगे आनी । राखहिं सब अतिशय सुखमानी ॥
तिनहीं देहिं निछावरि हरिकी । कोमल श्यामल सुन्दर बरकी ॥
विश्वकर्मा पलना गढ़िलायो । रत्नजटित शुभरंग सुहायो ॥
लालन हितसों नंद रखायो । विश्वकर्मा सब वांछित पायो ॥
ऐसे दिवस यामँयुग आयो । तब सब गोपन नंद जिमायो ॥
छिरकि सुगंध पान कर दीन्हों । तब सब गोपन भोजन कीन्हों ॥
मंगलमय रजँनी जब आई । गाय उठी सब नारि सुहाई ॥

अथ कुरता टोपी वर्णनम्॥

दोहा–कुरता टोपी पीतरँग, लालनको पहिराय ॥
लै उछंग पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय ॥
सो०–करि कुलको व्यवहार, करी आरती श्यामकी ॥
करति निछावरि नार, तन मन धन शशिमुख निरखि ॥

नेग जोग सब नेगिन पायो । दियो सबनि यशुदा मन भायो ॥

---

१ जरीका । २ चांवल । ३ समूह । ४ वस्त्र । ५ दो प्रहर । ६ रात ।

प्रातहि उठि लालन अन्हवायो । सुदिन शोधि पलना पहुढ़ायो ॥
निरखि निरखि यशुदा बलिजाई । अरुण चरण कर कोमलताई ॥
व्रजवासी जीवन नँदलाला । मातु सुकृत फल मदन गोपाला ॥
नितनव मंगल होहिं सुहाये । मंगलनिधि जबते हरि आये ॥
नंद सुकृत वर्षाऋतु सोई । यशुमति सुकृत अकाश बनोई ॥
तहँ घनश्याम श्याम तनु उनये । मंदहँसनि दामिनिद्युति जुनये ॥
गर्जन मंद मधुर किलकारी । व्रजजन मोरन आनँद कारी ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा । परम प्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पचरँग मणि छविछाई । इन्द्र धनुष उपमा तिनपाई ॥
गज मुक्तनकी लर लटकाई । सोइ मानों बगपांति सुहाई ॥
व्रज घर घर सुख संपत्ति छाई । सोई मनहुँ भूमि हरिआई ॥

दोहा- वर्षत परमानंद जल, नंद सदन जगमाहिं ॥
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जनउर सिंधुसमाहिं ॥
सो०-पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि वासर भरत ॥
बढ़त लहरि पुलकाहिं, हरि मुख शशिराकाँ निरखि ॥

कंसहि वहां नींद निशि नाहीं । अति चिंता व्याकुल मन माहीं ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठिप्राता । मंत्री बोलि कहहि सब बाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो व्रजमाहीं । कौन भांति पहिचानों ताहीं ॥
जाते जाय वेगि वह मारो । ऐसो तुम कछु मंत्र विचारो ॥
दिन दिन बड़ो होय अबसोई । कोजानै फिरि कैसो होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा । क्यों डरपत इतनेके काजा ॥
मोपैं एक मंत्र सुनिलीजै । धर्म काज कछु होन न दीजै ॥
जप तप होम होन नहिं पावैं । विप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो यह देव होयगो कोऊ । सहिनहिं सकै प्रकट व्है सोऊ ॥
तब तेहिं असुर जाय संहारै । याविधि शत्रु तुम्हारो मारै ॥

१ पुष्प । २ बिजलीकीसी कान्ति । ३ बगुलोंकीपंक्ति । ४ रात्रि ।

बोलो एक बात यह नीकी । औरौ सुनौ हमारे जीकी ॥
देश देशको असुर पठावो । बालक मासकके जे पावो ॥

दोहा–तिन सबहिनको वधंकरैं, बचन न पावै कोय ॥
इनही में वह होयगो, मार्यो जैहै सोय ॥

सो०–कह्यो कंस हर्षाय, कहे मंत्र दोऊ भले ॥
पठवहु असुर निकायं, जायकरै कारजसँभरि ॥

याविधि असुर बिदा बहु कीन्हों। बाल वधनकी आयसु दीन्हों ॥
कह्यो जाय ब्रज वेगहि कोई । तहँके बालक मारै सोई ॥
कह्यो पूतना आयसुपाऊं । तो यह कारज मैं करिल्याऊं ॥
सकल घोषं शिशु जाय नशाऊं । जोकहिये तौ जीवत ल्याऊं ॥
क्षणमें रूप मोहिनी धारौं । वशीकरण पढ़ि सब परडारौं ॥
घिसि कंकोल उरोजन लाऊं । ब्रजवासिनके बाल पियाऊं ॥
तौ पूतना नाम कहवाऊं । जो नृपको कारज करि आऊं ॥
तुरत कंस तेहि आयसु दीन्हों । सुनतहि वचन गमन तिन कीन्हों ॥
तादिन नंद - मधुपुरी आयो । राजअंश कछु नृप कहँ ल्यायो ॥
नृप दरबार ताहि पहुँचायो । समाचार वसुदेवको पायो ॥
छोड़ि वंदितें नृपने राखे । हते मित्र सुनिक अभिलाखे ॥
मिलनगये तिनको नँदराई । उठि वसुदेव मिले हर्षाई ॥

दोहा–कुशल पूंछि करि परस्पर, बारम्बारसप्रीति ॥
वैठारे नँदराय ढिगं, करिकै आदर रीति ॥

सो०–तब बोले नँदराय, सुनिय देव भावी प्रबल ॥
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके बिवश ॥

तुम अति कष्ट कंसते पायो । सुनि सुनि भयो बहुत पछतायो ॥
आजु देखिकै चरण तिहारे । भये हमारे नैन सुखारे ॥
तब वसुदेव कही मृदु वानी । अहो नन्द तुम सत्यबखानी ॥

१ महिनेमहिनेभरके । २ नाश । ३ समूह ४ गांव । ५ आज्ञा । ६ निकट ।

कर्मरेखे नहिं जात मिटाई । विधिकी गति कछु जात न पाई ॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुह्मारे । तब ते अति सुख भयो हमारे ॥
तुमको जरा आय नियराई । बड़ी बैस विधि भयो सहाई ॥
तव नँद हलधर जन्म सुनायो । प्रथमहिं तिन्हैं रोहिणी जायो ॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनों । कंस त्रासे अपने उरलीनों ॥
सुनि वसुदेव बहुत सुख पायो । तब ऐसे कहि वचन सुनायो ॥
सुनहु नंद तुमनीके जानौ । कंस नृपति कृत नाहिं छिपानौ ॥
ताते अब वे दोऊ बालक । अपने मानि करौ प्रतिपालक ॥
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू । बालक हित पतियाहु न काहू ॥

अथ पूतनावधलीला ॥

दोहा—जित तित भेजे कंसके, करत असुर अनरीति ॥
प्रजा लोगके बालकन, ताते है अति भीति ॥
सो०—गई पूतना आज, ब्रजके बालक घातिनी ॥
करि है कछू अकाज, वेग धाम सुधि लीजिये ॥

सुनि वसुदेव वचन नँदराई । भये बिदा तुरतै भय पाई ॥
निकसत शकुन अशुभ मग पायो । ताते अधिक शोच उर छायो ॥
क्षिप्र चले कछु सुधि तनु नाहीं । बालककी चिन्ता मनमाहीं ॥
इहां पूतना ब्रजमें आई । रूप मोहनी प्रगट बनाई ॥
गरल बांटि कुच सों लपटायो । ऊपर शुभग शृँगार बनायो ॥
अतिही कपट छबीली सोहै । जो देखै ताको मन मोहै ॥
इत उतहै नन्द धामहिं आई । देखि रूप यशुदा मन भाई ॥
देखि रही मुख सुन्दरताई । कै यह नर कै सुरकी जाई ॥
काकी वधू कौनकी बेटी । अबलौं ब्रजमें कबहुँ न भेटी ॥
बिन पहिंचाने आदर कीन्हो । बैठनको शुभ आसन दीन्हो ॥
अहो महरि पालागन मेरो । हौं आई सुत देखन तेरो ॥
हरिपलनापर मन मुसुकाई । यशुमति कछु गृहकाज सिधाई ॥

१ विधाता । २ बुढ़ापा । ३ अवस्था । ४ बलराम । ५ डर । ६ भरोसा मत करो । ७ अन्याय । ८ नाशकरनेवाली ।

दोहा–तबहिं राक्षसी दुर्[1]मति, पलनाके ढिंग जाय ॥
निरखि वदन मुख चूमिकै, लीन्ह उछंग[2] उठाय ॥
सो०–दियो कमल मुख माहिं, विषलपट्यो, अस्तन तुरत ॥
पकर दुहूं कर माहिं, लगे करन पय[3]पान हरि ॥
पय सँग प्राण खिचे जबवाके । ह्वै गये अंग शिथिल सब ताके ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक । सो क्यों छुटै दुष्ट कुलघालक ॥
पय सँग प्राण खींचि हरि लीन्हा। पठै स्वर्ग जननी गति दीन्हा ॥
परी मृतक[5] ह्वै असुर सुनारी । योजन[6]लों निजतनु विस्तारी ॥
यशुमति धाय देखि गुहरायो । पलना पर बालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रज जन धाये । व्याकुल विपुल नन्द गृह आये ॥
अति व्याकुल यशुमति महतारी। ढूंढहिं स्थानहि रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने । करत चरित जो अचरजसाने ॥
ढूंढत ढूंढत उर पर पाये । लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई । जिमि मणि गई भुवंगन पाई ॥
मुदित भई सब ब्रजकी बाला । कहति बच्यो अति नँदको लाला॥
नन्द यशोमति भाग्य बड़ेरी । सुतकी रख[7]वारी करेरी ॥
दोहा–आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमारि ॥
कपट हेतु नहिं सहिसक्यो, तेहि मार्‍यो करतार॥
सो०–कहत यशोमति माय, पुनि पुनि सबके पांयपरि ॥
उबर्‍यो आजु कन्हाय, तुम पंचनके पुण्यते ॥
बड़ो कष्ट यह सुतने पायो । आजु विधाता बहुत बचायो ॥
कोउ कह भाग्यवन्त नँदराई । कुलके देवन करी सहाई ॥
कोउ कह नेक मोहिं सुत देरी । देखहुं मुख मैं पुनि तू लेरी ॥
कोऊ मुख चूमि बलैया लेई । लै उछंग पुनि यशुदहि देई ॥

१ दुर्बुद्धि । २ गोदी । ३ दूध । ४ नाना । ५ मुर्दा । ६ चार कोस । ७ रक्षाकरो । ८ वर्ष ।

बच्यो कान्ह सब व्रज सुधिपाई। घर घर बजी अनँद बधाई॥
तबहिं नंद गोकुलमें आयो। देखि पूतनहिं अति भय पायो॥
जो वसुदेव कही ही बानी। सो सब मनमें सांची जानी॥
तहँ सब व्रजवासी जुरि आये। समाचार सब प्रकट सुनाये॥
तब सुखपाय गये नँद धामहिं। देख्यो जाय सुवन घनश्यामहिं॥
वदन विलोकि हर्ष उरलाये। बहुत दानदै देव मनाये॥
तब व्रजवासी सकल बुलाये। अंग पूतनाके कटवाये॥
बाहर एक ठौर सब कीन्हें। अग्नि लगाय फूंकि सब दीन्हें॥

दोहा—अति सुगंध ता अंगमें, कीन्ही अग्नि प्रकाश॥
हरि स्पर्श प्रतापते, व्रज सब भयो सुवाश॥
सो०—रहे अचम्भो पाय, व्रजवासी चकित सबै॥
चरणकमल चित लाय, नंदसुवनमहिमा सुनत॥

हरि रोये माताकी कनियां। दूध पियायो तब नँदरनियां॥
पुनि पलना पौढाय झुलावै। हुलरावै दुलराय मल्हावै॥
लालनके हित नींद बुलावै। मधुरे सुर जोई सोइ गावै॥
रेलालनको आव निदरिया। तोहिं बुलावत श्याम सुंदरिया॥
जो करि कपट लालको आवै। तौ अबकीलौं विधि विनशावै॥
अहो देवता या कुलकेरे। मैं पूजिहौं कमलपद तेरे॥
वेगि बडो करदे यह बालक। व्रज जन माया पूतना घालक॥
दुतियाके शशि लौं शिशु बाढै। आँवा लौं अरि उर नितडाढै॥
सोवै मेरो बाल कन्हाई। माता मुखकी बलि बलि जाई॥
सोवत देखि मौन गहि रहई। जागत देखि बहुरि कछु कहई॥
अँग फरकाय अल्प मुसुकाने। ता छबिकी उपमा को जाने॥
बार बार शिशु वदन निहारैं। यशुमति अपनो भाग्य विचारैं॥

दोहा—हुलरावत गावत मधुर, हरिके बाल विनोद॥

१ वर। २ मुख। ३ चन्द्रमा। ४ बालक। ५ थोडा। ६ शोभा।

जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुख लेत यशोद ॥
सो०–कबहूं लेत उछंगं, उर लगाय चूमत मुखहिं ॥
निरखि मनोहर अंग, कबहुँ झुलावत पालने ॥

दर्शनको नित सुर मुनि आवैं । बाल बिनोद[2] निरखि सुख पावैं ॥
कहें परस्पर सुर नर नारी । हरिके अद्भुत चरित निहारी ॥
अलख अगोचर अज[3] अविनासी । पुरुष पुरातन विश्वनिवासी ॥
जाको भेद न शिव मुनि जानें । ब्रह्मा पढि पढि वेद बखानें ॥
सो हलरावत नँदकी घरणी । पूरण भई पुरातन[4] करणी ॥
मन अभिलाष बढावत भारी । हुलसत हँसत देत किलकारी ॥
वार्षें प्रसून[5] हर्षि मनमाहीं । धन्य २ कहि ब्रज घर जाहीं ॥
नित नव कौतुक होहिं अकासा। ब्रजवासिन मन अमित हुलासा ॥
यशुदा नवनित लाड लडावैं । निरखि २ ब्रज जन सुख पावैं ॥
नित नव मंगल नंदके धामा । नित नव रूप श्याम अभिरामा ॥
भक्तवछल भक्तन हितकारी । भक्तन हित नाना तनुधारी ॥
भजत संत यह ह्रदय विचारी । जन ब्रजवासी हैं बलिहारी ॥

दोहा–जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रु मम, यह जानी निःशंस ॥
सो०–बसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि ॥
भूलत इक छिन नाहिं, शत्रु भाव लाग्यो भजन ॥

अथ कागासुरवधलीला ॥

कागासुर नृप निकट बुलायो । ताहि मतो सब कहि समुझायो ॥
आवहु वेगि नंदसुत मारी । करियहु कारज बुद्धि विचारी ॥
आयसु[6] धरि शिर गर्ब बढ़ायो । कागरूप तिहि असुर बनायो ॥
वेगवन्त उठि गोकुल आयो । प्रेरितकाल अवधि नियरायो ॥
बैठ्यो नंद धामपर आई । पलना पौढे बाल कन्हाई ॥

१ गोदी । २ बालक्रीडा । ३ अजन्मा । ४ प्राचीन । ५ फूल । ६ आज्ञा ।

ताको आवतही हरि जान्यो। कागन होय असुर पहिचान्यो ॥
यशुदा हरिको सोवत जानी। कछु गृह कारजमें लपटानी ॥
तबहिं असुर पलनापर आयो। चाहत हरिको चोंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हो। चोंच मरोरि फेंकि तिहिं दीन्हो ॥
पऱ्यो जाय नृपपास उतान्यो। यह ब्रजवासी काहु न जान्यो ॥
तुरत कंस तिहि बूझन धायो। बीते यामे बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई। है अवतार महाबल कोई ॥

दोहा–एक हाथसों पकरि मोहिं, फेंकि दियो तुम पास ॥
ह्वै है तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हो विश्वास ॥

सो०–अति डरप्यो महिपाल, कागासुरके वचन सुनि ॥
बढ़िसो गयो विशाल, जम्यो जु उरमें शोचं तरु ॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई। बार बार शिरधुनि पछिताई ॥
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला। ताको अबहीं ते यह हाला ॥
दनुजसुता पूतना पठाई। ताको इकक्षण माँझ नशाई ॥
कागासुरके ऐसे हाला। सातो दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ बीर जु ताहि नशावै। मम कारज करि आप बचावै ॥

शकटासुरवधलीला ॥

ऐसो कौन कहों मैं जासों। अबकै जाय भिरै जो तासों ॥
असुरनको ये नृपति सुनायो। शकटासुर मन गर्व बढायो ॥
उठि कै पान नृपति सों मांगे। कहा काम यह मेरे आगे ॥
तब प्रताप तेहि पलमें मारौं। कहौ तौ सब ब्रजको संहारौं ॥
कंस हर्ष तेहि बीरा दीन्हो। शूर सराहि बिदा तेहि कीन्हो ॥
यहां श्याम पलना पर खेलैं। करगहि पद अँगुठा मुख मेलैं ॥
अपने मन यह करत विचारा। इह मम पैद संतन अधारा ॥

---

१ पहर। २ शोकरूपी वृक्ष। ३ अहंकार। ४ हाथसे पांवतक अंगूठा पकड। ५ मेराचरण।

दोहा—ये पदपंकज[१] राखि उर, निरखत शम्भु सुजान ॥
इनको रस मन मधुप करि, करत निरंतर पान ॥
सो०—पुनि इनपदको ध्यान, करत ब्रह्मसनकादि मुनि ॥
लक्ष्मी अति सुखमान, उरते[२] क्षण टारत नहीं ॥

इन पदपंकज रस अनुरागा । मगन सकल सुर नर मुनि नागा ॥
ऐसोधौं का रस इन माहीं । सोतो मोहिं विदित कछु नाहीं ॥
मोको यह रस दुर्लभ भारी । देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥
ताते पद अँगुठा मुख मेलैं । लैलै स्वाद मगन रस खेलैं ॥
ताअन्तर शकटासुर आयो । पवनरूप कान्हुन लखि पायो ॥
भारे शकट[३] नन्द घर केरे । पलनाके ढिग हते घनेरे ॥
तिनमें सो शठ आय समान्यो । नन्दसुवन तबहीं यह जान्यो ॥
ताको हरि यक लात चलाई । गिऱ्यो शकट तब अति हहराई ॥
दनुज निधन काहू नहिं जान्यो । गिऱ्यो शकट यह सबहिन मान्यो ॥
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये । नन्द आदि सब जुरि तहँ आये ॥
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ । सबके मन अति विस्मय[४] भयऊ ॥
कारण कहा कहैं नर नारी । गिऱ्यो शकट आपुहिते भारी ॥

दोहा०—पलनाढिग खेलत हुते, कछुक गोपके बाल ॥
तिनन कह्यो डाऱ्यो शकट, पलनाते नँदलाल ॥
सो०—सो नहिं करी प्रतीति[५], काहू बालनकी कही ॥
यह तौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामकी ॥

यशुमति अति मन मन पछिताई । भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई । निरखि नन्द पुनि पुनि बलि जाई ॥
मेरे निधनी[६] के धन छैया । लगैं मोहिं तेरि रोग बलैया ॥
ऐसे बहु विधि लाड लडाये । पय पिपाय पलना पौढाये ॥
मन्द मन्द कर ठोंकि सुनावैं । कछु इक मधुर मधुर सुर गावैं ॥

१ चरणकमल । २ हृदयसे । ३ गाडा । ४ आश्चर्य । ५ विश्वास । ६ निर्धन ।

सोवत श्याम शुभग सुंदर वर । चौंकि चौंकि शिशु दशा प्रगटकर ॥
लिये मातु छतियां लपटाई । जनु फणि मणिउर माझ दुराई ॥
मात निरखि मुख आनँद कीनो । चूमि वदन सुत को पय दीनो ॥
कोमल घान अजिरे जब आयो । तब सुत पलना पर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी । नंदहि सुतके ढिग बैठारी ॥
निरखि नन्दसुत आनँद भारी । कमल वदन छबि रहे निहारी ॥
चुटकी दैदै सुतहिं खिलावैं । निरखि निरखि मुख अति सुखपावैं॥

दोहा–किलकि उठे लखि तातमुख, करपदहग अनुराय ॥
झपट झटकि उलटे परे, सुखनिधि त्रिभुवनराय ॥

सो०–सो छवि कहिय न जाय,निरखि नन्द टेरत महरि॥
आप न सकत उठाय,अति कोमल मम सकुच मन॥

नंदहि टेरत सुनि नँदरानी । तजी सुरत दधिमथन मथानी ॥
जाने महरि गिरे सुखदाई । ताते अति आतुर उठिधाई ॥
नंदहि देखि हँसतिहैं पासा । तब धीरज धरि कियो हुलासा ॥
उलटि पन्यो सुत देख्यौं आई । उठि न सकत करसेजलगाई ॥
सो छबि निरखि मातु सुखपायो । तुरत मुदित उलटाय उठायो ॥
उर लगाय मुख चुम्बन लागी । कहत आज मैं भई सभागी ॥
पेटकरियन हरि उलटन लागे । डेढ मासके भये सभागे ॥
चिरजीवहु मम कुवर कन्हाई । आज करौं मैं अनँद बधाई ॥
नंदरानी ब्रज नारि बुलाई । यह सुनि सब आनँद कर धाई ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो । हरषित सबहिन मंगल गायो ॥
बाँटी घर घर पान मिठाई । नन्दसुवन ब्रजजन सुखदाई ॥
धनि धनि ब्रजकी बाल सभागी । हरिके बालचरित अनुरागी ॥

दोहा–जननी अति आनँद भरि, निरखत श्यामलगात ॥
जैसे निधनी पाय धन, मुदित रहत दिन रात ॥

१ मुख । २ दूधपानकराया । ३ आंगन । ४ पेटके बल । ५ माता ।

सो०–धनि धनि ब्रजको बास, धन्य यशोदा धन्य नँद ॥
धनि ब्रजवासी दास, जिनको मन या रस मगन ॥

अथ तृणावर्त्तवधलीला ॥

धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई । बाल चरित लीला सुखदाई ॥
यशुदा भाग्य न जात बखाने । त्रिभुवन पतिको सुतकर माने ॥
हरिको गोदलिये पयप्यावै । विविध भांति करि लाड़ लड़ावै ॥
कबहूं हरि मुखसों मुखलावै । कबहूं हर्षित कंठ लगावै ॥
मो निधनीको धन सुतनान्हा । खेलत हँसत रहौ नित कान्हा ॥
कबधौं मधुर वचन कछु कैहैं । कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं ॥
कब नन्दहि कहि बाबा बोलैं । खेलत इत उत आँगन डोलैं ॥
कबधौं तनक तनक कछुखैहैं । अपने करले मुख मैं नैहैं ॥
कब विधि यह अभिलाष पुरावै । मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकत हरि जननीकी कनियां । करत चरित्र मातुसुख दनियां ॥
तृणावर्त्त हरि आवत जाना । पठयो कंस सहित अभिमाना ॥
भयो गरुवे जननी भरपायो । सहि न सकी तब भुव बैठायो ॥

दोहा–आप लगी गृहकाज कछु, राखि अजिर गोपाल ॥
अति प्रचंड बौडँर उठ्यो, गोकुलपुर तिहकाल ॥

सो०–वातचक्रमिस आय, तृणावर्त्त पापी असुर ॥
हरिको लियो उठाय, अन्धधुंध गोकुल कियो ॥

हरिको लैके गयो अकाशा । धूरि धुन्ध गोकुल चहुँपासा ॥
जहां तहां नर नारि छिपाने । प्रलय काल सब करि सब माने ॥
यशुमति दौरि अजिरमें आई । तहाँ न पायो कुँवर कन्हाई ॥
नन्द नन्द करि शोर लगायो । तेरो सुत अँधवायु उड़ायो ॥
दौरौ वेगि गुहार लगावो । ब्रजवासिनको टेरि बुलावो ॥
अति व्याकुल खोजत नँदरानी । जित तित फिरत भुवनं बिलखानी ॥

---

१ भगवान् । २ माता । ३ विधाता । ४ गोदी । ५ भारी । ६ आंगन । ७ बभूडा । ८ हल्ला । ९ जल्दी । १० मकान ।

तृणावर्त्तको हरि यों कीन्हो । ग्रीव लिपट तिहि नीचे लीन्हो ॥
कठिन शिला पर ताहि गिरायो । ताके ऊपर आपुन आयो ॥
चर चूर करि ताके गाता । कीन्ह भुक्ति मुक्तिके दाता ॥
धूरि धुन्ध सब तुरत विनाशी । खोजत हरिहिं विकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवनितन उपबनमें पाये । लिये उठाय कण्ठ लपटाये ॥
अति आतुर यशुमति पै लाई । ह्वैगइ घर घर अनँद बधाई ॥

दोहा–लिये धायकै मायने, छतियां रही लगाय ॥
नन्द निरखि सुख पायके, मनसो बहुतिक गाय ॥

सो०–बार बार ब्रजनारि, देहिं बसन भूषण मगन ॥
जित तित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो ॥

उबरे श्याम महरि बड़भागी । देखहु धौं कहु चोट न लागी ॥
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हाई । हरिहैं ब्रजके जीवन माई ॥
भली न प्रकृति यशोदा तेरी । इकलो हरिको छांड़त हेरी ॥
घरको काज इनहुँ ते प्यारो । बौरी अजहूं सुरति सँभारो ॥
बहुत बच्योरी आज कन्हाई । भयो पुरबलो पुण्य सहाई ॥
यशुमति सबसों कहत लजानी । अब मैं सीख तिहारी मानी ॥
मोहिं कहा हो यह सुखमाई । मैं तो रंक परी निधिपाई ॥
अब मैं अपनो लाल चितैहों । एकौ क्षण काहू न पैत्यैहों ॥
ऐसे कहि सब सों नँदरानी । कीन्ही बिदा सकल सन्मानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै । देखि देखि मुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी । बार बार पछितात विशेषी ॥
कैसे बच्यो जाऊँ बलिहारी । तृणावर्तकी घात निवारी ॥

दोहा–नाजानी किहि पुण्यते, कों करिलेत सहाय ॥
कियो काम सब पूतना, तृणावर्त्त यह आय ॥

सो०–मातु दुखित जियजानि, कृपासिन्धु वत्सलभगत ॥
बालचरित सुखदान, करन लगे सुन्दर परम ॥

१ देह । २ बाग । ३ संकल्पकी । ४ दरिद्री । ५ विश्वास । ६ दाव ।
७ भक्तवत्सल ।

खेलत मातु उछंग कन्हाई । करत बाललीला सुखदाई ॥
जननी बेसर लटकत देखी । चितवत ताहि बिसारि निमेषी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो । तब जननी कछु बदन उचायो॥
नहिं पहुँचे तब अति उकताई । सो छबि निरखि मातु बलि जाई॥
जननी वदन निकट करि लीन्हों ।तब हरि हुलसिकिलकिहँसिदीन्हों
बिहँसत चमकि परी दुइदतियां । जनु युग बिज्जु बीजकी पतियाँ॥
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली । प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नंद बुलाये । परमानन्द सहित उठि धाये ॥
हो पति सफल करो दृगँ आई । देखहु सुत मुख दतुलि सुहाई ॥
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हो । निरखि तात मुख हरि हँसि दीन्हो
देखत वदन नयन सिथराने । दूध दंत किधौं छबिके दाने ॥
अहो महरि बड़ भाग्य तुम्हारे । सफल फले मनकाज हमारे ॥

दोहा– कछु दिन घट षट मासके, भये श्याम सुखदान ॥
अन्नपराशनके दिवस, बूझहु विप्र बिहान ॥

सो०–सुनि पुलके नँदराय, भये पराशन योग हरि ॥
प्रेमरह्यो उरछाय, सो सुख कापै जाय कहि ॥

अथ अन्नप्राशनलीला ॥

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो । राशि बूझि शुभ दिवस धरायो ॥
यशुमति सो दिन आछो पायो । सखिन बोलि शुभगान करायो ॥
युवतिमहरिको गारी गावैं । और महरको नाम सुनावैं ॥
मणि कंचनको थार मँगायो । भांति भांतिके बासन आयो ॥
नन्दघरनि ब्रजबधू बुलाई । जे सब अपनी जाति सुहाई ॥
कोउ जिवनार कोऊपकवाना । षट्रसके बहु करत विधाना ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने । जिनके स्वाद न जायँ बखाने ॥
अति उज्ज्वल कोमल शुभनीके । कियो विविध विधि मनहुँ अमीके

१ गोदी । २ हाथ । ३ मुख । ४ नेत्र । ५ छै मासमें कुछ कम । ६ प्रथमही बालकके मुखमें अन्न देना ।

यशुमति नन्दहिबोलि कह्यो तब । बोलो महर जाति अपनीसब ॥
आय गये नँद सकल महर घर । ल्याये बोलि सबन आदरकर ॥
बैठारे सब आनि अथाई । भीतर गये आप नँदराई ॥
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये । सुन्दरपट भूषण पहिराये ॥

दोहा–तनु झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहुँ पाँय ॥
बार बार मुख निरखिकै, यशुमतिलेतिबिलाय ॥
सो०–लै बैठे नँदराय, जानि शुभघरी गोद हरि ॥
लीने सदन बुलाय, गोप सकल आँनद भरे ॥

बैठे सकल गोपगण आई । अति आनन्द मगन नँदराई ॥
कनकथार भरि खीर धराई । मिश्री घृत मधु डारि मिलाई ॥
लगे नन्द हरि मुख जुठरावन । गोप वधू लागीं सब गावन ॥
आंगन बाजी विविध बधाई । शंख निशान भेरि सहनाई ॥
षटरसके व्यंजनहैं जेते । हरिके अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये । हरिको यशुमति पै पहुँचाये ॥
हर्षवन्त युवती सचुपायो । लैलै मुख चुंबति उरलायो ॥
विप्रन बोलि दक्षिणा दीन्ही । नानों वस्तु निछावरि कीन्ही ॥
गोपन संग महरि नँदराई । बैठे पनवारे पर जाई ॥
अति रुचि सबहिन भोजन कीनो । बीरा बहुरि सबनको दीनो ॥
गोपबधू सब महरि जिमाई । दैकै पान सुगंधि सिचाँई ॥
इहि विधि सुख बिलसे ब्रजबासी । निरखैं श्याम शुभग सुभराशी ॥

दोहा–सुर सिहाहिं ललचाहिं मुनि, लखि ब्रजजनके भाग ॥
धन्य धन्य कहि सुमनझरि, कराहिं सहित अनुराग ॥
सो०–नितनव मंगलचार, नितनवलीला श्यामकी ॥
को कवि वरणै पार, शेष न पावैं पार जिहिं ॥

नेति नेति जिनको श्रुति गावै । तिनको ब्रज जन गोदै खिलावै ॥
जो सुख नँद भवनके माहीं । तीनि लोक महँ सो कहुँ नाहीं ॥

---

१ ग्वालोंके झुंड । २ सुवर्णका थाल । ३ तरह तरहकी चीजै । ४ नहीं अंत जिनका । कानियां । मकान ।

नित्य नयो सुख यशुमति पावैं । नये नये नित लाड़ लड़ावैं ॥
नयन ओट हरि करत न कैसे । जुगवत रहै फणिकमणि जैसे ॥
निंदति निमिष होत पल ओटा । निरखतही सुखपावति ढोटा ॥
तनक कपोल अधर अरुणारे । तनक तनक कचै घूंघर वारे ॥
कुटिल भ्रुकुटि की रेख सुहाई । मसिंविन्दुक तापर सुखदाई ॥
नयन नासिका भाल विशाला । कलबल बोलन परमरसाला ॥
अल्प दशन चिबु कंदर ग्रीवा । तनुघनश्याम मृदुल छवि सींवा ॥
मातु निरखि नयनन सुखपावैं । प्रेम विवश मति गति बिसरावैं ॥
निरखिरूप यशुमति अनुरागै । कहत कहूं मम दीठि न लागै ॥
तब अँचरातर लेत छिपाई । डारत बार लोन अरुराई ॥

दोहा–कबहुँ झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद ॥
कबहुँ सुवावति पलँगपर, यशुदासहित विनोद ॥

सो०–नित प्रति ब्रजकी बाम, आवैं यशुमतिके सदन ॥
मुदित निरखि घनश्याम, लैलै गोद खिलावहीं ॥

इहि विधि विहरत बाल कन्हाई । कछु दिनमें संतन सुखदाई ॥
लागे चलन घुटुरुवनि आँगन । लगे मातु सों माखन माँगन ॥
खेलत मणिमय आँगन माहीं । देखि रहत लखि निज परछाहीं ॥
कबहुँ तात काँह पकरन धावैं । जानु पाणि विचरत छवि पावैं ॥
कबहूं किलकि तात मुख पेखें । कबहूं हँसि जननी तन देखें ॥
कबहुँ बुलाय लेत नँदराई । कबहुँ जननि ढिग आवत धाई ॥
कबहूं किलकि अनत उठि भाजैं । गिरत परत घुटुवन छवि छाजैं ॥
कबहुँ कि जात जहाँ बलभाई । खेलत गोप बाल समुदाई ॥
कबहुँ कहत कछु खंडित बाता । सुनत होत सुख पूरण गाता ॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै । माखन माँगत सैन बतावै ॥
मात समझ मथनीते लेई । कछु खवाय कछु कर पर देई ॥

१ देखतरहे । २ सर्पकी मणि । ३ बार । ४ श्यामबिन्दु ।

खेलत खात कान्ह मणि अँगना । इत उत करत घुटुरुवन रिंगना ॥
दोहा—करचूरा पग पैंजनी, तनु रंजित रजपीत ॥
उर हरि नख कटि किंकिणी, मुखमंडित नवनीत ॥
सो०—होत चकित चितवाय, बजत पैंजनी शब्दसुनि ॥
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि ॥
खेलत आँगन बाल गोविन्दा । तात मात उर करत अनन्दा ॥
चलत पाणि पदकी परछाहीं । प्रतिबिम्बतमणि आँगन माहीं ॥
मनहुँ शुभग छबि महितलपाई । जल, भाजन जल लेत भराई ॥
किधौं जानि पद कोमलतासन । धरि धरि देत कमलके आसन ॥
निरखि शुभग शोभा सुखदनियाँ । लिये हरषि सादर नँदकनियाँ ॥
नीलजलजतनु सुन्दरश्यामा । शुभग अंग सब छबिके धामा ॥
अरुण तरुण नख ज्योति सुहाई । कोमल कमल चरण सुखदाई ॥
रुनु झुनु पैजनि पाँयन बाजैं । मनसिजयंत्र सुनत सुर लाजैं ॥
कटि किंकिणी जटित खनकारी । पीत झगुलिया सुभग सवाँरी ॥
कर कमलनि चूरा छबिछाजै । रुचिर बाहु भूषण अतिराजै ॥
कठुला हार जो अंग सुहाए । बिच बिच पदिक प्रवाल पुहाए ॥
चारु चिबुक द्युति बरणि न जाई । गोलकपोल परम छबि छाई ॥
दोहा—अरुण अधरमधिदशन द्युति, प्रकट हँसनमें होति ॥
मानहु सुन्दरता सदन, रूप रत्नकी ज्योति ॥
सो०—मधुर तोतरे बैन, श्रवण सुखद मुनि मन हरण ॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनैं नहीं ॥
नाशा सुभग कमल दल लोचन । भाल विशाल तिलक गोरोचन ॥
भृकुटि निकटमसिबिन्दु कलाग्यो।मनो अलि शावकसोयन जाग्यो॥
लाल चौतनी शीश सुहाई । विविध रंग मणि गण लटकाई ॥
बाल दशाके कचघुंघरारे । छिटकिरहे कछु घूमघुमारे ॥

१ बाघंक नख । २ कमर । ३ मक्खन । ४ छायापड़ती है। ५ नीलकमल । ६ कामदेवका यंत्र । ७ मूंगा ।

मंजुल तारन की चपलाई । बाल दशा की ललित सुहाई ॥
चन्द्रबदन सुख सदन कन्हाई । निरखिनन्द आनँद अधिकाई ॥
वदन चूमि उरसों लपटायो । सो सुख कापै जात बतायो ॥
ब्रज युवती सब चितवत ठाढी । मनहुँ चित्र पुतरी लिखि काढीं ॥
प्रेम मगन नँद सुवन निहारैं । गृह कारजकी सुकरति बिसारैं ॥
ब्रजयुवती हरि सों मन लावैं । नन्द सुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रजबासी प्रभु सबके नायक । प्रेमविवश जनके सुखदायक ॥
बालचरित लखि सुर सुख पावैं । योग दशा सनकादि भुलावैं ॥

दोहा–करत बाललीला ललित, परमपुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार ॥

सो०–कापै बरण्यो जाय, बालचरित नँदलालको ॥
कल्पन सकहि न गाय, शेषकोटि शारद सहस ॥

अथ नामकरण लीला ॥

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी । पठये बोलि गर्गमुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो । युग पद कमल शीश तवनायो ॥
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई । जबते भयो कंस दुखदाई ॥
तबते गोकुल नन्द अवासा । जाय रोहिणी कियो निवासा ॥
जाके गर्भ जन्म सुत लीन्हों । कंस त्रासते प्रगट न कीन्हो ॥
नामकरण ताको अब ताई । भयो नाहि तुम बिना गुसाई ॥
करिकै कृपा तहां प्रभु जइये । ताको नाम राखिकै अइये ॥
सुनि वसुदेव वचन सुखपायो । हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो ॥
नन्दराय ऋषि आगम जान्यो । अपनो बड़ो भाग्य करि मान्यो ॥
चरण धोय चरणोदक लीन्हों । अर्घासन अतिहित करि दीन्हों ॥
बडी कृपा कीन्ही ऋषिराजू । मोसम धन्य आँन नाहिं आजू ॥
अति पुनीत भोजन बनवायो । विविध भाँति ऋषिराय जिमायो ॥

दोहा–बहुरि महरि ऋषिरायसों, कह्यो जोरि कर दोय ॥

---

१ दोनों । २ वासछोडा । ३ डर । ४ और । ५ पवित्र । ६ दोनों हाथ ।

किहि कारज प्रभु आगमन, कहौ कृपा करि सोय ॥
सो०-तब बोले ऋषिराज, पठयोहै वसुदेव मोहिं ॥
नामकरणके काज, सुभग रोहिणीसुवनको ॥
सुनत नन्द अति भये सुखारे । लै आये कनियां दोउ बारे ॥
मुनि चरणनमेले दोउ भाई । दई अशीस मुदित ऋषिराई ॥
हरिकी छवि अति आनँदकारी । देखि रहे मुनि पलक बिसारी ॥
प्रथम नन्द बलहाथ दिखायो । जन्मदिवश मुनि पास सुनायो ॥
देखि गर्ग उठि कियो बिचारा । है यह शिशु सब जगत अधारा ॥
अतिशुभ लक्षण बलको धामा । धर्यो नाम तिनको बलरामा ॥
बहुरि नन्द चरणन शिरनायो । कह्यो कि ऋषि मम भागन आयो
तुम सर्वज्ञ अहो मुनिनाथा । देखिये यह बालकको हाथा ॥
मुनिवर देखत चिह्न भुलान्यो । प्रेममगन सब तनु पुलकान्यो ॥
पुनि पुनि हरिको बदन निहारी । बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारी ॥
धन्य नन्द धनि महरि यशोदा । धनि धनि धन्य खिलावत गोदा ॥
सुनहु नन्द मैं सत्य बखानों । इनको तुम सुत करि मत जानौं॥
दोहा-रूपरेख जाके नहीं, अलख अनादि अनूप ॥
सो भक्तन हित अवतर्यो, निजइच्छा अनुरूप ॥
सो०-इनते बड़ो न कोय, ये कर्ता सब जगतके ॥
जो ये करैं सो होय, तुमसों हम सांची कहैं॥
इनके नाम अमितै जगमाहीं । तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं ॥
इन कबहूं वसुदेव के धामा । लियो जन्म सुन्दरवर श्यामा ॥
ताते वासुदेव इक नामा । सो सुमिरत पावहिं नर कामा ॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं । जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरुये जैसे कर्मनि करिहैं । तैसे नाम जगत विस्तरिहैं ॥
दुष्टदलन सन्तन सुखदाई । भूमिभार हरिहैं दोउ भाई ॥

१ रोहिणीके पुत्र । २ बलरामजीका हाथ । ३ लडका । ४ लडके ५ अनेक ।

तुम कबहूं तपकरि यह माँगा। तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा ॥
ताते सुत करि तुम इन पायो। मत जानौ इनको निज जायो ॥
ये अति सुखदायक ब्रजकेरे। करिहैं अति आनन्द घनेरे ॥
सुनि ऋषिमुख हरियश सुखराशी। आनंदे सब ब्रजके बाशी ॥
सुनत नन्द यशुमति सुखपायो। मुनि चरणनको शीश नवायो ॥
बहुत भेंटलै आगे राखी। स्तुति बहुत भांतिसों भाखी ॥

दोहा—बिदा भये ऋषिराज तब, नन्दभाग्य बड़ भाखि ॥
चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उरराखि ॥

सो०—कह्यो हर्षि ऋषिराय, सब वृत्तान्त वसुदेवको ॥
सुनत बहुत सुखपाय, ऋषिहि पूजि कीन्हे बिदा ॥

यशुमति समुझि गर्गकी बानी। आपुनि अति बड़भागिन जानी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो। प्रमुदित स्तनपान करायो ॥
श्याम राम मुख निरखत मोदा। मातु रोहिणी और यशोदा ॥
खँकि खँकि हरि बैठत गोदा। भावत हरिके बाल विनोदा ॥
हरिको गोदलिये दुलरावैं। पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावैं ॥
कबहुँ गावत दैकर तारी। कबहुँ सिखावत चलन मुरारी ॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं। क्रम क्रम ठाढे होन सिखावैं ॥
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावैं। लरखरातलखि मन सुख पावैं ॥
मनहीं मन यों विधिहि मनावैं। कबधौं अपने पांयन धावैं ॥
कबहुक छोंड़ देत अंगनैया। खेलत मुदित तहां दोउ भैया ॥
गौरश्याम बलराम कान्हैया। संगहि संग फिरत दोउ भैया ॥
जिमि बछराके पाछे गैया। ब्रजवासी जनलेत बलैया ॥

दोहा—धवले धूरि धूसरिततनु, बाल विभूषण अंग ॥
अंजन रंजित दृग चपल, निरखत लजत अनंग ॥

सो०—विहरत आनँदकन्द, मणिमय आंगन नन्दके ॥

---

१ अपनापुत्र। २ हाथमें रखकर। ३ प्रसन्नहो। ४ धीरेधीरे।

यदुकुलकैरव चन्द, दहन दनुज कुल वन अनल ॥
कबहूं ठाढ़ि होति गहि मैया। कबहूं डोलत चलत कन्हैया ॥
कुलही चित्र विचित्र झँगुलिया। दमँकि उठत छैलछित दँतुलिया ॥
मुनि मनहरण मंजुमसि बिंदा। सुखद चारु लोचन अरबिंदा ॥
कलबल बचन तोतरे बोलैं। गहिमणि खंभ डगत डगडोलैं ॥
निरखत झुक झांकत प्रतिबिम्बै। देत परम सुख पितु अरु अम्बै ॥
मथति जहां दधि नँदकी रानी। होत खरे तहँ टेकि मथानी ॥
मात तनिकदधि देति खवाई। लेत प्रीति सौं सो सुखदाई ॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी। तनकदही सों तिन रुचि मानी ॥
तनिकसो बदन तनिकसी दँतियां। तनिकसौं अधर तनिकसीबतियां
तनकबदन दधि तनक कपोलन। तनक हँसन मन हरन अमोलन॥
तनक तनक कर तनकै माखन। तनक अँगुरिया तनकै चाखन ॥
तनक तनक भुज चरण सुहाये। तनक स्वरूप मनोज लजाये ॥

दोहा–तनक बिलोकन जासुकी, सकल भुवन विस्तार ॥
तनक सुने यश होतहै, तनक सिन्धु संसार ॥

सो०–तनकरहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये ॥
मिटत सकल भवताप, तनक कृपा जापै करहिं ॥

अथ बरसगांठलीला ॥

बरसगांठ लालनकी आई। द्विषट मासके भये कन्हाई ॥
फूली फिरत यशोमति माई। घरघर ते सब बधू बुलाई ॥
प्रमुदित मंगल गान करायो। आनँद उमगे तूर बजायो ॥
आंगन सकल सुगंधि लिपायो। रचिरचि मोतिन चौक पुरायो ॥
फूले फिरत नन्द सुख भारी। लिये गोपगण सकल हँकारी ॥
द्वारन बन्दनवार बँधाये। ध्वजपताक रचि विविध बनाये ॥
पान फूल फल डार रसाला। हरदिदूब दधि अक्षत माला ॥

१ पकड। २ चमकि। ३ देखन। ४ आठः।

मंगल द्रव्य सकल मँगवाई। बहुमेवा बहुभांति मिठाई॥
यशुमति कीन्ह उबटि अन्हवाये। अंग पोंछि भूषण पहिराये॥
टोपी जरकस पीत झँगुलिया। दमकत द्वैद्वै चार दँतुलिया॥
कठुला कंठ बघनखानीको। किये भाल केसरको टीको॥
लटकत ललित ललाट लटूरी। बरणि न जाय वदन छबिरूरी॥

दोहा–नयन आँज भ्रुकुटी निकट, कियो मातुमसिबिन्द॥
करि शृँगार हरिमुख निरखि, चूम्यो मुख अरविन्द॥
सो०–लिये गोद सुखकन्द, नन्द बोलि यशुमति कह्यो॥
बोलहु भूसुर वृन्द, लग्नघरी आवत चली॥

काहेको अब गहरु[१] लगावत। विप्र वेगि काहे न बुलावत॥
नन्द क्षिप्र वर विप्र बुलाये। पदपखारि आसन बैठाये॥
लै उछंग लालन नंदराई। बैठे हर्ष चौकपर जाई॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावत। बरस गांठ सुख सहित जुडावत॥
ब्रजनारी सब बनिबनि आवैं। मंगल तिलक श्यामको लावैं॥
गावत मंगल कोकिल बैनी। हरि दर्शन प्यासी मृगनैनी॥
तिलक सबनि मोहनके दीन्हों। देखि देखि मुख अति सुख लीन्हों॥
विप्रन बहुत दक्षिणा पाई। बाँटी सबको पान मिठाई॥
धन मणि चीर निछावरि कीन्हे। बार बार नेगिनको दीन्हे॥
तब सारी पचरंग मँगाई। हर्षित महरि वधुन पहिराई॥
देत अशीश सकल अतिमोदा। लेत यशोमति भरि भरि गोदा॥
नित[२] नव[३] गोकुल होत बधाई। सदा श्याम जनके सुखदाई॥

दोहा–धन्य यशोमति धन्य नँद, धन २ बालविनोद॥
धन्य सुवन जिन जननके, रहत सुधारस ओद॥
सो०–धनि धनि ब्रजकी बाल, कहि २ सुर वर्षहिं सुमन[४]॥
धन्य धन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जन सुखद॥

कान्ह चलत पद द्वै द्वै धरनी। होत मुदितलखिनँदकी घरनी॥

१ देर। २ हमेशा। ३ नयेनये। ४ फूल।

करत हुती अभिलाषा जोई। निरखत अपने नयनन सोई॥
रुनुकु झुनुकु नूपुर पग बाजैं। डगमगात डोलत छबिछाजैं॥
बैठ जात पुनि उठत तुरतहीं। देहरिलों चलिजात फुरतहीं॥
धाम अवधि राखत अटकाई। गिरि २ परत नांघि नहिं जाई॥
कीन्हीं तीन पैग जिन बसुधा। देहरिताहि नँघावत यशुदा॥
पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै। लखि सुर मुनि मन विस्मयपावै॥
कोटिन अंड रचै पल माहीं। पलमें बहुरि मिटावै ताहीं॥
ताहि खिलावत यशुमति ग्वारी। नाना विधि सुख करि २ भारी॥
कबहूं दै करतारि नचावै। कबहूं मधुर २ सुर गावै॥
देखि श्याम जननीके ताँईं। आपुन गावत तारि बजाई॥
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजै। लखि छबि मन अभिलाषहि पूजै॥

दोहा–शोभित कठुला कंठकल, उरहरिनख छबिराश ॥
मनहु श्याम घनमें कियो, नवशशिविमल प्रकाश ॥
सो०–जननि कहत बलिजाउँ, नचहु लेहु नवनीत सद ॥
धरत कनक झुन पाउँ, त्रिभुवनपति नवनीत हित॥

बोलन लगे श्याम कलबानी। कछुक तोतरी कछुक सयानी॥
नंदहि तात यशोदा मैया। बलसों दाऊ कहत कन्हैया॥
प्रातहि उठि मांगत दोउ भैया। माखन रोटी देरी मैया॥
अँचरा गहैं न मानत बाता। अति आतुर ठुनकत दोउ भ्राता॥
सुनि २ मधुर बचन सुख पावैं। ताते जननी गहरु लगावैं॥
जननि मध्य सन्मुख संकर्षण। पाछे ठाढ़े सुभग श्यामतन॥
मनौं सरस्वति सँग युगपक्षी। राजहंस अरु मोर बिपक्षी॥
कबँरी गही श्याम खिझलाई। मुक्ता माँग गही बल भाई॥
मनहुँदुहुन निज २ भख लीनों। जननी सों झगरो यह कीनों॥
नंददेखि हँसि २ गएलोटी। यशुमति मुदित कर्मकी मोटी॥

१ हाथ। २ करोड़ों। ३ बाघके नख। ४ बलदेवजी। ५ दोपक्षी। ६ बेणी।

क़तहौं आरि करत गहि चोटी। यहै बात मोहन तेरि खोटी ॥
जो चाहौ सो लेउ दोउ भैया। करहु कलेवा मैं बलि जैया ॥

दोहा-दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ ॥
सो०-जेहि ध्यावैं योगीश, सनकसनंदन आदि मुनि ॥
कौतुकनिधि जगदीश, करतचरित संतन सुखद ॥

अथ ब्राह्मणलीला ॥

चलत लाल पैंजनिके चायन। पुनि २ हर्षित लखि २ पायन ॥
विविध ग्वाल बालन सँगलीने। डगमगात डोलत रँगभीने ॥
कबहूं दौरि द्वार लौं जाहीं। कबहूं भजि आवैं घर माहीं ॥
ब्राह्मण एक नन्दके आयो। महाभाग्य हरिभक्त सुहायो ॥
गोपनको सो पूज्य कहायो। पुत्रजन्म सुनिके उठि धायो ॥
यशुमति देखि अनन्द बढायो। आदर करि भीतर बैठायो ॥
पाँय धोय जल शीश चढायो। पाक करनको भवन[1] लिपायो ॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै। जो भावै सो भोजन कीजै ॥
धेनु[2] दुहाय दूधलै आई। पांडे रुचि करि खीर बनाई ॥
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रितकर। कृष्ण भोग हित थार परसिधर ॥
वेद मंत्र पढिकै हरि ध्यायो। नयन[3] मूंदिकै ध्यान लगायो ॥
नयन उघारि विप्र जब देख्यो। श्यामहि आगे जेंवत पेख्यो ॥

दोहा-अहो यशोदा आपने, सुतकृत[4] देखौ आय ॥
सिद्धपाक[5] सब आयकै, डार्यौ कान्ह जुठाय ॥
सो०-महरि जोरि युगपान, विनय करी द्विजराजसन[6] ॥
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक विधि कीजिये ॥

बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो। ब्राह्मण फिरकर पाक बनायो ॥
जबहीं ध्यान धर्यो मन लाई। तबहीं लागे खान कन्हाई ॥

---

१ मकान । २ गौ । ३ आंख । ४ लडकेका खेल । ५ बनीबनाईरसोई । ६ ब्राह्मण ।

ऐसेहि विप्र न जेंवन पावै । बार बार हरि झूठू आवै ॥
तब यशुमति हरि सों रिसि आई । कतहि अचकरी करत कन्हाई ॥
मैं इच्छाकरि विप्र जिमाऊं । बार २ भोजन बनवाऊं ॥
यह अपने ठाकुरहि जिमावै । ताको तू गोपाल खिझावै ॥
मैया मुहि जनि दोष लगावै । बार बार यह मोहिं बुलावै ॥
नयन मूंदि कर जोरि मनावै । बहुत भाँति कर विनय सुनावै ॥
लैलै नाम कहत प्रभु ऐये । खीर खांड यह भोग लगैये ॥
तब मैं रहि न सकौं उठि धाऊं । याको दीनो भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहिं बुलावै । तब नहिं रहत मोहि बनि आवै ॥
सुनत गूढ मृदुहरिके वयेना । खुलिगये विप्र हृदयके नयना ॥

दोहा–धनि धनि गोकुल नंदधनि, धन्य यशोदा माय॥
धनि व्रजवासी धन्य व्रज, जहँ प्रगटेहरि आय॥

सो०–सफलजन्मप्रभु आज, प्रकटभयो सब सुकृतफल ॥
दीनबन्धु व्रजराज, दियो दरश मोहिं करिकृपा ॥

बार बार कहि नँदके आँगन । लोटत द्विज आनंद मगनमन ॥
मैं अपराध किया बिन जाने । कोजाने किहि भेष समाने ॥
भक्तहेतु वश रहत सदाई । यहै नाथ तुह्मरी बडयाई ॥
जेजे शरण तुह्मारी आये । तेते भये पुनीत सुहाये ॥
पतितउधारन यश विस्तारा । अघ जारन इकनाम तुह्मारा ॥
देह धरत गो द्विज हित लागी । पायो दरश भयो बडभागी ॥
हितकी चितकी मानन हारे । सबके जियकी जाननहारे ॥
शरण २ प्रभु शरण तुह्मारी । दीनदयालु कृपालु मुरारी ॥
हँसतश्यामयशुमति ढिगठाढे । प्रेम मगन मन आनँद बाढे ॥
निजजनजानिकृपाअति कीनी । प्रेम भक्ति हरिताको दीनी ॥
प्रेम मगन द्विज वारहिं वारा । कहि जै जै जै नन्दकुमारा ॥

१ आदर । २ वचन ।

पुनि २ पुलकित देत अशीशा। विदा भयो घरको द्विज ईशा ॥

दोहा–देख चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय॥
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्ष द्विजराय ॥

सो०–यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको॥
चितै वदन बलिजाय,आनँद निधि सुखको सदन॥

अथचंद्रप्रस्तावलीला ॥

शोभा मेरे हरिपै सोहै। मैं बलि बलि पटतरको कोहै ॥
मेरो श्याम मनोहर जीवन। विहँसि श्याम लागे पयपीवन ॥
ठाढी अँजिर यशोदा रानी। गोदी लिये श्याम सुखदानी ॥
उदयभयो शशि शरद सुहावन। लागी सुतको मात दिखावन ॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत। अति शीतलै दृगं तापं नशावत॥
चितै रहे हरि इकटक ताही। करते निकट बुलावत वाही ॥
मैया यह मीठो कैखारो। देखत लगत मोंहि अति प्यारो ॥
देहि मँगाय निकट मैं लैहों। लागी भूख चन्द्र मैं खैहों ॥
देहु वेगि मैं बहुत भुखानो। मांगतही मांगत बिरुझानो ॥
यशुमति हँसतकरतपछतायो। काहे को मैं चन्द्र दिखायो ॥
रोवत है हरि विनहीं जाने। अवधौं कैसे करिके माने ॥
विविधभांतिकरहरिहि भुलावै। आन बतावै आन दिखावै ॥

दोहा–कहति यशोदा कौन विधि,समझाऊं अब कान्ह ॥
भूलि दिखायोचन्द्रमैं, ताहि कहत हरिखान ॥

सो०–अनहोनी क्यों होय, तात सुनी यह बात कहुं ॥
याहि खात नहिं कोय, चन्द्रखिलौना जगतको ॥

यहै देत नित माखन मोको। क्षण क्षण तात देत सो तोको ॥
जो तुम श्यामचन्द्रको खैहौ। बहुरो फिर माखन कहँ पैहौ ॥
देखत रहौ खिलौना चन्दा। हठ नहिं कीजै बालगोविन्दा ॥

---

१ गदगद। २ मुख। ३ अनुसार। ४ आंगन। ५ ठंढा। ६ आंख। ७ जलन।

मधु मेवा पकवान मिठाई। जो भावै सो लेहु कन्हाई॥
गोपाला हठ अधिक न कीजै। मैंबलि रिसही रिस तनु छीजै॥
खसि २ कान्ह परत कनियांते। दे शशि कहत नंदरनियांते॥
यशुमति कहति कहा धौं कीजै। मांगत चन्द्र कहांते दीजै॥
तब यशुमति इक जलपुटलीनो। करमें लै तिहि ऊंचो कीनो॥
ऐसे कहि श्यामहिं बहकावै। आव चन्द्र तोहि लाल बुलावै॥
याहीमें तूतनु धरि आवै। तोहिं देखि लालन सुखपावै॥
हाथ लिये तोहि खेलत रहिहै। नेक नहीं धरणी पर धरिहै॥
जलपुट आनि धरणि पररारुयो। गहि आन्यौ शशि जननी भाख्यो॥

दोहा—लेहु लाल यह चन्द्र मैं, लीनो निटक बुलाय॥
रोवे इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय॥

सो०—देखहु श्याम निहारि, या भाँजनमें निकट शशि॥
करी इती तुम आरि, जाकारण सुन्दरसुवन॥

ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर। बार बार डारत दोऊ कर॥
चन्द्रापकरत जलके माहीं। आवत कछु हाथमें नाहीं॥
तब जलपुटके नीचे देखै। तहां चन्द्र प्रतिबिंब न पेखै॥
देखत हँसी सकल ब्रजनारी। मगन बाल छबि लखि महतारी॥
तबहिं श्याम कछु हँसि मुसकानें। बहुरो मातासों बिरुझानें॥
ल्यों गो री मा चन्दा ल्यों गो। वाही अपने हाथ गहोंगो॥
यह तौ कलमलात जलमाहीं। मेरे करमें आवत नाहीं॥
बाहर निकट देखियत वाही। कहौ तौ मैं गहिल्यावों ताही॥
कहति यशोमति सुनहु कन्हाई। तव मुख लखि सकुचत उडराई॥
तुम तिहि पकरन चहत गुपाला। ताते शशि भजि गयो पताला॥
अब तुमते शशि डरपत भारी। कहत अहो हरि शरण तुम्हारी॥
बिरुझाने सोये दैतारी। लिय लगाय छतियां महतारी॥

१ जिद। २ चंद्र। ३ जलभरी थाली। ४ शरीर। ५ जमीन। ६ पास।
७ वर्तनमें।

दोहा–लैपौढाये सेजपर, हरिको यशुमति माय ॥
अति बिरुझाने आज हरि, यह कहि २ पछताय ॥
सो०–करसों ठोकि सुवाय, मधुरेसुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय, चटपटाय हरि चौंकिकै ॥

अथ पुरातन कथालीला ॥

पौढो लाल कहत महतारी । कहौं कथा इक श्रवणन प्यारी ॥
हर्ष यह सुनि मन वनवारी । पौढ़ि गये हँसि देत हुँकारी ॥
नगर एक रमणीय सुहावन । नाम अवध अति सुंदर पावन ॥
बड़े महल तहँ अगम अटारी । सुंदर विशद चारु गच ढारी ॥
बहुत गली पुर बीच सुहाई । रहैं सदा सब सुगंधि सिचाई ॥
भांति भांति बहु हाट बजारू । अति शृंगार जनु विश्व शृंगारू ॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी । तिनके नारि तीन पटरानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा । तिन जन्मे सुत चार पवित्रा ॥
राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता । चारौं अति सुन्दर गुणवन्ता ॥
तिनमें राम एक व्रतधारी । अतिसुन्दर जिनके हितकारी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई । तिनहिं सतावैं निशिचर आई ॥
तिन नृप सों द्वैसुत लिय माँगी । अपनी रक्षाके हित लागी ॥

दोहा–राम लषण ऋषि लैगये, दनुज हते तिनजाय ॥
ऋषिदीनी विद्या बहुत, तिनको अति सुख पाय ॥
सो०–तहां जनक इकभूप, धनुषयज्ञ ताने रच्यो ॥
कन्यातासु अनूप, जुरे तहां भूपति अमित ॥

ऋषि लैगये कुँवर तहँ दोऊ । जनकराय सन्माने सोऊ ॥
धनुष तोरि भूपन मुखमारी । राम विवाही जनककुमारी ॥
चारहु कुँवर ब्याह तहँ आये । भये अवध पुर अनँद बधाये ॥
रामहिं देन लगे नृपराजू । सज्यो सकल अभिषेक समाजू ॥

१ शोभायमान । २ उज्वल । ३ शत्रुघ्न । ४ राक्षस । ५ निरुपम । ६ बहुत ।

ताही समय कैकयी रानी । चेरीकी मतिसों बौरानी ॥
वचन मांगि राजा सो लीनो । बनको बास राम को दीनो ॥
सुनि पितु वचन धर्म हितकारी । नारी सहित भये वनचारी ॥
तिन्हैं चलत भ्राता सँगलाग्यो । उनके जात पिता तनुत्याग्यो ॥
चित्रकूट गये भरत मिलनजब । दैपद पाँवर कृपा करी तब ॥
युवैती हेतु कपैट मृग मारा । राजिव लोचन राम उदारा ॥
रावण हरण कियो तब नारी । सुनतश्याम घन नींद बिसारी ॥
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनुदेहू । देख भयो यशुदहि सन्देहू ॥

अथ कर्णछेदनलीला ॥

छं०—सन्देह जननीमनभयो हरि चौंकधौं काहे परयो ॥
कहुँदीठ खेलतमें लगी धौं स्वप्नमें कान्हर डरयो ॥
बहु भांति देव मनाय पढि २ मंत्र दोष निवारही ॥
लैपियति पानी वारि पुनि २ राइ लोन उतारही ॥

दोहा—सांझहिते बिरुझाय हरि, करी चन्द्रहित आरि ॥
झिझकिउठयो धौं ताहि ते, रह्यो सुरत उरधारि ॥

सो०—बडभागी नंदनारि, महिमा वेद न कहिसकैं ॥
हरिको बदन निहारि, बिसरावंत त्रय ताप दुख ॥

मात नन्द उठि हरिपै आये । मुखछवि देखनको अतुराये ॥
निशिके द्वंद्व नयन अति आरत । हरुवै करि मुखते पट टारत ॥
स्वच्छ सेजते बदन प्रकाश्यो । द्वंद्वतिमिर नयननिको नाश्यो ॥
मनहुँ मथनपै निधि उडराई । फेणु फोरि कै दई दिखाई ॥
धाये ब्रज जन चतुर चकोरा । इकटकरहे बदन शशि ओरा ॥
फूली कुमुदनिसी महतारी । कहत उठहु सुत मैं बलिहारी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा । जो भावै सो करहु कलेवा ॥
सद माखन मिसरी तब आनी । कछु खवाय धोयो मुखपानी ॥

१ शरीर छोडदिया । २ खडांऊ । ३ स्त्री । ४ छल कियाहुआ हिरण । ५ रात्रि ।

देखि वदन छवि महरि सिहानी । कहति नन्दसों यशुमति रानी ॥
कनछेदन अब हरिको कीजै । कुंडल सहित देख मुखलीजै ॥
बोलि विप्रशुभ दिवश गनायो । जाति कुटुंब सब न्योत बुलायो ॥
कुलब्योहार कियो सब साजा । विविध भांति बहु बाजन बाजा ॥
छंद-बाजी बधाई विविध आंगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरखित अतिशय हर्ष सुमननिवर्ष गोकुल छावहीं ॥
करिप्रथम मुंडन श्यामको पुनि कर्ण वेधन विधलई ॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुरु भेली दई ॥
हँसत सुरगण सहित विधि हरि मात उर अति धुकधुकी ॥
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नाहिं सन्मुख तकी ॥
भरि सींकरोचन देत श्रवणनि निकट करि अतिचातुरी ॥
दैढुर मगाये कनक के कह कहौं छेदन आतुरी ॥
देख रोवत जननि लीन्हे विहँसि तवहीं झुकि अली ॥
हँसत नंद सब युवति गावत झमकि भीतर लेचली ॥
कहति सुरवनिता परस्पर धन्य धन ब्रजभामिनी ॥
नाहिंनइनकी किंकरी सम हम सकल सुरकामिनी ॥
दोहा-करति निछावरि ब्रजवधू, धन मणि भूषणचीर ॥
सकल अशीशत नंदसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥
सो०-पहिरावत नंदराय, ब्रज युवतिन भूषण बसन ॥
आनद उर न समाय, मनहुँ उगम चहुँ दिश चल्यौ ॥
नितही नवमुद मंगल ताके । मंगल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि विधि तात मात सुखपावैं । सुखनिधान सोइ चरित उपावैं ॥
जाको भेद वेद नहिं पावैं । नंद भवनसो कान छिदावैं ॥
निज भक्तन हित नरतनु धारी । करत बाललीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंगनि कछु गावैं । नंद भवन भूषण मनभावैं ॥

तनक तनक चरणनसों नाचै। मन २ रीझ बिविध बिधिरावैं ॥
मन्द मन्द पग नूपुर बाजैं। बाल विभूषण अंग विराजैं ॥
कबहूं भुज उठाय गुहरावैं। धौरी घूमरि गाय बुलावैं ॥
कबहूं माखनलै मुख नावैं। कबहुँ खंभ प्रति बिम्ब खवावैं ॥
माखनै मांग दुहूं करलेई। एक भाग प्रतिबिंबहिं देई ॥
तासों कहत लेत क्यों नाहीं। डारदेत काहे महिमाही ॥
दुर देखत यशुमति महतारी। उर आनंद करति अतिभारी ॥

दोहा–हरषि जननि मुख चूमकै, लीनो गोद उठाय ॥
परमानंदरस मगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥
सो०–कौतुक निधि भगवान, करत चरित नित २ नये ॥
सुन्दर श्याम सुजान, ब्रजवासिनके प्रेमवश ॥

अथ माटीखानलीला ॥

खेलत श्याम धामके द्वारे। सोहत ब्रजलरिका संगवारे ॥
अति अज्ञान सबनिमति भोरी। सबकी प्रीति श्याम सँग जोरी ॥
एक वैस सब परम सुहाये। करत बाललीला सुखपाये ॥
गावत हँसत देत किलकारी। लखि २ सुख पावत महतारी ॥
निरखि रूप सब ब्रजजन मोहै। कोटि काम नाहिं पटतरसोहै ॥
तनु पुलकित अति गद२ बानी। निरखि मनहिं मन महरि सिहानी॥
तबहिं श्यामघन माटी खाई। यशुमति देखि सांटि लै धाई ॥
पकरी भुजा श्यामकी जाई। कहति कहा यह करत कन्हाई ॥
उगलहुबेगि बदन ते माटी। नाहीं तौ मारतिहौं सांटी ॥
सबदिन झुठवतहै सब ग्वालन। मोसों अब कह कहिहौ लालन॥
तब मोहन कीनी लँगराई। कहति किमैं माटी नाहिं खाई ॥
झूंठहि मोको लोग लगावैं। माटी मोको नेकनभावैं ॥

दोहा–झूंठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय ॥
नाहिं माने जो मात तू, दिखराऊं मुँह वाय ॥

---

१ दोनोंहाथ। २ जिनके ज्ञान नहीं। ३ उमर। ४ धूर्तता।

सो०–दीनो मुखहि उघारि, नयन मूंदि माता निकट ॥
देखि चकित नँदनारि, तनकी सुरत रही नहीं ॥
दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं । नभ शशि रवि तारा इकठाहीं ॥
सर[1] सागर सरितो[2] गिरि[3] कानन[4] । सुर सुरनायक शिव चतुरानन ॥
सकल लोक लों कप यम काला । महि मंडल सब अग जग जाला ॥
देखि चरित यशुमति अकुलानी । करते सोंटि गिरति नहिंजानी ॥
बदन मूंदि तब दृगं हरि खोले । डरसमेत माता सों बोले ॥
मैया मैं माटी नहिं खाई । यशुमति चकित रही अरगाई ॥
कहत नंद सों यशुदारानी । हरिकी कथा न जात बखानी ॥
माटीके मिसकरि मुखबायो । तीन लोक तामहँ दिखरायो ॥
स्वर्ग पताल धरणि बन बागा । सुर नर असुर त्रिपुल खग[7] नागा ॥
अपरसृष्टिकहि जाति सुनाहीं । देखो सकल बदनके माहीं ॥
मोको परत सांच सबजानी । जो कछु कही गर्ग ऋषिबानी ॥
चकित नंद सुनि अचरजबानी । मन मन करत विचार बिनानी ॥
दो–नन्द कहत सुनि बावरी, हरि अति कोमल गात ॥
अचरज तेरी बातको, पुनि पाछे पछतात ॥
सो०–अचरज तेरी बात, को जानै देख्यो कहा ॥
कुशल रहो दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत ॥
कहति श्याम सों यशुमति मैया। मैं तेरी बलिहारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बीच न जानी । बृथाश्याम तुम पर रिसि यानी ॥
जरहु हाथ जिन सांटि उठाई । बरहु आंखि जिन दीठ दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन छांठी । खात लाल तुम काहे माटी ॥
सिगरोइ दूध पियो तुमन्यारे । बलको बांट न देहु पियारे ॥
कहत नंद सों यशुमति मैया । दुहो लाल की ठाडी गैयां ॥

---

१ तलाव । २ नदी । ३ पर्वत । ४ वन । ५ कुलठी । ६ आखैं । ७ पक्षी । ८ मुखरी ।

कजरीको पय¹ पियो गुपाला । जो तेरि चोटी बढै विशाला ॥
सब लरकनमें तो तनु माही । वेग वैश बल श्री अधिकाही ॥
मात वचन सुनिके अनुरागे । ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे ॥
खिन पीवत खिन २ कचटोवै । देखि २ मुखहँसति यशोवै ॥
मैया कब बाढैगी चोटी । यह तौं है अबही लौं छोटी ॥
तूजो कहतहि बललौं ह्वैहैं । छोडत गुहत गोड़लौं जैहैं ॥

दो–कितीबार भइ पयपियत, चोटी बडी न होहि ॥
कहि कहि झूंठी बात नित, दूध पियावत मोहि ॥

सो०–सुनि सुनि भोरी बात, सुन्दर श्याम सुजानकी ॥
यशुमति मन न अघात, हँसि लीने उरलाय हरि ॥

भोरहिं महर यमुनतट धाये । दरशन करि अतिही सुख पाये ॥

अथ शालिग्रामलीला ॥

करिअस्नान नन्द घर आये । पूजा हित यमुनाजल लाये ॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता । प्रभु निमित्त आने अति प्रीता ॥
पाँय धोय प्रभु मन्दिर आये । करी दण्डवत प्रेम बढाये ॥
स्थलै³ लीप पात्र⁴ सब धोये । पूजाके सब साज सँजोये ॥
छाप तिलक सब अंग सँवारे । प्रभु पूजाविधि करन सँवारे ॥
कुँवरकान्ह खेलत ते आये । देखत पूजाविधि चितलाये ॥
विधिवत देव नन्द अन्हवाये । चन्दन तुलसी फूल चढाये ॥
भूषण बसन अलंकृत कीन्हें । धूप दीप अतिहित कर दीन्हें ॥
पट अन्तर दै भोग लगायो । आरति चरणनि शीश नवायो ॥
तबहीं श्याम बिहँसि उठि बोले । कहत तात सों बचन अमोले⁵ ॥
बाबा तुम जो भोग⁶ लगायो । सोतो देव कछू नहि खायो ॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई । चितैरहे मुख हँसि नँदराई ॥

---

१ दूध । २ छाती । ३ स्थान । ४ बर्तन । ५ जिसका मूल्य नहीं । ६ नैवेद्य ।

दोहा–कहत नंद सुख पायकै, यों नहिं कहिये तात ॥
देवनको कर जोरिये, कुशल रहो जिहिगात ॥
सो०–हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं ॥
रह्योतिनींहि सुत मानि, करत ब्रह्मलीलासगुण ॥

देखत जननि तहां दुरि ठाढी । मगन प्रेमरस आनँद बाढी ॥
बैठे नंद समाधि लगाई । तब यह लीला रची कन्हाई ॥
शालग्राम मेलि मुख माहीं । बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान बिसर्जन करि नँद जागे । शालग्राम न देखे आगे ॥
खोजत चकित चित्त नँदराई । इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इतउत खोजत पावत नाहीं । भयो बडो अचेरज मनमाहीं ॥
विहँसत हरिके मुखमें जानि । देखत महरि महर मुसकानि ॥
सुनहु तात जननी बलिजाई । उगिलहु शालग्राम कन्हाई ॥
मुखते तबहि काढि ब्रजनाथा । दियो देवता नँदके हाथा ॥
हरिके चरित कहत नहि आवैं । बालविनोद मोद उपजावैं ॥
लखि लखि मात पिता पुलकाहीं । देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ॥
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी । विहरत जहां ब्रह्म अविनाशी ॥

दोहा–परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम वश, विहरत बालक रूप ॥
सो०–प्रेम मगन पितु, मातु निशि दिन जात न जानहीं ॥
क्योंहूं मन न अघात,सुनत वचन देखत दरश॥

अथ अन्हवावनलीला ॥

यशुमति श्यामहिं कह्यो न्हवावन। सुनतहि मचलि परे मनभावन ॥
उबटनले आगे गहि बाहीं । लोटिगये हरि मानत नाहीं ॥
तब यशुमति बहुभांति दुलारे । मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे ॥
उबटन पाछे धर्यो चुराई । फुसलावत सुत श्याम कन्हाई ॥
मैं बलि ऐसी आरि न कीजै । जो चाहौ सो मोपे लीजै ॥
कहत लाल रोवे दुख पावे । ऐसो को जो तोहि रिझावे ॥

१ छिपी । २ छोडिके । ३ आश्चर्य । ४ हँसत । ५ देखिदेखि । ६ देवता ।

अतिरिसते मैं बलि तनु छीजै। सुन्दर कोमल अंग पसीजै॥
बरजंतही बरजत बिरुझाने। करिकरि क्रोध मनहिं अकुलाने॥
धरत धरत धरणी पर लोटे। गहि माताके चीर निझोटे॥
गहि गहि अँगके भूषण तोरैं। दधि माखनके भाजन फोरैं॥
धन्यो तम दल जननी पासै। मानत नाहिं ताहि लखि त्रासै॥
मेहरि बांह धरिकै तब आने। जबहीं तेल उबटने साने॥

दोहा—तब हुचती करि मातुको, गिरत परत गये भाज॥
नेक निकट लागैं नहीं, मनमोहन ब्रजराज॥
सो०—तब पुचकारे मात, साम भेद कहि कहि वचन॥
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवहु तो जानिहौ॥

तुम मेरी रिसको हरि जानौं। मोको नीकी विधि पहिचानौं॥
जोनहिं आवहु मदनगोपाला। आज तुम्हैं तौ बांधौं लाला॥
तबहिं नन्द उतते चलि आये। कहत हरिहि किन अतिहि खिजाये
लै कनियां उरसों लपटाये। बदन चूमि यशुमति पहँ ल्याये॥
कत खिजवत मोहनहिं अयानी। लै हियलाय लिये नँदरानी॥
क्योंहुँ यत्न करिकै जब पायो। तब उबटन हरिके अँग लायो॥
पुनि तातो जल न्हान समोयो। दियो न्हवाय बदन शशि धोयो॥
सरस बसन लैकै तनु पोछ्यो। बहुरो बदन सरोज अँगोछ्यो॥
अंजन दोउ दृगे भरि दीनो। भ्रूपर चारु चखोडा कीनों॥
सब अँगके भूषण मँगवाये। क्रम-क्रम लालनको पहिराये॥
ऐसी रिस नहिं कीजै कान्हा। अब कछु खाउँ जाउ बलि नान्हा॥
तब तुतरात कह्यो काहेरी। जो मोको भावै सो देरी॥

दोहा—कहत जननि या वचन पर, मैया बलि बलि जाय॥
जोइ जोइ भावे लालको, सोइ सोइ ल्यावे माय॥
सो०—किये अमितपकवान, मैं अपने सुतके लिये॥
सो सब कहौं बखान, जो भावे सो लीजिये॥

१ देखिकै। २ नंदराय। ३ धमकायकर। ४ मुखचंद्र। ५ नेत्र।

सदमाखन अरु दही सजायो । तुम्हरे हित पय औटि जमायो ॥
खोवा औट्यो मधुरे मलाई । तापर मिश्री पीसि मिलाई ॥
अरुदधिको अति सरस सवाँरी । तामहि सोंठि मिरच रुचिकारी ॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे । मानहुँ चंद्र अमी मधु खोरे ॥
खुरमा और जलेबी बोरी । जेहि जेंवत रुचि होत न थोरी ॥
अरु लडुआ बहु भाँति सँवारे । जेमुख मेलहु कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरिन परे । अति सुवास उज्ज्वल अति रूरे ॥
पापर घेवर घीउ चभोरे । मिश्रि पीस तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधु साने । तम तुरत करि रोहिणि आने ॥
अतिहीं सुन्दर सरस अँदरसे । घृत दधि मधु मिलि स्वादन सरसे ॥
सरस सवाँरी दाल मसूरी । अरु कीन्हो सीरा घन पूरी ॥
पूरी सुनिके हिय हरि हरषे । तब जेंवन पर मनकरि करषे ॥

दोहा—सुनत यशोदा तुरतही, लै आई हरषाय ॥
बलदाऊको टेरिकै, लीन्हे नन्द बुलाय ॥

सो०—षटरसके परकार, जे वरणे यशुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलबीर दोउ ॥

जेंवत एक थार दोउ बीरा । हरषि श्याम रुचि राख्यो सीरा ॥
तब शीतल जल लियो मगाई । भरि झारी यशुमति लैआई ॥
जल अँचवावत नैन जुडाने । दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हँसि चुरू भराये । तनक तनक कछु मुख पखराये ॥
रचि रचि उजरे पान खवाये । अतिही अधर अरुण हैआये ॥
ठाढे तहाँ सकल ब्रजदासा । लागिरहे जूठनि की आशा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो । उबर्‍यो सो ब्रजदासन पायो ॥
सखावृन्द सिय द्वार पुकारे । खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश रस चातकदासा । हरिय बरषि नवघन छबि पासा ॥
विनय बचन सुनि हर्ष कृपाला । चले मनोहर चाल रसाला ॥

---

१ मिठी । २ अमृत । ३ सुंदर सुगंध । ४ सपेद । ५ साथियोंके झुंड ।

लघु लघु ललित चरणकर लाला। कमलनैन उर बाहु विशाला ॥
चन्द्र बदन तनु छबि घनश्यामा। अंग अंग भूषण अभिरामा ॥

दोहा–निरखत छवि नँदलालको, थकित सकल सुरवृंद ॥
निहश्चल चखन चकोरजनु, तकत शरदको चन्द ॥

सो०–अति आनन्द उमंग, मिले सखनको जाय हरि ॥
व्रीडत कोटि अनंग, क्रीडत बालक वृन्द सब ॥

खेलत दूरि गये कहुँ कान्हा। सखन संग धावतहैं नान्हा ॥
बहुत अबेरभई घनश्यामहि। खेलत ते आये नहिं धामहि ॥
नंदहि तात मातु मोहिं कानन। योंहीं सुनत सुहात जु आनन ॥
मन अवसेरें करत महतारी। पलक ओटरहि सकत न न्यारी ॥
देखत द्वार गलीमें ठाढी। सुतमुख दरश लालसा बाढी ॥
तत्क्षण हरि खेलनते आये। दौरि मातु लै कण्ठ लगाये ॥
खेलन दूरि जातकिन कान्हा। मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा ॥
आज एक बन हाऊ आयो। तुम नाहिं जानत मैं सुनि पायो ॥
इक लरिका भजि आयो तबहीं। सो वह मोसों कहिगयो अबहीं ॥
वहतो पकरि लेतहै तिनको। लरिका करि जानतहै जिनको ॥
चलहु भाजि चलिये निज धामाहिं। यह सुनि टेर लिये बलरामहिं ॥
कनियाँ करि लै आई धामहिं। बडभागिनि यशुमति सुत श्यामहिं

दोहा–रूपरेख जाके नहीं, विधिहर अन्त न पाय ॥
हाऊ सों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत स्वाय ॥

सो०–भाव वश्य भगवान्, भावइ करिके पाइये ॥
भक्तनके सुखदान, तिहि तैसे जैसे भजे ॥

व्रज वीथिन खेलत मनमोहन। हलधर सुबल सुदामा गोहन ॥
और गोप बालक बहुबारे। एक वयस सब हरिके प्यारे ॥
बाल विनोद मोदमन दीने। नानारंग करत रस भीने ॥

---

१ छोटेछोटे। २ नेत्र। ३ लज्जित। ४ कामदेव। ५ फिकर। ६ गोदमें बैठार।

तारी हाथ मारि सब भाजैं । धावत धरत होड कर बाजैं ॥
बरजत बलि हरि तूमति दौरे । लगिहै चोट गोड़े[1] किहुं तोरे ॥
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानों । मेरो गात बहुत बलवानों ॥
है श्रीदामा जोड़ हमारी । तासों मारि भजों मैं तारी ॥
बोलि उठ्यो तबही श्रीदामा । तारी मारि भजो तुम श्यामा ॥
तबहीं श्याम भजे दैत्यारी । धन्यो जाय श्रीदाम हँकारी ॥
तबहरि कह्यौ वदौं नाहि तोहीं । ठाढो भयो छुयो तब मोहीं ॥
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने । कहत सखा सब श्याम खिझाने ॥
तबतो कह्यो दौर मैं जानों । हारि श्याम बुरो अब मानों ॥

दोहा–बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ॥
हारि जीति जाने नहीं, लरकन लावत पाप ॥

सो०–ये हैं तनुके श्याम, झूंठहिं झगरत सखन सँग ॥
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूंछति जननि ॥

मैं बलि क्यों उदास हरि आयो। कौने मेरो लाल खिझायो ॥
मैया म्वाहि दाऊ दुख दीन्हों । मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहाकरौं या रिसके मारे । मैंनाहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरि माता। को तेरो तात कौन तेरो भ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी । तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये । ले वसुदेव यहां निशि[4] आये ॥
मोल कछू वसुदेवहि दीन्हो । ताके पलटे तुमको लीन्हो ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावै । अरु सब लरकन यहै सिखावै ॥
मोही कोतू मारन धावै[5] । दाउहि कबहुं न खीज डरावै ॥
रोष सहित सुनि बतियां भोरी । बढत मातु उर प्रीति नथोरी ॥
सुनहु श्याम बलराम चवाई । झठहिं तोहिं खिझावत जाई ॥
मोहिं गोधनकी सौंह[6] कन्हैया । मेरो सुत तूं मैं तेरि मैयाँ ॥

दोहा–पाछे ठाढे सुनत सब, नन्द श्यामकी बात ॥

१ पाँय गुठने । २ मैया । ३ पिता । ४ रात । ५ दौडै । ६ सौगंध ।
७ पुत्र माता ।

लीन्हें गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामलगात ॥
सो०-बलको धरियो नंद, सुनि मनहर्षे श्याम तब ॥
लीला नटवर चन्द, करत चरित जनमनहरन ॥

अथ भोजनकरनलीला ॥

भोजनके समये नँदराई । करे सुरति बलराम कन्हाई ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया । मोसँग जेंवैं आय कन्हैया ॥
खेलत बहुत बेर भइ आजा । उनबिन भोजन कौने काजा ॥
यशुमति सुनत चली अतुराई । ब्रज घर घर टेरत दोउ भाई ॥
कहत बोल लेवहु कोऊ श्यामहिं । खेलत हैं धौं काके धामहिं ॥
जेंवन सिद्ध सिरात धरोई । उनबिन नंद न जेंवत सोई ॥
ऐसे जननीके सुनि बैना । आये खेलत ते सुखदैना ॥
चलहु तात मैया बलि जाई । जेंवन को बैठे नँदराई ॥
परस्यौ थार धन्यो मग हेरति । मैं तबहीं सों तुमको टेरति ॥
दौरि चलहु आगे गोपाला । छांडि देहु गति मन्दमराला ॥
चलहु वेगि दौरौ दोउ भाई । सो राजा जो आगे जाई ॥
जो जैहै पहिले बलि भाई । तौहँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई ॥
दोहा-आये दौरे श्याम तब, तुरतहिं पांय पखार ॥
बैठे जेंवन नंदके, संग दोउ सुकुमार ॥
सो०-कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाणि दुहुँ ॥
शुभगसांवरे गात, बालकेलि रसवश खरे
बडोकौर मेलत मुख भीतर । आय गई तब मिरचि दशैन तर ॥
तीक्षण लगी नयन भरि आये । रोवत बाहरको उठि धाये ॥
रोहिणि फूंकिदेत मुख माहीं । लिय लगाय उरसों गहि बाहीं ॥
मधुर ग्रास लैतात निहोरे । लै बैठे फुसलाय अँकोरे ॥
जेंवत कान्ह नंदकी कनिया । छबि निरखत ठाढी नँदरनिया ॥

१ भोजन करचो करायो सीलो होत है ।२ हंसकीसी मंदचाल ।३ दांतनके नीचे ।

बेसनके व्यंजन विधि नाना । बरावरी बहु शाक विधाना ॥
मूंग ठरहरी हींग लगाई । दाल चनाकी पीत सुहाई ॥
राज भोगको भात पसायो । उज्ज्वल कोमल सुगँध सुहायो ॥
बेसन मिली कनककी रोटी । सदघृत बोरी पतरी छोटी ॥
आंब आदि बहुभांति सँधाने । दोउ भैया जेंवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर । लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥
आपुन खात नंद मुख नावैं । सो छबि कहत कौनपै आवैं ॥

दोहा–भोजन कर अचमन कियो, लै झारी नँदराय ॥
अपने करसों श्यामको, दीनो वदन धुवाय ॥

सो०–को करि सकै वखान, भाग्य यशोमति नंदके ॥
ब्रह्म रह्यो रुचिमान, वाल रूप जिनके सदन ॥

अथ पयछुड़ावन लीला ॥

वैठे श्याम मातकी कनियां । पियत दूध सुन्दर सुखदनियां ॥
वार बार यशुमति समुझावे । हरिसों स्तन पान छुडावे ॥
कहति श्याम तू भयो सयानो । मेरो कह्यो लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब । हँसत तोहि नाहि लाज लगत अब ॥
जैहैं दांत विगरि सब तेरे । अजहूं छांडि कह्यो करि मेरे ॥
सुनत वचन मुसकाय कन्हाई । अचँरातरमुख लियो छिपाई ॥
आये तबहीं सखा बुलावन । मात कह्यो खेलहु मनभावन ॥
यह सुनि हर्ष उठे वनवारी । मांगतदे चौगान कहांरी ॥
मथनीके पाछे कहि दीन्हों । हर्षित श्याम तहांते लीन्हों ॥
लै चौगान बटाकर आगे । चले सखन देखत अनुरागे ॥
कहत सखनसों हरि हरषाई । खेलहु गे किहि ठाहर भाई ॥
खेलत बनिहै घोष निकासू । हरषि चले सब सहित हुलासू ॥

दोहा–कान्हर हलधर बीर दोउ, भये भुजा बर जोर ॥

१ भात । २ गोद । ३ अंचल । ४ आनंद । ५ गेंद ।

श्रीदामा अरु सुबल मिलि, जुरे सखा इकठोर॥
सो०—और सखनके वृन्द[1], बांटि लिये जुरि जोट[2]जुट॥
अति आँनद नँदनन्द, दियो बटा[3] ढरकाय मँहि॥

अथ चौगानखेलनलीला॥

हरि अपनी बातन लैजाहीं। एक एक सन पावत नाहीं॥
इतते उत उतते इत घेरैं। बटा मारि चौगाननि फेरैं॥
दौरत हँसत खसत उठि मारैं। आप आपनी जीत विचारैं॥
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई। देखत सुर मुनि रहे लुभाई॥
जीतत सखा श्याम जब जाने। करो खेल कछु तब मचलाने॥
कहत सखा सब सुनहु गोपाला। रुगटैयांको[4] कौन खियाला॥
श्रीदामासों हौ तुम हारे। झूंठी सौंहैं खाउ ललारे॥
खेलतमें को काको सैयाँ[5]। कहा भयो जो नंदगुसैयां॥
ताते तुम गर्बित मन महियां। तनक बसत हम तुम्हरी छहियां॥
अति अधिकार[6] जनावत ताते। तुम्हरे अधिक गाय कछुजाते॥
अब नहिं खेलहिं संग तुह्मारे। भये सखा सब रिस करि न्यारे॥
खेल्यो चाहत त्रिभुवन राई। दियो दांव तब पीठ चढ़ाई॥

दोहा—जाके गुणगण अगमअति, निगम न पावत ओर॥
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग, बँधे प्रेमकी डोर॥
सो०—खेलत भई अबेर[7], जननी टेरत श्यामको॥
आवहु धाम सबेर, सांझ समय नहिं खेलिये॥

सांझ भई घर आवहु प्यारे। बहुरि खेलियो होत सबारे॥
आपुहि जाय बांह गहि आने। सुभग श्याम तनु रज लपटाने॥
बोलि लिये यशुमति बलरामहि। लै आई दोऊ सुत धामहि॥
धूरि झारि तातो जल ल्याई। तेल परशि दीन्हे अन्हवाई॥
सरस बसन तनु पोंछि सँवारे। लै गोदी भीतर पगु धारे॥

---

१ समूह । २ जोडी । ३ गेंद । ४ इकरोमटी । ५ मालिक । ६ मालिकपना । ७ बेर ।

करहु बियारू कछु दोउ भाई। पुनि तुमको राखौं पौढ़ाई॥
सीरा पूरी सरस सँवारी। और धरी मेवा बहु न्यारी॥
दीन्हीं परसि कनककी[1] थारी। बलमोहन दोउ करत बियारी॥
मिश्री मिलै दूध औटाई। लै आई तब रोहिणि माई॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत। देखि देखि छबि नयन जुडावत॥
खात खात मोहन अलसाने। बारहि बार श्याम जमुहाने॥
आरससों कर कौर उठावत। नैनन नींद झमकि झुकि आवत॥

दोहा—उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख[2] अरविन्द॥
पौढ़ाये लै सेजपर, बल अरु बाल गोविन्द॥
सो०—सोये बाल मुकुंद, दोउ भैया सुख सेजपर॥
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके॥

माखन मोहनको प्रियलागै। भूखो छिन न रहत जब जागै॥
ताहि बदों जो गहरु लगावै। नहिं मानै जो इन्द्र मनावै॥
मैं इहि जानत बात श्यामकी। दृगमीचे नवनीत खानकी॥
लै मथनी दधि धर्‌यो बिलोई। जबलगि लालन उठहिं नसोई॥
भोरभयो जगहु नँदनंदन। संग सखा ठाढे जगबंदन॥
सुरभी पयहित[3] बच्छ पियाये। पंछी तरु तजि चहुँदिशि धाये॥
चन्द्र मलिन उडगण[4] द्युतिनाशी। नि[5] शिनिघटी रवि[6]किरण प्रकाशी॥
कुमुदिनि[7] सकुची बारिज फूले। गुंजत मधुप लता लगि झूले॥
दरशन देहु मुदित नर नारी। ब्रजबासी प्रभु जन सुखकारी॥
सुनि जननीके वचन रसाला। खोले दृगराजीव विशाला॥
हँसत उठे संतन सुखदाई। मुखछबि देखि मातु बलिजाई॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे। मैं माखन मथि धरेउँ सँवारे॥

दोहा—रोटी अरु माखनतनक, देरीमा मोहिं हाथ॥
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ॥

---

१ सोनेकी थारी। २ मुखकमल। ३ दूध। ४ तारे। ५ रात्री। ६ सूर्य। ७ कुमोदिनी।

सो०–करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि ॥
त्रिभुवनपति सुखधाम, चार पदारथ हाथ जेहि ॥

अथ माखनचोरी लीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावै। और कछू अति रुचि नहिं आवै॥
मधु मेवा पकवान मिठाई। सो मोको नेकहु न सुहाई॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढी। हरिके वचन सुनतरतिबाढी॥
मन मन कहत कबहुँ अपने घर। माखन खात लखौं सुंदर बर॥
बैठे जाय मथनियां पाहीं। अपने करनि काढिकै खाहीं॥
मैं बरु देखहुं कहूं छिपाई। कैसे मोघर जाहिं कन्हाई॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें। ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें॥
गये श्याम ता ग्वालिनिके घर। ठाढे भये जाय द्वारे पर॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं। तब पैठे ताके घर माही॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो। परममुदित अतिही सुख मान्यो॥
रही दबकि दुरि डीठि लगाई। हरिबैठे मथनी ढिग जाई॥
देखी माखन भरी कमोरी। खान लगे करि अति मतिभोरी॥

दोहा–चितै रहे मणि खम्भमें, हरि अपनी प्रति छाँहँ ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ ॥

सो०–तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ॥
हमतुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो। तुमको देखि बहुत सुख पायो॥
अब तुम मेरे सँग नित आवो। यह काहूको मतिहि जनावो॥
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी। उमँगि हँसी ब्रज युवति सयानी॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी। भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी॥
अति आनँद ग्वालिन मनमाही। पूंछत सखी परस्पर ताहीं॥
पायो आज परो कछु तैंरी। कहा तोहि अति आनँद हैरी॥
गद्गद कंठ पुलक तनुतेरो। सो किन कहै कहा सुख हेरो॥

१ प्रीति। २ अपने हाथ। ३ दृष्टि। ४ प्रतिबिम्ब। ५ बराबर। ६ हमेशा।

तनु न्यारो जिय एक हमारो । हमैं तुमैं कछु भेद न न्यारो ॥
सुनहु सखी मैं तोहिं बताऊं । जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊं ॥
यशुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी । आयो आजु हमारे चोरी ॥
खम्भ निकट मथनीको माखन । लियो निकासि लग्यो सो चाखन॥
मैंदुरि भीतर देखन लागी । वा मोहन छवि पर अनुरागी ॥

दोहा—देखि खम्भ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे श्याम ॥
अर्द्ध भाग तेहि देन कहि, प्रगट करो जिन नाम ॥

सो०—तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर वचनसुनि ॥
कहा कहौं तुम वीर, मन हरि लीन्हों सांवरे ॥

मोहिंदेखि तब गयो पराई । सखि सो छवि कछु वरणि नजाई॥
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी । अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहतकि मैं देखन नाहिं पायो । सोइ अभिलाष जासु उर छायो ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानैं । सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥
इहिविधि माखन प्रथम चुरायो । कीन्हों ग्वालिनिको मनभायो ॥
भक्तवछल संतन सुखकारी । पुनि मनमहँ यह बात विचारी ॥
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं । माखन चोर नाम कहवाऊं ॥
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं । ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं ॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं । प्रीति रीति सब मोसों मानैं ॥
इनहींके हित गोकुल आयो । करौं सबनके मनको भायो ॥
यह विचार हरि निज उर ठाना। भक्ति कृपा अम्बुधि भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई । तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई ॥

दोहा—माखन खइये चोरिकै, सब ब्रज वर घर जाय ॥
कीजे बाल विहार यों, मेरे मन यह आय ॥

सो०—सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब॥
भली कही नँदलाल, तुम विन यह बुधिको करै ॥

चले सखन लै माखन चोरी । एक बयस सबहिन मति भोरी ॥

१ छिपी भई । २ जाहिर । ३ इच्छा । ४ इसप्रकार । ५ सुखकरनेवाले । ६ समुद्र ।

देख्यो झांकि झरोखा ओरी । मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी ॥
धर्यो मठा मथनीमें जानो । ऊपर माखनहै लपटानो ॥
ग्वालिनि गई कमोरी मांगन । पाई घात तबहि सुन्दर घन ॥
सखन समेत ताहि घर आये । दधिमाखन सबहिन मिलि खाये ॥
छूँछी मटुकी छांडि सिधाये । हँसत हँसत सब बाहर आये ॥
आयगई द्वारे सोइ बाला । घरसों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटानो । ग्वालिनि यह कछु भेद न जानो ॥
देखि रही हँसि मुखकी शोभा । निरखि रूप लाग्यो मन लोभा ॥
चमकि गये हरि सखन समेता । तबही ग्वालिनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली । चकित विलोकत इत उत ग्वाली ॥
मन हरि लीन्हों मदन गोपाला । जान्यो ग्वालिनि हरिके ख्याला ॥

दोहा–घर घर प्रगटी बात यह, सखावृन्द ले साथ ॥
चोरी माखन खातहैं, नन्दसुवन ब्रजनाथ ॥

सो०–सबके मन अभिलाष, चोरी पकरन पाइये ॥
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये ॥

कहत परस्पर ग्वालि सयानी । सब मोहनके रूप लुभानी ॥
माखन खान देहु गोपालहि । मत बरजो कोउ श्याम तमालहि ॥
तुम जानत हरि कछू न जाने । वे मोहनहैं परम सयाने ॥
कोऊ कहत पकर जो पाऊं । तो अपने गहि कंठ लगाऊं ॥
एक कहत जो मेरे आवैं । तौ माखन हम हरिहि खवावैं ॥
कहत एक जो मैं गहिपाऊं । तौ हरिको बहु नाच नचाऊं ॥
कोउ कहत जो हरिको पैये । तौ गहि यशुमतिपै लै जैये ॥
इक कह आजु हमारे आये । द्वारेहिते मोहिं देखि पैराये ॥
इहि विधि प्रेम मगन सब बाला । सबके हृदय ध्यान नँदलाला ॥
निशि बाँसर नहिं नेक बिसारैं । मिलिबे कारण बुद्धि विचारैं ॥
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर । सखा सबै ठाढे द्वारे पर ॥

१ भाजिगए । २ सखासमूह । ३ भाजिगए । ४ दिन रात । ५ भुलावै नहीं ।

देख्यो भीतर जाय कन्हाई । दधि अरु माखन धर्‌यो मलाई ॥

दोहा–सद्‌माखन देख्यो धर्‌यो, हरषे श्यामसुजान ॥
सखा बुलाये सैनदे, लै लै लागे खान ॥

सो०–इतउत चितवत जात, कछु संशय मनमें किये ॥
बाँटत दधि अरु खात, उठि उठि झांकत द्वारतन ॥

देखतसो ग्वालिनि अंतरकरि । मगनभई अति उर आनँद भरि ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिग बासी । तिन्हैं दिखावत हरि सुखरासी ॥
देखि सखी शोभा अति बाढ़ी । उठि अवलोकि ओटकै ठाढ़ी ॥
किहिविधिसों दधि लेत कन्हाई । सखन देत अरु आपन खाई ॥
बदन समीप पाणि अति राजै । माखन सहित महाछबि छाजै ॥
लै उपहार जलज मनुजाई । मिलत चन्द्रसों बैर बिहाई
गिरि गिरि परत बदनते ऊपर । दुइ दधिसुतके बुन्द सुभगतर ॥
मनोमलय जल आगम हरषत । इन्दु सुधाके कणका बरषत ॥
मुखछबि देखि थकित ब्रजनारी । कहत न बनै रही उरधारी ॥
बालविनोद मोद मन फूली । भई शिथिल सब तनु सुधि भूली ॥
बरजनको स्फुरत न बानी । रही विचारि विचारि सयानी ॥
गये ठगोरी लाय कन्हाई । रहीं ठगीसी सब सुखपाई ॥

दोहा–विश्व भरण पोषण करण, कल्पतरोवर नाम ॥
सोप्रभु दधिचोरी करत, प्रेम विवश सुखधाम ॥

सो०–नित उठि करत विहार, ब्रजमें घर घर साँवरो ॥
ब्रजजन प्राणअधार, माखन चोरी व्याजकरि ॥

श्याम एक ग्वालिनि घर आये । चोरी करत पकरि तिन पाये ॥
कहत करी तुम बहुत ढिठाई । अबतौ घात परेहौ आई ॥
निशि बासर मोहिं बहुत खिझायो । दधि माखन सब मेरो खायो ॥
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहौ । दधि माखन दै छूटन पैहौ ॥

---

१ हाथ । २ कमल । ३ माखन । ४ मानोचंद्रमेसें अमृतकी बूंद बर्षे है । ५ बहाने ।

ताके[1] मुखतन चितै कन्हाई । बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरीसौं मैं छुयो न राई । सखा खाय सब गये पराई[2] ॥
चारु चितौनी चित्त उरझानो । उरते रोष जात नहिं जानो ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां । लिये लगाय ग्वालिनी छतियां ॥
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी । मैं लाऊं दधि खाउ बिहारी ॥
हरिको लेन चली दधि गोरी । हरिहँसि निकसि गये ब्रजखोरी ॥
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी । मन लैगयो साँवरो चोरी ॥
हरिगये और ग्वालिनीके घर । देख्यो जाय न कोऊ भीतर ॥

दोहा—माखन काढि निशंक है, लागे खान कन्हाय ॥
ग्वालिनि आवत जानिघर, तब उठि रहे छिपाय ॥

सो०—ग्वालिनि घरमें आय, मथनी ढिग ठाढी भई ॥
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति[3] चहुं दिशा ॥

अबहिं गई आई इन पायन । आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहां हरि पाये । पकरी भुजा भये मन भाये ॥
तब हरि कहि निज नाम लजाये । नयनसरोज[4] कछुक भरि आये ॥
देखि बदन[5] छबि आनंदही[6]के । दीन्हें जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालिमन परमहुलासा । कहन चली यशुमतिके पासा ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई । हँसिहो सुनि हरिकी लरिकाई ॥
आजगये हरि मो घर चोरी । देखी माखन भरी कमोरी ॥
मैं गइ आन अचानक जबही । रहे छिपाय सकुचिकै तबही ॥
जब मैं कह्यो भवनमें कोरी । तब मोहिं कहि निज नाम निहोरी
लगे लेन लोचन भरि आंसू । तब मैं कानन तोरी सांसू ॥
सुनत श्याम सब रोहिणि कनियां।सकुचत हँसत मंद मुसुकनियां ॥
ग्वालि बिहँसि हरितन डरपायो । माखनचोर पकरि मैं पायो ॥

दोहा—करौ नोयकी दामरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बाँधि सकै को श्याम ॥

१ मुहकीतरफ । २ भागि गये । ३ देखती । ४ नेत्रकमल । ५ मुख । ६ आनंद ।

सो०–यशुमति उर आनन्द, बालचरित सुनि श्यामके ॥
कहत सुनो नँदनन्द, ऐसो काम न करहु सुत ॥

पुनि इक गृह[१] गए नन्ददुलारे । देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे ॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई । फांदि परे पिछवारे जाई ॥
सूनो भवन कहूं कोउ नाहीं । मानहु इनको राज सदाहीं ॥
भांडे मूंदत धरत उतारत । दधि अरु माखन दूध निहारत ॥
रैनि जँमायो[२] गोरस पायो । लगे खान मनु आप जमायो ॥
आहट सुनि युवती घर आई । झलकत देखे कुँवर कन्हाई ॥
अँधियारे घर श्याम गये दुरि । दधि मटुकी ढिग बैठि रहे मुरि ॥
सकल जीव उर अंतरबासी । तहां कछुक चेटक[३] परकासी ॥
ग्वालिनि हरिको इत उत हेरे । पावत नाहीं धाम अँधेरे ॥
कहति अबहिं देख्यो नँदनंदन । कितहि गयो पछतात मनहिं मन ॥
परिगये दीठि ओठ मथनीके । सुन्दर श्याम प्राण गथनीके ॥
तबहीं ग्वालिनि भुज गहि लीन्हों । कहत तुम्हें अब तो मैं चीन्हो ॥

दोहा–कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरेमाहिं ॥
बूझे बदन दुरावँते[४], सूधे चितवत नाहिं ॥

सो०–दधि मथनीमें हाथ, अबका उतर बनाइ हौ ॥
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसी बनै ॥

मैं जान्यो यह घरहै मेरो । ता धोके इत ह्वैगयो फेरो ॥
दृष्टिपरी चीटी दधि माहीं । काढनि लग्यो तिन्हैं इहि ठाहीं ॥
सुनि मृदु[५] वचन ग्वालि मुसकानी । तुमहौ रतिनागर हम जानी ॥
उरलगाय मुख चुंबन कीन्हो । विधिहि मनाय बिदा करि दीन्हो ॥
हरि दरशन बिन क्षण न सुहाई । उरहन मिस यशुमतिपहँ आई ॥
सुनहु महरि निजसुतकी करणी । करत अचँगरी[६] जात न बरँणी[७] ॥
नितप्रति करत दूध दधि हानी । कहँलगि करैं कान नँदरानी ॥

१ घर । २ रातकोजमायो । ३ खेल । ४ छिपाते । ५ कोमल । ६ ढिठाई । ७ वर्याननहींकीजाती ।

मैं अपने मन्दिर अँधियारे। माखन धर्यो दुराय सवारे ॥
सोई ढूंढि लियो हरि जाई। अति निशंक नाहिं नेक डराई ॥
बूझे उत्तर तुरत बनावै। चींटी काढनको करनावै ॥
सुनि ग्वालिनिके वचन सयानी। हँसिकै बोध कियो नँदरानी ॥
यशुमति कहत श्यामसों प्यारे। परघर काहे जात ललारे ॥

दोहा–मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय ॥
तुह्मरे बाल विनोद लखि, मेरो हियो सिराय ॥

सो०–मोपै लीजे श्याम, दधि माखन मेवा मधुर ॥
सब कछु तेरे धाम, परघर जाय बलाय तुव ॥

माखन मांग्यो कुँवरकन्हाई। मुदित मातु तुरताहिं लै आई ॥
लगी खवावन हिय हरषानी। श्याम कह्यो खैहों निज पानी ॥
दियो हाथ धरि भरिकै दोना। चले खात खेलत हरि लोना ॥
सखन संग खेलत वनमाली। यमुना जाति लखी इक ग्वाली ॥
आपचले ताके घर माहीं। पूंछत बात कौनहै काहीं ॥
लखे तहां शिशु दोय अयोने। भीर देखते रोय डराने ॥
इत उत देख्यो गोरस नाहीं। ऊंचे धर्यो सिकहरन माहीं ॥
तब मनमोहन रच्यो उपाई। आनि तहां ऊखल औंधाई ॥
तापर एक सखा बैठारी। ताके कंध चढे बनवारी ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायो। दधि माखन सबही मिलिखायो ॥
दूध डारि बछरू सब छोरे। दिये निकासि बनहिकी ओरे ॥
मही छिरक लरकन डरपाई। चले अग्रकरि सखा कन्हाई ॥

दोहा–ग्वालिनि आवत देखिकै, सखागये सब दौरि ॥
फँसि भीतर मोहन परे, रोंकि लई तिन पौंरि ॥

सो०–रोष भरी मुख बात, प्रेम भर्यो अन्तर हियो ॥
कहत महरके तात, जात कहां दधि चोर अब ॥

---

१ मेरी आंखिनके आगे। २ अपने हाथसे। ३ देखे। ४ दोबालक। ५ भोले।

तब हरि ताके मुखतन[1] देखी । कीन्हे उरनखें घात विशेखी ॥
अति रिस ग्वालिनि मन उपजाई । दोउ भुज पकरि महरिपै लाई ॥
मानौ महरि कह्यो तुम मेरो । अति उतपात[3] करत सुत तेरो ॥
राख्यो गोरस छिके चढाई । ग्वाल कन्ध चढि लिये कन्हाई ॥
माखन खाय दूध ढरकायो । मही छिरक बालकन रुवायो ॥
और कहत सकुचतहौं बाता । कहा दिखाऊं तुमको गाता ॥
हैं गुण बड़े श्यामके माई । इहां सकुचि लरिका ह्वै जाई ॥
बरजत क्यों नहिं सुतहि अनेरो । कहा अहो नितमतिको झेरो ॥
जो कछु राखै दूरि दुराई । तही तही ते लेत चुराई ॥
तापर देत बछरुवन छोरी । वन वन फिरत वही चहुँ ओरी ॥
चोरी अधिक चतुर बनवारी । सुनहु महरि हम इनतें हारी ॥
कहँलगि इनके गुणन बखानों । तुम इनको सूधो मति जानों ॥

दोहा–सुनत ग्वालिनीके वचन, यशुमति हरि तन देखि ॥
भये सकुच युत मुख निरखि, कोमँल[4] ललित विशेखि ॥
सो०–कहत लगावत लोग, झूंठहि सब मेरे सुतहि ॥
कब भये चोरी योग, पांच वरषके तनिकसे ॥

इहिमिसिं[5] देखनको सब आवें । चोरी मेरे सुतहि लगावें ॥
ऐसो तो मेरो न अन्याई । अतिही बालक कुँवर कन्हाई ॥
छीके बँधे भवन अति ऊंचे । तहँ इनकी कैसे भुज पहुँचे ॥
कौन वेग इतनो ह्वैआयो । तेरो गोरस कैसे खायो ॥
हाथ नचावत आवत दौरी । जीभन करहि समुझिकै बौरी ॥
घरही माखन भरी कमोरी । कबहूँ लेत न अँगुरिन बोरी ॥
इतनी सुनत निरखि घनश्यामैं । बिहँसि चलीग्वालिनि निजधामैं॥
हरिसों कहति महरि समुझाई । मैं बलि कहुँ जिन जाहु कन्हाई॥
तुम्हरे कारण षटरस नाना । करि करि राखौं विविध विधाना॥
इतो उपाय करत कितजाई । परघर दधि माखनहिं लगाई ॥

१ मुखकी तरफ । २ हृदयमें । ३ उपद्रव । ४ मुलायम । ५ इसबहाने ।

ब्रजकी बाढी ग्वालि गँवारी । हाट बाँट दधिबेचनहारी ॥
नाहिंकछु लाज न कान विचारैं । बोलत वचन कटुक मुहँ फारैं ॥

दोहा–झूंठो दोष लगायके, नित उठ आवत प्रात ॥
सन्मुख वादतिशंक तजि, विकट बनावत बात ॥
सोहा०–नौलख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घनो ॥
तू कित चोरी जाय, बुरो मानिहै नन्द सुनि ॥

हरिमाखन चोरी रस गीधे । कैसे रहैं प्रेमके बीधे ॥
एक ग्वालि घर माँझ अँधेरे । अति श्यामल तनु परत न हेरे ॥
कछुकधरो गोरस तहँ पायो । प्रथम सुरुचिकर भोग लगायो ॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली । तहँ देखे भीतर बनमाली ॥
भुजा चार धरि दरश दिखायो । ग्वालिनि लखि अति अचरजपायो
दधि माखनके बूंद सुहाये । सुभग श्याम उर अति छबिछाये ॥
मानहु यमुना जलके माहीं । देखि परत उडगँण परछाहीं ॥
इहि छबि निरखि रही छकि ग्वाली । बहुरो भये द्विभुज बनमाली ॥
देखि चरित हरषी ब्रजमाला । चकित विलोकति हर्ष विशाला ॥
मन मन कहति कहा मैं देख्यो । यह जाग्रतके स्वप्न विशेष्यो ॥
प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली । गद्गद कंठ रोमावलि फूली ॥
मन हरि लीनो रूप दिखाई । चले वहांते कुँवर कन्हाई ॥

दोहा–देखि श्यामके चरित तब, ब्रजनारी सुख पाय ॥
होहिं हमारे पुरुष हरि, माँगहि विधिहि मनाय ॥
सो०–घर घर करत विलास, नाना भेष दिखाय हरि ॥
ब्रज जन परमहुलास, देखि चरित गोपालके ॥

देखी श्याम ग्वालि इक ठाढ़ी । गोरस मथति प्रात छबिबाढ़ी ॥
डोलत तनु उघर्‍यो शिर अंचल । वेणी चलत पीठपर चंचल ॥
यौवन मदमाती अठिलानी । करषत रजु दुहुँ करन मथानी ॥
इत उत अंग मोर झक झोरी । गोरे अंग दिननकी थोरी ॥

१ ब्रजकीगलियोंमें । २ खोंटे । ३ प्रेमपगे । ४ तारागण । ५ विधातासे ।

मैंढी उरोजन अँगिया गाढी । मनहुँ काम साँचे भरि काढी ॥
रीझि रहे लखि नन्ददुलारे । लागे खेलन तासु दुआरे ॥
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारेतन । परि गये दृष्टि श्याम सुन्दर घन ॥
बोलि लिये हरुवे[1] सूने घर । लिय लगाय उरसों सुन्दर बर ॥
उमँग अंग अँगिया उर दरकी। तिहिं अवसर सुधि रही न घरकी
तवहीं सुन्दर श्याम सुजाना । भये वरस द्वादश[2] अनुमाना ॥
सो छबि देखि छकी ब्रजनारी । वहुरि भये शिशुरूप[3] निहारी ॥
हरिके कौतुक[4] अति सुखदाई । देखि रहीं मति गति विसराई ॥

दोहा–माखन लै तव श्याम मुख, धरत आपने पान ॥
अतिआनंद उमंग उर, विसरीग्वालि सुजान ॥
सो०–रसिक शिरोमणि श्याम, माखन खाय रिझाय तिय ॥
आये अपने धाम, छविसागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । विन देखे क्षण रह्यो न जाई ॥
उरहनके मिस ग्वालिसयानी । आई देखन हरि सुखदानी ॥
सुनहु महरि सुतके गुण जैसे । कहा कहौं कहि जात न तैसे ॥
माखन खाय मही ढरकायो । चोलि फारि अवहिं भजि आयो॥
गोरस हानि सही लै माई । अब कैसे सहिजात खुटाई ॥
बीचहिं बोलि उठे बनवारी । झूंठहिं मोहिं लगावत ग्वारी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई । दोउ भुज भरि लीनो उरलाई ॥
मेरे कर अपने उर धारी । आपुनहीं चोली पुनि फारी ॥
माखन आपहिं मोहिं खवायो । मैं कब दही मही[5] ढरकायो ॥
अति भोरी सुनि हरिकी बानी । यशुमति ग्वालिन सों रिसियानी ॥
जानति हूं जु कटाक्ष तिहारौ । अति भोरो सुत मेरो वारौ[6] ॥
दैदै दगा बुलावति ताही । सोइ सोइ करत जो भावत जाही॥

दोहा–बोलि बोलि निज निज भवन,भेंटति भरि भरि अंक ॥
भोरे भोरे बालको, ग्वालिनि निलज निशंक ॥

१ धीरेधीरे । २ बारहवर्षके । ३ बालकरूप । ४ चरित्र । ५ पृथ्वी । ६ बालक

सो०–तापर उरनँखलाय, फिरत दिखावति लाजतजि ॥
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन अति भोरी भई ॥

नित उठि उरहन लै उठि धावैं। बिना भीतही चित्र बनावैं॥
मिस करि करि मेरे गृह आई। रहत श्याम तनु दीठि लगाई॥
मेरो पांच वर्षको कान्हा अजहुँ रोय पय माँगत नान्हा॥
कहँ तू यौवनकी मदमाती। हरिके संग फिरत अठिलाती॥
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना। मनहरि लीन्हो राजिव नैना॥
आवत रोष प्रीति मनमाहीं। उत्तर देत बनत कछु नाहीं॥
कछुअ न उत्तर कहि रिसियाई। चली भवन उर राखि कन्हाई॥
यशुमति यहै सिखावति श्यामहिं। कितहो जात पराये धामहिं॥
ये सब गोरसकी मदमाती। फिरत ढीठ ग्वालिनि इतराती॥
नित उठि उरहन देत बिहाने। मुख सँभारि नहिं बात बखाने॥
रुचि उपजै तुहरे मन जोई। मोपे माँगिलेहु किन सोई॥
कहि कहि मधुर वचन निज ताता। सुख उपजावत मेरे गाता॥

दोहा–अपनेहिं आँगन खेलिये, सखन सहित दोउभाय ॥
मोहिं सुख दीजै आपने, बालविनोद दिखाय ॥

सो०–सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभा हरण ॥
गोप बाललै साथ, करत बाललीला ललित ॥

मथुरा जात लखी इक ग्वाली। चौरचि लई ताको बनमाली॥
बैठि रहे ताके पिछवारे। सखा संगलै नंददुलारे॥
कहति परोसिन सों समुझाई। सुनि लीन्हों सो कुँवर कन्हाई॥
बेंचन जाति सखी हौं दहियो। तौलौ मेरे घर तन चहियो॥
सद माखन द्वैमाट धरोई। सौंपि जाति हौं तोको सोई॥
डरतो और कछू ब्रज नाहीं। नंदसुवन सखि आय न जाहीं॥
यौंकहि चली ग्वालिनी जबहीं। सखन सहित हरि पैठे तबहीं॥

१ छातीमें नख मारिकै। २ बहाना। ३ जवानीकीभरीहुई। ४ प्रातःकाल। ५ जानिलीनी।

कछु ग्वालनकी आहट पाई । सोपुनि फेरि घरहि फिरि आई ॥
देखि सखा सब चले पराई । पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हें । तुम कित जात अचकरी कीन्हे ॥
बाँह पकरि लै चली लिवाई । कहत यशोमति देखहु आई ॥
उरहन देत सदा रिसमानो । अब अपनो सुत आय पिछानो ॥

दोहा–वहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज ॥
मैं गहिल्याई श्यामको, बाँह पकरिकै आज ॥

सो०–हरि बैठे निज धाम, खेलत जननीके निकट ॥
कौतुक निधि घनश्याम, करत चरित संतन सुखद ॥

यशुमति सुनि ग्वालिनिकी बानी । देखन चली सुतहि अकुलानी ॥
गये तहां है सुता पराई । देखि यशोमति अतिरिसियाई ॥
तेरे आँखिन मतिहियें नाहीं । बदन देखि पहिचानत नाहीं ॥
देखहुरी याकी गति माई । या कन्याको कहत कन्हाई ॥
तैं जो मेरे सुतको नामा । सूधो करि पायो है श्यामा ॥
तू गहि बाँह कौन को ल्याई । खेलत मेरे धाम कन्हाई ॥
रही बाल हरिको मुख चाँही । समुझि समुझि मनमें पछिताही ॥
बाँह पकरि मैं घरते ल्याई । कीन्हें कैसे चरित कन्हाई ॥
जाल बनैना कछु कहि जाई । रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई ॥
महरि कहत चलि जाहु इहांते । मैं जानत सब तुम्हरी बातें ॥
हरिके चरित कहा कोउ जानै । ग्वालिनि तन दुरि मुरि मुसकानै ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली । बुधि करि जीत श्याम तमाली ॥

दोहा–बहुरि गये इक ग्वालिघर, मनमोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

सो०–सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि हरि ॥
भाजन डारैं फोरि, गोरस दियो लुढाय महि ॥

१ पराईबेटी । २ तेरे हियेकीआँखें नहीं रहीं । ३ देखत । ४ आनंदमेंहोतेभये ।

सोवति लरिकन चुटकि जगाये । मही छिरकि डरपाय रुवाये ॥
बड़ो मांट इक घीको पोखो । बहुत दिननको चिकनो चोखो ॥
सोऊ फोरि कियो बहु टूका । चले हँसत सब मिलिदैकूका ॥
आइ गई ग्वालिनि तेहि काला । निकसत धरिपाये नँदलाला ॥
देख्यो घर बासन सब फोरे । रोवत बाल मही सों बोरे ॥
दोऊ भुज गाढेही लीन्हे । जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ॥
कहति सरोष यशोमति आगे । अब पति रहिहै या ब्रजत्यागे ॥
ऐसे हाल किये गृह मेरे । सुनो महरि लक्षण सुत केरे ॥
माखन खाय दही ढरकायो । मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
बासन फोरि धरे सब घरके । उपज्यो पूत सपूत महरिके ॥
घीको मांट युगन को राख्यों । सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ॥
चलौ दिखाऊं घरको हाला । राखहु बांधि आपनो लाला ॥

दोहा–जननी खोजति कान्हको, करत फिरत उत्पात ॥
नित उठि उरहन सहतिहौं, तू नाहिं मानत तात ॥

सो०–बडे बापके पूत, चोर नाम प्रगट्यो जगत ॥
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तातको ॥

जननीके खीझत हरि रोये । भरि आये नैननिके कोये ॥
झूंठहि मोहि लगावत धगरी । मेरे ख्याल परी हैं सिगरी ॥
यशुमति रोवति देखि कन्हाई । बदन पोंछि लीनो उरलाई ॥
कहति सबै युवतिन यह भावै । नितही नित उठि भोरहि आवै ॥
मेरे बाँरहि दोष लगावैं । झूठहि उरहन मोहि सुनावैं ॥
कबहि गयो तेरे दरवाजे । दूध दही माखनके काजे ॥
धन माती इतराती डोलैं । सकुचति नाहि सँभारि न बोलैं ॥
मेरो कान्ह तनक सों माई । ताहि रुवावत झूंठ लगाई ॥
कब हरि तेरो माखन लीनो । मेरे बहुत दैई को दीनो ॥
कहा भयो घर गयो तिहारे । छियो तनकदधि बालकवारे ॥

१ चिकोटी काटकर ।२ गोरस ।३यशोदाके ।४मेरेलालाको ।५भगवानको दीनो।

ग्वालिन सुनि यशुमतिकी बानी । कहति महरि तुम उलटिरिसानी ॥
नित उठि होय जासुकी हानी । सो क्योंकहे आन नँदरानी ॥

दोहा–तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ ॥
जहां बसे नाहिं पति रहै, तजनि कह्यो सो ठाँउँ ॥

सो०–पूतहि देत पठाय, भडहाई घर घर करन ॥
उरहन देत रिसाय, को बसिहै ऐसे नगर ॥

सखा भीरलै पैठत धाई । आपखाइ तो सहिये माई ॥
जो कछु गोरस घरमें पावै । कछु डारे कछु सखन लुटावै ॥
कहँ लौं सहैं नित्यकी हानी । कबलों करैं नंदकी कानी ॥
इक दिन मेरे मन्दिर आयो । मोको देखत बदन बिरायो ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई । तबके गुण कह कहौं सुनाई ॥
भाजि रह्यो दुरि देखत जाई । मैं पौढी अपने गृह आई ॥
हरैं हरैं आये शिरहाने । चोटी पाटी बाँधि पराने ॥
सुनि मैया याके गुण मोसों । ये सब झूंठ कहतिहैं तोसों ॥
खेलतते मोहि लियो बुलाई । मोपै दधिकी चीटि कढाई ॥
टहल करौं मैं याके घरकी । यह सोवै पति संग निधरकी ॥
सुनत बचन यशुमति मुसुकानी । ग्वालिनिहँसि मुख मोरिलजानी ॥
सुनहु महरि सुतके गुणकाने । समुझहु हैं भोरे कै स्याने ॥

दोहा–करत फिरत उत्पात अति, सब ब्रज घर घरजाय ॥
नित उठि खेलत फागसी, गरियाँवत न लजाय ॥

सो०–बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र वर ॥
इहां होत शिशु भोर, तुम अचरज मानत नहीं ॥

योंकहिगई ग्वालिनी धामहि । यशुमति पुनि पुनि सिखवत श्यामहि
घर गोरस जनि जाहु पराये । तातें रिसात उरहनो लाये ॥
लघु दीरघता कछू नाहिं जानै । झगरो आय झूंठ तबठानै ॥

१ लाज । २ ठौर । ३ भाजिगए । ४ गारी देवेमें नेकलाज नहींकरे । ५ बालक । ६ नंद ।

नौ लख धेनु दूध की तेरे। और बहुत बन चरैं अनेरे ॥
तू कित माखन खात चुराई। छांड़ि देहु अब यह लरिकाई ॥
योंकहि जननी कंठ लगायो। सुन्दर श्याम हर्ष तब पायो ॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला। किये जाय पुनि सोई ख्याला ॥
अपर ग्वालि उरहनलै आई। आइ यशुमति पैं रिसयाई ॥
तेरो सुत मम माखन खायो। सखन सहित अबही भजिआयो ॥
मैंगइ यमुन भरनको पानी। दुपहर दिवस सून घरजानी ॥
गयो भवनमें खोल किवारी। छीकन ते दधिलियो उतारी ॥
खाय लुटाय बहाय पराने। बारक द्वै बरजौ नहिं माने ॥

दोहा–कीन्हो अतिही लाडलो, लाड लडाय बहूत ॥
अबहीं ते ये ढँग करत, जायो नोखो पूत ॥
सो०–सुनि ग्वालिनिके वैन, कहत यशोमति कान्हसों ॥
सिखयो मानत नैन, लै सँठिया डाटति भई ॥

माखन खात पराये घरको। मेरे रहत जहाँ तहँ ढरको ॥
नितप्रति मंथियत सहेस मथानी। तेरे कौन बस्तुकी हानी ॥
कितने अहिर जियत घरमेरे। बेंचत खात मही बहुतेरे ॥
पूत कहावत नन्द महरिको। चोरी करत उघारत फरको ॥
मैया मैं नहिं माखन खायो। मेरे बदन सखन लपटायो ॥
भाजन ऊंचे छिकन चढायो। समुझ देखि मैं कैसे पायो ॥
मैं ये नान्हें हाथ पसारी। किहि विधि माखन लियो उतारी ॥
मुख दधि पोंछत कहत कन्हाई। दोना पाछे पीठि दुराई ॥
डारि सांटि यशुमति मुसुकानी। गहि उर लाय लिये सुखदानी ॥
बाल विनोद मोद मन मोह्यो। निरखत बदन त्रास युत सोह्यो ॥
भक्ताधीन वेद यश गावे। सोहरि भक्ति प्रताप दिखावै ॥
यशुमतिको मुख निरखि अगाधा। बिसरी शिव मुनि ब्रह्म समाधा ॥

दोहा–धन ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजकी गाय ॥

---

१ माता। २ फिरि। ३ और। ४ दिन। ५ हजार। ६ महा। ७ देखि।

जिनको माखन चोरिहरि, नित उठि घर घर खाय ॥
सो०—रहे सकल सुरभूल, ब्रजविलास हरिको निरखि ॥
हरषहिं वरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥

आई कहत और इक ग्वाली। सुनहु यशोमति सुतकी चाली ॥
भाज गये मम भाजन[1] फोरी। माखन खाय मही[2] महिं[3] ढोरी ॥
हांक देत पैठत घरमाहीं। काहू विधि कर मानत नाहीं ॥
सखा संग कीन्हें इक ठौरी। नाचत फिरत साँकरी खोरी ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै। गारी दै दै सबन बुलावै ॥
गोरस हानि करत है सिगरो। कहँलगि कीजै नित उठि झगरो॥
घरघर करत फिरत सुतचोरी। ऐसीविधि बसिहैं ब्रजकोरी ॥
सुनत गोपिका की रिसवानी। कहत श्यामसों नंदकि रानी ॥
तू नहिं मोहि डरात मुरारी। बकत बकत तोसों पचिहारी ॥
षटरस[4] भरे धरे घरमाहीं। सो तू खात पियत क्यों नाहीं ॥
परघर चोरी को नितजाई। देत उरहनो ग्वालि सदाई ॥
मोंको कृपण कहत सब आई। तेरे घर ढोटहु न. अघाई ॥

दोहा—सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तूनहिं मानत बात ॥
अबतोहिं राखों बांधिकै, जानी तेरी बात ॥
सो०—सुनिरी ग्वालिनिबात, कहे देत अब तोहिंमैं ॥
जबहीं पावहु बात, मेरी सौं यहि मारियौ ॥

अबते मोको बहुत खिजाई। साँटिन[5] मारि करौ पहुनाई ॥
अजहूं मानि कह्यौ करि मेरौ। तू घरघर मति फिरै अनेरौ ॥
जननी रिस लखि श्याम डराने। अब नहिं जैहौं धाम बिराने ॥
यों कहि निकरि गये हरिद्वारे। खेलत सखन संग गलियारे ॥
तबही ग्वालि और इक आई। सो यशुमतिसों कहत सुनाई ॥
नंदमहरि सुत भलौ पढ़ायौ। ब्रजघर वीथिनि सोर मचायौ ॥
मारि भजत काहूके लरिका[6]। खोलतहैं काहूको फरका ॥

---

१ वर्तन। २ मठा। ३ पृथ्वी। ४ छःप्रकारके व्यंजन। ५ छून। ६ रा.स्ते।

काहूको दधि माखन खाई । काहूके घर करत भँडाई ॥
गारी देत सकुच नहिं मानै । गैल चलत हठ झगरो ठानै ॥
कह कह हरिके गुणनि बतैयै । तोसों उरहन देत लजैयै ॥
कछु टोना सों पढ़िकर आई । जोइ भावत सोइ करत कन्हाई ॥
पीताम्बर ओढ़त शिरनाई । अंचल दै दै मुरि मुसुकाई ॥

दोहा—तेरीसौं तोसौं कहति, मैं सकुचति यह बात ॥
तेरो मुख हरि लखतिही, सकुचि तनिक व्है जात ॥

सो०—नेक दिखावहु आँखि, नहिं अबते यह ढँग भले ॥
कब लगि कहिये राखि, करत अचकरी श्याम अति ॥

अथ दावरीबंधनलीला ॥

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा । रिस करि उठी साँटिलै हाथा ॥
कहति जो ऐसी रिसमें पाऊं । तो हरिकी गति तुमहिं दिखाऊं ॥
कैसे हाल करौं हरि केरे । लागे तात आज है मेरे ॥
छाँडों नहीं आज बिन मारे । भये श्याम अब बहुत दुलारे ॥
इहि अन्तर आई इक गोपी । बांह गहे हरिकी मुख कोपी ॥
भलो महरि सूधो सुत जायो । चोली हार खोलि दिखरायो ॥
किन नांहि सुतको लाड लडायो । कौने नही कठिन करि जायो ॥
तेरो कछुक अधिकरी माई । बरजत नाहिन नेक कन्हाई ॥
यशुमति हरिको भुज गहि लीन्हो । कहति बहुरि अपनो ढँग कीन्हो ॥
हरुवै साँटिया ह्वैक लगाई । आज बाँधि मेटौं लँगराई ॥
गई भुजा सुतकी बिततानी । इत उत रजु खोजत नँदरानी ॥
हरि जननी उर कोप निहारी । मनमन बिहँसत कौतुककारी ॥

दोहा—अग्नि प्रेरि त्रिभुवनधनी, दियो क्षीर उफनाय ॥
यशुमति लखि तजि हरि भुजा, लगी सँभारन जाय ॥

सो०—इहि विधि भुजा छुडाय, दधि भाजन फोरन लगे ॥
माखन मुँह लपटाय, गोरस दियो लुढाय सब ॥

१ पिता । २ रस्सी ।

रिस में रिस औरै उपजाई । जानि जननि अभिलाष कन्हाई ॥
देखि यशोमति अतिरिसि पागी । पकरि श्यामको बांधन लागी ॥
गर्व जानि नहिं दाम समाई । सब रजु द्वै आंगुरि घटि जाई ॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगावै । हरिके तनु सब ओछी: आवै ॥
देखि यशोमति अति रिसबाढी । मन पछितात ग्वालिनी::ठाढी ॥
देखि सखी यशुमति बौरानी । हरिको बांधन चहत सयानी ॥
हरिको त्रिभुवनपति नाहि जाने । जितने सकल कलेश नशाने ॥
अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके । बांधति महरि उदररजु ताके ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी । इनहूं जिनकी गति नहिं जानी ॥
जलथल जिनकी ज्योति समानी । कही गर्ग सब प्रगट बखानी ॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई । ताहूपर परतीति न आई ॥
तिनहिं देख बांधति नँदरानी । अचरज कथा न जाति बखानी ॥

दोहा—आप बँधावत प्रेम वश, भक्तन छोरत फंद ॥
वदत वेद वाणी विदित, भक्त वछल नँदनंद ॥

सो०—जननिहिं अति रिस जान, यमला अर्जुन सुरतिकरि ॥
दीनबंधु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ॥

जननीके मनकी रुचि जानी । आप बँधायो शारँगपानी ॥
कहत यशोमति लै करडोरी । बांधों तोहिं सकैको छोरी ॥
लै लै रजु ऊखलसों जोरै । हरि लखि बदन नैन जल ढोरै ॥
यह सुनि ब्रजयुवती उठि धाईं । देखि श्यामको सब मुसुकाईं ॥
कहति इन्हैं कोऊ मत छोरो । बहुरि श्याम अब माखन चोरो ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी । मारनको सँटियां करतोरी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी । बिकल भई मन अति अकुलानी ॥
कहति यशोमतिसों सब गोपी । ऐसी कहा पूत पै कोपी ॥
कहा भयो जो बालक पाही । ढरक गई मथनी महि माही ॥
घरघर गोकुल भई दिवारी । तू बांधत हरिकी भुजकारी ॥

१ पेटमेंरस्सी । २ इच्छा । ३ ब्रजकी स्त्रियां । ४ फेरभी । ५ लकुटियाहाथसे ।

ऐसी तोहिं बूझियत नाहीं। गोरस लगि बांधत सुतवाहीं॥
चूक परी हमते इहि भोरें। उरहन दियो बकेस करजोरें॥

दोहा–वार वार जोवत वदन, हुचकिन रोवत श्याम॥
वज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नँद वाम॥

सो०–कित रिस करति अचेत, छोर उदरते दाँवरी॥
डार कठिन करबेत, लोचन भरि भरि लेत हरि॥

जाहु चली अपने अपने घर। तुमहिं सबै मिल ढीठ कियो बर॥
बन्धन छोरनको अब आई। मोको मति बरजो कोउ माई॥
मोहिं आपने बाबा कीसों। अब न पत्याउँ श्यामकी बीसों॥
देखि चुकी मैं इनके ख्याला। उपजे बडे नंदके लाला॥
मैं दवेन हित पय औटायो। कोरी मटुकी दही जमायो॥
जावँन दियो न पूजन पायो। सो सब फोरि भूमि ढरकायो॥
तेहि घर देव पितर कहु काके। भयो कान्हसों सुत घर जाके॥
कहत एक सुन यशुमति बौरी। दधि कारण सुत बांधत दौरी॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्ही। इतनी रिस बालकपै कीन्ही॥
जो अतिही अचकरो कन्हाई। तऊ कोखको जायो माई॥
नेक देखि धौं हरिहि निहारी। कैसे डरत लकुटि डरभारी॥
शोभित सजल सांवरे लोचन। नीरजदल अति ओस भरेजन॥

दोहा–नमित वदन सूखत अधर, कछुकसकुचमें रोस॥
सांझ होत जिमि बात वश, शोभित पंकज कोस॥

सो०–निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वस वारिये॥
प्रकटे नंदनिकेत, को जानै किहि पुण्य वश॥

एक कहति जो आयसु पाऊं। तौ माखन निज घरते लाऊं॥
जेहि कारण कीनी रिस हरिते। अजहुँ न डारत सँटिया करते॥
देखि डरात तोहिं हरिकैसे। सकुचत जलजशीत भय जैसे॥

१ उरहनो बकवो। २ बीसो बिस्वे। ३ जैसे कमलपत्रपर ओसकी बूँद।

बेगि छोरि बंधनपट त्यागी । लै लगाय उर श्याम सभागी ॥
कहन लगीं अब बढि बढि बानी । माखन मोहिं देतिहैं आनी ॥
मानों मेरे घर कछु नाहीं । तब नहिं उरहन देत लजाहीं ॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो । उरहन दै दै मड़ पिरायो ॥
रिसहीमें मोको गहि दीनो । सबको ज्ञान जानि मैं लीनो ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी । देखहु यशुमति सुतहि निहारी ॥
मुख छबि कोटि चन्द्र बलिहारी । यहहैं साह कि चोर बिहारी ॥
नाहिन तरुण किशोर कन्हाई । कितहिं करत इनसों रिस माई ॥
कहा भयो जो उरहन आने । बालक हरि अबही कहँ जाने ॥

दोहा–श्रमित श्रमित जो त्रासते, चपल सजलदृग कोर ॥
मनहुँ मीन वंसी विधे, करत सलिल झकझोर ॥

सो०–लैउठाय उरधारि, छोरि उदरते दांवरी ॥
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदन गोपाल पर ॥

तेरो कठिन हियो है माई । कहत एक ग्वालिनि समुझाई ॥
ऐसो माखन दधि बहि जाई । बांधे कमलनयन जेहिलाई ॥
जो मूरति शिवध्यान लगावैं । सपनेहुँ सुर नाहिं देखन पावैं ॥
निगमनहूं खोजत नाहिं पाई । सोतैं दै करतार नचाई ॥
याही ते तू गर्ब भुलाई । घर बैठे तेरे निधि आई ॥
काहूको सुत रोवत देषी । लेत धाय उरलाय विशेषी ॥
अब यह कित सीखी चतुराई । निजसुतसों इतनी कठिनाई ॥
कहत एक देखहु नँदनारी । कबके ऊखल बँधे मुरारी ॥
गयो कुँधाते मुख कुम्हिलाई । अति कोमल तनु श्याम कन्हाई ॥
भई बेर बीते युग यामा । हरिके निकट आय गो वामा ॥
तू लागी गृहकारज माहीं । है निर्दयी दया कछु नाहीं ॥
घरको काज इनहुँते प्यारो । यशुमति नेक न हृदय विचारो ॥

१ क्रोधमें पकरकेदीन्हों ।२ दूसरी ।३ कठोर ।४ भूंकसे ।५ मुलायम ।६ दोपहर ।

दोहा–जलज लोल लोचन सजल, भये त्रास ते दीन ॥
चितवत तेरे बदन तन, मन मोहन आधीन ॥
सो०–केतिक गोरस हान, जाको तोरत कानतू ॥
वारि दीजिये मान, रोम रोम पर श्यामके ॥

हरिको देखि सखा इक धायो । तिन हलधरसों जाय सुनायो ॥
अहो राम तुह्मरो लघु भैया । बांध्यो आज यशोदा मैया ॥
काहूके लरिकहि हरि मान्यो । यशुमति पै तिन जाय पुकान्यो ॥
तबते हरिहि बांधि बैठायो । छोड़ति नाहिन सबहि छुड़ायो ॥
सो हम तुमहिं जनावन आये । हलधर सुनत तुरत उठिधाये ॥
माता डरतनु अतिहि त्रसाये । हरिहि देखि लोचन भरि आये ॥
कहत भले दोउ भुजा बँधाये । ऊखलसों बांधे हरि पाये ॥
मैं बरजे कइ बार कन्हाई । अजहूं छोडि देहु लँगराई ॥
दोउ कर जोरि कहत री मैया । काहेको बांध्यो मेरो भैया ॥
श्यामहि छोड़ि बांध बरुमोहीं । और कहा कहिये अब तोहीं ॥
मेरो प्राण अधार कन्हाई । ताकी भुज मोहिं बँधी दिखाई ॥
कौन काज गोरस धन धामा । जेहि कारण बांध्यो घनश्यामा ॥

दो–छुवतो और जो तनु कोऊ, आज देखतो सोय ॥
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करेसो होय ॥
सो०–तेरे वश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते ॥
तू पहिचानत नाहिं, गोरस हित बांधत हरिहि ॥

सुनहु बात हलधर तुम मेरी । करन देहु सेवा इनकेरी ॥
माखन खात परायो जाई । मगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुमहा कहो कमी किहि केरी । नवनिधिकी मेरे घर ढेरी ॥
हौं हारी बरजत दिनराता । मानत नाहिन मेरी बाता ॥
कहा करौं हरि अतिहि खिझाई। भयो बहुतही ढीठ कन्हाई ॥
मेरो कह्यो तनक नाह मानै । नित उठि टेक आपनी ठानै ॥

१ कमल । २ चंचल । ३ दाऊजीसों । ४ मनाकरते हुये ।

भोर होत उरहन लै आवै । ब्रज युवतिनते मोहिं लजावै ॥
जहँ तहँ धूम मचावत जाई । घरनाहिं रहते क्षणक कन्हाई ॥
तुमहूं दोष देत हौ मोही । कान्हरते प्यारो दधितोही ॥
तोहि तजि और कहो किहि मैया।और को मेरो मान रखैया ॥
तेरी सौं जननी सुन मोही । उरहन देत झूंठ सबतोही ॥
है सब ब्रजको श्याम पियारो । श्याम सकल ब्रजको रखवारो ॥

दोहा–दधि माखन पय कान्हको, कान्हाकी सबगाय ॥
मोहूंको बल कान्हको, तू नहिं जानत माय ॥
सो०–बलदाऊकी बात, सुनि हँसिकै यशुमति कह्यो ॥
तुम यकमति दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥

हरिहि देखि हलधर मुसकाने । यह तुम गति तुम बिन को जाने ॥
को तुम छोरन बांधन हारा । तुम छोरत बांधत संसारा ॥
कारन करन करत मनमाने । अति हित यशुमति हाथ बिकाने
असुर सँहारन जन दुखमोचन । कमलापति राजीव विलोचन ॥
भक्तनके वश रहत सदाई । ताहीते कछुओ न बसाई ॥
हरि यमलार्जुन तरुतन हेरे । मनम कहत दास ये मेरे ॥
अबहीं आजु इन्हें उद्धारौं । दुसह शाप मुनिवर को टारौं ॥
इनहींके हित भुजा बँधाई । परसि विटप अब देहुँ गिराई ॥
दारुण दुख इनको सब टारौं । इहि मिसिकरि बंधन निरबारौं ॥
भक्त वछल हरि दीनदयाला । करुणासिन्धु अगाध कृपाला ॥
भक्ताधीन वेद यश गावैं । पावन पतितनाम कहवावैं ॥
भक्तहेतु नाना तनुधारी । करत चरित भक्तन सुखकारी ॥

दोहा–ब्रजबासी प्रभु भक्ति हित, आप बँधायो दाम ॥
ताही दिन ते प्रकटहै, दामोदर सो नाम ॥
सो०–नंद नँदन घनश्याम, जन रंजन भंजन विपति ॥
मेटत जिनको नाम, पाप शाप त्रय ताप दुख ॥

---

१ एकसलाह । २ लक्ष्मीपति । ३ कमलनेत्र । ४ नारद । ५ वृक्ष । ६ रस्सी ।

यशुदा बाहिर छांडि कन्हाई। लगी मथन दधि भीतर जाई॥
कहत बचन रसरिस लपटाने। खात फिरत दधि धाम बिराने॥
षटरस छांडि आपने धामा। चोरी प्रगट करतहैं श्यामा॥
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई। जहां तहां ब्रज धूम मचाई॥
रहौ तुमहु हलधर चुपसाधी। इनकी मेटन देहु उपाधी॥
ऊखलसों बांधे वनवारी। कहत यशोमति सों ब्रजनारी॥
कान्हहुँ ते तोहिं माखन प्यारो। अरी देखि तरसत हरिवारो॥
डारिदेहि मथनी नँदरानी। ह्वैहै हरिकी भुजा पिरानी॥
दूध दही हरिपै सब वारौ। मोहन जीवन प्राण हमारो॥
हरुवे बोलि उठी नँदरानी। जाहु सबै तुम युवति सयानी॥
मैं खोझत[1] लरिकहि गुण काजे। तुम कित झुरत दई बिनकाजे॥
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये। अबहींते अवगुणनहिं चहिये॥

दोहा–युवति चलीं विरुझाय[2] सब, कहत यशोदहिं पोच॥
मूरखसों कहिये कहा, करत प्रेम बश शोच॥

सो०–कहा करैं बलि जाउँ, कहत चलीं सब श्यामसों॥
धरत यशोदहिनाउँ, अति कठोर मानत नहीं॥

तबहिं श्यामसुंदर यह ठानी। युवती धाम गईं सब जानी॥
गृहकारज जननी अटकायो। आप यमलअर्जुन पहँ आयो॥
परसत पात उठे झहराई। परे शब्द आघात सुहाई॥
उखरे मूल सहित अरराई। दिये धरणि दोउ तरुन गिराई॥
भये चकित सब ब्रजके बासी। रहे सकुचि तनु सुधि बुधि नासी॥
कोइ भूमि कोइ तकत अकासा। रहे घडीइक लौ जकि त्रासा॥
याही अन्तर युगल कुमारा। प्रगटे धनद[3]तनय सकुमारा॥
नारद शाप पाय दोउ भाई। भये हुते ब्रजमें तरुआई॥
हरिके परशत निजगति पाई। भये पुनीत मिटी जडताई॥
तिन्हैं कृपालु अनुग्रह कीन्हों। चारि भुजाकरि दरशन दीन्हों॥

---

१ बाँहदूखती होंगी। २ खिसियानी ह्वैकै। ३ कुबेरके।

देखि दरश अति पुलक शरीरा। परे चरण दोउ बंधु अधीरा॥
बारबार पदरज शिरधारीं। जोरि पाणि स्तुति अनुसारी॥
छं०-अनुसारि अस्तुति युगल प्रेमानँद मगनसन्मुखखरे॥
जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धरि ध्यावत हरे॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे॥
धनि धन्य ब्रज धन गोप गोपी गाय दधि माखनमही॥
धन्य गोविंद बाल लीला करत माखन चोरही॥
धनि धनि उरहनोदेत नित उठिधन्य अनखबढावही॥
धन्य जननी बाँधि राखति जाहि वेद न पावही॥
धन्य सो तरुजासुकोरँजु श्याम भुजन बँधायइयौ॥
धन्य सो तृण जासु ऊखल धनि सुजन गढि लाइयौ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्ह्यो अति अनुग्रहसो कियो॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो॥
अब कृपा करि देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै॥
जहाँ जन्महिं कर्म्मवश तहँ एक तुम्हरी रति[3] रहै॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीब्रजनाथजू॥
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू॥
दोहा-बार बार पदनाय शिर, विनती प्रभुहिं सुनाय॥
प्रेम मगन निरखत वदन, हर्ष सहित दोउ भाय॥
सो०-साधु साधु कहि नाम, भक्ति दान तिनको दियो॥
विदाकिये घनश्याम, हर्षिगये निज पुर युगल॥
वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई। देखे अजिर न कुँवर कन्हाई॥
परे विटप महि लखि अकुलानी। श्याम दबे तरुतर यह जानी॥
आरत महरि पुकारन लागी। बांधे हरिमैं परमअभागी॥
सुनत शोर ब्रज जन उठि धाये। नन्द द्वार सब आतुर आये॥

१ पुत्र-नलकूबर, मणिग्रीव। २ रस्सी। ३ आपमें प्रीति।

देखि गिरे तरु मनहिं डराने । ढूंढत श्यामहिं अतिहि सकाने ॥
बारबार सब करहिं विचारा । गिरे कौन विधि विटप अपारा ॥
देखे दुहुँतर बीच कन्हाई । रहे त्रसित ऊखल लपटाई ॥
धाय लिये भुज छोरि उठाई । ब्रज युवतिन उर लीन्हे लाई ॥
कहत सबै नन्दहि बडभागी । बचे श्याम कहुँ चोट न लागी ॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूँ । देत दोष यशुमतिको सबहूं ॥
नयननीर भरि दौरि यशोदा । लियो लगाय कंठ भरि गोदा ॥
जरहु सोरिस जिन तुमको बांध्यो।जरहु हाथ जिन जेवरि साँध्यो ॥

दोहा—नन्द मोहिं कहिहैं कहा, देखत तरुवर आय ॥
कुशल रहौ अब भ्रात दोउ, मैं लै मरहुँ बलाय ॥
सो०—श्याम रहे लपटाय, अति सभीत उर मातुके ॥
बार बार बलि जाय, यशुमति मन पछितात अति ॥

ब्रज युवती लै लै उर लावैं । निरखि वदन तनमन सुख पावैं ॥
मुख चूमत यह कहि पछिताहीं । कैसे बचे अगमतरु माहीं ॥
बड़ी आयु हरिकी है माई । जहां तहां विधि होत सहाई ॥
प्रथम पूतना मारन आई । पय पीवत वह तहां नशाई ॥
तृणावर्त्त लै गयो उड़ाई । आपहि गिऱ्यो शिलापर जाई ॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो । सुनी कहति जिय लेत पराान्यो ॥
शकटासुर पलना ढिग आयो । कोजानै तेहि काहि गिरायो ॥
कौन कौन करवर विधि टारी । ऊखलसों बाँधे महतारी ॥
तहँतेउ उबऱ्यो आज कन्हाई । ऊपर वृक्ष परे भहराई ॥
सबहिन पेलि करत मनभाई । पुण्य नन्दके बच्यो कन्हाई ॥
भुजपर बन्धन चिह्न निहारी । कहत यशोमति सा ब्रजनारी ॥
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे । सकुची महरि निरखि हरि प्यारे ॥

दोहा—तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि ॥
श्याम चपल बाँधे सुने, देत महरिको गारि ॥

१ डरके मैयाके छातीसे । २ वृक्षवृक्ष । ३ अल्प । ४ भला मिटाई । ५ हड़बड़ाके ।

सो०–बाँधतिहै विन काज, मेरे हरि वारे सुतहिं ॥
कुशल करी विधि आज, शोचत नँद लखि तरुवरन ॥
तबहिं तात कहि धाय कन्हाई। लिये नंद कनियाँ सुखपाई ॥
चूमि बदन उरसों लपटाये। प्रेम पुलकि लोचन भरि आये ॥
मेरे लाल मैं तुम पर वारी। काहेको बांधे महतारी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी। चली नाहिं कहुँ तनक बयारी ॥
बार बार शोचत नँदराई। पूछत तैं कछु लख्यो कन्हाई ॥
श्याम कही मैं कछू न जानौं। ऊखल ढिग मैं रह्यों छिपानौं ॥
कहत नन्द हरि बदन निहारी। बड़ी आज विधि करवर टारी ॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो। द्विज चरणन लैल सुत नायो ॥
देहिं अशीश विप्र सुखमानी। भये प्रसन्न नन्द सुनि बानी ॥
तबहीं श्याम जननि पहँ आये। हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
भूखो भयो आज मेरो बारो। काको मुख धौं मात निहारो ॥
लाई उरहन ग्वालिनि भिनहीं। यह सब कियो पसारो तिनहीं ॥
दो०–पहिले रोहिणि सों कह्यो, तुरत करो जिवनार ॥
ग्वाल बाल सब बोलिकै, बैठे नन्दकुमार ॥
सो०–वेगि लाउरी मात, भूख लगी मोको बहुत ॥
आज न खायो मात, सुनत वचन यशुमति हँसी ॥
रोहिणि चितै रही यशुमति तन। शिर धुनि२पछिताति मनहिमन ॥
परसहु हरिहि विलम्ब न लावहु। भूखे हरि किन बेगि जिमावहु ॥
बहु व्यंजन बहु भांति रसोई। कहँ लगि वरणि कहै कवि कोई ॥
परसन जाति यशोमति मैया। जेंवत श्याम सखा बल भैया ॥
जो जो व्यंजन यशुमति राखे। तनक तनक मोहन सब चाखे ॥
श्याम कही अब मात अघानो। अब मोको शीतल जल आनो ॥
अँचवन करि अँचये दोउ भैया। अति सुख पायो लखि दोउ मैया ॥
सहित सुगंधि पान कर लीन्हे। बाँटि सकल ग्वालनको दीन्हे ॥

१ मुख। २ देख्यो। ३ अल्प। ४ थोडेथोडे। ५ खाये।

भ्राता सहित आप हरि खाये । अधिके अधर अरुण ह्वै आये ॥
निरखत बदन मुकुरके माहीं । ब्रजवासी जन बलि बलि जाहीं ॥
भोजन करत भयो सुख जेतो । वरणि सकै नहिं शारद तेतो ॥
जो सुख नन्द भवनके माहीं । सो सुख तीनि लोकमें नाहीं ॥

दोहा-सुख यशुमति अरु नंदको, कोकरि सकै बखान ॥
सकल सुखनकी खानि हरि, जहाँ रहे सुखमान ॥

सो०-कोटि कोटि ब्रह्मण्ड, इक इक रोम विराटतनु ॥
सो अपने भुजदंड, लिय उछंग यशुमति हरषि ॥

यशुमति कहत श्यामसों प्यारे । सुनहु बात मेरि नन्ददुलारे ॥
अपनेही आँगन तुम खेलो । मेरो कह्यो कबहुँ नहिं पेलो ॥
कहत चोर ब्रजबनिता तोहीं । सुनि सुनि लाज लगति है मोहीं ॥
ताते रोष होत मन मेरे । तब बाँधत मारत जिमि चेरे ॥
हलधर आज कहत हे मोहीं । झूठहि नाम धरत सब तोहीं ॥
ग्वालिनी हँसत कहत इक ऐसे । चोरी नाम फिरत अब कैसे ॥
चोर कहत युवती सब मोको । झूठहि आय कहत सब तोको ॥
मैं खेलों बाहर जहँ जाई । चितै रहत सब मेरी घाई ॥
अपने घर सब मोहिं बुलावैं । मुख चूमति गहि गहि उरलावैं ॥
माखन मोहि निजकरन खवावैं । हाथ जोरिके विधिहि मनावैं ॥
देखत जबहि लेत मोहिं टेरी । मैं नहि जाऊँ सौंह मोहिं तेरी ॥
यशुमति निरखि बदन मुसकानी । उनकी बात सबै मैं जानी ॥

अथ आँखमिचौनीलीला ॥

दोहा-टेरि लेहु सब निज सखन, अरु भैया बलराम ॥
सुख दीजे मेरे दृगन, चलहु आपनें धाम ॥

सो०-यह सुनि हर्ष बढाय, बोलि लिये हलधर सखा ॥
खेलहिं आँख मुँदाय, कहत सखनसों मुदित हरि ॥

१ दर्पण । २ जाकेएकएक रोममें किरोड । ३ ब्रह्मांडहै ताको यशोदा गोदीमें लिये है ।

हलधर कह्यो आंखको मूंदै। हरषि कह्यो हरिजननि यशोदै॥
हरि अपनी तब आँख मुदाई। जहाँ तहाँ सब रहे लुकाई॥
कान लागि जननी समुझाये। है घरमें बलराम छिपाये॥
बलदाऊको आवन देहौं। श्री दामाको चोर बनैहौं॥
इत उतमें सब बालक आई। यशुमति गात छुवन सब धाई॥
श्याम छुवनके कारण धावत। अति अकुलात छुवन नहिं पावत॥
धाये सुबल छुवन तब श्यामा। गह्यो जाय तिरछे श्रीदामा॥
कहत नन्दकी सौंह जनाये। जननी ढिग भुजगहि लै आये॥
हँसि हँसि कहत सखासों रामा। अबतो चोर भयो श्रीदामा॥
हर्षित कहत यशोदा मैया। जीत्यो मेरो पूत कन्हैया॥
जाकी माया जगत खिलावै। ब्रह्मा जाको अंत न पावै॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै। बालक जिमि बचनन फुसलावै॥

दोहा—जाके उर त्रैलोक थल, पंच तत्त्व चौखान॥
सो बालकव्है खेलई, यशुदाके गृह आन॥

सो०—दुर्लभ जप तप योग, ज्योति रूप जगधाम हरि॥
धन्य सो ब्रजके लोग, बालक करि मानत तिन्हैं॥

कहत भई यशुमति महतारी। भई रात अब सुनहु मुरारी॥
करहु बियारू अबकछु प्यारे। बहुरि खेलियो होत सवारे॥
मोको तो कछु रुचि नहि आवै। तू कहि भोजन कहा बतावै॥
बेसन मिली कनककी पूरी। कोमल उज्ज्वलहैं अति रूरी॥
अबहीं ताती तुरत बनाई। रोहिणि तुहारे हेतु कन्हाई॥
निबुआ आम करील सँधानो। जासों तुम अतिही रुचि मानो॥
बलके संग बियारू कीजै। मेरे नयननको सुख दीजै॥
तनक तनक धरि कंचन थारी। लै आई रोहिणि महतारी॥
श्याम राम मिलि करत बियारी। अति अनंद दोउ जननि निहारी॥

१ यशोदा मैया मीचेगी। २ छिप गये। ३ स्वेदज, उद्भिज्ज, अंडज और जरायुज।

खात खात दोऊ अलसाने। मुख जँभात जननी पहिचाने॥
जल अँचवाय कमल मुख धोई। बाँह पकरि पलँगा लै सोई॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया। हरुवे पाँय पलोटति मैया॥

दोहा-सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात॥
बहुरि कलेऊके लिये, जननि जगाये प्रात॥
सो०-दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्यामको॥
मुदित निरखि दिन रात, यशुमति हरिके चरितको॥

अथ वृन्दावनगमनलीला॥

महर महरि यह मनहिं विचारी। गोकुल होत उपद्रव भारी॥
जब ते जन्म भयो हरि केरो। नितहि होत उतपात घनेरो॥
अकस्मात गिरे उतरु भारी। बच्यो बडेनके पुण्य मुरारी॥
ताते अब तजिये यह गाऊं। बसिये चलि कहुँ उत्तम ठाऊं॥
नन्दराय तब गोप बुलाये। समाचार ये सबनि सुनाये॥
सबहिनके मनमें यह आई। बसिये अनत कहूं अब जाई॥
नितहि उपाधि नई जिहि ठाहीं। बसिबो भलो तहांको नाहीं॥
नंद कही मैं मनहि विचारी। है इकठाऊँ बहुत सुखकारी॥
वृन्दावन गोवर्द्धन पासा। तहँ सबको सब भांति सुवासा॥
तहाँ गोपगण सब सुखपैहैं। बनमें गोधन वृन्द चरैहैं॥
यह विचार सबके मनभायो। चलिबेको शुभ दिवस धरायो॥
वृन्दावन सब चले गुवाला। पांच वर्षके मदन गोपाला॥

दोहा-शकट साज सब साजिकै, गोधन दिये हँकाय॥
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुदाय॥
सो०-निरखि अनूपमठाम, शकट दिये सब छोरिकै॥
सबके मन बस श्याम, बसे सकल वृन्दा विपिन॥

बसे सकल वृन्दावन माहीं। अति आनंद गोप मनमाहीं॥
गाय वच्छ सबही सुखपायो। चरत निकट तृण हरित सुहायो॥

१ धीरेधीरे। २ दाबती है। ३ अचानक। ४ उपद्रव। ५ गाडा। ६ अद्भुत।

हलधर वेनु चरावन जाहीं । मन मोहन लखि मनहि सिहाहीं ॥
प्रात चले सब गाय चरावन । जननी सों बोले मनभावन ॥
मैं हूं गाय चरावन जैहौं । बडो भयो अब नाहिं डरैहौं ॥
संग सखा अरु हलधर भैया । इनके संग चरैहौं गैया ॥
बालन संग, यमुन तट माहीं । खेलहिंगें सब वटकी छाहीं ॥
अपनी रुचि मनके फल खैहों । तेरी सौं यमुना नहिं न्हैहों ॥
ऐसी अबहि कहौ जिनवारे । देखहु अपनी भांति ललारे ॥
तनक पायँ चलिहौ किहि भांती । गैयन आवत ह्वै है राती ॥
प्रात जाय गैयन लै चारन । आवत सांझ लखौं सब ग्वालन ॥
तुह्मरो कमल वदन मुरझैहै । रँगत घाम मांझ दुखपैहै ॥

दोहा–तेरी सौं मोहिं घाम नहिं, लागत भूख न नेक ॥
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक ॥

सो०– चले चरावन गाय, ग्वाल बाल वलदेव वन ॥
हेरी टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये ॥

हेरी टेर सुनत लरिकनकी । गये दौरि हरि अति रुचि मनकी ॥
इत उत यशुमति जबहि निहारी । दृष्टि न परे श्याम बनवारी ॥
बन तन जान्यो जात कन्हाई । टेरति यशुमति पीछे धाई ॥
जात चले गैयन सँग धावत । बलदाऊ को टेरि बुलावत ॥
पीछे जननी आवत जानी । फेरि फेरि चितवत भय मानी ॥
हलधर आवत देखि कन्हाई । ठाढे किये सखा समुदाई ॥
पहुँची जननि भये सब ठाढे । रिस करि दोउ भुज पकरे गाढे ॥
बल कह जान देहु सँग मेरे । बनत ऐहैं आज सबेरे ॥
कह्यो यशोमति वलहि निहारी । देखत रहियो मैं बलिहारी ॥
भ्राता सँग गये बनहि कन्हाई । यशुमति यहै कहत घर आई ॥
देखो हरि कैसो ढँग लीन्हों । अपनी टेक पर्यो सोइ कीन्हों ॥
आज जाय देखहु वनमाहीं । कहां परोस धर्यो तिहि ठाहीं ॥

१ वंशीवट । । डोलत । ३ धूप । ४ भाई । ५ जिद ।

दोहा–माखन रोटी और जल, शीतल छाक बनाय ॥
दई वेगही ग्वाल सँग, यशुमति वनहिं पठाय ॥
सो०–चिंतामणि सुर धेनु, पंच सुधारस कँल्पतरु ॥
अनुँदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वाल सँग ॥

वृन्दावन खेलत नंदलाला। भयो हिये आनन्द विशाला ॥
जहँ जहँ ग्वाल गाय संग जाहीं। तहँ तहँ आप फिरत वनमाहीं ॥
बलदाऊ सों कहत कन्हाई। नितल्यावहु मोहिं संग लिवाई ॥
आज मर्दे करि आवन पायो। जननी तुम्हरे कहे पठायो ॥
कालिह कोनिविधि करि वन ऐहों। यशुमति पै आवन नहिं पैहों ॥
सोवत बाँधि लीजियो मोको। सोहैं नंदबवाकी तोकों ॥
पुनि पुनि विनय करत सुखदाई। बलसों सखन समेत सुनाई ॥
संध्या समय निकट जब आई। घर कहँ चलो कह्यो बल भाई ॥
गैयन घेरि करी यकठौरी। चले सदैन सब गावत गौरी ॥
आवत वनते धेनु चराई। ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई ॥
जिहि जिहि भांति ग्वाल मुख भाखें। सुनि सुनि मनमोहन उर राखें ॥
नान्हें सुर पुनि आपुनि गावें। तारी देत हँसत सुख पावें ॥

दोहा–मोर मुकुट वनमाल उर, पीताम्बर फहराय ॥
गो पद रज छवि वदन पर, आवत गाय चराय ॥
सो०–छूटीं अलख छविदेत, जलंजवदन पर मधुपगनु ॥
आवत सखन समेत, नंदसुवन व्रज प्राण धनु ॥

देखत नन्द यशोदा ठाढ़े। रोहिणि अरु व्रज जन सुख बाढ़े ॥
गायन संग श्याम जब आये। लैबलाय जननी उर लाये ॥
आज गयो हरि गाय चरावन। मैं बलि जाउँ तनकसे पांवन ॥
मो कारण कछु वनते लाये। तुमको मिलि मैं अति सुखपाये ॥
आंचर सों सब अँग अँग झारे। वदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥
खाउ कछुक जो भावै मोहन। देरी माखन रोटी सोहन ॥

१ कल्पतरु । २ नित्यप्रति ।३ कन्नितासे ।४ पर ।५ मंदस्वरसे ।६ कमलमुख ।

दिये जिमाय तुरत दोउ भैया । अति आनन्द मगन मन मैया ॥
कहत जननिसों श्रीब्रजनाथा । प्रात नितहि जैहौं बलसाथा ॥
मैं अपनी अब गाय चरैहौं । तेरे कहे घरहि नहि रैहौं ॥
ग्वाल बाल गायनके माहीं । नेकहु डर लागत मोहि नाहीं ॥
आज न सोवों नन्द दुहाई । रहिहौं जागत कहत कन्हाई ॥
सब मिलि गाय चरावन जाहीं । मैं क्यों रहौं बैठि घर माहीं ॥

दोहा–सोय रहौ अब श्याम तुम, जननि कहै चुचकारि ॥
प्रात जान कहिहौं तुम्हैं, वनको मैं बलिहारि ॥
सो०–ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रात देन वन जान कहि ॥
जननी दावत पांय, श्रमित जानि वन गमनके ॥

बहुते दुख हरि सोय गयोहैं । ज्यों त्यों करि मन बोधि लयोहैं ॥
सांझहि ते लाग्यो इहि बातें । जान कहत वन उठि पुनि प्रातें ॥
यह तो संग लागि बलरामहि । गये लिवाय आज वन श्यामहि ॥
अब तो सोयरह्यो करिऐसे । मात विचार करै धौं कैसे ॥
कहत नंद बलके सँगजाई । इत उत आवन दे फिरि धाई ॥
भोरि भयो यशुमति कहप्यारे । जागहु मोहन नन्ददुलारे ॥
बीतोनिशि रवि किरण प्रकाशी । शशि मलीन उडगण द्युतिनाशी ॥
सुनहु शब्द बोलत खगमाला । खोलहु अम्बुज नयन विशाला ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी । जागि उठे सन्तन सुखदानी ॥
लाई तुरत कलेऊ मैया । माखन रोटी खान कन्हैया ॥
टेरत ग्वाल सखा सबद्वारे । आये तबके होत सकारे ॥
खेलहु ब्रज भीतरही प्यारे । दूर कहूं मतिजाहु ललारे ॥

दोहा–टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ॥
जातग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥
सो०–श्याम जोरि दोउ हाथ, जननी सों हाहाकरत ॥
जैहौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दा विपिन ॥

थकेहुये ।२ ज्ञान ।३ सूर्य ।४ तारागणोंकी कांति नष्ट होगई । ५ कमलनेत्र ।

टेरत मोहिं दाउरी मैया । जैहौं बनहिं चरावन गैया ॥
बन फल तोरि देत मोहिंजाई । आपुन घेरत गैयन धाई ॥
जैहौं अरु ग्वालन सँगनाहीं । मोहि खिझावत वे बनमाहीं ॥
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं । देखत वृंदावन सुख पैहौं ॥
आगे दै लावत मगमाहीं । तू क्यों जान देत मोहिं नाहीं ॥
लीन्हो यशुमति बलहिं बुलाई । सुनहु लाल हरिके गुण आई ॥
कहत यशोमति सों बल भैया । जान देहु मोसंग कन्हैया ॥
अपने ढिग ते नेकु न टारौं । जियपरतीत[1] नेकनहिं धारौं ॥
तू काहे डरपति मन माहीं । जान देत हरिको क्यों नाहीं ॥
हँसी महरि सुनि बलकी बानी । जाहु लिवाय कहत नँदरानी ॥
मैं बलिहारी तुह्मरे मुखकी । तुमहूं कहत श्यामके रुखकी ॥
अति आनंद भयो हरिधाये । दोऊ संग खरकमें आये ॥

दोहा—धाय धाय भेंटत सखन, उर[2] अति हर्ष बढाय ॥
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय ॥

सो०—कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखौ बनहिं ॥
वनमाला पहिराय, करत[3] चित्र वन धातु तन[4] ॥

चले बनहिं सब गाय चरावन । सखा संग सोहत मनभावन ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयान्हे । नंदसुवन तिनमें कछु नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बन जाई । तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों सखा कहत समझाई । छोड़ि कहूं जनिजाहु कन्हाई ॥
वृंदावन अति सघन विशाला । जैहौ भूलि कहूं नंदलाला ॥
सुनत श्याम घन तिनकी बाता । मनमन हँसत कहत जगत्राता[5] ॥
तुह्मरो संग न छांडतराई । बनहि डरात बहुत मैं भाई ॥
जात चले सब हर्ष बढ़ाये । खेलत श्याम संग सुखपाये ॥
कोउगावत कोउवेणु बजावै । कोउनाचत कोउ कूदत आवै ॥
देखिदेखि हरि अति हर्षाहीं । हँसत सखन सों दै गलबाहीं ॥

---

१ भरोसा । २ हृदय । ३ लगाते हैं । ४ देह । ५ जगतके रक्षक ।

भली करी तुम मोकोलाये। आज यशोमति हर्ष बढाये ॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला। यमुना तट पहुँचे नँदलाला ॥
दोहा–दई धेनु बगराय सब, चरन आपने रंग ॥
गाय चरावत नंदसुत, मिलि ग्वालनके संग ॥
सो०–उर मुक्तनकी माल, शीश मुकुट कटि पीत पट ॥
हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन संग प्रभु ॥

अथवत्सासुरवधलीला ॥

खेलत श्याम सखनके माहीं। यमुनाके तट तरुकी छाहीं ॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो। पठयो कंस काल नियरायो ॥
वत्सरूप धरि आय समान्यो। कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बल तन चितै कह्यो मुसकाई। तुम याको जानत हौ भाई ॥
यह तो असुर वत्स है आयो। हमको मारन कंस पठायो ॥
हलधरहूं देख्यो धरि ध्याना। कहत सांच तुम श्याम सुजाना ॥
ग्वालनहूं सों कहत कन्हाई। बछरा घेरि करो इक ठाई ॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला। वह नाहिं घिरहि चपल विकराला ॥
बारबार हरि ओर निहारै। दांव घात मन माहिं विचारै ॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत। तुमतो याको छुवन न पावत ॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये। वत्सासुरके सन्मुख आये ॥
हरिको जबहिं जुदो करि पायो। असुर कोपकरि मारन आयो ॥
छं०–धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामके सन्मुखगयो ॥
ह्वै गयो निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुरके भयो ॥
धायके हरिचपरिताको पकरि पाँय फिराइयो ॥
पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो ॥
दोहा–वत्सासुर सुरपुर गयो, अधम असुर तनु त्याग ॥
सुर हर्षत वर्षत सुमन, गगन सहित अनुराग ॥

१ समय। २ स्वर्ग जानेके लायक। ३ प्रकाश।

सो०-धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण बल देखिकै ॥
धन्य धन्य नँदलाल, कहत परम आनँदभरे ॥
असुर देखि सब अचरजपायो। कहत हमैं हरि आज बचायो ॥
बछरा करि हम जान्यो याही। यहतो असुर भयानक आही ॥
आज सबनि धरिकै यह खातो। और कौन पै जात निपातो ॥
हर्षि हर्षि हरिको उर लायो। असुर निकन्दन नाम सुनायो ॥
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई। धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई ॥
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा। केहि विधि भुजन फिराय पछारा ॥
सबहीके देखत पलमाही। मान्यो असुर डरे तुम नाहीं ॥
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यों। हौ तुम बड़े सबनते जान्यों ॥
कोउ बनमाल आनि पहिरावैं। कोउ बन धातु रंगारि तनुलावैं ॥
कोउ कुण्डल शिर मुकुट सँवारैं। अलिकावलि कोउ तिलक सुधारैं॥
जात भुजनपर कोउ बलिहारैं। तनु देखत कोउ वदनै निहारैं ॥
बनफल तोरि धरत कोउ आगे। कहत खाउ मीठे अति लागे ॥
दोहा-इहि विधि हरिको पूजिकै, ग्वाल बाल हरषाय ॥
सांझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ॥
सो०-परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं ॥
गावैं शब्द रसाल, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ॥
सखन मध्य सोहत नँदनंदन। जलद श्यामतनु चित्रित चंदन ॥
मोर मुकुट पट पीत सुहावन। इंद्र धनुष दामिनिही लजावन ॥
मुक्तमाल वनमाल विराजै। बकै शुक अवलि मनहुँ छबिछाजै॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन। कोटि काम छबि शोभित आनन॥
कुटिल अलक भ्रुव नैन विशाला। गोपदरज कन द्युति छबिजाला ॥
बल मोहन बनते बनिआवैं। निरखि निरखि ब्रजजन सुखपावैं ॥
सखन सहित हरि धामाहिं आये। हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया। है तेरो रणवीर कन्हैया ॥

---

१ डरावना। २ मुख। ३ रसभरे। ४ बिजली। ५ बगुले और तोतोंकी पंक्ति।

वत्स रूप एक दानव वनमें । आय समान्यो बछरा गनमें ॥
हम ताको कछु जानि न पायो । सो वह हरिको मारन धायो ॥
क्षणहीं माहिं ताहि हरि मान्यो । हम देखत महि पटकि पछान्यो ॥
यह कोउ बड़ो पूत तैं जायो । भाग्य हमारे ब्रजमें आयो ॥
दोहा—सुनि ग्वालनके वचन ते, वत्सासुरको घात ॥
यशुमति सबके पांय परि, बार बार पछितात ॥
सो०—भयो महरि उर त्रास, बचे आज हरि असुरते ॥
मैं न बिगान्यो कास, भयो सहायक आनि हरि ॥
यशुदा शोच करत तू जाये । यह तो ख्याल कान्हके भाये ॥
पर्वत तुल्य बिकट तनु जाही । कियो प्राण विन क्षणमें ताही ॥
तुह्मरी रक्षाको यह नाहीं । हम सबको रक्षक यह आहीं ॥
याके चरणकमल चित लैये । बारबार याकी बलि जैये ॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने । ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने ॥
लीलासागर हरि सुखदानी । मोहे सब नरनारि सुबानी ॥
हँसि जननी सों कहत कन्हाई । देख्यो मैं वृन्दावन जाई ॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके । कुंज सघन निरखत सुख जीके ॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये । यमुनाके तट बच्छ चराये ॥
वनफल मधुर मिष्ट अति नीके । भूख मिटी खाये तिनहींके ॥
सखन सङ्ग खेलत वच्छाहीं । वनमें मोहिं लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता । मुदित सुनत हरिकी मृदु बाता ॥
दोहा—मोहिं लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय ॥
वत्सासुरको शोच उर, क्षणमें दियो मिटाय ॥
सो०—लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोप गण ॥
गये तहां हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥

अथ धेनुदुहन लीला ॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन । कहत मोहिं सिखवो गोपालन ॥

१ डर । २ भयंकर । ३ मीठे । ४ माताका ।

मैं दुहिहौं मोहिं देहु सिखाई। बैठि गये तिन सङ्ग कन्हाई ॥
कैसे गैया थनहिं लगावत। कैसे नोयै पगन अटकावत ॥
घुटरुन गहत दोहनी कैसे। मोहिं बताय देउ तुम तैसे ॥
कैसे धार दूधकी होई। देहु दिखाय मोहिं सब कोई ॥
कहत ग्वाल तुम सुनौ कन्हाई। भई अबार आज अति भाई ॥
तुमको सिखवैं दुहन सवारे। अबकहुं लगिहै चोट तुह्मारे ॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई। भोर दुहौं निजनन्द दुहाई ॥
मेरी सौं मोहिं लीजोटेरी। मैं दुहिहौं निज गाय सबेरी ॥
दुष्टदलन सन्तन सुखदाई। ठाढे गैयन मांझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह सांझकी बिरिया। कहत जननि यह बडी कुबिरियां ॥
लरिकाई कछु छाँड़त नाहीं। सोवहु लाल आय घर माहीं ॥

दोहा–आये हरि यह सुनतही, जननि लिये अँकवार ॥
लै पौढाये सेजपर, अजिरै चांदनी भार ॥

सो०–कहत कहत कछु बात, सोय गये वश नींदके ॥
कहत यशोमति मात, सोय गयो हरि अजिरहीं ॥

दोउ जननी हरुवै के हरिको। सेज सहित लीन्हे भीतरको ॥
बहुत आज हरि सोय गयो है। अतिहि नींदके वशहि भयोहै ॥
नेक न बैठत थिर घर माहीं। खेलनमें मन रहत सदाहीं ॥
रोहिणि कहत देउ किन सोवन। खेलत हारि गयो मनमोहन ॥
माता हरुवै पवन ढुरावति। निरखि बदन सुंदर सुख पावति ॥
मात जगावत नंदकी रानी। उठहु श्याम सुन्दर सुखदानी ॥
नाहिन इतो सोइयत लाला। सुनु सुत मात समय शुचि काला ॥
उग्योतरणि कुमुदिनि सकुचानी। घरघरग्वालिनि मथत मथानी ॥
बारबार टेरत सब ग्वाला। सांझ कह्यो तुम दुहन गोपाला ॥
होत अबार गाय सब ठाढीं। भरि भरि क्षीर भार थनबाढीं ॥

१ लीमना तथा नोजना।२ कुसमय।३ अंगन।४ धीरसे।५ पवित्रसमय।६सूर्य।

वत्स पुकारत आरत ताई । दुहत नाहिं तुम सोंह दिवाई ॥
तुह्मरे लिये ग्वाल सब ठाढ़े । देखत वाट प्रेम उर बाढ़े ॥
दोहा–यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुखते पट टार ॥
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नन्दकुमार ॥
सो०–लाउ रोहिणी मात, वेगि तनकसी दोहनी ॥
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन ॥
रोहिणि तुरत दोहनी लाई । घर घरते देखन सब आई ॥
अटपट आसन बैठि कन्हाई । गोथन[1] कर लीन्हो सुखदाई ॥
धार अनतहीं जात निहारी । हँसे नन्द यशुमति महतारी ॥
चित्ते चोर चित हरि हँसि दीन्हो । ब्रजवासी जन बलि बलि कीन्हो ॥
किये यशोमति आनँद भारी । दियो दान विप्रनहिं हँकारी ॥
गावत मङ्गल ब्रजकी नारी । दुही गाय सन्तन हितकारी ॥
अति आनंद मगन नँदराई । बैठे प्रमुदित[2] गोप अथाई ॥
लिये गोप सुन्दरर घनश्यामहिं । ब्रजके जीवन जन सुख धामहिं ॥
आयो तहां एक बनजारो । मूंगा मोती बेचन हारो ॥
तिहि लखि अटके नंदकुमारा । देहि देहि कहि बारम्वारा ॥
दीरघ मोल कह्यो व्यापारी । रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती । देत नहीं लखि सुन्दर जोती ॥

अथ मोतीबोनेकी लीला ॥

दोहा–मुक्तालै हरि घर गये, बये अजिर[3] बलवीर ॥
आलँ[4] वाल थल रोपिकै, पुनि पुनि सींचत नीर ॥
सो०–हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा ॥
यह नहिं जानत बात, ये करता सब जगतके ॥
भये तुरत शाखा दल तामें । यशुमति अजिर मुक्त फल जामें ॥
फूलत फलत न लागी बारा । ब्रह्मादिक नित करत विचारा ॥

१ गौकेथन । २ प्रसन्न । ३ अंगन । ४ थांवला ।

सुर नर मुनि कोउ मर्म न जानैं । देखि देखि अति अचरज मानैं ॥
नन्द भवन हरि मुक्त जमाये । ब्रजबनितन गुहिहार बनाये ॥
ब्रजबासी यह प्रभुकी लीला । सब गुण समरथ सब गुणशीला ॥
क्षणमहँ जासु रजायसुमाया । प्रगट करत ब्रह्मांड निकाया ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावैं । नंद अजिर सो ख्याल बनावैं ॥
जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपुसोई ॥
लोक रचै नाशै प्रतिपारैं । सो ग्वालन सँग लीला धारैं ॥
शिव विरंचि मुनि ध्यान न आवैं। ताहि यशोमति गोद खिलावैं ॥
अगम अगोचर लीला धारी । सो वृंदाबन कुंजबिहारी ॥
बडे भाग्य सब ब्रजके बासी । जिनके सँग बिहरत अविनासी ॥

दोहा–धनि धनि ब्रजके नारि नर, धनि यशुदा धनिनंद ॥
विहरत जिनके सदनमें, ब्रह्म सच्चिदानंद ॥

सो०–कहि कहि देवसिहाय, धन्य धन्य ब्रज बाग बन ॥
जहां चरावत गाय, सकल सुरन शिर मुकुटमणि ॥

अथ बकासुरवधलीला ॥

प्रात चले उठि गाय चरावन । हलधर सुंदर श्याम सुहावन ॥
देखत छबि ब्रज सुन्दरि ठाढ़ीं । करत परस्पर आनँद बाढ़ीं ॥
देखु सखी ब्रज ते बन जाहीं । बल मोहन ग्वालनके माहीं ॥
रोहिणिसुत छबि गौर सुहाई । यशुमति सुवन श्याम सुख दाई ॥
ओढे नील पीतपट सोहैं । सो छबि निरखि वदन मन मोहैं ॥
युगल जलद घन दामिनि जानौं । जो रतिनाथ परस्पर मानौं ॥
शीश मुकुट फल कुंडल कानन । झलकैं बिम्बै कपोलन आनन ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला । मंद हँसनि दृग कमल विशाला ॥
कटि किंकिणि कर लकुट सुहाये। जात चले वन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि सब ब्रजनारी । गये वनहिं बिहरत वनवारी ॥
वन वन फिरत चरावत गैया । हलधर श्याम सखा इक ठैया ॥

---

१ धरमें । २ कामदेव । ३ बिंबाफल जैसे गाल ।

करत विहार विविध बनमाहीं । बाल केलि रस वरणि न जाहीं ॥
दोहा–कवहूं गावत सखन सँग, कवहुँ वजावत वेनु ॥
धौरी धूमरि नामलै, कवहुँ बुलावत धेनु ॥
सो०–कवहुँ नचावत मोर, सुन्दर श्यामल जलद तन ॥
गरज मुरलि घन घोर, वरषत परमानंदजल ॥
खेलत विविध खेल मनभावन । श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नँदलाला । कह्यो चलहु जल देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सुरभिगण टेरी । सुनत ग्वाल सब लाये घेरी ॥
गोधनवृंद हांकि सव लीन्हो । ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हो ॥
तहां बकासुर छलकरि आयो । माया रचित स्वरूप बनायो ॥
एक चोंच भूतलै महँ लाई । एक रही आकाश समाई ॥
मगमें बैठ्यो वदन पसारी । ग्वालन देखि भयो भय भारी ॥
बालक जात हते जे आगे । ताहि देखि सो पाछे भागे ॥
कहत भये सब हरिसों आई । आगे एक बलाय कन्हाई ॥
आवत नितहि ग्वाल इहिठाहीं । ऐसो कवहुँ लख्यो हम नाहीं ॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यों । यहै बकासुर मैं यह जान्यों ॥
पलमें आज याहि मैं मारौं । असुर चोंच धरि वदन बिदारौं ॥
दो–निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास ॥
कहत सखा सब श्याम सों, नहिं जीवनकी आस ॥
सो०–अबहुं नहीं डरात, बचे किते उतपातते ॥
चले कहां हरि जात, हम बरजत मानत नहीं ॥
तब हरि कह्यो चलहु तेहि पासा। सब मिलि मारि करहिं बकनाशा॥
जब हरि संग चले सब ग्वाला । देख्यो जाय बकहि विकराला ॥
ताके निकट गये सब जबहीं । लियो लीलि हरिको बक तवहीं॥
जान्यो असुर काज मैं कीन्ह्यो । तबहीं वदन मूंदि कै लीन्ह्यो ॥

१ कमल । २ अनेक । ३ प्यासी । ४ गाँव । ५ जमीनपर । ६ मुंह फैलाकर । ७ निगल गया

ग्वाल पुकारत आरत भागे । बलसों आय कहन सब लागे ॥
हम बरजत हठि गये कन्हाई । लीन्हे लीलि असुर बकधाई ॥
हरि चरित्र कछु जानि न जाहीं । उपजी आगि असुर तनुमाहीं ॥
लाग्यो जरनभयोअतिव्याकुल । हरिको उगिलदियो अतिआकुल॥
बहुरों पकरनको मुख बायो । चोंच पकरि हरि चीरि बहायो ॥
मरत चिकार असुर अति भारी । व्याकुल भये ग्वाल भय भारी ॥
ग्वालन विकल देखि बलरामा । कहत असुर मार्यो घनश्यामा ॥
टेरि उठे उत कुँवर कन्हाई । आवहु सखा वृन्द सब धाई ॥

दोहा–बक विदोरि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय ॥
चोंच फारि मारेउँ असुर, तुमहूं करो सहाय ॥

सो०–गये सखा सब धाय, सुनत श्यामके बचन वर ॥
निरखि नयन सुख पाय, पुनि पुनि भेंटत पुलकतनु ॥

कहत परस्पर सखा सयाने । ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने ॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया । ये हैं असुरनके दलवैया ॥
जब ते इन्हें यशोमति जाये । तबते असुर कितेकउ आये ॥
तृणा पूतना शकटा मारे । तब वे रहे बहुत ही बारे ॥
हम देखत वत्सासुर मार्यो । कितक बात यह बका बिदार्यो॥
इनके गुण कछु जानि न जाहीं । हम अपने जिय डरे वृथाहीं ॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये । धनि हम इनके सखा कहाये ॥
बकहिं मारि सुन्दर घनश्यामा । यमुना तट आये सुखधामा ॥
सुरभीगण सब नीर पियाये । सखन समेत आप प्रभु आये ॥
घसि बन धातु चित्र तन कीन्हो । मोरमुगुट माथे धरि लीन्हो ॥
वनमाला रचि सखन बनाई । प्रेम सहित हरिको पहिराई ॥
वनफल मधुर गोप लै आये । सखन सहित हरि भोग लगाये॥

दोहा–बल मोहन घरको चले, जानि साँझकी बेर ॥
लीनी गैयाँ घेरि सब, मुरली की ध्वनि टेर ॥

१ घबड़ाकर । २ फाड़कर । ३ राक्षसोंके । ४ गौओंके झुंड । ५ मीठे ।

सो०—चले बजावत बेन, ग्वाल वृन्दके मध्य हरि ॥
अँग अँग छविको ऐनं, ब्रज जन मोहन साँवरो ॥

सुनि मुरली की टेर रसाला । देखनको धाईं ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अति सुख पावत । देखु सखी बनते हरि आवत ॥
नाना रंग सुमनकी माला । श्यामहिये छवि देत विशाला ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट विराजै । मधुर मधुर मुख मुरली बाजै ॥
भ्रकुटी बिकट निकट सुखदाई । तिलक रेख छबि बरणि न जाई ॥
कुण्डल लोल अलक घुंघरारी । निरखु सखी लागत अति प्यारी ॥
नासानिकट अधर अरुणाई । जनु शुक बिम्बहिं चोंच चलाई ॥
मन्द हँसनि घन दामिनि जैसे । दुरि दुरि प्रगट होतहैं तैसे ॥
तनु घनश्याम कमलदल नैना । बोलत मधुर मनोहर बैना ॥
मुख अरविन्द मन्द सुर गावत । नटवर रूप सखन मनभावत ॥
सब अँग चन्दन खौरि बनाये । गुंजमाल मन लेत चुराये ॥
या मोहन छबि पर बलि जैये । नन्द नँदन देखत सुखपैये ॥

दोहा—ग्वाल वाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय ॥
साँझ समय बनते चले, आये धेनु चराय ॥

सो०—राँभति धाईं गाय, वत्स सुरति कर पयं स्रवत ॥
हर्षि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहि ॥

इतनी कहत श्याम घर आये । जननी दौरि हर्षि उरलाये ॥
ब्रज लरिका सब तुरतहि धाये । महरि महर पद शीशनवाये ॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो । इनको गुण कछु जात न गायो ॥
आज गये वनगाय चरावन । चले यमुनतट जलहि पियावन ॥
तहां असुर इक खँग तनुधारी । रह्यो यमुनतट वदन पसारी ॥
एक चोंच महि सों लपटाई । एक रह्यो आकाश लगाई ॥
हम बरजत पहिले हरि धायो । ताके मुख में जाय समायो ॥

१ घर । २ फूल । ३ भौंह । ४ होठ । ५ कमल । ६ दूध । ७ पक्षी ।

हम सब डरपि भजे बल पासा । अति व्याकुळ तनु भयो निरासा ॥
कैसे धौं हरि बाहर आयो । चोंच फारि तेहि मारि गिरायो ॥
सुनत नन्द यशुमति व्रजनारी । चकितचित्त रहे हरिहि निहारी ॥
यशुदा कहति कहा कोउ जानै । नित प्रति होत आनकी आनै ॥
भयो आज कोउ सुकृत सहाई । विधिकी गति कछु जानि न जाई ॥

दोहा—जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि[२] ॥
कहा सर्यो हमरे यतनै[३], विधि गति अगम अगाधि ॥

सो०—किन धौं करी सहाय, को जानै भावी प्रबल ॥
को मेरे पछिताय, करी अयानी बूझ बिन ॥

लै बलाय छतियाँ हरि लाये । प्रेम सलिल[४] लोचन भरि आये ॥
मैं बलि जाउँ कहत कछु खाहू । तुम कित गाय चरावन जाहू ॥
नन्द महर सों पिता तुम्हारे । मोसी मात जाय बलिहारे ॥
खेलत खात रहौ अपने घर । दधि माखन पकवान विविधवर ॥
निरखि वदन सुनि वचन तुम्हारे । लोचन श्रवण सिरात हमारे ॥
दुष्टदलन भक्तन सुखदानी । बोले मधुर मातुसों बानी ॥
मैया मैं न चरैहौं गैया । अब वन मेरी जात बलैया ॥
मोसों सबै ग्वाल वन जाई । गाय घिरावत हैं बरिआई ॥
दौरत मेरे पाँय पिराहीं । जब मैं बैठि रहौं तरुछांहीं ॥
जो न पत्याय बूझ बल भाई । देहिं आपनी सौंह दिवाई ॥
यह सुनतहि यशुमति रिसियानी । गारि देत ग्वालन दुखमानी ॥
मैं पठवत लरिकहि वन जाई । आवहिं तनिक मनहिं बहलाई ॥

दोहा—जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय ॥
अति बारो मेरो सुवन[५], मारत ताहि रिंगाय ॥

सो०—हरिजनके सुखदाय, को जानै हरिके चरित ॥
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको ॥

---

१ मौरकी ओर । २ उपद्रव । ३ उपाय । ४ प्रेमजल । ५ पुत्र ।

अथ चकई भवँराखेलनलीला ॥

कछुक खाय हरि निशि¹को सोये। मात जगाय जननि मुख धोये ॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई। जननी सों बोले हर्षाई ॥
दे मैया भवँरा चक डोरी। खेलत रहिहों ब्रजकी खोरी ॥
हर्षि जननि आरे पर भाखे। तुमहित नये मोल लै राखे ॥
लै आये हरि तुरत निकारी। भये मगन अति रङ्ग निहारी ॥
बार बार हर्षित मुख भाखे। मैया बिन अरुको लै राखे ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी। खेलन सखन संग ब्रज खोरी ॥
जैसे आप सखा सब तैसे। सुन्दर कोटि मनोभव² जैसे ॥
निरखि २ छबि गोप किशोरी। बार बार डारत तृण तोरी ॥
सबहिनको मन मोहन भावें। सब ब्रजतिय हरिसों मनलावें ॥
यह वासना करैं ब्रजबाला। होहिं हमारे पति नँदलाला ॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानैं। सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥

दोहा—चित दै जौ हरिको भजै, कोऊ कौनहु भाव ॥
ताको तैसेई सदा, प्रकटत त्रिभुवन राव³ ॥

सो०—भक्तनके सुखदान, भक्त बछल भगवान हरि ॥
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेम भावके वश सदा ॥

गोपिनके यह ध्यान सदाई। नेक न अन्तर होहिं कन्हाई ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी। करहिं बात उनके मनमानी ॥
मारग चलत तिन्हैं हठि रोकै। खेलत माँझ जहाँ तहँ टोकै ॥
चकई भँवरा डोरि फिरावैं। तिनके भूषण सों अरुझावैं ॥
काहू सों हरि बदन सकोरैं। काहू सों दृग बदन मरोरैं ॥
काहू सों अँखियां मटकावैं। आप हँसैं अरु उन्हैं हँसावैं ॥
युवतिनके मन बसैं कन्हाई। देखे बिन इक पल न सुहाई ॥
हरिको खेलत मांझ खिझावैं। खट कौरी दे गारी गावैं ॥
गेंद उरोजन⁴ माहिं दुरावैं। इहिं⁵ विधि हरिसों अंग छुआवैं ॥

१ रात्रि । २ कामदेव । ३ जगतपति । ४ स्तनोंमें । ५ इस तरहसे ।

कंचुकि फारि आपुही लेहीं । यशुदहि जाय उरहनो देहीं ॥
अन्तर भुज गहि हरिहि दुरावैं । कहैं चलो नँदरानि बुलावैं ॥
यशुमति पै तुमको लै जैहैं । कुटिल भौंह किय हम न डरैहैं ॥
दोहा– यों ब्रज बनितन नेहवश, आनँद छबि घनरास ॥
रसिक पुरंदर सॉंवरो, ब्रजमें करत बिलास ॥
सो०–अब बरणौं सुखखानि, हरि वृषभानु कुमारिको ॥
प्राण एकही जानि, प्रथम मिलन दोउ देहको ॥

अथ राधाजूके प्रथममिलनकी लीला ॥

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी । मेघश्याम तनु पीत पिछोरी ॥
श्रवणन कुण्डलकी छबि छाजै । मोर पँखनको मुकुट बिराजै
दशन दमक दाँमिनि द्युति थोरी । हाथ लिये फेरैं चकडोरी ॥
गये यमुनके तट मनमोहन । नाहीं तहां सखा कोउ गोहन ॥
औचकँ दृष्टि परी तहँ राधा । प्रेम राशि गुण रूप अगाधा ॥
नयन विशाल भाल दिय रोरी । नील बसन तनुकी छबि गोरी ॥
बेनी पीठ करत झक झोरी । अति छबि पुंज दिननिकी थोरी॥
संग लरिकिनी आवत देखी । चिते रहे मुख रोक निमेखी ॥
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई । अनुपम छबि लखि रहे लुभाई ॥
नयन वयन मिलि परी ठगोरी । बूझत श्याम कौन तैं गोरी ॥
रहत कहाँ काकी है बेटी । अबलौं नहीं कहूं ब्रजभेटी ॥
काहेको हम ब्रजतन आवैं । खेलत रहत आपने गावैं ॥
दोहा–सुनत रहत श्रवणन सदा, नँदढोटा ब्रज माहिं ॥
घर घरते नित चोरिकै, माखन दधिलै खाहिं ॥
सो०–बिहँसि कह्यो घनश्याम, तुह्मरो कहा चुरायहैं ॥
आवहु किन ब्रज धाम, नितहि खेलिये संग मिलि ॥
रसिक शिरोमणि नागर दोऊ । प्रीति पुरातन जान न कोऊ ॥
ब्रजबासी प्रभु कुंजविहारी । बातन भुरै लई हरिप्यारी ॥

१ आंगी । २ छिपावे । ३ देढो । ४ इन्द्र । ५ दांत । ६ बिजली । ७ अचानक ।

प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो । गुप्त प्रेम शिशुता प्रकटान्यो ॥
कहत श्याम मन कतै सकुचावहु । खेलन कबहुँ हमारे आवहु ॥
दूर नहीं कछु सदन हमारो । श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीजो मोहि टेरि नँदपोरी । कान्ह नाम मेरो सुनु गोरी ॥
सूधी बहुत देखियत तुमहूं । ताते साथ कीजियत हमहूं ॥
तुम्हें बबा वृषभानु दुहाई । घरी पहर खेलहु इतआई ॥
गैयां गिनन नंद जब जैहैं । तिनके संग हमहुँ उतऐहैं ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहो । खरक माँझ तौ मोको पैहो ॥
रसिक शिरोमणि जान न राई । इमि प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ हरिकी मृदुबानी । मनहीं मन प्यारी मुसुकानी ॥

दोहा—गुप्त प्रीति प्रकटी नहीं, दोउअन हृदय छिपाय ॥
मनमोहन प्यारी चली, घरको नयन चँलाय ॥
सो०—चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो साँवरो ॥
जानी बडी अबारि, मात त्रास उर आनिकै ॥

कहत सखिन सों चली कुँवरिबर । को जैह खेलन इनके घर ॥
चलो बेग अपने घर जाही । भई अबार यमुनतट माहीं ॥
वचन कहत ऊपर मुख माहीं । हृदय प्रेम दुख मन हरिपाहीं ॥
गई भवन वृषभानु कुमारी । जननी कहति कहाँ हुतिप्यारी ॥
अबलौं कहां अबार लगाई । गैया खरक देख मैं आई ॥
ऐसे कहि मातहिं बहराई । अन्तर्गत बस रहे कन्हाई ॥
बिरह बिकल तनु गृह न सुहाई । सुंदर श्याम मोहनी लाई ॥
खान पान कछु नेक न भावै । चंचल चित्त पुलकितनु आवै ॥
मात पिताको मानत त्रासा । नयनन हरि दर्शनकी आसा ॥
कहत दोहनी दै मोहि मैया । जैहौं खरक दुहावन गैया ॥
अहिर दुहत तब गाय हमारी । जब अपनी दुहि लेत सवारी ॥
घरी एक मोहिं लगि तहँ जाई । तूमति आउ खरक अतुराई ॥

---

१ क्यों । २ कानोंसे । ३ इशारेसे । ४ सैनचलाकर । ५ डर ।

दोहा—लई मान सों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटक्यो नँदलालसों, गई खरक समुहाय ॥
सो०—मग मग सोचत जाय, कब देखों वह साँवरो ॥
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो ॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं । भई चकित प्यारी मनमाहीं ॥
कबहूं इत कबहूं उत डोलै । प्रेम विकल कछु मुख नाहिं बोलै ॥
देखे नन्द सङ्ग हरि आवत । ललकि लगे लोचन सुख पावत ॥
देखी श्याम राधिका ठाढ़ी । लई बुलाय प्रीति अति बाढ़ी ॥
कह्यो महर लखि खेलहु दोऊ । दूरि कहूं मति जैयो कोऊ ॥
सुनि वृषभानुसुता इत आई । अपने साथ खेलाउ कन्हाई ॥
हरि तन रहियो नेक निहारै । कोई कहूं गाय जिनमारै ॥
नन्द बबाकी बात सुनो हरि । जाहु न मोढिग ते कतहूंटरि ॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों । राधे हरिहिबाँह गहि लीन्हों ॥
तुमको कहूं जान नाहिं देहों । जोजैहौ तो पकरि लै ऐहौं ॥
मेरी बाँह छोड़दे राधा । कहत श्याम ऊपर मन साधा ॥
तुम्हरी बाँह न तजौं कन्हाई । महर खीझिहैं हमको आई ॥

दोहा—परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द ॥
करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेमके फन्द ॥
सो०—समुझि पुरातन नेह, ब्रजविलास हित तनु धरे ॥
चलन चहत बन गेह, युगल बिहारी कुंजके ॥

तबहिं श्याम घन घटा उठाई । गर्जमेघ महि चहुँ दिशि छाई ॥
पवन झकोर चली झकझोरी । चपला चपल चबक चहुँ ओरी ॥
ह्वैगइ भूमि सकल अँधियारी । तैसिय तरु तमाल द्युतिकारी ॥
डरे देखिकै कुँवर कन्हाई । कह्यो राधिका सों नँदराई ॥
कान्हैं संगलिये घरजारी । भई अकाश घटा अति भारी ॥
लिये बाँहगहि कुँवर कन्हाई । चले युगल बन घर हरषाई ॥
नवल राधिका नवल बिहारी । पुलक अंग मन आनँद भारी ॥

---

१ रस्तेमें । २ प्रसन्नहोकर । ३ देखकर । ४ चतुर । ५ पुराना । ६ बिजली ।

नवलनेह नवरँग मन भायो । नवल कुंजवन शुभग सुहायो ॥
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले । गुंजत भ्रमर मत्तरस भूले ॥
शुभग यमुन जल पवन झकोरै । उठत श्याम छवि कुंजहिलोरै ॥
बर्नेज बिपुल बहुरंग सुहावन । चारु विचित्र पुलिन अति पावन॥
गये युगल तहँ रसिक रसीले । नागर नवल प्रेम रसगीले ॥
दोहा–विहरत विविध विलास वन, युगल रूपकी रास ॥
गुण गावत मुनि वेद विधि, अहिपति पति कैलाल॥
सो०–अति रहस्य सुखदाय, वनविहार नँदलालको ॥
क्यौं सुकहै कवि गाय, वेद भेद पावैं नहीं ॥

श्लोक गीतगोविन्द ॥

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तम्भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ॥ इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः॥

चले सदन प्रभु कुंजविहारी । गृह पठई अंकमँदै प्यारी ॥
प्यारीकी सारी हरि लीन्ही । पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही ॥
बादर जहँ तहँ दिये उड़ाई । आये सदन श्याम सुखदाई ॥
रही यशोमति हरिहि निहारी । ओढ़े देखि शीशपर सारी ॥
मन धौं कहत कहां यह पाई । पीत पिछौरी कहाँ गँवाई ॥
यशुमति तुरत आँखि पहिचानी। ब्रजयुवतिन भुँरये यह जानी ॥
पूछत हरिहि बिहँसि नँदरानी । तरुणिनकी सिखई वुधि ठानी ॥
पीत पिछौरी कितहिं बिसारी । यह तौ लाल तियनकी सारी ॥
जानि लई जननी हरि जानी । तब इक बुद्धि तुरत उर आनी ॥
मैं लै गाय गयो यमुनारी । तहँ बहु भरति हतीं पनिहारी ॥
बिडरी गाय भजीं सब नारी । बची बँसुरिया बहुत सवारी ॥
हौलै भजो औरकी सारी । सो लै चादर गई हमारी ॥

१ नवीन । २ कमल । ३ शेषजी । ४ हृदयसे लगाकर । ५ भुरकी तथा बहकाना ।

दोहा-पीत पिछौरी लैभजी, मैं पहिंचानत वाहि ॥
भैयारी मैं जायकै, घर लै आवत ताहि ॥
सो०-हरि मायाको जानि, पीताम्बर ताको कियो ॥
जननि देखायो आनि, कहतलै आयो ताहिसों ॥

राधा गई सदन समुहाई। हाथ दोहनी दूध भराई ॥
परम प्रीति हरि बसन दुरायो। जननी द्वारहिते गुहरायो ॥
औरको और कहत मुख बानी। जननी शेरि देखि भय मानी ॥
कहत दीठि लागी कहुं बारी। उर लगाय पछितात निहारी ॥
बूझत नेह विकल महतारी। कहा भयो राधा तोहिं प्यारी ॥
अबहीं खरक गई तुनीके। आवत कौन व्यथा भइ जीके ॥
इक लरिकिनी संगही मेरे। कारे डसी आय तिहि मेरे ॥
मूर्च्छि परी वह धरणि मझारी। मैं डरपी अपने जिय भारी ॥
श्याम बरन इक ढोटा आयो। कहत सुनो वह नंदको जायो ॥
कछु पढ़िकै उन तुरतहि झारी। जानत नहीं कौनकी बारी ॥
मेरे मन भरि त्रास गयोरी। अब कछु नीको नेक भयोरी ॥
अनि मत्रोंणो वृषभानु दुलारी। यह कहि समुझाई महतारी ॥

दोहा-सुनि जननी राधा वचन, उरसों लीन्ही लाय ॥
कहत टरी करिवरखडी, बार बार पछिताय ॥
सो०-एक सुता है तात, पायो देवन द्वारपरि ॥
भई आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली ॥

खीझी कछुक कुंवरि पै जननी। घर नाह रहत फिरत भइ हरनी ॥
कितनो कहत तोहि मैं हारी। दूरकहूं बाहर जिनजारी ॥
है लरिकिनी सवन घरमाहीं। तोसी निडर कहूं कोउ नाहीं ॥
कबहूं खरिक कबहुं वन जाई। कबहूँ फिरत यमुनतट धाई ॥
चितै अकाश धरत पग धरनी। बात कहत लागत तोहिं जरनी ॥
सात वर्षकी भई कुमारी। बहुत महर वृषभानु दुलारी ॥

१ नजर। २ पीड़ा। ३ लड़का। ४ डर। ५ चतुर।

आज कुशल कुलदेवन कीन्ही । विधि बचाय विषधर[1]ते लीन्ही ॥
शीतल जल लै तुरत न्हवाई । अङ्ग अँगोछ बसन पहिराई ॥
बारहि बार कहत कछु खारी । अब कहुँ खेलन दूरि न जारी ॥
यह सुनि हँसी मनहि मन प्यारी। हृदय ध्यानहरि कुंजविहारी ॥
कहत दूर अब कतहुँ न जैहौं । गाँम घरहि खेलत नित रहिहौं ॥
जिनके गुणन विरंचि[2] भुलाने । तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥

दोहा–जनरञ्जन भञ्जन कलुष[3], राधा नन्दकुमार ॥
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रजमें युगल विहार ॥
सो०–देखि अनूपम[4] बाल, मात पिता गुरुजन हरिहि ॥
असुर लखत विकराल, नव किशोर चित चोर तिय ॥

सर्व रूप सब घटके बासी । सब विधि करन सकल सुखरासी
सर्ब भाव सब फलके दायक । सर्वोपरि सब गुणके लायक ॥
सर्ब आदि सब अन्तर्यामी । सबते परे सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा । प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा ॥
छबि शृंगार मनहुँ इक जोरी । करत विहार श्याम अरुगोरी ॥
बसे श्याम श्यामा उर[5] माहीं। देखे बिन भावत क्षण नाहीं ॥
खेलन मिसु वृषभानु किशोरी । आई नन्द महरिकी पौरी ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई । घर भीतर हैं कुँवर कन्हाई ॥
सुनत श्याम कोकिलसम बानी । अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत घरि । तुरतहिसो बिसराय दियोहरि ॥
तू पहिचानति इनको मैया । कहत बारही बार कन्हैया ॥
मैं यमुना तट कालिह भुलान्यों । बांहपकरि मोको इन आन्यों ॥

दोहा–तू सकुचति आवति इहां, मैं दै सोंह बुलाय ॥
अति नागर जननी हृदय, दियो प्रेम उपजाय ॥
सो०–भीतर लेहु बुलाय, कहत मात हरिसों निरखि ॥

---

१ सर्प । २ ब्रह्मा । ३ पापनाशक । ४ अद्भुत । ५ राधिकाके हृदयमें ।

चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो ॥
नैन सैन लखि दोउ सुखपायो। बिरह ताप दुख द्वंद्व नशायो ॥
मनहीं मन आनँद अति भारी। भये मगन दोउ रूप निहारी ॥
कहत श्याम राधा किन आवै। तुमको यशुमति माय बुलावै ॥
बाँह पकरि लाये बनवारी। यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
देखि रूप मनमाँझ सिहानी। बूझत नन्द महरकी रानी ॥
ब्रजमें तोहिं न कबहुँ निहारी। कौन गाँव है तेरो प्यारी ॥
को तेरो तात कौन, महतारी। कहा नाम तेरो है प्यारी ॥
भूलि गयो है काल्हि कन्हाई। भली करी तू कर गहि ल्याई ॥
धन्यकोखि जिन तोकहँ धारी। धन्य घरी तूजिहि अवंतरी ॥
देखि रूप यशुदा अभिलाषी। सवितासों विनती करिभाषी ॥
नयन विशाल बदन शुभ छोटी। भली बनी है सुन्दर जोटी ॥
बार बार बूझत हरषाई। है तू कौन महरकी जाई ॥

दोहा—मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानत माय ॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय ॥

सो०—अब मैं लीन्ही जान, वेतो कुलटा हैं बडी ॥
हैं लँगर वृषभान, गारि देत हँसि नँदघरणि ॥

राधा बोलि उठी इत आई। करी कछू बाबा लँगराई ॥
ऐसो समरथ कब उन पायो। हँसि यशुमति राधा उरलायो ॥
कहति महरि कीरति हम जोटी। अब कीजत है तेरी चोटी ॥
यशुमति राधा कुँवरि सँवारी। प्रेम सहित बारनि निर वारी ॥
बड़े बार कोमल अतिकारे। लै सुमनासुत औंछ सँवारे ॥
माँग पारि बेनी रचि गूथी। मानहुँ सुन्दर छबिकी यूथी ॥
गोरे बदन बिन्दु करि वन्दन। मानो इन्दु मध्य भुवनन्दन ॥
सारी नई सुरंग निकारी। यशुमति अपने हाथ सँवारी ॥
बदन पोंछि अम्बर सों दीन्हो। उर आनन्द निरखि छबि कीन्हो ॥

१ वियोगका दुख। २ जन्मलिया। ३ सूर्यसे। ४ पुंश्चली। ५ नंदरानी।

तिल चावरी बतासे मेवा । कुँवरि गोदभरि विनवति देवा ॥
कह्यो कान्ह सँग खेलहु जाई । यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाई ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा । खेलत दोउ छबिसिन्धु अगाधा ॥
छं०–छबिसिंधु परमअगाध दोऊ नंद सदन विराजहीं ॥
लखि रूपकोटिककामरति घनदामिनीद्युति लाजहीं ॥
यशुमति विलोकति चकित देखति रूप मन आनँदभरी ॥
सोइ भाव देख्यो दुहुनके उर जोइ अभिलाषा करी ॥
दोहा–खेलत दोउ झगरन लगे, भरे परम अहलाद ॥
मानों घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद ॥
सो०–अमिय वचन रसमूल, अकथनीय छवि अमितगुण॥
रही यशोमति भूल, युगल किशोर विहार लखि॥
चली महरि सों कहि सुकुमारी । सदन आपने जानि अवारी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई । खेल्यो करि हरि सँग नित आई॥
बोलि उठे मोहन सुन राधा । तू कच सकुच करै जियबाधा ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं । जननी सों डरपति मनमाहीं ॥
तोको लखि मैया सुख पावै । देखि कितौ करि छोह बुलावै ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी । चितै रही मुख मन मुसकानी ॥
विहँसि चली वृषभानु दुलारी । हरि मूरति उर टरत न टारी ॥
गई सदन बूझत महतारी । कहां हुती अवलौरी प्यारी ॥
बेनी गूँथि माँग किन कीन्ही । बेंदी भाल लाल किन दीन्ही ॥
खेलत रही नँदके द्वारी । यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
बूझन नाम लगी पुनि मेरो । बाबाको पूछेउ अरु तेरो ॥
मोहि चितै पुनि सुतहि निहारी । कछु सचितोसों गोदपसारी ॥
दोहा–मेरी शिर बेनी गुही, बेंदी टाल बनाय ॥
पहिराई निज हाथसों, सारी नई मँगाय ॥
सो०–तिल चावरि दै गोद, विधना सों विनती करी ॥

१ शोभासमुद्र । २ इच्छा । ३ बिजली । ४ पुत्रको । ५ सूर्यनारायणसे ।

उर करिके अति मोद, तोहिं बिहँसि गारीदई ॥
बिहँसि कह्यो तोको नँदरानी । वह जैसी तैसी हमजानी ॥
तोहि नाम धरि धरयो बबाको । कह्यो धूत वृषभानु सदाको ॥
तव मैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं । हँसिलपटानि लगी तब हमहीं ॥
सुनि कीरति राधाकी बातें । सरल स्वभाव भरी शिशुतातें ॥
कहत ख्वाब तैं नीको दीन्हो । बेटी दाँव आपनो लीन्हो ॥
जो कछु मोहिं कह्यो नँद घरणी । सो सबहैं उनही की करणी ॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये । मनमें अति आनंद बढाये ॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातैं । बूझति है जननी राधातैं ॥
सुनि सुनि बरसाने की नारी । गावत यशुमतिको हितगारी ॥
सुनि बातैं कीरति मुसकानी । नँदरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता बिमल चपलासी । वे हरि मेघश्याम छबिरासी ॥
बाढ़यो उर आनंद हुलासी । कीरति गई समुझि पति पासी ॥
छंद–समुझि पतिके पास कीरति गई अति आँनँदभरी ॥
प्रीति रीति जनाय हित सों बात सब परगट करी ॥
भयो अति उत्साह दंपति हर्षि मन आनँद भरे ॥
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे ॥
दोहा–युगल किशोर स्वरूप बर, वृन्दावन रसखान ॥
नव दुलहिन दूलह सदा, राधा श्याम सुजान ॥
सो०–दूलह दुलहिन चार, मांडव वृन्दा विपिनके ॥
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश विधि ॥
कहत यशोमति सों हरि प्यारे । जहँतहँ रहत खिलौना डारे ॥
राधा जिन लै जाय चुराई । आवत सांझ सकार सदाई ॥
चितै रहति मुरलीकी घाहीं । मेरो प्राण बसत इहि माहीं ॥
तेरे भाये नेक न माता । राखु उठाय मान मों बाता ॥
बलहूको पतियाय न राई । राखु खिलौना सबहिं छिपाई ॥

१ बालकपन । २ बिजलीसी । ३ आनन्द । ४ वृन्दावन । ५ ब्रह्मा ।

कहत जननि हँसि लालन मेरे । कोलै जाय खेलौना तेरे ॥
नेक सुनत ताको जो पाऊं । वाको ब्रजते वास नशाऊं ॥
विन देखे तू काको कहिहै । सो कहु कैसेकै प्रगटैहै ॥
आवतही राधा लै जैहै । फिर तू पाछेते पछितैहै ॥
अजहूं राखु उठाय सवारी । माँगेते पुनि देहै गारी ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी । श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जानै । विरुझाने क्योंहूं नहिं मानै ॥

दोहा—सैंततिहै हरिके हरषि, महरि खिलौना जान ॥
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद् बटा चौगान ॥

सो०—यशुमति सुखकी रास, नँद भवन भूषणपरम ॥
ब्रजमें करत विलास, ब्रजवासी जन जाहिंवलि ॥

कहत श्यामसों यशुमति मैया । पियहु दूध कछु लेहुं बलैयां ॥
आज सवार दुही मैं गैया । सोई दूध प्याव मोहिं मैया ॥
और दूध रुचि मोहिं न आवै । जोतू कोटि यतन करि प्यावै ॥
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई । यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोहिं प्यारो । औटं धर्यो तुह्मरे हित न्यारो ॥
तातो जानि बदनैं नहिं ल्यावै । फूंकि फूंकि जननी पय प्यावै ॥
पय पीवत मोहन अलसाये । सुन्दरसेज जननि पौढाये ॥
प्रात जगावत नन्दकि रानी । उठहु लाडिले शारँगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे । ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥
हरहु ताप मुख कमल दिखाई । करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई ॥
सदमाखन दधि रैनिजँमायो । माँगिलेहु अरु जो मन भायो ॥
सखा वृन्द सब लेहु बुलाई । उठहु लाल जननी बलिजाई ॥

दोहा—तब हँसि चितये रोजते, उठे श्याम सुखदानि ॥
यशुमति जल झारी लिये, मुख धोयो निजपानि ॥

सो०—बोलि उठे बलराम, उठे सवारे आज हरि ॥

१ मुख । २ दूध । ३ धनुषधारी । ४ रातका जमाया हुआ ।

हर्षि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्रातसों ॥
द्वारे सों सब सखन बुलायो । देखि बदन सबहिन सुख पायो ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई । कियो कलेऊ कछु दोउ भाई ॥
गैयनलै बन चले गुवाला । संग चले मोहन नँदलाला ॥
टेर सुनत बालक सब धाये । घर घरके बछरनलै आये ॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया । चलहु आज वृन्दावन भैया ॥
यमुना तट सब बच्छ चौरैहैं । वंशीवट खेलत सुख पैहैं ॥
भली कही हँसि कह्यो गोपाला। चले सकल वृन्दावन ग्वाला ॥
कोउ टेरत कोउ घेरलै आवैं । कोउ सुरभी गण जोर चलावैं ॥
कोउ शृंगी[1] कोउ वेणु बजावैं । कोउ परस्पर[2] होरी गावैं ॥
हेरी टेर सुनत मनमोहन । कहत मोहिं सिखवहु निज गोहन
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई । हँसे सकल पूरी नहिं आई ॥
कहत श्याम अबकै फिरिलीजो। अबके जाय तबै हँसिदीजो ॥

दोहा—गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द[3] गो साथ ॥
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥

सो०—फिरत चरावत धेन, दीनबंधु दुष्टनदलन ॥
कृष्ण कमल दल नैन, सबै अंग सुन्दर सुखद ॥

अथ अघासुरवधलीला ॥

तहां अघासुर बनमें आयो । कंस राज करि कोप पठायो ॥
ताके एक बहिनद्वै भैया । मारे प्रथमहिं कुँवर कन्हैया ॥
एक पूतना जो ब्रज आई । वत्सासुर अरु बंक दोउ भाई ॥
तिनको बैर असुर उर धारी । कियो गर्व मनमें अति भारी ॥
आज राजको कारज कीजै । और बैर भाइनको लीजै ॥
गिरि समान अजगरतनु[4] धारी । पर्‌यो असुर मगै[5] बदन पसारी ॥
बन घन नदी रची मुख माहीं । मायाकृत पहिचानत नाहीं ॥
वाही मग निकसे नँदलाला । गाय बच्छ लीन्हे सब ग्वाला ॥

---
१ सींगिया बाजा । २ आपसमें । ३ समूह । ४ सर्पदेह । ५ मार्गमें ।

हरि अंतर्यामी जिय जानी । कपट रूप यह लखि अभिमानी ॥
याको आज तुरत संहारों । असुर मारि भूभार उतारों ॥
ग्वालन अहि पर्वत करि जान्यो। तासु वदन गिरिकंदर मान्यो ॥
देखि सुहावन तृण हरियाई । गाय बच्छ पैठे सब धाई ॥

दोहा–गाय बच्छ ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय ॥
कहत परस्पर आज बन, सुरभी चरहिं अघाय ॥

सो०–सब मुख गये समाय, असुर सकोरयो वदन तब ॥
अंधकार गयो छाय, मानों घन घेरो निशा[1] ॥

अति अकुलाय उठे तहँ ग्वाला। गाय बच्छ सब विकल बिहाला॥
कहत परे धों हम कहँ आई । त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई ॥
सबके प्राण गये इहि वारा । तुमबिन कौन उबारन[2] हारा ॥
श्रवण सुनत प्रभु आरत[3] बानी । भये दुखित चिन्ता उर आनी ॥
दीनबंधु भक्तन सुखदाई । पैठे आप अघा मुख आई ॥
अघा असुर उर अति हरषाई । लियो ओंठ सों ओंठ लगाई ॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा । अति भय बिकल मगन सुर सर्वा॥
तबहिं कृष्ण मन बुद्धि उपाई । अविगत गति भक्तन सुखदाई ॥
मुखते देह दुगुण विस्तारी । रुँधी श्वास भै त्रास देवारी ॥
सक्यो नहीं तब असुर सम्हारी। कियो शब्द आघात पुकारी ॥
फूटि गये शिर दशन दुवारी । निकसी प्राण ज्योति उजियारी ॥
सोवह ज्योति स्वर्ग्ग को धाई । बहुरि आय हरि मांझ समाई ॥

दोहा–वाही मग अघ वदनते, निकसे गोकुलराय ॥
कहत सखन आवहु निकसि, मैं करि लई सहाय ॥

सो०–अतिहिसकाने ग्वाल, गाय बच्छ व्याकुल सकल ॥
मिट्यो तिमिर[4] तिहि काल, जहँ तहँ हर्ष वचन सुनि॥

बच्छ सहित बाहर सब आये । हरिको देखि परमसुख पाये ॥
हम अज्ञान वृथा भय भाई । श्याम हमारे साथ सहाई[5] ॥

१ रात । २ रक्षाकरो । ३ दुःखित । ४ अंधकार । ५ सहायक ।

धन्य कान्हधनि धनि पितु माता। जिन जायो सुतंको ब्रज त्राता ॥
गिरिसैमं असुर सर्प्प तनु धारी। ताहि हन्यो तुम हौ असुरारी ॥
कहत कान्ह तुम करी सहाई। तब मार्‍यो मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे संग न होते। तौ यह मार्‍यो जात न मोते ॥
देखि अघासुर बध सुर ज्ञानी। वर्षि सुमैन कहि जै जै बानी ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा। अति आनँद गुण गावत सर्वा ॥
अघा असुरकी करत बड़ाई। हरिमधि जाकी ज्योतिसमाई ॥
करत अनेक यत्न मुनि ग्रोमा। अंतकाल दुर्लभ हरिनामा ॥
सोहरि अंतकाल जगपावन। बसे आप अघ मुख दुख दावन ॥
इहि सम और कौनके भागा। कहत देव सब अति अनुरागा ॥

दोहा–जै जै जै प्रभु जगत हित, जगत्राता जगदीश ॥
जाको मारनहूं प्रगट, तारन विश्वा वीश ॥

सो०–हर्षि सुमन बरषाय, जय जय ध्वनि नभँ करत सुरँ॥
गाय ग्वाल सुख पाय, अति आनँद निरखत हरिहि॥

तबाहिं सखन सों बिहँसि कृपाला। बोले करुणासिंधु गोपाला ॥
चलहु सकल बंशीवट छाहीं। आई हैहैं छाक तहांही ॥
भोजन करिये सब ,मिलिजाई। बछरा हांकि लेहु अगुवाई ॥
हर्षि चले तहँते बलबीरा। आये सब बंशीवट तीरा ॥
बंशीवट अति सुभग सुहावन। और चहूंदिशि बहु द्रुमँ पावन ॥
चरत बच्छ सब बनके माहीं। बैठे आय श्याम वट छाहीं ॥
आस पास गोपनके बालक। मध्य श्याम सुंदर जगपालक ॥
मोर मुकुट कल कुण्डल कानन। कोटि काम छबि मोहन आनन ॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा। पीतबसन बनमाल ललामा ॥
बहु विशाल लकुटीकर लीन्हें। गुंजनके आभूषण कीन्हें ॥
सखा वृन्द सब सुन्दर सोहैं। निरखत रूप मदन मन मोहैं ॥

१ पहाड़केसमान। २ फूल। ३ समूह। ४ आकाश। ५ देवता। ६ वृक्ष।

प्रेम मगन मन परम हुलासा । करत परस्पर हास विलासा ॥

दोहा—तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार ॥
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार ॥

सो०—छाक पठाई मात, हर्षि कहत हरि सखनसों ॥
दधिलवनी बहुभांत, सब मिलि भोजन कीजिये ॥

बनभोजन विधि करत कन्हाई । छाक सबै इकठौंव रखाई ॥
जलते पुरइन पात मँगायो । दोना बहु पलाशके लायो ॥
कछु फल वृन्दावनके नीके । लिये मँगाय भावते जीके ॥
बैठे मंडल जोरि गोपाला । मध्य श्याम सुंदर नँदलाला ॥
भांति भांति व्यंजन रस पागे । परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुक हथेरिन पर धरि लीन्हो । शाक खोलि अँगुरिन बिच कीन्हो ॥
मुरली मुकुट कांख तर लीने । भोजन करन लगे रस भीने ॥
मधु मंगल पर सैन्य सुदामा । सुबल सुखमना अरु श्रीदामा ॥
अपर अनेक गोप सुत लीने । जेंवत सब मिलि श्याम प्रवीने ॥
लेत परस्पर कौर छुड़ाई । कबहुँ कितनको देत कन्हाई ॥
कबहूं काहू देन बुलावें । डहँकिताहि अपने मुख नावें ॥
मीठे खाटे स्वाद बखानैं । हास विलास करत सुखमानैं ॥

दोहा—देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढे विमान अकाश ॥
लखि कौतुक चक्रित सबै, गये कमलभवँ पास ॥

सो०—कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि वर ब्रह्म तुम ॥
सो ग्वालन सँग खाय, छोरि छोरि करते कवरँ ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला ॥

हरि माया मोहे सब प्रानी । कह ब्रह्मा कह सुर मुनि ज्ञानी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी बानी । भयो मोह उरमें यह आनी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो । मैं कछु वाको भेव न पायो ॥
परचौलै देखौं प्रभुताई । बाल बच्छ हरि ल्यावों जाई ॥

१ नवनीत । २ ढाक । ३ ब्रह्मा । ४ ग्रास ।

जो सर्वज्ञ ईश भगवाना। लेहैं तुरत मँगाय सुजाना॥
यह विचार विधि मन ठहरायो। चल्यो तुरत वृन्दावन आयो॥
देखि सरित वनमें अति पावन। पुहुप लता द्रुम परम सुहावन॥
अति रमणीक कदम चहुँ पासा। वंशीबट मधि सुखद निवासा॥
गोप मण्डली मण्डन मोहन। भोजन करत सखन सँग गोहन॥
देखि विरंचि चकित भ्रम भारी। बछरा हरि लीन्हे बनझारी॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानी। विधिके मनकी रुचि पहिचानी॥
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई। लावहु वत्स घेरि सब जाई॥

दोहा—ग्वाल सकल वन ढूंढिकै, फिरि आये हरि पाहिं॥
कहत बच्छगे दूरि कहुँ, खोज पाइयत नाहिं॥

सो०—तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहौ॥
मैं धौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब॥

जबगे दूर बनहिं जनत्राता। तबहीं बालक हरे बिधाता॥
प्रभुलीलाकी गम कछु नाहीं। गर्भितें गयो लोक निजपाहीं॥
निजमाया सों करि मति भोरी। राखे बाल बच्छ इक ठोरी॥
गुणसागर नागर नँदनन्दन। वंशीबट आये जगबन्दन॥
दीनबन्धु भक्तन हितकारी। यह अपने मन मांझ विचारी॥
बालबच्छ जो ब्रज नहिं जैहैं। मात पिता इनके दुख पैहैं॥
ताते रूप सबन को धारों। या विधि तिनको दुःख निवारों॥
बाल बच्छ विधि लै गये जेते। भये श्याम तब आपुन तेते॥
वैसोइ रूप वैसगुणशीला। वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला॥
रङ्ग रेख जैसो जिहि माहीं। अंग चिन्ह अंतर कछु नाहीं॥
बोलन हँसन चलन चतुराई। हेरन टेरन फेरन राई॥
भूषण बसन लकुट कर जैसे। भये श्याम तब आपुन तैसे॥

दोहा—मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान॥
तदपि जान निज दास विधि, करीतासुकी कान॥

---

१ स्वामी। वृक्ष। ३ ब्रह्मा। ४ बछड़ा। ५ अहंकारसे। ६ अवस्था।

सो०–अपनो करि विधि जान, अनजानत ढीठो करी ॥
तातें कीन्हे आन, मन भायो विधिको कियो ॥

कह्यो श्याम सब सखन बुलाई। लावहु घेरि वत्स[1] सब जाई ॥
ब्रजको चलहु सांझ नियराई। हर्षि चले बालक समुदाई ॥
चहूंपास सब सखा सुहाये। मध्य श्याम बछरन अगुवाये ॥
वेणु विशाल रसाल बजावत। अपने अपने रँग सब गावत ॥
रांभति गाय बच्छ हित लागी। देखत ब्रज युवती अनुरागी ॥
मोर मुकुट कुंडल घनमाला। हँसन मनोहर नयन विशाला ॥
गोपदरज मुख पर छबिछाई। मनहुँ चंद्रकन अमिय[3] निकाई ॥
ब्रज वनिता सब तन मन वारत। निरखि रूप भेंटत चित वारत ॥
पहुँचे ब्रजहिं श्याम सुंदर वर। गये बच्छ बालक निज निज घर
गोसुत ग्वाल बाल हर्षाई। लीन्हे तात मात उरलाई ॥
परम प्रीति करि भोजन दीन्हो। कृष्णचरित काहू नहिं चीन्हों ॥
यशुमति कहत सुतहि मिलि प्यारे। वनहिरात कत करत ललारे ॥

दोहा–मैं सबेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात ॥
देखि अगम[4] वनमें डरयो, वे डरपावत जात ॥

सो०–बारबार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत ॥
ल्यावहिं गाय चराय, कालिह जायँ वेई सबै ॥

यह सुनिकै हँसि कहत कन्हाई। कालिह चरावन जात बलाई ॥
लागी भूख बहुत मोहिं हैरी। भोजनको तुरतहिं कछु दैरी ॥
सुनत तुरत माखन लै आई। तब लौं खाहु जननि बलि जाई ॥
है जल तप्त घामको प्यारे। तेल परसतनु न्हाहु ललारे ॥
जाते बनको श्रम मिटि जाई। भोजन करहु बहुरि दोउ भाई ॥
तब जननी गहि बांह न्हवाये। जेवनको बलराम बुलाये ॥
अति रुचि सों जेंवत दोउ भाई। परम प्रीति परसतहैं[5] माई ॥

---

१ बछडा। २ निकट। ३ अमृत। ४ अथाह। ५ परोसतीहैं।

जेइँ उठे अचमन तब कीन्हों। बीरा दुहुँन रोहिणी दीन्हों॥
जानि उनींदे सेज बिछाई। जननी पौढ़ाये दोउ भाई॥
श्याम राम सोवत दोउ भैया। सुख पावत निरखत दोउ मैया॥
अधम रह्यो विधि गर्व नवायो। ब्रजबासिन कछु भेद न पायो॥
बाल वत्स हरि नये उपाये। सब जानत वेईहैं आये॥

दोहा-बाल वत्स नव कृत तिन्हैं, ब्रजवनिता अरु धेन॥
पूरबप्रीतिहुते अधिक, करत रहत उर चैन॥

सो०-अज मंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु॥
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर॥

तब बिरंचिके मन यह आई। ब्रजके लोगन देखौं जाई॥
ह्वैहैं करत विलाप कलापा। बिन बच्छन गैयन सन्तापा॥
आय विरंचि तुरत तहँ देख्यो। घरही घर सब कौतुक पेख्यो॥
जहँतहँ दुहत गाय पशुपालक। खेलत निजनिज घर सब बालक॥
देखि विरंचि चकित मनमाहा। हैं यह ब्रज कैधा वह नाही॥
मैं विधना सब सृष्टि उपाई। यह रचना धौं किनहिं बनाई॥
कैधौंहौं यहि भ्रमहि भुलाना। हैं हरि अविनाशी नाहिं जाना॥
अन्तर्य्यामी जानत सबहीं। बाल बच्छ धौं ल्याये तबही॥
अति संभ्रम विधिज्ञान भुलायो। गयो फेरि निजलोकहि धायो॥
देखे वत्स बाल जहँ राखे। चकित बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥
क्षण भूतल क्षण लोक सिधारो। बालबत्स दुहुँ ठौर निहारो॥
वर्ष दिवस इहि भांति बिताई। भयो थकित अति उर भ्रमछाई॥

दोहा-मोहविकल अति देखिकै, सुंदर श्याम सुजान॥
प्रकट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान॥

सो०-हृदय भयो तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु॥
धिक धिक मेरी बुधि, वैर बढ़ायो कृष्णसों॥

मैं मतिहीन भेव नहिं जान्यो। मोहविवश प्रभुसों छल ठान्यो॥

१ तमाशा। २ ग्वालिया।

यह अपराध बहुत मैं कीन्हो । निज अज्ञान न प्रभुको चीन्हो ॥
भई गलानि बहुत मन माहीं । सन्मुख होय सकत विधि नाहीं ॥
भयो शोच उरमाँझ विशेषा । प्रभु प्रभाव तब परगट देशा ॥
बालक वत्स सहित सब साजू । कृष्णरूप सब लख्यो समाजू ॥
शिव ब्रह्मादिक देव अनेका । देखे अधिक एकते एका ॥
चरण कमल वन्दन प्रभु केरे । गावत गुण गन्धर्व घनेरे ॥
देखि चकित चित भर्म नशान्यो । पूरण ब्रह्म कृष्ण पहिचान्यो ॥
शरण शरण कहि अति अतुराई । पर्यो चरण कमलन परजाई ॥
अनजानत मैं करी ढिठाई । क्षमा करहु त्रिभुवनके राई ॥
मैं प्रभु तुम प्रताप नहिं जान्यो । तुम्हरी माया मांझ भुलान्यो ॥
चूक परी मोते निज भोरे । नाथ न बनै तुम्हैं मुख मोरे ॥

दोहा—मैं अपराधी हीनमति, पर्यो मोहके जाल ॥
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल ॥

सो०—कह जानों तुव भेव, मैं ब्रह्मा तुह्मरो कियो ॥
तुम देवनके देव, आदि सनातन अजित अज ॥

जो जनते बिगरै बिन जाने । सो अपराध न प्रभु कछु माने ॥
जो शिशु अज्ञ दोष उरमाहीं । माता कबहूं मानत नाहीं ॥
तोपै पोप ताको वह करई । बिकसत चित्त अंकलै भरई ॥
रदरसनादल जोरिस होई । कहौ कौन परकीजै सोई ॥
निजतनु व्याधि पीर जन पावै । यदपि यत्न करि नहीं बचावै ॥
तैसेही प्रभु मोको कीजै । क्षमि मम दोष शरण गहि लीजै ॥
तुम जाने बिन जीव सदाहीं । उत्पति परलय मांझ समाहीं ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाको । सो जानै तुह्मरी प्रभुताको ॥
मैंविधि एक लोकको साईं । जिमि कृमि गूलर मांझगोसाईं ॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता । कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता ॥

१ प्रताप । २ ढीठता । ३ अजेय । ४ जन्मरहित । ५ बालक । ६ लालनपालन ।

कोटि खद्योत[1] प्रकाश कराहीं। रवि[2] सम क्योंहू होहिं सुनाहीं॥
अब प्रभु बनै सँभारे तोहीं। राखिय चरण शरण निज मोहीं॥
दोहा-अतिही अगम अगाध हरि, अविगति गतिको जान॥
तासु पार चाहौं लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान॥
सो०-करिय विरदकी लाज, ममकृत दोष न मानिये॥
दीनबन्धु ब्रजराज, शरणागत पालन हरे॥
जब विधि कही दीन बहु बानी। शरण शरण कहि अति भयमानी॥
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे। एकै रूप कृष्ण विधि पेखे॥
कृपा करी तब श्रीब्रजनाथा। हस्तकमलपरस्यो विधिमाथा॥
अभैय कियो विधि शोच मिटायो। चरणकमलते शीश उठायो॥
बार बार पदकमल निहोरी। स्तुति करत दुहूं कर जोरी॥
जो जग धाम श्याम सुखराशी। ज्योति स्वरूप सबै उरबासी॥
गुणगण अगम[3] निगम[4] नाहिं पावैं। ताहि यशोदा गोद खिलावैं॥
धर जल अनल[5] अनिल[6] नभछाया। पांच तत्त्व मिलि जगतउपाया॥
काल डरै जाके भय भारी। सो ऊखल बांधे महतारी॥
जग करता पालन संहरता। विश्वंभर सब जगके भरता॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं। ब्रजमें हँसि हँसि जूठनिखाहीं॥
बड़े भाग्य ब्रजवासिन केरे। तिनके प्रेम रहत तुम घेरे॥
छं०-रहत जिनके प्रेम घेरे, धन्य ब्रज वासी सबै॥
ब्रह्म एक अनीह अविगति, धरन धर जिनके फबै॥
धन्य श्रीवसुदेव देवकि, पुत्र करि जिन पाइयो॥
धन्य यशुमति नन्द जिन, पय प्याय गोद खिलाइयो॥
धन्य ब्रजके गोप जिन सँग, धन्य गाय चरावहीं॥
चार मुख मैं कहा वरणों, सहस मुख नित गावहीं॥
धन्य बालक बच्छ तिनते, नाथ यह दरशन लियो॥

१ पटबीजना। २ सूर्य। ३ निडर। ४ पुराण। ५ वेद। अग्नि। ७ वायु।

परसि चरण सरोज मस्तक, पाप तजि पावन भयो ॥
अब देहु ब्रजको वास मुहिं, प्रभु आश यह मेरे हिये ॥
रेणु तृण द्रुम[1]लता खग[2] मृग होहिं जो तुम्हरे किये ॥
यह नित्य ब्रजलीला तुम्हारी, तुम अनुग्रह ते लही ॥
महत्त[3] श्रीवृन्दाविपिनको, अमित मित सबको कही ॥
लोक मोहिं न सुहात अब प्रभु, आन विधि कोउ कीजिये
मोहिं ग्वालनको करौ भृत[4], खाय जूठनि दीजिये ॥
बार बार मनाय युग पद, नाथ पद वर मांगहूं ॥
ह्वैरहौं वृन्दा विपिन रज, चरणपंकज लागहूं ॥
दोहा०-करि स्तुति गद्गद वचन, दृगजल[5] पुलक शरीर ॥
पर्यो चरण पंकज वहुरि, विधि अति प्रेम अधीर ॥
सो०-तब हँसि बोले श्याम, गर्वप्रहारी भक्त हित ॥
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब ॥
और काहि अब करौं विधाता । तुमहौं कर्म धर्मके दाता ॥
तुमते है यह सब संसारा । मम मायाको नाहिन पारा ॥
ताते अब मम आयसु कीजै । ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजै ॥
जाते तनुके पाप नशाहीं । बहुरि जाहु लोकहि सुख माहीं ॥
हरि उरहार विविध पहिरायो । बिदाकियो सब शोच नशायो ॥
प्रभु आयसु माथेपर धारी । पाय प्रसाद हरषि सुखचारी ॥
ब्रज दाहिन फिर पाप नशाये । बाल वत्स प्रभु पहँ पहुँचाये ॥
बार बार चरणन शिरनाई । विधि निज लोक गये सुखपाई ॥
ग्वालन यह कछु मर्म नजान्यो । वाहि समय सबहिन मनमान्यो ॥
हरिसों कहत विलँब कहँलाई । हम तुम विना छाक नाहिं खाई ॥
तुमसब भोजन मांझ भुलाने । बच्छ जाय बन दूर हिराने ॥

१ वृक्षवेल । २ पक्षी । ३ महात्म्य । ४ सेवक । ५ आंस । ६ आज्ञा ।

खोजत खोजत क्योंहूं पाये। सों मैं लै तुम पहँ पँहुचाये॥
दोहा–अब राखौ सब घेरिकै, दूरि निकसि नहिं जाहिं॥
तब सुचिते ह्वैके सबै, रुचि सों भोजन खाहिं॥
सो०–ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो॥
बहुरि यमुन तट जाय, जल अँचयो[1] धोयो बदन॥
सन्ध्यासमय चले घरग्वाला। मध्यश्याम सुन्दर नँदलाला॥
बच्छ घेरि आगे करि नीके। काँधनपर धर लीन्हे छीके॥
जन जन शृङ्ग बजावत गावत। बनते बने ब्रजहि हरि आवत॥
घर आये ब्रज मोहन लाला। कहत यशोमति सों सब ग्वाला॥
अहो महरि बन आज कन्हाई। महादुष्ट इक मार्‌यो जाई॥
उरग[2] रूप निगले शिशु बच्छा। करी आज सबकी हरि रच्छा॥
गिरि कन्दर सम तिन मुखबायो। पैठिश्याम तेहि तुरत नशायो॥
याके बल हम बदत न काहू। फिरत सकल बन सहित उछाहू॥
जीते सबै असुर बन माहीं। यह काहूते हार्‌यो नाहीं॥
बीते वर्ष कहत सब ग्वाला। आज अघा मार्‌यो नँदलाला॥
यह प्रभु लीला अपरम्पारा। कौन कौन को भुरै न पारा॥
यशुमति सुनि चक्रित पछिताई। मैं बरजत बन जात कन्हाई॥
दोहा–केती करवँरते[3] बच्यो, तऊ न नेकडरात॥
अति विचित्र गति ईशकी, जानी जात न बात॥
सो०–खीझति यशुमति मात, मानत नाहिं मेरो कह्यो॥
श्याम मनहिं मुसकात, अब बनमें नहिं जाइहौं॥
हरिकी लीला कहत न आवै। सुर नर असुर सबहिं भरमावै॥
पयँ पीवत पूतना नशाई। पटक्यो तृणा शिलापर जाई॥
तीन लोक मुखमें दिखराये। यमलाअर्जुन वृक्ष[4] ढहाये॥
वत्सासुर बक बहुरि नशायो। अघामारि विधि गर्ब[5] नवायो॥
यशुमति यह पुरुषारथ देखी। तापर खिझपछितात विशेखी॥

---

१ आचमनकिया। २ सर्प। ३ बलाय। ४ वृक्ष। ५ ब्रह्मकागर्व।

अघा मारि आये नँदलाला । घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि ब्रज युबती उठि धाई । चकित विलोकत हरिमुख आई ॥
मन मन करत यहै अनुमाना । इनकी सर[१] कोऊ नहिं आना ॥
येई हैं ब्रजके रखवारे । येई हैं पति प्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी । हैं ये जगपति हम यह जानी ॥
प्रेम मगन ब्रजके नरनारी । लहत परम सुख हरिहिनिहारी ॥
ब्रज मोहन सुन्दर सुखरासा । भोजन मांगत यशुमति पासा ॥

दोहा—खाहु लाल जो भावई, रुचि सों सखन समेत ॥
सद माखन व्यंजन सरस, करि राखे तुम हेत ॥

सो०—देरोटी नवनीत, और मोहिं भावै नहीं ॥
दियो मात अति प्रीत, खात हँसत मिलिसखनसँग ॥

॥ गोदोहनलीला ॥

हँसि जननी सों कहत कन्हैया । दोहनि दे दुहिहौं मैं गैया ॥
नंदबाबा मोहिं दुहन सिखायो । ग्वालन की सर दुहन चढ़ायो ॥
धौरी धूमरि काजरि गैया । तुरतहि दुहिल्यावोंदे मैया ॥
भयो मोहिं बल माखनखाई । अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोहिं नहीं पतियारो आवै । बैठि ऊठकर भाव बतावै ॥
अँगुरी भाव देखि हँसि माता । उरलगायलिये सांवल गाता ॥
कहत कहां इतनी बुधि पाई । हर्षि निरखि मुख बलि २ जाई ॥
लै दोहनी दई करमाता । हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो । मात दुहत लखि हर्ष बढ़ायो ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई । हमहूं ते तुम करत बड़ाई ॥
दुहन देहु कल्ह दिन मोहिंगैया । तब करियो मेरी सरभैया ॥
जब लगि एक दुहौ तबताई । दश न दुहौं तो नन्द दुहाई ॥

दोहा—सखा कहत सब झूठही, नंद दुहाई खात ॥
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिंको अधिकात ॥

---

१ बराबर । २ आपसमें । ३ ताजी । ४ माखन । ५ भरोसा ।

सो०—कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बातें यह ॥
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड़ लगायके ॥

श्रीवृषभानु कुँवरि मन माहीं । श्याम सुरत क्षण बिसरत नाहीं ॥
दरश लालसा दृगन न थोरी । देखोइ चहत बहोरि बहोरी ॥
उठे प्रभात दोहनी लीन्ही । सुरत श्याम दर्शनकी कीन्ही ॥
जननी देखि कह्यो दुलराई । जातिकितै राधा अतुराई ॥
खरकाहिं जात दुहावन मैया । दुहत सबेर ग्वाल सब गैया ॥
काल्हि तनक मैं विलँब लगाई । उठे अहिर सब मोहि रिसाई ॥
गईं गांय सब बच्छ पियाई । रीती दोहनि लै फिरि आई ॥
तुमहूं खीझन लगि तब मोही । जातसबार आज कहि तोहीं ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई । घरते चली ब्रजहि समुहाई ॥
नंदसदन आई हरिप्यारी । दुहत गाय गृह द्वार विहारी ॥
दुहत परस्पर अति सुख पायो । निरखि बदन छबि हर्ष बढ़ायो ॥
राधहि देखि महरि नँदरानी । लई बुलाय निकट हर्षानी ॥

दोहा—दंपतिको मुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥
वार वार लखि युगल छबि, मनहीं मन बलिजाय ॥

सो०—महरि मुदित मुसकाय, मथन कह्यो दधिकुँवरिसों॥
आन दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढी भई ॥

नेति पाँणि मन अति अनुरागी । रीतोइमाट विलोवनलागी ॥
तैसइ भई श्याम गति भोरी । मनलाग्यो जहँ कुँवरि किशोरी ॥
वृषभहिंसों लोई लै लैया । बिसरि गई ग्राढी कित गैया ॥
दम्पति दशा देखि नँदरानी । रही चकित नहिं जात बखानी ॥
राधा सों कहि प्रगट जनायो । किन यह तोको मँथन सिखायो ॥
निज घर मथति ऐसही जानी । कै मेरे घर आय भुलानी ॥
मैं नहिं मथन कबहुँ दधि कीनी । तुम मोहिं सोंह बबाकी दीनी ॥
ताते मथन करन मैं लागी । तुम्हरो वचन सकी नहिं त्यागी॥

१ बाजीवदकै । २ इच्छा । ३ आंख । ४ घर । ५ मुख । ६ हाथ ।

तब नँद घरनी मथन बतायो । राधे हरि तन ध्यान लगायो ॥
दुहन श्याम गैया बिसराई । लैयो वृषभ पाव अटकाई ॥
दोहनी श्याम माँग तब लीन्ही । तुरत सखा इक लै कर दीन्ही ॥
कहत दुहौ हरि करो चड़ाई । हँसत गोप बालक समुदाई ॥
दो०-हँसत कहत हरिसों सबै, कह तुम रहे लुभाय ॥
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारी सों चितलाय ॥
सो०-प्रिया वदन दृग लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
देह दशा बिसराय, भूलि गये सब चतुरता ॥
यशुमति कहत राधिकहिंटेरे । येढंग हैंरी प्यारी तेरे ॥
ऐसो ह्यारु मथत दधि तेरो । हरि भयो मानहु चित्रै चितेरो ॥
तेरो मुख सम शशि नाहिं आजै । नयननलखि खंजन गतिलाजै ॥
चपलाहूते चमकत हैंरी । करिहै कहा श्यामको तेरी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नाही । है धौं कहा गुणत मनमाहीं ॥
इकटकदीठि तबहि तेल्याई । तनुकी सुरति सबै बिसराई ॥
अबही ते ऐसे ढंग योही । अबहीं बहुत होनहै तोहीं ॥
ऐसे ढँगहि लगायो श्यामहिं । काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥
चितयो मतिहि करै टकलाई । हिलिमिलि खेल श्याम सँग आई ॥
कै रहो बैठि आपने धामहिं । धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं ॥
देखत तोहिं श्याम सुधि जाई । तू चितवति तनु सुधि बिसराई ॥
सूधेरहि जो इहां तु आवै । ऐसो ढंग मोको नाहिं भावै ॥
दोहा-करत अचकरी आयतू, यह नहिं मोहिं सुहाय ॥
सूधे खेलहि श्याम सँग, कैतू इत मति आय ॥
सो०-ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरि भाव तेहिं ॥
तब कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन ॥
मोहिं खीजति बरजत सुत नाहीं । नित उठि मोहिं बुलावन जाहीं
मोहिं कहत बिन तोहिं निहारे । रहत न मेरे प्राण सुखारे ॥

१ लोमना । २ आंखलगाकर । ३ चित्रकार । ४ चन्द्रमा । ५ बिजली । ६ दृष्टि ।

छोह लगत मोको सुनि बानी । तब आवत मैं ह्यां घरजानी ॥
सुख पावति आवति मैं तातें । तुम कछु लावत औरहिं बातें ॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बानी । भोरे भाय समुझि सकुचानी ॥
बांह पकरि उरसों लै लावति । प्यारी मनसों रोष मिटावति ॥
हँसत कहत मैं तोसों प्यारी । मनमें कछू बिलग जनिलारी ॥
सिखवत तोहिं सीख गुणकारी । मैं तेरी जैसे महतारी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई । गृहकारज कछु तोहिं सिखाई ॥
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती । बोली अति नागरि शिशुरीती ॥
मैया मोसों टहल करावै । खीझत जात देखि जो पावै ॥
सुनि यशुमति राधाकी बानी । श्री वृषभानु लाड़िली जानी ॥

दोहा—अति सप्रेम दुलरायके, लई बहुरि उर लाय ॥
श्रीराधाके चित्ततें, दीनो क्षोभ मिटाय ॥
सो०—काप बरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता ॥
लीनी सहज सुभाय, बातनहीं यशुमति भुरै ॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई । दुहत कहा तुम आज कन्हाई ॥
कालिह दुहत रहे होडलगाई । बिसर गई सब आज बड़ाई ॥
गिरति दोहनी कम्पित हाथा । नोवत वृषभ वंत्सलै साथा ॥
सुनि ग्वालनके वचन गोपाला । कछुक सकुचि बिहँसे नँदलाला ॥
बच्छ छोरदियो खरिक चलाई । आप जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो । सुनि आऊं दाऊ मोहिं टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो । लै हरि मुकुट शीश धरिलीनो ॥
चारु पीत पट कटि लपटाई । कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी । गये बुलाय खरिक सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई । कहति यशोमति सों अतुराई ॥
जाति घरहि प्रातहि मैं आई । खरिक दुहावनको निजगाई ॥

१ प्रीतिपूर्वक। २ प्यार करके। ३ क्रोध। ४ ५ बैलके लोमना बांधते हो। ५पीतांबर।

पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं। खोजति मैं आई इत माहीं॥

दोहा–इहाँ अजिर[1] गैया दुहत, देखे आय कन्हाय॥
तनके दोहनि तनक कर[2], देख रही चित लाय॥

सो०–सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन॥
यशुमति मन सुखपाय, कहत कुँवरि सों जान घर॥

जा प्यारी घर आवत रहियो। हमरो मिलन महरि सों कहियो॥
यह सुनि कुँवरि चली हर्षाई। मन हरि लीन्हो कुँवर कन्हाई॥
गई खरिक करें दोहनि लीने। चितवत मग[3] जहँ श्याम प्रवीने॥
तहां मिली बहु सखी सहेली। बूझति राधहि कहा अकेली॥
मात दुहावन मात पठायो। तहां खरिक कोउ अहिर न पायो॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन। जात खरिक अब गाय दुहावन॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो। हम दुहि देइँ दोहनी लावो॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई। सुनत गई प्यारी सुखपाई॥
कहति सखी सब मन मुसुकाई। कहां प्रीति इन आय लगाई॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया। आई कहां दुहावन गैया॥
हरि मुख लखि वृषभानुकिशोरी। प्रेम विवश भइ तनु सुधि भोरी॥
मोहन लई दोहनी करते। प्रिया प्रीति रस वश भइ वरते॥

दोहा–धेनु दुहावत लाड़िली, दुहत नन्दको लाल॥
सो सुख कापे जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल॥

सो०–बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हों हाथ हरि॥
प्रिया बदन दृग लाय, दूध धार छांड़त छलन॥

दुहत धेनु अतिही छबि बाढ़ी। प्यारी पास दुहावन ठाढ़ी॥
एक धार दुहनी में डारे। प्यारी तन इक धार पखारे॥
हरि करते पय धार छुटाहीं। लसत छींट प्यारी मुख माहीं॥
मनहु मयङ्क कलङ्क पखारी। शोभित जहँ तहँ चन्द्र सुधारी॥
कै धौं पैं निधि खोरि मयङ्का। लसत सुधासह खोय कलङ्का॥

---

१ आंगन। २ हाथमें दोहनी। ३ मार्ग।

लसतनीलपट कनक किनारी। मोरत मुखहिं मुदित मन प्यारी॥
मनहुँ शरद शशि सुधा उदारा। घनदामिनि घेन्यो इक बारा॥
इहि विधि रहसत बिलसत दोऊ। हेतु हिये थोरे नहिं कोऊ॥
मनहुं उभय आनँद सर भारी। मिलत चहत मर्याद बिसारी॥
हाँवे भाव रस दम्पति पूरे। निरखत ललितादिक दुर दूरे॥
इहि विधि श्री वृषभानुदुलारी। हरि पै धेनु दुहावत प्यारी॥
विलसत ब्रजविलास ब्रजप्यारे। ये सुख तीन भुवनते न्यारे॥

दोहा–दुही कुँवर नँद लाडिले, श्रीराधाकी गाय॥
दोहनि देत न हँसि प्रिया, माँगत हाहाखाय॥

सो०–त्यों त्यों हँसत कन्हाय, ज्यों ज्यों पिय हाहाकरत॥
सो सुख वरणि न जाय, अरुझे दोऊ प्रेम रस॥

फिर हाहाकर कहत कन्हाई। अबकेदेहौं नन्द दुहाई॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी। दई दोहनी बिहँसि बिहारी॥
हाँवे भाव करि मन हरि लीन्हों। कुवँरिहि कान्ह बिदा तब कीन्हो
यह छबि निरखि सखी हर्षानी। चली अग्रह्वै कछुक सयानी॥
प्यारी निरखि श्याम सुन्दरको। चलन चहत पग चलत न घरको॥
अंतरनैक न हरिसों भावै। पुरजनसकुच बहुरि सकुचावै॥
धिक यह लाज कहत मन माहीं। निरखन देत श्याम जो नाहीं॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई। दूर करौं पुनि इहि दुखदाई॥
यह विचार मनमें ठहराई। चली सदन उर राखि कन्हाई॥
मुरि मुरि नंद नँदन तन हेरे। आवति विरह बिथा तन घेरे॥
आगे धरत परत पग नाहीं। मन फेरत मन मोहन पाहीं॥
चितवत श्याम खरिक महँ ठाढे। प्यारी तन मन आनँद बाढे॥

दोहा–भये दृगनते ओट दोउ, गये सदन सुखरास॥

१ नीलाम्बर। २ सुनहरी किनारी। ३ दोनों। ४ सरोवर। ५ जुदाई। ६ आंखोंसे।

विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियन पास ॥
सो०–सखियन आवत देखि, श्रीवृषभानु कुमारिको ॥
उर आनंद विशेषि, हर्षि सबै ठाढी भई ॥
बूझति सबै सखी मुसकानी। कहहु राधिका कुवँरि सयानी ॥
और अहिर तुह्मरे कित प्यारी। हरि दुहि दीन्ही गाय तुम्हारी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी। गिरी धरणि मुरझाय किशोरी ॥
देखि सखी सब आतुर धाईं। लई उठाय कुँवरि उरलाई ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई। दूध दोहनी दई गिराई ॥
यह वाणी कहि सखिन सुनाई। कारे मोंहि डसीरी माई ॥
भई विकल कछु तनु सुधि नाहीं। कहत सखी सब आपसमाहीं ॥
अबही देखत नीके आई। कहा भयो कारे कित खाई ॥
यहतो कारो कुवँर कन्हाई। हमहूं को जिन फूंक लगाई ॥
जाकी मुर मुसकन विष बांको। याके रोम रोम विष ताको ॥
तन मन दगन सांवरो छायो। देह गेह सब नेह भुलायो ॥
सब सखियन मन यह ठहराई। लैराधिकाहिं सदन पहुँचाई ॥
दोहा–लेहु महरि कीरति सुता, अपनी देखहु आय ॥
कहुँकारे याको डसी, गिरी धरणि मुरझाय ॥
सो०–ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यतन याको करहु ॥
गयो वदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हम लाई इहां ॥
जननी सुनत उठी अकुलाई। रोवति धाय कंठ लपटाई ॥
मात गई नीके उठि घरते। मैं बरजी मान्यो नहिं अरते ॥
अतिहि हठीली कह्यो न मानै। सोई करति जु मनमें आनै ॥
डरी मात लखि अँग सब जूडे। अतिही शिथिल स्वेदजल बूडे ॥
महरि नगर ते गुनी बुलाये। सुनत सकल आतुर उठि धाये ॥
मंत्र यंत्र बहु भांति जगावैं। थके सकल कछु भेद न पावैं ॥
गारुड हरि जो रहे मन माहीं। महरि बिकलअति मन पछिताहीं

१ पृथ्वीपर। २ चतुर। ३ काले सर्प अर्थात् कृष्णने। ४ माता। ५ पसीना।

फिर फिर बूझत सखिन बुलाई। कह प्यारी कहि तुमहिं सुनाई॥
कहत सखी सब परम सयानी। सुनहु महरि इतनी हम जानी॥
हम आगे यह पाछे आई। गिरी धरणि दुहनी ढरकाई॥
यही कह्यो कारे मोहिं खाई। तब हम आतुर लई उठाई॥
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो। लग्यो सबन विष याहि विशेख्यो॥
दोहा—सो अब हम तुम सों कहैं, मानिलेहु यह बात॥
वडो गारुडी रायहै, नंदमहरको तात॥
सो०—ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो॥
तुरतहि लेहिं जिवाय, हम नीके यह जानहीं॥
देखहु धौं यह बात हमारी। एकहि मंत्र जियावहि झारी॥
त्रिभुवन गुनी और नाहिं ऐसो। है वह नंद महरिको जैसो॥
कीरति महरि सुनी यह बानी। अपने मनहि सांचकर मानी॥
इकदिन राधा हू यहबानी। मोसों कही हती यह जानी॥
कीरति चली नंदके धामहि। बोलन आतुर गारुड श्यामहिं॥
महरि यशोदहि जाय पुकारो। अहो गारुडी सुवन तुह्मारो॥
मेरी सुता लाडिली गोरी। विह्वल विकल परीमति भोरी॥
मातहि खरिक दुहावन आई। तहां कहूं कारे डसिखाई॥
नेक पठै सुत काज विचारो। यह यश ह्वैहै बड़ो तुह्मारो॥
सुनि यशुमति कीरतिकी बानी। कहत महरि तुम भई अयानी॥
मंत्र यंत्र कह जानै मेरो। अतिही बाल वर्ष षट केरो॥
किन तुमको दीनो बहँकाई। यह तुम बूझो गुणिन बुलाई॥
दोहा—मैं चकित तुम वचन सुनि, यह अचरजकी बात॥
श्याम भयो कब गारुडी, तुम आईं अतुरात॥
सो०—अबलों सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुडी॥
बालक अति अज्ञान, यंत्र मंत्र जानै कहा॥
महरि गारुडी कुँवर कन्हाई। इक दिन राधा मोहिं सुनाई॥

---

१ सर्पका विष उतारनेवाला। २ अज्ञान। ३ छःबरसका। ४ घबड़ाई हुई।

एक लरकिनी कारे खाई । जाको तुरतहि श्याम जियाई ॥
ताते मैं आई अतुरानी । पठवहु सुतहि नेक नँदरानी ॥
है मम कुवँरि विकल अधिकाई । मात खरिक कारे कहुँ खाई ॥
बड़ो धर्म यशुमति यह लीजै । वेगि बुलाय कान्हको दीजै ॥
यह सुनिकै यशुमति मुसकाई । अबहिं हती मेरे घर आई ॥
है राधा मोहन कछु कारन । चुप ह्वै मन में लगी विचारन ॥
वहाँ सखी ललतादि सयानी । प्यारिहि देखि हृदय अनुमानी[१] ॥
याहि डसी बंशीधर कारे । चितवन फण मुसकन विषधारे ॥
प्रेम प्रीति दौंडारत जारे । लगे न मंत्र गुणी सब हारे ॥
थके सकल करि विविध[२] उपाई । यह विष मोहन बिन नहिं जाई ॥
सखी एक हरि पास पठाई । तिन मोहन सों जाय जनाई ॥

दोहा—अहो महरिके लाडिले, मोहन श्याम सुजान ॥
कित सीखे यह गोदुहन, हम सों कहौ बखान ॥
सो०—दुहि दीनी जिहिगाय, आज भोरही खरिकमें ॥
वेग विलोकौ जाय, निज नयनन ताकी दशा ॥

जबते दुहि दीन्ही तुम गैया । अहो अनोखे गाय दुहैया ॥
घर लौं कुँवरि जान नहिं पाई । बीचहि धरणि गिरी मुरझाई ॥
देखत संग सखी सब धाई । जैसे तैसे गृह पहुँचाई ॥
सो अब तनुकी सुधिन सम्हारै । परी बिकल नहिं दृगन उघारै[३] ॥
सकसकात तनु स्वेद बहाई । उलटि पलटिभरि लेत जँभाई ॥
कहति मोहिं कारे अँहिखाई । कियो यत्न बहु गारुड आई ॥
ताहि कछू उपचार न लागै । तुमरो नाम लेत कछु जागै ॥
हौं पठई इक सखी सयानी । यह विष तुमरो निहचै जानी ॥
यह कारो अहिरूप[४] तुह्मारो । मुसकनिविष ता ऊपर डारो ॥
अब जो चाहौ ताहि जियावो । वेगि चलो जनि गहर[५] लगावो ॥
अतिहि विकल वह विरह अधीरा। दरश दिखाय हरौ तनु पीरा ॥

---

१ अनुमानकिया । २ अनेक । ३ आंख नहीं खोलतीहैं । ४ सर्प । ५ विलंब ।

तुम अश्विनीकुमार[1] कन्हाई । वेगि चलो हरि लेहु जिवाई ॥
दोहा–नजर दीठ इकरावरी, टेर कहत हम कान्ह ॥
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब मान ॥
सो०–व्याकुल जननी तास, वरनि महर वृषभानुकी ॥
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये ॥
कीरति आगम सुनत कन्हाई । कीनी बिदा सखी मुसुकाई ॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम[2] प्यारी । तौ हम आय देहिंगे झारी ॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये । देखि यशोमति निकट बुलाये ॥
तू कछु जानत मंत्र कन्हैया । बूझति बिहँसि यशोमति मैया ॥
कीरति महरि बुलावन आई । कुवँरि राधिका कारे खाई ॥
आनहु झारि वेगि सँग जाई । कुवँरि जिवाये अतिहि भलाई ॥
गारुड भयो भले सुत जानी । आज सुनी श्रवणन यह बानी ॥
मैया एक मंत्र मैं जानों । तेरी सों कहि सत्य बखानों ॥
अहि काट्यो मो दृष्टि जु आवै । मोपै क्योंहूं मरण न पावै ॥
जननि कह्यो सुत जाउ कन्हाई । देहु राधिकहि जाय जिवाई ॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा । चले हर्षि कीरतिके साथा ॥
चली महरि हरि संग लिवाई । गइ वृषभानु पुरा समुझाई ॥
दो–रुदतिमहरि[3] लखि कुवँरिको, अतिहि गई कुम्हलाय ॥
शिथिल अंग वाणी निरखि, लीनी कण्ठ लगाय ॥
सो०–तबहिं श्यामके पांय, परी कुवँरि लैके महरी ॥
मोहन देहु जिवाय, अति व्याकुल मेरी सुता[4] ॥
आये गारुड कुवँर कन्हाई । कुवँरि कान्हने यह सुनि पाई ॥
धन्य धन्य आपनको जानी । हृदय हर्ष दृग आनँद पानी ॥
प्रगट रोम तनु स्वेद[5] बढ़ाई । विह्वल देखि जननि अकुलाई ॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने । रसिक शिरोमणि मन मुसकाने ॥
तब कछु पढिकै कुवँर कन्हाई । मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥

१ माता । २ सर्प । ३ रोतीहुई । ४ बेटी । ५ पसीना ।

तत्क्षण लोचन कुँवरि उघारे । सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ॥
निरखत दृगन परम सुख लीनो । सकुच सँभारि बसन सम कीनो॥[1]
बूझत बात जननि सों प्यारी । आज कहा यह है महतारी ॥
जननी कहति हरपि उरलाई । तोहि मरतते कान्ह जिवाई ॥
करत लाज तू कारो प्यारी । करिवरं बड़ी आज विधि टारी ॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी । नंदसुवनके पांयन लागी ॥
बड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई । सुता हमारी मरत जिवाई ॥
दोहा–उर लगाय मुख चूमिके, पुनि पुनि लेत वलाय[2] ॥
धन्यकोखि यशुमति महरि, जहां अवतेर आय ॥
सो०–कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्याम सों ॥
विदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजानको ॥
महरि मनहि मनमें अनुमानी । जोरी भली विधाता बानी ॥
ब्रज घर घर यह बात चलाई । बड़ो गारुड़ी कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई । भले भले हो गारुडराई ॥
प्रगट्यो गारुड नाम तुह्मारो । भले आज तुम विषहिं उतारो ॥
जननि कहति मेरो अति वारो । अवधौं कौन करै निरवारो ॥
जान्यों कठिन बसन ब्रजकारो । अब यह मंत्रहिं मतिहिं बिसारो॥
फिर कारो कहुँ कराहँ पसारो । हम तब लैहैं नाम तुम्हारो ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई । प्यारी एकहि टेर जिवाई ॥
अब हम जानी बात तुह्मारी । जाहु आपने सदन बिहारी ॥
रसिक मुकुटमणि कुंज विहारी । हँसवशकीनी घोष[4] कुमारी ॥
विवश भई सब ब्रजकी बाला । गये सदन मोहन नँदलाला ॥
ब्रजविलास बिलसत ब्रज प्यारो । ब्रजवासी जनको रखवारो ॥
दोहा–कारोसुत नँदरायको, जाको लीला नित्त ॥
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वल चित्त ॥
सो०–धन्य धन्य ब्रज वाल, धनि धनि ब्रजके ग्वाल सब॥

१ वस्त्र ठीक किये । २ बलाय । ३ बलैयां । ४ वृषभानुकुमारी ।

जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित ॥
प्रात होत बल मोहन लाला। गाय बच्छ सब लै सँग ग्वाला ॥
चले चरावन ब्रज वन माहीं। क्रीड़ा करत सकल मग जाहीं ॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला। वृन्दावन गये मदनगुपाला ॥
गैया बगर गई वन माहीं। बैठे कान्ह कदमकी छाहीं ॥
सखा लिये सँग सुबल सुदामा। क्रीड़ा करत सहित बलरामा ॥
ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावैं। आनँद भरे कृष्ण गुण गावैं ॥
करत विहार विविध सब ग्वाला। गये दूरि बन सघन विशाला ॥
कोऊ गैयन घेरन धायो। कोऊ बछरन लै बिलगायो ॥
हलधर रहे कहूं वनजाई। आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मन मन कहत श्याम सुखदाई। सखा रहे कित बन बिरमाई ॥
गौरॉभन कहुँ सुनियत नाहीं। गये निकसि धौं कित वन माहीं ॥
आलस गात जानि मनमाहीं। बैठे वंशीबटकी छाहीं ॥

दोहा–सखा वृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय ॥
वृन्दावन बन छांडिकै, रहे ताल बन जाय ॥

सो०–मन हरषे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ॥
फरे विपुल तरु ताल, अति रस मय मीठे मधुर ॥

अथ धेनुकवधलीला ॥

गोधन वृन्द दिये बगराई। लगे खान फल मन हरषाई ॥
अचयो बलरस ताल रसाला। बाढ़्यो उर आनंद विशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनकी आई। कह्यो सखन सों कहां कन्हाई ॥
ल्यावहु घेरि जाय सब गैया। चलो वेगि जहँ कुवँर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी बानी। बनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये। टेर दई सब ग्वाल बुलाये ॥
तहां असुर इक धेनुकनामा। खरके रूप रहै बनधामा ॥
सोयो हुतो विटपकी छाया। सुनत शोरकर तामस धाया ॥
अति बलवान बिशाल कराला। परम भयंकर मानहु काला ॥

१ स्त्रियां। २ सखाओंका समूह। ३ बहुत। ४ गधाका रूप। ५ वृक्ष।

दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे। भाजे जित तित भयके मारे॥
असुर महाबल गर्ब बढ़ाई। बलके सन्मुख गरजो आई॥
मँत्त तालके रस बलराई। देखि असुर मन रिस उपजाई॥

दोहा–बल सँभारि उठि कोपकरि, असुर प्रचार्यो जाय॥
अग्रज भ्राता श्यामको, तिहुँ पुर जासु बडाय॥

सो०–बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण॥
चपर चलाई आनि, बहुरो हठ ठाढो भयो॥

बहुरो फिर मारनको धायो। बल जूको तामस तब आयो॥
जबहिं असुर फिर चरण चलायो। गहि लीनो करिकोप फिरायो॥
पटक्यो लै तरुताल हिलाई। भयो प्राण बिन तरुहिं गिराई॥
तरुसों तरु टूटे बहराई। उठ्यो सकल वन घन घहराई॥
और बहुत धेनुक परिवारा। कीन्हों बल सबको संहारा॥
मार्‍यो असुर महा दुखदाई। ग्वाल बाल सब करत बड़ाई॥
आये सब वृन्दावन माहीं। जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं॥
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला। आवहु हो मोहन नँदलाला॥
ल्याये घेरि मिली सब धेनू। आवहु मधुर बजावहु वेनू॥
कोमल चरण कहूं मति धावहु। कंटक कठिन मही इत आवहु॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं। तृषितभये सब बनके माहीं॥
ग्वाल बाल सब यमुनहिं आये। बलरस मत्त न पहुँचन पाये॥

दोहा–गोप गाय अचवत भये, कालीदहको नीर॥
निकसत सब अकुलायकै, बैठ गये जल तीर॥

सो०–परे सकल मुरझाय, जहाँ तहाँ विष झारते॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनो बिन प्राण सब॥

हरि ठाढे बंशीबट छाहीं। बारहिं बार कहत मन माहीं॥
अबहिं रहे सब संग चरावत। निकसि गये धौं कित बन धावत॥
गौरौंभने ग्वालनके बैना। श्रवण माँझ परत कछु हैना॥
तरु चढि इत उत गैयन हेरत। लै लै नाम सखनको टेरत॥

१ ललकारा। २ बडा। ३ गायोंका शब्द।

कालीदह तन आहट पाई। शोधलेत उत चले कन्हाई॥
वन घन ढूंढत हरि तहँ आये। गाय ग्वाल सब मूर्छित पाये॥
मनमें ध्यान करतहीं जान्यो। कालीअहि ह्यां आय समान्यो॥
रहत इहां खगपति भयवानी। अँचयो इन ताको विषपानी॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारी। तुरत उठे सब भये सुखारी॥
देखि कृष्णाको अति सुखपाई। मिले सकल प्रेमातुर धाई॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये। तुम सब मोहिं छोडिकै आये॥
कितते कित इतनिकसे आई। मैं बन ढूंढि रह्यो पछिताई॥

दोहा-खोज लेत आयो इहाँ, देखे सब बेहाल॥
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल॥

सो०-गाय वच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही वार पुनि॥
कहा कियो यहि ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो॥

सुनि हरि वचन परम सुखदाई। कहत सखा सब सुनहु कन्हाई॥
अचयो तृषित यमुन जल आई। तबहिं गिरे सब तट अकुलाई॥
कारण हम कछु जान्यो नाहीं। भये प्राण बिन सबक्षण माहीं॥
इह हम जानी कुँवर कन्हाई। तुमही हमहिं जिवायो आई॥
हो तुम ब्रज जनके रखवारे। जहां तहां तुम हमहिं उबारे॥
तब हरि बलदाऊको हेरो। कह्यो चलहु वन होत अँधेरो॥
सखा बोलि ल्याये बलरामहिं। हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं॥
बड़ी देर भइ तुम्हें कन्हैया। रहे अकेले बनमें भैया॥
चलहु वेगि अब घरको जाही। लेहु लिवाहि गाय वन माही॥
हेरी देत चले सब ग्वाला। गावत गुण सुन्दर गोपाला॥
गोधन आगे दये चलाई। सखन मध्य मोहन बलभाई॥
चले ब्रजहि ब्रज जन सुखदाई। निरखि बदन छबि मदन लजाई॥

दोहा-सुनि ब्रज सुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि सुर घोर॥
आवत वनवसि अहर्निशि, आगम नंदकिशोर॥

सो०-धाईं गृह तजि काज, निरखनको मन भावतो॥

१ शब्द। २ गरुड। ३ अमृतकी दृष्टिसे। ४ कामदेव। ५ रातदिन।

सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छाँडिकै ॥

वे देखो आवत बल मोहन। सुबल सुदाम सुदामा गोहन ॥
मेघश्याम तनु गैयन पाछे। शीश मुकुट कटि कछनी काछे ॥
कमल वदन कर वेणु बजावैं। गौरी राग मिले सुरगावैं ॥
नयन विशाल कमल ते आछे। कोटि मदन की छविको वाछे ॥
कुंडल श्रवण वदन छवि छाई। गोरज छबि कहुँ चंद्र छिपाई ॥
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला। पहुँचे आय सदन नँदलाला ॥
ब्रज जीवन बल मोहन भैया। निरखि जननि दोउ लेत बलैया ॥
ग्वाल कहत धनि यशुदा माता। धनि धनि बल मोहन दोउ भ्राता॥
नरतनु धरे देव ये कोऊ। ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
येहैं सब ब्रजके रखवारे। गाय गोपके राखनहारे ॥
गर्दभ रूप असुर इक भारो। ताहि आज हलधर बन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई। तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥

दोहा-अब हम काहू डरत नाहिं, येहैं हमैं सहाय ॥
बल मोहनके बल फिरत, बन बन चारत गाय ॥

सो०-परत गाढ़ जब आय, तव तव होत सहाय हरि ॥
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर ॥

यशुमति सुनि ग्वालनकी बानी। कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नित नव चरित सुनत हरि केरे। हैं कोऊ ये बडन बेडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये। धन्य धन्य हम सुत करि पाये ॥
अतुलित कर्म दुहुनके जानी। दोउ जननी मन मांझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी। लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूखे जान तुरत अन्हवाये। षटरस व्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अचये दोउ भाई। लीन्हे पान संत सुखदाई ॥
पौढे सेज दास हितकारी। ब्रज जन बासीहैं बलिहारी ॥
चिंतामणि हरि जन सुखदानी। कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित बनको जाहीं। दुखपावत कालीदह माहीं ॥

---

१ कान। २ बिनत्ति। ३ बे जौलादभा बल।

विषधरको रहबो जलमाहीं। वृन्दावन ढिग नीको नाहीं॥
कालिहिकाढि इहां ते दीजै। यमुनाको जल निर्मल कीजे॥
दोहा-यह विचार मनमें करत, भये नींद बश श्याम॥
यशुमति हरि पौढायकै, आपलगी गृह काम॥
सो०-खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि॥
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते॥
शिव सनकादि दिवसनिशिध्यावैं। कबहुं जाको अन्त न पावैं॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी। सो नँदगृह सोवत सुखदानी॥
देखो नंद कान्ह अति सोवत। श्रमितै जानि बनके सुख जोवत॥
मानत नाहिं कहो किन कोऊ। आप हठीले भैया दोऊ॥
करसों पोंछत शुभग शरीरा। कहियत यहै प्रेमकी पीरा॥
निजपलका तहँ लियो मँगाई। सोये हरिके ढिग नँदराई॥
यशुमति हूं पौढ़ी तहँ आई। निशिबीते अधिकी अधिकाई॥
जाग उठे तब कुवँर कन्हैया। कहां गई मोढिगते भैया॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई। अतिही श्याम उठे अकुलाई॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा। हरिको ऐंचिलियो नँद गोदा॥
काहे झिझकि उठ्यो अनियासों। तुरतहिदीपक कियो प्रकासा॥
सपने गिरो यमुन जल जाई। काहू मोको दियो गिराई॥
दोहा-नित प्रति मैं बरजतरहौं, तू हठि यमुना जाय॥
सुधि रह गई अन्हानकी, जिन हो लालै डराय॥
सो०-कौरे लै नँदराय, पौढाये निज संग तब॥
वृंदावन तू जाय, केहि कारण जित तित फिरत॥
अब तू वृन्दावन जनि जाई। तहां कौनधौं रहत बलाई॥
सोये दंपति बीच कन्हाई। तुरतहिगई नींद फिर आई॥
सपनौ सुनि जननी अकुलानी। कहत नंद सों यशुदारानी॥
देख्यो धौं कह स्वप्न कन्हाई। या ब्रजके जीवन दोउ भाई॥

१ सुखदाता। २ थकाहुआ। ३ अचानक। ४ डरोमत। ५ पास।

यहै यत्न इनको अब कीजै । गाय चरावन जान न दीजै ॥
गृहसंपति है तनक दुठौना । इनहीं लौं बल भोग ठठौना ॥
येबन जात चरावन गैयां । हँसि करत ब्रज लोग लुगैयां ॥
दंपति आपसमें इहि भांती । करत विचार बीति गइ राती ॥
तारागण सब गगन[1] छिपाने । गयो तिमिर[2] अम्बुज[3] विकसाने ॥
उठि यशुमति लागी गृहकाजा । भूलिगयों निशि शोच समाजा ॥
प्रात स्नान यमुन नित जाई । नंदहि तुरतहि दियो उठाई ॥
मथन हारि ग्वालिनि सब जागीं । जित तित दही विलोवन लागीं ॥

दोहा–हरिप्यारी सुरभीनको[4], जम्यौ जुदधि विलगाय ॥
सो हरि हित माखन लिये, मथति यशोदा माय ॥

सो०–सदमाखन निज पानि, मथत तुरत मथनी धऱ्यो ॥
बड़ भागिनि नँदराणि, माखन प्यारे लाल हित ॥

लगी जगावन हरिको जाई । उठहु तात माता बलि जाई ॥
प्रगट्यो तरणि किरणि महि छाई । खोलि देहु मुखकमल कन्हाई ॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं । तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुखदीजै । होत अबार कलेऊ कीजै ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनो । माता निरस मुदित मनकीनो ॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकाऱ्यो । नीलांबरगहि मुखते टाऱ्यो ॥
मनु घन[5]ते शशि भयो नियारो । प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो ॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा । गौर श्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयन भवन ते बाहर आये । लखि दोउ जननि परम सुखपाये ॥
दँतवनलै दोउवन कर दीनी । चौकी बैठि मुखारीकीनी ॥
मातन निज निज कर मुख धोयो । नयनको आरस सब खोयो ॥
अँचरन सों मुख कमल अँगोछे । उर लगाय सब अंगन पोछे ॥

दोहा–करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ ॥
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥

सो०–दई दुहुनको मात, रोटी अरु माखन मधुर ॥

---

१ आकाश । २ अंधकार । ३ कमल । ४ भगवानकी प्यारी गायें । ५ बादल ।

हरषि परस्पर खात, माता अंतर हेतु लखि ॥

अथ कालीदमनलीला ॥

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने । प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने ॥
गावत गुण हरि परम हुलासा । गये तुरत मथुरा नृप पासा ॥
देखि कंस आदर अतिकीनो । करिदंडवत बरासन[1] दीनो ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई । कछुक शोचवश परत लखाई ॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई । एक शाच मोहिं बडो गुसाई ॥
ये दोउ व्रजमें नंदकुमारा । जानि परत मोहिं कोउ अवतारा ॥
कहत जिन्हें बलराम कन्हाई । तिनकी गति मति जानि न पाई ॥
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये । सो उन पल इक माहिं नशाये ॥
बकी पठाय दई पहिलेहीं । ऐसनको बल सब लै लेहीं ॥
उतने भयो नहीं कछु काजा । यह सुनि समुझि होत मोहिं लाजा
अबमुनि तुम कछु कहहु बिचारा । जेहि बिधि मारहुँ नंदकुमारा ॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने । सुनि नृप बचन मनहिं मुसकाने ॥

दोहा–तब बोले मुनि नृपति सों, सत्य कही तुम तात ॥
वे दोऊ अवतारहैं, इन गति जानि न जात ॥

सो०–हैं ये तुम्हरे काल, प्रगट भये व्रज आयकै ॥
नंद गोपके बाल, तुम इनको राखो मतिहि ॥

एक बात मेरे मन आवै । करहु कंस तुमको जो भावै ॥
काली[2] अहि रह्यो यमुना आई । तहां कमल फूले बिपुलाई ॥
फूल तहां ते मांगि पठावहु । दूत पठै नंदहि डरपावहु ॥
यह सुनि व्रजके लोग डरै हैं । यहै बात वेऊ सुनि पै हैं ॥
जैहैं अवशि फूलके काजा । तहां घात करिहैं अहिराजा ॥
यह सुनि कंस बहुत सुखपायो । भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो ॥
धनि धनि कहिपुनि[3]शिरनावत । हरषि चले मुनि हरिगुण गावत ॥
तबहिं कंस इकदूत बुलायो । व्रजहि नंदके पास पठायो ॥
दीनो ताको पत्र लिखाई । कहियो यहै नंदको जाई ॥

१ सुन्दर आसन । २ कालीनाग । ३ अवश्यही ।

कोटि कमल कालीदह केरे । पहुँचावहुलै कालिह सबेरे ॥
कंसराज अति काज मँगाये । बनिहैं तुमको तुरत पठाये ॥
चल्यो दूत आतुर ब्रजघाई । जानि लई सब कुँवर कन्हाई ॥

दोहा–आप रहे ता दिन घरहिं, वनहि पठाये ग्वाल ॥
ब्रजवासी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल ॥

सो०–दूतहिं आवत जान, आप गये वहराय हरि ॥
सुन्दर श्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि ॥

आये नन्द यमुन जल न्हाये । पैठत सदनै छीक भइ बांये ॥
महर मलिन मन अशकुन जान्यो । आज कहा उर शोच समान्यो ॥
तबहीं चल्यो दूत जब आयो । नंद महर घरहीं में पायो ॥
बोललिये पाती करराखी । नृपकी कही मुखागर भाखी ॥
कालीदहके फूल मँगाये । ता कारण अति डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु । तौ कोउ ब्रजमें रहन न पावहु ॥
गोप नन्द उपनन्द जितेका । डारौं मार न राखौं एका ॥
जो नहिं कालिह कमल मैं पाऊं । तो दोउ सुत तेरे बाँधि मँगाऊं ॥
यह सुनि नन्द गये मुरझाई । और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सबको सब बात सुनाई । परी आय यह अति कठिनाई ॥
कोटि कमल कालीदह माहीं । कहौ कौन धौं काढ़न जाहीं ॥
कह्यो फूल जो कालिह न पाऊं । तो सुत तेरे बाँधि मँगाऊं ॥

दोहा–मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही यह बातसो, बल मोहन पर घात ॥

सो०–चढिहै ब्रजपर धाय, कालिह कंस अति कोप कर ॥
बंन्यो मरण अब आय, को राखे कित जाइये ॥

मुहि अपने जियको डर नाहीं । शोच श्याम बलको उर माहीं ॥
अब उबार देखियत नहिं कोई । बल मोहनहिं राखि को गोई ॥
बरु मोहिं राखैं बाँधि नृपाला । रहैं सदन बल मोहन लाला ॥

१ घर । २ बुराशकुन । ३ चिट्ठी । ४ मुखजबानी ।

नन्द वचन सुनि सब ब्रजबासी। भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई। अति भय त्रसित[1] गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजबासी ठाढे। मानहुँ चित्र चित्र लिखि काढे ॥
नन्द घरन ब्रजनारि बिचारैं। अति व्याकुल नयनन जल ढारैं ॥
ब्रजहिं बसत सब जन्मसिरान्यो। इहि विधि कंस न कबहुँ रिसान्यो
कालीदहके फूल मँगाये। कहौ कौन बिधि जातसो पाये ॥
अतिहि शोचवश सब नर नारी। भये कंस भय बहुत दुखारी ॥
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं। शरण गये कहिये कछु नाहीं ॥
कोउ कह देहु जितो धन चाहैं। ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं ॥

दोहा–यहै शोच सब मिलि पगे, नहीं कहूं निरवार ॥
ब्रज भीतर नँद भवनमें, घर घर यही विचार ॥

सो०–अन्तर्य्यामी जानि, खेलत ते आये घरहिं ॥
देखतही नँदरानि, दृग भर लिये लगाय उर ॥

चितवत माता कुँवर कन्हाई। बूझत करत रोवत दुख पाई ॥
बूझहु जाय तात सों बाता। मैं बलि जाउँ बदन जलजाता ॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई। बाहर मत कहुँ जाहु कन्हाई ॥
जाय तातको शोच मिटावो। अपने मधुरे वचन सुनावो ॥
आयो श्याम नंद पै धायो। जान्यो मात पिता दुख पायो ॥
बूझत नंदहि कुँवर कन्हैया। तात दुखित कत तुम अरु मैया ॥
मोसों बात कहौ किन सोई। कहा शोच वश हो सब कोई ॥
नंदलाल कँनियां बैठारे। कहा कहौं तुम सों मैं प्यारे ॥
जबतें जन्म भयो सुत तेरो। करत कंस तुमसों अरझेरो ॥
केतीकरवर टरीं तुह्मारी। कुलदेवन कीन्हीं रखवारी ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई। शकट तृणा पुनि आयो धाई ॥
वत्सबका अघ पुनि दुख दीन्हों। सबतें तोहि राखि विधिलीन्हों ॥

---

१ डरेहुए। २ घर। ३ अन्तरकी जाननेवाले। ४ नेत्रोंमें पानी। ५ गोद। ६ बलायें।

दोहा–कालीदहके फूल अव, पठये भूप मँगाय ॥
सवते यह गाढी परी, कोकरि लेय सहाय ॥
सो०–जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कंसमोहिंडाटिकै ॥
करौं ब्रजहिं निर्मूल, बांधि मँगाऊं तव सुतन ॥
बाबा तुम काहे दुख पाई । कहत कौन धौं करै सहाई ॥
सो देवता ब्रजहिके माही । रहत हमारे संग सदाही ॥
लीन्हों जिन सब ठोर बचाई । करिलैहै सोइ देव सहाई ॥
सोई कंसहि फूल पठैहै । ब्रजवासिनको शोच मिटैहै ॥
कंस केश गहि सोई मारे । असुर मारि भूभार उतारे ॥
सब मिलि सोई देव मनावो । अपने मनते शोच मिटावो ॥
सुनत महर हरि मुखकी बानी । भये सुखी धीरज उर आनी ॥
इष्टदेवको शीश नवायो । जहां तहां तुम श्याम बचायो ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुह्मारी । अबहूं करहु सहाय हमारी ॥
जाते कंस त्रास मिटि जाई । रहैं सुखी बलराम कन्हाई ॥
मात पितहि हरि इहि ढँगलाई । आप चले खेलन हरषाई ॥
सखन मध्य गये कुँवर कन्हाई । कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ॥
दो०–श्रीदामा यह सुनतहीं, गयो धाम निज धाय ॥
अपनी गेंद ले आयके, दीन्हीं हरिको आय ॥
सो०–चलो खेलिये धाय, बाहर घोष निकासके ॥
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहाँ ॥
सखन संगलै बाहर जाई । रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजत जाहीं । रोकलेत इक बीचहि माहीं ॥
आपस मांझ परस्पर मारैं । नाना रँग करिकै किलकारैं ॥
भाजत मारत दूजो जाहीं । मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
श्याम सखनको खेलत माहीं । यमुना तट तन लीन्हे जाहीं ॥

१ जड़रहित । २ पृथ्वीका बोझ । ३ कुलदेवता । ४ भय । ५ गांव ।

आपन जात कमलके लालन। सखा संग लीन्हें सब ख्यालन॥
को जानहि यह हरिके ख्याला। यमुना निकट गये सब ग्वाला॥
श्याम सखाको गेंद चलाई। अंग मोर सो गयोबचाई॥
परी गेंद यमुना जल माहीं। ह्वै गयो खेल भंग तिहि ठाहीं॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा। मेरी गेंद देहु तुम श्यामा॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई। बनिहै दीन्हें गेंद मँगाई॥
और सखा मोको मति जानो। मोसों मतिहिं ढिठाई ठानो॥

दोहा–सखा हँसत सब तारिदे, भली करी तुम कान्ह॥
दीन्ही गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह॥

सो०–सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्म शिव॥
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा॥

छांडि देहु मेरि फेंट सुदामा। रारि बढावत थोरेहि कामा॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों। फेंट न गहौ कहौं मैं तोसों॥
छोटो बड़ो न जानत काहू। करत बराबर पकरत बाहू॥
हम काहेको तुमहिं बराबर। तुम उपजे अब बड़े नंदघर॥
ऐसे हम अब गये बिलाई। तुमहु बराबर नाहिं कन्हाई॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा। कहा भयो तुम नंदके ढोटा॥
गेंद दियेही बनै मँगाई। मोसों चलिहै नाहिं ढिठाई॥
मुँह सँभारि बोलत नाहिं मोसों। करिहौं कहा धुँताई तोसों॥
पुनि पुनि करत बराबर आई। तैं नाहिं जानत मोरि धुताई॥
प्रथम पूतना शकटा मार्‍यो। कागासुर अरु तृणा पछार्‍यो॥
बत्स बकासुर बनके माहीं। मार्‍यो सो कह जानत नाहीं॥
अघ मार्‍यो पुनि देखत तोही। ऐसो धूत न जानत मोहीं॥

दोहा–तुम मारे सो साँच सब कतही लाल डराहु॥
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु॥

सो०–कालिहहि परिहै जानि, पकरि मँगैहै कंस जब॥

१ खंडित २। झगडा। ३ लुप्तहोगये। ४ धूर्तता।

देत फूल किन आनि, बहुत अचंकरी करि रहे ॥

सांच कहौं मैं सुनु श्रीदामा । आयो यहां फूलके कामा ॥
कितक बापुरो कंस बतायो । जाके भय तुम मोंहि डरायो ॥
केश पकरि गहि ताहि पछारों । देखहुगे तुम देखत मारों ॥
कोटि कमल तेहि आज पठाऊं । ब्रजते ताको त्रास नशाऊं ॥
कालीदह जल पियत मरे सब । गहि ल्याऊं सोई काली अब ॥
लीन्ही रिस करि फेंट छुड़ाई । चढि कदम पर धाय कन्हाई ॥
नीचे सखा हँसन सब लागे । श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घरको । जाय कहत मैं महरि महरको ॥
टेरत कहि कहि सखा कन्हाई । लेहुगेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यह कहि नटवर मदन गोपाला । कूदि परे जलमें नँदलाला ॥
हाय हाय करि सखा पुकारे । भये श्यामबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहि सब धाई । श्रीदामाको दोष लगाई ॥

दोहा—कोमल तनु अति सांवरो, साजे नटवर साज ॥
जलमें पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज ॥
सो०—यहि अंतर हरिमाय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि ॥
खेलत ते अब आय, मोसों भोजन मांगिहैं ॥

यशुमति चली रसोंई कारन । तबही छाक उठी इक ग्वालन ॥
ठिठकि रही उर शोचत ठाढ़ी । भली नहीं कछु चिंता बाढ़ी ॥
आई अजिर निकसि पछिताई । चली बहुरि सो दोष मिटाई ॥
माँजारी तब पंथ कटाई । बहुरो यशुमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे । कहँ धौं खेलत मेरे बारे ॥
बायें काग दाहिने स्वर खर । पुनि आई अति व्याकुल फिर घर ॥
क्षण बाहर क्षण आंगन माहीं । टेरत हरिहि शांत मन नाहीं ॥
तबहीं नंद चले घर आरत । देख्यो श्वान श्रवण फट कारत ॥
दहिने काहू रोय सुनायो । माथेपर ह्वै काग उड़ायो ॥

१ अचपेलाहट ।२ तुच्छ ।३बुलातेहैं ।४कालीनाग ।५आंगन ।६ कान फडकाया

सन्मुख गररी करत लराई। डरे नन्द अशकुन बहु पाई॥
आये घर मन मलिन विशेखी। व्याकुल मलिन वदन तिय देखी॥
बूझत यशुदहि नन्द डराई। काहे तव मुख गयो झुराई॥
दो०-चलीं रसोई करन हौं, छीक भई मुहिं आज॥
आगे ह्वै माँजारि पुनि, गई दूसरे भाज॥
सो०-तबते मो जिय शोच, हरिधौं खेलत हैं कहां॥
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति॥
नन्द कहत पैठत घर माहीं। मोहिं शकुन नीके भे नाहीं॥
आज कहा यह समुझि न जाई। है धौं कित बलराम कन्हाई॥
महरि मेहर मन त्रास जनाई। खोजत हरिहि चले अकुलाई॥
सखा सकल इहि अंतर धाये। रोवत ब्रजहि पुकारत आये॥
महरि महर सों आय जनाई। यमुना बूडे कुँवर कन्हाई॥
सुनि दम्पति बूझत अकुलाई। कैसे कहां कहौं समुझाई॥
खेलत कदम चढ़े हरि धाई। कूदि परे कालीदह जाई॥
सुनतहि परी धरणि महँ मैया। कीनो सपनो सत्य कन्हैया॥
रोवत नन्द यमुन तट आये। बालक सब नंदहि सँग धाये॥
ब्रज घर जहां तहां यह बाता। ब्रजबासी धाये बिलखाता॥
कहां पऱ्यो गिरि कुँवर कन्हाई। दई बालकन ठौर बताई॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे। गिरे धरणि नाहिं अंग सँभारे॥
दो०-लोटत अतिब्याकुलधरणि, परनचलतजलधाय॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैस बुढाय॥
सो०-लोग उठे सब रोय, दीन बचन सुनि नंदके॥
कहत विकल सब कोय, हरि तुम ब्रज सूनो कियो॥
नन्दहि गिरत सबहि गहि राख्यो। ताक्षणको दुख जात न भाख्यो॥
कहत गोप नंदहि समुझाई। बन्यो मरण सबहीको आई॥
हरि बिन को जीवै ब्रजमाही। कहौं कान्ह केहि जीवन नाही॥

१ यशोदा। २ बीच। ३ नंदयशोदा। ४ रुदनकरके। ५ रक्षाकरो। ६ अवस्था।

मोह मगन अति यशुमति मैया। टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहां तुम बेर लगाई। माखन धन्यो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुह्मरे मुख योगू। जेवहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धन्यो औटाई। तुम निज कर दुहि गये कन्हाई ॥
सद्य माखन अतिहित मैं राख्यो। आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई। दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तव पंथ कन्हाई। देखत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया। तुम जेंवहु मैं लेहुँ बलैया ॥
शोकासिंधु बूडत नँदरानी। तनुकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥
दो०–ब्रज युँवती सुनि महरिके, वचन प्रेम आधीर ॥
अकुलानी रोवत सबै, बढी कठिण उर पीर ॥
सो०–बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहि कहि हरिहैं भले ॥
सुत वियोग विकराल, जात नहीं कहि मातको ॥

चौंकपरीतनुकी सुधि आई। रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाई। पुत्र पुत्र कहिके उठि धाई ॥
ब्रजवनिता सब संगहि लागीं। श्याम वियोग विथाँ सब पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारैं। तोरतलट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई। गिरी धरणि यशुमति अकुलाई ॥
मुरझि परी तनुदशा भुलाई। प्राण रह्यो हरि सुरतिसमाई ॥
ब्रजवासी सब उठे पुकारी। जल भीतर कह करत मुरारी ॥
संकटमें तुम करत सहाई। अब क्यों नाहिं बचावत आई ॥
मात पिता अतिही दुख पावैं। रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥
आय गये हलधर तेहि काला। देखी जननी विकल बिहाला ॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई। जननी कहि कहि टेर लगाई ॥
बार बार जब हलधर टेन्यो। भयो चेत कछु बलतन हेन्यो ॥
दो०–कहत उठी बलरामसों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात ॥

१ ताजो। २ प्रातःकालसे। ३ देर। ४ स्त्री। ५ लुगाई। ६ पीड़ा। ७ माता।

कान्ह तुमहिं बिन रहत नाहिं, तुमसों क्यों रहिजात ॥

सो०—मगन शोच सर मांझ, कहत लै आवहु कान्ह कोउ ॥
भूखे ह्वैगइ सांझ, आज कछू खायो नहीं ॥

कबहुँ कहत बनगयो कन्हाई । कबहुँ बतावत घर समुझाई ॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै । कित खेलत कहि लाल बुलावै ॥
अतिही मोह बिकल नँदरानी । करत बोध हलधर मृदुबानी ॥
कतरोवत तू यशुमति मैया । नीके हैं धरु धीर कन्हैया ॥
श्यामहिं नेक कहूं डर नाहीं । तू कत डरपत है मनमाहीं ॥
तेरी सौं मैं कहत पुकारे । वह काहूके मरै न मारे ॥
जिन काली भय होहु दुखारी । तू अपने मन देखु विचारी ॥
पहिल बकी कपट करि आई । तब दिन दशके हते कन्हाई ॥
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो । तू देखत हरि तिन्हैं नशायो ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे । विष जलते सब सखा उबारे ॥
अब वे कालीनाथ लैऐहैं । कमल पठाय कंसकोदैहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो । मानों सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥

दोहा—मोहिं दुहाई नंदकी, अबहीं आवत श्याम ॥
नाग नाथ लै आवहीं, तो कहियो बलराम ॥

सो०—सुनि हलधरके बैन, अति उदार हरिके चरित ॥
भयो कछुक उरचैन, जो कछुकरहिं सु सोहसब ॥

बांह पकरि बलको बैठाई । लैबलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनुधरे कन्हाई । पहुँचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरगकी नारी । रही चारुमुख चिह्न निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो । अति कोमल तनुकाको जायो ॥
बारहि बार कहति अकुलाई । वेगि भाज इतते कितजाई ॥
देखै नाग जागकै जबही । ह्वै है भस्मक्षणकें में तबही ॥
सुनत नाग नारीकी वाणी । बोले हँसि हरि सारँगपाणी ॥

१ शपथ । २ बचन । ३ हृदय । ४ सर्पिणी । ५ क्षणभरमें । ६ धनुर्धारी ।

पठ्यो मोहिं कंस नृपराई। तू याको अब देहु जगाई॥
कंस कहा तू इनहिं बतैहै। एक फूंकमें तूं जरिजैहै॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो। लगत छोंह देखत तनु तेरो॥
मरहु कंस जिन तोहि पठायो। तूकत इहां मरणको आयो॥
बालक जानि दया अति मेरे। दुख पैहैं पितु माता तेरे॥

दोहा–अरी बावरी सर्प्पसों, कहा डरावत मोहिं॥
जैसो मैं बालक प्रकट, अबहिं दिखाहुँ तोहिं॥

सो०–तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि॥
चांपैं कमल लदाय, लैजैहों इहि नाथि ब्रज॥

सुनत वचन अहिनारि रिसानी। छोटे वदन कहत बड़िबानी॥
खगपतिसों सरवर जिनठानी। ताहि कहत नाथन अज्ञानी॥
देखतही ह्वैहै जर छौरा। केतिक तू बपुरो सुकुमारा॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी। बोलत नाहिन बात सँभारी॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं। एकहि लात खसँमतुवमारौं॥
सोवत काहू मारिय नाही। चलि आई है बात सदाही॥
ताते तू पति देहि जगाई। देखौं मे याकी मनुसाई॥
जो पै तोहि मरन बुधि आई। तो तूही किन लेत जगाई॥
तब हरि झटकि ताहि दैगारी। दाबी चरण पूंछ अहिकारी॥
मसकी नेक धरणि सो लाई। काली उरग उठ्यो अकुलाई॥
आयो जानि गरुड भय बाढ्यो। देख्यो बालक आगे ठाढ्यो॥
तबहिं क्रोध करि गर्व बढायो। झटकि पूंछ अति रिसकरि धायो॥

दोहा–दांव घात लाग्यो करन, सहँसौ फन फटकार॥
वार वार फुंकार कर, डारत विषकी झार॥

सो०–जरत यमुनाके नीर, जात फेन उतराय विष॥
परसत नाहिं शरीर, अरिमर्दमोचन श्यामके॥

१ सर्पिणी। २ गरुड। ३ राख। ४ तुच्छ। ५ मरदानगी। ६ सर्प। ७ सहस्र।

किया युद्ध बहु उरग अघाई। मुरे नहीं नेकहु यदुराई ॥
कहत परस्पर अहि की नारी। देखहु यह बालक अति भारी ॥
विष ज्वाला जल जरत यमुनको। याकेतनु परसत नहिंतनको ॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै। अतिकोमल विषःनेक न मानै ॥
सहसौफनन करत अहिघातो। अबलौं बच्यो पुण्य पितु माता॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी। कहत पूंछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई। हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई। कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी। दियो दांवइहि अहिको जानी ॥
तेहि अवसर सुर मुनि गन्धर्बा। अति व्याकुल आये ब्रजसर्बा ॥
उरग नारि मन मन पछिताहीं। हरिको रूप समुझि मनमाहीं ॥
कहैं गर्बकरि अति यह आयो। काल बिबश पगइतहिं चलायो ॥

दोहा–काली हरिसों लिपटिकै, गर्व कियो मन मांह ॥
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पनको नाहँ ॥
सो०–भंजन गर्ब गोपाल, गर्ब भरे सुनि अहि वचन ॥
कीन्हो वपुष विशाल, विकल भयो अहिराजतन ॥

जबहिं श्यामतन अति विस्तारो। टूटन लग्यो अंग सब सारो ॥
शरण शरण तब उरग पुकारो। मैं नाहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोको दीजै। अपनी शरण राखि मोहिं लीजै ॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना। सकुचि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहै बचन गजराजसुनायो। गरुड़ छांड़ि ताके हित आयो ॥
यहै वचन सुनि द्रुपदसुताको। बसन बढ़ाय दियो पुनिवाको ॥
यहै बचन सुनि लाक्षा गृहते। लीने राखि पाण्डवन जरते ॥
यहवाणी सहिजात न श्यामहिं। दीनबन्धु करुणाके धामहिं ॥
लीनो अंगसँकोच कृपाला। देख्यो बिकल शिथिल जबव्याला॥

१ सर्प। २ सर्पचोटचलाताथा। ३ घबड़ाके झपटा। ४ नथ। ५ शरीर। ६ गजेन्द्र।

पगसों चापि नाकधरि फोरी । लीनो नाथ हाथगहि डोरी ॥
कूदिचढ़े हरि ताके शीशा । मनमन करत बिचार अहीशा ॥
मैं यह सुन्यो हतो बिधिपाही । कृष्ण अवतार होहिं ब्रजमाहीं ॥

दोहा–ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार ॥
ये अविनाशी ब्रह्महैं, ब्रज कृष्णा अवतार ॥

सो०–किये बहुत फन घात, वार वार पछितात मन ॥
स्तुतीकरत लजात, रह्यो दीनह्वै सकुचि अति ॥

देख्यो व्यालैं बिहाल कृपाला । दियो दरश निज दीनदयाला ॥
देखि दरश मनहर्ष बढ़ाई । बोल्यो दीन बचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो बिन जाना । क्षमौ नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामस योनि कीटे बिषजानो । कौनभांति तुमको पहिचानो ॥
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा । दीनो दरश जगतके नाथा ॥
अशरण शरण नाथ तव बाना । कहत सन्त सब वेद पुराना ॥
ते अपराध क्षमा सब कीजै । अब प्रभु शरणराखि मोहिंलीजै ॥
आज धन्य यह मेरो माथा । जापर चरण दिये मम नाथा ॥
अब ये चरण परसिप्रभु तेरे । मिटे दोष दुख अघँ सब मेरे ॥
जो पदकमल पुनीत तुह्मारे । निशिदिन रहत रमा उरधारे ॥
शिव विरञ्चि,सनकादिक ध्यावैं । जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पदपद्म सलिल सुर सरिता । तीन लोककी पावन करिता ॥

दोहा–जिन पद पंकज परसते, गति पाई ऋषिनारि ॥
सुर नर मुनि वन्दित तिन्हैं, सन्तत प्राण अधारि ॥

सो०–फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दावन जे चरण ॥
भक्तनके सुखदाय, ब्रजबासी जन दुखहरण ॥

जेपद पंकज परम सुहाये । प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये ॥
गरुड़ त्रास ते इत भजिआयो । भलो कियो मोहिं गरुड़ सतायो ॥
जाते दरश भयो प्रभु तेरो । अब भय ताप मिट्यो सब मेरो ॥

१ कालीनाग । २ ब्रह्मा । ३ निश्चय । ४ सर्प । ५ विषका कीड़ा ६ पाप ।

आज भयो मैं नाथ सनाथा । गह्यो नाथ मम प्रभु निजहाथा ॥
सुनत दीन कालीकी बानी । दीनबंधु अतिशय[1] सुखमानी ॥
फनमति चरण सरोज छुवाये । ताके सब सन्ताप[2] नशाये ॥
तब ब्रजनाथ भक्त हितकारी । यह अपने मनमाहिं विचारी ॥
कालीको ब्रज देश दिखैये । कमल भार यापै लै जैये ॥
ह्वै हैं ब्रजके लोग दुखारी । करौं जाय अब तिनहिं सुखारी ॥
कमल कंसको देउँ पठाई । कालिह चढ़ि गो ब्रजपर आई ॥
लीन्हे अहिपर कमल लदाई । चले ब्रजहि ब्रज जन सुखदाई ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई । फनपर ठाढ़े कुँवर कन्हाई ॥

दो०—उरग[3] नारी कर जोरि कै, प्रभुके सन्मुख आय ॥
करत विनय अति दीनह्वै, पतिहित हरिहि सुनाय ॥
सो०—इत यशुमति उर माँहिं, उठी लहर अति प्रेमकी ॥
कान्हर आयो नाँहिं, कहत रोय बलराम सौं ॥

कहत राम सुनु यशुमति मैया । अबहीं आवत कुवँर कन्हैया ॥
नेक धीरधरु मति अकुलाई । यह सुनि कै बलकी बलिजाई ॥
पुनि यह कहत कान्ह नाहिन अब । झूठहिं मोहिं प्रबोध[4] करत सब ॥
भई बिनासुत व्याकुल मैया । कहत कहां मेरो बाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई । रोयउठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजबासी सब भये बिहाला । कहत कहां मोहन नँदलाला ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी । आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रातहिंते जल मांझ समाने । तुमहि बिना युगयाम[5] बिहाने ॥
अबको बसै जाय ब्रजमाहीं । धृग धृग जीवन तुमहिं बिनाहीं ॥
अति व्याकुल रोवत नँदराई । बिकल मनहुँ फणि मणी गँवाई ॥
यशुमति धाय चलत जल माहीं । राखति ब्रज युवती गहि बाहीं ॥
हलधर सबहिनको समझावैं । बिना श्याम कोउ धीर न पावैं ॥

---

१ अत्यन्त । २ दुःख । ३ सर्प । ४ ज्ञान ५ दो पहर ।

दो०–कहत यशोदा नंदसों, धृग धृग वारहिं वार ॥
और किते दिन जियहुगे, मरतनहीं मोहिंमार ॥
सो०–कर देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरण सुख ॥
नंद भये बिन भान, मूर्च्छि परे सुनि तिय वचन ॥
तबहिं धाय बल पिता जगायो । बार बार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सब कोई । कान्हर मारन हार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु ब्रजबासी । वे अन्तर्यामी अबिनाशी ॥
सब गुणसागर आनँद राशी । रमा सहित जलहीके बासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो । आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर तेहिकाला । उठ्योसलिल झक झोर विशाला ॥
बोलि उठे आतुर बलरामा । वे देखो आवत घनश्यामा ॥
सुनत वचन लखि के उठि धाये । यमुना नीर तीर सब आये ॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे । दरशातुर विरहानल बाढे ॥
प्रगट भये जलते तेहिं काला । ब्रज जन जीवन नँदके लाला ॥
कमल भार काली पर लीन्हे । नटवर भेष मनोहर कीन्हे ॥
भये सुखी सब ब्रजके बासी । लखि हरि वदन परम सुखरासी ॥
छं०–हरि वदन लखिके राशि सुखकी मुदित ब्रजवासीभये ॥
मनहुँ बूडत नाव पाई परम उर आनँद छये ॥
मात पितु लखि जो भयो सुख जात सो कापै कह्यो ॥
पुलकतनमन हरषि गदगद प्रेम जल लोचन वह्यो ॥
चकित हरितन लखत इकटक मिलनको आतुरहियो ॥
श्याम निरतत अहिफनन पर खौर चन्दनतनु कियो ॥
श्रवण कुण्डल लाल लोचन चारु मुकुट बिराजहीं ॥
मनहुँ मरकत गिरि शिखर मणि मोर तापर राजहीं ॥
पीतपट कटिकाछनी उर माल मणि भूषण सजे ॥

१ बेहोश । २ लक्ष्मी । ३ जल । ४ घबड़ाकर । ५ प्रसन्न । ६ सर्पकेफन ।

नृत्य ताण्डव करत फण प्रति व्योमदिव दुन्दुभि बजे ॥
भई जय ध्वनि गगन वर्षहिं सुमन सुर आनँद भरे ॥
गन्धर्व गुण गण गगन गावत तान तालन अनुसरे ॥
उरगनारी श्याम सन्मुख करत प्रस्तुति आवहीं ॥
नाथ अब अपराध क्षमि कर कर कृपा पति पावहीं ॥
राखे चरण निज शीश याके अति बड़ाई इन लई ॥
ऐसी बड़ाई औरको प्रभु नाहिं तुम कबहूं दई ॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि शिर राखि मन गर्वित कियो ॥
कोटि कोटिब्रह्माण्ड तवतन अधिक इन यह धरिलियो ॥
सुर असुर नर नाग खग¹ मृगकीट² जन सब रावरे ॥
क्षमिय अब अपराध अहिके शुभग सुन्दर सांवरे ॥
दोहा–सुनि अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय ॥
उतरि परे अहिशीशते, यमुनाके तट आय ॥
सो०–तट पर कमल धराय, कालीको आयसु³दियो ॥
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा ॥

तब काली कह सुनहु कृपाला । तव वाहन⁴ डर डरत विशाला ॥
धनि ऋषि शाप दियो है ताही । ताते आय सकत ह्यां नाहीं ॥
तबमैं भागि बच्यो इत आई । नातरलेत मोंहि सो खाई ॥
चरण चिह्न लखि तव फण मेरे । परिहैं गरुड़ आय पग तेरे ॥
तू अबमति खगपतिहि डराई । अपने द्वीप करहु सुख जाई ॥
याते बडो कौन सुखनाथा । अभयदान पद परस्यो माथा ॥
जे पद कमल भजन परतापा । जन प्रल्हाद मिटे सन्तापा ॥
ते पदचिह्न शीश परधारी । जन्म जन्मको भयो सुखारी ॥
उरगिन सहित नाइ पद माथा । गयो उरग द्वीपहि अहिनाथा ॥
जैजै ध्वनि नभसुरन बखानी । धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥

---

१ पक्षी । २ क्रीडा । ३ आज्ञा । ४ गरुड । ५ दुःख ।

शरण राखि काली अहि लीन्हों । जलते काढ़ि कृपा करि दीन्हो ॥
फन पर चरण चिह्न प्रगटाई । कठिन गरुड़की त्रास[१] मिटाई ॥
दोहा—धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित[२] सुमन वर्षाय ॥
गये देव निज निज सदन, हृदय परम सुख पाय ॥
सो०—द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुर लोकहिं पठै ॥
आयो निकसि गोपाल, ब्रजवासी जन सुखकरन ॥
धाय मिले सगरे ब्रजवासी । विरह ताप तनुकी सब नाशी ॥
माता दौरि कण्ठलपटानी । पुलकरोमतन गद्गदवानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा । उरलगाय भेटत उर पीरा ॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया । दुहूं करन सों लेत बलैया ॥
धाय नन्द उरसों लै लाये । गये प्राण मानहुं फिरि आये ॥
गद्गद बैन नयन जल ढारो । कहत जन्म फिरि भयो तुह्मारो ॥
बार बार उर सों लपटावत । दारुण उरकी ताप नशावत ॥
प्रेमाकुल देखी बल माता । मिले रोहिणी सों सुखदाता ॥
निरखि वदन कह यशुमति मैया । मैं बरजों नित तुमहिं कन्हैया ॥
यमुना तीर न्हान मति जाहू । तुमबरजो मानत नहिं काहू ॥
मैं निशि स्वप्ने मांझ डरान्यो । सोई कछू आय प्रकटान्यो ॥
कंस कमलके फूल मँगाये । ब्रजवासी सब अतिहिडराये ॥
दोहा—मैं गेंदही खेलत यहां, आयो यमुना तीर ॥
मोहिं डारि काहू दियो, कालीदहके नीर[३] ॥
सो०—देख्यो उरग विशाल, जाय तहां मैं डरो अति ॥
तब पूछ्यो मोहिं व्याल, किन पठयो तोको इहां ॥
तब ऐसे मैं ताहि बतायो । कमल काज मोहिं कंस पठायो ॥
यह सुनतहिं अहि उठ्यो डराई । मोको फनपर लियो चढ़ाई ॥
कमल लियोनिज पीठ लदाई । आपुहि आय गयो पहुँचाई ॥
ऐसे जननी बोधँ[४] कृपाला । सुनत वचन सब ब्रजकी बाला ॥

१ डर । २ प्रसन्नहोकर । ३ जल । ४ समुझाई ।

लै लै हरिको उरसों लावैं। कठिन विरहकी शूल मिटावैं॥
श्याम बिना बहुतै दुख पायो। सोहरि तिनको ताप नशायो॥
लखे सखा सब आरत बाढे। प्रेमातुर मिलबेको ठाढे॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई। मिले धाय सब कण्ठ लगाई॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया। जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया॥
तुमहौ सब ब्रजके सुखदानी। कंस मारिहौ तुम हम जानी॥
कहा भयो जो तुमहो बारे। हैं तुह्मरे गुण सबते न्यारे॥
भलो यदपि सिंहनको छोटो। कौन काज गर्जलम्बो मोटो॥

दोहा–तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय॥
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हर्षाय॥

सो०–जब हलधर अरु श्याम, मिले विहँसि दोउ मनहिं मन॥
निरखि मगन नरबाम भेद न कोऊ जानहीं॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा। तुम जो कही करी सोइ श्यामा॥
तब हरि कह्यो नन्दसों जाई। मेरे मनहिं बात यह आई॥
आज बसें सब यमुना तीरा। अति रमणीक सुगन्ध समीरा॥
यहां कीजिये भोग विलासा। होत प्रात सब चलहिं अवासा॥
कमल पठाय कंसको दीजे। सुनहु तात अब विलँब न कीजे॥
गोप जाय आवैं पहुंचाई। काल्हि चढ़ै नतु ब्रजपर धाई॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पाया। सब ब्रजवासिनके मन भायो॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाय। षट्रस भोजन बहुत मँगाये॥
यमुनातीर गोप समुदाई। भोजन कियो बहुत सुखपाई॥
नन्दराय तब शकट मँगाये। कोटि कमल तिनपर लदवाये॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हे। ते अहिरन कांधे धर लीन्हे॥
अपनी सरिखे गोप सुहाये। तिनहि संग करि नृपहिं पठाये॥

दोहा–बहुत विनय करि कंसको, दीन्हों पत्र लिखाय॥
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसो जाय॥

---

१ बालक। २ हाथी। ३ स्त्री। ४ पवन। ५ गाडा। ६ अपनी बराबर।

सो०–गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुवन ॥
तुव प्रताप ते राज, आप गयो पहुँचाय अहि ॥
कोटि कमल नृप मांगि पठाये । तीनिकोटि तहँते हैं पाये ॥
सो राखे जल मांझ सजाई । आयसु होय तो देउँ पठाई ॥
तब गोपन सों कुँवर कन्हाई । ऐसे बोलि उठे मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो । यह कारज हम कियो तुह्मारो ॥
कमल शकट दधि घृतके भारा । चले गोपले नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई । जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई । समाचार सब नृपहि सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डराम्यो । आपनिकसि आयो अतुराम्यो ॥
देखी शकट भीर अति भारी । भयो चकित सुधि बुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो विशाला । लगे ताहि मनो व्याल कराला ॥
नन्द विनय तब गोपन भाषी । दीनो पत्र भेंट सब राषी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई । नन्दसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥
दोहा–हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम ॥
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥
सो०–सुनत श्याम सन्देश, देखि कमल अति भयबिकल ॥
भीतर गयो नरेश, मन बाढी चिन्ता बिपुल ॥
मनहीं मन यह करत विचारा । यासों मेरे नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये । काली ते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलनले आये । सहस शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारों । इनको ह्वांते तुरत निकारों ॥
फेर कछू मनमें भय पावै । करत विचार न कछु बनि आवै ॥
पुनि सँभारि धीरज उन कीन्हो । गोपन बोलि भीतरहि लीन्हो ॥
ह्रदय दुखित ऊपर सुखमानी । पहिराये दीने मनमानी ॥
सरोपाव नन्दहुको दीन्हो । कहियो काज बड़ो तुम कीन्हो ॥

---

१ पुत्र । २ आज्ञा । ३ घबडाकर । ४ सर्प । ५ बहुत ।

तेरे सुत बलराम कन्हाई । एक दिवस देखिहौं बुलाई ॥
यह सुनि अति पुरुशारथ कीन्हो । कालीदहके फूलन लीन्हो ॥
यह कहि विदा किये सब ग्वाला । भयो कंस उर शोच विशाला ॥
मनहीं मन सोचत हरिके गुन । रह्यो काठ ज्यों भीतरहीघुन ॥

दोहा–तब दावानल बोलिके, कह्यो मरम सबताहि ॥
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ॥

सो०–जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रजवासिन सहित ॥
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥

दावानल सुनि नृपकी बानी । चल्योरिसाय गर्व उर आनी ॥
करौं भस्म इक पल महँ जाई । सहित गोप नँद सुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि आऊं । जो कहुँ एक ठौर सब पाऊं ॥
इहां गोप कमलन पहुँचाई । आये यमुन तीर हर्षाई ॥
नन्द तुरत सब निकट बोलाये । सुनत सकल ब्रज जन जुरि आये ॥
गोपन कही नन्द सों आई । लिये कमल नृप अति सुखपाई ॥
दियो हर्ष तुमको पहिरायो । मुदित नन्द लै शीश चढायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये । लखि सब ब्रजवासिन सुख पाये ॥
हरिको नाम सुन्यो जब राजा । हरषि कह्यो कीनो उन काजा ॥
इक दिन बल मोहन दोउ भाई । देखहुँगो मैं इहां बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुखपायो । हरषि भूप मो सुतन बुलायो ॥
करी कृपा अति नृप हरिपाहीं । सब नर नारि हरषि मन माहीं ॥

दोहा–कहत श्याम बलराम सों, हँसि हँसि कै यह बात ॥
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तात ॥

सो०–ब्रज जन परम हुलास, इक सुख हरि अहिते बचे ॥
मिट्यो कंसको त्रास, द्वितिय कमल पठये नृपहिं ॥

अथ दावानलवर्णन लीला ॥

यहिविधि ब्रजजन अति सुख पायो । खान पान करि दिवस बितायो ॥

---

१ लकडी । २ भेद । ३ रास । ४ उपाय । ५ प्रसन्न । ६ आनन्द ।

सोये सब मिलि यमुनातीरा¹ । राखि हृदय सुन्दर बलवीरा ॥
वहां असुर दावानल आयो । चाहतहै सब ब्रजहि जरायो ॥
देखे सब ब्रजजन इकठाहीं । कियो हर्ष अपने मन माहीं ॥
प्रकटी दावानल चहुँ ओरा । अतिहि प्रचण्ड पवन झक झोरा॥
दशहूं दिशिते घेरत आवै । तृण तरु खग² मृग जीव जरावै ॥
जागि परे सब ब्रज नर नारी । कहैं चहूँ दिशि लगी दवारी³ ॥
भये चकित सब अति मन माहीं । काहू दिशि मग⁴ दीखत नाहीं ॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू । लेत सबै भरि शोचउसासू ॥
आयगई दवै अतिहि निकटहीं । चले कहत सब यमुना तटहीं ॥
अब न देखियत कहूँ उबारा । बढी अनल⁵ पहुँची नभ झारा ॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने । जरें सकल मनमांझ डराने ॥
छं०—अति विकल सब डरे ब्रज जन देखि अनल भयावनो ॥
भई धर नभज्वाल पूरण धूम धुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरुवर गिरत महि भहरायकै ॥
उठत शब्द अघात चहुँ दिशि बढत झरझहरायकै ॥
फटत फल फूटत पटकदल जरत बरत लताघनी ॥
काँस चटकत बाँस पटकत अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराहँ⁷ वन पशु विकल पन्थ न पावहीं ॥
जरत जँह तहँ जीव खग मृग विपुल जित तित धावहीं॥
दोहा—दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहु दिशि घेर ॥
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥
सो०—धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ॥
बिच बिच चमकत ज्वाल, तडित माल जनु सघनघन ॥
भये देखि ब्रजलोग दुखारे । तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करो सहाई । जरत सकल ब्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे । कंस त्रासते तुमहिं उबारे ॥

१ किनारा । २ पक्षी । ३ दावाग्नि । ४ मार्ग । ५ अग्नि ।६ लोह ।७ सूअर ।

जँह जहँ परी गाढ हम आई। तहाँ तहाँ तुम करी सहाई॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजै। हमहिं बचाय अग्निसे लीजै॥
व्याकुल गोप नन्द मन माहीं। करत विचार बनत कछु नाहीं॥
यशुमति सबहिन कहत पुकारे। दई परयौहैं ख्याल हमारे॥
नाना रूप असुर बहु आये। कोउखग कोउ पशु रूप बनाये॥
कोऊ पवन रूपह्वै आयो। भयो तहां कोउ पुण्य सहायो॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई। बड़े भाग्य नृप त्रास नशाई॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा। होत सकल ब्रजको संहारा॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ। मोहिं लखि परत उपाय न कोऊ॥

दोहा—सुनिजननीके बचन प्रभु, लखि सब ब्रजबेहाल॥
कह्योसबन धीरज धरो, मति डरपौ लखिज्वाल॥
सो०—कौतुकनिधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि॥
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हितकारक सदा॥

तब हरि कह्यो डरो मति कोई। बिनवहु देव बहुरि सब सोई॥
जिन सहाय कीनी अबताई। सोई करैं सहाय सदाई॥
हरि हँसि सबसों आंखि मुंदाई। करिगये अग्निपान सुखदाई॥
ह्वैगइ चहुँ दिशि शीतलताई। रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई॥
खोलि देहु दृगै तब हरि बोले। सुनतहि तुरत सबन दृग खोले॥
देखि चकित सब ब्रज नर नारी। कहत धन्य धनि तुम बनवारी॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला। लपट झपट अतिही विकराला॥
नहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू। गयो बिलाय कहां धौं दाहू॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी। हम यह कछू न काहू जानी॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई। वह करनी यह कहि न सुहाई॥
तृणकी आग प्रथम बहु जागै। फिरि तिहि बुझत बिलंब न लागै॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी। भये सुखी सब त्रास नशानी॥

दोहा—जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल॥

१ नाथ। २ अग्नि। ३ नेत्र। ४.तिनके।

द्रुमे बेली तृण हरित सब, प्रफुलित वन सुखमाल ॥
सो० -श्याम सहायक जाहि, ताहि कहो डर कौनको ॥
यह न बडाई वाहि, पांचतत्त्व उनके किये ॥
कहत परस्पर ब्रजकी नारी । हैं सखि बड़े बीर बनवारी ॥
देखत कोमल श्याम सलोना । यह सखि जानतहै कछु टोना ॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई । लायो तापर कमल लदाई ॥
मांगे कमल कंस नृपराई । कोटि कमल तेहि दिये पठाई ॥
दावानल नभ धरणि बराबर । घेर लिये ब्रजके नारी नर ॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हों । रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हो ॥
ये उत्पात मिटैं उनहीं पै । और न होय सकै किनहीं पै ॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारा । है यहही कर्त्ता संसारा ॥
लखि हरि चरित यशोदा मैया । चकित निरखि मुख लेति बलैया ॥
लखि सुत चरित मुदित नँदराई । करत गोप गण सकल बड़ाई ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा । हैं ब्रजवासिनके बडभागा ॥
जिनके संग श्याम सुख शीला । करत रहत नित नव रस लीला ॥
दोहा-एक दिवस निशि यमुन तट, बसि सब गोपीग्वाल॥
होत प्रात निज निज सदन, आये सहित गोपाल॥
सो०-हरि जनके सुखकार, विलसत विविध विलासब्रज॥
सन्तन प्राण अधार, ब्रजवासी जन जाहिं बलि ॥
हरि ब्रज जनके दुख बिसरावन । करत चरित सुर मुनि मन भावन॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये । कौन कंस कब कमल मँगाये ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये । कालीनाग नाथि कब लाये ॥
कब दावानल जारन आयो । एक दिवस निशि कहां वितायो ॥
नाहिं जानत कछु नंद यशोदा । करत श्याम सोइ बाल विनोदा ॥
माखन मांगत कुँवर कन्हाई । बार बार जननीसों जाई ॥
आतुरे दधिहि मथत नँदरानी । सद माखन हरिको रुचि जानी ॥

१ वृक्ष । २ दावाग्नि । ३ बालक्रीडा । ४ माता । ५ शीघ्र ।

कहत तनक तुम रहत ललारे । तुम्हें देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी । बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकी कान्हहिं । कहत श्याम सों सुनत न कानहिं
झूठहि देत हुँकारी जननी । भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तब लौं मथि दधि माखन कीन्हो। तुरतहि लै सुतके कर दीन्हो ॥

दोहा—लैलै अधरन परसिकरि, माखन रोटी खात ॥
कहत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात ॥

सो०—जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिव सनकादिकहुं ॥
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत कर मानई ॥

अथ प्रलम्बासुरवध लीला ॥

नित नव लीला करत कन्हाई । तात मात ब्रज जन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रजके नर नारी । निशिदिन मुख हरिचंद निहारी ॥
इक दिन श्याम राम दोउ भाई । खेलत सखन संग बन जाई ॥
नाना विधि सब करत कलोलैं । भांति भांतिकी बाणी बोलैं ॥
कबहूं मोर हंसकी नांई । बोलत हँसत श्याम सुखदाई ॥
कबहूं मधुरे स्वर सबगावैं । मध्य श्याम घन वेणु बजावैं ॥
कबहूं चढत तरुन पर जाई । कूदि परत गहि डार नवाई ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं । बाल बिनोद मोदरस केलैं ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो । कंस ताहि दे पान पठायो ॥
सो छल रूप गोप वपुधारी । मिल्यो आय सब सखनमँझारी ॥
ताको ग्वाल न काहू जान्यो । यहतो असुर श्याम पहिचान्यो॥
बलदाऊको दियो जनाई । ताहि हतनेको रच्यो उपाई ॥

दोहा—सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल॥
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल ॥

सो०—द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बांटि सब ॥
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिश भये ॥

---

१ माखन । २ प्यार किया । ३ वृक्षोंपर । ४ शरीर । ५ मारनेका ।

निजनिज जोट सखन जुरि लीन्हो। हलधर जोट दनुज सँग कीन्हो ॥
आपसमें यह होड लगाई । जो हारे सो पीठि चढाई ॥
भांडिर वनलौं लै जाही । फेर इहां पहुँचावै ताही ॥
फलको नाम बुझावन लागे । बूझदियो बल सबते आगे ॥
चले सखा चढि चढि निज जोरी। चढे दनुज बल घींच मरोरी ॥
भांडिर वन पहुँचे तब जाई । फिरे सखा सब ठांव छुवाई ॥
असुर[1] चल्यो लै बलको आगे । भकट्यो दनुज शरीर अभागे ॥
तब बलदेव कोप करि भारी । मुष्टि[2] एक ताके शिरमारी ॥
बिकसि[3] गयो शिर गिऱ्यो अधीरा। उतरि परे तब श्रीबलवीरा ॥
भयो पलकमें सो बिनं भाना । देखत सुर मुनि चढे विमाना ॥
भई गगन[4] ते जय जय वानी । फूलनकी वर्षा वर्षानी ॥
बहुविधि अस्तुति बलहिं सुनाई । मुदित सकल सुर मुनि समुदाई ॥

दोहा–ग्वाल बाल चक्रित सबै, दौरि गये बल पास ॥
मृतकं[5] असुर तनु देखिकै, तब मन कियो हुलास॥

सो०–धन्य धन्य बलराम, धन्य तुह्मारे मात पितु ॥
बड़ो कियो यह काम, कपट रूप माऱ्यो[6] असुर ॥

यह शठ गोप भेष बन आयो । हम काहू इहि जान न पायो ॥
जो यह शठ नहिं जात निपांतो । तो काहू लरिकहिलै जातो ॥
हौ तुम बडे वीर दोउ भाई । जहँ तहँ हमको होत सहाई ॥
वनके दुष्ट सकल तुम मारे । हो तुम हम सबके रखवारे ॥
ताहि कहो काको डर भैया । जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बड़ाई । धन्य धन्य ब्रज जन सुखदाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहन लाला । आये सदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता । सुनत चकित ब्रजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बड़ाई । जननी मुदित लिये उरलाई ॥

---

१ राक्षस । २ मुक्का । ३ फटगया । ४ आकाश । ५ मराहुआ । ६मारडाला

बल मोहन दोउ बीर निहारी। दोऊ जननि जात बलिहारी॥
भूखे जान बनहिंते आयो। दोउ भइयन भोजन करवायो॥
जो सुख लहत नंदकी रानी। सो शारद नहिंसकै बखानी॥
दोहा–सुतसनेहयशुमति मगन, निशि दिन जात न जान॥
करत चरित सन्तनसुखद, भक्त बछलं भगवान॥
सो०–नितनव परम हुलास, व्रजवासी हरिसँगलहत॥
बिलसत बिविध बिलास, बाटघाट गृहवनसघन॥

अथ पनिघटलीला॥

पनिघट यमुनाके तटमाहीं। ठाढ़े श्याम कदमकी छाहीं॥
सखा वृन्द चहुँ ओर बिराजैं। कोटि काम छबि निरखत लाजैं॥
शीश मुकुटकी लटक सुहाई। सुरँग खौर केसर छबिछाई॥
कुंडल झलक अलक घुघरारी। कंठ कनकं कंठी द्युतिकारी॥
चटकीली लटकी बनमाला। परसति चरण सरोज विशाला॥
मुक्तमाल मणि माल सुहाई। उर विशाल पै अति छबिछाई॥
अरुण अधर दशननद्युति नीकी। मुर मुसकान मोहनी जीकी॥
चटकीली पट पीत बिराजै। कटि तटि क्षुद्र घंटिका राजै॥
भुज विशाल भूषण युत सोहै। कर मुद्रिका मुदित मनमोहै॥
तनु घन श्याम रसीले नैना। हँसि हँसि कहत सखन सों बैना॥
कनक लकुटिसों पगलपटान्यो। भूषण सहित न जात बखान्यो॥
गहि द्रुम डार तिरीछे ठाढे। अंग अंग अनुपमै छबि बाढे॥
दोहा–कबहुँबजावत अधर धरि, करि मुरलीध्वनि घोर॥
निकट बुलावत बन मृगन, कबहुँ नचावत मोर॥
सो०–रहे गगन घन छाय, सुखदछांह शीतल किये॥
वर्षा ऋतु को पाय, निरखत सुत नँदरायको॥
हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई। मनहुँ काम मसनद बिछाई॥
बहत समीर धीर सुखदाई। शीतल अधिक सुगंध सुहाई॥

---

१ संतोंको सुखदाई। २ भक्तवत्सल। ३ सुवर्ण। ४ कांति ५ अद्भुत। ६ पवन।

बहत यमुन बाहुलते पूरी। परत भँवर जहँ तहँ छविरूरी ॥
उठत श्याम जल शुभगतरंगा। छवितरंग जिमि हरिके अंगा ॥
या छबि सों पनिघट हरि ठाढ़े। संग गोप बालकहित बाढ़े ॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं। ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मनमें सब जानैं। रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं। दरश लालसा अति मनमाहीं ॥
सबके अन्तर्य्यामि कन्हाई। युवतिनके मनकी गति पाई ॥
तब इक बुद्धि रची नँदलाला। रसिक शिरोमणि मदनगोपाला ॥
सखन एक तरुतर बैठाई। पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आपरहे द्रुमै ओट छिपाई। हेरत युवतिन मग चितलाई ॥

दोहा–इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक वनश्याम ॥
आप रहे द्रुम ओट हरि, यमुना तट गइ बाम ॥

सो०–नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिरधरिचली ॥
पाछेते चितचोर, घटलै दियो लुढाय महिं ॥

गही चतुर ग्वांलिनि भुज हरिकी। पाई कनैंक लकुटिया करकी ॥
सब सों तुम करिरहे ढिठाई। तैसेहिं मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हार हँसि गागरि। लेत नहीं ग्वालिनि अति नागरि ॥
कहत कि रीतो घटनहिं लेहौं। जल भर देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नंद सुवन कन्हाई। हम हूं बड़े बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो। मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुह्मारो ॥
एक कहौ तो दश मैं कहिहौं। मैं कछु तुमसों डरपि न जैहौं ॥
यह सुनि हँसि दीन्हें नँदलाला। लियो चोरि चित मदनगोपाला ॥
कहत लकुटियाँ देरी मेरी। मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी। ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी ॥
लागी हृदय मदनकी सांटी। मन पर गयो प्रेमकी घांटी ॥
करते लकुटि गिरत नहिं जान्यो। विवश भई चित चेत हिरान्यो ॥

१ इच्छा। २ वृक्षकेनीचे। ३ पड़े। ४ सुवर्णकी। ५ लठिया। ६ कामदेव।

दोहा—तव घट भरि हरि भावते, दीन्हो शीश उठाय ॥
नेकहुँ सुधि ता तनुनहीं, चली ब्रजाहिं समुहाय ॥
सो०—कियो दृगन में धाम, सुन्दर नट नागर सुखद ॥
जित देखे तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं ॥
उतै अपर ग्वालिनि इक आई। कहत कहा तू रही भुलाई ॥
सूधे पंथ चलतहै नाहीं। कहा शोच तेरे मनमाहीं ॥
अवहीं हँसति भरन जलआई। कहाचली इत आप गँवाई ॥
ताको देखि कहत सुनु आली। मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई। मेरी गागरि कृष्ण लुढाई ॥
तब मैं कनक लकुटि गहिलीन्हों। उन मोतन लखिकै हँसिदीन्हों ॥
वहै हँसनि मोहिं परी ठगौरी। तबहीं ते मैं ह्वैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अबआली। मेरेचित वह चितवन शाली ॥
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं। और कछू मोहिं दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी। आप विलोकन को अतुरानी ॥
ताहि बाँहगहि घर पहुँचाई। आपगई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्यामतहँ नाहीं। इत उत लखिशोचति मनमाहीं ॥
दोहा—हरि देखत तरु ओटव्है,ग्वालिनि मन दुख पाय ॥
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥
सो०—मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति ॥
प्रकटे नंदकुमार, आय अचानक निकटही ॥
गहिलीन्हीं अंकमें भरिग्वारी। ताके तनुकी तपनि निवारी ॥
ता तन चितैं कह्यो तूकोरी। तोहिं कबहुँ देख्यों नाहिं गोरी ॥
मन हरिलीन्हों रूप दिखाई। बहुरि भये तरु ओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुखपायो ग्वाली। छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नाहिं जानतमैं को कित आई। भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पंथ भुलिगइ नागरि। इत उत फिरत शीशलिये गागरि ॥

---

१ नेत्रोंमें। २ सोनेकी छड़ी। ३ वृक्ष। ४ अकस्मात्। ५ गोदमें।

और सखी इक उतते आई। देखि दशा तिन निकट बुलाई॥
कहा फिरै भूली मगमाहीं। बूझत सखी सुनत कछुनाहीं॥
चौंकपड़ी सपने ज्यों जागी। तासों वचन कहन तब लागी॥
श्याम वदन एकमिल्यो ढुठौना। तिनमोको कछु कीनों टोना॥
मैंभरि गागरि शीशचढाई। औचके मोहिं अंक भरिलाई[1]॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी। देखीनाहिं कबहुँ व्रजखोरी॥

दोहा–ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भुलाय॥
तबहिं भयो अंतर कहूं, मेरो चित्त चुराय॥
सो०–कही सखी सों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिकै॥
निरखि नंदको तात, भई जलदि[2]की बूंद जिमि॥

सोसकि सावधान करिताको। चली आप आतुर यमुनाको॥
देखी श्याम युवति[3] ढिग आई। ठाढे तरुकी ओट कन्हाई॥
तासु अंग छबिरहे निहारी। गोरे बदन चूनरी कारी॥
छूटी अलख वदन छबिछाई। मनहु जलज अलिअवलि सुहाई॥
हाथन चूरी चारु बिराजैं। कनक मुँदरियन अति छबिछाजैं॥
सहज शृंगार उरोज उठोहैं। अंग अंग सुठि सुंदर सोहैं॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं। जाने कहूं गये बनमाहीं॥
जल भरिचली मनहिं पछिताई। गागरि नागरि शीश उठाई॥
औचक श्याम गही लटआई। यह कहि कहां चली अतुराई॥
चिबुक परस उरसों करलायो। ग्वालिनि मनहिं हर्ष अतिपायो॥
ऊपर कहत बंककर भौंहन। छांडिदेहुमेरी लटमोहन॥
उर परसत कछु सकुच न मानत। और ग्वालि सो मोको जानत॥

दोहा–छांड़ि देहु लट देखिहै, व्रज युवती कोउ आय॥
हाहा मैं पांयन परति, तुमको नंद दुहाय॥
सो०–इतने ही को मोहिं, सोंह दिवावत बावरी॥

---

१ इन औचकमोहिं अंकमें लाई। २ मेघ। ३ स्त्री।

पहिंचान्यों नहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक ॥
यों कहि श्याम छांड़ि लट दीन्हीं। मुरि मुसकनि नागरिवश कीन्हीं॥
चली भवन मन हरि हर लीनों। जिय यह कहति कहा हरि कीनों
पगद्वै चलत ठिठकि रहि जाई। भूलगई मारग जिहि आई॥
प्रेम मगन तनु सुधि बिसराई। रहे दृगनमें श्याम समाई॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई। तब कछु जियमें गई लजाई॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह माहीं। उरते श्याम टरत क्षण नाहीं॥
सखी संगकी बूझत आई। कहां यमुन तट बेर लगाई॥
और दशा भइ है कछु तेरी। कहति नहीं हमसों सखि हेरी॥
कहा कहों तुमसों री आली। मार्यो मोहि श्याम वनमाली॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट। मैं जल भर्यो अकेली पनिघट॥
लैगगरी शिर मारग डगरी। कितहू ते आयो मो ढिगरी॥
औचक आनि गही लट मेरी। कह्योनेकु मुख देखन देरी॥
दोहा–मैं मृदु वचन अमोल सुनि, देखि वचन जलजात॥
जकी चकी सी व्है रही, उन परस्यो मो गात॥
सो०–प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहनके रस विवश॥
कुलकी लाज बिसारि, कही सखिन सों बात सब॥
सुनत बात सब सखी सयानी। श्याम विलोकनको अतुरानी॥
इक क्षण श्याम न विसरत काहू। सुनत भयो यह अधिक उछाहू॥
घर घरते धाईं सब नागरि। लैलै आईं जलकी गागरि॥
चलीं यमुन तट अति अतुराई। देख्यो कुँवर नंदको जाई॥
मोर मकुट कटिकछनी सो है। कुंडल चटक लटक मन मोहै॥
पीत वसन लखि तडित लजाई। नयन विशाल अधर अरुणाई॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई। ठगत फिरत हौ नारि पराई॥
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्हों। तुमरो कहो कहा ठग लीन्हों॥
कौन ठग्यो कहि कहा बखाने। औरहिके ठग तुमको जाने॥

१ सखी। २ रस्ता। ३ बहुमूल्य। ४ कमल।

कहा ठग्यो सो हम नाहिं मानैं । कहौ नाम धरि तब हम जानैं ॥
सर्वस ठगत पलकके माही । कहा ठग्यो सो जानत नाही ॥
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु । कैसे मोको ठग ठहरावहु ॥

दोहा–ठगलक्षण हमपै सुनहु, फाँसी मृदु मुसकान ॥
रूपठगौरीते ठगत, ब्रज तिय मन धन प्रान ॥

सो०–फिरत विकल बेहाल, लोक लाज कुलकान[1] तजि ॥
ठगी नंदके लाल, भई विदित तिहुँ लोक तिय ॥

अपने लक्षण मोहिं लगावहु । जैसे तुम सब चितहि चुरावहु ॥
कहति कि भकटी तिहुँपुर बाता । ब्रजतिय ठगत नंदको ताता ॥
यह अति कहति कहत सब कोई। सुर नर मुनि वेदहु नाहिं गोई ॥
तीन लोकको ठाकुर जोई । ब्रज बनितनवश कीन्हों सोई ॥
यों सुनि सब ग्वालिनि मुसकानी। कहौ सखी सुनि हरिकी बानी ॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानत । तुम्हरी नागरता[2] हम जानत ॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई। छांडि देहु अब यह लँगराई[3] ॥
काहूकी ढारतहौ गगरी । काहू लट गहि करत अचगरी ॥
काहूको अंकम भरि लावत । ब्रज लोगनपै सबन हँसावत ॥
तुमते मग कोउ चलन न पावत । बाट घाट डरपत सब आवत ॥
यमुना भरन देत नहिं पानी । बहुत अचगरी अब तुम ठानी ॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावैं । फेरि तुम्हैं ऊखल बँधवावैं ॥

दोहा–यह सुनि हरि रिस करि उठे, इँडुरी लई छुड़ाय ॥
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय ॥

सो०–मोहिं कहत ठग चोर, आप भईं साहुँनि[4] सबै ॥
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगली करन ॥

तब युवती सब हरि ढिग आई । कहत इंडुरी देहु कन्हाई ॥
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं । यशुमति पास न नेक डरै हैं ॥
बाट घाट तुम करत ढिठाई । काहु न नेक डरात कन्हाई ॥
इँडुरि लै फोरी सब गागरि । आज मिटावैं तुम्हरी लांगरि ॥

१ कुलकी मर्य्यादा । २ चतुराई । ३ छेड़छाड़ । ४ साहूकारनी ।

तव हरि चढे कदम पर जाई। इँडुरी दीन्ही जलहि बहाई ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत। मुरि मुसकनि सबके चितचोरत ॥
कहत कहौ मैयासों जाई। सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई ॥
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई। तब मैं इँडुरी जलहि बहाई ॥
ऐसो करि तुम मोकोपायो। मानहु मोको मोल मँगायो ॥
यह सुनि युवति कहत मुसकाई। कहत यशोमति सों हम जाई ॥
वेदिन बिसर गये मनमोहन। बाँधे मात ऊखली गोहन ॥
छांई रहो तौ बदहिं कन्हाई। जाउ कहूं तो नन्द दुहाई ॥

दोहा—कान्हहिं सौंह दिवायकै, लै उरहन सब बाम ॥
ऊपर रिस अंतर सुखो, चलीं नंदके धाम ॥

सो०—मथति महरि निज धाम, दधि माखन हरिके लिये ॥
तेहि अंतर ब्रज बाम, आवत देखी भीर अति ॥

मैं जानति हरि इनहिं खिझाई। ताते सब उरहन लै आई ॥
कहत युवति सब रिस भरि आई। ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥
भरन देत नाहिं यमुना पानी। रोकत आय करत कुलकानी ॥
काहूकी गागरि ढरकावै। इँडुरी लै जलमाहिं बहावै ॥
काहूको घट डारत फोरी। गारी देत सहैं नित खोरी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं। हरिके गुण तुम जानत नाहीं ॥
अब नाहीं ब्रजवास हमारो। करत अचकरी सुवन तुह्मारो ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं। महरिसुतहि तुम बरजत नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत निहोरी। कहा करौं सो तुमहि कहोरी ॥
जो हरिको मैं छां गहि पाऊं। तो तुम सबको अबहि दिखाऊं ॥
तुमहूं जानति हौ गुण हरिके। ऊखल सों बाँधे मैं धरिके ॥
मारन लगी सांटि लै जबही। बज्यौं मोहिं तुमहिं तब सबहीं ॥

दोहा—अब घर आवहिं जबहिं हरि, तबहिं करौं सोइ हाल ॥
लरिकाईते अचकरो, मैं जानत गोपाल ॥

१ स्त्री। उलाहना। ३ बेटा। ४ बेटा।

सो०-अब जो पकरन जाउँ, ताहि गहन पाऊं कहां ॥
सुनतहि मेरो नाउं, कोजानै भजि जाय कित ॥
यह अपराध क्षमो सब हमको । यहै कहत हौं मैं अब तुमको ॥
इहि विधि युवतिन बोध कराई । महरि सबनको घरन पठाई ॥
इतते घरन चलीं सब ग्वाली । उतते घर आवत वनमाली ॥
ह्वैगइ भेंट बीच मग आई । तुरत नयन हरि गये लजाई ॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई । बहुत बड़ाई करि हम आई ॥
निरखि बदन हँसि कह्यो कन्हाई । मैं समुझाय लेउँगो माई ॥
सकुचतही आये घर मोहन । द्वारहिते लागे हरि जोहन ॥
देखि जननि घरकारज लागी । गोपिन उरहनके रिस पागी ॥
भीतर रोहिणि पाक बनावैं । कहि कहि तिनसों बात सुनावैं ॥
हरुवै हरुवै तब हरि जाई । सुनत आप पाछे चित लाई ॥
यहै कहति यशुमति रिशि आई । गयो कहांधौं भाजि कन्हाई ॥
पनिघट रोंकत धूम मचावत । यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥
दोहा-गारि देत बेटिन बहुन, वै आवत ह्यां धाय ॥
हाहामैं सबको करति, क्योंहु खोट छुटाय ॥
सो०-ईंडुरी देत बहाय, सबकी गागरि फोरिकै ॥
कित धौं गयो पराय, यह कहि कहि घिरवत सुतहिं ॥
जाति पांतिसों कह लँगराई । मारेहु मानत नाहिं कन्हाई ॥
तब पाछेते हरि उठि बोले । मधुर वचन कोमल अति भोले ॥
तू मोहिं को मारन बहु जानै । उनके गुणन नाहिं पहिचानै ॥
कहति जुवै मानत तू सोई । तिनके चरित न जानत कोई ॥
कदमतीरते मोहिं बुलावैं । बाते गढ़ि गढ़ि आप बनावैं ॥
मटकत गिरै शीशते गगरी । नाम लगावत मेरे सिगरी ॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे । सुन्दर श्याम पीतपट काछे ॥
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं । मैं कह तोको जानत नाहीं ॥

१ धीरे धीरे । २ भाग । ३ नाचत ।

हरिमुख देखतही नँदनारी । तुरतहिं भूलिगई रिस भारी ॥
कहतकि उरहन सब लै आवैं । झूठहि खोर कान्हको लावैं ॥
मैं जानत गुण उन सबहीके । बातन जारि बनावत नीक ॥
वे सब योवनकी मदमाती । फिरत सदा हरिसों अठिलाती ॥
दोहा—कहां श्याम मेरो तनक, वे सब योवन जोर ॥
अब उरहन जो आवहीं, तौ पठऊं मुख मोर ॥
सो०—तू कित उनढिग जात, मैं बरजत मानत नहीं ॥
लावत झूंठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी ॥
यह कहि चम सुताहिं उरलायो। मनमोहन मन हर्ष बढ़ायो ॥
ब्रज घर घर यह बात जनाई । पनिघट रोकत कुँवर कन्हाई ॥
श्यामबरण नटवर वपु काछे । मुरली मधुर बजावत आछे ॥
करत अचकरी जो मन भावे । यमुना जल कोउ भरन न पावे ॥
बैठत आप कदमकी डारी । सबन बुलावत दै दै गारी ॥
काहूकी गागरि गहि फोरै । काहूकी इँडुरी गहि बोरै ॥
काहूको अंकम गहि लावै । काहूको घटै भूमि लुढावै ॥
नयन सैनदै चितहि चुरावत । काहूसों मन अपनो लावत ॥
ब्रज युवती सुनि सुनि उठि धावैं । बिनहरि दरश न क्षण कल पावैं ॥
कोउ बरजै कोउ कहै कोटि विधि।सबके ध्यान श्याम सुन्दरनिधि ॥
मन क्रम वचन तिन्है रति हरि सों। नातो नेह न मानत घरसों ॥
निशिदिन जागत सोवत माहीं । नंदनँदन क्षण बिसरत नाहीं ॥
दोहा—यह लीला सब करत हरि, ब्रज युवतिनके हेत ॥
कृष्ण भजै जो भाव जेहि, तेहि तैसो फलदेत ॥
सो०—चिन्तामणि जेहि नाम, चिंतत फलदायक जनन ॥
सबहींको सब वाम, जैसोको वैसो सदा ॥
सुनि यह श्रीवृषभानु दुलारी । पनिघट ठाढे कुंजबिहारी ॥
देखनको चित अति अतुराई । कह्यो सखिन सों कुँवरि बुलाई ॥

१ जवानी । २ देह । ३ घड़ा ।

चलहु यमुनतट ल्यावहिं पानी । सुनत बात यह सब हरषानी ॥
इक इक कलश सबन गहिलीनों । तुरत गमन यमुना तट कीनों॥
देखे तहां कुँवर नँदलाला । सुन्दरश्यामल नयनविशाला ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढ़ायो । प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो ॥
रहे रीझि हरि दीठि लगाई । भऱ्यो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घरहि यमुना जल भरिकै । सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै ॥
मंद मंद गति चलति सुहाई । मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे । बिवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै । गागरि शिरपै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीवें लटकत नकबेसर । वंदन बिन्दु आड दिय केसर ॥

दोहा–लोचन लोल विशाल अति, मुरि२ चितवत जाय ॥
भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष शर, हरि दृग मृगन लगाय ॥

सो०–अँग अँग छवि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ॥
अंचल ध्वज फहराय, ठिठुकि चलत हरि मन हरत ॥

रीझे श्याम निरखि छबि प्यारी । संगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई । कबहुँ रहत पीछे चितलाई ॥
नाना भांतिन भाव बतावैं । प्यारिहि निज अभिलाष जनावैं ॥
कनक लकुटलै करके माहीं । आगे पंथ सँवारत जाहीं ॥
देखत जहाँ प्रिया परछाहीं । तहां मिलावत निजतनु छाहीं ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावैं । पीतांबरलै शीश फिरावैं ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहि जाहीं । निरखत कुँवरिह छबि ललचाहीं॥
गागरि ताकि कांकरी मारैं । उचटि उचटि तिय अंगन पारैं ॥
ओट पीतपट शीश नवाई । इहि मिस निकसतढिग ह्वै आई॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने । मेरे हित हरि भावनठाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई । नहिं पावत लग लगन कन्हाई ॥
कियो चरित तब रसिक बिहारी । सखिन सहित मोही सुकुमारी ॥

१ गर्दन । २ सिन्दूरका बुन्दा । ३ बाण । ४ इच्छा ।

दोहा-मिसकरि निकसे निकटह्वै, निरखि बदन मुसकाय ॥
मन हरिलीनो सबनको, दियो काम उपजाय ॥
सो०-भईं विवश सुकुमार, अंग उमँग आँगी दरकि ॥
मोहे नंदकुमार, सुधि बुधि विसरी देहकी ॥

सखिन संग पहुँची घर आई। अटकि रह्यो मन हरिसँग जाई ॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा। कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा ॥
गागरि निज निज गृह पहुँचाई। बहुरि सखी प्यारी ढिग आई ॥
बार बार सब कहत निहोरी। चलिये यमुना जलहि बहोरी ॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी। चित उरझो चितवन परवारी ॥
ठग सी रही मनहि मन शोचै। प्रेम बिवश दृगवारि विमोचै ॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी। कहा भयो तोकोरी प्यारी ॥
शोचति कहा कहै किन सोरी। काहूलयो चोर कछु चोरी ॥
उत्तर हमैं देत क्यों नाहीं। कहा ठगीसी है मन माहीं ॥
गहि गहि भुजा कहति सब गोरी। चलहि न यमुना आवहि खोरी ॥
तब सखियन वृषभानुदुलारी। लीन्हीं सबन निकट बैठारी ॥
जलजनयन जल भरि अनुरागी। हरिके चरित कहन सब लागी ॥

दोहा-कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर ॥
गैल न छांडत सांवरो, रसिया नंदकिशोर ॥
सो०-धरै न कोऊ नांव, इह निशंकडरपत हियो ॥
एक भांतिको गांव, वह चंचल मानै नहीं ॥

मोको देखत जहां कन्हाई। मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारै। मोको मगमें आनि जुहारै ॥
आगे चलत लकुट करलाई। मेरो पंथ सँवारत जाई ॥
सो बहु मोहिं निहोरो लाई। फिर चितवै मोतन मुसकाई ॥
जबमैं यमुनाको जल भरिकै। चलति गागरी शिरपर धरिकै ॥
तब घट में वह कांकरि मारै। उचटि लगत तब अंग निहारै ॥

---

१ बहाना । २ आंसू । ३ कमलसेनेत्र ।

मेरे उर अंचर फहराई । सोवह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै । बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूं आपनि छबि दरशावै । मेरो चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतनु हेरै । नेक नहीं दग इत उत फेरै ॥
जहां जाति मेरी परछाई । तहां मिलाय रहत निज छाई ॥
जब लग लागन पावत नाहीं । तब वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

दोहा–मोतनु छुवै हरि चले, ताहि भरतहै अंक[१] ॥
हौं सकुचत बोलों नहीं, लोकलाजकी शंक ॥

सो०–ब्रज घर २ यह शोर, को जानै कहियत कहा ॥
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी । भइ गति सांप छछूंदर कैसी ॥
घरते निकसत बन नाहिं आवै । लोक लाज कुल कानि मिटावै ॥
जो घर रहौं रह्यो नहिं जाई । तनु घरमें मन जहां कन्हाई ॥
कितो करों आवत इत नाहीं । बँध्यो पीत पट आँचर माहीं ॥
अबतो मेरे मन यह रांची । करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची ॥
ब्रजके लोग हँसो किन कोई । कुल मर्य्याद जाउ किन सोई ॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी । जामें होय जीवकी हानी ॥
सोनो कहा कान जिहि टूटै । अंजन कहा आंखि जिहि फूटै ॥
कहा कांच संग्रहते होई । जो अमोल मणि करते खोई ॥
विष सुमेरु कहु कौने काजा । सुखद बूंद इक ओषधिराजा ॥
कुलकी कानि कांच किरचाई । चिन्तामणिकी खानि कन्हाई ॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी । सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी ॥

दोहा–मोको अब सूझै नहीं, विनु वह मृदु मुसुकान ॥
कापै न्यारो होतरी, चूनो हरदी सान ॥

सो०–मेटि लोककी कानि, पतिव्रत[२] राखौं श्याम सों ॥
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥

---

१ गोद । २ पतिबनानेका नियम अथवा पातिव्रत्यधर्म ।

सुनत गोपिका राधा बानी। हरि अनुराग सिंधु मन मानी॥
गद्गद कंठ पुलकतनु आये। लोचन जलंज प्रेम तनु छाये॥
भई प्रेमवश गोप कुमारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी। धन्य धन्य वृषभानु दुलारी॥
हम सब तोसों सत्य बखानैं। तैं हरि भली भांति पहिचानैं॥
यह मोहन सबको मन मोहै। तिय लखि विवश न होय सुकोहै॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजैं। समता काम कोटि द्युति लाजैं॥
सुमन श्याम दोउ पाणि पकरिकै। करत वेणु धुनि अधरन धरिकै॥
तब यह दशा सबनकी होई। जड़ चेतन मोहत सब कोई॥
वन मृग निकट धाय सब आवैं। खग ह्वै मौन न अंग डुलावैं॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं। थनते क्षीर पियत बछ नाहीं॥
यमुना बहिवेते रहि जाई। जलचर प्रकटत बाहर आई॥

दोहा–जडचेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन॥
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भर्यो रस मैन॥

सो०–गृहवन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुर धुनि॥
गृहकारज विसराय, चकित थकित रहियत सबै॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई। मोहत सुन्दर रूप दिखाई॥
नई २ छबि क्षण २ माहीं। झलकावत सब अंगन माहीं॥
ऐसी को जु देखि नाहिं मोहै। नंदसुवन सम सुन्दर कोहै॥
वह सखि सबहीके मन भावै। सब कोउ वाहि देखि सुख पावै॥
लोक लाज कुल कौनें कामहिं। जो पावैं सुन्दर बर श्यामहिं॥
पैं यह मोहिं अगम अति लागै। यह सुख मिलै नहीं बिन भागै॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं। बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं॥
तुमहू इनको तप करिपायो। ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो। जो बर पावहिं नंददुलारो॥
ताते मो मनमें यह आवै। कीजे जो सबके मन भावै॥

१ कमल। २ कांति। ३ हाथ। ४ मुछंड़ा। ५ अमृत। ६ कामदेव।

तप कीजै हरिके हितलागी । पूजि गौरिपतिसों बर मांगी ॥
नंदसुवन सुन्दर[1] बर[2] पावैं और सकल कामनों[3] नशावैं ॥

दोहा–जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रकटत पाषाँण[4] ॥
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥

सो०–कीजै यह दृढ़ नेम, प्रात जाय यमुनानदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि ॥

तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं । मनवांछित फल तपकरि पावैं ॥
सकल कामनाके शिवदाता । कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मनवांछित सखि एहा । नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखी की बानी । श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो । धन्य २ कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई । जाविधि नंदनँदन हितहोई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजे । यशुमति सुतसों हितकरिलीजै ॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों । नँदनंदन सों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी । जिनके हितपति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी । लोक लाज तिनका सम जानी ॥
इकक्षण[5] श्याम न उरते[6] टरहीं नेम धर्म व्रत हरि हित करहीं ॥
जिनकी यश शारद श्रुति गावैं । ब्रजवासी जन कहा बतावैं ॥

दोहा–जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, ब्रजयुवतिन मन माहिं ॥
सदा एक तुरिया[7] रहत, और अवस्था नाहिं ॥

सो०–ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रजतियनको ॥
हरिछवि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरण लीला ॥

भवन रवन सबहिन बिसरायो । ब्रज युवतिन हरिसों मनलायो ॥
यहै बासना सब उर जामी । होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
काम बासना करि उर धांयो । हरिके हेत तपहि मन लायो ॥

१ कृष्ण । २ दूलह । ३ इच्छा । ४ पत्थरसे । ५ मन । ६ नेत्र । ७ चौथी अवस्था ।

घट्दशसहस गोपकी कन्या । करन लगीं तप हरि हित धन्या ॥
रहंत क्रिया युत तप-को साधे । छांड़ दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं । प्रहर प्रयन्त रहैं जल माहीं ॥
जपहिं उमापति हर वृषकेतू । सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं । नयन मूंदिके ध्यान लगावैं ॥
बार बार यह कहैं मनाई । हम बर पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
जलते बहुरि निकसि सब आई । पूजहिं गोपेश्वर शिव जाई ॥
चन्दन विल्वपत्र जल धारा । अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढावैं । धूप दीपकरि स्तुति गावैं ॥
छंद—करहिं स्तुति गानबहुविधि, पाणि पंकज जोरहीं ॥
वारवार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जयमहेश कृपालु शिव, आनन्दनिधि गिरिजापते ॥
कैलासपति कल्याण अगजग, नाथ सर्व नमामिते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड शशि कल, गंगयुत शोभित शिरे ॥
कमल नयन विशाल सुन्दर, चारु कुण्डल श्रुति धरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण, भस्म अंग दिगम्बरे ॥
अर्द्धंग गौरिविशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कर्पूर गौरि प्रसन्न आनन, पंचवक्त्र त्रिलोचने ॥
कामप्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥
भगवान भौभव भय हरण, भूतादि पति शम्भूहरे ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ,जगत पति मन्मथ अरे ॥
वृषभ वाहन त्रिपुर अरि, मृगराज वरछालाम्बरे ॥
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद, वन्दि मनवांछित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहति अहैं ॥

१ सोलहसहस्र । २ चित्त । ३ चांवल । ४ वेद । ५ पंचमुखी । ६ शरणागत ।

दोहा–तुम सर्वज्ञ[1] सुजान शिव, जानत जनमन पीर ॥
परम दान दीजै हमैं, सुन्दर वर बलवीर ॥
सो०–यह वरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं ॥
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहै हमारे उर सदा ॥
यहि विधि ब्रज तिय नेम निबाहैं। शिवको पूजि कृष्ण पति चाहैं ॥
नितप्रति प्रात यमुन जल खोरैं। प्रीतिरीति सों मन नहिं मोरैं ॥
सविता[2] सों बहु भांति निहोरैं। गोदपसारि युगल[3] कर जोरैं ॥
तेजराशि दिनमणि[4] जग स्वामी। जगतचक्षु सब अन्तर्यामी ॥
प्रणत मनोरथ पूरणकारी। हम पर होहु दयालु मुरारी ॥
काम हमारे तनुहिं जरावै। नन्दसुवन वर हमको भावै ॥
होय हमारो पति नँदलाला। करहु कृपा सो दीनदयाला ॥
ऐसे हरि हित गोपकुमारी। करैं नेम व्रत तप तनु धारी ॥
गेह देहकी सुरति बिसारी। कृशतन भई परम सुकुमारी ॥
वर्ष दिवस[5] यों कहत विहान्यो। प्रभु अन्तर्यामी सब जान्यो ॥
मो हित शिव पूजत ब्रजनारी। और कामना सकल निवारी ॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता। सकल देव द्वारा फलदाता ॥
दोहा–देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल ॥
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल ॥
सो०–मो कारण जलन्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि ॥
सुन्दरश्यामलगात, नवकिशोर वर वपु धरे ॥
न्हात जहां युवती सब आछे। मीजत पीठि सबनके पाछे ॥
चकित सबन पाछे हरिहेरो। देख्यो कान्ह कुँवर नँदकेरो ॥
मनमें हर्षित भईं सब नारी। व्रत फल प्रकटे कुंजविहारी ॥
नवल किशोर ध्यान मन लायो। सोई प्रगट रूप दरशायो ॥
दृष्टि परतहीं सकल लजानी। लागीं अंग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानै। हरिको सब अपने ढिग मानै ॥

-१ सर्व ज्ञाता । २ सूर्य । ३ दोनों । ४ सूर्य । ५ बीतगया ।

कहत लाज लागत नाहिं तुमको। बिना बसन[1] देखतहौ हमको॥
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई। चीर हारलै चले पराई॥
हांक देत सब शपथ दिवावैं। फिरहु बसन भूषण हम पावैं॥
डारि बसन भूषण तब दीन्हे। गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हे॥
चीर फटे भूषण सब टूटे। लेत न बनै तहां नहिं छूटे॥
एक एकको लाज लजाहीं। बसन अभूषण पहिरत जाहीं॥

दोहा—लगे श्याम ढीठो करन, यह कहि २ पछितात॥
अन्तरगति आनन्द अति, झूठहि खीझत जात॥

सो०—लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति॥
यशुमतिके ढिगजाय, कहत चलो कहिये सबै॥

चलीं यशोमति पै सब ग्वारी। प्रेम विवश तनुदशा विसारी॥
पुलक अंग अँगिया दरकानी। टूटे हार लिये निज पाणी॥
चीर चीर नख घात बनाई। यह मिसकरि उरहनलै आई॥
देखो महरि श्यामके ये गुन। ऐसे हाल किये सबके उन॥
चोली चीर हार दिखराये। टेर करत इतको भजि आये॥
और बात इक सुनहु न माई। ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई॥
बिना वसन हम न्हाति जहां सब। मीजत पीठ जाय पाछे तब॥
और कहत तुमसों सकुचावैं। उर उघारिके तुमहिं दिखावैं॥
महरि विचारत कहत कहा सब। भयो श्याम यहि लायक धौं कब॥
सुनि युवतिनके मुख यह बानी। बोली विहँसि नंदकी रानी॥
बात कहौ सो जो निबहैरी। बिनाभीत नहिं चित्र लहैरी॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति। चोरी रही छिनारो लावति॥

दोहा—तुम चाहति हो गगनते, गहन तरैया[3] वाम[4]॥
सो कैसे करि पाइहौ, तुम लायक नहिं श्याम॥

सो०—मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहिहौं कहा॥
वृथा फिरत अठिलात, मष्ट[5] करौ सुनिहै जगत॥

१ नंगी। २ स्त्री। ३ आकाशसे। ४ स्त्री। ५ चुप।

यहि अन्तर हरि आय गये घर । शीश मुकुट लीन्हें मुरलीकर ॥
अति कोमल तनु भूपण सोहैं । बाल भेष देखत मनमोहैं ॥
जननी बोलि बांह गहि लीनी । कहत सबनिसों रिस रसभीनी ॥
देखहुरी तुम सब इत आवो । इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नाहिं आवत । इनहींके नख उरन दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहि सुत बारो । तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि युवति भईं भोरी । कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी॥
देन उरहनो तुमको आई । नीकी पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई । देखहुरी यह भाव कन्हाई ॥
यमुना तीर मिले जब आई । कहां गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसेको जानै । और करत औरही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई । ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दोहा—देखि चरित नँदलालके, भईं बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी और ॥

सो०—सकुचीं बहुरि सँभारि, विवश देखि अपनी दशा ॥
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिके ॥

गईं घरन ब्रज गोपकुमारी । चित हरिलीन्हों मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घर माहीं । धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नाहिं मानो । गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोपकुमारी । गईं यमुनतट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनंदन । मोर मुकुट शोभिततनुचंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला । पीतवसनदृगकमल विशाला ॥
दरश देखि अँखियां तृपतानी । भईं सुखी उर तपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली । यमुना निकट गये वनमाली ॥
कौन भांति करि आज अन्हैबो । बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम बसन उतारैं । कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
भीजत पीठ औचकही आई । वसन अभूपण लै भजिजाई ॥

१ दोष । २ हृदय । ३ नेत्रकमल । ४ दस हुई ।

कहौ फेरि कैसे तब पावैं। अब नाहिं कान्ह बाट पै आवै॥
दोहा-कहत सकुचकी वात सब, ऊपर मन आनंद॥
अन्तर¹गतिके वृत्त²को, जानत सब नँदनंद॥
सो०-जानी जाननराय, लाजान्तर युवती³ करत॥
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें॥
और बात यक श्याम विचारी। ये जल भीतर न्हात उघारी॥
जो तिय जलमें नांगी न्हाई। ताको दोष होत अधिकाई॥
ताको दोष नाश तब पावै। नाँगी परपति सम्मुख आवै॥
सो इनको यह दूषण टारौं। और लाज अन्तर निरवारौं॥
करौं आज इनसों विधिसोई। इनको हित मम कौतुक होई॥
जो कछु चूक दासते होई। आप सुधारि लेत हरि सोई॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै। भजै निरंतर जब हरिपाव॥
अन्तर रहित भक्ति हरि प्यारी। कहत वेद सब सन्त पुकारी॥
तब हरि मन यह कियो विचारा। इनके बसनहरौं इक बारा॥
प्रभु सबको तब दृष्टि बचाई। कदम वृक्ष चढि रहे लुकाई॥
जब गोपिन् हरि देख्यो नाहीं। चकित विलोकी इत उत माहीं॥
जाने सदन⁴ गये नँदलाला। न्हान चली तब सब ब्रजबाला॥
दोहा-धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर॥
नग्न⁵ होय स्नान हित, पैठीं यमुना नीर॥
सो०-ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति स्नान सब॥
मुख छवि कही न जाहिं, कनक कंज⁶ फूले मनहुँ॥
बार बार बूड़त जलमाहीं। प्रेम सहित मन मुदित नहांहीं॥
शिवसों विनती करत निहोरी। कबहूं रविवँन्दैं⁷ कर जोरी॥
यहै कामना करि सब ध्यावैं। नँद नन्दनको पति करि पावैं॥
कामातुर सब गोपकुमारी। धरैं ध्यान उरकुंजविहारी॥
मूंदहिं नयन दरश चितलावैं। शब्द विचार श्रवण सुखपावैं॥

१ भीतरकी। २ वृत्तांत। ३ स्त्री। ४ घर। ५ नंगी। ६ सुवर्णके कमल। ७ सूर्य।

भुज जोरत अंकमें हितलागी । मगन प्रेमरस तिय बड़भागी ॥
प्रभ अन्तर्यामी सबजानैं । देखैं कदमचढ़े सुखमानैं ॥
कहत धन्यधनि ब्रजकी बाला । मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी । क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै । मोहिं विरदराखे बनिआवै ॥
कियो बहुत श्रम ममहित कारण । अब इनको दुखकरों निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा । उतरे तरुते श्रीबलवीरा ॥

दोहा-प्रेम मगन युवती सबै, रहीं ध्यान मन लाय ॥
हरि सब भूषण वसन लै, चढे कदमपर जाय ॥
सो०-भूषण बसन अपार, सोरह सहस वधूनके ॥
हरे एकही बार, लै राखे तरु नीपपर ॥

कर्‌यो नीपतरु अति बिस्तारा । फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
लैलै बसन डार अटकाये । जहां तहां भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पाट्टाम्बर सारी । श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥
जहां तहां शाखन प्रतिसोहैं । देखत छबि बसन्त मनमोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई । बैठे छबिकी राशि कंन्हाई ॥
युवती सुकृति तरुण धरिमानो । पर्‌यो सुकृति पूरण फलजानो ॥
देखत कदम चढ़े नँदलाला । बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं । तब जलबाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकरि आयतट देख्यो । भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो ॥
इत उत चितै चकित भईं भारी । सकुचिगईं फिर जल सुकुमारी ॥
नाभि प्रयन्त नीरमें ठाढी । भुजलगाय उर चिन्ता बाढी ॥
कंपत शीतमें अति अकुलानी । बार बार कहि कहि पछितानी ॥

दोहा-ऐसो को भूषण वसन, सबके एकहि बार ॥
तटते लये चुरायके, लगी न नेक अवॉर ॥
सो०-हम जानत यह बात, अम्बर हरि हर लेगये ॥

---

१ गोद । २ भक्तकी पीडा । ३ कदम्बका वृक्ष । ४ वस्त्र । ५ बिलम्ब । ६ वस्त्र ।

और कौनको गात, जो ब्रजमें ढीठो करै ॥

दीन होय तब युवति पुकारी । हौ कहुँ श्याम जाहिं बलिहारी ॥
दरश दिखाय विनय सुनि लीजै । अम्बर देहु कृपा अब कीजै ॥
थर थर काँपत अँग सुकुमारी । देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥
बोलि उठे तब मदन गोपाला । कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कतहौ जलमें मरत जड़ाई । लेहु बसन भूषण इत आई ॥
तुम पट भूषण सुरति बिसारी । तब मैं लै कीन्हों रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजै । रखवारी कछु हमको दीजै ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो । तब सबके मन धीरज आयो ॥
सुनि हरि वचन सकल हरषानी । लखे कदम ऊपर सुखदानी ॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातैं । बसन चुराय करैं ये घातैं ॥
हम सब जलके बीच उघारी । माँगत हैं हमसों रखवारी ॥
तब हँसि बोलीं ब्रजकी बाला । सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ॥

दोहा–तन मन धन अर्पों तुम्हैं, है जु तुम्हारे पास ॥
अब अम्बर दीजे हमैं, जानि आपनी दास ॥

सो०–तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तन मन मोको दियो ॥
लेहु बसन ह्यां आय, तौ मानो मेरो कह्यो ॥

सुनहु श्याम घन बात हमारी । नग्न कौन विधि आवें नारी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई । बिना बसन क्यों देह दिखाई ॥
यह मति आप कहां धौं पाई । आज सुनी यह बात नवाई ॥
पुरुष जात यह कहत न जानहु । हाहा ऐसो मन जनि आनहु ॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ । तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ ॥
जो तन मन दीन्हो तुम मोही । तौ राखत कित लज्जा द्रोही ॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ । मानि लेहु तुम मेरो भाखौ ॥
शीत सहतकत नवल किशोरी । लाज देहु जलहीमें बोरी ॥
जलते निकसि वेग इत आवो । हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥

१ वस्त्र । २ अर्पणकिया । ३ श्यामघनस्वरूप ।

ज्यों जलमें रविते कर जोरो । त्यों ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी । ऐसी बात न कहौ मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाय तिहारे । पाप होत हैं जाड़न मारे ॥

दोहा–छांडि देहु यह टेक[१] हरि, बरु भूषण तुम लेहु ॥
शीत मरत हम नीरमें, बसन हमारे देहु ॥

सो०–दूषण होत अपार, जो तियअँग देखहि पुरुष ॥
ताते नंदकुमार, नारी नग्न न देखिय ॥

तुमको छोह होत नहिं राई । बड़े निठुर हौ कुँवर कन्हाई ॥
ऐसो करौ जो तुमको सोहै । आज तुह्मारी पटतर कोहै ॥
आजहिते हम दासि तिहारी । कैसे अंग दिखावहिं नारी ॥
अंग दिखाये भूषण पैहौ । नातर जलमें बैठी रैहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो । थोरे में मो भलो मनावो ॥
कत अंतर राखत हौ हम सों । बार बार मैं भाषत तुमसों ॥
लेहु आय अपने पटभूषण । यह लागै हमको सब दूषण ॥
मोहित तुम कीन्हो तप भारी । अब कत लज्जा करत हमारी ॥
मैं अन्तर्यामी सब जानी । करिहौं तुह्मरे मनकी मानी ॥
अब पूरण तप भयो तुह्मारो । अन्तर इतो दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी । सब युवती मनमें हर्षानी ॥
तब सबहिन यह बात विचारी । अबतो टेक परे बनवारी ॥

दोहा–कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ[४] छाँडत नाहिं ॥
बसन विना कैसे बनै, कौन भांति घरजाहिं ॥

सो०–चलौ[२] लीजिये चीर, इनहींको हठ राखिकै ॥
मनमोहन बलवीर, जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

यह बिचार जल बाहर आई । बैठि गई तट अतिहि लजाई ॥
बार बार हरि निकट बुलावैं[३] । त्यों त्यों अधिक लाज को पावैं ॥
कहत श्याम अम्बर अब दीजै । हाहा इतनो हठ नाहिं कीजै ॥

---

१ हठ । २ भलेही । ३ क्यों । ४ जिद ।

बहत समीर शीत अति भारो । मानैंगी उपकार तुह्मारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे । हम सबकी पति हाथ तुह्मारे ॥
कहत श्याम यह तजौ सयानी । छांडहु लाज करहु मम बानी ॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई । देहौं तुमको नन्द दुहाई ॥
आवहु सकल लाजको त्यागे । करहु शृँगार आय मो आगे ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी । करिहैं श्याम आपनी ठानी ॥
करकुच अंग ढांकि भईं ठाढी । बदन नवाय लाज अति बाढी ॥
गईं कदमतर हरिके पासा । कहति देहु अब हमको बासा ॥
हरि बोले यों बसन न पावो । हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥

दोहा—जो कहिहौ करिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रज बाम ॥
लैहैं दांव हमहूं कबहुँ, सुनो श्याम अभिराम ॥

सो०—उभयँ कमल कर जोरि, सलज सहास निहारि हरि ॥
मांगत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु ॥

लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई । रीझे भक्तनके सुखदाई ॥
धन्य धन्य बोले गोपाला । निश्चय प्रीति करी तुम बाला ॥
देखि निरन्तर गोप कुमारी । दीन्हे बसन अभूषण डारी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं । प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं ॥
तब हँसि बोले कुंजबिहारी । मैं पति तुम मेरीं सब प्यारी ॥
अन्तर शोच दूरि करि डारो । मेरो क्ह्यो सत्य उर धारो ॥
शरद रात तुम आश पुरैहौं । अंकम भरि सबको उर लैहौं ॥
अब तप करि तुम मत तनुगारो । मैं तुमते क्षण होत न न्यारो ॥
करसों परश सबन सुख दीन्हो । बिरह ताप तनुको हरि लीन्हो ॥
बिदा करी हँसि नँदके लाला । निज निज सदन गईं ब्रजबाला ॥
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो । मन मन कहति कृष्ण बर पायो ॥
ब्रजबासी जनके सुखदाई । आये अपने सदन कन्हाई ॥

दोहा—इहि विधि ब्रज सुन्दरिनको, हित करि सुंदरश्याम ॥

---

१ पवन । २ लाज । ३ स्तन । ४ दोनों । ५ घबडाकर । ६ घर ।

ब्रजविलास बिलसत विविध, सकल लोक अभिराम ॥
सो०—सुंदर घन सुखरास, सब विधि करि सबके सुखद ॥
नित नव करत विलास, मुदित सकल ब्रज लोग लखि ॥

अथ वृन्दावन वर्णन लीला ॥

हरि लखि मातपिता सुख पावैं । बाल भाव बहु लाड लडावैं ॥
नवलकिशोर शुभगतनु श्यामा । निरखत मुदित सकल ब्रजबामा ॥
ग्वाल बाल सब समकरि जानैं । सखा प्राण प्रीतम करि मानैं ॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं । क्रीडा करैं बिबिधं ब्रजमाहीं ॥
इकदिन सोवत सदन कृपाला । आये द्वार बुलावन ग्वाला ॥
चलहु श्याम बन धेनु चरावन । यह सुनि जननी लगी जगावन ॥
उठहु: तात: मैया बलि जाई । टेरत ग्वाल बाल बल भाई ॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ । दँतवन करि कछु करहु कलेऊ ॥
भई बेर बनको नँदलाला । अब मति सोवहु मदनगोपाला ॥
देखनको: छबि अति अतुराई । सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवतते हरि जागत नाहीं । सुनत बात आलसं मन माहीं ॥
कबहूं वसन ढांपि मुख सोवैं । कबहुँ उघारि जननि तनु जोवैं ॥
खोलत नयन पलक झुकि आवैं । सो छबि निरखि मातु सुख पावैं ॥

दोहा०—उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ॥
पटगहि पुनि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥
सो०—कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ॥
बनको भई अबारं, गईं गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई । यशुमति जल झारी भरिलाई ॥
दुहुं भैयन करवाय मुखारी । पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे । एक थार दोउ सुतै बैठारे ॥
दधि, माखन रोटी अरु मेवा । करत मात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा । दृगं सुख लूटत महरि यशोदा ॥

१ नानाप्रकार । २ गौ । ३ आलस्य । ४ बिलम्ब । ५ बेरा । ६ नेत्र ।

मात भेमते अति तृपताई । अँचवन कर जु उठे दोउ भाई ॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला । बन कहँ वेगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया । आगे निकसि गईं हैं गैया ॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराई । कछु अँचयो कछुनाहिं दोउ भाई॥
मुरली मुकुट लकुटै पट लीन्हो । निकसि दौरि बनहीं मन दीन्हो ॥
केतिक दूरि गईं चलि गैया । ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कछु बन पहुँची ह्वैहैं जाई । कछु मग मिलिहैं कुँवर कन्हाई ॥

दोहा—वन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय ॥
कहत सबन सों जात कित, हमहूं पहुँचे आय ॥
सो०—तुम आये अतुराय, जेंवत पर लखिके हमैं ॥
तुम सँग रहत वड़ाय, अब हम दूरि चरायहैं ॥

यह सुनि सखा धाय सब आये। हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुमहौ सबहिनके सुखदाई । हमको तजि मति जाहु कन्हाई ॥
आज कुमुद बन चलहु चरावन । शीतल सुखदसघन अति पावन॥
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई । नीकी कही बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो । एक ठौर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत। लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि रौती कबरी । पियरी गोरी गैनी कजरी ॥
खैरी फुलही रौंची चौरी । धूरी हमरी मुंडी भौरी ॥
लीली कपिली सुवरन जेती । लाखी निकही रतनी तेती ॥
ऐसे सुरभी टेरि बुलाई । सब मिलि चले कुमुद बन धाई ॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू । नंद रिसैहैं अरु यशुदाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई । बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥

दोहा—कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुद बन जाय ॥
बुरो मानि हैं नंद सुनि, और यशोदा माय ॥
सो०—लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ॥
सुरभी चरत अघाय, वंशीवट यमुना निकट ॥

१ दसइई । २ लठिया । ३ कमोरवन । ४ जो । ५ लम । ६ पेटभरकर ।

यह कहि श्याम चले अगुवाई । फेरी गाय ग्वाल सब धाई ॥
वृन्दावनहिं चले मनमोहन । हर्षित सखा वृन्द तब गोहन ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । पहुंचे वृन्दावन बनवारी ॥
सुरभीगण चहुंदिशि बगराई । कहत सखा सब हर्ष बढ़ाई ॥
जादिन अर्घ हति श्यान सिधाये । ता दिनते या वन अब आये ॥
देखत वन सब भये सुखारी । बहत मनोहर त्रिविधं बयारी ॥
विटपनंकी शोभा चित दीन्हे । देखत श्याम सखन सँग लीन्हे ॥
नव किसलयदल सुमन सुहाये । मनहुं बसन्त शृंगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी । फलके भार रहीं नवडारी ॥
मनहुं देखि, श्यामहि सुखपाई । देत भेंट तरु शीश नवाई ॥
सुमन भँवर गुंजत छवि पावें । स्तुति मनहुं मधुर सुर गावें ॥
एक पांव ठाढे सब आगे । जहँ तहँ थकित मनहुं अनुरागे ॥

दोहा—बल्लि विविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहुरंग ॥
शोभितसहित शृंगार जिमि, नारि पतिनके संग ॥

सो०—हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहु ॥
आनंद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुं ॥

कुंज पुंज मंजुल सुखदाई । शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥
हरि विश्राम हेतु वन जानो । रचे विचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल खगँ बहुरङ्गा । कीर कपोत कोकिला भृंगा ॥
मनहुं भेरि सब आनंद गावैं । जहँ तहँ बरही नृत्य दिखावें ॥
तरुदल खरक पवन गति साजें । मधुर सुरन बाजन ज्यों बाजें ॥
क्रीडत मर्कट शुभगतिलीने । करत कला ज्यों नट परवीने ॥
मृग गण चितवत आनँद बाढ़े । मनहुं तमाशगीर सब ठाढ़े ॥
पाय श्याम घनहित बनराई । करी मनहुं आनंद बधाई ॥
वनशोभा कछु बरणि न जाई । ऋतु वसंत जहँ रहत सदाई ॥

१ अघासुर । २ शीतल मंद सुगंध । ३ वृक्ष । ४ नवीन पत्र । ५ हृदय । ६ पक्षी ।

जहां स्वभाव काल गुण नाहीं। बैरभाव नहिं खग मृग माहीं॥
सदा एकरस परम प्रकाशी। परमसुखद आनँदकी राशी॥
चिन्तामणि सब भमि सुहावन। कोमल विमल शुभग अति पावन॥

दोहा–शोभा वृन्दा विपिनकी, बरणि सकै अस कौन॥
शेष महेश गणेश विधि, पार न पावत तौन॥

सो०–महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामको॥
जहँ नित रहत विहार, पारब्रह्म भगवान हरि॥

देखि श्याम वन भये सुखारी। बैठे तरुतर विपिन विहारी॥
वृन्दावनकी करत बड़ाई। बलदाऊ सों कहत कन्हाई॥
मैं यह वन देखत सुख पावत। वृन्दावनमोको अति भावत॥
कामधेनु सुरतरु बिसरावत। रमा सहित वैकुंठ भुलावत॥
यह यमुना तट यह बन यावत। ये सुरभी अति सुखद सुहावत॥
यहसुख त्रिभुवनकितहुँनपावत। ताते मैं तनु धरि इत आवत॥
दाऊजू तुम सचकर मानौं। यह वृन्दावन जडमति जानौं॥
चितवनमें आनँदकी रासा। प्रेम भक्तिको यहां निवासा॥
परमधाम मम परम सुहावन। पावनहूंते पावन पावन॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं। कल्पवृक्ष तिनकी सरि नाहीं॥
कल्पवृक्षके तरु जब जाई। तब मांगे वांछित फल पाई॥
वृन्दावन तरु चितत जोई। प्रेम भक्ति मम पावत सोई॥

दोहा–जाके वशमें रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग॥
प्रेम भक्तिसो लहत नर, वृन्दावन अनुराग॥

सो०–श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीवृन्दावनकोमहत॥
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके वचन वर॥

सखा वृन्द सुनि श्रीमुख बानी। प्रेम मगन तनु दशा भुलानी॥
चितवतहरिमुखपलकविसारी। जिमि चकोर गण शशिहि निहारी॥

१ नाग। २ असख्य। ३ लक्ष्मी। ४ माहात्म्य। ५ चन्द्रमा।

कहतचकितसबअतिसुखपावत । निज लीला हरि प्रगट जनावत ॥
पुनि पुनिपुलक कहत शिरनाई । सुनहु श्यामघन कुँवर कन्हाई ॥
बार बार तुमको कर जोरैं । हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं ॥
जहां जहां तुम तनुधरि आवो । तहां तहां जनि चरण छुड़ावो ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया । ब्रजते तुम्हैं न टारौं भैया ॥
तुम मेरे मनको अति भावत । तुमते मैं बहुतै सुख पावत ॥
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँ नाहीं । तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं ॥
मैं तुम हेतु देह यह धारी । तुमते ब्रजलीला विस्तारी ॥
है यह ब्रज मोको अति प्यारो । ताते कबहूं होत न न्यारो ॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं । गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ॥

दोहा–मधुर वचन सुनि श्यामके, सखा वृन्द सुखपाय ॥
प्रेम पुलकि तनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाय ॥

सो०–धनि धनि धनि तुम श्याम, धनि ब्रज धनि वृंदा विपन॥
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अँज्ञ न जानहीं ॥

सुनहु श्याम घन नंददुलारे । तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे ॥
दुर्लभ यह हरि संग तुम्हारो । कबधौं फेरि गोप तनु धारो ॥
नाजानिये बहुरि ब्रजनाथा । कब तुम फिरिहौ सुर मुनि साथा ॥
कब तुम छाक छीनिकैखैहो । कबधौं फिरि ऐसे सुख दैहौ ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी । अब इक विनती सुनहु हमारी ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावो । अधरसुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह दिवावैं । मुरली धुनि सुनि हम सुखपावैं ॥
तुह्मरे मुख यह बाजतनीकी । हम सबकी जीवन है ज्ञीकी ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी । प्रेम सुधारस सों लपटानी ॥
गुण गम्भीर गोपाल कृपाला । भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई । चितये कमल नयन समुदाई ॥
करते लकुट निकट धरि दीन्हों । पाछे मुरलीको गहिलीन्हों ॥

१ फैलाई । छिपीहुई । ३ मिष्ट । ४ अज्ञान । ५ अमृतरस ।

दोहा–पकरि दुहूं कर अधर धर, मधुर मुरलि धुनिगान ॥
मोहि लियो चर अचरनभं, जल थल श्यामसुजान ॥
सो०–भई थकित गति पौन, यमुना जल लीन्हो शयन ॥
ह्वै गये खग मृग मौन, रहे जहां तहँ चित्रसे ॥
उपजावत गावत गति सुन्दर । राग रागिनी ताल विविधवर ॥
सखा वृन्द सुनि तन मन वारैं । निरखत मुख छबि पलकविसारैं ॥
चलत नयन भ्रुकुटी पुट नासा । करपल्लव मुरली सुरश्वासा ॥
मानहुँ निरतक भाव बतावैं । शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलैक वदन छबि देई । मनहुँ कमल रस अलिगण लेई ॥
कुंडल झलक कपोलन माहीं । मनहु सुधारस मकर भ्रमाही ॥
दशनदमकमोतिन लर ग्रीवां । मनहु सकल शोभाकी सीवां ॥
तिलक बिचित्र भालछबि छाजै । मनहु महा छबि दशन बिराजै ॥
चमकत मोर चंद्रिका चारू । मनहु सकल शृंगार शृंगारू ॥
श्याम गात उर गजमणि माला । सँग शोभित बनमाल विशाला ॥
मरकत गिरि मनो सुरसरिधारा । बैठी पंगति कीर किनारा ॥
कटि पटपीत तडित दुति हारी । पद पंकज नूपुर रुचिकारी ॥
दोहा–ग्रीवा लटकनमुरकि पर, शोभित छबिसमुदाय ॥
प्रेम मगन निरखत मुदित, गोप बाल सुखपाय ॥
सो०–सुन्दर श्याम सुजान, देत परम सुख सखनको ॥
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब ॥
रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा । लेत मुरलिमें सबको नामा ॥
हँसत ग्वाल सब दैकरें ताला । लेत हमारो नाम गोपाला ॥
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो । ऐसे हमको गाय सुनावो ॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हो । अधरँनधर अमृत रस लीन्हो ॥
लैलै निज कर सकल बजावत । हरिके स्वरको रूप न पावत ॥

१ आकाश । २ घूंघरवाली । ३ जुल्फ । ४ होठ ।

आस पास सोहत सब बालक । मधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक ॥
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं । सब मिलि प्रेमानंद बढ़ावैं ॥
जैसे श्रीमुरलीधर गायो । काहू पै सो रूप न आयो ॥
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई । हरिकी सम को सकै बजाई ॥
चतुरानन[1] पंचानन[2] ध्यावैं । सहसानन नवनित गुण गावैं ॥
सुरनर मुनि कोउ पार न पावैं । सो ग्वालन सँग वेणु बजावैं ॥
ब्रजवासी जनको प्रतिपाला । भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥

दोहा—कारण करण अनंत गुण, निगम नेत जिहि गाव ॥
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्तिप्रभाव ॥

सो०—वृन्दावन की रेनु[3], ब्रह्मादिक वांछित सदा ॥
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालनसँगचारत सुरभि ॥

अथ द्विजपत्नीयाचन लीला वर्णन ॥

विहरत वृन्दावन बनवारी । विविध भांति लीला अनुसारी ॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं । कबहूं मुरली मधुर बजावैं ॥
कबहूं गैयन घेरत धाई । कबहूं यमुनाके तट जाई ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । देत दिवावत रसकी गारी ॥
ऐसे लीला करत अपारा । भये क्षुधारत[4] गोपकुमारा ॥
कहत भये तब हरिसों जाई । हमको क्षुधा लगी अधिकाई ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी । अपने मन यह बात विचारी ॥
सुनि सुनि मेरे गुण गण गाना । करत रहत द्विजतिय मन ध्याना ॥
तिनको दरशन आज दिखाऊं । तिनके मनकी ताप नशाऊं ॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई । यज्ञ करत ह्यां द्विजसमुदाई ॥
तिनके निकट जाउ तुम भाई । प्रथम प्रणाम कीजियो जाई ॥
कहियो हमको कृष्ण पठायो । तुमपै भोजन मांगन आयो ॥

दोहा—यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्र[5] समुदाय ॥

---

१ ब्रह्मा । २ महादेव । ३ रज । ४ भूखे । ५ ब्राह्मण ।

यज्ञ करत अहंमित[1] लिये, विद्याको वल पाय ॥

सो०–ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर जोरिकै ॥
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥

वनमें राम कृष्ण दोउ भैया । आये इतहि चरावन गैया ॥
वे कछु आज भयेहैं भूखे । यह सुनि विप्र ह्वैगये रूखे ॥
कह्यो यज्ञहित करी रसोई । अहिरन पहिले देय न कोई ॥
यह सुनि ग्वाल सकल फिरि आये । हरिसों तिनके वचन सुनाये॥
सुनि हलधरतनचितै कन्हाई । बोले वचन मन्द मुसुकाई ॥
येद्विज धर्म कर्म लपटाने । विना भक्ति मोको नहिं जानै ॥
तव ग्वालनसों कह्यो मुरारी । जाउ जहां इनकी सब नारी[2] ॥
उनको है दृढ़ भक्ति हमारी । वे मानैंगी कहो तुम्हारी ॥
उनसों भोजन मांगहु जाई । कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तव द्विज नारिन ढिग ये आये । हाथ जोरि तिनके शिर नाये ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया । वनमें भूखेहैं दोउ भैया ॥
मांग्योहै कछु भोजन तुमसों । आज्ञा देहु सो कहिये उनसों ॥

दोहा–ग्वालनके सुनि वचन सव, हर्षि उठीं द्विजवाम ॥
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजन मांग्यो श्याम ॥

सो०–करत रहीं नित ध्यान, सुनि सुनि जिनके गुण श्रवण ॥
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं ॥

षटरसके व्यंजन विधि नाना । कोमल भांति अमित[3] पकवाना ॥
खीर खांड सिखरन दधि न्यारो । माखन लियो श्यामको प्यारो ॥
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा । प्रेम सहित लीन्हे भरि थारा ॥
बहुते ग्वालनके करँदीने[4] । बहुते अपने शिर धरि लीने ॥
नयनन दरश लालसा[5] बाढी । उपजी चाह हृदय अति गाढी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी । देखनको प्रभु गोप विहारी ॥
ग्वालन सों पूंछत यह बाता । कितहैं हरि जनके सुखदाता ॥

---

१ अहंकार । २ स्त्रियां । ३ असंख्य । ४ हाथमें । ५ इच्छा ।

जिनके पुरुष हते घरमाहीं । तिनको जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई । लोकलाज तनु दशा भुलाई ॥
तिनसों कहत भई ते नारी । हमको श्रीगोपाल हँकारी ॥
भोजन मांग्यो है हम पाहीं । तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं ॥
तिनको दरश देखि सुख पैहैं । बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं ॥
दोहा–यह सुनि पति अति क्रोध करि, तिनहिं दिखायो त्रास[1]॥
कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अवास[2] ॥
सो०–जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ॥
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोके रुकहिं ॥
हरिपै हमैं जान पिय देहू । कहारोकि अपयश शिर लेहू ॥
देखन देहु नंदके लालहि । त्रिभुवनपति प्रभु मदनगोपालहि॥
इतनी बात मानि पियलीजै । हा हा हमैं दान यह दीजै ॥
वेहैं यज्ञ पुरुष भगवाना । अन्तरयामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं बिसारी । कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँ लगि कहौं बात समुझाई । जात दरशकी अवधि बिहाई ॥
जोतुम स्वामी जानत नाहीं । तो हम सत्य कहैं तुम पाहीं ॥
मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि । करिहौ कहा रोकिकै खोलहि ॥
लेहुसँभारि देह यह सारी । जासों पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जंजालहि । मिलिहैं प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नाहिं श्याम सनेहा । तौ यह कौन काज की देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई । देखौंगी छँबि कुवर कन्हाई ॥
दोहा–ऐसे देह[3]अरु गेह तजि, पतिकी कानि[4] निवारि ॥
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी ब्रजनारि ॥
सो०–कठिन प्रेमको पंथ[6], तहां नेमको[5] गमनहीं ॥
कहत सकल सद्ग्रंथ, जहां नेम तहँ प्रेम नाहिं ॥

---
१ भय । २ घर । ३ शरीर । ४ शोभा । ५ मर्यादा । ६ मार्ग ।

ऐसे भोजनलै द्विज बाला। पहुँची बन जहँ मोहन लाला॥
नटवर भेष चित्र तनु कीने। ठाढे सखा संग भुजदीने॥
मोर मुकुट वैंजन्ती माला। करमुरली दृग कमल बिशाला॥
कुंण्डल अलक तिलक झल कांहीं। कोटिकामछबि पटतर नाहीं॥
मुख मृदु हँसिनि लसनि पटपीरो। निरखत नयन ताप भयो सीरो॥
भोजन लै हरि आगे राखे। अपने भाग्य धन्य करि भाखे॥
तिन्हैं देखि हरि मन सुख मान्यो। वचनन करि तिनको सन्मान्यो॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई। गृहपति तजि तुम कित इत आई॥
कहियत विप्र वेद अधिकारी। हौ तिनकी तुम पतिव्रतनारी॥
वे सब यज्ञ करत बन माहीं। तुमबिन यज्ञ होय है नाहीं॥
यह तुम कछू भलो नहिं कीन्हो। पतिको कह्यो मानि नहिं लीन्हो॥
पति आयसु तिय पालै जोई। चारि पदारथ पावै सोई॥

दोहा–पति देवता सुतीय कहँ, वेद वचन परमान॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जियजान॥
सो०–सुनिहरि वचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद॥
द्विज तिय परम सुजान, बोलीं सबकर जोरिकै॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी। तुमहीं सकल जगतके स्वामी॥
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा। तुमही सबके पूरण कामा॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं। तुमते चारि पदारथ पावैं॥
सकल धर्म ते शरण तुह्मारे। है सब जीवनको सुखकारी॥
यह हम सुनी पतिन मुख बानी। कहत वेद इतिहास बखानी॥
ताते शरण तुह्मारी आई। यह दूषण नाहिं हमैं गुसाई॥
तव मायावश सकल भुलाने। ताते पतिन न तुम पहिचाने॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै। हमको शरण आपनी दीजै॥
चारि पदारथहू ते भारो। है प्रभुदरशन शरण तुह्मारो॥
ताते नहीं निरादार कीजे। अपने चरण शरण रख लीजै॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की बानी। भये प्रसन्न भक्तसुखदानी॥

---

१ नेत्रकमल। २ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो । हितकरि तिनको भोजनराख्यो ॥

दोहा–दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु ॥
ह्वैहें तुह्मरे दरशते, शुद्ध तुह्मारे नाहु ॥

सो०–हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति वरदान वर ॥
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतियसदन ॥

नंद नन्दनकी करत बड़ाई । द्विजपत्नी सब घरको आई ॥
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई । भये पुनीत बिमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी । आप कहत हम अति अज्ञानी ॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हो । तिन मांग्यो भोजन नहि दीन्हो ॥
हम विद्या अभिमानै भुलाने । अविगतिकी गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभुजन सुखदाई । भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यों नाहीं । बारबार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशयँ बड़भागी । कृष्णचरण पङ्कज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको । देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहु विधि तियन सराही । आदर करि लीन्ही घरमाहीं ॥
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावैं । सो नर नारि अभयपद पावैं ॥
नरनारी कछु नाहि विचारा । प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥

दोहा–भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचि सों प्रीति समेत ॥

सो०–ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ॥
छीनि छीनिके कौरँ, करत परस्पर हासरस ॥

अति हित भोजन तहँ हरि कीनो । सखा वृन्दको अति सुख दीनो ॥
वनमें फिरत चरावत गैयां । बैठे आय कदमकी छैयां ॥
भये सखा सिगरे इकठाहीं । गैयां बगर रहीं बनमाहीं ॥
दुपहर घाम जान मनमाहीं । लागे चलन सघन बनछाहीं ॥
बैठे ग्वालबाल चहुँ उरियां । आगे धरीं दूधकी घरियां ॥

१ पति । २ आज्ञा । ३ अहंकार । ४ अत्यन्त । ५ कृपानिधान । ६ ग्रास ।

मध्य श्याम सुन्दर नँदनन्दा। उडुगणमें जिमि पूरणचन्दा॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे। कोटि कामकी छबिको आछे॥
कबहूं मुरली मधुर बजावैं। कबहुँ सखन मिलि सारँग गावैं॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं। कोऊ टटकारी उच्चरहीं॥
करत केलि ऐसे बन माहीं। देखि देखि सुरवृन्द सिहाहीं॥
कोऊ ताल बजावत नीके। उपजावत कोउ आनँद जीके॥
कहत धन्य ये ब्रजकी बाला। विहरत जिन सँग कृष्ण कृपाला॥
दोहा०-धन्य विटप धनिभूमियह, धनि वृन्दावन चन्द॥
धनि ब्रज कहि वर्षैं सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द॥
सो०-मन मन देव सिहाहिं, वन विहार हरिको निरखि॥
श्रीवृन्दावन माहिं, हम न भये द्रुमलता तृण॥
श्रीदामा तब कह्यो बुझाई। खेलहिंमें सब रहे भुलाई॥
गैयां कितहिं चरति को जाने। यह सुनिकै सब खेल भुलाने॥
जित तित हेरनैको उठि धाये। गैयां जाय घेरि लै आये॥
जे सुरभी आईं नहिं जानी। चरत सघन वन मांझ समानी॥
तिनको तरु चढि कान्ह बुलाई। मुरली टेर सुनत उठि धाई॥
ऐसी गैयां श्याम सधाई। मुरली सुनि सब हरिपै आई॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं। हूंहू करि सब हरिपै आवैं॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन। पीतांबर सों झारत छोहन॥
करत प्यार तिनपर बनमाली। हस्तकमल की सब प्रतिपाली॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं। तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं॥
जब हरि गैयन करसों परसैं। लखि लखि कामधेनु मन तरसैं॥
कहत कहा जो कामद कीनो। हमको विधि ब्रज जन्म न दीना॥
दोहा०-धनि २ ब्रजकोधेनुये, चारत त्रिभुवन नाथ॥
झारत पोंछत दुहत नित, हितकरि अपने हाथ॥
सो०-मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रजधेनु लखि॥

१ तारागण। २ वृक्ष। ३ फूल। ४ पेड। ५ ढूंढनेको। ६ रंजी।

हम न भई ब्रज माहिं, हरिपद पंकज परसती ॥

ऐसी लीला करत अनेका। बनमें ललित एकते एका ॥
वृन्दावन सब दिवस बितायो। संध्या समय निकट जब आयो ॥
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू। गैयां सब आगे करि लेहू ॥
पहुँची सांझ आय नियराई। बनमें करहु अबेर न भाई ॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई। भली बात यह कही कन्हाई ॥
बनते निकरि चले सब ग्वाला। ब्रज आवत नटबर गोपाला ॥
सुरभी वृन्द गोप बालक सँग। अति आनँद गावत नाना रँग ॥
अधरेऽनूप मुरलि सुर कौरी। ऊँचे सुरन बजावत गौरी ॥
सुन्दर श्रवण सुनत ब्रज धाई। गृहकारजतियें तजि सब आई ॥
कहत परस्पर मोहन आवत। देखि देखि छबि अति सुख पावत ॥
पूरण कला उदित शशि जैसे। कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसे ॥
नयन चकोर रहे टकलाई। दिवस बिरहको ताप नशाई ॥

दो०—प्रेममगन आनँद अति, कहत सकल ब्रज वाम ॥
देखहु सखि यशुमति सुवँन, शोभित अति अभिराम ॥

सो०—श्यामल तनु पटपीत; जलजमाल बरँही मुकुट ॥
लई मनों इन जीत, घनदामिनिवग धनुषछबि ॥

भृकुटि विकट दृग चंचलताई। अति छबि देति बरणि नहिं जाई ॥
धनुष देखि बिच खंजन जानों। उडन करत डरि उडत न मानो ॥
प्रफुलित नयन शरद अंबुजसे। मनोकुंडलि रबिकरके परसे ॥
गोपद रज पराग छबि छाई। तामधि अलि बैठ्यो जनु आई ॥
एक कहत देखहु वह शोभा। अति सुख देत लसत मन लोभा ॥
कमलबदन मुरली रस लेई। कुटिल अलक ऐसे छबि देई ॥
मानो अलिगण साजी सैना। सहि न सकत चाहत निजऐना ॥
अधर सुधा लगि अति दुखपाई। मुरली सों मनो करत लड़ाई ॥

१ दिन। २ होठ। ३ स्त्री। ४ चन्द्रमा। ५ पुत्र। ६ कमलमाला। ७ मोरमुकुट।

शोभितनासा परम सोहाई। तामें सखि उपमा यह पाई॥
मनहुं अनंग सहायक आयो। तिलप्रसून शर ताहि चलायो॥
सुनि यह युक्ति सकल हर्षाई। निरखत हरि मुख छबि सुखपाई॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी। आये ब्रज जन मन सुखकारी॥
दोहा—कहत मुदित मन युवतिजन, धनि धनि सखिवेमोर॥
जिनके पंखनको मुकुट, कीन्हों नंदकिशोर॥
सो०—धनि धनि सखि वे बांस, जाकी मुरलीअधरधरि॥
हरि पूरत निज सांस, कोपुनीत ताके सदृश॥
निज निज सदन गये सब ग्वाला। आये घर हलधर गोपाला॥
देखि दुहूं मातन सुख पायो। हरषि दुहुनको कण्ठ लगायो॥
काहे आज अबार लगाई। यह कहि बार बार बलि जाई॥
रोहिणि सों कह यशुमति मैया। भूखे व्हैहैं दोऊ भैया॥
मैं दोउनको देत न्हवाई। तुम भोजनको करहु चढाई॥
निकट लये मुरली कर लीन्ही। हरि करते लकुटी धरि दीन्ही॥
नीलाम्बर पीताम्बर लीन्हों। मुकुट उतारि श्याम तब दीन्हों॥
प्राण समान यशोमति जानी। धरयो सँभारि सदन नँदरानी॥
छोरति अंग भूषण महतारी। मुक्तमाल बनमाल उतारी॥
कटि किंकिणि अंगद भुज छोरै। निरखि गातै आनंदन औरै॥
पट लै दोउनके अंग झारे। उरलगाय लीन्हे अति प्यारे॥
तुम दोउ मेरे गाय चरैया। और न कोऊ टहल करैया॥
सुमनासुत अंगन परसाई। तपत तरणिको जल लै आई॥
दोहा—लीन्हें तुमहिं बिसाहिमैं, तब अति रहे नन्हाय॥
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूंठही माय॥
सो०—यह तो समझि न जाय, सांच झूंठकी बात कछु॥
यशुमति लेत बुलाय, मैं चोरी हँसि हँसि कहत॥

---

१ कामदेव। २ पवित्र। ३ विलम्ब। ४ बाजूबन्द। ५ देह। ६ फुलेल।

परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये । सरसबसनतनु पोंछि सुहाये ॥
षटरस भोजन जाय जिमाये । यशुमतिके सुख जाय न गाये ॥
शीतल जल कपूर रस रचयो । लैझारी दुहुँ भैयन अँचयो ॥
भोर भयो मुख धोय उठे जब । पीरे पान दये जननी तब ॥
बीरा खात मुदित दोउ भाई । ब्रजबासिन जूठनि सब पाई ॥
यशुमतिके सुख कौन गनावै । शारदहू कहि पार न पावै ॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माता । महिमा नहिं कहिसकै विधाता ॥
ब्रह्म सनातन हैं प्रभु जोई । जिनके पुत्र कहावत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी । तीनिलोक पति अन्तर्यामी ॥
विश्वम्भर निजनाम कहावैं । ताहि यशोमति माय खवावैं ॥
रात सुवावैं प्रात जगावैं । बालक ज्यों फुसलाय लड़ावै ॥

दोहा–रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठौ याम ॥
महरि महरके प्राणधन, मोहन सुंदरश्याम ॥
सो०–हरि क्षण विसरत नाहिं, ब्रजके नरनारी जिनहिं ॥
मगन प्रेम मन माहिं, निशिदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धनलीला ॥

कृष्ण प्रेम ब्रज लोग समाने । देव पितर सब लोक भुलाने ॥
कार्तिक शुदि परिवा जब होई । इंद्रहि पूजत ब्रज सब कोई ॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई । सबके मनमें ध्यान कन्हाई ॥
सो तिथि अति समीप जब आई । तब यशुमतिके उर सुधि आई ॥
कहत नंदसों नन्दकि रानी । सुरपति पूजा तुमहिं भुलानी ॥
जाकी कृपा बसत ब्रज माहीं । एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं ॥
जाकी कृपा दूध दधि गाई । सहस मथानी मथत सदाई ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये । जासु कृपा सब विघ्न नशाये ॥
भई सकल ब्रज मांझ बड़ाई । कुशल रहौ बलराम कन्हाई ॥
सुरपतिहैं कुलदेव हमारे । गोप गाय ब्रजके रखवारे ॥

---

१ माता । २ । ब्रह्मा । ३ संसारका भरण पोषण करनेवाले । ४ पहर

तिनकी तुम सब सुरति भुलाई। रहे दिवस पांचक अब आई॥
कहो सकल गोपनके राई। इन्द्र यज्ञकी करो चढ़ाई॥
दोहा–भलो दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरिसों नंद॥
भूलि गये हम देवको, काज मोहवश मंद॥
सो०–हाथ जोरि नंदराय, विनय करत सुररायसों॥
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु॥
तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये। श्रीवृषभानु सहित सब आये॥
सबको देखि नन्द सुख पायो। महरि महर कहि शीश नवायो॥
अति आदर सबहींको कीन्हों। सादर सबको बैठक दीन्हों॥
मनहीं मन सब शोध कराहीं। कंस कछू मांग्यो तौ नाहीं॥
राज अंश उनको जो होई। विन मांगे हम दीन्हो सोई॥
बूझत नंदहि सब सकुचाये। कौन काज हम सबन बुलाये॥
तबहि नन्द सबको समझायो। मैं तुमको यहि काज बुलायो॥
सुरपति पूजाके दिन आये। सो तुम सबहिन मिलि बिसराये॥
मैंहूं राज काज लपटानो। निशिदिन लोभहिं मांझ भुलानो॥
इन्द्र यज्ञकी सुरति भुलानी। अति समीप दिन पहुँचो आनी॥
ताते अब सब करो चढ़ाई। इन्द्रयज्ञ कीजे सुखदाई॥
इन्द्रहिको हम सदा मनावैं। तिनहीं ते व्रज जन सुख पावैं॥
दोहा–यह सुनि मन हर्षे सबै, देव काज जिय जान॥
हम सब भूले सुरतपतिहिं, मन लागे पछितान॥
सो०–भली करी नंदराय, तुम हमको दीन्हीं सुरति॥
सुरपतिको शिरनाय, क्षमा करावत पापसब॥
बिदा होय सब गोप सिधाये। घर घर बाजन लगे बधाये॥
पूजाकी विधि करत सबै मिलि। जिहि जिहि भांति सदा आई चलि॥
अमित भांति पकवान मिठाई। होत घरनि घर बरणि न जाई॥
नन्द महर घर बजत बधाई। गावत मंगल अति हर्षाई॥

---

१ याद। २ राजाका कर। ३ इन्द्र। ४ अनेक प्रकारका।

नेवेज करत यशोदा आतुर । आठौ सिद्धि घरहि अति चातुर ॥
मैदाके अनेक पकवाना । बेसनके बहु करत विधाना ॥
घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण । मिश्रीकरत पाकको चूरण ॥
विविध भांति पकवान मिठाई । कहँ लगि नाम कहौं सब गाई ॥
और नारि ब्रजकी सँग लागी । घृतपक करत सबै अनुरागी ॥
जहां तहां कहुँ चढ़ी कढाई । यशुमति सबन सराहत जाई ॥
जो सार्मो मांगति है जोई । रोहिणि ताहि देतिहै सोई ॥
महरि करति रचि और निहारे । धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे ॥

दोहा–सैंति सैंति अति नेमसों, धरतिअछूते जात ॥
श्याम कहूं परसैं नहीं, यह मनमाहिं डरात ॥

सो०–शंक करत मनमाँहि, सुरपति पुजा जानिजिय ॥
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनके देव हरि ॥

खेलत ते सन्तन सुखदाई । भीतर आये कुवँर कन्हाई ॥
जननी कहति इहां जनि आवै । लरिकनको यह देव डरावै ॥
रहे ठिठुकि आंगनहिं डराई । मनही मन हँसि कहत कन्हाई ॥
मैयारी मोहिं देव दिखैहै । इतनो भोजन वह सब खैहै ॥
यह सुनि खीझि कहतिहै मैया । ऐसी बात न कहौ कन्हैया ॥
जोरि जोरि कर देव मनावै । बालकको अपराध क्षमावै ॥
बाहर चले श्याम अनखाई । युवति कहैं हरि गये रिसाई ॥
जान देहु हरि अबहिं अयाने । देवकाज बालक कहँ जाने ॥
छुइहै कहूं श्याम यह भोजन । उनकी पूजा जानै को जन ॥
और नहीं हम काहू जानैं । कैसुरपति कै गोधन मानैं ॥
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं । राम श्यामकी कुशल मनावैं ॥
और देव नाहि तुमहि सरीशा । कंह नहि कृपा करी सुरईशा ॥

दोहा–ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति विधान ॥
द्वारे बैठे नंद जहँ, गये तहां को कान्ह ॥

---

१ नैवेद्य । २ सामिग्री । ३ विनाछुए । ४ समान ५ । रीतिभांति ।

सो०—जुरे नंद ढिग आय, ब्रजके जे उपनंद सब ॥
बैठे अति सुखपाय, करत बात विधि यज्ञकी ॥
दीप मालिका रचि रचि साजत। पुहुपै माल मण्डली बिराजत ॥
ढोल निशान बाजने बाजैं। मुदितै ग्वालगण जित तितराजैं ॥
गैयन चित्र बिचित्र बनावैं। अंगन आभूषण पहिरावैं ॥
सात बर्षके कुँवर कन्हाई। खेलत मन आनंद बढाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं। मंगल गान मुदितमन गावैं ॥
सथिया रचि पुनि थापहि हाथा। पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा ॥
मो आगे सुरपतिकी पूजा। मोते और देव को दूजा ॥
ब्रजवासी मोको नहिं जानैं। मो अच्छैत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटौं यज्ञ बिहाने। लीन्हो भाग बहुतदिन याने ॥
ब्रजबासिनपै आप पुजाऊं। गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं ॥
यह बिचार मनमें ठहराई। गये नन्द ढिग कुँवर कन्हाई ॥
हर्षि नन्द कनियां पाढाये। बदन चूमि उरसों लपटाये ॥
दो०—तब हरि बाल नंदसों, मधुर मन्द मुसकाय ॥
करत पुजाइ कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
सो०—कौन देव सो आहि, काहेको पूजत तिन्हैं ॥
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझायसब ॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई। इन्द्र सकल देवन को राई ॥
तिनको पूजत गोप सदाई। कुलमें यहै रीति चलि आई ॥
ताते तिन्हैं पूजियत ताता। जाते कुशल रहौ दोउ भ्राता ॥
यापूजाते सुरपति हरषै। है प्रसन्न तब जल वे बरषै ॥
तृण अनाज उपजत है जाते। गाय गोप सुख पावत ताते ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजै। जो गोधन धन कबहुँ न छीजै ॥
तब हरि कह्यो सुनो नँद ताता। ऐसे तुम ज कही यह बाता ॥
जहां इन्द्र पूजत नहिं प्राणी। तहां कहां बर्षत नहिं पानी ॥

१ उपनंद। २ फूलोंकीमाला। ३ प्रसन्न ४ स्त्री। ५ विद्यमानहोते। ६गोद।

जब हरि ऐसे बचन सुनायो । तब नन्दहिं उत्तर नहिं आयो ॥
सुनि हरिबचन रहे सकुचाई । मनहिं कहत चतुरई कन्हाई ॥
है बालक अबहीं अति नान्हा । देव कार्य कहँ जाने कान्हा ॥
तब चुचकार कह्यो नँदराई । सदन जाउ तुम कुँवर कन्हाई ॥
दो०-ऐसे मैं जिन जाहु कहुँ, भीड बडी है तात ॥
को जानै किहि भावको, कित धौं आवत जात ॥
सो०-सोय रहौ गोपाल, मेरेपलँगा जायतुम ॥
मैंहूं आवत लाल, पाछेते तुह्मरे निकट ॥
तब हरि मन इक बुद्धि उपाई । बैठे ओर महरि ढिगजाई ॥
तिनको हरि यों कहि समुझायो। आज मोहिं सपनो इक आयो ॥
पुरुष पुनीत एक अतिचारु । चार भुजा तनु शुभग शृंगारु ॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई । इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई ॥
मैं तुमको इक देव बताऊं । गिरि गोवर्द्धन प्रगट दिखाऊं ॥
यह पूजा तुम इनहिं चढ़ावो । जाते मुंह मांगे फल पावो ॥
तुम आगे भोजन वह खैहै । प्रगट आपनो रूप दिखैहै ॥
चार पदारथके ये दाता । अन धन गोधन केतिक बाता ॥
ऐसे देव छांडि घरमाहीं । तुम पूजत सुरपतिहिं वृथाहीं ॥
कोटि इन्द्र क्षणमें वे मारें । क्षणहीमें पुनि कोटिसँवारें ॥
गोवर्द्धन सम देव न दूजा । करहु जाय उनहीं की पूजा ॥
ताते मो मनमें यह आई । पूजहु गोवर्द्धन सब जाई ॥
दो०-चकित गोप सब वचनसुनि, कहत अकथ यहबात ॥
सुने न अबलों देव कहुँ, प्रगट होयके खात ॥
सो०-सुनी बातयह नंद, शोचत सब उपनंद मिलि ॥
कहा कहत नँदनंद, समझ परत नाहिं स्वप्न यह ॥
सुनि यह बात सबन ब्रजपाई । देख्यो ऐसो स्वप्न कन्हाई ॥
सुरपति पूजा देत मिटाई । गोवर्द्धनको करत बड़ाई ॥
कोऊ कहत कान्ह कहै सांचो । कोऊ कहै बात यह कांचो ॥
बालक जानै कहा पुजाई । कोऊ कहत कहै को भाई ॥

१ चतुर २ पास । ३ पवित्र । ४ सुंदर । ५ चकितहुये घने, अर्थ,कान, मोंसे

कोऊ इन्द्रहि कहत सकाने। हमतो कछु यह बात न जाने ॥
हलधर कहत सुनो व्रजबासी। को महिमा जानत अविनाशी ॥
इनको बालक करि मति जानो। जो हरि कह्यो सत्य करि मानो ॥
नन्द निकट जो, गोप सयाने। हरिको बलप्रताप सब जाने ॥
कहत नन्दसों ते सुखपाई। कीजै सोइ जो कहत कन्हाई ॥
कहत नन्द तब सबन सुनाई। मेरे हू मनमें यह आई ॥
हरिको स्वप्न झूंठ नाहिं होई। है प्रतीति मेरे मन सोई ॥
कालीको स्वप्नो हरि देखो। भयो प्रातही तासु विशेषो ॥
दो०–ताते सोई कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात ॥
सब व्रजवासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात ॥
सो०–यहै मंत्र ठहराय, बूझत हरिसों हरषि सब ॥
कहौ कान्ह समझाय, कौनभाँति गिरि पूजिये ॥
हर्षिकान्ह तब सबन बुलायो। इन्द्रयज्ञ हित तुम जु बनायो ॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई। सो सब शकटनलेहु भराई ॥
नाचत गावत सहित हुलासा। चलहु सकल गोवर्द्धन पासा ॥
तहां जाय गिरिवरहि मनाई। पूजहु बहु विधि मंगल गाई ॥
मांगि मांगि तुमसों गिरिखैहै। मुँहमांगे तुमको फलदैहै ॥
मेरोकह्यो सत्य तुमजानो। मेरो स्वप्न झूंठ मतिमानो ॥
यह परचो तुम आंखिन देखो। तबहिं मोहिं सांचो करिलेखो ॥
जो चाहो व्रजकी ठकुराई। तौ पूजो गोवर्द्धन राई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही। सबहिनबात मानि सो लीन्ही ॥
कहहिं परस्पर सब सुखपाई। चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई ॥
व्रज घरघर सबहोत कुलाहल। फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अंकम देलै। शकटनसाजत भोजन लैलै ॥
दो०–बहु व्यंजन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा विविध अमित भाँतिके शाक ॥
सो०–षटरसके सब भोग, कछु शकटन कछु कावरिन ॥

१ विश्वास। २ प्रातःकाल। ३ सलाह। ४ गाडा। ५ आपसमें। ६ कावड।

गृह गृहते ब्रजलोग, लै लै गिरि पूजन चले ॥

नन्द महरके घरकी सामा । कहँ लगि बरणि बताऊं नामा ॥
सहस शकट पकवान मिठाई । रस गोरस बहु भार भराई ॥
नन्द सदन ते लै बहु ग्वाला । चले अग्र उर हर्ष विशाला ॥
पटभूषण सब गोपन साजे । भांति अनेक बाजने बाजे ॥
नन्द महर अरु महरि जितेका । और गोप बहु भीर अनेका ॥
बलदाऊ अरु कुवँर कन्हैया । शुभग शृंगार किये दोउ भैया ॥
सखा वृन्द सुन्दर सब लीन्हे । कोटि काम छबि लज्जित कीन्हे ॥
शोभित नंद महरके साथा । चले सकल पूजन गिरिनाथा ॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी । नन्दगांवकी अरु जे नारी ॥
भूषण बसन सवाँरि सवाँरी । चलीं हर्षि उर आनँद भारी ॥
पुरवृषभानु आदि जे ग्रामा । चलीं सकल गोपनकी बामा ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी । ललतादिक सब गोपकुमारी ॥

दो०—नौसत साज शृंगार अति, पट भूषण बहु रंग ॥
यूथ यूथ जुरिकै चलीं, कीरति जू के संग ॥

सो०—सबके मन यह काम, देखनको हरिरूप दृग ॥
परम मुदितसब बाम, सबके मनमोहन बसे ॥

चन्द्रबदनसी सब मृगनयनी । सकल सुघर सब कोकिल बयनी ॥
नवयौवनमें सबहिं नबीना । सबको मन मोहन आधीना ॥
चलीं सकल गोवर्धन पाहीं । भई भीर अति मारग माहीं ॥
शकट वृन्द अरु गोप समूहा । जात चले युवतिनके यूहा ॥
कौतुक करत गोप गण राजैं । ताल मृदंग अनेकन बाजैं ॥
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं । कोउ ठाढे मग पावत नाहीं ॥
कोऊ शकटन साजि सँवारे । कोऊ एकन एक पुकारे ॥
गावत मंगल गोपकुमारी । निरखि श्याम छबि होत सुखारी ॥
होत कुलाहल अति मगमाहीं । कोऊ बात सुनत कछु नाहीं ॥

---

१ गोवर्द्धन । २ बरसाना । ३ सोह शृंगारकरके । ४ झुंडके झुंड । ५ ब्रजयुवति ।

कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं। अति उत्साह सबन मन माहीं॥
सखन संग खेलत हरि जाहीं। सबकी सुरति श्यामके माहीं॥
ब्रजवासिनकी भीर सुहाई। उपमा मोपै बरणि न जाई॥
छं०—उपमा न मोपै जात बरणी, भीर अतिसुन्दर भई॥
बढ्यो आँनदसिंधुको सुख, बिबिध तनधर सोहई॥
छबि उजागर नगरके धौं, सुकृतंपुज सुहावने॥
तिनमध्य सबके श्यामनायक, सकललायकपावने॥
दोहा—नंदमहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय॥
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुख पाय॥
सो०—उतरे सहित समाज, चहूंओर ब्रज लोग सब॥
मधि शोभित गिरिराज, कोटि काम शोभासरस॥
चहुँ दिशि फेर कोश चौराशी। उतरे घेर सकल ब्रजवासी॥
ब्रजवासिनकी भीर अपारा। लगे चहूँ दिशि चारु बजारा॥
वस्तु अनेक बरणि नाहिं जाई। बिन मोलहि सब सौंज बिकाई॥
ठौर ठौर ब्रजयुवती गावैं। जहँ तहँ नटवा नाच दिखावैं॥
कहूं विदूषक हांस हँसावें। हर्ष मांझ अति हर्ष बढावैं॥
नर नारी सब परमहुलासा। अति आनंद उमँगि चहुं पासा॥
बूझत पूजन विधि नँदराई। अधिकारी तहँ कुँवर कन्हाई॥
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई। प्रथम यज्ञ आनंद कराई॥
पूंछिवेद विधि तिनसों लीजै। वाही विधि गिरिपूजा कीजै॥
तबहि विप्र नँदराय बुलाये। आदर जहित गोप लै आये॥
हरिको कह्यो मानि तिन लीन्हों। प्रथमारम्भ यज्ञको कीन्हो॥
परम रुचिर वेदिका बनाई। सामवेद ध्वनि द्विजबर गाई॥
दोहा०—देखनको धाये सबै, ब्रजके नर अरु वाम॥
भयो देवता गिरि वडो, ताहिं पुजावैं श्याम॥
सो०—बडे महर उपनंद, नंद आदि ठाढे सबै॥

१ आनंदका समुद्र। २ पुण्योंके समूह। ३ मसखरा। ४ आनंद।

कहत जो कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहां ॥
पंचामृत बहु कलश भरायो । डारि शिखरते गिरि अन्हवायो ॥
बहुरो लै गांगाजल ढारयो । चंदन वन्दन तिलक सँवारयो ॥
भूषण वसन विचित्र चढाये । सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
धूपदीप करि आरति साजी । घंटा शंख झालरैं बाजी ॥
करत वेद धुनि विप्र सुहाई । चकत नभ[2] लखि सुरसमुदाई[3] ॥
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई । थाप्योगिरि ब्रज तिलक चढ़ाई ॥
देखि इन्द्र मन गर्व बढ़ायो । ब्रजवासिनके मन कह आयो ॥
पूजतगिरिहि मोहिं बिसराई । गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई ॥
पावहिं मम अपमान[4] सजाई । देखौं तब को करत सहाई ॥
अब देखों मैं इनकी करनी । उपजी है इनकी बुधि मरनी ॥
गिरिको पूजत प्रेम बढ़ाई । स्वर्गको सुख लेत मनाई ॥
कितकबार पुनि इनको मारत । ऐसे सुरपति मनहिं विचारत ॥
दोहा—कह्यो कृष्ण तब नंदसों, भोजन लेहु मँगाय ॥
गिरि आगे सब राखिके, अरु यहविनय सुनाय ॥
सो०—यह सुनिके नंदराय, लावहु ग्वालनसों कह्यो ॥
लीन्हीं तहां मँगाय सामग्री सब भोगकी ॥
नाना भांति जात पकवाना । विविध मिठाई अमित समाना ॥
षटरस व्यंजन बहु तरकारी । दही दूध सिखरन रुचिकारी ॥
मधु मेवा फल फूल अनेका । सुंदर स्वाद एकते एका ॥
खीर आदि बहु भांति रसोई । कहँ लगि बरणिसकै सबकोई ॥
मूंग भात अरु बरा पकोरी । बहुतकदधि बोरी अरु कोरी ॥
कियो अन्नको कूट सुहावन । जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत । जैसी विधिसों मोहन भाषत ॥
गिरि पूजत जिहि भांति कन्हाई । तैसे सब ब्रजलोग लुगाई ॥
गिरि गोवर्द्धनके चहुँ पासा । कीन्हो बहु विधि सहित हुलासा ॥

१ पर्वतशृंग । २ आकाश । ३ देवगण । ४ तिरस्कार ।

ठौरहि ठौर वेदिका राजै। अन्नकूट चहुँ ओर विराजै॥
तिनमधि गोवर्द्धन गिरि पावन। परम अनूप स्वरूप सुहावन॥
चंदन केसरि रोरी हाथा। शोभित अति चहुँ दिशिगिरि माथा
दोहा–गिरिगोवर्द्धन रायको, छबि नहिंपरत लगाय॥
ब्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय॥
सो०–महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अंचलकी॥
जेहि पूजत करतार, शारद विधि नाहिं कहसकैं॥
माताहिंते परसत भोजन सब। गयो ढरकि युगयाम तरणि तब॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई। जेवहिं गिरिसों, कहो कन्हाई॥
तब हरि कह्यो सबन समुझाई। भोग समर्प्पहु घंट बजाई॥
मनमें कछू खटक जिन राखो। दीन वचन मुखते कहिभाषो॥
नयन मूंदिकै ध्यान लगावो। प्रेम सहित करजोरि मनावो॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं। अपनी पूजा आप करावैं॥
जिनपर कृपा करत नँदनंदन। तिनसों आप करावत वंदन॥
सबन मानि हरि कहो जो लीन्हो।बहु विधि गिरि आराधन कीन्हो
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा। यज्ञपुरुष प्रभु श्रुतिके माथा॥
सहसभुजा तनु श्याम तमाला। मोर मुकुट वैजंती माला॥
नख शिख भूषण परम सुहाये। अंग अंग छबि झलकन छाये॥
भये देखि ब्रजलोग सनाथा। दियो दरश गोवर्द्धन नाथा॥
दोहा०जय जय जयकहि देव मुनि, वर्षतसुमन अकास॥
ब्रजवासी जय जय करत, भये अनंद हुलास॥
सो०सहसौं भुजा पसारि, लागे भोजन करन गिरि॥
देखत ब्रजनरनारि, अतिअद्भुत हरिके चरित॥
कहत मुदित सब लोग लुगाई। कान्हहिं की शोभा गिरिराई॥
जैसे कान्ह श्यामतनुसोहै। तैसोई गिरिवर मनमोहै॥
तैसेइ कुण्डल तैसेइ माला। तैसेइ चंचल नयन विशाला॥

१ वेदी। २ पर्वत। ३ सरस्वती। ४ ब्रह्मा। ५ सूर्य। ६ वेद।

तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो । नख शिख रूप कान्हको जैसो ॥
द्वैभुज हरिके परम सुहाई । गिरिकी भुजा सहस अधिकाई ॥
देखि दर्श गिरिवरके रूरे । नंद यशोदा आनंद पूरे ॥
कहतकि बड़े देव हमपाये । देखहु परगट दरश दिखाये ॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो । जीवन जन्म सफल करिलेख्यो ॥
ललिता राधहि कहत बुझाई । मैं यह बात समुझिहै पाई ॥
यह लीला सब श्याम बनावैं । आपहि जेंवत आप जिमावैं ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई । इंद्रहि मेटि आप वलि खाई ॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा । मेरी बात मान तू राधा ॥

दोहा—इतहि नंदको करे गेह, गोपन सों बतरात ॥
उत आपहिधरिसहस भुज, रुचिसों भोजनखात ॥

सो०—श्रीराधासुखपाय, मुदितविलोकितिश्यामछवि ॥
भक्तन के सुखदाय, नित नव करत विनोद व्रज ॥

इत गोपन संग हर्षित रहीं । उत सबहिनको भोजन खाहीं ॥
ग्वालिनि एक विलोकन हारी । रहिवृषभानु सदँन रखवारी ॥
तासु नाम बदरीला गायो । तिन घरहोते भोग लगायो ॥
प्रेम सहित बहु बिनय सुनाई । सबके अन्तरयामि कन्हाई ॥
ऐसे प्रीति क्षुधितै बनवारी । लईतासुबलि भुजा पसारी ॥
भोजन करत परम रुचि मानी । गुणसागर लीला यह ठानी ॥
कहत नंदसों कुँवर कन्हाई । मैं जो बात कही सो आई ॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने । मेरे वचन सत्य करि माने ॥
तुम देखत भोजन सब खायो । परगट तुमको दर्श देखायो ॥
तुह्मरी भक्ति भाव पहिचानी । गिरि तुह्मरी पूजा सब मानी ॥
तुम अब मांग्यो चाहौ जोई । मांगिलेहु इनपै सब सोई ॥
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई । यह पूजा तुम हमहिं बताई ॥
दोहा०प्रीत रीतिके भावसों, भोजन सबके खाय ॥

---

१ हजार । २ अगाधव्य । ३ अपार । ४ घर; । ५ प्रीतिके भूखे ।

है प्रसन्न अति नंदसों, तब बोले गिरिराय ॥
सो०—लेहु नंद वरदान, अब जो तुम हमसों चहौ ॥
मैं लीन्हों सुखमान, बहुत करी तुम भक्ति मम ॥
भली करी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई। इनको कुशल अनन्द सदाई ॥
मैंहीं इनको स्वप्न दिखायो। मैंहीं सुरपतियज्ञ [?]टायो ॥
अब जो सुरपति तुमहिं रिसाई। जल वर्षे ब्रज ऊपर आई ॥
तौ तुम अपने जिय मति डरियो। कान्ह कहै सोई तुम करियो ॥
अब तुम मम प्रसाद ले खाहू। अपने अपने घर सब जाहू ॥
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं। और कछू मांगौ हम पाहीं ॥
यह सुनि चकित सकल ब्रजनारी। भोजन कियो प्रथम गिरिधारी ॥
अब बोलत मुख वचन प्रमाना। ऐसे परछेत देव न आना ॥
नंद कह्यो कह मांगों स्वामी। देखि दरश भयो पूरण कामी ॥
सकल सिद्धि सुख तुह्मारो दीन्हो। कृपासिन्धु मैं तुह्मरो कीन्हो ॥
मोह विवश प्रभु तुमहिं बिसारे। भलि फिर्‍यो देवनके द्वारे ॥
छं०—फिरयों भूल्यो देवद्वारन नाथ तुमहिं बिसारिके ॥
पूजा तुह्मारा कहा जानें हम अहीर गवारिके ॥
आपहीकरि कृपा दीन्हों स्वप्नश्यामहिं आयके ॥
दई बालकको बडाई नाथ यह अपनायके ॥
अब हमें डर कौनको प्रभु शरण तुह्मरो पायके ॥
इन्द्र कहा करिहै हमारो नाथ ब्रजपर आयकै ॥
तुमहि कर्त्ताहौ सबनके तुमहिं सबके ईश हौ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तुह्मरे रोम प्रति जगदीश हौ ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ॥
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ॥
सुतन दै लै डारि गिरिपद आप नँदचरणन परे ॥

१ निडर। २ प्रत्यक्ष। ३ अपनाकरके।

बिहँसि गिरि लखि प्रीति पंकज[1] पाणि दुहुँ माथे धरे ॥
दोहा—नन्द गोप उपनन्द सब, श्रीवृषभानु समेत ॥
बार बार गिरिराजके, चरण परत अति हेत ॥
सो०—करि सबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसों[2] ॥
सबन कह्यो घरजान, ह्वै प्रसन्न गिरिराज तब ॥
चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई। भये प्रसन्न देव गिरिराई ॥
भली भांति पूजा तुम कीन्हा। गिरिवर राज मान सब लीन्हो ॥
दोउ कर जोरि भये सब ठाढ़े। भक्ति भाव सबके मन बाढ़े ॥
हरि करि परिकरमा सब गिरिको। परशत चरण चलत ब्रजघरको ॥
देखि चकित गण गंधब सुर मुनि। कहत धन्य ब्रजबासी गुण गुनि ॥
धन्य नंदको सुकृत पुरातन। धन्य धन्य पर्व्वत गोबर्द्धन ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि। बार्षं सुमन करि करि जैजै धुनि ॥
निज निज लोकन देव सिधाये। ब्रजबासी सब ब्रजको धाये ॥
मुदित सकल ब्रज लोग लुगाई। गोबर्द्धनकी करत बड़ाई ॥
कहत धन्य यशुमतिका जायो। बड़ो देवता कान्ह पुजायो ॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहैं। गोप गाय सब सुखसों रैहैं ॥
बर्ष बर्ष प्रति इन्द्र पुजायो। कबहूं प्रगट दर्शनाहिं पायो ॥
दोहा—प्रगट देत है दर्शगिरि, सबके आगे खात ॥
परमहर्ष नर नारि सब, सबके मुख यह बात ॥
सो० खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलाल ब्रज ॥
दुष्टनके उरशाल[3], सुरनरमुनि मोहत निरखि ॥
इन्द्र देखि गोबर्द्धन पूजा। किया क्रोध मोसम को दूजा ॥
ब्रजबासिन मोको बिसरायो। मेरो बलि लै गिरिहि चढायो ॥
नेक नहा शका उर आनी। कछू कानि मेरी नाहिं मानी ॥
तेंतिस कोटि सुरनरको नायक। मेघ वर्त्त सब मेर पायक ॥
किया अहीरन मम अपमाना। काधौं इन अपने मन जाना ॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो। गिरिहि थापि शिर तिलक चढ़ायो॥

१ हस्तकमल । २ हाथ । ३ हृदयमें वेदना ।

काहू उन्हैं दियो बहकाई। मरण काल ऐसी मति आई॥
तुरत उन्हैं अब देहुँ सजाई। देखौं धौं को करत सहाई॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊं। ब्रजजन मारि पताल पठाऊं॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीन्हो। नेक न राखौं ताको चीन्हों॥
सकल गोप यह नयनन देखैं। बड़े देवताको फल लेखैं॥
ता पाछे ब्रज देउँ बहाई। भुवपर[1] खोज[2] रहै नाहिं राई॥

दोहा–ऐसे सुरपति क्रोधकरि, मनमें गर्ब[3] बढाय॥
प्रलयकालके मेघ सब, लीन्हें तुरत बुलाय॥

सो०–तिनहिं कह्यो सुरराय, ब्रजपर बर्षो जाय तुम॥
पर्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रज लोकसब॥

मोसों अहिरन करी ढिठाई। मेरी बलि पर्वतहि खवाई॥
ताकारण मैं तुह्महिं बुलाये। सैन समेत जाहु सब धाये॥
गिरि समेत सब देहु बहाई। भूतल: खोज रहै नाहिं राई॥
सुरपति बचन सुनत घन तमके। कापर क्रोध करत प्रभु मनके॥
केतक गिरि ब्रज हमरे आगे। तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे॥
क्षणहींमें ब्रज खोदि बहावैं। डूंगरको[4] घर नाम मिटावैं॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी। रहत अक्षय वट तनक निशानी॥
आप क्षमा कीजै सुरराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई॥
यह सुन सुनासीर[5] सुख पायो। हर्षि पान दै तिनहिं चढ़ायो॥
चले मेघ सब शीशनवाई। आये ब्रजके ऊपर धाई॥
क्षणहींमें रबि गगन छिपाने। देखत ही देखत अधिकाने॥
कीन्हों शब्द गरज घन भारी। अतिही घटा भयावन कारी॥

छं०–अतिही भयानक घटाकारी कज्जलहु पटतर नहीं॥
घेरि लीन्हों ब्रज चहूंदिशि पवनप्रलय झकोरहीं॥
गर्जत गगन घन घोर तडपत तडित बारहिं बारहीं॥
होत शब्द अघात ब्रज नर नारि चकित निहारहीं॥

१ पृथ्वीपर। २ चिन्ह। ३ अहंकार। ४ पहाडी। ५ इन्द्र।

गये वन जे गाय ते ते धाय फिरि व्रज आवहीं ॥
अन्धधुन्ध अपार खोजत धाम पन्थ न पावहीं ॥
सैंतत जहांतहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा ॥
वैर सुरपति सों कियो अव होन धौं चाहत कहा ॥
दोहा–उमड़ि घुमड़ि घहराय घन, परन लगे जल जोर ॥
टेरत सुतको मात पितु, व्रज गलवल चहुँ ओर ॥
सो०–व्रजजन सकल विहाल, विललाने जित तित फिरत ॥
श्यामकरत यह ख्याल, देखि देखि मन में हँसत ॥
अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी। कहत देत पर्वतको गारी ॥
आये पूजि गोवर्द्धन जाई। सुरपति निजकुल देव मिटाई ॥
दीन्हो गिरिवर यह फलभारी। लेहु सबै अब गोदपसारी ॥
चढ्यो मचारि कोप सुरराई। देत पलकमें व्रजहि बहाई ॥
जोपै बड़े देव गिरिराजू। तौ किन आय बचावत आजू ॥
नंदसुवन यह पूजा ठानी। ताते इन्द्र चढ्यो रिस मानी ॥
कहति यशोमति सों व्रजवाला। कहा काम यह कियो गोपाला ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे। व्रज ते मेटि दिये तैं न्यारे ॥
चढ्यो आय व्रज ऊपर सोई। अव सहाय काहेन गिरि होई ॥
घन गरजत तरजत अति भारी। देखि देखि डरपत नरनारी ॥
सकल विकल भय मन पछिताहीं। लरिकन दुरवत गोदन माहीं ॥
भये शोचवश सब व्रजलोगा। कहत बन्यो अब मरण सँयोगा ॥
दोहा–देखि देखि व्रजकी दशा, नन्द महरिपछिताति ॥
कियो निरादर इन्द्रको, मनमें बहुत डराति ॥
सो०–श्याम राम दोउभाय, लिये निकट शोचतमहरि ॥
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि ॥
कहत कृष्णासों सब व्रजबासी। सुनहु श्याम सुन्दर सुखराशी ॥
तुमतो सुरपति यज्ञ मिटायो। व्रजवासिनपै गिरिहि पुजायो ॥

१ मार्ग । २ इन्द्र । ३ छिपाते हैं ।

तुम्हरे कहे अहो ब्रज मण्डन। सुरपति मान कियो हम खण्डन॥
ताहीते सुरराज रिसाई। दिये प्रलयके मेघ पठाई॥
वर्षत ते मघवाके पार्यक। विषम बूंद लागत जनु सायक॥
भीजत गाय गोप गोसुत सब। घरिक माहिं बूडतहै ब्रज अब॥
राखि लेहु अब ब्रजके नायक। तुमहीं यह दुख मेटन लायक॥
दावानलते राखे जैसे। अब जलते राखौ प्रभु तैसे॥
बकी विनाशन शकट सँहारन। तृणावर्त वत्सासुर मारन॥
अघमर्दन बक बदन विदारन। तुमहीं ब्रज जनके दुख टारन॥
दीजै अभय वेगि नँदलाला। वर्षत मेघ महा विकराला॥
राखि लेहु बूडत ब्रज खेरो। अब चितवत हरि सब मुख तेरो॥
दोहा—जब जब गाढ़परी हमैं, तब तुम कियो उबार॥
इहि अवसर अब राखिये, मोहन नन्दकुमार॥
सो०—ब्रजजनके सुखदान, देखि बिकल ब्रजलोग सब॥
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उर डरहु मति॥
चलहु सकल मिलि गिरिके पाहीं। उनको ध्यान धरहु मन माहीं॥
करि लैहैं ब्रजराज सहाई। रहिहैं सुरपति मन पछिताई॥
यह कहि हरि गोवर्द्धन आयो। अभय बाँहदै सबन बुलायो॥
गाय वत्स ब्रज लोग लुगाई। गये सकल हरिके सँगधाई॥
सबहीक देखत गहि धरते। उचकि लियो गिरिवर हरि करते॥
छिगुनीं छोर बाम कर राख्यो। तब हरि ब्रजबासिन ते भाष्यो॥
करी सहाय देव गिरिराया। आवहु तुम सब इनकी छाया॥
गाय गोप गोसुत नरनारी। भये सकल क्षण माहि सुखारी॥
चकित देखि सब लोग लुगाई कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई॥
प्रेम उमँग उर आनँद भरिके। परसत चरण धाय सब हरिके॥
कान्ह कहत देखहु गिरिराई। कीन्ही केहि विधि तुरत सहाई॥
भक्तन हित हरि गिरिहि उठायो। तब ते गिरिधर नाम कहायो॥

१ इन्द्र। २ सेवक। ३ बाण। ४ बछडा। ५ बिपत्ति। ६ छोटी अंगुली।

छं०–परेउ तबते नाम गिरिधर, वामकर गिरिवर धरचो ॥
देखि व्याकुल सकल ब्रजको, शोच इकक्षणमें हरचो ॥
करत जय जय गोप गोपी, सकल मन आनँद भरे ॥
श्याम सबके मध्य ठाढे, कर[1]जनख गिरिवरधरे ॥
परि अखण्डित धार मूशल, सलिल[2]की वर्षा करे ॥
अन्ध धुन्ध अकाश चहुँ दिशि, सबन झकझोरतखरे ॥
वज्रनीर गँभीर पुनि पुनि, गरज पर्वत पर गिरे ॥
करत अति उतपात ब्रजपर, मेघ परलयको करे ॥
दोहा–बार बार चपला[3] चमकि, झकझोरत चहुँ ओर ॥
अरर अरर आकाशते जल डारत घन घोर ॥
सो०–हरि जनके सुखदाय, गिरि कीन्हों बिस्तार अति ॥
सब ब्रज लिये बचाय, बूंद न आवत भूमिपर ॥
कहत गोप सब मनहिं डराई । गिरिवरनीके धरहु कन्हाई ॥
महाप्रलय पर्वत यह भारी । अतिकोमल भुज तनक तुह्मारी ॥
नखते गिरिवर धरिको धारै । ऐसे बल बिन कौन सँभारै ॥
देखि नन्द व्याकुल मन माहीं । महा भार गिरि कोमल बाहीं ॥
दाबत भुजा यशोमति मैया । बार बार मुख लेति बलैया ॥
देखि भार मन अति दुख पावैं । पुनि पुनि गोवर्द्धनहिं मनावैं ॥
नाथ आपनो भार सँभारी । करियो कान्हरकी रखवारी ॥
पय[1] पकवान मिठाई मेवा । बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥
मात पितहि हरि देखि दुखारी । तब इक बुद्धि करी गिरिधारी ॥
कह्यो नन्द सों निकट बुलाई । तुमहूं सब मिलि करहु सहाई ॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहू । मति राखहु उरमें सन्देहू ॥
गोवर्द्धन गिरि भयो सहाई । आप कह्यों मोहिं लेहु उठाई ॥
दोहा–यह सुनि जहँतहँ गोप सब, रहे लकुटि गिरिलाय ॥

१ अंगुलीके नखपर । २ जल । ३ बिजली ।

कहत श्याम तब नन्दसों, भले लियो उचकाय ॥
सो०—ठाढे ढिग बलराम, देखि देखि लीला हँसत ॥
कौतुक निधि सुखधाम, करत चरितसंतनसुखद ॥
सात दिवस बीते यहि भांती । वर्षत जल जलधरै दिनराती ॥
कोपि कोपि डारत जलधारा । मिटी न ब्रजकी नेकुलगारा ॥
जरत जलदै जल बीचहि अंबरै । वैसेइ गिरि वैसेइ ब्रज सुंदर ॥
धर जल पवन अनलै नभ जाको। सुरपति कहा करिसकै ताको ॥
भये जलद जलते सब रीते । रह्यो एक गुण द्वैगुण बीते ॥
कहत बात आपस में बादर । पठयो इन्द्र हमैं दै आदर ॥
कह्यो देहु ब्रजजाय बहाई । कहिहैं कहा जाय अब भाई ॥
महा प्रलय जल बर्षे आनी । ब्रजमें बूंद न पहुँच्यो पानी ॥
भये मेघ मनमें सब कादरै । अब करिहैं सुरराज निरादर ॥
अति भय तनुकी दशा भुलाने । गये इन्द्रपै सबै खिसाने ॥
कहत मेघ सुरपतिके पाहीं । सुनहु देव हम कहत डराहीं ॥
कै मारो कै शरण उबारो । ब्रज पै जोर न चलत हमारो ॥
दोहा—सात दिवस परलय सलिलै, हम वर्षे ब्रजजाय ॥
ब्रजवासी भाये नहीं, निदरयो हमैं बनाय ॥
सो०—निघट गयो सब वारि, एक बूंद पहुँचोनघर ॥
यह अचरज अति भारि, कहत लगतलज्जाहमैं ॥
यह सुनि चकित भयो सुरराई । पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥
कहा भयो परलय को पानी । यह कछु ब्रजकी बात नजानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा। पर्वतमें कोउहै अवतारा ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये । आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सबन शिरनायो । कौन काज सुरराज बुलायो ॥
तबहीं देवन सों सुरराई । ब्रजबासिनकी बात सुनाई ॥
बीते वर्ष देतहैं पूजा । सो अब देव कियो उनदूजा ॥

---

१ मेघ । २ मेघ । ३ आकाश । ४ अग्नि । ५ कायर । ६ जल ।

मोहिं मेटि पर्वतको थाप्यो । ताते मैं अतिरिस करि कांप्यो ॥
दिये प्रलयके मेघ पठाई । आवहु ब्रज गिरि सहित बहाई ॥
ते बर्षे परलय जल जाई । ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राई ॥
आये मेघ हार सब रोई । कारण कहा कहो सो मोई ॥
देवन कह्यो सुनो सुरईशा । प्रगट्यो ब्रजहि ब्रह्म जगदीशा ॥
दोहा—तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारी जाय ॥
कह्यो लेन अवतार तब, सोविहरत ब्रज आय ॥
सो०—कह्यो इन्द्र पछिताय, मैं भूल्यो जान्यो नहीं ॥
कीन्हीबहुत ढिठाय, भय करि मन व्याकुलभयो ॥
मैंसुरपति जिनहींको कीन्हो । तिन आगे चाहौं बलि लीन्हो ॥
रवि आगे खद्योत उजेरी । तैसी बुद्धि भई है मेरी ॥
कीन्ही बहुतै मैं अधिकाई । कहा करौं अब मन पछिताई ॥
सुरन कही सुनिये सुराराई । ब्रजहि चलौ नाहिं आन उपाई ॥
वे हैं प्रभु दयालु करुणाकर । क्षमा करैंगे श्रीसुंदरबर ॥
सुनि विचार कीन्हो सुरराजा । यद्यपि वदन दिखावत लाजा ॥
तद्यपि वै स्वामी मैं दासा । करिहैं कृपा अवशि मोहिं आशा ॥
अब नहिं बनत रहे मुखै गोई । शरण गये जो होय सो होई ॥
यह विचार मनमें ठहराई । चल्यो शरण सुर संग लिवाई ॥
कामधेनु करि अग्र सुहाई । शोचत चल्यो ब्रजहि समुदाई ॥
अति सकोच सुरपति मन माहीं । आगे धरत परत पग नाहीं ॥
जगत पितासों करी ढिठाई । कहिहौं कहा बदन दिखराई ॥
दोहा—शरण शरण कहि चरण परि, परि हौं जाय उताल ॥
शरणागत पालन बिरद, तजिहैं नाहिं गोपाल ॥
सो०—दीन बचन सुनि कान, करिहैं कृपा कृपालु प्रभु ॥
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहि ॥
देखि सुरनकी भीर अहीरा । अति डरपे उरभये अधीरा ॥

१ पटबीजना । २ अवश्य । ३ मुख छिपाकर ।

दौरि कृष्ण सों जाय सुनायो। सुरपति आप सैन सजि आयो ॥
कहत श्याम हँसि मतिहि डरावो। गिरिवरतजि कितहूं मति जावो ॥
अब बाहर सेना सबराखी। बाहनते उतर्‌यो सहसाखी ॥
सकुचत चल्यो कृष्णके पासा। कछुक दुखितमन कछुक उदासा॥
धाय पर्‌यो चरणन पर जाई। कृपासिंधु राखे शरणाई ॥
बिसर्‌यो तुमहिं तुम्हारी माया। अब तुम बिन नाहिं और सहाया ॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि बानी। धोये चरण नयनके पानी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई। मोते चूक पडी अधिकाई ॥
मैं अपराध कियो अनजानी। क्षमा करो प्रभु जन सुखदानी ॥
जो बालक पितु सों बिरुझाई। लेत पिता तेहि गोद उठाई ॥
ऐसेहि मोहिं करो जन त्राता। जैसे सुतहित पित अरु माता ॥

दोहा—व्याकुल देखि सुरेश अति, दीनबंधु यदुराय ॥
अभय कियो करमाथ धरि, भुजगहि लियो उठाय ॥

सो०—लीन्हों हृदय लगाय, देखि दीनता इन्द्रकी ॥
शिर नहिं सकत उठाय, बार बार परशतचरण ॥

कहत इन्द्रसों कुँवर कन्हाई। तुम कत सकुचतहौ सुरराई ॥
हम तुमसों कीन्ही अधिकाई। तुम्हरी पूजा हम सब खाई ॥
भली करी ब्रज बर्षे पानी। हम कुछ तुमसोंरिस नाहिं मानी ॥
यह दीन्ही मेरी ठकुराई। तुम नाहिं जानत करी ढिठाई ॥
कहा भयो जो मेघ पठाये। मैं सब ब्रजके लोग बचाये ॥
तुम कुछ उरमें शोच न आनो। मैं तुम सों कछु बुरो न मानो ॥
भली करी ब्रज देखन आये। तुम मेरे मनमें अति भाये ॥
अपने मनकी शोच मिटाई। देवन सहित करौ सुख जाई ॥
सुनि हरि बचन देवगण हर्षे। जय जयकरि कुसुमांजलि बर्षे ॥
पुलकि अंग मुख गदगद बानी। कहत धन्य प्रभुजन सुखदानी ॥
अशरण-शरण तुम्हारो बानो। यह लीला सब तुमही जानो ॥

---

१ इन्द्र। २ भक्तरक्षक।

धन्य धन्य सब ब्रजकेबासी । जिनके प्रेमविवश अविनाशी ॥
दोहा–प्रभुहिं देखि अनुकूल मन, धीर कियो सुरराय ॥
मिटी त्रास[1] उरते तऊ, बार बार पछिताय ॥
सो०–कहत बारहीं बार, तुम गति अगम अगाध[2] प्रभु ॥
मैं भूल्यो संसार, जान्यों ब्रज अवतार नाहिं ॥
प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा । मोते मन्द औरको[3] दूजा ॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा । रबि आगे खद्योत प्रकाशा ॥
मेरो गर्व कितक यह बाता । कोटिन इंद्र तुम्हारे गाता ॥
मैं अपराध कियो यह भारी । प्रभु राख्यो निज ओर निहारी ॥
दीनबन्धु तुम जन हितकारी । बिरदबखानत वेद पुकारी ॥
कृपा करी प्रभु दरशन पाये । भयो सुखी तनु ताप नशाये ॥
ये दिन वृथा गये बिनकाजा । तुमको नाहिं जान्यो ब्रजराजा ॥
धन्य धन्य प्रभु गिरिवर धारी । भंजन विपति भक्तहितकारी ॥
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन । सन्त धेनु द्विज हित तनु धारन ॥
अब प्रभु मोहिं कृपा यह करिये । गिरिवरधर गिरिधरपर धरिये ॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी । तब गिरि करते धर्यो उतारी ॥
सुरन सहित सुरराज अनन्दे । कामधेनु लै प्रभुपद वन्दे ॥
छं०–करत अस्तुति जोरि सुरकर, धेनु आगे राखिकै ॥
वंदि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि, नाम गोविंद भाखिकै ॥
जै जै कृपालु मुकुन्द माधव, कृष्ण अगणित गति हरे ॥
गोपपति राजीवलोचन[4], करंज[5] नख गिरिवर धरे ॥
वासुदेव ब्रजेन्द्र यदुपति, कंसअरि सुररंजने ॥
हरण भव भय भार महि, अहिराज विषमद गंजने ॥
बकी तिरणावर्त वत्सासुर, बका अघ नाशनं ॥
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक, असुरवंश विनाशनं ॥
चोरि माखन खात ब्रज घर, भंजि तरु जन दुखहरे ॥

१ भय । २ पटवीजना । ३ पृथ्वीपर । ४ कमलदललोचन । ५ उंगली ।

योगिजन जप तपन पावत, धन्य व्रज जन वश करे ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना, धन्य व्रज वृंदावने ॥
धन्य गोपी गोप यशुदा, नंद गिरि गोवर्द्धने ॥
फिरत चारत धेनु निज पद पद्म, फणि अहि प्रति धरे ॥
शकट भंजन भक्त रंजन, रास निर्त्तत गुणभरे ॥
जनक सुरसरि शिवसनकधन, श्रीनहीं छांडत घरी ॥
परसते पद भयो पावन, जयति जै जै जै हरी ॥
दोहा–करि अस्तुति मन हर्षि अति, परयो शक्र प्रभुपांय ॥
ह्वै प्रसन्न सुरधेनु युत, विदा कियो यदुराय ॥
सो०–पुनि पुनि प्रभुपद वन्द, सुर लोकहि सुरपति गयो ॥
व्रजजन परमानन्द, चकित विलोकत श्यामतन ॥
कहत गोप सब आपसमाहीं। इन सम और जगत कोउ नाहीं॥
सात वर्षको बालक जोई। ताहि इतो बल कैसे होई ॥
हैये पारब्रह्म भगवाना। करत चरित्र देह धरि नाना ॥
दैत्य किते छल करि करि आये। ते सब इन कौतुकहि नशाये ॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहिं पुजायो। तामें निजस्वरूप प्रगटायो ॥
इन्द्र प्रलय घन दियो पठाई। सात दिवस व्रज बरषे आई ॥
अति विस्तार बड़ो अति भारी। लीन्हो गिरिवर कर पर धारी ॥
एक बूंद व्रजमें नहिं आई। लीन्हो सब व्रज लोक बचाई ॥
हारि मानि सुरपति भय पाई। आन परयो चरणन शिरनाई ॥
कामधेनु देवनको ल्यायो। ताहि अभय करि फेरि पठायो ॥
अचरज बात जात नहिं वरणी। मानुषसों यह होय न करणी ॥
परे गोप हरि चरणन आई। कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥
दोहा–हम तुमको जानैं नहीं, हौ तुम त्रिभुवन राय ॥
व्रजबासिन सुख देनको, व्रजमें प्रगटे आय ॥

१ गंगाके पिता। २ इन्द्र। ३ कामधेनु।

सो०–तुम करिलेत सहाय, परत जहां संकट बिकट ॥
लीन्हों हमैं बचाय, विषते जलते अनलते ॥
करत विचार युवति सब ठाढीं । प्रेम उमँग मन आनँद बाढीं ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई । अतिकोमल तनुश्याम कन्हाई ॥
लेत धरत जान्यो नाहिं काहू । धन्य धन्य हरिको यह बाहू ॥
सातदिवस परलय जलढान्यो । इन्द्रपरतचरणन जब हान्यो ॥
करत सखा धनि धन्य गुपाला । कैस गिरि कर धन्यो बिशाला ॥
यह करतूति करत तुम कैसे । हम सँग सदा रहत हौ जैसे ॥
गाय चरावत हो मिलि हमसों । केतिक बलहै बूझत तुमसों ॥
धाय चरणगहि यशुमति मैया । मुख चुंबति अरु लेति बलैया ॥
अतिस्नेह नयन भर पानी । तनु पुलकित मुख गद्गद बानी ॥
कैसे करजु धन्यो गिरि ताता । अतिकोमल भुज तुम दिनसाता ॥
विहँसि मातसों कहत कन्हैया । तेरीसों सुनु यशोमति मैया ॥
मैं न उठावतरी श्रमपायो । नेक छुयो उठि आपुहि आयो ॥
दोहा–अब गिरिको पूजो बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय ॥
बूडत ते राख्यो उनहिं, कीन्हीं बहुत सहाय ॥
सो०–यह सुनि हर्ष बढाय, बहुरो गिरिपूज्यो सबन ॥
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल ॥
अक्षतें रोरी पान मिठाई । पुष्पहार दधि दूध सुहाई ॥
यशुमति रोहिणि अरु ब्रजनारी । सजि सजि लाई कंचन थारी ॥
हरिको तिलककियो दोउ माता । पुलकि प्रेम परिपरण गाता ॥
बहुतकद्रव्य निछावर कीन्हो । भुज गहिलाय कण्ठसा लीन्हो ॥
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावैं । फूल माल गरमें पहिरावैं ॥
इहि मिस अंग परसिसुखपावैं । निरखि बदनछवि विधिहिं मनावैं ॥
होहिं हमारे पति गिरिधारी । मनमोहन सुंदर बनवारी ॥
यह कामना सकल उरधारी । हरि छबि निरखति गोपकुमारी ॥
कह्यो नंदसों तब गिरिधारी । सुनहुतात अब बातहमारी ॥

१ अग्नि । २ बहुत । ३ चांवल । ४ सुवर्णकी थाली ।

गोवर्द्धनको करौ प्रणामा। चलिये अब सब निज निज धामा ॥
यह सुनि सबन गिरिहिं शिरनाई। चले ब्रजहि मनहर्ष बढ़ाई ॥
आये सदन सकल ब्रजवासी। सहित श्याम सुंदर सुखरासी ॥
दोहा–घर घर ब्रज आनंद सब, गावत मंगलचार ॥
आये सुरपति जीति हरि, गिरिधरनन्दकुमार ॥
सो०–व्रज मंगल व्रज मोद, व्रज आभूषण गिरिधरन ॥
नितन नव करत विनोद, ब्रजवासी ब्रजदास हित ॥

अथ नन्दएकादशीवरुणलीला ॥

इन्द्रहि जीति श्याम घर आये। व्रज घर घर आनंद बधाये ॥
तादिन दशमी भई सुहाई। कार्त्तिक शुक्ल एकादशि आई ॥
भुक्ति मुक्तिदायक अतिपावन। पाप शाप संताप नशावन ॥
नन्दएकादशि व्रत प्रतिपालैं। वेद विदित सब धर्म सँभालैं ॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीन्हो। बहुरि एकादशिका व्रत लीन्हो ॥
निराहार निरजल दृढनेमा। नारायण पदपंकज प्रेमा ॥
और काज कछु मनहिं नलायो। भजन करत सब दिवस वितायो ॥
निशि जागरण करण विधिठानी। प्रभु मंदिर लीप्यो निजपानी ॥
पाटम्बर वर दिव्य बिछाये। विविध पुनीत सुगन्ध सिचाये ॥
बाँधी बन्दनवार सुहाई। सुमन सुगन्ध माल लटकाई ॥
चौक चारु बहुरंगन पूर्यो। सिंहासन तहँ राख्यो रूर्यो ॥
शालिग्राम तहाँ पधराये। भूषण वसन विचित्र बनाये ॥
दोहा–धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभुपर पुष्प चढाय ॥
करी आरती प्रेमसों, घंटा शंख बजाय ॥
सो०–प्रभु पदनायो माथ, करिपरदक्षिण दंडवत ॥
तुम त्रिभुवनके नाथ, जोरि हाथ अस्तुति करी ॥
आदर सहित करी नँद पूजा। प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा ॥
करत कीरतन भजन सप्रीती। तीनि याम यामिनि जब बीती ॥

१ घर। २ इन्द्र। ३ देनेवाला। ४ रात्रि। ५ हाथ। ६ पवित्र।

तबहिं महरि नँदराय बुलाई । कह्यो यशोमति सों समुझाई ॥
एकदंड[1] द्वादशी सकारे । पारने[2] की बिधि करो सवारे ॥
यह कहि नन्द यशोमति पाहीं । लै झारी धोती करमाहीं ॥
गये न्हान यमुनाके तीरा । संगनहीं कोउ तहां अहीरा ॥
झारी भरि यमुना जल लीन्हो । बाहर जाय देह कृत कीन्हो ॥
लै माटी कर चरण पखारी । अति उत्तम सों करी मुखारी[3] ॥
अचमन लै बैठे नंदपानी । बरुण दूत जल बाजत जानी ॥
नन्दहि लै गे पकरि पताला । बरुण पास पहुँचे ततकाला ॥
जान्यो बरुण कृष्णके ताता । भयो हर्ष मन गुणि[4] यह बाता ॥
अन्तर्य्यामी प्रभु घनश्यामा । नंदलेन ऐहैं मम धामा ॥

दोहा–भयो वरुण अति हर्ष मन, पुनि पुनि पुलकितगात ॥
नन्दहिल्याये भृत्य[5] मम, भली भई यह बात ॥
सो०–सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि धनिभाग्य मम ॥
जाहि धरत मुनि ध्यान, निगमनेतिजिहि[6] गावहीं ॥

हर्ष सहित नंदहि जलराई । भीतर महलन गये लिवाई ॥
सादर विनय वचन बहु भाखे । धीरज दै नीके नँदराखे ॥
रानी सबन नंदको देख्यो । जन्म सफल अपनो करि लेख्यो ॥
कहतकि धनि धनि भाग्य हमारे। नन्द हमारे सदन पधारे ॥
जिनके सुत त्रैलोक्य गुसाईं । सुर नर मुनि सबहीके साईं ॥
चितवत पंथ वरुण मन लाये । करुणामय अब आवत धाये ॥
यशुमति शोच करत मन माहीं । भई बेर आये नँदनाहीं ॥
खबरलेन तब ग्वाल पठाये । यमुनातट नाहिं नंदहि पाये ॥
झारी धोती तट पर देखी । भये शोच सब ग्वाल विशेषी ॥
इत उत खोज ग्वाल फिरि आये। कहत महरि सों नंद न पाये ॥
झारी धोती तट पर पाई । सुनत महरि मुख गयो झुराई ॥
निशा अकेले आज सिधाये । काहू जलचर धौं धरि खाये ॥

१ घडी । २ पारना खोलना । ३ दांतन । ४ विचारकर । ५ नौकर । ६ बेद।

दोहा-अति व्याकुल यशुमति भई, उठी रोय अकुलाय ॥
सुनि धाये व्रज लोग सब, नंदहि खोजत जाय ॥
सो०-यमुना तट वन गांव, नंद नंद टेरत सबै ॥
ढूँढि फिरे सब ठांव, भये बिकल व्रज लोग सब ॥
सोवलते हरि हलधर आये। रोवत मात देखि दुख पाये॥
बूझत जननी सों दोउ भैया। कतरोवति है यशुमति मैया॥
बिलखि यशोमति वचन सुनाये। यमुनातट कहुँ नंद हिराये॥
यह सुनि हरि बोले सुनुमाता। अवहीं आवतहैं नँद ताता॥
मोसों कहि गये अवहीं आवन। मति रोवै मैं जात बुलावन॥
प्रभु सर्वज्ञ[1] सकलके स्वामी। जल थल व्यापक अंतर्यामी॥
जाने नंद वरुणके धामा। वरुण भीति पुनि लखि घनश्यामा॥
वरुणलोक हरि तुरत सिधाये। सुनत वरुण आतुर उठिधाये॥
देखत दरश परश सुख पायो। चरण सरोज आय शिरनायो॥
कहत आज धनि भाग्य हमारे। त्रिभुवन पति मम धाम पधारे॥
पाटाम्बर पाँवड़े बिछाये। महलन बंदनवार बँधाये॥
रत्नजड़ित सिंहासन धार्‌यो। तापर सादर प्रभु बैठार्‌यो॥
छं०-बैठाय सादर प्रभुहिं धोवत, कमलपद निजकरगहे ॥
जे पद सरोज मनोजअरि[4] उर, सरसदा प्रफुलितरहे ॥
जे पद पदम पद्मालया[5] उर, रहत निज भूषण किये ॥
पायते पदजलज[6] जलपति, प्रेम परि पूरण हिये ॥
दोहा-विविध भांति प्रभु पूजिके, वरुण कह्यो गहि पाय ॥
कृपासिंधु अति कृपा करि, दरशदियोमुहिंआय ॥
सो०-मैं कीन्हो अपराध, सो प्रभु उर नाहिं आनिये ॥
क्षमा समुद्र अगाध, क्षमाकरहु निज जानिजन ॥
जल रक्षक[3] जे दूत[2] कृपाला। ते लै आये नंद पताला॥
यह कारज मैं उनको कीन्हों। तिन दूतन प्रभु नंद न चीन्हों॥

१ सब जाननेवाले। २ शीघ्र। ३ कमल। ४ महादेवजी। ५ लक्ष्मी। ६ चरण कमल

यदपि कियो उन पातक भारी । हैं वे सकल दंड अधिकारी ॥
तदपि दूत वे मो मन भाये । जिनते प्रभुके दर्शन पाये ॥
देखि नाथ शुभ दरश तुह्मारा । मैं मान्यों उनको उपकारा ॥
अब प्रभु हम सब शरण तुह्मारी । राखि लेहु श्रीगिरिवरधारी ॥
पायँन परीं आय सब रानी । बडभागिनि आपुनको जानी ॥
रानिन सहित बरुण अनुरागे । अस्तुति करत जोरिकर आगे ॥
धन्य नंद धनि धन्य यशोदा । धनि धनि तुमहिं खिलावतगोदा ॥
धनि ब्रज गोकुलके नरनारी । पूरण ब्रह्म, जहां अवतारी ॥
गुणातीत[1] अविगति[2] अविनाशी[3] । ब्रज बिहार बिलसत सुखराशी ॥
शेष सहसमुख बरणि न जाई । सहज रूपको करत बडाई ॥

दोहा—करि अस्तुति रानिन सहित, पुनि पुनि धरि पदशीश ॥
लै प्रभुको नँदराय ढिग, तबहिं गयो जलईश ॥
सो०—हरषिउठेनँदराय, देखि श्यामको शशिवदन ॥
लखिप्रभुकी प्रभुताय, रहेमुदितचक्रितचितय ॥

करत मनाहमन नंद बिचारा । यह कोउ आहि बडो अवतारा ॥
भयो नंद मन हर्ष अपारा । ब्रह्म करत मो सदन बिहारा ॥
तबहिं कृपाकरि जन सुखदाई । बरुणहिंदै जलराज बडाई ॥
जाय नंदको कर गहिलीन्हों । चलहु तात ब्रजकहि हँसिदीन्हो ॥
कह्यो प्रणाम बरुण सुख पाये । नंदसहित हरि ब्रजगृह आये ॥
नंद आय ब्रजको जब देख्यो । तब वह चरित स्वप्नसोंलेख्यो ॥
देखि नंदको ब्रज नरनारी । गयो दुःख सब भये सुखारी ॥
बूझत नंदहि गोप सयाने । कितहिं गये तुम हम नहिं जाने ॥
हरि खोजि सकल ब्रजवासी । भये बहुत तुम बिना उदासी ॥
नंद महर तब सबसों भाख्यो । काल्हि एकादशि व्रत मैं राख्यो ॥
आज द्वादशी थोडी जानी । रैनि अछतगयो यमुना पानी ॥
कटिलौं गयो यमुन जल माहीं । लै गयो बरुण दूत गहिबाहीं ॥

१ निर्गुण २ । जिनकी गति जानी न जाय । ३ नहीं नाश होनेवाला ।

दोहा–वरुण लोकते जायकै, लाये मोहिं गोपाल ॥
पैठगये ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल ॥
सो०–महिमा कही न जात, कोटि भाँति वरणी वरुण ॥
साच कहत मैं बात, इनको नर मतिमानियो ॥
भयो अधीन बहुत जलराई । पर्यो चरण कमलनपर आई ॥
रानिन सहित पाँय पद पूजे । जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा । कहत भये सब सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत चकित यह बानी । कहत कहा यह अकथ कहानी ॥
प्रभुकी मायामें अरुझानी । कहति नंदसों यशुदारानी ॥
मो बरजत निशि न्हान सिधाये । कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको राखिलियो उरलाई । लाये नन्दहि खोज कन्हाई ॥
विप्रन बोलि दियो बहुदाना । घर घर बटी मिठाई पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई । बाजी नंद अवास बधाई ॥
नंद कहत यशुमति सुन बोरी । तू अबकितहि करत मन भोरी ॥
जाको त्रिभुवन पतिसों ताता । ताहि सदा मङ्गल दिन राता ॥
कही गर्गमुनि वाणी जोई । प्रगटत जात बात सब सोई ॥
दोहा–इनते समरथ और नहिं, येहैं सबके नाथ ॥
ब्रजवासी आनंद सब, सुनि सुनि हरि गुण गाथ ॥
सो०–धनि धनि ब्रज नर नार, कहत हमारे भाग्य सब ॥
हम संग करत विहार, श्रीवैकुण्ठ निवास हरि ॥

अथ वैकुंठदर्शनलीला ॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी । हरिहैं श्रीवैकुण्ठ निवासी ॥
सो वैकुण्ठ अहै धौं कैसो । जन्म मरण भय जहां न ऐसो ॥
जाको वेद पुराण बखाने । हरिजहँ वसत सदा सुखमाने ॥
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई । तौ बड़भाग्य होइँ सब कोई ॥
यह मनसा सबके मन आई । जानि लई भक्तन सुखदाई ॥

१ कृपा । २ फंसगई । ३ घर ।

तबहिं कृपाकरि सब ब्रजलोका । पहुँचाये वैकण्ठ विशोका¹ ॥
धर्म धाम जो वेदन गायो । दिव्य दृष्टिदै सबन दिखायो ॥
देखत भूलि रहे सब ग्वाला । पुर वैकुण्ठ अनूप विशाला ॥
भूमिब्रजमणि² द्युति छबिछाई । परम प्रकाश बरणि नहिं जाई ॥
वापी कूप तडाग³ अमीके⁴ । विविध नगन बांधे तटनीके ॥
रत्ननकी सोपान⁵ सुहाई । जहां देव मुनि रहत लुभाई ॥
फूले कमल विपुल⁶ बहुरङ्गा । करत शब्दखगै गुंजत भृङ्गा ॥

दोहा-कल्पवृक्षके बाग वन, सुमन सुगंध अपार ॥
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरूप उदार ॥

सो०-मंदिर बरणि न जाहिं, चिंतामणिमय खचित सब ॥
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावना ॥

सकल चतुर्भुज तहँके बासी । शुद्धसतोगुण सब सुखरासी ॥
राम सहित तहँ प्रभु सुख शीरा । शोभित नव जलदान शरीरा ॥
भूषण बसन दिव्य परकाशी । सुन्दर सकल सकल अबिनाशी ॥
बदन प्रकास हास सुखकारी । कोटि चंद्र कीजै बलिहारी ॥
मणिन जटित शिरमुकुटबिराजैं । भूषण बसन अनुपमराजैं ॥
दिव्य पारषद चँवर डुलावैं । नारद तम्बुर गुण गण गावैं ॥
चकित बिलोकित सब ब्रजबाला । जान्यो प्रभुप्रभाव तिहि काला ॥
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी । शङ्ख चक्र गद अंबुज धारी ॥
द्विभुज कान्हको रूप न देख्यो । मुरली लकुट पाणि नहीं पेख्यो ॥
नाहिं मुकुट शिर मोरपखौवा । कटि काछिनी न गुंज हरौवा ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला । भये बिरहवश तब सब ग्वाला ॥
ब्रजबासी सो रूप उपासी । तास्वरूप बिन भये उदासी ॥

दोहा-अकुलाने दृग सबनके, देखनको तिहि काल ॥
मोर पंख धर गुंज धर, मुरली धर गोपाल ॥

---

१ शोकरहित । २ हीरा । ३ सरोवर । ४ अमृत । सीढी । ६ बहुत ।

सो०–ब्रज बासिनके ध्यान, नटवर वेष गोपालको ॥
अमित रूप भगवान, तदपि उपासनरूप यह ॥
बिरह बिवश हरि ब्रजजन जाने। तबहीं तुरत सकल ब्रज आने ॥
कान्ह देखि सब भये सुखारी। रहे चकित शशिवदन निहारी ॥
कहत सबै मन अचरजपाये। कहाँ गये हम कैसे आये ॥
देख्यो स्वप्न सबै इकबारा। किधौं साँच यह करत विचारा ॥
यह चरित्र सब मोहन करहीं। पुर वैकुंठ दिखाया हमहीं ॥
धन्य धन्य हम सबब्रजवासी। ब्रह्म हमारे संग विलासी ॥
हरिके चरण परश सब धाई। करत गोप सब मुखन बड़ाई ॥
हँसि हँसि सबसों कहत कन्हाई। रहे कहाँ तुम सकल भुलाई ॥
आज कहाँ ऐसो तुम देख्यो। सोकिन मोसों कहत विशेष्यो ॥
हम कह देखत नंददुलारे। तुमहीं सकल दिखावन हारे ॥
भूतल नाग, पताल निहारो। सकल जगत तुम्हरो विस्तारो ॥
यह सुनि श्याम मंद मुसकाई। दिये सकल पुनि मोह भुलाई ॥
दोहा–करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रजबासिनके माँहिं ॥
लखि लखि शिवब्रह्मादिसुर, मुनि जन मनहिं सिहाहिं ॥
सो०–अति आँनदब्रजलोग, हरिकनितनवचरितलखि ॥
सबको सब सुखयोग, ब्रजबासी प्रभु नंदसुत ॥
सदा श्याम भक्तन सुखदाई। भक्तन हित अवतार सदाई ॥
संकटमें जन जहां पुकारैं। तहां प्रगट तिनको निस्तारैं ॥
मुख भीतर जिन सुमिरन कीन्हों। तिनको तहां दरश हरि दीन्हों ॥
सुख दुखमें जो हरिको ध्यावैं। तिनको नेक न हरि बिसरावैं ॥
देव दनुज खग मृग नरनारी। भक्त विवश सबते गिरिधारी ॥
चितदै भजै भाव जो जैसे। ताको होत प्रकट हरि तैसे ॥
ब्रह्माकीट आदिके स्वामी। प्रभु हैं निरलोभीनिष्कामी ॥
वेद पुराण सांखि सब बोलैं। भाव वश्य सबके सँग डोलैं ॥

१ अनेक। २ चन्द्रमुख। ३ स्वर्गलोक। ४ दैत्य। ५ साक्षी।

काम भाव ब्रज गोपी ध्यावैं । मन वच कर्महरिसों मन लावैं ॥
इक क्षण हरिको नाहि बिसारैं । मौन काज चित हरिसों धारैं ॥
गोरसलै निकसैं ब्रज माहीं । जहाँ श्याम तेहि मारग जाहीं ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी । रीझे गोपी जन मनहारी ॥
दोहा-नवसत साजि शृंगार तनु, गोरस लै ब्रजनारि ॥
बेंचन इहि मग आवहीं, मोसों प्रीति विचारि ॥
सो०-अब इन संग विहार, करौं दान दधि लायकै ॥
यम मन कियो विचार, हरि ब्रजमोहन लाड़िले ॥

अथ दान लीला ।

दधिको दान रचौं इकलीला । भक्तनकी सुखदायक शीला ॥
दधिदानी निजनाम धराऊं । ब्रज युवतिन मन सुख उपजाऊं ॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई । सबसों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं । या मारगह्वै बेंचन आवैं ॥
तिन्हैं खिजाय दान दधि लीजै । गोरस खाय जान तब दीजै ॥
यह सुनि सखा उठे हर्षाई । भली बात तुम श्याम सिखाई ॥
सबहिन मन अति हर्ष बढ़ायो । कहत श्याम दधिदान लगायो ॥
तवहि जाय घेरयो बन घाटा । आवत नित ग्वालिनि यहि बाटा ॥
कह्यो श्याम सबसों समुझाई । रहो तरुनकी ओट लुकाई ॥
जबहीं ग्वालिनि दधिलै आवैं । घेर लेहु कोउ जान न पावैं ॥
यह सुनि सखा घेर कै बाटा । बैठे ठाटठगनको ठाटा ॥
उतते बनि बनि ग्वालि नबेली । बेंचन दधिहि चली अलबेली ॥
दोहा-हंसत परस्पर आपमें, चली जाहिं जिय भोर ॥
पाय घातमें सघन सब, घेरिलई चहुँ ओर ॥
सो०-देखि अचानक भोर, चकितरहीं चहुँदिशि चितै ॥
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब ॥
शंकित ह्वै ग्वालिनि भईं ठाढी । मनहुँ चित्रकीसी लिखि काढ़ी ॥

१ सोलह । २ रास्ता । ३ मार्ग । ४ वृक्षोंकी । ५ छिपरहो । ६ छैला ।

हाथ पांव अँग भये अडोले। कछु वदन ते वचन न बोले ॥
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई। मति डरपो जिय कान्ह दुराई ॥
इहां चोर ठग कोऊ नाहीं। अभय कान्हको राज्य सदाहीं ॥
आवत जात न भय कुछ कीजै। दधिको दानलगै सो दीजै ॥
नाम कान्हको जव सुनि पायो। तव युवतिनमन धीरज आयो ॥
वोलीं विहँसि तवहिं व्रजवाला। कहाँ तुह्मारे प्रभु नँदलाला ॥
चोरी करि नहिं पेट अघायो। अव वनमें दधि दान लगायो ॥
तव अति वालक हते कन्हाई। सही जु कछु कीन्ही लरिकाई ॥
होउ जो कछु वा धोखे माहीं। परिहै समुझि अवहिं क्षण माहीं॥
प्रगट भये तव कुँवर कन्हाई। देखि सवन वोले मुसकाई ॥
रहि युवती तुम पोच सदाई। करि आई हौ वहुत ढिठाई ॥
दोहा–तवलौं हम लरिकाहुते, सही वात अनजान ॥
सो धोखो अव मेटिकै, छांडि देहु अभिमान ॥
सो०–हम मांगत दधि दान, तुम उलटी पलटी कहत ॥
करत नन्दकी आन, दिये पाइहौ जान सव ॥
तव वोलीं ग्वालिनि मुसकाई। अव तुम डर हम तजी ढिठाई ॥
नन्दहुते कछु तुलै कन्हाई। भयो जानिये तव अधिकाई ॥
काल्हिहि चोरि चोरि दधि खाते। घर घर देखतही भजि जाते ॥
रातिहि भयो स्वप्न कछु आई। प्रातहि भई आज ठकुराई ॥
भली कही नहिं ग्वालिनि वानी। तुम यह वात कछू नहिं जानी ॥
पिता चरित धन धाम जुहोई। पुत्र काज आवतहै सोई ॥
तुमसी प्रजा वसाई गावहिं। तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहिं ॥
कह्यो तवहिं ग्वालिनि झहराई। वात सँभारे कहत कन्हाई ॥
ऐसो को वहिगयो हमारे। जो परजाहैं वसहिं तुह्मारे ॥
कंस नृपतिके सव कहवावैं। कहा भयो जु वसत इक गावैं ॥
जो तुम याते हौ गरुवाने। तौ अव तजि हैं गांव विहाने ॥

१ भरा। २ अहंकार। ३ तमक। ४ प्रातःकाल।

यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली। कहा बात यह कहत गुवाली ॥

दोहा–गांव हमारो छांडिकै, बसिहौ का पुर माहिं ॥
ऐसो को तिहुंलोकमें, जो मेरे बश नाहिं ॥

सो०–कागिनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं ॥
देहु दानको अंस, रारि करत बेकाजही ॥

बड़ी बात छोटे मुखमाहीं। आप सँभारि कहत हौ नाहीं ॥
तीनि लोक अस कंस भुवाला। भयो तिहारे वश क्यहि काला ॥
यह तुम बात कहौ तिनमाहीं। जो कोउ तुमको जानत नाहीं ॥
हम इन बातन भय नहिं मानैं। जैसेहौ तुम तैसे जानैं ॥
हमसों लीजै दान सवाई। पहिले थैली लेहु मँगाई ॥
पीताम्बर बोझन फटि जैहै। तब पाछे पछितावौ ऐहै ॥
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसुकानी। तब बोले हरि दधिके दानी ॥
तू ग्वालिनि हमको कह जानैं। हमनहि झूंठी बात बखानैं ॥
झूंठी हौ तुमहीं सब ग्वारन। सतेर होति हौ बिनही कारन ॥
अजहूं मानि कह्यो किन लेहू। लेखो करो दान ममदेहू ॥
नन्द सौंह यों जान न देहौं। बहुरो छोरि दही सब लेहौं ॥
काहेको अठिलात कन्हाई। छांडि देहु मोहन लरिकाई ॥

दोहा–पहिली परिपांटी चलौ, नई चलौ क्यों आज ॥
जानि पाइहै कंस जो, तौ पुनि होय अकाज ॥

सो०–हँसी घरी द्वैचारि, बीतन लाग्यो यामयुग ॥
बनमें रोंकी नारि, बाढि जाइहै बात पुनि ॥

कहा कंस कहि मोहिं सुनावो। अबहा वाको जाय बुलावो ॥
लरिका कहि कहि मोहि बखानत। मेरी लरकाई नहिं जानत ॥
मारि पूतना स्वर्ग पठाई। तृणावर्त मैंहि दियो गिराई ॥
वत्सा बका, अघासुर मार्‍या। गिरि गोवर्द्धन कर पर धार्‍यो ॥
ऐसी है मेरी लरिकाई। जानि बूझि तुम देत भुलाई ॥

---

१ भाग । २ ऐंठतीहो । ३ रीति । ४ दोपहर । ५ पृथ्वी ।

तुमहीं हँसी करति हौ ग्वारी । देत देवावति हौ हठि गारी ॥
बात जानके भाषत नाहीं । आपहि बैठो हौ बन माहीं ॥
चोरी सदा बेंचि दधि जाहू । बिनादान क्यों होत निबाहू ॥
अबतो आज पकरि मैं पाई । सबदिवसनको लेहुँ चुकाई ॥
सबै भली तुमकरी कन्हाई । बधे असुर सो सुनी बड़ाई ॥
गिरि धारयो बलखाय हमारी । जानी हम सब बात तुम्हारी ॥
मांग लेहु अबहूं दधि खाहू । होत दान सुनि हमको दाहू ॥
दोहा०–हमैं कहत हौ चोरटो, आप भयो जो साहै ॥
बडे भये चोरी करत, अब लूटत हौ राह ॥
सो०–लेहु दही बलिजाउँ, हमको होत अबार अब ॥
लिये दानको नाउँ, एक बूंद नहिं पाइहौ ॥
यह तुम मोकों कहा सुनाई । दधि माखन सब लेहु छिनाई ॥
यौवन रूप अंगजो तुम्हरो । ताको दान लेउँगो सिगरो ॥
कंचन भार युवति तुमसिगरी । आवति जाति हमारी डगरी ॥
दही मही मोको दिखरावो । नाहि न यौवन रूप बतावो ॥
अंग अंगको दान गिनावो । लेखो करि सब मोहि चुकावो ॥
यह सुनि सब ग्वालिनिझहरानी। भये कान्ह तुम ऐसे दानी ॥
अंग अंगको दान चुकावत । यौवन रूपहि दीठ चलावत ॥
जानि परी भगयी तरुणाई । यशुमति सों अब कहिहौं जाई ॥
उर आँनद ऊपर रिस करिकै । चली सबै मटुकी शिर धरिकै ॥
तब हरि पीतांबर कटिकैसिकै । धरयो धाय आँचर पट हँसिकै ॥
रिसकै मटुकी लई छुड़ाई । दधि माखन सब दियो लुटाई ॥
गहि गहि भुजा सबन झकझोरी । अँगिया फारि तनीगहितोरी ॥
दोहा–कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय ॥
दान देत झगरो करत, यौवन रूप लदाय ॥
सो०–जोकहिहौ घर जाय, जननी नाहिं पत्यायहै ॥
आवहुगी पछिताय, निबहौगा पुनि कालिहकिमि ॥

१ चिनोंका । २ साहूकार । ३ बिलम्ब । ४ जवानी । ५ कमर । ६ भरोसा ।

भये कान्ह तुम निपट दुलारे। देखहु फारे बसन हमारे ॥
तापर मांगत यौवन दाना। यह अबलों कहुँ सुन्यो न काना ॥
दधि माखन सब दियो लुटाई। चलो कहैं यशुमति सों जाई ॥
यहकहिग्वालिचलींसबरिस भरि। अबहिं मँगावत हैं तुमको धरि ॥
यह सुनिहरिहँसिभौंहसिकोरी। गईं उरहनो लै सब गोरी ॥
यशुमति सों सब जाय सुनायो। कहा महरि सुतको सिखरायो ॥
अतिही कान्ह भये अब ईतर। रोंकत युवतिनको बन भीतर ॥
दही दूध सब दियो लुढाई। मांगत यौवनदान कन्हाई ॥
चोली फारि हार सब तोरे। गहि गहि आंचर पट झकझोरे ॥
ऐसो को कुल भयो महरिके। यौवन दान लियो जिन अरिके ॥
नित उत्पात जात सहिनाहिन। कहँ लगि पीयर वन दै दाहिन ॥
कैसे गोरस बेंचन जैये। हरिपै मारग चलन न पैये ॥
दोहा०—सुनत ग्वालिनीके वचन, बोली यशुमति मात ॥
मैं जानी तुम सबनके, उर अन्तरकी बात ॥
सो०—आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो ॥
उरन लाय नख घांत, उरहनको दौरी फिरत ॥
दशहि वरषको कहाँ कन्हाई। कहँ सब तुम माती तरुणाई ॥
दोष लगावत श्यामहि आनी। कैसे धौं कहि आवत बानी ॥
हरिपर फिरत सबै मडरानी। यौवन मदमाती इठलानी ॥
तुमको लाज लगतिहै नाहीं। जाहु सबै बैठो घर माहीं ॥
अहो महरि ऐसो नहि कीजै। बिन बूझे गारी नहि दीजै ॥
सुत ऐसो मग चलन न देहीं। मांगत दान लूटि दधिलेहीं ॥
तुमहूं खीझ करत सुतैओरी। ऐसे ब्रजमें बसिहै कोरी ॥
तजि हैं आजाहिं गांवतिहारो। बहुरि न सुनि हौनाम हमारो ॥
ऐसे कहा कहत डरपाई। बसत नहीं किन अनतहि जाई ॥

---

१ पकड । २ उपद्रव । ३ छातीपर । ४ खरोंटे तथा घाव । ५ पुत्रकी पक्ष ।

मेरो कहा कछु घटि जैहै। झूंठी बात नहीं कोउ सैहै॥
यौवन दिन द्वै सबहिन बोरी। तुम बांधति आकाशहि डोरी॥
मोसों कहति आप तुम जैसी। कोपतियाय बात सुनि तैसी॥
दोहा—बोलत नहीं सँभारितुम, सब मिलि भई गँवारि॥
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढावति रारि[1]॥
सो०—महरि मनहिं रिसियाय, हम झूंठो भाषैं नहीं॥
जो तुम नाहिं पतियाय, बूझि न देखो आनसों॥
तुम सुतके कर्मन नाहिं जानो। हठकरि टक आपनी मानो॥
दश गायन करि कहा बड़ाई। अहिर जाति सब एकहि माई॥
महाढीठहरि मानत नाहीं। वनमें झगरत गहि गहि बाहीं॥
सखा भीर, सँग लीन्हे डोल। वन कुञ्जनमें करत कलोलै॥
नेकुसकुच शंका नहिं आनै। सोई करत जो कछु मन मानै॥
यह सुनि कहत नंदकी नारी। कहत गैलकी बात इहांरी॥
और चली कह इहां जातकी। मुहिंरिस सुनिअनमिलतबातकी॥
कहां बसत तुम कहां कन्हाई। कब हरिबाँह गही बन जाई॥
कहत बात नहिं नेकलजाहू। सुनिहैं कहीं तिहारे नाहू[2]॥
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो। तुम नाहिं अपनी ओर निहारो॥
ऐसी बात कहतिहो आई। झूंठो दोष सह्यो नहिं जाई॥
नेकुनहीं डर करत ईशको[3]। मनो भयो हरि वर्ष बीशको॥
दोहा—धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज॥
माखन मांगत रोय हरि, दोष देति बिन काज॥
सो०—सुनहु महरि तुम बात, हरिसीखे टोना कछू॥
बनहिं तरुण ह्वै जात, बालकह्वै आवत घरहि॥
एक दिवस किन देखौ जाई। वनमें तरुकी ओट छिपाई॥
हैं हरि दशकै बीश वरषके। देखहु अपने नयन निरखिके॥
जाहु चली मैं सब देख्यो है। एक एक दिन करिलेख्यो[4] है॥

---

१ तकरार। २ तुम्हारे पति। ३ परमेश्वरको। ४ परिक्षा करी है।

दश अरु बीश बनावन आई। ढीठ लगावति है घरमाई ॥
जरहिं बरहिं ये आंख तुम्हारी। जो हरिको नाहिं सकत निहारी ॥
आप करत ढिग चरचाजाई। मोकोसाखि दिखावन आई ॥
अहो महरि कहिये का तुमसों। कहे बिलग मानतहौ हमसों ॥
सुतकी कानि मानि तुम लीनी। गारी कोटिक हमको दीनी ॥
हमैंकहा मोहन प्रियनाहीं। जीवहु युग युग हरि ब्रजमाहीं ॥
कहा करैं जब बहुत खिझावैं। तब हम तुमहीं कहनको आवैं ॥
भलो बोध हमको तुमकीनों। उलटहिदोष हमारो दीनों ॥
सुतको हटकत नेक न माई। हमहीं सो रिस करतिसदाई ॥
दोहा–कहा करौं तुम आय सब, कहत अटपटी बात ॥
मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहैसुहात ॥
सो०–मन आपन गुणिलेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नाहिं ॥
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मोसों मति कहौ ॥
महरि वचन सुनि ग्वालिनि सगरी। निर उत्तरह्वै घरको डँगरी ॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो। कृष्ण प्रेम रस सागर सिगरो ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई। ब्रजवासी जनजीवन गाई ॥
ब्रज घरघर सबहिन सुनिपाई। मोहन दधिको दानलेगाई ॥
सबगोपिनमिलि रुचि उपजाई। जैये दधिलै जहां कन्हाई ॥
यह अभिलाषै सबन मन बाढ्यो। राख्यो गुप्त न बाहिरकाढ्यो ॥
श्याम सखन को लियो बुलाई। कह्यो सबनसों यों समुझाई ॥
कालिह उठहु सबग्वाल सबेरे। चलिकै वृन्दावन मग घेरे ॥
प्रातहि यमुनाके तट जाई। तरुचढि चढि सबरहौ लुकाई ॥
ब्रज युवती मिलि आपसमाहीं। नित प्रतिदधि बेंचनको जाहीं ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा। ललतादिक नागरी बरूथा ॥
गोरसलै जबहीं सब आवैं। घेरि सबन तब दान चुकावैं ॥
दोहा–सुनि मन हर्षे ग्वालसब, भली कही हरि बात ॥

---

१ टेढीदृष्टी। २ चलीं। ३ इच्छा। ४ झुंड। ५ झुंड।

सांझ भई चलिये सदन, कालिहउठहिंगे प्रात ॥
सो०—निज घर घरसव आय, मात पिताको सुख दियो ॥
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खायके ॥
प्रात उठे सब गोप कुमारा। जहँ तहँ बोले खुले किवाँरा॥
सुनी श्याम ग्वालन की बानी। जागतहू सोवत पटतानी॥
नंदद्वार बैठे सब आई। आवहु उठि घनश्याम कन्हाई॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदामाता। दिये जगाय श्याम सुखदाता॥
मात वचन सुनि अति अतुराई। उठे सेजते कुँवर कन्हाई॥
लैपट पीत मुकुट शिरधारी। मुरली करलै चले मुरारी॥
सखन सहित यमुनातट आये। कहत सखनसों अतिसुखपाये॥
भली करी उठि प्रातहि आये। मैं जानत सब तुमनबुलाये॥
आवतह्वैहैं अब ब्रजभामिनि। घर घरते दधि लै गजगामिनि॥
हँसे सखा सब तारि बजाई। मनमें अतिआनन्द बढ़ाई॥
कहत सखनसों हँसिनँदलाला। जाय द्रुमन सब चढ़ौ ग्वाला॥
मुँहमूंदे सबरहौ छिपाने। जिहि विधि युवति नकोऊजानें॥
दोहा—जबहीं जान्यो युवति सब, आईं बनहिं मँझाय ॥
कूदिपरो तब द्रुमनते, दे दे नंद दुहाय ॥
सो०—शंख शब्द घहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि ॥
डरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवती गण सबै ॥
घेर सबन इहि विधि डरपाई। बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई॥
नितहिं हमारे मारग आई। दधिमाखन बेंचत हौ जाई॥
हरिको दान मारि नित जावो। आजदिये बिन जान न पावो॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत। अपने मनकी प्रीति बढ़ावत॥
ब्रजबनितन लखिकै सुख पाऊं। तुमसों नाहिन कछू दुराऊं॥
यहि मारग बेंचन दधि आवैं। अन्तर गति मोसों हित लावैं॥
आवत ह्वैहैं बन सब बाला। करत बात ऐसे नँदलाला॥

१ भागकर। २ जल्दीसे। ३ गोपियां। ४ वृक्षोंपर। ५ भीतरसे।

प्रात उठीं सब गोप किशोरी । चित्र विचित्र वसन तनु धोरी ॥
अंग अंग आभूषण साजैं । केश सँवारि चारुदृग आँजैं ॥
अँगिया अंग अनूप सँवारी । चित्र विचित्र बसन तनु धारी ॥
वैंदी भाल मांग मोतिनकी । अंग अंगछबि नग ज्योतिनकी ॥
दर्शनदमक अधरन अरुणाई । चिबुँकनीलकनकी छबिछाई ॥
दोहा--गोरे तनु मुख छवि सदन, नव यौवन ब्रजनारि ॥
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमावढी अपारि ॥
सो०--ब्रजके खेडे जाय, भईं ग्वालि इकठौर सब ॥
निज निज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपरधरे ॥
वेंचन दही चलीं ब्रजनारी । षट्दश सहस गोप सुकुमारी ॥
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई । कहत न एकहि एक जनाई ॥
करत जाहिं गुणगान विहारी । पगनूपुरकी धुनि अति भारी ॥
हरि जानी युवती आवत जब । कह्यो सखन द्रुम जाय चढ़ो अब ॥
सुनत श्यामके मुखसों बैना । धाय चढ़ी द्रुम बालक सैना ॥
पञ्च सहस्र सखा समुदाई । जहां तहां द्रुमरहे लुकाई ॥
कछुक ग्वाल सँगराखि कन्हाई । निकसिगये आपुन अगुवाई ॥
ठाढे भये घेरि बनघांटी । लैलै करन सुमनकी सांटी ॥
इहि अन्तर आईं ब्रजनारी । देखत बन लाग्यो कछु भारी ॥
पाछेहींते लईं हँकारी । कहत तिन्हें अबहीं तुमहारी ॥
एकसंग जुरिभईं तरुणि तब । इत उत चकित चलीं चितवत सब ॥
आगे दृष्टिपरे नँदनंदन । मुकुटशीशतनु चित्रित चंदन ॥
दोहा--लिये सखा सँग मग गहे, ठाढे यमुना तीर ॥
ठिटुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर ॥
सो०--भयो हर्ष उरमाहिं, कहत वचन मुख भय सहित ॥
आगे कैसें जाहिं, मगमें ठाढो साँवरो ॥

१ ललाट । २ दांत । ३ ओठ । ४ ठोडी । ५ सोभा ।

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं । कोऊ कहत घरहि फिरि जाहीं ॥
कोउ कहै का करै कन्हाई । इनहूं सों कहँ जाहिं पराई ॥
कोऊ बोलि उठी ब्रजबाला । लूटि लई हमैं काल्हि गुपाला ॥
अतिही ढीठ भयो है कान्हा । मांगत है गोरसको दाना ॥
सुनि ऐसो मोहन को ख्याला । घरको फिरीं सकल ब्रजबाला ॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई । कूदहु विटपन ते झहराई ॥
जात फिरीं युवती ब्रज गावहिं । घेरिलेहु कोउ जान न पावहिं ॥
तब ग्वालन बनमें चहुँधाई । झर झराय तरु डार हलाई ॥
शंख मृदंग मुरलि करतारी । कीने शब्द सबन यक बारी ॥
चकित द्रुमन चितई सब बाला । डारन डारन देखे ग्वाला ॥
कूदि कूदि तरुतरुते धाई । घेरिलई तरुणी सब जाई ॥
कहा नितहि दधि बेचन जाहू । आज पकरि पायो सब काहू ॥

दोहा—दान लगत ह्यां श्यामको, सो सब लेहिं चुकाय ॥
अब तौ देहैं जान तब, तुमको नन्ददुहाय ॥

सो०—दधि लै जात प्रभात, आवति हौ निशि बेंचिकै ॥
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नहिं ॥

ठाढे यमुना तीर कन्हाई । जाहु चली निज दान चुकाई ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो इक ग्वाली। नई बात इक सुनहु रि आली ॥
मांगत दधिको दान मुरारी । सिखै पठाये हैं महतारी ॥
सो ये सखा लेन सब आये । यमुना तट ते श्याम पठाये ॥
काहेको सब मिलि इतराहू । सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि माखन कछु चाहत कोऊ । सूधे मांगिलेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहौ सुख होई । बांधत कहा अकाश खँरोई ॥
दान बजार हाटमें पावो । यह निज कान्हैं जाय सुनावो ॥
बोले सखा सुनहुरी ग्वारी । हमजानी अब बात तुह्मारी ॥
गांव बसेकर यह दुख होई । नाहिं सकात चीन्हे सों कोई ॥

१ भामकर । २ वृक्षवृक्षसे । ३ वृक्षोंसे । ४ निश्चयही । ५ दुकान ।

मारग अपनो दान उगाहू । कहत मांगि किन हम पै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहिं उगैहैं । अपनो दान तुमहुं पै चैहैं ॥
दोहा–लेखो करि सब कान्हको, दीजे दान जगात ॥
चलो जाहु सुखसों डगर, फेरि कहै कोउबात ॥
सो०–तुमको कैसो दान, कौन कान्ह मांगत कहा ॥
परिहै अबहीं जान, रोकत हौ बनमें तियन ॥
आये तबही निकट कन्हाई । संग सखनकी भीर सुहाई ॥
बोलि उठीं लखि नागरि सगरी । कहा श्याम तुम करत अचकरी ॥
नारिन को रोंकतहौ बनमें । जैहै बात दूरिलौं क्षणमें ॥
आजहि दान पहिरि तुम आये । कहा छाँपिकणि तुमहिं पठाये ॥
वैसी चाल चलो नँदलाला । चलत बाप तुम्हरो जिहिचाला ॥
वृथा न रारि करहु बनमाहीं । छांड़ि देहु दधि बेचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधि दान न दैहौ । बिना दान दीन्हे नाहिं जैहौ ॥
लैहौं छीनि दूध दधि माखन । देखत ही रहिहौ सब आंखन ॥
मात पितालौं उघटत बानी । नहिंजानतमोको दधि दानी ॥
जात नितहि नित बेचि चुराई । सब दिवसनको लेहुं भराई ॥
मांगत छाप कहा दिखराऊं । काको तुमको नाम बताऊं ॥
ऐसो को मोको नाहिं जानत । एक नहीं मोको तुम मानत ॥
दोहा–नीके हम जानत तुम्हें, गोद खिलाये कान्ह ॥
वे दिन अब बिसराय सब, भये जगाती आन ॥
सो०–करहु नहीं लगि बात, जो निबहै सुख पाइये ॥
ऐसी क्यों सहिजात, नितहि हमैं दधि बेंचनो ॥
अजहूं मांगिलेहु दधि दैहैं । खाहु सहज में हम सुख पैहैं ॥
दान बचन तुम हमहिं सुनायो । यहै हमैं सुनिकै नाहिंभायो ॥
होत अबार जान अबदीजै । नईरीति मोहन नाहि कीजै ॥
गोरस लेत मात सब कोई । बहुरि परयो रहिहै ऐसोई ॥

१ कर । २ रस्ते जावें॥ ३ अचपलाहट । ४ अपरास । ५ करलेनेवाले ।

दान दिये विन जान न पैहौ। जबदेहौ तबहीं सबजैहौ॥
तुमसों बहुत लेन है हमको। सो नाहिं अबहिं सुनावत तुमको॥
नितहि हमारे मारग आवत। मोको कबहूं नाहिं जनावत॥
दिन दिन को लेखो भरिलैहौं। अबतौ तुम्हें जान तबदैहौं॥
ऐसो हठ कह करत मुरारी। बनमेंरोकत नारि परारी॥
आये दान पहिरि तुम कापै। चलहु न हम सब चलिहैं तापै॥
तुम अपने घरहीके राजा। सबको राजा कंस विराजा॥
जो कहुँ सुनत नेकुसी पैहैं। बहुरि सँभारि अबहिं परिजैहैं॥
दोहा–हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गांव॥
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहिहै यहि ठांव॥
सो०–करत फिरत उतपात, लिये सखा सँग संगके॥
नाहिंन नेक डरात, कठिन कंसको राज्य है॥
यह सुनि कान्ह उठे रिसि याई। लीन्हो कछु दधि दूध छिनाई॥
बसन छोर तरु सों उरझाये। कछु दधि भाजन भूमि लुढाये॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो। आजहि मोहिं हुजूर बुलावो॥
मारौं एक पलकमें वाहीं। मोको कहा बतावत ताहीं॥
अब तौ मोसों बैर बढायो। लैहौं दान आपनो भायो॥
मेरे हठ क्यों निबहन पैहौ। देखो अब धौं कैसे जैहौ॥
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं। गोरस बेंचि बहुरि घर ऐहैं॥
बोले ज्वाब न तुमको दैहैं। नेकहु तुमसे नाहिं डरैहैं॥
सुनि गृहते जैन ऐहैं जबहीं। नहिं संभारि सकिहौ हरितबहीं॥
एक बूंद गोरस नहिं पैहौ। देखत ऐसेही रहिजैहौ॥
धरिकै यशुमतिपै लैजैहैं। तहां श्याम पुनि वचन न ऐहैं॥
मानो कह्यो हमारो अबहूं। हम पै दान न पैहौ कबहूं॥
दो०–गुहजन कहा बतावहू, कंसहि लेहु बुलाय॥
देखतही तुम सबनके, पूजा करौं बनाय॥

---

१ पराई। २ पुकारेंगी। ३ उपद्रव। ४ पात्र ५ हमारे घरके।

सो०-जैहौ धौं केहि भाँति, अब देखहुँ गो मैं तुम्हैं ॥
बात कहत अनखाति, सूधे देतो दान नहिं ॥
जो मानत नहिं कंसहि राजा । तौ अब, भये तुमहिं ब्रजराजा ॥
तौ सिंहासन बैठत नाहीं । गाय चरावत कत बनमाहीं ॥
मोर पखनको मुकुट उतारो । नृप किरीट[२] माथे पर धारो ॥
पहिरत कहा गुंजके हारा । नृप भूषण किन करत शृंगारा ॥
छत्र चमर शिर ऊपर राजैं । तजहु मुरलि अब नौबत बाजैं ॥
हमहूं यह लखिकै सुखलीजे । संगहि संग काज कछु कीजे ॥
झगरत कहा दहीके काजा । लखि हमको उपजतहै लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तीकी । तुम्हरे चित रजधानी नीकी ॥
मेरो दासन दास कहावै । सपनेहूं यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि शिर छत्र धराऊं । कहा तुच्छ यह, साध पुराऊं ॥
ब्रजमें मेरो राज सदाई । और इहां काकी ठकुराई ॥
तुम कछु राज बडो करि मानो । मेरी प्रभुताको नाहिं जानो ॥
दोहा-हमहूं जानतहैं तुमहिं, लरिकाई ते कान्ह ॥
काहेको अपने बदन, कीजत बहुत बखान ॥
सो०-फिरत चरावत गाय, कांधेकामरि कर लकुट ॥
देखीहै ठकुराय, कत बढि बढि बातैं करत ॥
यह कमरी कमरी तुम जानो । जितनी बुधि तितनी अनुमानो ॥
यापर वारौं चीर पटम्बर । तीन लोककी यह आडम्बर ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी । सो कमरी कत निंदत ग्वारी ॥
कमरीके बल असुर सँहारौं । कमरीते संतन उद्धारौं ॥
या कमरीते सब सुख भोगा । जाति पाँति यह मम सब योगा ॥
सुनतहँसी सब ब्रजकी बाला । यह तुम सांच कही गोपाला ॥
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी । सब विधि तुम्हैं निबाहन हारी ॥
यहै ओढ़िकै गाय चरावो । यहै सेजकरि भूमि बिछावो ॥

१ रिसहोकर । २ मुकुट । ३ त्रिरमिटी । ४ नालिकी ५ मुख ।

याहीते वर्षाऋतु टारो। शिशिरशीत याते निर्वारो ॥
याते ग्रीषम घाम बचावो। यहै उठगनी शीश बनावो ॥
यहै जाति यह गृह यहटाठी। यहै सिखावत सब परिपाटी ॥
हमजो कहन चहतही तुमसों। कही सो तुम अपने मुख हमसों ॥

दोहा–कहीजात अपनी प्रगटि, नीके हमैं हँसाय ॥
तापर मांगत दान दधि, युवतिन रोकि कन्हाय ॥

सो०–कामरि ओढनिहारि, तुम्हैं न छाजत पीतपट ॥
कारे तनु पर चारि, कारी कामरि सोहई ॥

मोसों बात सुनो ब्रजतिय सब। सत्य कहत उपमा न जगत सब ॥
बालक अरु तिय मुख नाहिं दीजे। इनसों बहुत हेतु नाहिं कीजे ॥
मूड़ चढत[1] नेकहि चुचकारैं। जो मनकरै सोई करि डारैं ॥
सोई गुण प्रगटत तुम जाहू। कतक कहत मैं तुम अठिलाहू ॥
जानहु कहा हमैं तुम ग्वारी। सदा छाँछकी बेचन हारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं। नंद महरके सुत पहिचानैं ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे[2]। गाय चरावतहू बन पेखे ॥
चोरी करी वहौ पुनि जाने। खिरिका खोलत फिरत बिराने ॥
ये ढंग छांडि भये अब दानी। यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति जब बाँधे। ऊखल सों दोऊ भुजसाधे ॥
तब सहाय करि हमहिं बचाये। करके बंधन जाय छुड़ाये ॥
जानत यहै रहत ब्रज माहीं। हम ते दूरबसत कछु नाहीं ॥

दोहा–कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनिबात ॥
कब जनमत देख्यो हमैं, कौन मात को तात ॥

सो०–कबै चराई गाय, कत चोरी पकरयो हमैं ॥
कब बाँधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥

तुमजानहु मोहि यशुमति जाये। यशुमति नंद कहाँते आये ॥
मैं पूरण अविगति अविनाशी। बांधे सब मायाकी फांसी ॥

१ चढजावे। २ देख।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजबाला । ऐसेउगुण जानत गोपाला ॥
जैसें निदर्‍यो तुम सब काहू । तैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति महर न जाये । तौ तुम कहौ कहांते आये ॥
घर घर माखन चोर्‍यो नाहीं । बांधे मात न ऊखल माहीं ॥
हाहा करि हम नाहिं छुडाये । ग्वालन संग न बच्छ चराये ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी । यसब बातें झूंठ तुम्हारी ॥
भक्त हेतु जन्मत जगमाहीं । कर्म धर्म के मैं वशनाहीं ॥
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊं । दीन गोहांरि सुनत उठि धाऊं ॥
भावांधीन रहौं सब पासा । और नहीं कछु मोको त्रासा ॥
ब्रह्मा कीट आदिके माहीं । व्यापक हौं समान सब ठाहीं ॥

दोहा–कहा कहांकी बात कहि, डरपावतहौ नारि ॥
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत वारहिंवार ॥
सो०–इहां सुनावत काहि, जो लायक तो अपको ॥
कौन प्रकृति यह आहि, बनमें रोंकत हौ तियन ॥

केतक दधिको दान कन्हाई । जिहि कारण युवती अरुझाई ॥
दधि, माखन सबही तुमलेहू । रीती जान हमैं घरदेहू ॥
जो तुम याही में सुख पावो । काहेको बहुबात बनावो ॥
दधि माखन कह करों तिहारो । सकल बणिजको दान निवारो ॥
जो जो वणिजनिताहि तुमलावो। लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहौ । जबलगलेखौ मुहिं न बुझैहौ ॥
करत बणिज तुम नये बनाये । नित उठि जात जगात बचाये ॥
सुनि वाणी हरि नागरनटकी । दैदै सैन युवति सब सटकी ॥
मनहीं मन अति हर्ष बढाई । बोली हरि सों सब मुसकाई ॥
ऐसे कहौ बणिजको अटके । अबलौं श्याम कहां तुम भटके ॥
हमहूं कहि मन मांझ लजाई । कह मांगत दधि दान कन्हाई ॥
वणिजहेतु रोकी अब जानी । तबहीं क्यों न कही यह बानी ॥

१गरीबकी पुकार । २ भावकेवस । ३ डर । ४ चिउंटी ।

दोहा–हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा वणिज हम पास ॥
कहो श्याम सो नाम धरि, देहिं दान हम तास ॥
सो०–भूले कहा कन्हाय, बणिज कहूं युवती करत ॥
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये ॥
कहौ तुमहिं बूझत कह हमही । लै लै नाम बतावो तुमहीं ॥
तुम जानत मैं हूं कछु जानौं । तुमते माल दुनाहिं छिपानौं ॥
डारि देहु जापर जो लागै । फिर न कछू तुमसों कोउ मांगै ॥
इतनेहीं को लरत वृथाहीं । देखौ समुझि सबै मन माहीं ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी । समुझतहीं कछु इनकी बानी ॥
इनही सों बूझौ सब कोऊ । कहा बतावत सुनिये सोऊ ॥
हरिकी गूढ मधुर रस बातें । सुनि सुनि सुख पावत सब जातें ॥
कोइ काहूको भेद न जानैं । लोक लाज डर सब कोउ मानैं ॥
मन मन हर्ष भई सब सुंदर । जानैं हरि सब रसिकपुरंदर ॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला । कहत नाहिं क्यों तुमहिं गुपाला ॥
कहा माल देख्यो हम पाहीं । जिहि कारण रोकी बनमाहीं ॥
बैल लदाये देख्यो हमको । कहौ हमैं बूझतिहैं तुमको ॥
दोहा–लौंग जायफर लायची, गिरी छुहारे दाख ॥
कहलादे हम जात, हैं सो कहिये किन भाख ॥
सो०–दीजे बणिज बताय, ताकी देहिं जगाति हम ॥
तुमको नंददुहाय, जो अब बेग कहो नहीं ॥
कौन वणिज कहि मोहिं बतावो । लोन मिरच कहि कहि बहँकावो ॥
तुमतौ माल गयंद लदायो । महिष वृषभ कहि मोहि सुनायो ॥
बड़े मोलकी बस्तु जो होई । कैसे दुरत दुराये सोई ॥
मो आगे तुम कहा छिपावो । देहो दान जान तब पावो ॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी । दधिको दान मेटि यह ठानी ॥
देती दही कछुक हम छोहन । खाते लै ग्वालन सँग मोहन ॥

१ सोना । २ छिपोहुई । ३ रसिकनके इन्द्र । ४ कर । ५ हाथी ।

इन बातन अब खोयो सोऊ । यह करि युवति हँसीं सब कोऊ ॥
श्याम कही मैं जानत तुमको । सूधे दान न देहौ हमको ॥
दधि माखन तौ लैहौं छोरी । उठिकै भुजगहि गहि झकझोरी ॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी । कहत भये तुम ढीठ मुरारी ॥
हरि रिसकरि अंकमें गहि लीन्ही । इहि मिस भेंट प्रेमकी कीन्ही ॥
टूटि गई प्यारी उरमाला । तब घेरे युवतिन नँदलाला ॥
दोहा-गहि गहि अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढाय ॥
हँसत सखा सब तारिदै, पकरे गये कन्हाय ॥
सो०-हांक दई नँदलाल, तबहिं सखन ललकारिकै ॥
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हें श्याम छुडाय तब ॥
रिसकरि बोले ग्वाल सयाने । भई ढीठ हरिको नहिं जाने ॥
हम भइँ ढीठ भलो तुम कीन्हो । देहौं ज्वाब दई को चीन्हों ॥
बन भीतर रोंकी सब बाला । देखौ हमैं कियो जंजाला ॥
बात कहनको एहू आवत । बडे सुधर्मा आप कहावत ॥
ऐसी साख सखा की भरि सब । आवहुगे नृपजीत सबै तब ॥
जानी बात तुह्मारी सबकी । तजहु ख्याल लरिकाई तबकी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहो । कियो आपनो तौ तुम पैहौ ॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं । मात पिता हमको कह कैहैं ॥
तोऱ्यो मुक्ताहार कन्हाई । घरहि कहा कहिहैं हम जाई ॥
आपन भई सबै तुम भोरी । हरिको दोष लगावत गोरी ॥
जब तुम झपटी पीत पिछोरी । तब उन मोतिनकी लरतोरी ॥
मांगत दान श्याम कबसैंती । तुम अठिलात ज्वाब नाहिं देती ॥
दोहा-लेहिं छोरि सबते अबहिं, देखतही रहिजाहु ॥
झक झोरा झोरी करत, नँदनन्दनहिं डराहु ॥
सो०-को त्रिभुवन के माहिं, मोहनकी सरि दूसरो ॥
तुम सब जानत नाहिं, नँदनन्दन ब्रजराज सुत ॥

१ गोदमें । २ कंसको जीतकर । ३ मोतियोंकीमाला । ४ त्रिलोकी । ५ बराबर ।

कहा बड़ाई इनकी सरमैं। इनको जानति नीके कर मैं॥
नृपति त्रास वसुदेव निकारे। नंद यशोमतिने प्रतिपारे॥
आयेहै शुभ घरके माहीं। काहू बदत ताहिते नाहीं॥
पहिले जब उन भुजाझकोरी। तब हम झटकी पीत पछोरी॥
याते ढीठ कही तुमको हम। श्यामहि झिरकन हार भई तुम॥
इतने पर मानत नाहिं हारी। तबते हमैं देतहौं गारी॥
बहुत सही हम बात तुह्मारी। वणिजे करत अरु झगरत ग्वारी॥
ब्रज ऊपर मन मोहन दानी। अबलौं तुम यह बात न जानी॥
बोलि उठे तब कुंवर कन्हाई। अब नहि छोडों नंद दुहाई॥
अब तौ दांव आपनो लेहौं। तबहीं जान सबनको देहौं॥
कौन बात यह कहत कन्हाई। मांगत कहा जान नाहिं जाई॥
फिरि फिरि करि करि नंद दुहाई। डरपावतहौ हमको आई॥
दो०–डरपावहु तुम जाय तिन्ह, जो कोउ तुह्मैं डराहिं॥
यहँ डर पावत कौनको, तुमतैं घटि हम नाहिं॥
सो०–जैहैं यशुमति पाहिं, तोरयो हार भली करी।
यहौ बनत पै नाहिं, इतनो धन कहँ पाइहौ॥
एक हार मोहिं कहा बतावो। सब अँग भूषण माँहि दुरावो॥
मोती मांग जराऊ टीको। करणफूल बेसर नगनीको॥
कंठ शिरी दुलरी तिलरीगर। तापर और हार जो चौसर॥
सुभग हमेल बिजोटा बाजू। कंकण पहुंचिन मुँदरिनसाजू॥
कटि किंकिणि नूपुर पग देखौ। जेहरि बिछिया ये सब लेखौ॥
शोभा साज और अँगमाहीं। सबको नाम लेत क्यों नाहीं॥
याहूमैं कछु बांट तुह्मारो। अचरज आय सुनोरी भारो॥
भूषण देख न सकत हमारो। याही लिये भयो घटवारो॥
आपनहूं कछु दई गढाई। महरि यशोमतिके नँदराई॥
आई पहिरि जितो हम याहीं। याते दूनोंहै घरमाहीं॥

१ भय। २ व्यापार। ३ कमर।

देखि परत कछु बहुत लुभाने । बनधौं सूनो लखि ललचाने ॥
बाँटि कहा तौ लों सब मेरो । जौलौं तुम नाहें दान निबेरो ॥
दो०—आभूषणको कह कहत, बहुन बस्तु तुम पास ॥
मानौ मैं जानत नहीं, सो किन करत प्रकास ॥
सो०—लेहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बांटि पुनि ॥
पैहौ तबहीं जान, मैं तुमसों सांची कहत ॥
भये श्याम ऐसे रसनागर[1] । युवतिनमें अब होत उजागर ॥
काल्हिहि गाय चरावन जाते । छाक मांगि ग्वालन सँग खाते ॥
कांधे कामरि लकुटी हाथा । बनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट कटि कसि आये । लैकर लकुटी बडे कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना । मांगत युवतिनसों वह दाना ॥
देहौ दानकि झगरतिहौ तुम । बहुत तुह्मारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दान जैन जात निबरिये । तापाछे तुम हमहिं निदरिये ॥
कहत कहा निदरेसेहौ तुम । सहजहिं बात कहति तुमसों हम ॥
आदिहिते तुमको पहिचानें । दान कहा सो हम नाहिं जानें ॥
ग्वालिनि चलीं सबै रिस करि करि दधि मटुकी माथे पर धरि धरि ॥
तब हरि गहि अंचर झरकारी । जाति कहां हौरी बनिजारी ॥
इतनो बणिज लिये तुम जाहू । बिना दान क्यों होतनिबाहू ॥
दो०—नाम तुह्मारे वणिजके, सब मैं देहुँ बताय ॥
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय ॥
सो०—सब क्यों छोड्यो जात, एक होय तौ छोंडिये ॥
तुम विचारि यह बात, देखहु अपने चित्तमें ॥
एती बस्तु लिये तुम जावो । दान देति मेरो खिजरावो ॥
मत्तगयंद[3] तुरंगम[4] तुमसों । कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हंस मोर केहरि[5] मृग वारे । कनक कलश मदरससों भारे ॥
चमर सुगंध कपोत कीर[6] बेर । कोकिल विद्रुम[7] व्रज[8] धनुष शर ॥

---

१ रसज्ञाता । २ छबी । ३ हाथी । ४ घोडा । ५ सिंह । ६ तोता ७ मूंगा । ८ हीरा ।

ऐतौ धन खग मृग तुम पाहीं । कैसे निबहत दान बिनाहीं ॥
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला। कहा बतावत तुम नँदलाला ॥
तिनको नाम लेत हम पाहीं । जो हम स्वप्ने देख्यो नाहीं ॥
कहां तुरंगम गज हम पाये । कब हम कंचन कलश गढ़ाये ॥
मान सरोवर हंस रहाहीं । चमर धनुष शर कहा कहाहीं ॥
ये सब हम पै कहा बतावो । जहाँ होय तहँ दान चुकावो ॥
इतनो सबै तुह्मारे पाहीं । करि बिचार देखौ मनमाहीं ॥
अपने सब अँग अंग निहारो । यौवनरूप और है न्यारो ॥

दो०—करहु निबेडो वेग सब, काहे करत अबेर ॥
कहो तुम्हैं कछु हम कहैं, घरको जाहु सबेर ॥

सो०—दीजै दान चुकाय, अब जान्यो अपनो वणिज ॥
कहौं फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित ॥

चमर चिकुर[1] भ्रूधनुष[2] सँभारे । शर कटाक्ष मृग दृगकजरारे[3] ॥
कंठ कपोत कोकिला बानी । रदहीरा[4] शुकनाक बखानी ॥
अधर सधर विद्रुमसो[5] जानो । है मयूर घुंघटपट मानो ॥
कंचन कलश उरोज[6] निहारो । यौवन मदसों भरो बिचारो ॥
कटिके हरिके रूप सुहाई । हंस गयंद चाल छबिछाई ॥
सौरँभ[7] अंग सुगंध सुहायो । यौवन रूप न जात बतायो ॥
इतनो है सब बणिज तिहारो । होय अंशसो देहु हमारो ॥
खरी किये निबहौगी कैसे । लेहौं दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हँसि बोली ब्रजनारी । अब समुझी हरि बात तुह्मारी ॥
मांगत ऐसो दान कन्हाई । जानि परी भगटी तरुणाई ॥
याही लालच अंक भरतहौ । पुनि पुनि गहि आंचर झगरतहौ ॥
अपनी ओर देखितो लीजै । ता पाछे बरियाई कीजै ॥
दो०—याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन संग ॥

१ बाल । २ भौंह । ३ नेत्र । ४ दांत । ५ मूंगा । ६ स्तन । ७ सुगन्ध ।

वेरतहो युवतीनको, प्रगट्यो अंग अनंग ॥
सो०-बैठि रहौ घर जाय, यह मंति चितमें मति धरौ ॥
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातन सों लला ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो वनमाली। कत हम पर रिस करत गुवाली ॥
सूधे हम इक बात बखानी । तुमकत शोर करत अनखानी ॥
कबहुँ घटावति हौ मर्यादा । कबहूं जोइ सोइ करत विवादा ॥
झातहिं ते झगरत बिन काजे । दान निबेर जात नाहिं साजे ॥
हरि यों कबते भये सयाने । उलटहिं तुम हमपर सतराने ॥
बेटी बहू बड़े घरकी हौ । कत बिलंब बनमें करती हौ ॥
बूझिय तुमसों हम जो बखाने । सो तुम कह आगे सतराने ॥
कहिये मोहन बात बिचारी । कहवावत सर्वज्ञ बिहारी ॥
परगट ऐसो दान सुनावत । हमरो ब्रज उपहास करावत ॥
परै बात महराने जाई । तुमहिं लाज कै हमहिं कन्हाई ॥
ब्रजमें जो ये बात सुनैंगे । जाति पांतिके लोग हँसैंगे ॥
जान देहु अब हमहिं गोपाला । कहियो भ्रात फेरि नँदलाला ॥
दो०-बोलि उठ्यो तब इक सखा, सुनहु ग्वालिनी बात ॥
प्रीति करत नँदलालसों, कत बावरी लजात ॥
सो०-हरि सँग करहु विहार, नवल श्याम नवला तुमहुँ ॥
हँसनदेहु संसार, भलो मनावो कान्हको ॥
सुनि बोली ब्रजयुवति रिसाई । कहवावत यह बात कन्हाई ॥
आपुन यौवनदान बनावत । तापर जोइ सोइ सखन सिखावत ॥
बनमें सबन घेरि बैठाई । करत श्याम तुम अति लँगराई ॥
भूलिगये वे दिवस कन्हाई । घरघर माखन खात चुराई ॥
खीझतहीं दृगनीर चुचाते । उरडरात घरको भजिताते ॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा । हमहि छुड़ाय लिये तब गोदा ॥
अब भये बड़े बड़ी चतुराई । ताते यौवन दान सुनाई ॥
लरिकाई की बात बखानें । कैसी भई कहा हम जानें ॥

१ बुद्धि । २ रिसभई । ३ ढिठाई । ४ कुलमें

कब धौं खायो माखन चोरी। मैया धौं बांध्यो कब डोरी॥
नेकहु ताकी सुधि नाहिं जाने। मान अमान न तब हम माने॥
भले बुरेको ज्ञान न होई। अपनो पर कछु समझ न कोई॥
खेलत खात हर्ष हिय माहीं। बालपनेके दिवस बिहाहीं॥
दोहा–अपनी सूरति करत नहिं, न्हात यमुनके तीर॥
कदम चढ़ाये सबनके, जब मैं भूषण चीर॥
सो०–जलमें रहीं छिपाय, बिना बसन नांगी सबै॥
पुनि पुनि हहा कराय, दिये बसन मैं सबन तब॥
बिना बसन बाहर सब आई। हाथ जोरि मोहिं बिनय सुनाई॥
कैसी भांति भई तब सबकी। सो सुधि भूलि गई अब तबकी॥
मोको कहति चोरि दधि खायो। ऊखल सों हम जाय छुड़ायो॥
भेद बचन जब कहे बिहारी। सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी॥
कहत भये अति निलज कन्हाई। ऐसी कहत न सकुचत राई॥
जाहु चले लोगनके आगे। झूंठी बात बनावन लागे॥
करत हँसी तुम सबन सुनाई। निज निज गृह सब कहिहैं जाई॥
झूंठी बात कहा हम जानें। हम तो सांची सदा बखानें॥
जैसी भांति भजै मोहि कोई। मानत मैं ताको तैसोई॥
जो झूंठो मोको तुम जानो। तौकत मेरे हित तप ठानो॥
जो तुम अपने मनये ठानी। मैं अन्तर्यामी सब जानी॥
अब क्यों इतो निठुर मन कीनों। काहे दान जात नहिं दीनों॥
दोहा–दान सुने रिस होतिहै, यह नहिं हमैं सुहाय॥
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहिलेहिं कन्हाय॥
सो०–छांडि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहनलाल अब॥
भई बेर बन माहिं, मात पिता खिझिहैं हमैं॥
काहे को तुम करत अबारी। दधि बेचहु घर जाहु सवारी॥
मैं कह करौं तुहैं यह भावत। लेखो करि नाहिं दान चुकावत॥
१ बाल। न समुझि सब कोई। लेखो करिदेहौ मोहिजोई॥

तब सोइ तुमसों मैं लै लेहौं । तबही तुम्हें जान पुनि देहौं ॥
काहेको हम सों हरि लागत । जानि न परत कहा तुम मांगत ॥
बातन कछू जनावत नाहीं । लेखो कहा करत हम पाहीं ॥
निपटहिं परे हमारे ख्याला । इन बातन कह पावतलाला ॥
अब तुम निपट करी बहुताई । सुनि हँसिहैं ब्रजलोग लुगाई ॥
मारग जनि रोंकहु हम जाही । घरतेलीजो दान उगाही ॥
अबलौं यह कीयो तुम लेखो । हम तुम्हरो विचार सब देखो ॥
मोको ऐसी बुद्धि सिखावत । करै कंकण दर्पणहि दिखावत ॥
तुम्हरी बुद्धि दान हमलेहैं । काहेन तुम्हैं जान हम देहैं ॥
दोहा–आपभई हौ चतुर सब, मोको करति गँवार ॥
उगहत फिरिहैं दान हम, ठाढे ह्वैहैं द्वार ॥
सो०–तुम्हैं देहु घर जान, फेरि कहों पाऊं कहां ॥
जो नहिं पैहौं दान, नृपहि ज्वाब कह देउँगो ॥
भली भई नृप मान्यो तुम हूं । चलिहैं कंसहिपै अब हमहूं ॥
तबतेलेन कहत हैं दानहिं । नन्द महरकी करिकरि आनहिं ॥
हमहूं अबलौं ऐसी जानी । भये श्याम घरही ते दानी ॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये । नृपते दान पहिरि तुम आये ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बयेना । हँसे कछू तिरछे करिनयना ॥
सो छबि निरखि कहत सबनारी। कहा हँसे मुखमोरि मुरारी ॥
सोई कहो मनहिं जो आई । तुमको यशुमति महरि दुहाई ॥
और सौंह तुमको गोधनकी । सांची बात कहो तुम मनकी ॥
हँसे कहा हमसों कछु रीझे । कैधौं कछु मनही मन खीझे ॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला । कहत सुदामासों नँदलाला ॥
यह अचरज इनको तुम हेरो । कहत कहा तुम हँसि मुखफेरो ॥
ऐसी बातन सौंह दिवावत । ताते अधिक हँसी मोहि आवत ॥
दोहा–तब श्रीदामातियनसों, बोलि उठ्यो मुसकाय ॥

---

१ हाथका कंकण दर्पणमें । २ वाणी । ३ ब्रजनारियोंसे ।

हँसत श्याम तुम समझिके, बूझत सौंह दिवाय ॥
सो०-हम न दिवावैं आन, हँसहु तुमहु निज संग मिलि ॥
यहै आन सी बान, थोरेमें खिसियात तुम ॥
सहज हँसत नाहिन सकुचैये। नाहिंन लोगन सौंह दिवैये ॥
वेहैं दानी प्रभु सबहीके। देहु दान मांगत कबहीके ॥
हम जानत वे कुँवर कन्हाई। प्रभु तुह्मरे मुख अबि सुनिपाई ॥
होति नहीं प्रभुता इहि भांती। दही महीके भये जगाती ॥
वे ठाकुर तुह्मरी सेवकाई। जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई ॥
दधि खाये अरु भूषण तोरे। छांडि देहु अब दईनिहोरे ॥
जो कछु बचो सोऊ अबलीजै। बेगहि जान हमैं घरदीजै ॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना। तुम घर जाहु देइ कै दाना ॥
आयो हौं पठयो मैं जाको। देउँ कहा लैकै पुनि ताको ॥
अबहीं पठवै मोहि बुलाई। तब ताके सन्मुखको जाई ॥
तुम सुख करौ जाय घरमाहीं। नृपकी गारि मारको खाहीं ॥
जब नृपवर मोको अटकावै। तब पुनि तुम बिन कौन छुडावै ॥
दो०-लेत नाम मुखनृपतिको, जा मुख निदरचो जाहि ॥
आपुन तो नृप नृपनके, अब कह समुझे ताहि ॥
सो०-लियो कंसको नावँ, ऐसी तुह्यैं न बूझिये ॥
भले श्यामबलिजावँ, जिहिनिंदियेतिहिवंदिये ॥
जब हम कंस दुहाई दीनी। तब तो नृप पर अति रिस कीनी ॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई। जो तुम ऐसे डरे कन्हाई ॥
कहाकह्यो कछु जान न पायो। कब हम कंसहि शीश नवायो ॥
कब हम नाम कंसको लीनो। कंस त्रास कबधौं हम कीनो ॥
निपट भई तुम ग्वारि गवाँरी। बसत हमारे गाँव मँझारी ॥
कितक कंस जाको हम जानैं। कहा त्रास ताको उर आनैं ॥
तुह्मरे मनै बात यह आवत। कंस नृपतिके हम कहवावत ॥
तो तुम कहौ कौन नृप जाके। आपुन कहवावत हौ ताके ॥

१ शपथ । २ करलेनेवाले । ३ जिसकी निंदा की, उसीकी स्तुति करते हो ।

ताको नाम हमहु सुनिपावैं । हमहूं पुनि ताके कहवावैं ॥
या संसार लोक त्रय माहीं । दूजो कंस नृपति ते नाहीं ॥
सो नृप बसत कहां सोउ जानैं । तौ हम सब ताहीको मानैं ॥
यह सुनि हम अब अति डर पायो। कै धौं झूठहि हमहि डरायो ॥
दो०–जानृ[1]ाके हमहैंअरी, कोनहिं जानतताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तिहूं भुवन वश जाहि ॥
सो०–बसत सुमन[2]पुर माहिं कहँ लगि तिन्हैं प्रशंसिये[3] ॥
सब मानतहैं जाहि, तिन पठयौं मुहिं पानदै ॥
सुनत गूढ मोहनकी बानी । बोलीं ब्रज सुन्दरी सयानी ॥
जाति तुह्मारे नृपकी पाई । अब लौं राखी कहूँ छिपाई ॥
जैसे तुम तैसे वोऊ हैं । एक रूप गुणके दोऊ हैं ॥
यह अनुमान कियो मनमें हम । एकै दिन जन्मे दोऊ तुम ॥
जैसी प्रजा तैसई राजा । बन्यो भलो अब संग समाजा ॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ । याप[4]टंतर को और न कोऊ ॥
बोलत नाहिन बात सँभारी । ठगति फिरति ठगती तुम सारी ॥
भई ढीठ नाहिं नेकु विचारौ । आवत मुख सोई कहि डारौ ॥
अपने गुण औरन पर डारी । जाति जनावत दैदै गारी ॥
हम भई ठगिनी अरु बटपारी । तुम भये कान्ह सुधर्मी भारी ॥
अपने नृपको यहै सुनावो । ऐसिय चुगुली जाय लगावो ॥
राजा बड़े जान यह पाई । ल्यावहु हम पर धौंस चढ़ाई ॥
दो०–तुमतो ठग आछे बने, बनमें रोकी नारि ॥ ॥
हमैं कहै काको ठग्यौ, को हम डारचो मारि ॥
सो०–तुमहीं जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी ॥
ठगत फिरत सब वाम, आपन ढँग औरन कहत ॥
मौन गहौ बातें सब पाईं । यहै जानि हम पर चढ़ आई ॥
जो चाहो सोई कहि डारो । हम नाहिं मानहिं [5]बिलगो तिहारो॥

१ शत्रु । २ पुष्पपुर । ३ बडाईकरें । ४ उपमा । ५ तुमसे जुदाई ।

तुम मोहींको दोष लगायो। मैं तो नृपको पठयो आयो॥
यौबनरूपलिये तुम इतहीं। आवत हौं इहि मारग नितहीं॥
लोचन दूतन जाय सुनायो। तब नृप रिस करि मोहिं बुलायो॥
शैशव[1] महलनते नृप राई। बैठ्यो सिंहासन तरुणाई॥
तुरतहिं मोहिं दान पहिरायो। दैवीरा तुम पास पठायो॥
तिनको नाम अनंग[2] भुवाला। उनको दान देहु ब्रजबाला॥
तिनकी आनि कहत हौं कीने। पैहौ जान दानके दीने॥
सुनि यह मोहनकी मुख बानी। प्रेम सिंधु युवती मगनानी॥
काम नृपतिकी फिरी दुहाई। अटक्यो: यौवन रूपहि आई॥
को हम कहां रहति कहँ आई। यह सुधि बुधि तनु दशा भुलाई॥
दोहा-तर्कसित भई डर मदनके, नयन मूंदि धरि ध्यान॥
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजै सरवसदान॥
सो०-ऐसे कहि मन माहिं, देह दशा भूली सबै॥
लेहु श्याम बलि जाहिं, यह धन तुम हित संचियो॥
यौवन रूप नाहि तुम लायक। सकुचत तुम्हें देति ब्रजनायक॥
नवल किशोर रूप गुण आगर। अहो श्याम सुन्दर वर नागर॥
यह यौवन धन तुमढिग ऐसे। जलधि निकट जलकणिका जैसे॥
ध्यान मग्न इहि बिधि ब्रजनारी। मनहीं मन बिनवत बनवारी॥
अंतर्यामी हरि सब जानैं। मनही की करणी सब मानैं॥
मनहीं सब न मिले सुखदाई। तनुकी सुरति सब न तब आई॥
खुलि गये नैन ध्यान ते तबही। देखे मोहन सन्मुख सबही॥
तब जान्यो हम बनमें ठाढी। सकुचि गई अति अचरज बाढ़ी॥
कहति परस्पर आपस माहीं। कहां हती हम जानत नाहीं॥
श्यामबिना यह चरित करैको। ऐसी बिधि करि मनहि हरैको॥
रहीं चकित सी सब ब्रजनारी। बोलि उठे तब कुंजबिहारी॥
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला। पर्यो कहा उर शोच बिशाला॥
दोहा-कर्यो दान लेखो कछू, रहीं जहां तहँ शोच॥

१ बालअवस्था। २ कामदेव। ३ मग्नहुई। ४ कामदेव। ५ गुणनिधान। ६ समुद्र

प्रगट सुनावो सो मुहीं, दूरि करौ संकोच ॥
सो०–बहुरि न रोके कोय, यौवनमें कोऊ तुझैं ॥
निशिवासर भय खोय, सुख सों आवहु जावनित ॥
हमैं और रोंकै सो कोहै । रोंकन हार सुवनँनदकोहै ॥
टोना डारत शीश हमारे । आप रहत ठढेहै न्यारे ॥
जाके काम नृपतिको जोरा । ठगत फिरत युवतिन बरजोरा ॥
सुनहु श्याम बूझिय नाहिं ऐसी । तुमको बानि परी यह कैसी ॥
कैसेहू अब कृपा करो हरि । जाहिं सबै अपने अपने घरि ॥
दान मान घरको सब जाहू । बहुरि न मैं रोकौंगो काहू ॥
मैं हूं जानत हौं कछु लेखो । तुमहूं आप समुझिमन देखो ॥
पिछिलो देहु निबेर आज सब । आगे पुनि दीजो जानो जब ॥
अब मैं भली कहतहौं तुमको । जो मानो ग्वालिन तुम हमको ॥
को जानै हरिचरित तुह्मारे । अहो रसिक बर नँददुलारे ॥
हमरो सर्वस मन अपनायो । अजहूं दान नहीं तुम पायो ॥
लेखो करि लीजो मन भायो । खाहु कछू दधि हम सुखपायो ॥
दोहा–सदमाखन लाईं तुझैं, सखन सहितमिलिखाहु ॥
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु ॥
सो०–अब दधिदानी नाउँ, तुह्मरो प्रगट बखानिहैं ॥
खाहु दही बलि जाउँ, ल्याइं हम तुह्मरे लिये ॥
तब हरि हँसि सब सखन बुलाई । बैठे रचि मण्डली सुहाई ॥
दोना बहु पलाशके लाये । शोभित सबके करन सुहाये ॥
सुन्दरहरि सुन्दर सब ग्वाला । सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला ॥
भक्त भावके हाथ बिकाने । ग्वालन संग खात रुचिमाने ॥
निज निज मटुकिनते सब ग्वारी । देति करति उर आनँदभारी ॥
श्याम पतूखिनमों मुखनावैं । निरखि २ ग्वालिन सुखपावैं ॥
धन्य धन्य आपुनको जान्यो । सफल जन्म सबहिन करिमान्यो ॥
कहत धन्य यह दधि अरु माखन । खात कान्ह जाको अभिलाषन ॥

१ जबरदस्ती । २ ताजी । ३ कृष्ण । ४ द.क । ५ हाथ । ६ पत्तोंके दोना

जो हम सोध करतही मनमें। सो सुखपायो हरिसंग बनमें॥
अति आनंद मगन सब ग्वारीं। नंद नँदन पर तनमनवारीं॥
प्यारीसों माखन हरि मांगत। देखों तुझरो कैसो लागत॥
औरनकी मटुकीको खायो। तुझरे दधिको स्वाद न पायो॥
दोहा–श्रीवृषभानु कुमारि तब, दधि ल्याईं मुसकाय॥
अपने कर अधरन परस, दीन्हों बिहँसि खवाय॥
सो०–प्यारीको दधि खाय, अलंपचितै मोहनबिहँसि॥
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठो है यह सबनतें॥
गोपिनके हित माखन खाहीं। प्रेम विवश नहिं नेक अघाहीं॥
वैसिय गोरस भरी कमोरी। परसत सबै होत नहिं थोरी॥
ग्वालन सहित श्याम दधि खाहीं। परम हर्ष सबके मन माहीं॥
हँसत परस्पर सखा सयाने। मीठो कहि कहि स्वाद बखाने॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावैं। परमानंद सबन उपजावैं॥
विलसत ब्रज विलास बनवारी। दधिदानी प्रभु कुंजबिहारी॥
सुरगण तियन सहित नभ माहीं। निरखि २ मनमाहिं सिहाहीं॥
धनि २ ब्रजकी युवति सभागी। खात ब्रह्म जिनते दधि मांगी॥
जाकारण शिव ध्यान लगावैं। शेषसहस मुख जाको गावैं॥
मन बुधि वचन अगोचर जोई। जाको पार न पावै कोई॥
नारदादि जाके गुण गावैं। निगमनेति कहि अंत न पावैं॥
गुणातीत अविगति अविनाशी। सो प्रभु ब्रजमें प्रकट विलाशी॥
छं–प्रकटे सो प्रभु ब्रजमें विलासी, जाहिमुनिजनध्यावहीं॥
योग जप तप नेम संयम, करि समाधि लगावहीं॥
रूप रेख न बरण जाके, आदि अंत न पाइये॥
भक्त वशसो ब्रह्म पूरण, गोपवल्लभ गाइये॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके, रोम प्रति श्रुति गावहीं॥
कीट ब्रह्म पर्यंत जल थल, आप सब उपजावहीं॥

१ इच्छा। २ होंठ। ३ थोड़ा। ४ गुणोंसे परे। ५ वेद।

आप कर्त्ता आप हर्त्ता, आपही पालन करैं ॥
खातसो प्रभु दान दधिलै, गोपिकनके मन हरैं ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी, धन्य वन पावन मही ॥
धन्य मोहन दान मांगत, दूध दधि माखन मही ॥
धन्य ब्रज यकपलकको सुख, और यह त्रिभुवननहीं ॥
कहत सुर मुनि हरषिपुनि२ सुमन सुंदर वर्षहीं ॥
कान्ह गोपी ग्वाल इनहिं, एकही वहु तन धरे ॥
भक्त जनहित विरद जाको, आमत लीला विस्तरे ॥
ब्रजविलासहुलास हरिको, नित्य निगमागम कहै ॥
दास ब्रजवासी सदा यह, गाय आनँद पद लहै ॥
दोहा–दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान ॥
वेद भेद पावैं नहीं, कवि किमि करै वखान ॥
सो०–गावत सुनत सुजान, दधि दानी लीला रुचिर ॥
प्रेम भक्तिको दान, ब्रजवासी जन पावहीं ॥
ब्रज ललना यों हरिहि सुनावैं । दूध दही माखन अरु लावैं ॥
मटुकिनते लैलै हमदेहैं । खाहु श्याम तुम हम सुखलेहैं ॥
गोरस बहुत हमारे घर घर । लीजै दान पाछिलो भर भर ॥
यह गोरस जो तुमने खायो । सो तो दान आजको आयो ॥
लेहु सबै अपनो करि लेखो । फिर न पायहौ मांगे सेखो ॥
श्याम कही अब भई हमारी । मनहिं भई परतीत तुह्मारी ॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब । लैहैं मांगि चाहिहैं जब तब ॥
निधरक अब बेचहु दधि जाई । घाट बाट कछु डर नहि राई ॥
ग्वालिन भईं श्याम वश माहीं । घरको जात बनतहैं नाहीं ॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी । कहत एकसों एक विचारी ॥
सुनहु सखी मोहन कहकीनो । दान लियो कै मन हरिलीनो ॥
यह तो हम नहि वदी सयानी । बूझो धौं इनसों यह बानी ॥

१ पृथ्वी । २ महा । ३ फूल । ४ अनेक । ५ वेदपुराण । ६ ब्रजनारी ।

दोहा–बूझनको उमँगीं सबै, मोहनसों यह बात ॥
निकट जातरहि जाति पुनि, सकुच मगन ह्वैजात ॥
सो०–मनहीं मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ॥
कहत बनत नहिं बात, प्रेमबिवश तरुणीसबै ॥
सुनौ बात मोहन इक हमसों। ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करो सो चूक हमारी। अहो श्याम हम दासि तुम्हारी ॥
हँसि हँसि कही कटुक हम बानी। तुम्हैं खिझावत हित मन मानी ॥
कछू हमारे उरसों नाहीं। अति आनँद तुमसों मन माहीं ॥
दधिको दान और जो जान्यो। सबै तुम्हारो कर हम मान्यो ॥
कहौ श्याम तुम यह कह कीन्हों। दान लियोकै मन हरि लीन्हों ॥
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो। कीनों सबै तुम्हारो भाष्यो ॥
यह करनी तुमही अब जानौ। भली बुरी जो कछु करि मानौं ॥
जो जासों अंतर नहिं राखै। सो तासों क्यों अंतर भाखै ॥
नँदनंदन तुम अन्तरजानी। वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी। तुमहित करि राख्यो मुहि घेरी ॥
तुमते दूर होत मैं नाहीं। रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥
दोहा–तुम कारण वैकुण्ठ तजि, प्रकटतहौं व्रज आय ॥
वृंदावनतुम्हरोमिलन, यह न बिसार्यो जाय ॥
सो०–एक प्राण द्वैदेह, अंतर कहूं न जानिहो ॥
यह न नयो अब नेह, कत भूतल व्रजवास बसि ॥
अब घर जाहु दान मैं पायो। जानत यह लेखो निपटायो ॥
हँसि हँसि जो भावत बनवारी। कहत भई तब व्रजकी नारी ॥
घर तन मनहि बिना कित जाई। करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तन पर मनहीहै राजा। जो कछु करै होय सो काजा ॥
सोतो मन राख्यो तुम गोई। घरको जान कौन विधि होई ॥
इन्द्रिय गण मनके आधीना। चलत नहीं पगनैन बिहीना ॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन। तो दुविधा क्यों लाई गोहन ॥
यह तौ तुम जानी व्रजनाथा। घरहम जाहिं देहु मन साथा ॥

१ कड़वी। २ पृथ्वीपर। ३ छिपा रक्खा। ४ बस।

मन भीतरमें बास बनायो। तुमहींलै मोहिं तहाँ छिपायो॥
कहत कहा यह दोष तुह्मारो। अजहूं तजौ होहु मैं न्यारो॥
लेहु आपनो मन घर जाहू। लोक लाज डर जो पछताहू॥
तौ अबहूमैं छांडि किन देहू। हम करिहैं अंतर निजगेहू॥
दोहा-जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात॥
दीन्हो मनमें वास तब, अब मनको पछितात॥
सो०-जब मन दीन्हों मोहि, तबहीं लीन्हों मोहि तुम॥
जो लैहो मन खोहि, तौ मैहूं जैहौं अनत॥
सुनहु श्याम ऐसी नहिं कहिये। सदा हमारे मनमें रहिये॥
तुमहिं बिना धृकमन अरु धृकघर। तुमबिन धृक कुलकान लाजडर॥
धृक तुम प्रेम विनापितुमाता। तुमविहीन धृक सुत पितु भ्राता॥
धृक जीवन तुमबिन संसारा। धृक सुख तुमबिन नंदकुमारा॥
धृक रसना[3] तुम गुण नहिं गावैं। धृक श्रुति[4] तुह्मरी कथा न भावैं॥
धृक लोचन[5] जिन तुम न निहारे। धृक विचार जो तुम न विचारे॥
धृक दिन रात तुम्हें बिन जाई। धृक श्वासा तुमबिनाबिहाई॥
सो सब धृक जामें तुम नाहीं। तन धन मन तुमबिनावृथाहीं॥
ऐसे कहि तनु दशा बिसारी। भई सनेह मगन सब ग्वारी॥
कबहूं घरतन जान विचारैं। कबहूं हरिकी ओर निहारैं॥
दधि भाँजन[6] लै शिरपर धारैं। कबहूं धरणी फेर उतारैं॥
रीती मटुकिनमें कछु नाहीं। कबहुं विचार रहत मन माहीं॥
दोहा-विहँसिकह्यो तब साँवरे, जाहु घरन ब्रजनारि॥
सकुचतपिछिलेदान को, मैंलैहौं निरवारि॥
सो०-ऐसे वचन सुनाय, सखनसहित हरि वनगये॥
लैगये चित्त चुराय, युवतिन दान मनाय कै॥
इति श्रीब्रजविलासे ब्रजवासीदासकृते पूर्वार्द्ध समाप्तम्॥

१ अपनी हानि। २ और जगह। ३ जीभ। ४ कान। ५ नेत्र। ६ पात्र।

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ उत्तरार्द्धम् ।

रीती मटुकी शिरपर धारी । चलीं सबै उठि गोप कुमारी ॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं । जानति नहीं कहां हम जाहीं ॥
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानैं । बन गृह कछू विचार न मानैं ॥
लोक वेद मर्यादा दोऊ । आप सहित भूलीं, सब कोऊ ॥
बेंचत दधि बनहींमें डोलैं । लेहु दही कबहूं कहि बोलैं ॥
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाहीं । लेहौ दधिकै हम फिरि जाहीं ॥
तरु तरु सों पूछत यहि भांती । बनमें फिरत प्रेम रस मांती ॥
मिलत परस्पर विवश निहारी । कहति फिरत क्यों बनमें नारी ॥
तिन्हें कहति अपनी सुधि नाहीं । सो कछु नहिं समुझत मन माहीं ॥
दधि भाजन रीते शिर धारैं । भरी प्रेम तनु दशा बिसारैं ॥
कबहूं यमुनाके तट जाहीं । फिरति कबहुं कुंजनके मांहीं ॥
कबहूं वंशीवट तट आवैं । ठाढी ह्वै तहँ हरिहि बुलावैं ॥
दोहा०—लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय ॥
डरन तुह्मारे जात नहिं, तुम दधिलेत छिनाय ॥
सो०—लेहु आपानो दान, पुनि रिस करि उठि धायहौ ॥
हमैं न देहौ जान, बनमें हम ठाढी सबै ॥
बैठ गईं मटुकी धरि सबहीं । जानति घरसे आईं अबहीं ॥
सखा संग लीने हरि ऐहैं । दधि माखनको दान चुकैहैं ॥
दधिहि दुरावत अंचर तरिकै । दीठ गईं मटुकिनमें परिकै ॥
रीती मटुकी सबन निहारी । गईं भभरि उरमें सब नारी ॥
जहां तहां कहि उठीं गुवाली । गोरस ढरकायो कहुँ आली ॥
कोउ कोउ कहत कान्ह ढरकायो ॥ कोऊ कहैं सखन संग हरि खायो ॥
भई सुरति कछु तब तनु माहीं । गईं घरहि हम तबते नाहीं ॥

१ खबर । २ कान । ३ पेड़ोंसे । ४ मतवाली

सकुच भई कछु गुरु जन डरते । आतहिते हम आई घरते ॥
रही कहां तबते वन नाहीं । यहतो सुरत हमैं कछु नाहीं ॥
जब हरि सखन संग दधि खाई । गये बहुरि वन कुँवर कन्हाई ॥
तबलौंकीतो सुधि हम पाही । भई कहा पुनि जानति नाहीं ॥
जानपरी हमको तो यौंरी । डारि गये शिर श्याम ठगौरी ॥

दो०—श्याम बिना यहको करै, लायो दधिको दान ॥
तनु सुधि भूली तबहिते, वाकी मृदु मुसक्यान ॥

सो०—मन हरिलीन्हच्यो श्याम, ताबिन निबहै कौन विधि ॥
ऐसे कहि सब वामें, घरको चलन विचारहीं ॥

मन हरिसों तनु घरहि चलावैं । ज्यों गज मत्त चलन छबि पावैं ॥
श्यामरूप रसमदसों भारयो । कुलमरयाद महावत टारयो ॥
कर्मनेहबंधन सों तोरयो । मुरै न लाज कुंजको मोर्यो ॥
गरुजन अंकुश जो सुधि आवै । तव तनु घरको पाँव चलावै ॥
ऐसे गईं सदन व्रजबाला । नाहिं भावत क्षण बिन नँदलाला ॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों । औरै बात बितावत तिनसों ॥
गारी देत सुनत नाहिं कोऊ । श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावैं । नेकनहीं सो उरमें ल्यावैं ॥
बार-बार जननी समुझावति । काहेको तुम हमहि हँसावति ॥
जहां तहां काहे तुम जाओ । नहिं अपनी कुलकान लजाओ ॥
दधि बेचौ घर सूधे आवो । काहे इतनो बिलम लगावो ॥
बूझे ज्वाव देति तुम नाहीं । बसी कहा तुम्हरे मन माहीं ॥

दो०—ऐसे सिखवत मात पितु, सो न करति कछु कान ॥
लागतहैं तिनके वचन, उरमें वाण समान ॥

सो०—तिन्हैं कहत मन माहिं, धृक२ इनकी बुद्धिको ॥
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनै त्यागे भले ॥

---

१ याद । २ गोपी । ३ घ[illegible] । ६ पात्र । [illegible] ।

जिनको हरिकी प्रीति न भावै । तिनको मुख जनि विधि दिखरावै ॥
ऐसे विनय करति विधि पाहीं । गुरु जनको निंदति मन माहीं ॥
नेक नहीं घरसों मन लागत । विसरत श्याम न सोवत जागत ॥
नयन श्याम दरशन रस अटके । श्रवण वचन रसते नहिं मटके ॥
रसना[1] श्याम बिना नहि बोलै । मन चंचल संगहि सँग डोलै ॥
नासा अंग सुगंध लुभानी । सुरत श्यामके रूप समानी ॥
चरण चलन चाहत दिशि तेही । जिहि दिशि सुंदर श्याम सनेही ॥
लोक लाज कुल कान मिटाई । रँगी श्यामके रंग सुहाई ॥
प्रात चली दधि लै ब्रज माही । इंद्रियगण मन बुधि वशनाहीं ॥
तनुलै निकसीं बेचन गोरस । रसनासों अटक्यो हरिको यस ॥
दधिको नाम भूलि गई बाला । कहत लेहु कोऊ गोपाला ॥
भीजरह्यो मनमोहनको रस । व्याप गई उर माहिं दशोदिस ॥

दोहा–फँसी सबै खग वृन्द[2]ज्यों, हरि छवि लटकनजाल ॥
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ॥

सो०–बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी[3] ॥
बिथुरी अलक[4] लिलार, पग डगमग जिततित परै ॥

दधि बेचत ब्रज बीथिन डोलैं । अलबल वचन बदन ते बोलैं ॥
गोरस लेन बुलावत कोई । तिनकी बात सुनत नहि कोई ॥
क्षण कछु चेत करत मन माहीं । गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥
बोल उठत पुनि लेहु गोपालहि । अटकि रह्यो मनवा हरि ख्यालहि ॥
लेहु लेहु कोऊ वनमाली । गलिन गलिन यों बोलति ग्वाली ॥
कोउ कह श्याम कृष्ण बनवारी । कोउ कह लाल गोवर्द्धनधारी ॥
कोउ कह उठति दान हरि लायो । कबहूं भई कि तुमहि चलायो ॥
देह गेहकी सुरति बिसारी । फिरति शीश मटुकी दधि धारी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई । दधिको नाम लेत तब सोई ॥
इहि विधि वेचतही सब डोलैं । आप बिकानी बिनहीं मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै । कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥

१ जीभ । २ पक्षसमूह । ३ मदिरा । ४ जुल्फ ।

हरि दरशन बिन मति भइ भोरी । अंतर लगी सुरतकी डोरी ॥
दोहा—पकरचो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ॥
समुझाई समुझत नहीं, सिख दै थाक्यो ग्राम ॥
सो०—ज्यों दीपक घर माहिं, बाहर नहिं देख्यो परे ॥
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छू दावाभयो ॥
इहिविधि मगन सकल ब्रजनारी । कृष्ण प्रेम रस मद मतवारी ॥
सकल प्रेमकी मूरति पूरी । कोऊ तिनमें नाहिं अधूरी ॥
एकदशा सबहीकी जानो । कहँलगि सबको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्रीवृषभानु दुलारी । सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी । तिनकी कथा कहत विस्तारी ॥
दधि भाजन माथेपर धारै । लेहु श्याम कहि वचन उचारै ॥
बूझति तिन्हैं और ब्रजनारी । बेचत कहा फिरत तू ग्वारी ॥
प्रातहिंते लीन्हें दधि डोलै । मुखते नाम कान्हको बोलै ॥
कहा करत यह हमें बतावो । कछु हमको निजबात सुनावो ॥
उफनत तक्र चुवत अँगमाहीं । ताकी सुरति तोहि कछु नाहीं ॥
इतते उत उतते इत जाई । बुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई । तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥
दोहा—तिन्हैं कहत मुहिं नंदवर, कहाँ सु देहु बताय ॥
जहांबसत वह सांवरो, मोहन कुँवर कन्हाय ॥
सो०—हैधौंयाही गाँव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत ॥
कान्हर जाको नाँव, मैं खोजत वाको फिरौं ॥
बहुत दूर ते हौं मैं आई । मोहिं देहु नंद सदन बताई ॥
नंदहिके द्वारेपर ठाढ़ी । बूझत अति संभ्रमता बाढ़ी ॥
लोक लाज कुलकी सब नासी । मन बँध गयो प्रेमकी फाँसी ॥
तब यक सखी परम हितकारी । हरिकी प्यारीकी अति प्यारी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठाई । शिक्षा वचन कहत समुझाई ॥

१ दावानल । २ पात्र । ३ छाँछ । ४ घर । ५ संदेह ।

अहो राधिका कुँवरि सयानी। क्यों ऐसी अब भई अंयानी॥
ऐसे प्रकट प्रेम नहिं कीजै। देखि विचारि धीर उरदीजै॥
हँसिहैं लखि सब ब्रज नरनारी। एकहि बार लाजतैं डारी॥
ऐसे कहा फिरत वितितानी। मात पिता गुरुजनहिं भुलानी॥
जो पै कृष्ण प्रेम धन पैये। राखि गुप्त नाहिं प्रकट जनैये॥
ऐसी तोहिं बूझिये नाहीं। समुझ देख अपने मनमाहीं॥
अजहूं चेत बात सुन मेरी। कहत कुँवरि तेरे हितकेरी॥
दोहा—कृष्ण प्रेम धन पायकै, प्रकट न कीजै बाल॥
राखिय उर यों गोयकै, ज्यों मणि राखत व्याल॥
सो०—तू अति नागरि नारि, पायो नागर नेह जो॥
तो कत देति उघारि, कहिहैं तोहिं गँवारि सब॥
मैं जो कहति सुनतिकै नाहीं। देहै ज्वाब कछू मो पाहीं॥
कहिहै वचन कि मौनहिं रैहै घर अपने जैहै किनजैहै॥
लोगन मुख सुनिहैं पितु माता। ब्रजमें प्रकटी है यह बाता॥
मानेगी मम वचनकि नाहीं। कै फिरिहै ऐसेहि ब्रजमाहीं॥
जो यह प्रीति श्याम सों जोरी। लाज किये है है कह थोरी॥
ध्यान श्यामको धरि उर माहीं। लाज छांडि कत भ्रमत वृथाहीं॥
मुख तौ खोल सुनहुं तुव बानी। कैसी कहति परै कछु जानी॥
कहा कहत मोसों तुम आली। मन मेरो लीनो बनमाली॥
तबते मोको कछु न सुहाई। जित देखौं तित कुँवर कन्हाई॥
अबलौं नाहिं जानत मैं कोही। कहा कहत है अबतैं मोही॥
कहां गेहको पितु अरु माता। कहँ दुर्जनको गुरु जन भ्राता॥
कहां लाज कहँ कान बड़ाई। तू कह कहत कहां ते आई॥
दोहा—बार बार तू कहत कह, मैं नाहिं समुझति बात॥
मेरे मनमें घर कियो, वा यशुमतिके तात॥
सो०—रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं करथकी॥

१ अज्ञान। २ छिपाकर। ३ सर्प। ४ सखी।

तूतो वडी सुजान, कहा देत सखि दोष मोहिं ॥
मेरे हाथ नहा मन मेरो । सुनै कौन सखि सिखवन तेरा ॥
इन्द्रिय गण मनकी अनुगामी । सब इन्द्रिनका मन यह स्वामी ॥
सो मन हरि लीनो ब्रजनाथा । इन्द्रिय गई सबै मन साथा ॥
अब मेरे वशमें कोउ नाहीं । रहीं जाय सब हरिके पाहीं ॥
नयन दरशके लोभ लुभाने । श्रवण शब्दके माहिं समाने ॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे । कहा होत सिखय सखि तेरे ॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं । कौन करै घूंघुट पटछाहा ॥
अबतौ प्रकट भई जग जानी । वा मोहनके हाथ विकानी ॥
मन मान्यो मोहन सों मेरो । जग उपहास करै बहुतेरो ॥
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई । कैलघुंता कै होहु बड़ाई ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोन्यो । नाच कछ्यो तब घुंघट छोन्यो ॥
अब तो मेरे मन यह मानी । मिलौं श्याम सों ज्यों पैयपानी ॥
दोहा–मेरो मन हरि सँग बस्यो, लोक लाज कुलत्याग ॥
और ताहि सूझै नहीं, भोजहाजको काग ॥
सो०ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी ॥
देहदशा विसराय, मगन भई रस श्यामके ॥
जाय पऱ्यो मन वाही ख्यालहिं । बोल उठी कोउ लेहु गोपालहिं ॥
कहत सखीसों तूको आली । कहँ वह दधिदानी वनमाली ॥
नंद सदन सखि मोहिं बताओ । नंदनँदन पिय वेगि मिलाओ ॥
विरह विवश अति व्याकुल बाला । मन हरि लीनो नंदके लाला ॥
दधि मटुकी लीने शिरडोलै । द्वारे आय नंदके बोलै ॥
इत उत जाय तहीं फिरि आवै । लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावैं ॥
भ्रम भ्रम विवश भई सब ग्वाली । चलीं वनहिं खोजन वनमाली ॥
वंशीबट यमुना तट जाई । कहत दान दधि लेहु कन्हाई ॥
फिरत विकल वन वन दधि लीन्हें । तन मन हरिको अर्पण कीन्हे ॥

१चतुर । २पीछेचलनेवाली । ३ कान । ४तुच्छता । ५दूध और पानी ६निर्विघ्न ।

कीन्हो दिनकर[1] प्रेम प्रकाशा। लोक लाज डर तम[2]कर नाशा॥
तनुकी दशा बरणि नहिं जाई। रोम रोममें रहे कन्हाई॥
प्रेम अधिक व्रज गोप कुमारी। गावत वेद पुराण पुकारी॥
दो०-कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र सुखखान॥
कहत सुनत भव[3]भय हरण, रसिक जननके प्रान॥
सो०-रसिक शिरोमणि राय, गोपीजनमनके हरण॥
कहौं सु अव सुखदाय, रसलीला जो व्रज करी॥
देखि दशा राधाकी ग्वाली। शिक्षा करति हती जो आली॥
चकित रही मन मांझ विचारी। या शिर श्याम ठगौरी डारी॥
गई सखी सो हरि पै धाई। कहइ सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई॥
ढंढति फिरति तुम्हें इक नारी। अति सुन्दरी नवल सुकुमारी॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै। मुख द्युति[4] चंद्र निरखि मनमोहै॥
मातहिंते लीने दधि डोलै। लेहु गोपाल बदनते बोलै॥
भ्रमत भ्रमत अति विकल भईहै। बंशीबटकी ओर गईहै॥
मन बच कर्म जान मैं पाई। तुममें वाको प्राण कन्हाई॥
ताहि मिलो कबहूं सुखदाई। कहत सखी करिकै चतुराई॥
तुम बिन बिरह विकल अति बाला। मिलहु वेगि ताको नँदलाला॥
सुनत श्याम मन हर्ष बढायो। सांची प्रीति जानि सुख पायो॥
हरि हँसि बिदा सखीको कीन्हो। आप दरश प्यारीको दीन्हो॥
दो०-परम हर्ष दोऊ मिले, राधा नंदकुमार॥
कुंज सदन[5] मोहति मनो, तनु धरि छवि शृंगार॥
सो०-श्यामा अरुघनश्याम, कोटि काम रतिद्युतिहरण॥
व्रजवासी उर धाम, युगुल किशोर बसो सदा॥
सोहत कुंज कुटी सुखरासी। पिय घनश्यामबाम चपलासी[6]॥
विरह तापतनु दूर निवारी। बोली मोहन सों तब प्यारी॥
कहा कहौं तुम सों सुन्दर घन। कहत लजातबाम मनहीं मन॥

१ सूर्य। २ अंधकार। ३ संसार। ४ कांति। ५ कुंजभवन। ६ बिजलीसी।

होत चवाव सकल ब्रज माहीं । सुनत श्रवण सहि जात सुनाहीं ॥
जा दिन तुम गैया दुहि दीनी । हाहा करि दुहनी मैं लीनी ॥
सहजगही बहियां, तुम मेरी । मैं हँसि तनक बेदन तन हेरी ॥
तादिनते गृह मारग जित जित । करतचवाव सकल ब्रजजननित ॥
यहै कहैं ब्रजमें सब कोऊ । राधा कृष्ण एक हैं दोऊ ॥
यह सुनि घर गुरु जन दुख पावैं। कटुक वचन कहि त्रास दिखावैं ॥
निकसत द्वार जबहिं तुम आई । रहत सबै तब देखि लुगाई ॥
निंदत तुमको मोहि सुनाई । सो मोपै हरि सह्यो न जाई ॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजै । इनबिमुखनको संग न कीजै ॥

दो०—धृक धृकते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुम पदप्रेम ॥
हित करि तुम जाने नहीं, कहा निबाहे नेम ॥

सो०—मैं लीन्हो दृढ नेम, सुनहु श्यामसुन्दर सुखद ॥
तुम पद पंकज प्रेम, यहै पतिव्रत पारिहौ ॥

हरि तुम बिन यह कासों कहिये । ब्रजबसिकाके बोलन सहिये ॥
ताते विनय करति तुम पाहीं । वापैंड़े तुम आवहु नाहीं ॥
जो आवो तो मुहिं न जनावो । मुरली धुनि मोको न सुनावो ॥
मुरली धुनि सुनि सुनहु कन्हाई । बिन देखे मुहिं रह्यो न जाई ॥
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी । बोले बिहँसि श्याम सुखदानी ॥
सांच कहत ब्रजके नरनारी । तुमनेकहु मोते नहिं न्यारी ॥
कहन देहु गुरु जन कह जाने । वै अपने सब सुरत भुलाने ॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ । तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ ॥
उभय देह लीला हित ठानी । घटहै भेद नहीं कछु पानी ॥
जल थल जहां तहां तनु धारों । तुम तज कहूं रहत नहिं न्यारों ॥
देह धरेको यहै विचारा । मानिय करु कुटुम्ब व्योहारा ॥
लोक लाज गृह छांड़ि न दीजै । मात पिता गुरुजन डर कीजै ॥

१ मुख । २ कडुए ।

दोहा-प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम ॥
प्रकटनकीजै बात यह, कहत विहँसिकै श्याम ॥
सो०-सुनत श्यामके बैन, हर्ष भई मन नागरी ॥
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय ॥
अति आनन्द भई मन प्यारी । तब जान्यो हरि पति मैं नारी ॥
भूलि गई काहे पछितानी । यह महिमा हरिकी जिय जानी ॥
युग युग प्रभु लीला विस्तारी । जान लई वृषभानु दुलारी ॥
हरि मुख अल्प चितै मुसकानी । रही परम आनँद उर मानी ॥
कहत सुनहु प्रिय अन्तर्यामी । तुम कर्त्ता हौ जगके स्वामी ॥
मात पिता गुरु जन हित भाई । कहा नाथ यह नई सगाई ॥
जो कर्त्ता औरै सुनि पाऊं । तौहौं प्रभु तिनको पतियाऊं ॥
अरु परतीत जगतकी जानौं । तौ परमित छूटत डर मानौं ॥
जो जाको सो तेहिको जानैं । कैसे औरनको मन मानै ॥
अब नहिं तजों कमल पद पासा । मन मधुकर कीनो जब बासा ॥
यह सुनि हरि प्यारी उरलाई । बहुविधि करि प्रबोध समुझाई ॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजे । प्रीति रीति उनमें धरि लीजे ॥
दोहा-कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार ॥
प्रीति पुरातन गोय उर, करिये जग व्यवहार ॥
सो०-परम प्रेम उरलाय, घर पठई हरि भावती ॥
चली संग सुख पाय, फिर फिर चितवत श्यामतन ॥
चली संग सुख लूट किशोरी । लसत अंग मरगजी पटोरी ॥
गजेगति जाति भवन सुखपाई । रहेरीझिछबि निरखि कन्हाई ॥
प्यारीमन आनंद बढ़ाये । सुख भर चली लूटसी पाये ॥
मनहिं कहत अति उमँग उछाहू । यह धन प्रकट करौंनहिं काहू ॥
सखियनहूं नहिंभेद जनाऊं । कृष्ण प्रेमधन गुप्तदुराऊं ॥
श्याम कह्यो सोई उरधरिहौं । प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं ॥

१ प्राचीन । २ माहात्म्य । ३ भरोसाकरूं । ४ मैला । ५ हाथीकीसीचाल ।

ऐसे मनहिं बिचारति जाहीं । तहँ इकसखी मिली मगमाहीं ॥
अंग अंग छबि लखि मुसकानी । कहति बिहँसि प्यारी सा बानी ॥
कह फूलीसी आवतिराधा । आज रूपकछु अंग अगाधा ॥
बदन सिकोरति मोरति भौंहें । कहति कछूमनहीं मनमोहैं ॥
देखियतकछू अंग रसभीने । सुलभ मनोरथ हरिसँग कीने ॥
हमसों सो सब बात उघारो । दुरत न गंध दुरावन हारो ॥

दोहा–फिरतहती व्याकुल अबहिं, जिनके दरशन लाग ॥
कहां मिली नँद नंदसों, धनि धनि तेरो भाग ॥

सो०–नाहिं पावतहै जाहि, योगीजन जप तप किये ॥
वश करि पायो ताहि, ते कैसे कहु नागरी ॥

कहा कहति सखि भई बावरी । करन कछू चाहत चवावरी ॥
तू हँसि कहत सुनो जो कोऊ । सोतो साँचि मानिहै सोऊ ॥
चकित होति सुनि अचरजतेरो । है चवाव पुनि घर कहुँमेरो ॥
ऐसे होय कहति तू जैसे । गुरुजनमें निबहों पुनि कैसे ॥
कहा भेदकछु तोसों मोसों । मैं दुरावे करिहों सखितोसों ॥
को नँदनन्द कहति तू जिनको । मैं कबहूं देख्यो नहिं तिनको ॥
कै गोरे कै बरण सांवरे । रहत ब्रजहिके अनत गांवरे ॥
मैंतौ नहिं जानति वे जैसे । तू बहुबात मिलावति कैसे ॥
जाहि चली जानी मैं तोको । कहा भुरावतिहै तू मोको ॥
अबहीं फिरति हती बौराई । आजहि पढ़िलीन्ही चतुराई ॥
याही ब्रज हम तुम अरु वोऊ । दूर नहीं जोहै कहुँ कोऊ ॥
परिहो कबहूं फंद हमारे । करिहैं तबहिं जुहार तुम्हारे ॥

दोहा–निपुण भइ उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय ॥
आवतिहैं वन कुंजते, बातैं कहति बनाय ॥

सो०रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक ॥
मोसों करत सयान, सगिबगि रही सनेह जल ॥

हँसत कहत कैधौं सत बानी । तेरी सौं मैं कछु अन जानी ॥

१ अथाह । २ घबड़ाईहुई । ३ छिपाव । ४ चतुराई । ५ तरबतर ।

कह्यो कहा मुहिं दुहुरि सुनावै। तोहिं सौंह मेरी जु वैराव ॥
कबहूं कछू भाव यह पायो। तैं देख्यो कै किनहु सुनायो ॥
ऐसी कहत और जो कोऊ। सुनती मोपै उतर न सोऊ ॥
बूझत मोहिं लगावत ताही। सपनेहूं देख्यो नाहिं जाही ॥
ऐसी मोहिं कह्यौ जिनकोई। झूंठी बातनि पर दुखहोई ॥
उचटाये पैहै कछु मोसों। बहुरि नहीं बोलोंगो तोसों ॥
ताते और काहि हितपैहौं। जाते हितकी बात जनैहौं ॥
यह परतीत न तो कोहोई। मैं राखति तोतें कछुगोई ॥
चतुरसखी मनमें जब जानी। मोतें तौ कछुनाहिं छिपानी ॥
त्रास भई याके मनमाहीं। ताते बात कहति यहनाहीं ॥
तब यह कही हँसत मैं तोसों। जिन मनमें दुख मानै मोसों ॥

दो०–मानी तेरी बात अब, कहँ तू कहँ वे श्याम ॥
हमहुँ उन्हें जाने नहीं, बसत कौन धोंगाम ॥

सो०–हम आगेकी आइ, भई सयानी लाडिली ॥
हँसत कह्यो घर जाइ, तैंनाहिं हरि कबहूँ लखे ॥

सकुच सहित वृषभानुदुलारी। गई सदन गुरु जन डर भारी ॥
जननी कहत कहां हुति प्यारी। डोलति फिरति अजहुँ है बारी ॥
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं। दधिलै जात फिरत बन माही ॥
श्याम संग बैठति है जाई। आज तोहिं धिरवत हो भाई ॥
काहे को उपहास करावति। दधिहि बेच सूधेकिन आवति ॥
वृथा करति मैयारिस मोसों। को अब बात कहैरी तोसों ॥
ऐसी को बहिगई बिधाता। श्याम संग फिरिहै सुनु माता ॥
कौने बात कही यह तोसों। ताको नाम लेहि किन मोसों ॥
धन्य भ्रात धनि तू धनि माई। ऐसी बात कहति मुहिं लाई ॥
तू पर घर क्षण क्षण कित जाई। मैं वरजति नाहिं नेकु डराई ॥
श्यामा श्याम सकल ब्रज माहीं। ह्वै रहे लाज लगति तुहि नाहीं ॥

१ भरोसा। २ राधा। ३ हंसी।

बड़े महरिकी सुता कहावति। काहेको पितु मात लजावति॥
दो०-खेलनको मैं जाउँ नहिं, कहा कहतिरी मात॥
मोपै जात सही नहीं, यहै अनोखी बात॥
सो०-घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी॥
तू मोहीं रिसियात, तिनके मात पिता नहीं॥
मनहीं मन समझति महतारी। अबहींतो मेरी है बारी॥
कहा भयो तनु बाढ भई है। लडकाई अबहीं न गई है॥
झूंठहि बात उड़ी यह सारी। श्यामा श्याम कहत नर नारी॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ। अब हीं तो बालकहैं दोऊ॥
सुनत सुता मुख रिसकी बानी। मनही मन कीरति मुसक्यानी॥
तब गहि उर लाई चुचकारी। परबोधति उरसौं रिसटारी॥
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं। खेलनको मैं बरजत नाहीं॥
श्याम संग सुनिहोत दुखारी। झूंठहि लोग लगावत गारी॥
जाते कुलको दूषण होई। सुनि प्यारी कीजै नहिं सोई॥
अब राधा तू भई सयानी। मेरी सीख लेहि जिय मानी॥
जननीके मुखकी सुनि बानी। श्रीवृषभानु सुता मुसकानी॥
मन मन विनय करत हरि पाहीं। सुनहु श्याम तुम सब घट माहीं॥
दो०-मात पिता मानत मनहिं, लोक लाज कुलकान॥
नहिं जानत तुमको सुखद, जगत ईश भगवान॥
सो०-लेत तुम्हारो नाव, सकुचति हौं इनके निकट॥
यह समुझत पछताव, तुमबिमुखनमें क्यों रहौं॥
तुम मोहिं कहो कानि कुल राख्यो। क्यों विषखाय सुधाजिनचाख्यो॥
जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ प्रेमा। कैसे तिनसों निबहत नेमा॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी। नाथ तिहारे हाथ बिकानी॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी। बोलीं जननी सों हँसि बानी॥
तू अब कहति कहा मोकोरी। अकथ बात है मा कछु तोरी॥

अद्भुत। २ बेटी। ३ समुझाती है। ४ अमृत।

अब हरि संग न खेलौं जाई। जा कारण तू मोहिं सुगाई॥
आवनदे बाबा घर माहीं। यह सब बात कहौं उन पाहीं॥
देति गारि मोहिं श्याम लगाई। ऐसे लायक भये कन्हाई॥
रोंकी मोको काल्हि नलीमें। सखिन संगमें जाति चली मैं॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी। तू लै गई चुराय सो हेरी॥
छठि आठैं मोसोंहै जिनसों। मोहिं लगावतिहै तू तिनसों॥
सुन सुन कर राधाकी बानी। मुख निरखत जननी मुसकानी॥
दो०-कहति मनहिं मन अबहि लौं, नहीं गई लरिकाय॥
वारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाय॥
सो०-अब जै है मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि॥
हारि मानि रहिमाय, बालकबुधि जिय जानिकै॥
बोलि लई हँसिकै दुलराई। पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई॥
कंठ लगाय लई अति हितसों। रही चकित शोभा लखि चितसों॥
चतुर शिरोमणि हरिकी प्यारी। परम चतुर वृषभानुदुलारी॥
बात नहीं माता बहराई। नीके राखि लई चतुराई॥
कृष्ण प्रेम धन पायछिपायो। संग सखी तिनहूं न जनायो॥
जैसे कृपण महा धन पावै। धरत दुराय न प्रगट जनावै॥
सखी मिली जो मारग माहीं। कह्यो जायतिन सखियन पाहीं॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं। कैसी आज करी उन घातैं॥
वृन्दाबन ते अबही आई। हर्ष सहित मैं लखि मग पाई॥
औरै भाव अंग छबिछाई। श्यामहि मिली भई मन भाई॥
मोको देखतही हँसि दीनो। मैंहू हर्ष मनहि मन कीनो॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों। तबरिस करि फेर्यो मुख मोसों॥
दो०-मोसों तब लागी कहन, कोहरि काको नांव॥
कै गोरे कै सांवरे, बसत कौनसे गांव॥
सो०-मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौनको॥

१ हठ। २ सूम। ३ छिपाकर। ४ रास्ता।

लखे न सपनेहुंमाहिं, सांच कहति कै हँसति मुहिं ॥
ऐसे कहि टेढी करि भौंहैं । चितईनेकु न मोतन सौंहैं ॥
वह निधरक मैं सकुच गईरी । और कहौं तौ करत खईरी ॥
तब मैं यह कहि घर पठईरी । मैं झूंठी तू सांच भईरी ॥
दोऊ एक भये अब आई । हमहूं सों यह बात दुराई ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै । कैसी धौं तहं बुधि उपजैहै ॥
सुनिकै बात सखी मुसुकानी । प्यारिहि देखनको अनुरानी ॥
कहत रेंवै जबहीं हम जैहैं । तबहीं जाय प्रगट करिदैहैं ॥
कहा रहै यह बात छिपानी । दूध दूध पानी सों पानी ॥
आंखिन देखतहां ... जैहै । कैसे हमसों बात छिपैहै ॥
अपनो भेद नहीं वह कैहै । सुनिहौं कैसे गाल बजैहै ॥
लखहु चरित्र जाय तुम वाको । राधा कुँवरि नाम है जाको ॥
मैं बूझ्यो करि बहु चतुराई । नेकहु थाह न वाकी पाई ॥
दोहा–बडे गुरूकी बुद्धि पढी, कहूं नहीं पतियात ॥
एकौ बात न मानि है, सौ सौ सौहैं खात ॥
सो०–रहिहैं सब पछिताय, सुनत वचन वाके वदन ॥
अब जैहै रिसियाय, बातन बैर बढाइहौं ॥
कहा बैर हमसों वह करिहै । बातन कैसे हमहि निदरिहै ॥
औरनसों जो करती ढारी । तोहमहूं जानती सयारी ॥
वांकी जाति भले हम पाई । हमहीं सों यह बात चुराई ॥
परिहै जब मेरे फँद आई । दूरि करौं वाकी लँगराई ॥
जो नहिं हम सन भेद कहैगी । तौ पुनि कैसेकै निबहैगी ॥
हमसों बैर किये कह पैहै । बहुरि लिये मटुकी शिर ऐहै ॥
चलौ सबै देखै घरताको । है निधरक कैधौं डर वाको ॥
बूझे बात कहा धौं कैहै । हम सों मिलिह कै दुरि जैहै ॥
रिसकरिहै कैधों हँसिबोलै । बात छिपावै कैधौं खोलै ॥

१ भरोसा करताहै । २ बेखटके ।

सहज स्वभाव किधौं गरवानी । यह कहि चलीं अली सब स्यानी
गईं निकट राधे के जबहीं । जान गई नागरि मन तबहीं ॥
ये सब मोपर रिस करि आई । तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥
दोहा-काहूको कीन्हों नहीं, आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निठुराइ ॥
सो०-लखि सब सखी सुजान, बैठि गई ढिग आपई ॥
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥
राधा चतुर चतुर सब आली । चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
उन तौ गही मौन निठुराई । इन लखि लई तासु चतुराई ॥
मुहां चहीं आपसमें कीन्हीं । याकी बात सबै हम चीन्हीं ॥
कहा भेद हमसों यह भाखै । उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बझहु याहि खुनट करि कोई । कहा आज इन मौन लयोई ॥
हम सों कहा ओट इन लीन्ही । साठ सई हमहीं कर दीन्हीं ॥
एक सखी तब बिहँसि सुनायो । कहो मौन व्रत किन सिखरायो ॥
धनि वह गुरु मंत्र जिन दीन्हों । कान लगतही ऐसो कीन्हों ॥
काल्हि और परभातहिं औरै । अबहिं भई कछु और कि औरै ॥
सुनि यह बात सबै हम धाईं । चकित भईं देखन तोहिं आई ॥
कहा मौन को फल अब कहिये । सुनैं कछू तो हमहूं गहिये ॥
इक सँग सबै भईं तरुणाई । मंत्र लियो तब हम न बुलाई ॥
दोहा-अब तुमहींको हम करैं, गुरू देहु उपदेश ॥
हमहूँ राखैं मौनव्रत, करैं तुह्मैं आदेश ॥
सो०-हमको कियो अजान, चतुर भई तू लाडिली ॥
कहँ सीख्यो यह ज्ञान, ऐसी विधि लागी करन ॥
रहत एक सँग हम तुम प्यारी । आजहि चटक भई तू न्यारी ॥
कहा भयो तोहिं किनहिं सिखाई । नई रीति यह कहां चलाई ॥
हम तो तेरे हित की करि हैं । और कहै तासों सब लरिहैं ॥

१ सखी । २ राधा । ३ चुपरहनेका नियम ।

सुनत कुँवरि सखियन की बानी । बोली करत सबै यह जानी ॥
गुणागारि नागरी सयानी । बोली सहित निठुरई बानी ॥
तुम प्रीतम के बैरिनि मेरी । बूझति तुम्हें कहो सखि हेरी ॥
वाको कहति जुगैल मिलीरी । नहीं कही उन मोहिं भलीरी ॥
कह्यो मोहिं तुम श्याम मिलेरी । मैं चक रही सोंह मोहिं तेरी ॥
मेरे अँगछबि और बताई । तब मैं भई बहुत दुखदाई ॥
जिनको मैं सपने नहिं जानो । फिरि फिरि तिनकी बात बखानो ॥
मेरो कछु दुरावै है तुम सों । तुमहिं कहौ सखी सब हमसों ॥
कहां रहति मैं कहां कन्हाई । घर घर करत चवाव लुगाई ॥
दोहा–और कहैं तो मोहिं कछु, नाहिं व्यापहि मनमाहिं ॥
तुमहिं कहौ जो बात यह, तौ दुख होयकि नाहिं ॥
सो०–तुमपर रिस मो गात, ताते आदर नहिं कियो ॥
सुन प्यारीकी बात, रहीं सबै मुख तन चितै ॥
बोली एक सखी तिनमाहीं । हम तौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं ॥
ताही पर होती रिस आई । जिन यह तोसों बात चलाई ॥
प्रथमहिं हमैं प्रकट यह करती । हमहूंताहीं सों सब लरती ॥
क्यौं सखि प्यारियदोष लगावै । झूंठी बातन वैरै बढ़ावै ॥
तेरे श्याम कहां इन देखे । काहे को सपने हूं पेखे ॥
भेदाहिं भेद कहत सब बातैं । दैदै सैन करत सब घातैं ॥
प्यारी सबके मनकी जानै । सबसों रूखे बचन बखानै ॥
कौन कौन को मुख सखि गहिये । जाको जो भावै सो कहिये ॥
मनते गढि गढि बात बनावै । झूठीको साची ठहरावै ॥
बिना भीतही चित्रित केरो । बातन गहि आकाशहि फेरो ॥
नेक होय तौ सबही सहिये । झूंठी सबै सुनत उर दहिये ॥
आवत बोल न सुनि सुनि बातें । रहियत मौन सबनते तातें ॥
दोहा–वृथा झेर मोसों करत, कहि कहि झूंठी बात ॥

१ गुणका घर । छिपाव ३ शरीर । ४ तकरार ।

भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिन रात ॥
सो०मिलै सखी जो श्याम, और कहा याते भली ॥
सुनियतहै अभिराम, नंदमहरको सुवन अति ॥
कैसेहैं वे कुँवर कन्हाई। जिनको नाम लेत यह माई॥
नयनन भरि मैं देखे नाही। सुनियत सदा रहत ब्रज माहीं॥
कहति लजाति बात इक तुमको। इक दिन मोहिं दिखावहु उनको॥
देखहुँ धौं कैसेहैं तिनको। तुम सब मोहिं कहति हौ जिनको॥
सुनि वृषभानुसुताकी बानी। हँसी सबै गोपिका सयानी॥
सुनुप्यारी तैं सीख हमारी। कहन देहि कहि करै कहारी॥
तोको झूंठ कहे कह पैहैं। आपन को वै पाप कमैहै॥
यह काहू पै जात छपायो। नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो॥
तैं काहेको कान्हहि देख्यो। खरक दुहावनहूं नाहिं पख्यो॥
सुनहु सखी राधाकी बानी। कहत कछू यह अकथ कहानी॥
रहति सदा ब्रज गांव मझारी। इन नाहिं देखेरी गिरिधारी॥
जो हम सुनी रही सा नाहीं। ऐसेहि वायु बही ब्रज माहीं॥
दो०-सुनु प्यारी अब तोहिं हम. दिखरैहैं नँदनन्द ॥
तब बदिहैं यह राखिहौ, देखि उन्हें छलछन्द ॥
सो०-जब ऐहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बतायहैं ॥
ताहि देखिहैं बाम, है उनहूं अभिलाष अति ॥
तब तू चीन्ह लीजियो उनको। कहति नहीं देखे मैं जिनको॥
हैं कैसे कारे कै गोरे। सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे॥
तोहिं देखि ओऊ सुख पैहैं। तेरे हित बांसुरी बजैहैं॥
नाना भाव करैंगे जबहीं। हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं॥
तुमहौ चतुर राधिका जैसे। वेऊ श्याम चतुरहैं तैसे॥
हँसति कहति सब गोपकिशोरी। चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी॥
कबहूं तौ फँद में परिहौ आई। तबहीं दोहिं चिन्हाय कन्हाई॥

---

१ हंसी। २ सुन्दर। ३ राधिका। ४ पवनरूपी,-बहाव ५ स्त्री।

सुनत व्यंग सखियनकी बानी । मन मन बिहँसत कुँवरि सयानी ॥
चतुराई नीके गहि राखी । सखियनसों हँसि ऐसे भाषी ॥
जो तुम जियमें औरै जानी । मेरी बात प्रतीत न मानी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो । तब कीजो अपनो मन भावो ॥
कान्ह पीतपट बेसर मेरी । लीजो छोरि तबहिं गहि एरी ॥
दो०–यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी वदन निहारि ॥
आईही अति गर्व करि, चलीं सखी घर हारि ॥
सो०–कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ॥
कबहूं तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै ॥
तीसहु दिन जो चोर चोरैहै । साहहु पकरि कहू दिन पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों । भेद लियो चाहति तुम उनसों ॥
दूर धरो मनते यह भाई । बैठि रहो अपने घर जाई ॥
अति बड़ बोल गई कह कीन्हों । कैसी निठुर भई कछु चीन्हों ॥
वह नहिं फन्द तुह्मारे आवै । छन्द बन्द वाक को पावै ॥
वह सबहिनमें बड़ी सयानी । मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर सखी सुन मोसों । लीक खैंचि भाषत मैं तोसों ॥
फेर फार देखो हम धरिहैं । ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं ॥
अबतो भेद कियोहै प्यारी । हमहूं को यह रिसहै भारी ॥
तब लगि मनमें धीर न लैहै । जबलग चोरी पकरि न पैहैं ॥
निशि बासर अब हम सब कोऊ । श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ ॥
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं । जा दिन नीके पकरि निदरिहैं ॥
दो०–सब ब्रज गोपिनके बसी, बात यहै मन आन ॥
हरि राधा दोऊ मिलैं, निशिबासर यह ध्यान ॥
सो०–सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नहीं ॥
नन्दमहरको तात, सुता महर वृषभानुको ॥
यहै चवाव करति सब गोपी । हमसों बात राधिका लोपी ॥

१ दो अर्थकी बात । २ विश्वास । ३ छलबल । ४ दूसरी । ५ प्रतिज्ञाकर ७ छिपाई ।

लरिकाईंते हम सब जाने। कीन्ही प्रीति श्याम सों याने॥
तब सतभाव न हती झुठाई। अब हरि संग सिखी चतुराई॥
आज मौन धरि कियो दुराऊ। सदा होत किहि भांति बचाऊ॥
दिन द्वैचार और अब टारो। रहौ स्वभाव शोर जनि पारो॥
करन देहु इनको लँगराई। आपुहि बात प्रगट ह्वै जाई॥
तब इकसखी कही यों बानी। कहा कहत तुम बात अयानी॥
तुम जुकहति वह जानति नाही। हैं हम सब वाके नख माहीं॥
सात बरसते प्रीति लगाई। तुमतो आज जानि है पाई॥
वाकी चतुराई किन जानी। मीन कबहिंधौं पीवत पानी॥
हरिके ढंग सिखी सब वोऊ। हैं बारह बानी वै दोऊ॥
देखहु काल्हि केहु पतियानी। फिरि आई हम सब खिसियानी॥

दोहा–ऐसे सब व्रज सुन्दरी, मिलिकै करति चवाव॥
राधा हरि उरमें बसे, और न बात सुहाव॥

सो०–यह रस जान अनूप, व्रजवासी प्रभु प्रेमको॥
करिकै कृष्ण स्वरूप, होय रहीं व्रजकी तरुणि॥

श्रीराधा प्रातहि तहँ आई। जहाँ जुरी सब सखिन अथाई॥
आवतिलखि सब रही चुपाई। पेखत बदन गई सकुचाई॥
करति हुती उनहीं की बातें। सकुच गई तरुणी सब तातें॥
अति आदर करिकै बैठारी। कही कहां तू आई प्यारी॥
कहा हमारी सुधि तैं लीन्ही। बड़ी कृपा कछु हमपर कीन्ही॥
मैं कह आज अनोखे आई। तुम जुकरति आदर अधिकाई॥
पहुनी करि करिये पहुनाई। मैंतो आवति जाति सदाई॥
कैसी कहति बात तू प्यारी। बैठनको नहिं कहैं कहारी॥
तू आई करि कृपा हमारे। हमहूं कहा मौन व्रत धारे॥
तबहँसि बोली कुँवरि सयानी। करी तर्क मोसों तुम जानी॥
तादिनको बदलो यह कीनों। मोसों दाँव आपनो लीनों॥

१ भरोसाकिया। २ युवती। ३ चुपसाधजाय।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी । कहन लगीं सब सुनुरी प्यारी ॥
दोहा–दांव घात जानति तुमहिं,हमतौ शुद्ध स्वभाव ॥
तोहिं मान आईं सदा, तैसे मानति भाव ॥
सो०–तुम राखी मन लाय, तादिन वात भई जुवह ॥
हम डारी बिसराय, मानलई तेरीकही ॥
चोर सबै चोरी करि जानै । ज्ञानी सब मन ज्ञानहिं मानै ॥
सुनि यह कुँवरि मनहि मुसकानी । कह्यो सखी यह सांच बखानी ॥
जैसी जाके मनमें होई । बात कहति मुख तैसी सोई ॥
मैं तो सांच कही तुम पाहीं । कैसे धौं हरि जानत नाहीं ॥
हरषि सखिन तब उर सों लाई । कहत कहा तू रिस भरि आई ॥
हँसति कहति तोसों हम प्यारी । तू मति मानैं बिलग कहारी ॥
तुमही उलटी पुलटी भाखौ । तुमहीं रिस करि उरमें राखौ ॥
तुमहीं हरिको नाम बखानौं । तबमें सुन्यो कछू तुम मानौ ॥
जब हरि संग मोहि कहुँ लहियो । तब मन भावे सो कछु कहियो ॥
अब कैसेहुँ स्नान चलौगी । कै मोसों कछु फेरि लरौगी ॥
वहै बात गठि बन्धन कीन्हीं । नहिं भूलिहौ जानि मैं लीन्हीं ॥
गहि गहि सबकी भुजा उठाई । चलहु न्हान कबकी मैं आई ॥
दोहा–यहि विधि हास हुलास करि, सखिन संग सुकुमारि ॥
चली न्हान यमुना नदी, श्रीवृषभानु कुमारी ॥
सो०–सकल रूपकी रास, नवनागरि मृगलोचनी ॥
भरो अनंद हुलास, कृष्ण प्रेममें एक मति ॥

अथ स्नानलीला ॥

चली यमुन सब नवल किशोरी । कनक बरण तनु कोमल गोरी ॥
करत परस्पर सब सुकुमारी । हास बिलास कुतूहलभारी ॥
गई यमुनतट गोप कुमारी । सँग सोहति वृषभानु दुलारी ॥
देखि श्याम जल लहरि सुहाई । पैठीं सलिलैं न्हान अतुराई ॥

१ आनन्द । २ खेल । ३ खुसी । ४ जल । ५ शीघ्र ।

श्यामा सहित न्हात सब नारी। बिहरत जल बिहार सुखकारी॥
कण्ठ प्रमाण नारमें ठाढी। छिरकत जल अतिआनँद बाढी॥
करति बिबिध बिधि हास बिलासा। एक एक गहि करति हुलासा॥
लै लै कर सों नीर उछारैं। निरखि परस्पर मुख पर डारैं॥
मानौ शशि सेना सजि आये। लरत जलजंजल अस्त्र बनाये॥
सुनि तहँ श्याम युवति मनरंजन। आये कोटि काम द्युतिभंजन॥
निरखत तट ठाढे छबि भारी। यमुना जल बिहरत ब्रजनारी॥
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावैं। नान्हे सुरन माहिं कछु गावैं॥

दोहा—काछे नटवर भेषवर, चित्रित चन्दन अंग॥
ठाढे उमँगि कदम्बते, कीन्हें अंग त्रिभंग॥

सो०—तन घन सुन्दर श्याम, व्रजतियमन चातकसुखद॥
नखशिख अति अभिराम, ध्यान कामपूरण सकल॥

पदनख इन्दु प्रभा द्युतिहारी। चरण कमल शीतल सुखकारी॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई। करभैरम्भलखि रहत सदाई॥
कटि पटपीत काछनी काछे। केसर कमल न पटतर आछे॥
क्षुद्रावली कनक छबि छाई। नाभिगँभीर बरणि नहिं जाई॥
मनहुं मराल बालकी श्रेनी। सर समीप सोहति सुखदेनी॥
बडे बडे मोतिनकी माला। बिचरोमावलि झलकि बिशाला॥
मनहुं गंग बिच यमुना आई। चली धार मिलि तीन सुहाई॥
बाहुदंड दोउ तट कमनीया। चन्दन अंग रेत रमनीया॥
बनमाला तरु तीर सुहाये। फूलि रहे पचरंग छबि छाये॥
कम्बु कण्ठ त्रय रेख सुहाई। तीनि भुवन शोभा जनु छाई॥
चिबुक चारु गाढो मन मोहै। मुख छबि सिन्धु भँवर जनु सोहै॥
अधरदशन द्युति बरणि न जाई। तडितबिम्ब कहँ वह छबि छाई॥

दोहा—शुक नाशा खंजन नयन, भ्रुकुटि काम कोदंड॥

१कमल। २मन प्रसन्नकरनेवाले। ३ कान्ति। ४चन्द्रमाकी किरण। ५ केला। ६करधनी।

मणि कुंडल रवि छवि हरत, सोहत शीश शिखंड[1] ॥
सो०–उपमा गई लजाय, निरखि श्यामको रूपवर ॥
जहँ तहँ रही छिपाय, पटतरको[2] पहुँची नहीं ॥

उपमा हरितन देखि लजानी । दुरी भूमि कोउ बन कोउ पानी ॥
कोटि मदन अपनो बलहारे । मुकुट लकुट भ्रूमटक निहारे ॥
कुंडल निरखि भ्रमतरविरहहीं । तपन हृदय क्षण धीर न गहहीं ॥
अलक नासिका कर पद नयनन । अलिशुक कमल मीन खंजनगन ॥
लखि सकुचाय रहत बन माहीं । कहत हमैं कवि कहत वृथाहीं ॥
दशन दमक दामिनी लजानी । क्षण भकटत क्षण रहत छिपानी ॥
समुझत सधर अधर अरुणाई । विद्रुमै[3] बंधूँ[4] विम्बै[5] लजाई ॥
गगन रह्यो शशि बदन निहारी । घटत घटत नित शोचत भारी ॥
चारुकंठ लखि अति सकुचानो । रहत शंख जल मांझ छिपानो ॥
बाहु देखि अहि बिवर समाने । केहरि कटि लखि बनहिंपराने ॥
गंज गति गुलफ निरखि सरमाई । ऊंची आंख न सकत उठाई ॥
निज इच्छा छविहरि बपु धारी । दीनी पटतर मेटि मुरारी ॥
दोहा–अनुपम छविकवि क्यों कहै, बिन उपमा आधार ॥
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नंदकुमार ॥
सो०–अधर मनोहर बेनु, मन्द मन्द बाजत मधुर ॥
उपजावत मन मैन, व्रज सुन्दरि नव नागरिन ॥

जल विहार करि गोप किशोरी । निकरि चलीं तटको सब गोरी ॥
जानु जंघ जललौं सब आई । चुवत नीर अचरन छबिछाई ॥
परे दृष्टि मोहन तट माहीं । ठाढे कदम विटपकी छाहीं ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी । पंगु भई मति गति बहरानी ॥
इतहि लाज सखियनकी आई । दरशन हानि न उत सहिजाई ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी । लैहैं आज सखी सब जानी ॥

१ मोरपंख । २ बराबरी । ३ मूंगा । ४ दुपहरियाका फूल । ५ कन्दुरु ।

जानि गई यह अली सयानी। जानि बूझि सब भई अयानी॥
बहुरो न्हान लगीं सब पानी। रहीं इते करि आना कानी॥
प्यारी कबहुँ श्याम तनु हेरैं। कबहूं दृष्टि सखिन ते फेरैं॥
जानी सबै न्हात जल माहीं। मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं॥
तब मनमें यह बात बिचारी। देखिलेहुँ अब छबि गिरिधारी॥
यह दरशन कबधौं फिरि होई। ललकि लगीं अँखियां हठिदोई॥

दो०—निरखतिश्यामा श्याम छबि, पार निमे[2] घन मोर॥
नैन बदन शोभित मनों, द्वैशशि चारु चकोर॥

सो०—करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमियरस[3]॥
तृप्त न क्योंहूं मान, विवश भये मन दुहुंनके॥

यद्यपि सकुच सखिनकी गाढी। तद्यपि रुकी न चितवन बाढी॥
उमँगि गई सरिता[4]की नाहीं। सन्मुख श्याम सिंधुके माहीं॥
भरी सलिल अनुराग अथाहा। भँवर मनोरथ लहर उछाहा॥
कुल मर्याद करार ढहाये। लोक सकुचतरु तीर बहाये॥
धीरजनाव गही नहिं जाई। रहे थकितपल पथिक डराई॥
इकटक घोर अखंडित धारा। मिली श्याम छबि सिंधु अपारा॥
कहति सखी सब आपस माहीं। नयनसैन दै दै मुसकाहीं॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी। नाजानिये कौन अँग लटकी॥
कालिह हमहिं कैसे निदरी है। मेरे चित अब खुटक परीहै॥
बात कहत मेलै मुख तुलसी। देखहु अब देखत किमि हुलसी॥
सुन्दरि पियके रूप लुभानी। वे बातें अब सबहि भुलानी॥
इकटकरही नेक नहिं मटकी। कोजानै काहूके घटकी॥

दो०—भई भाव भोरे कछू, देखतही सुखदाय॥
चित्र पूतरी सी रही, देहदशा बिसराय॥

सो०—उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर वर॥
प्यारी मुख दृगलाय, नैन नहीं मटकत कहूं॥

१ सखी। २ पलक। ३ अमृत ४ नदी।

औरै भाव भई सखि प्यारी। बढ्यो प्रेम अंकुर तरुभारी ॥
गई तासु जर सप्तपताला। पहुँच्यो अंतर शिखर विशाला ॥
वचनपत्र अवलोकन शाखा। सब जग छांह छई अभिलाषा ॥
गुणविधि सुमन सुगंधि निकाई। लगीजाइ आनँद सुहाई ॥
पूरण आसन बनि भरभारा। फललाग्यो बर नंदकुमारा ॥
रहे रीझ तन मन धनवारैं। अरस परस दोउ खूब निहारैं ॥
तब इकसखी कह्यो मुसकाई। प्यारी देखे कुँवर कन्हाई ॥
वेईहैं सुन्दर सुखदाई। जिनकी ब्रजमें होत बड़ाई ॥
हमैं कहतही मोहि दिखावहु। देखिलेहु अब मन सुखपावहु ॥
बहुत लालसाही मनतेरे। ताहीते हरि आये नेरे ॥
पूजी आशदरश अबपाये। हमहीं इनको बोलि पठाये ॥
राखौ चीन्हि इन्हैं अबनीके। ये मनभावनहैं सबहीके ॥

दो०—भले शकुन आई इहाँ, भयो तुम्हारो काज ॥
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हैं ब्रजराज ॥
सो०—भयोनागरिहिशोच, सुनि सुनि सखियनकेवचन ॥
कहत करी मैं पोच, इन जानीअब बात सब ॥

मैं हरितन लखि रूपलुभानी। सोये देखि सबै मुसकानी ॥
काल्हिकही इनसों मैं वैसे। देखी आज मोहि इन ऐसे ॥
इन आगे मोबात नशानी। अब ये करत मोहि बिनपानी ॥
मोहीं पर मेरी चतुराई। परी उलटि उरआति सकुचाई ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो। तब मनमें हरि पियको ध्यायो ॥
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी। मैंप्रभु तुह्मरे हाथबिकानी ॥
अब सहाय सुंदर तुम कीजे। मेरी बात नाथ रखलीजे ॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई। जाते मेरी पति रहिजाई ॥
ऐसो हरिका सुमिरि सयानी। तबइक बात मनहिं मनठानी ॥
उरमें भयोबुद्धि परकाशा। तब कीन्हो मनमाहि हुलासा ॥

---

१ इच्छा । २ बुराई

सखिन कह्यो अबघर चल प्यारी । भई यमुनतट बहुत अबारी ॥
कबकी न्हान इहां हम आई । ऐसे कहि कहि सब पछिताई ॥
दोहा–कियो दरश तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं ॥
चीन्हिरहौमिलियो बहुरि, यहकहि सब मुसकाहिं ॥
सो०–तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी ॥
उरमें धरि ब्रजनाथ, प्रेम मगन बोली नहीं ॥
हँसि बूझति इक गोपकुमारी । कहो श्याम कैसेहैं प्यारी ॥
भायेरी तेरे मनमाहीं । हैंसुन्दर कछु कैधौं नाहीं ॥
कैहमसों फिरि बात लुकैहौ । कै अब मनकी सांच जनैहौ ॥
हम बरणो जैसे तुहि पाहीं । कछु तैसे हरिहैं कै नाहीं ॥
कहति मनहि वृषभानु दुलारी । मेरे ख्याल परी सब ग्वारी ॥
बातन बातन करति उघारो । ये चाहति अबहीं निरवारो ॥
मोहूं ते ये चतुर कहावैं । मोको बातन मांझ भुलावैं ॥
ऐसे इनसों वचन बखानो । इनको चातुरता गहिमानो ॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई । कह करिहैं मोसों चतुराई ॥
प्यारी पियके गर्बगहेली । अङ्ग अङ्ग सुख पुंज भरेली ॥
मन्द मन्द गति हंस सुहाई । पगद्वै चलत ठठकि रहिजाई ॥
मगन श्यामरस मुख नहि बोलै । धरणी चरण नखन करि छोलै ॥
दोहा–चितवत सूधेनेकनाहिं, काहू तन अनखाय ॥
रही गर्व पियश्यामके, गरबीली गरवाय ॥
सो०–सखिन कह्यो मुसकाय, क्यों प्यारी बोलतनहीं ॥
कै हमसों अनखाय, लियो मौनब्रत आज पुनि ॥
कै कछु बात कही नहिं जाई । कै तेरो मन हरयो कन्हाई ॥
कबहुँ जान पहिचान न तेरी । देखतही दृग तिनहि ढेरी ॥
सांची बात कहौ अब प्यारी । सोच परयो मन तोहि कहारी ॥
कहा रही ही हरिहि निहारी । इकटकनैन निमेष बिसारी ॥

१ छिपाओगी । २ दुख पाकर ।

सुनि सुनि सब सखियनकी बानी। बोली हरिभावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे। मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कैधौं नहिं देखे। तुमतौ बार हजारकपेखे ॥
तुमहीं हरिको रूप बतावो। मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे बरण भेष हैं कैसे। अंग अंग बरणौ तुम तैसे ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई। हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छंद बंद कछु हमाहिं न आवै। सांची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नँदनंदन जैसे। बरणि बतावहुं तुमको तैसे ॥

दोहा–श्याम सुभग तनुपीतपट, चटकीलो द्युतिकारि ॥
शोभित घन पर दामिनी, मनु चपलई[१] बिसारि ॥

सो०–मंद मंद सुखदात, गरजत मुरली मधुर धुनि ॥
चितवत अरु मुसकात, बरषत परमानंद जल ॥

बिबिध सुमन दल उरमें माला। इंद्रधनुष मनुउदित विशाला ॥
मुक्तावली[२] बीच मनमोहैं। बाल मराल पांति जनुसोहैं ॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई। कदमतरे ठाढे सुखदाई ॥
देखत मोहन बदन बिभागा। उपजत है अँखियन अनुरागा[३] ॥
लोचन नलिन[४] नये छबि छाजैं। तामधि पुतरी श्याम बिराजैं ॥
मनहु युगल अलि भाग निवारे। पियत मुदित मकरंद सुखारे ॥
तामहँ चितवनमें जु सुहाई। गूढ भाव सूचित सुखदाई ॥
अधर बिम्ब जनु दाडिम दाना। शुक नासिका देखि ललचाना ॥
भृकुटी धनुष तिलक शिरधारी। मानहुँ मदन करत रखवारी ॥
मोर चंद्र शिर सुमन सुहाये। काम शरन मनु पक्ष लगाये ॥
गडत आनि युवतिन मन माहीं। निकसत बहुरि निकासे नाहीं ॥
बारिजबदनै मनोहर बानी। बोलन मनहुं सुधारस सानी ॥

दोहा–कुंडल झलक कपोल छबि, श्रम सीकरके दाग ॥
मानहुं मनसिजमकरमिलि, क्रीडत सुधातडाग ॥

१ चंचलता । २ मोतियोंकी माला । ३ प्रेम । ४ कमल । ५ क...

सो०-भरे रूप रस राग, ऐसे शोभाके उदधि ॥
बिन अखियनकोभाग, अवलोकत हरिकोबदन ॥
अंग अंग सब छबिके जाला । हम देखे इहि भांति गोपाला ॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं । जो देखें सो सांच बखानैं ॥
सांचहि झूंठ करै जो कोई । तो वह झूंठ आपही होई ॥
हम इतननिमें नहा दुराऊ । कहत यथारथ सब सतभाऊ ॥
यामें जो कोउ झूंठी मानै । ताकी बात विधाता जानैं ॥
हम तौ श्याम निहारे ऐसे । तोहिं लगैं प्यारी कछु कैसे ॥
तुम देखे मैं सांच न मानौं । अपनी सी गति सबकी जानौं ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं । द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं ॥
जो तुम सब अँग अंग निहारे । धनि धनि तो ये नैन तिहारे ॥
मैं तौ लखि इक अंग भुलानी । भरि आयो दोउ आँखिन पानी ॥
कुंडल झलक कपोलन, छाही । रही चकित उतनेके माही ॥
रूंधे नीर नैन टकलाई । पहिचाने नहिं नेक कन्हाई ॥
दो०-मैं तबते अपने मनहिं, यहै रही पछिताय ॥
देखनको छबि श्यामकी, चहियत नयननिकाय ॥
सो०-अतिछबि अँखियांदोय, उमँगि चलत तापरसलिल ॥
कैसे दरशन होय, सखी श्यामके रूपको ॥
द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे । तुम देखे हरि मैं नाहिं हेरे ॥
तुम प्रतिअंग विलोकन कीन्हों । मैंनीके एकौं नाहिं चीन्हों ॥
काहू को षटरस नाहिं भावे । कोऊ भोजन को दुखपावे ॥
अपने अपने भाग्यनिकाई । जो बोवै सोइ लुनै बनाई ॥
जैसे रंक तनक धन पाये । होत निहाल आपने भाये ॥
मोहिं तुम्हैं अंतर है भारो । धनि तुम सब हरि अंगनिहारो ॥
तुम हरिकी संगिनि ब्रजबाला । ताते दरश देत नँदलाला ॥
सुनहु सखी राधा चतुराई । आपहि निंदति हमहिं बड़ाई ॥

१ समुद्र । २ समूह । ३ प्रत्येक अंग । ४ काटे ।

आपुन भई रंक हरि धनको । हमैं कहति धनवंत सवनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी । आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनि धनि धनि लाडिली पियारी। धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी ॥
तू पूरण हम निपट अधूरी । हमहि असंत संत तू पूरी ॥
दो०-धनि धनि तेरे मात पितु, धन्य भक्ति धनि हेत ॥
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥
सो०-धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहागतव ॥
तूमोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोडी अचल ॥
जैसें तैं हरि रूप बखान्यो । हैतैसोई यह हम जान्यो ॥
देखन को हरि रूप उजेरी । आंखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहत लोचन भरि आये । सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत स्थल शुभ जानी । करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बासहरि तुव दृग माहीं । और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐस श्याम संग ब्रजबाला । कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहां अचानक हरि पुनि आये । कटिकछनी नट भेष बनाये ॥
मुरली अरुण अधर पर राजै । कल ध्वनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मग माहीं । भावाधीन सकत रहि नाहीं ॥
तरु तमाल तनु तरुण कन्हाई । ठाढे भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला । लगीं विलोकन नँदकोलाला ॥
दो-०रत्नजटित पग पाँवरी, नूपुर मन्द रसाल ॥
चरण कमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल ॥
सो०-उदितचरणनखचंद, जनुमणि व्योमप्रकाशकरि ॥
सुरनर शिव मुनि वृन्द, विरहतापब्रजतियहरण ॥
जानु कोम शत छबिन सँवारे । युवतिन करि मन बुद्धि विचारे ॥
युगल जंघ छबि परम पुनीता । रंभा खंभ मनहुँ विपरीता ॥

---

१ दरिद्र । २ योग्य । ३ सुन्दर । ४ जूती । ५ आकाश ।

ठाढे धरणि एक पग लाये । कंचन दण्ड एक लपटाये ॥
तनु त्रिभंगकी लटक सुहाई । अटकिरही युवतिन मन भाई ॥
व्रज युवती हरिपद मन लाये । निरखति मुनि दुर्लभ सचुपाये ॥
कुलिश[1]ांकुश[2]ध्वज चिह्न निकाई । इकटक रहीं चितै चितलाई ॥
अरुण तरुण पङ्कज[3] दल चारू । मानहु सुखमा करत बिहारू ॥
कटिकेहरिकी कटिहि लजावै । सूक्षम सुभग कहति नाहिं आवै ॥
तापर कनकमेखला[4] सोहै । मणिन जटित सुन्दर मनमोहै ॥
मनहु बालकन सहित मराला । बैठे पंगति जोरि रसाला ॥
किधौं मदनके सदन सुहाई । बांधी बंधन वारि बनाई ॥
व्रजतिय निरखि २ सुख लेहीं । नैनन पलक परत नाहिं देहीं ॥

दोहा–शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदन तडाग[5] ॥
रोमावलि तटपर लसत, रस श्रृंगारको बाग ॥

सो०–व्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीरकी ॥
मन नहिं सकतिनिवारि, परचोजाय गहरे खसकि ॥

उदर उदार बरणि नाहिं जाई । रोमावलि तापर छबि छाई ॥
रही अटकि छबि तासुनिहारी । परखत बनत न निरखत नारी ॥
कोऊ कहति कामकी सैरनी[6] । कोऊ कहति योग नाहिं बरनी ॥
कहति एक अलि बालक पांती । जुरि बैठे सब एकहि भांती ॥
कोउ कह नीरद नील सुहाई । सूक्षम धूम धार छबि छाई ॥
एक कहति यह रबिकी जाई । मरकत गिरि उर ते प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा । जाति नाभि ह्रद अगम अपारा ॥
दुहुँ दिशि फेन स्वाति सुत माला । उपजत सुखमय लहर बिशाला ॥
शोभा बरणि सकति व्रजनारी । रहीं बिचारि बिचार बिचारी ॥
उर मुक्तनकी माल बिराजै । तामधि कौस्तुभ मणि छबि छाजै ॥
निर्मल नभ मानहु उडुराजी । शशिहिं घेरि बैठी छबि साजी ॥

१ वज्र । २ अंकुश । ३ कमल । ४ कौंधनी । ५ तलाब । ६ सिढ़ी ।

मृगु पद देखि श्याम उर माहीं । मनहुँ मेघ भीतर शशि छाहीं ॥
दोहा—पीत हरित सित अरुणरँग, चटकीली वनमाल ॥
प्रफुलित है छविकी ववरि, मानँहु चढी तमाल ॥
सो०—छवि वरणी नहिं जाय, कंबुकंठ मणि कंठकी ॥
व्रजतियरहीं लोभाय, हरि उरवर शोभा निरखि ॥
वृषभ कंध भुज दण्ड सुहाई । निंदत अहिगजशुंडि निकाई ॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै । बाहु विभूषण लखि मन मोहै ॥
जनु शृंगार विटपकी डारी । फूल रही उपजत छवि भारी ॥
हरिमुख निरखत गोपकुमारी । पुनि पुनि प्रणाम करति बलिहारी ॥
कहति परस्पर अति मन लोभा । देखहु सखी मदनकी शोभा ॥
चिबुक चारु अधरन अरुणाई । पान रेख तापर छवि छाई ॥
मंद हँसन द्युति दशन निकाई । उपमा कापै जात बताई ॥
अनुपम छवि चित लेत चुराये । जगमोहनी हमारे भाये ॥
गोल कपोल अमोल नवीने । मानहुँ मुकुर नील मणि कीने ॥
बाजत मुरली करकी फेरन । चंचल नयन चपलकी हेरन ॥
मणिन जटित कुंडलकी डोलन । प्रतिविम्बत सब मुकुर कपोलन ॥
सो छवि कापै जात बखानी । लखि व्रज तिय विन मोल बिकानी
दोहा—सुभगनासिका चपलदृग, कुटिल भृकुटिकीरेख ॥
जनु युग खंजन वीचशुक, उडि न सकतवनदेख ॥
सो०—घुंघुरारेकचश्याम, वारिजमुख विगभ्रमरजनु ॥
शीशमुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरण ॥
रूप सुधानिधि बदन विराजै । दुहुँ कर अधर मुरलिका बाजै ॥
मानहुँ युगल कमलपद माहीं । लेत भराय सुधा शशि पाहीं ॥
हरिमुख निरखत नयन भुलाने । इकटकरहे तृप्ति नहिं माने ॥
घोषकुमारि लखति नँदनन्दन । श्याम सुभग तनु चित्रित चन्दन ॥
कनक बरण पटपीत विराजै । देखि सखी उपमा यह राजै ॥

---

१ बैल । २ सर्प । ३ सुन्दर । ४ दांत । ५ दर्पण । ६ बाल । ७ कमल ८ गोपि

निर्मल गगन शरद घनमाला । तापर स्थित दामिनि जाला ॥
अंग अंग छबिपुंज सुहाये । निरखति युवती जन मन लाये ॥
कोऊ भाल तिलकछबि अटकी । मुकुट लटक छबि परकोउलटकी ॥
कोऊ अलक लखति चितलाई । कोउ लखि भृकुटि सुरतिबिसराई॥
कोउ लोचन छबि लखिललचानी । चितवनमें कोऊ उरझानी ॥
कोऊ कुंडल झलक लुभानी । कोउ कपोलद्युति निरखि बिकानी
कोउ नाशा कोउ अधर निकाई। कोउरदं चमकनि मांझ भुलाई ॥
दोहा–कोउँ बोलति कोउ मृदु हँसति, कोउ मुरली धुनिलीन ॥
कोउ मुरली पर ग्रीवकोउ, लटकन पर आधीन ॥
सो०–चारु चिबुक दर ग्रीव, कोऊ गडि तामें रहीं ॥
हरि मुख शोभा सींव, थकीं निरखि जहँ सो तहां ॥
कोउ सुंदर उरबाहु विशाला । निरखि थकी कोउ भूषण बाला॥
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी । जंघ गुल्फपर कोउ बलिहारी ॥
युगल कमल पदनखकी शोभा । ब्रजबासी जन मनकी लोभा ॥
हरि भति अंग निरखि ब्रजनारी। देहगेहकी सुरति बिसारी ॥
अति आनन्द मगनमन भूली । शशिमुख लखि जनु कुमुदिनि फूली
किधौं चकोर रहे टकलाई । पियत सुधा छबि शीतलताई ॥
कैरबि कुंडल छबिहि निहारी । विकसत कमल मदन बरनारी ॥
कैचकई गण मन सुखमानी । निरखिरहीं अति रति हर्षानी ॥
कैधौं नव घनतन छबि देखी । भये चातकी मुदित विशेखी ॥
किधौं मृगी मुरली ध्वनि मोही । श्याम लखति युवती द्रुम सोही ॥
हरि छबि अरुझनिमें अरुझानी। सुरझ न सकति युवति बिततानी॥
रूप राशि सुखराशि कन्हाई । प्रेम राशि जनके सुखदाई ॥
दोहा–छबि सागर सुखकी अवधि, गुणमंदिर रसखान ॥
मोहि लियो मनतियनको, रसिकनरेश सुजान ॥
सो०–मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि ॥

१ गुल्फ । २ दांत । ३ सीमा ।

अनुपम छबि दरशाय, गये सदन आनंद घन ॥
रहीं ठगीसी गोपकुमारी । मन हरि लेगये नवल बिहारी ॥
पुनि पुनि कहति भई सुख मानी। धनि धनि राधा कुँवरि सयानी ॥
बडभागिनि तोसो नहि प्यारी । तेरेहे बशरी गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा। धनि जोरी धनि प्रीतिललामा ॥
एक प्राण द्वैदेह तुम्हारे । तुमबिन रहि न सकत हरि न्यारे॥
तोको देखि बहुत सुखपावैं । मुरलीमें तेरे गुणगावें ॥
तेरी प्रीति सांच हरि जाने । ताते तेरे हाथ बिकाने ॥
मन बच क्रम निर्मल तू प्यारी । दुराचारनी हम सब नारी ॥
जैसे घट पूरण नहि डोलै । होय अबधिलौं सोढकढोलै ॥
परमसुजान नारि तैं धीरा । राख्यो परखि हृदय हरि हीरा ॥
धनी न अपने धनहिं बतावै । धरतछिपाय न प्रकट जतावै ॥
धन्य सुहाग भाग तुव प्यारी । कृष्ण सदा पति तूहे नारी ॥
दोहा–सुनि सुनि बाणी सखिनकी, प्यारी जिय अनुराग ॥
पुलकि रोम गदगद हियो, समुझि आपनो भाग ॥
सो०–बचन कह्यो नाहिं जाय, प्रीति प्रकट चाहत कियो ॥
हरि उररहे समाय, बाहर करत प्रकाश नाहिं ॥
सुनहु सखी तुम करति बडाई । सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई ॥
मोहि कहतिं श्यामहितैं जान्यो । हरिको भले परखि पहिचान्यो ॥
तबते यही शोच मन माहीं । कैसे हरि पहिचाने जाहीं ॥
नयन दोय छबिअमित अगाधा । तापर पलक करतिहै बाधा ॥
क्षणहीमें भरि आवत पानी । श्याम स्वरूप परै किमिजानी ॥
रोम रोम अँग लखिये कोई । पलक परत औरे छबिहोई ॥
क्षण क्षणमें शोभा पलटावै । कहौ सखी उर कैसे आवै ॥
देखनको दृग अति अकुलाहीं । प्रगट लखत पहिचान न जाहीं ॥
यह सखि नहीं परति कछु जानी। बिरह संयोग लाभ कै हानी ॥

१ अद्भुत । २ खोटी । ३ बहुत ।

कै दुख सुख कै समरस होई । मुहिं समुझाय कहौ सखि सोई ॥
घृततें होम अग्नि रुचि जैसे । मिटति नही नयननिगति तैसे ॥
उत छबिखानि नई छबिवाने । इत लाभी दृग तृप्त न माने ॥
दोहा–बिन पहिंचाने कौन विधि, करौं श्याम सों प्रीति ॥
नाहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति ॥
सो०–यह जानी मैं बात, हैं आनंदकी खानि हरि ॥
पहिंचाने नाहिं जात, कहा करौं द्वै लोचननि ॥
बड़ो क्रूर विधना यह आली । समझ परी देखत बनमाली ॥
कर पद उदर ग्रीव कटिकीनी । मुखरद श्रुति नाशा शुभ दीनी ॥
भाल शिखर नख केश बनाये । अधर जीव अरु बचन सुहाये ॥
रचि पचि रुचिर अंग सब कीने । रोम रोम प्रति नयनन दीने ॥
जो ब्रज दीनो जन्म हमारो । देखन को मनमोहन प्यारो ॥
तौ कत नयन दिये शठदोई । विधि ते निठुर और नहिं कोई ॥
जो बिधना को बशकर पाऊं । तो अब पद्धति और चलाऊं ॥
रोम रोम प्रति नैन बनावैं । इकटकरहैं पलक नहिं लावैं ॥
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो । होय मनोरथ पूरण मेरो ॥
हरि स्वरूप लखि जानि न जाई । वह छबि द्वै लोचन न समाई ॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरा । एकहु अंग न नीके हेरो ॥
जो देखौं तौ प्रीति करोरी । देखनहीकी साधन गोरी ॥
दोहा–दुरत दुराये कौन विधि, सखि तुम सों यह बात ॥
देखे बिन नँदनन्दके, धीरज धरत न गात ॥
सो०–उड्यो फिरत दिनरात, इन नयननके संग लगे ॥
क्षण नाहिं मन ठहरात, आकरुई जिमि बात वश ॥
सुनुरी सखी दशा यह मेरी । जबतें हरि मूरति मैं हेरी ॥
संगहि फिरौं दरशनहिं पाऊं । मनहीं मन पुनि पुनि पछिताऊं ॥
जब मैं अपन जिय यह आनों । निकट जाय हरि छवि पहचानों ॥
तब प्रतिबिंब मेरोई आई । होत तहां मोको दुखदाई ॥
मेर मन हरि मूरति भावै । सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै ॥

मेरिय देह होत मुहिं बैरी । कितौ दुरावति दुरत न हैरी ॥
मैं अंतर तजि लखत कन्हाई । यह अति अंतर देत बढाई ॥
सखी दोष नाहिं काहू केरो । करत श्याम यह सब झकझेरो ॥
नीके दरशन कबहूं देहीं । नइ नइ छबि करि मन हरि लेहीं ॥
चपलाहूते चपल घनेरी । दशन चमक चौंधत है एरी ॥
कबहूं अंगन मुकुर बनावैं कबहूं कोटि अनंग लजावैं ॥
कैसे सब छबि देखि जु पइये । कौन भांति यह साध पुरइये ॥

दोहा–मगन दरशरस लाडिली, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
तृप्त मान तिय देखि छबि, कहत लखं नहिंजात ॥

सो०–लीनों सखियन जान, हरि रँग राती लाडिली ॥
सुंदर श्याम सुजान, रोम रोम याकेरमे ॥

कहति धन्य प्यारी बड़भागी । नीके तू हरि सँग अनुरागी ॥
तूहै नवल नवलहरि ओऊ । रूप अगाध सिन्धु तुम दोऊ ॥
हम जानी यह बात अगाधा । तू हरिकी अर्द्धंगिनि राधा ॥
मिले तोहिं करिकृपा कन्हाई । दिये सकल दुख दूरि मिटाई ॥
कहु प्यारी हमसों अब सांची । कहेबने यह बात न कांची ॥
छांड़ि देहु अब यह चतुराई । कहां मिले कहु तोहिं कन्हाई ॥
खरकमिले कै कुंजन माहीं । कै दधिवेचन जात जहांहीं ॥
कै जब उरग डसनते बाची । कहु कैसे तू हरि रँगराची ॥
सुनि सखियन की बात सयानी । बोली परम नागरी बानी ॥
कुवरी श्याम मिले नहिं जानों । सुनहु सखी मैं सांच बखानों ॥
गृह बन कुंज सुरति नहिं मोहीं । दधि वेचन कै खरकबिमोहीं ॥
आजकै काल्हि कहौं कह आली। कियो बास उरमें बनमाली ॥

दोहा–नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात ॥
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात ॥

सो०—मिले मोहिं जब श्याम, सुनो सखी तुमसों कहौं ॥
करि कै उरमें धाम, तबते मन मेरो हरयो ॥

मैं यमुना जल भरन सिधाई। औचकहरि तहँ परे लखाई ॥
मोतन चितै रहे मुसकाई। कहा कहौं सखि नैन निकाई ॥
जीत आपने बल जनुकीनी। शरद सरोजनकी[१] छबिहीनी ॥
जीते सकल रूप गुण जाती। नीलकोकनद[२] अरु सत पाती ॥
पैनिशि मुद्रित दिवस प्रकाशे। क्षण प्रति होत मलिन द्युतिनाशे ॥
वै आनंद कंद सुखमूले। रहत दिवस निशि छबिसों फूले ॥
निरखि नयनमें दशा भुलाई। उन मुसकान मोहनी लाई ॥
शिथिल अंग भये जैसे पानी। तबहीं ते उन हाथ बिकानी ॥
सूधे मारग गई भुलाई। ज्यों त्यों करि पहुँची घरआई ॥
तादिनते अँखियां ये मेरी। सुख दुख भूलिभई हरिचेरी ॥
बसी जाय वा चितवनमाहीं। अब वह छबि क्षण बिसरत नाहीं ॥
कै इन नैननि आय समानी। यह चितवनकछु जात न जानी ॥

दो०—नहिं जानत हरि कह कियो, मंदमधुर मुसकाय ॥
मन समुझत रीझत नयन, मुख कछु कह्यो नजाय ॥

सो०—तबते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह ॥
अमल परयो द्दग आय, अवलोकनहरिविधुवदन[३] ॥

निकसे सखी एकदिन आई। द्वार हमारे कुँवर कन्हाई ॥
मैं ठाढीही अजिर[४] अकेली। देखिरही छबि यह अलबेली ॥
चंचल नयन चितै चितचोरै। सुभग भृकुटि बिबबंक मरोरै ॥
कोटि मदन तनुद्युति सँग बाही। फेरत कमल कमलकर माहीं ॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढे। कियो भाव कछु आँनँद बाढे ॥
लेकर कमल भाव सों लायो। पीताम्बर निजशीश फिरायो ॥
मैं गुरुजन उर शंका आनी। बोलि न सकी कछू मुखबानी ॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये। वैसहि उनको फेरि पठाये ॥

१ कमल। २ नीला कमल। ३ चन्द्रमाके समान मुख। ४ आँगना। अनोख ॥

तू तौ चतुरहुती अतिनारी । सेवा कछू करी नहिंप्यारी ॥
गुप्त भाव तोसों हरिकीनों । बातनभुरैं नहीं क्यों लीनो ॥
काहे कमल भावसों छायो । काहे पीताम्बरहिं फिरायो ॥
तैं कछु उत्तर तिन्हैं जनायो । घर आये केहि विधि विसरायो ॥
दो०—कहाकरौं गुरुजन सखी, भये मोहिं दुखदाय ॥
सकुचिरही तिनकी सकुच, मुखकछु वचन वनाय ॥
सो०—इतनो कियो सयान, मैं तब बैठो कर परशि ॥
उरलाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसी ॥
अन्तर्यामी चतुर कन्हाई । जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी । रहे कमल हिरदय पर धारी ॥
रहे चितै अतिहित चितलाई । मोते सखी न कछु बनि आई ॥
कहा करौं कछु दोष न मेरो । नयो नेह उत गुरुजन घेरो ॥
रही देखि मन आनँद धरिकै । दियो कमलउर आसन करिकै ॥
आंचर फेरि निछावरि कीनों । अर्घ्य सलिल आंखिन सों दीनों ॥
उनँगि कलशकुच प्रगट भयेरी । टूटि टूटि कुच बंद गयेरी ॥
अब मनहोत लाज अति भारी । सखी समुझि करणी वह सारी ॥
ऐसी मेरी मति अज्ञानी । प्रभु सों नेगल करि मैं मानी ॥
अति सुख मान गये सुखदाई । तबते मानन कछु न सुहाई ॥
कहति सखी राधा सुनि मेरी । सेवा मान लई हरि तेरी ॥
अब काहे पछितात अनेरी । तोहित श्यान जात करिफेरी ॥
दो०—नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि वाम ॥
उन लीन्हे सब जानिकै, चतुरशिरोमणि श्याम ॥
सो०—भावहिको सनमान, गुरुजनके मधि चाहिये ॥
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा ॥
तेरे वशहि भये दधिदानी । हम यह बात भले करिजानी ॥
तैं बेंदी उन पाग सँवारी । उनको तुम उन तुमहिं जुहारी ॥
मिली आरसी में तुम उनको । उन उरधरी कमल मिस तुमको ॥

१ चतुर । २ बड़े बूढ़े । ३ प्रणाम किया ।

जाने कहा भेद यह कोऊ । एक प्राण है तनु तुम दोऊ ॥
सुनहु सखी मोहन सुखराशी । अँखियां रहति दरशकी प्यासी ॥
निकसत जब सुन्दर इत आई । कमल नयन कर बेणु सुहाई ॥
नाजानिये सखी तिहि काला । सब तनु श्रवण बिलोचन जाला ॥
सुरत शब्द प्रति रामन माहा । नख शिख ज्यों चख देख्यो चाहीं॥
इतने पर समुझत नाहिं बैना । चिते रहत ज्यों चित्रित[1] मैना ॥
सुनहु सखी यह सांचकि सपनो । कै दुख सुख कै संभ्रम[2] अपनो ॥
कहा करौं गुरुजन डर मानो । मन मेरो उन हाथ बिकानो ॥
जबते द्वार दरश मोहिं दीनों । तबते मन अपनो करि लीनों ॥
दोहा–भाग्य दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान ॥
मैं सेवा नहिं करिसकी, गुरुजनको डरमान ॥
सो०–यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरिलै गये ॥
अब लागी पछितान, फेरि कौन बिधि पाइये ॥
जबते प्रीति श्याम सों कीनी । तबते नींद दृगन तजि दीनी ॥
फिरत सदा चित चक्र चढ्योसो । रहतहिये अति शोच बढ्योसो ॥
मिलहिं कवन बिधि कुँवर कन्हाई । यहै बिचार बिचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये । पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये ॥
सुन प्यारी तू हरि रँगराँची[3] । बात कहैं तोसों हम सांची ॥
तोते चतुर और नहिं कोऊ । तुम अरु श्याम एक भये दोऊ ॥
बाकी नहीं कछू अब बांची । कहौं बात मैं रेखा खांची ॥
ऐसी भई आप तू भोरी । उनको मनतैं नाहिं लियोरी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो । तब उन तेरोहू अपनायो ॥
अब काहेको करत सयानी । नंदनँदन बर तू पटरानी ॥
तोसी और कौन बड़भागी । तेरे संग श्याम अनुरागी ॥
बिलसौ श्याम संग सुख मानी । अब कत बृथा रहत बौरानी ॥
दोहा–श्याम करी मोहिं बावरी, मनकरि लियो अधीन ॥

१ तसवीरकी । २ सन्देह । ३ रंगी ।

बंसी ज्यों वाकीपलक, अटके मो दृग मीन ॥
सो०—अब मोहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं ॥
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर ॥
बार बार मैं तोहि सुनाई। तेर मन यह बात न आई ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी। मैं पाई इतनी कहँ एरी ॥
देखतहीं हरि रूप लोभानी। मोते सुधि बुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी। गद्गद बचन श्याम रस पागी ॥
पुनि पुनि कहति यहै मुख बानी। मन हरि लियो छैल दधिदानी ॥
तब इक सखी सखीसों बोली। तू कत होति जानकै भोरी ॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी। गुप्त बात तिन प्रगट बखानी ॥
तुम जानत श्यामा है छोटी। है यह ज्ञान बुद्धिकी मोटी ॥
रहत सदा हरिके सँग माहीं। हमसों कहत करति सो नाहीं ॥
किये रहति हमसों हठ ओटी। बात कहत मुख चोटी पोटी ॥
भये श्याम याहीके वश अब। देखि छकैं बेंदी छोटी छब ॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी। वे खोटे उनते यह खोटी ॥
दोहा—कहति सखी यह तू कहा, निपट गवाँरी बात ॥
को प्यारी सम दूसरी, जाके वश बल भ्रात ॥
सो०—रूप शील गुण धाम, यह सबमें ब्रज आगरी ॥
दृढ ब्रत लीन्हों श्याम, धन्य न याते और कोउ ॥
प्रीति गुप्त ही की है नीकी। कही बात सखि अपने जीकी ॥
मैं रीझी या पर अति भारी। क्यों खोटी जो कृष्ण पियारी ॥
जो हरि कोटि मदन मन मोहैं। सो मोहन याको मुख जोहैं ॥
जैसे श्याम नारि यह वैसी। भेद करै सो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवलके नागर। सुन्दर यह जोरी छबिसागर ॥
सुनहु सखी ऐसे पै राजैं। एक प्राण द्वै तनु सुख काजैं ॥
एकहु पलक कबहुँ नहिं न्यारे। सोवत जागत जान हमारे ॥

१ लोहेका कांटा जिसमें चुन लगाकर मछली पकड़ते हैं। २ मूर्ख।

पूरब नेह नयो वह नाहीं । देखहु सखी समुझि मन माहीं ॥
मेरो कह्यो मानि यह लीजै । इनसों भाव प्रीति करिकीजै ॥
इनकी प्रीति प्रीतिके माहीं । विना प्रीति ये जान न जाहीं ॥
जब लग इनसों प्रीति न माने । तब लग इनकी प्रीति न जाने ॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ । तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ ॥

दोहा–सखी वचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥

सो०–धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जान्यो भले ॥
हम सब निपट अजान, बात कहत औरे कछू ॥

हम इनको ऐसे नहिं जाने । ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने ॥
श्यामा श्याम एक हैं एरी । तैं इतने उपहास सहेरी ॥
वे दोउ एक दूसरी तूरी । तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी । तबतें प्रीति पुरातन जानी ॥
धन्य श्याम धनि धनि तुवश्यामा । हम सब वृथा भई विन कामा ॥
श्याम राधिका सहज सनेही । सहज एक दोऊ हैं देही ॥
सहज रूप गुण पूरण कामी । सुन्दर सहज सहज बन धामी ॥
देखि दुहुँनकी प्रीति विशाला । भई विवश सब ब्रजकी बाला ॥
श्यामा श्याम रंग रस पागीं । सोवत ते मानहुँ सब जागीं ॥
उपजी प्रीति दुहुँनकी सांची । दूरि गई दुविधामति काची ॥
भई युगल रस वश सब गोपी । लाज शंक मर्यादा लोपी ॥
सबके नैन रूप रस अटके । श्रीश्यामावर नागर नटके ॥

छं०–नवल नागर श्याम श्यामा, प्रेम मन सबके फँसे ॥
नयन नासा श्रवण रसना, अंग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत, जात निशिवासर घरी ॥
नहीं विसरत ध्यान कबहूं, सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥

दोहा–गईं सकल निज निज सदन, युगल प्रेम रस लीन ॥

१ दोनोंके । २ डुबोदी । ३ श्रीकृष्ण । ४ राधिका । ५ कान । ६ जिव्हा ।

बिछुरत नाहिं एकौ घरी, जैसे जल अरु मीन ॥
सो०-रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग कल नहीं ॥
गृहकारज न सुहाय, गुरु जन त्रास न सुरति कछु ॥
वे कछु कहैं करैं कछु औरैं । सासुननँद तब मारन दौरैं ॥
कहैं यहै पितु मात सिखायो । ऐसोई ढँग तुम्है बतायो ॥
कहा तुम्हारे मन यह आई । अपनी सुधि बुधि कहां गँवाई ॥
तुम कुलबधू लाज नहिं आवै । कहँ लगि कोउ तुहैं समुझावै ॥
कबकी यमुना न्हान गई हौ । ऐसी अब तुम निडर भई हौ ॥
तुम राधाकी संग करति हौ । हरिके पाछे वही फिरति हौ ॥
बड़े महरकी सुता कहावै । यह सब बात उन्हैं बनिआवै ॥
उनको सब उपहास उठावत । ब्रज घरःघर प्रति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहूं नाम धरै हौ । ब्रज लोगनमें हमैं हँसैहौ ॥
हम अहीर ब्रज पुरके बासी । ऐसे चलो होय नहिं हाँसी ॥
लोक लाज कुलकानिहिं करिये । फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये ॥
ऐसे कहि गुरुजन समुझावैं । लाज काज मर्याद सिखावैं ॥
दो०-सुनि युवती गुरु जन बचन, बिहँसि रहीं धरि मौन ॥
हरि राधा उपहासकी, महिमा जानै कौन ॥
सो०-कहत तैसिये बात, जैसीमति जाके हिये ॥
सुख उलूकही रात, रविको तेज न मानहीं ॥
विषको कीट विषहि रुचि मानै । कहास्वादरस स्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन । नन्द नँदन सुर अतिशिवकोमन ॥
तिनकी महिमा कह ये जानैं । जिनके गुण मुनि गर्ग बखानैं ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी । श्यामहि मिली कर्म मन बानी ॥
श्याम कामके पूरण हारैं । पूरण करि तिनको उर धारैं ॥
धन्य धन्य श्यामाबनवारी । यह रसलीला ब्रज विस्तारी ॥
ऐसे गोपी गण करि ध्याना । करत श्यामा श्याम गुणगाना ॥

---

१ डर । २ उलू । ३ वेद और महादेवजीका मन ।

श्याम रूप श्यामा अनुरागी । रोम रोम ताही रँग पागी ॥
गई सदन मन लागत नाहीं । मन मोहन विन क्षण युग जाहीं ॥
मनही मन गुरु जन पर खीजै । इन विमुखनको संग न कीजै ॥
कौन भाँति करि इन सों छूटौं । क्यों वह दरश सरससुख लूटौं ॥
बार बार जिय अति अकुलाई । कैसेहुं हरिबिन रह्यो न जाई ॥
दो०-धृक गुरु जन कुलकानि धृक, धृक लज्जा धृक धाम ।
धृक जीवन वहु दिननको, विनु सुन्दर घनश्याम ॥
सो०-पलक कलप सम जाय, व्रजवासी प्रभु दरशविन ॥
सदन अनेक सुहाय, मन हरि लीन्हों सांवरे ॥

अथ बाटकेमिलनकी लीला ॥

श्रीवृषभानु कुँवरि वर गोरी । कृष्ण प्रेम उनमत्त[1] किशोरी ॥
तनु बिह्वल[2] मन हरिके पासा । दुरत न हृदय प्रेम परकाशा ॥
चली यमुन जल आप अकेली । रूप राशि गुण राशि नवेली ॥
दृगन श्याम दरशनकी आसा । मनहीं मन यह करति हुलासा ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं । तौ उरको संताप नशाऊं ॥
राखौं बांधि हृदय सों लाई । भुजकी दृढ करि दाम[3] बनाई ॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो । तैसे लेउँ छोरि उनकेरो ॥
छाँडौं नाहिं करै जो कोरी । ऐसे जान विचारति गोरी ॥
इतते प्यारी यमुनहिं जाई । उतते आवत घरहिं कन्हाई ॥
नीलजलजतनु शोभित आछे । नटवर भेष काछनी काछे ॥
दूरिहितें देखतही जान्यो । जीवन प्राण तुरत पहिचान्यो ॥
रही मनोहर वदन निहारी । कोटि मदन जापर बलिहारी ॥
दो०-मन आनँद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृगवारि[4] ॥
बोली गदगद वचन मुख, तनु विह्वलहि संभारि ॥
सो०-चित चोरे कहँ जात, मैं ढूँढति तबते तुमहि ॥
कहँ सीखी यह बात, अहो नंदके लाँडिले[5] ॥

१ पागल । २ व्याकुल । ३ रस्सी । ४ मेघ । ५ प्यारेपुत्र

जानत जैसे माखन चोरी । तव वह बात हती कछु ओरी ॥
बालकहते कान्ह तब तुमहूं । भोरी सहज हुती मनहमहूं ॥
मुख पहिचान मान सुख लेती । यशुमति काने जान तब देती ॥
वसौ बास सब ब्रज इक ठौरी । गोरस काज कान नाहिं तोरी ॥
अब भये कुशल,किशोर कन्हाई। भईसजग हम सव तरुणाई ॥
माखन ते अवचितकी चोरी । लागे श्याम करन बरजोरी ॥
नखशिख अँग चित चोर तुह्मारो। लीन्हों मन धन छीनि हमारो ॥
सो अब जात कहां तुम लीन्हें । भुजापकरि ठढे हरिकीन्हें ॥
तुमको नीके करि हम चीन्हें । वनिहै अव मेरो मन दीन्हे ॥
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत । मोसों सूधे वचन नः बोलत ॥
अव तौ मोहिं बूझि घर जैहो । बिना दिये मन जान न पैहो ॥
प्यारीयों झगरति पिय पाहीं । देहगेहकी सुधि कछु नाही ॥
दो०–वीच करी कुल लाज तव, सन्मुख आई धाय ॥
वकसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समुझाय ॥
सो०–चितलै गयो चुराय, चूक परी हरि ते वडी ॥
छाँडि देहु डरपाय, वडे महरिकी कुँवरि तुव ॥
कुलकी लाज अकाज कियोरी। कहा करौं अति जरतहियोरी ॥
तवयों कहति पीयसों प्यारी । सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी ॥
देखे विना तुमहिं दुख पाऊं । सो यह तुम बिन काहि सुनाऊं ॥
गुप्त रहन मोको तुम भाख्यो । सो आयसु मैं शिर धरि राख्यो ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती। प्राणनाथ तुमहित सब भांती ॥
तुमतेविमुख जननके माहीं । रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं ॥
मात पिता अति त्रास दिखावैं । निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं ॥
भवन मोहिं माँठीसों लागे । इक क्षण शोच नाहिं उरत्यागे ॥
कहँ लगि अपनी बिपति बताऊं। तुम बिन सुखको अंत न ठौंऊं ॥
सुंदर श्याम कमलदललोचन । कर हुकुसंगतिको दुख मोचन ॥

१ मुलाहिजा । २ चतुर । ३ विरुद्ध ४ धूलकेसमान ।५ मकान ।

अब यह विनय श्याम सुनि लीजै। चरणन ते न्यारी नहिं कीजै ॥
कुलकीकानि कहां लगि मानो। यह मन मोहन तुमहिं लुभानो ॥
छं०–मन लुभानो तुमहिं मोहन, और तेहि भावै नहीं ॥
बिनलखे गिरिधरण सुन्दर, कहूं सुख पावै नहीं ॥
लोक डर कुल लाज गुरु जन, कानि कहलौं कीजिये॥
सिंह शरण कृपालु जंबुक, त्रास क्यों सहि जीजिये ॥
दोहा–निरखि श्याम प्यारी बदन, सुनिकै बचन सिहाय ॥
प्रेम अधीन विलोकि अति, हांषि लई उरलाय ॥
सो०–शीतल पंकज पान, परश हरयो तनु बिरह दुख ॥
प्रेम विवश भगवान, बोले प्यारीसों हरषि ॥
कत दुख पावतिहौ तुम प्यारी। यह लीला तुमहित विस्तारी ॥
बसत सदा मैं तुम मन माही। तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्रीवृन्दावन घन सुखकारी। हैविहार थल तुम्हरी प्यारी ॥
शीतल सघन कुंज छबि धामा। हम तुम संगमिलैं तहँ भामा ॥
दीजौ सैन मोहिं कहँ आई। तब तुम पै ऐहौं मैं धाई ॥
अब गृह जाउ आइहैं कोऊ। यों संकेत बढ्यो हित दोऊ ॥
ब्रज यमुना मग बिच दोउ ठाढ़े। प्रेम सकोच अतिहि मन बाढे ॥
बिछुरत बनत न रहत तहांही। चितवत सखिन चपल चहुँघांही ॥
तबहिं युवति ब्रजते कछु आई। कछु यमुनाते ब्रजमें जाई ॥
दुहुंदिशि तरुणिन आवत जानी। मनही मन राधिका लजानी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई। मिलेहांकदै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला। ऐसे टेरि कह्या नँदलाला ॥
दोहा–गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ॥
कहि हौं यहै सखीन सो, कीन्हों यह अनुमान ॥
सो०–देखि सखी मोहिं संग, अबहिं आय सब बूझिहैं ॥
जानति इनको रंग, मन मन शोचति लाडिली ॥

१ स्यार। २प्यारी स्त्री। ३ चपलतासे सखियोंको चारों तरफ देखतीहै। ४निमित्य।

उन युवतिन मोहनको देख्यो। जात राधिका ढिगते पेख्यो॥
कहन लगीं आपसमें बातें। देखहु सखि प्यारीकी घातें॥
बात करति मिलि संग बिहारी। हमहिं लखत दीन्हेहैं टारी॥
बूझतही कछु बुद्धि उपैहै। सांची एकहु नाहिं जनैहै॥
इतहु उतहुते आई नारी। कहति कहां तू जाति पियारी॥
अबहिं लखे तुवढिग बनवारी। कहां गये पछितात कहारी॥
कहा दुराव बनत अब कीन्हे। हमहूंते तबहीं लखि लीन्हे॥
कान्ह कहा बूझतहैं तुमको। सांची बात कहो तुम हमको॥
मन लै गये तुह्मारे चोरी। सोपायो अपनो तुम गोरी॥
श्यामहिं मिलि अपनो मन लीन्हो। देखतहमैं टारिक्यों दीन्हो॥
सदा चतुरई फबतिउ नाहीं। अबतौ आइपरी फँद माहीं॥
हमहिं बहुत तुम निदरि रहीहौ। कहां रहत हरि कित निबहीहौ॥

दोहा–कहत रही जबतबहिं तुम, हरि सँगदेखहु मोहिं॥
तब कहियो जो भावहो, लीन्होबेसरि खोहि॥

सो०–अब हम लेहिं छिनाय, बेसरिदेहौ कै नहीं॥
कीकरिहौ चतुराय, और कछू हमसों अबहुं॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी। तुम सब भई अजान कहांरी॥
मैं मूरख तुम चतुर बडेरी। ऐसंहि बेसरिलैहौ मेरी॥
यही कहन मोको तुम आई। इतउतते मिलि उठि तुम धाई॥
बेसरि एक लेहुगी कोको। पीताम्बर दिखरावहु मोको॥
पीताम्बर अरु बेसरिलीजै। भगट जाय तब व्रजमें कीजै॥
तारी एक बजति कर दोउ। इतनो ज्ञान करो सब कोऊ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी। धन्य धन्य तेरी महतारी॥
तेरे चरित कहा कोउ जानैं। बश कीन्हो घनश्याम सुजानैं॥
अबहीं टारि पठायो तिनको। हम देखे तेरे ढिग उनको॥
तापरनिदरतिहै तू हमसों। कहत न बनत हमैं कछु तुमसों॥

१ छिपाय। २ फबती। ३ झुठातीहो। ४ भगवानका पीताम्बर दिखावो।

अँग अँग विरचि कपट चतुराई। निज कर बिधना तोहिं बनाई॥
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं। जितनी है प्यारी तो हिं माहीं॥
दो०-श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घर जाय॥
बेसरि छोरति हैं सखी, विन काजैंउठि धाय॥
सो०-जान्यो तुह्मरो ज्ञान, डारि परीं मोपर सबै॥
जो तुम हती सुजान, गहती बाँह दुहूनकी॥
कहु प्यारी सांची अब हमसों। कछु तो श्याम कहत हैं तुमसों॥
हाहा बात कहो सो प्यारी। भेद करो तो सौंह हमारी॥
तुव ढिगते मोहन हम हेरत। गये उतै ग्वालनको टेरत॥
तू क्यों ठुकि रही मग माहीं। कहा कह्यो मोहन तुव पाहा॥
सहज होय हमसों यह भाषो। उर में कछू रोष मति राखो॥
मैं यमुना तट जात रहीरी। ब्रजते आवत तुम्हैं लखीरी॥
परखन लगी तुमहिं मगमाहीं। तिरछे आय गये हरि पाहीं॥
मैं तुमहीं तन रही निहारी। उन पूछो म्वाहिं ग्वाल कहांरी॥
मैं सुनि सन्मुख दीठि न खोली। हां नाहीं कछु मुख नाहिं बोली॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई। तुम मेरी बेसरि को धाई॥
सुनि यह बात युवति सकुचानी। कछु तो परति सांचसी जानी॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई। यह तो हमहुँ श्रवण सुनि पाई॥
दोहा-तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनुलाडिली सुजान॥
हम मानी तेरी कही, तुमति रिस जिय आन॥
सो०-लीन्ही कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाडिली॥
झूंठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै॥
अब चलिये यमुनाके धामा। संग चलैं हमहूं सब श्यामा॥
चूक परी हम सों यह तेरी। नाम लियो बेसरि को एरी॥
अहो सखी तुम निपट अनैसी। जानति हौं मोहिं आपहि जैसी॥
झूंठहिं धाई दोष लगावन। अब लागीं मोको दुलरावन॥

१ देखने। २ आंख। ३ अब प्यार करने लगी।

क्षणक बुद्धि तुह्मरी धों कैसी । हौ तुम बड़ी पेटकी जैसी ॥
यह सुनि हँसत चलीं ब्रजनारी । गईं यमुन ते गृहको प्यारी ॥
ऐसे सखियन को बहरायो । कृष्ण सनेह न प्रगट जनायो ॥
नागरि श्यामा श्याम सनेही । चतुर श्याम श्यामाके तेही ॥
श्यामा श्याम बसत तनु माहीं । बसत श्याम श्यामा मन पाहीं ॥
नंद सँकेत गये घर दोऊ । मात पिता कछु जान न कोऊ ॥
कैसे हूं करि दिवस बितायो । निशिनिघटे रस बिरह सतायो ॥
अति आतुर दोऊ मन माहीं । क्यों हू नींद परति है नाहीं ॥

दोहा–बिरहनदी निशितम सलिल, पैरतथके निहारि ॥
बूड्यो मणि तम चरकह्यो, मिल्योपार भिनसारि ॥

सो०–सुनितमचर की टेर, अति आनंद दुहून मन ॥
अतिहि उठे सबेर, लगी चटपटी मिलनकी ॥

॥ अथ संकेतके मिलनेकीलीला ॥

श्याम उठत लखि जननी जागी । हरिमुख कमल निरखि अनुरागी॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे । आज कहा तुम उठे सबारे ॥
उत्तम जल भरि दीनी झागी । अति आतुर हरि करी मुखारी ॥
बिवस श्याम प्यारी रस छाके । मगन ध्यान वृषभानु सुताके ॥
उत वृषभानु सुता सुकुमारी । उठी मात वह भाव बिचारी ॥
ग्रीवासों मोती लर तोरी । आंचर बांधि मात की चोरी ॥
यहै व्याज अपने उर धारयो । कुंज धाम बन जान बिचारयो ॥
आंगन गई भवन फिर आई । गई भवन ते फिरि अँगनाई ॥
जात बनै न रह्यो नहिं जाई । इत उत फिरत भवन बितताई ॥
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई।कालिगये बनधाम बुलाई ॥
मात कह्यो क्यों उठी सवारी । जातिकहां मातहि तू प्यारी ॥
आज कहा इत उत तू डोलै । मुखतें कछू बचन नहिं बोलै ॥

---

१ अंधकार । २ जल । ३ मुर्गा । ४ प्रातःकाल । ५ दांतुन । ६ मोतियोंका हार ।

दोहा-अति नागरि मोती लरी, राखी प्रथम दुराय ॥
ताहीमिसि करिकै सकुच, बोलति नहीं डराय ॥
सो०-पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीवं भूषण बिना ॥
तब जानी यह बात, खोई कहँ मोती लरी ॥
जननी भई तबही रिसहाई। कंठ लरी तैं कहां गँवाई ॥
मोतिनको गजरा छबिछायो। बड़े मोलको परम सुहायो ॥
तेरे लिये महरं बनवायो। मैंतोको हित करि पहिरायो ॥
कौने लियो कहांतैं गेऱ्यो। काल्हिहि तेरे तौ गर हेऱ्यो ॥
बूझे तोहिं जवाब न आवै। कह शोचति किन बेग बतावै ॥
सुनि राधिका मातकी बानी। मन बिहँसत ऊपर भय मानी ॥
बोलति नाहिं हृदय हरषाई। कहति भली बुधि मोको आई ॥
अबहीं मोको खोज पठैहैं। यामिसि जानि श्याम पैंहैं ॥
कहत मातसों तब भय मानी। मोहिं नहीं सुधि कहां हिरानी ॥
काल्हि सखिन्न सँग यमुना न्हाई। तहां कहूं धौं तिनहिं चुराई ॥
कैधौं गिरी कतहुँ जल माहीं। यह तौ मैं कछु जानति नाहीं ॥
कालिहि तें शोचति पछिताई। तेरे डरते कह्यो न जाई ॥
दोहा-नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सौं सुनि मात ॥
याही डरते आज हौं, उठी बड़े परभात ॥
सो०-सुनत सुता के बैन, महरि चकितमुख लखि रही ॥
कृष्णप्रिया गुण ऐन, कोऊ पार न पावई ॥
तब जननी करि क्रोध कहीरी। मैं बरजति तोहिं हार रहीरी ॥
फिरति नदी बन डगरन माहीं। काहूकी शंका तोहिं नाहीं ॥
बहुत तात तोहिं लाडलडाई। नोखी सुता महरकी जाई ॥
बरजति मैं जुकरति तू सोई। भली करी मोतिन लर खोई ॥
एक एक नंग परम सुहायो। लाखटकादै मैं जु मँगायो ॥

१ कण्ठ। २ वृषभानु। ३ भलआई। ४ घर। ५ थाह। ६ अनोखी।

जाके हाथ परोसो दैहैं । घरबैठे निधि पाय गवैहै ॥
भरि भरि नयन लेति है माता । मुखते कछू न आवति बाता ॥
रीतो गरो निहारति जबहीं । हियो उमँगि आवत है तबहीं ॥
कहा करो जो खोई गईरी । तू कित खोजत बिकल भईरी ॥
लेहों और मँगाय बबासों । देतिनहीं क्यों और डिबासों ॥
करिहै कहा सैंति जो राखै । तादिनतेहीं कितधौं माखै ॥
रोवति कहा औरहै नाहीं । दैनिकासि पहिरौं गर माहीं ॥

दोहा–सुन राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहिं ॥
चौको हार हमेल कछु, नाहिं पहिराऊं तोहिं ॥

सो०–लाखटकाकी हानि, करी आज तैं लाडिली ॥
अब नहिं देहों आंन, जबलों वह लावै नहीं ॥

अबतौ घर बैठन जब पैहौ । जलज सरोज खोजलै ऐहौ ॥
जाधौं देखि कहूंजो पावै । तबहीं तोहि भलाई आवै ॥
यमुना गई संग तेंबकोही । बूझति नहीं जाय किन ओही ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊं । कहँ लग सबके नाम गनाऊं ॥
चंद्रावलि ललतादिक नारी । हती सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
देखहु जांय यमुन तट हेरी । जहां राखि मैं न्हाति रहीरी ॥
युवती एक रही टंकेलाई । पूछि देखिहौं वांको जाई ॥
जैहै कहां जलज लरि मेरी । तिनहीं लई भली सुधिएरी ॥
आज अबेर लगेगी मोही । ढंढोंगी ब्रज घर घर ओही ॥
ऐसे करि माता मति भोरी । हरषि चली वृषभानु किशोरी ॥
निधरक चली सदन ते प्यारी । मन अटक्यो मन कुंजबिहारी ॥
मनहीं मन यों शोचति जाई । कैसे हरि सों देहु जनाई ॥

दो०–बार बार नँदनंद इत, आतुर जोहत राह ॥
प्यारी मुख शशि उदैकी, नैन चकोरन चाह ॥

सो०–भरे बिरह रस माहिं, क्षणमें घर द्वारे क्षणक ॥

१ भरोसा । २ कौनथी । ३ उसहारको । ४ धमाकर । ५ श्रीकृष्ण । ६ घबड़ाकर ।

फिर २ आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी ॥

जननी करति रसोई आतुर । लखि लखि जात श्यामघन चातुर
कहा अबेर करति तू मैया । भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया ॥
यशुमति कह्यो तात बलिजाई । अब बिलंब नहिं बैठहु आई ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई । बोलि लेहु अरु हलधर भाई ॥
सादर कह्यो श्याम बल भैयो । दाऊजी जेवनको अइयो ॥
मोको अबहिं नहीं रुचि मैया । सखन संग तुम खाहु कन्हैया ॥
संग सखन ल तब मन मोहन । जेवनको बैठे सब गोहन ॥
खटरस व्यंजन सरस सँवारे । परसि धरे रोहिणि पनवारे ॥
श्याम सखनको आयसुदीनो । आपुनिहूं कर कौरहि लीनो ॥
तबहीं कोकिलकी सम्बानी । बोलि उठी राधा सुखदानी ॥
नंद महरि पिछवारेहिं आई । झूठहि ललताको गुहराई ॥
वृन्दावन मग जाति अकेली । आवहु बेगि तुमहुँ सँग हेली ॥

दो०-बिन जेंये मोहन उठे, करते कौर गिराय ॥
जेंवतही छांडे सखा, चले बनहिं अतुराय ॥

सो०-देखि चकित दोउ मात, चौंक रहे सिगरे सखा ॥
कहति कहां चले जात, अति आतुर गोपालतुम ॥

अबहीं ग्वाल गयो कह मोही । बनमें गाय बियानी लोई ॥
मैं जेवन बैठों बिसराई । सो सुधि मोहिं अबहिं है आई ॥
तुम जेवहु मैं देखहुँ जाई । करी श्याम तिनसों चतुराई ॥
लोही मेरी गाय बियानी । यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मन मन माही । नहीं गाय बछरा ह्वाँ नाहीं ॥
है प्यारी रानी ह्वां राधा । हम जानी यह बात अगाधा ॥
जननी नहीं कछू यह जानी । बार बार कहिके पछतानी ॥
भूखे श्याम गये उठि धाई । राज करौ यह गाय बियाई ॥
दई सैन दे बन श्रीश्यामा । पहुँचे जाय तहाँ घनश्यामा ॥

---

१ पत्तल । २ ग्रास । ३ जल्दीसे । ४ अथाह ।

देखत हर्ष भये मन दोऊ । फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंकम माला । कनक वलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई । कोटि काम रति छविहि लजाई ॥

दो०—नवल कुंज नवनागरी, नव नागर नँदनन्द ॥
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनन्द ॥

सो०—विलसत मदन विलास, कोटिमदन गणकेमथन ॥
युगल रूपकी रास, नित्य विलास विलासनिधि ॥

नागर श्याम नागरी श्यामा । शोभित कुंज कुटी छवि धामा ॥
चितवत दुर दुर नैन लजौहैं । सो छबि वरणसकै कवि कोहैं ॥
रीझे श्याम नागरी छविपर । नागरि निरखत श्याम शुभगवर ॥
देह दशाकी सुरति बिसारैं । अरश परस दोउ रूप निहारैं ॥
शोभित वदन महाछवि छाये । सिथल अंग श्रमबिंदु सुहाये ॥
इंद्रिय वर राजीव कमल जनु । फूलि रहे मकरन्द भरे मनु ॥
बैठे कुंजद्वार सुखदाई । कोमल किसलय सेज सुहाई ॥
लटकतिचहुँदिशिकुसुमितवेली । फूलि रही तरुडार नवेली ॥
हरित भूमि छबि बरणि नजाई । बहत समीर सुखद पुरवाई ॥
आये उमड़ि मेघ सुखकारी । परत बूंद शीतल श्रमहारी ॥
भीनत सुरँग चूनरी सारी । मन सकुचत लखि रसिकविहारी ॥
बूंद बरावत मोहन पातन । हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥

दो०—भीजे रस रँग प्रेम सुख, जल भीजे दोउ गात ॥
भीजे अम्बर कुंज गृह, श्यामा श्याम सुहात ॥

सो०—यह अचरजकी गाथ, कोमानै को कहिसकै ॥
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुम कुंजतर ॥

इहविधिकरिविलास वनमाहीं । कह्यो श्याम श्यामाके पाहीं ॥
अब गृह जाहु सांझ नियराई । मात पिता करिहैं दुचिताई ॥
यह रस रीति गुप्तकी नीकी । तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥

१ कामदेवकीस्त्री । २ सीमा । ३ आनन्दके समुद्र । ४ पसीना । ५ नये फूल ।

करते कोरे डारि मैं आयो । तुमरो बोल सुनत उठि धायो ॥
मेरे प्राण बसत तुम पाहीं । इकक्षण तुमको बिसरत नाहीं ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी । करति मनहिं मन आनँद भारी ॥
अति सनेह बोली सकुचाई । सुनहु प्राण प्रीतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न घरको । मन अटक्यो नहिं मानत डरको ॥
दृग तुमको देखत सुख पावैं । गृह-गुरु जन मोहिं नेकु न भावैं ॥
बरजहु अपनी चितवन तुम हरि । और मंद मुसकान मनोहरि ॥
तुमरीनेकु सहज यह बानी । सहियत हैं हम सर्वस हानी ॥
वशी करन हैं इनके माहीं । बिवस भयो मन मानत नाहीं ॥

दो०–ऐसी विधि परगट करत, दंपति निज अनुराग ॥
भये परम आनन्द रस, वदन आपने भाग ॥
सो०–श्याम लई उरलाय, प्रिया बोधि पठई घरहिं ॥
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥

करति जननि अवसेरं विशाला । पहुँचे सदन श्याम तिहिकाला ॥
लीन धाय लाय उर मैया । कहति लालकी लेहुँ बलैया ॥
करते कौर डारि उठि भागे । सुनत गाय व्यानी अनुरागे ॥
लोही गाय आपनी व्यानी । ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वह तौ नाहिन मेरी गैया । वृन्दावन भरम्यों सुन मैया ॥
गोवर्द्धन यमुना तट सारो । वृन्दावन ढूँढत सब हारो ॥
कोऊ सखा संग तहँ नाहीं । फिरचो अकेलो बनक माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कोही । सो पहुँचाय गई घर मोही ॥
सुनि यशुदा मन अति अकुलानी । धोये पदलै तातो पानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीनो । निरखि मुखारविंद सुख लीनो ॥
लीलासागर कुँवर कन्हाई । सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुण आगर । नँदनंदन सुन्दर सुखसागर ॥

दो०–अति श्रीकीरति नंदनी, रूपराशि गुण खान ॥

---

१ श्रीकृष्ण औरराधिका । २ समझाकर । ३ याद । ४ राधिकाजी ।

चली श्याम सुखदै भवन, नागरि नवल सुजान ॥
सो०–लई खोलिकै हाथ, आंचरते मोती लरी ॥
सखी मिली यक साथ, बूझत कहँ तू लाडिली ॥

तासों ब्योरो कहि समुझायो । गई हती यह काज बतायो ॥
कह्यो सखी तब सुनरी प्यारी । ऐसी निधरकभई कहारी ॥
ब्रज घर घर तू फिरति अकेली । संग नही कोउ सखी सहेली ॥
मोको संग बोलि नहिं लीनी । ऐसी तैं करनी यह कीनी ॥
प्रातहि गई अबहि तू आई । बीतो दिवस निशा नियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं । देखहु मोहि साद मन माहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी । मिलवतिहै यह झूठी बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा । आवतिहै करि भोग विलासा ॥
कह प्यारी किन हार चुरायो । कैसे जाय कहांते पायो ॥
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौं । कहो तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नाम लेहि किनलीन्हों । प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुह्मारो कुँवरकन्हाई । तिनसों जाय विलस तू आई ॥

दो०–रस बस कीन्हें श्यामतैं, कहा बनावति बात ॥
कहे देत रस रँग भरे, अरु सोहैं सब गात ॥
सो०–कहबहँकावति मोहिं, कहाँ हार कहँ ग्वालिनी ॥
तबतें जानति तोहिं, जबतें तैं हरि सँग कियो ॥

इन बातनि कछु पावति हेरी । नोहिं यहै नितभावति हेरी ॥
देखत मोहि अकेली जबहीं । नई बात उपजावति तबहीं ॥
बिनही देखे झूंठ लगावै । नाहक मोसों वैर बढ़ावै ॥
सोंह दिये बूझति मैं तोहीं । चोर कहतिकै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी विरुझानी । तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी । तू जीती मैं तोसों हारी ॥
चली भवन वृषभानु दुलारी । अति अवसेर करत महतारी ॥

---

१ हाल । २ रात होआई । ३ भोगविलासकर । ४ क्रोधितहुई ।

गई मात राधा नहिं आई। दिवस गयो निशियामें बिहाई ॥
हार काज मैं त्रास दिखाई। ताते रूखरही कहुँ जाई ॥
हैहै धौं काके घर माहीं। कहां जाउँ मैं ढूँढन ताहीं ॥
जाहु हार यह कहि पछिताई। सुता सनेह अधिक अकुलाई ॥
सुनि है बात महर कहुँ जबहीं। मोपर अति रिसकरि है तबहीं ॥

दो०-शोचति जननी बिकल अति, मन न लहति विश्राम ॥
उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निजधाम ॥

सो०-देखतिही उठि धाय, हरषि लई उर लायके ॥
सुता माय उरलाय, शोच मिट्यो धीरज भयो ॥

लैरी मात हार मैं पायो। जा कारण मोहिं त्रास दिखायो ॥
मनहीं मन कीरति सकुचाई। पोच करी मैं याहि रिसाई ॥
अति पुनीत राधिका प्रबीनी। कृष्ण मिलनहित यह मति कीनी
अगम अगोचर है प्रभु जोई। ब्रज बनितन वश कीने सोई ॥
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावे। ब्रज गोपिन सँग सो सुख पावे ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी। निगमनें हूंते अगम न भारी ॥
प्रीति बिवस सबते गिरिधारी। राजा रंक पुरुष कहँ नारी ॥
देवकि उदर प्रीतिवश आये। प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये ॥
प्रीतिबिवस बन धेनु चराई। प्रीतिबिवस नँद कुँवर कन्हाई ॥
प्रीतिहिके वश दही चुरायो। प्रीतिबिवस ऊखल बँधवायो ॥
प्रीतिबिवस गोवर्द्धनधारी। प्रीतिबिवस नटवर बनवारी ॥
प्रीतिबिवस गोपिन सँगकामी। प्रीतिबिवस वृन्दावन धामी ॥

दो०-श्याम सदा बश प्रीतिके, तीन भुवन बिख्यात ॥
विना प्रीति नहीं पाइये, नंद महरको तात ॥

सो०-प्रीति करहु चित लाय, ब्रजवासी प्रभुपद कमल ॥
कहत सुनत श्रुति गाय, प्रभु रीझत हैं प्रीतिको ॥

---

१ दिन बीतके रात्रि आई। २ पवित्र। चतुर। ४ जो दृष्टिमें न आवे। ५ वेद।

अथ प्यारीके घर मिलनेकी लीला ॥

भये श्याम नागरिवश ऐसे । फिरति छांह संगहि सँग जैसे ॥
बदनकमलरस रूप लुभाने । रहत मिली मुख जो मडराने ॥
बचन नादरस मृग जो गीधे । नैन कटाक्ष बंक शर बींधे ॥
कबहुँ श्याम यमुनातट जाहीं । बिन प्यारी देखे अकुलाहीं ॥
कबहुँ कदम चढि मग अवलोकें । कबहुँ जाय बन कुंजविलोकें ॥
गृह बन लगत कहूं मन नाहीं । मिलन प्रकार चहत चितमाहीं ॥
तब वृषभानु पुरातन आवें । मुरली मधुर बजावें गावें ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी । मनही मनहि सिहात विशेखी ॥
अति अनुरागे भरे दोउ नागर । गुणै सागररस रूप उजागर ॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे । शशि चकोर अंबुजै अँलि जैसे ॥
चली यमुन वृषभानु दुलारी । शोभित संग नवल ब्रजनारी ॥
देखे नंद सुवन तेहि खोरी । व्याकुल प्रेम विकल मति भोरी ॥

दो०–सखिन संग लखि नागरी, मन डरपी सकुचाय ॥
श्यामपरे फँद कामके, कौन कहै समुझाय ॥

सो०– सखियनके संकोच, बोलि सकत नाहिं मुखबचन ॥
हृदय भयो अति शोच, देखि विरहव्याकुल हरिहिं ॥

इतहि सखिनसों बात बनावैं । उतहि श्यामको भाव जनावैं ॥
मुख मुसकाय सकुच पुनिलीने । सहज अलक निरवारन कीने ॥
एक सखी यमुनासों आवति । ताहि भेंटि यों बचन सुनावति ॥
मेरे सदन आइया आली । हर्षभये यह सुनि बनमाली ॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीना । श्याम सुजान जानसो लीनो ॥
हर्षि गये तब निज गृह मोहन । प्यारी चली सखिनके गोहन ॥
चतुर सखिन मनमें लखि लीनो । भाव कछू हरिसों इन कीनो ॥
हरुवें आपुसमें बतरानी । हरितन लखि कछु यह मुसकानी ॥

---

१ प्रेम । २ गुणोंके समुद्र । ३ कमल । ४ भौंरा । ५ लाज । ६ संग ।

पुनि मुसकाय कमल मुख फेऱ्यो । सदन बुलाय सखीको टेऱ्यो ॥
गये श्याम उत हर्ष बढ़ाई । ये अति चतुर करी चतुराई ॥
और भाव कैसो गन कोऊ । आजरैनि मिलि हैं ये दोऊ ॥
लै यमुना ते जल अतुराई । सखिन संग प्यारी घर आई ॥

दो०-भाव दियो निशि आयहैं, मेरे मोहन आज ॥
अति हर्षित अंगन सजित, भूषण बसन समाज ॥
सो०-सहज रूपकी खान, अंग शृंगारत लाडिली ॥
कोकरिसकै बखान, त्रिभुवनपति हरि वल्लभा ॥

अंगसिंगार कियो हरिप्यारी । बेणी रचि निज पाणि सवारी ॥
मोतिन संग जड़ाऊ टीको । कियो बिंदु बंधनको नीको ॥
लोचन अंजन रेख बनाई । श्रवणन तरवनकी छवि छाई ॥
नासानथ अतिही छबि छाजै । नागवेल रँग अँधरन राजै ॥
शुभग अंग सब नौसत साजैं । सुरँग सुगंध वसन शुभ भ्राजैं ॥
मनमोहनको पंथ निहारैं । कबहुँकि उत्कंठो जिय धारैं ॥
भयो बालशशि अस्तनिहारी । कहति आज ऐहैं गिरिधारी ॥
आवन पैहैं कैधा नाहीं । कै आवत हैहैं मग माहीं ॥
कैधौं तात मात भय करिहैं । कै आवत भेरे घरडरिहैं ॥
आवैंगे कैधौं हरि नाही । यों शोचति प्यारी मन माहीं ॥
कवहूं रचि रुचि सेज सँवारे । हरि ऐहैं मन हर्ष विचारे ॥
सुमन सुगंध सेज पर धारे । पुनि पुनिकर अभिलाष निहारे ॥

दो०-आवैं कबहुं अचानकहुं, जो मोगृह घनश्याम ॥
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पांवडे धाम ॥
सो०-प्रगटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करतहीं ॥
को करिसकत बखान, भयो जु सुखलखि दुहुनगन ॥

वह छवि कापै जाति वखानी । वहरसझिझक मंद मुसकानी ॥
वह मृदु मधुर मंद मुसकानी । वह संयोग प्रेम सकुचानी ॥

१ शीघ्र । २ सजातीहै । ३ प्यारी । ४ ओंठ । ५ इच्छा

वह शोभा वह चितवन बांकी । वह रस प्रेम सुभग दुहुँ धांकी ॥
वह सुख श्रीराधा माधवको । जो कहिसकै आहिजग कविको ॥
जाकी महिमा वेद न जाने । कबिताको कहि भांति बखाने ॥
श्यामा श्याम सेज परसोहैं । अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
गुण आगर छवि सागर दोऊ । कोटि काम रतिसम नहिं सोऊ ॥
मत्त प्रेमरस विवश विहारैं । युगल परस्पर अंग सवारैं ॥
लटपटि पाग सँवारति प्यारी । अलक सुधारत श्रीगिरिधारी ॥
रसविलास दोऊ अनुरागे । आलिंगन चुंबन रस पागे ॥
हास विलास विविध रसरीती । इह सुखरैनियामत्रयबीती ॥
अतिरसमत्त युगल अलसाने । पुनिपौढे दोऊ लपटाने ॥

दो०–निशिनिघटी तमतोमिटी, उडगणज्योतिमलीन ॥
गये कुसुमकुह्मिलायके, भई दीप छवि छीन ॥

सो०–विकसे सरस सरोज, भयो पवन शीतल सुरभि ॥
धरी उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते ॥

सरसवचन बोली तव प्यारी । जागहु प्राणनाथ बनवारी ॥
भयो प्रातको समय कन्हाई । प्राचीदिशि पीरी पर आई ॥
चंदन मलिन चिरीचुहचानी । अलिछूटे कुमुदिनि सकुचानी ॥
बोले तमचर जहँतहँ बानी । मिलेकोक कोकी सुखमानी ॥
उठहु प्राणपति सदन सिधारौ । है ब्रजघरघर घेर हमारौ ॥
लगीं रहति परखति ब्रजनारी । जागहिं जिन गुरुजन भय भारी॥
सुनत उठे मोहन मुसकाई । चले सदन अपने अतुराई ॥
गृहतेंनिकसत सखियन जानी । देखिदरश तनुदशा भुलानी ॥
प्रगट दरशदै गये कन्हाई । यह उनकी मनसाध पुराई ॥
शीश मुकुट मोतिनकी माला । पीत बसन कटि नैन विशाला ॥
श्याम बरन तनु सुन्दरताई । अंग २ छवि बरणि न जाई ॥

---

१ हिलमिलकर । २ केश । ३ तीनपहररात बीतगई । ४ रात बीतगई । ५ अंधकार ... । ६ ...

देखि रूप मन रह्यो लुभाई । निकस गये गृह कुँवर कन्हाई ॥
दो०-बार बार जिय लाडिली, यह शोचति पछितात ॥
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोयेरात ॥
सो०-देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मोसदनते ॥
मैं राखो है गोय, अबलगियहरससखिनसों ॥
देखौं जाय प्रवँरिहै प्यारी । जहां तहां ठाढीं ब्रजनारी ॥
सकुच गई चिंता उपजाई । बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी । सो इन आज प्रगट करिहेरी ॥
निकसे श्याम हमारे घरसों । इन जान्यों ह्वैहैं अटकरिसों ॥
नितही नित बूझति ये आई । मैं निदरयो इनको सतराई ॥
अबतौ श्याम प्रगट इन देख्यो । करिहैं मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तौ दाँव भलो इन पायो । अब कैसे करि जाय छिपायो ॥
अबहीं बूझहिगी सब आई । कहकरिहौं उनसों चतुराई ॥
प्रगट करोंतो होय अनीती । राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती ॥
शोच परयो कछु बात न आवै । बार बार मन प्रभुहि मनावै ॥
प्राणनाथ हरि होउ सहाई । जाते मेरी पति रहिजाई ॥
जैसे बोधं सखिनको होई । दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥
दो०-ऐसे शोचति लाडिली, कबहूं प्रभुहि मनाय ॥
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेममग्न ह्वै जाय ॥
सो०-भयो बोध उर आय, सुमिरतही मन भावनो ॥
कहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हरषी नागरी ॥
परम कुशल राधे हरि प्यारी । रच्यो सखिनको बोध विचारी ॥
अति आनंद पुलकितनु आयो । शोच मोह उरते बिसरायो ॥
जो छबि सुन्दर कुँवर कन्हाई । गये प्रात सखियन दरशाई ॥
उनसों सोई रूप बखान्यो । यह विचार प्यारी उर आन्यों ॥
प्यारी पियके गर्व गहेली । अंग अंग छबि पुंज भरेली ॥

[illegible] । २ अनुमान । ३ लाज । ४ ज्ञान ।

बैठी सदन विराजतरूरी । श्याम सनेह सुधारस पूरी ॥
कहति परस्पर सखि परहासा । कहति चलौ राधाके पासा ॥
ह्वैहै निधरक घरमें वैसी । देखहिं चलौं बदन छबि कैसी ॥
कैसे अंग अभूषण कैसे । कछु बदले कैधौंहैं वैसे ॥
आज रैनि हरि सों रति मानी । कहिहैं कहा सुनैं चलि बानी ॥
राधा गृह गवनी ब्रज नारी । गईं जहां वृषभानु दुलारी ॥
देखि नागरी मुख नाहिं बोली । जान्यों आईं करत ठठोली ॥
दो०—सहज रही बोली नहीं, कछू वदन सों वैन ॥
निकट बुलायो सखिनको, नयननहीकी सैन ॥
सो०—इतलीनों इन जान, परम चतुर आली सबै ॥
यह कछु रच्यो सयान, देख हमैं बोली नहीं ॥
अपनो भेद कछु नाहिं दैहैं । कहा बोध रचिकै धौंकैहैं ॥
अपनि जांघ बल चीर चुरावैं । कैसेहुं प्रगट न काहु जनावैं ॥
निधरक भई श्याम सँग पाई । भूलहु मति याकी लरिकाई ॥
निरखौ भ्रकुटी त्योर निहारी । कहे कहा धौं बात सँवारी ॥
राखति गर्व तुमहुँ सब कोऊ । देखहु बोल नहीं किन कोऊ ॥
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजनारी । सुनौ अहो वृषभानु कुमारी ॥
आज कहा मुख मूंद रहीहै । कापररिसकरि मौन गहीहै ॥
हमसों कहति नहीं सो एरी । हम तौ संग सखी हैं तेरी ॥
कै देवनको ध्यान धरोरी । कै सुभाव कछु यहै परयोरी ॥
जब आवति हम तेरे प्यारी । तब तब यहै धरन तैं धारी ॥
तुम दुराव कित राखति हमसों । हमहूं कछु राखति हैं तुमसों ॥
ऐसो शोच कहा मन माहीं । जो जवाब तोहिं आवत नाहीं ॥
दो०—कछु दिनते तेरी प्रकृति अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन ॥
सो०—अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति नहीं ॥

१ हँसी । २ मुख । ३ सखी । ४ स्वभाव ... । ६ ... प्रकार

ऐसे कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी ॥
मनही मन जानति सब प्यारी । मोसों हँसी करति ब्रजनारी ॥
परम प्रवीन सकल गुनखानी । बोली मधुर मनोहर बानी ॥
सुनहु सखी बूझत कह हमसों । कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी । जात इतै कछु दृगन लह्योरी ॥
नीके नेकु न देखन पाई । तबहींते मन रह्यो लुभाई ॥
कै घन¹श्यामकि श्याम² कन्हाई । यहै शोच उर रह्यो समाई ॥
बकपंक्ती³ कै हैं गज मोती । पीत दुकूलकि दामिनि⁴ जोती ॥
इन्द्र शरासन⁵ कै बनमाला । शीश मुकुट कैधौं अरि व्याला ॥
मन्द मधुर जलधरकी गाजन । कैधौं पग नूपुर ध्वनि बाजन ॥
देखे आज श्याम जबहींते । पर्‌यो यहै धोखो तबहींते ॥
कहा कहौं हरिकी चपलाई । ऐसो रूपगयो दरशाइ ॥
भरी श्यामरस कुँवरि सयानी । कहति सखिनसों निधरकबानी ॥

दो०-सखी कहति सब आपुसौं, सुनहुँ न याको बात ॥
प्रगट करन आईं जु हम, आपुहि प्रगटति जात ॥

सो०-हम देखे जिय श्याम, तैसेही इनहूं लखे ॥
दोष देति विन काम, यह सूधी हमही कुटिल ॥

इतनहि रहौ और जिन भाखौ । जो चाहौ अपनी पंति राखौ ॥
इनसों तुम चाहति हौ जीतौ । मनते गर्ब करौ यह रीतौ ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी । को याकी बुधि सकै बखानी ॥
हम याकी दासी सरिनाहीं । देखहु सखी समुझ मनमाहीं ॥
हम देखत कछु और सुभाऊ । यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी प्रस्तुति कहा बखाने । इनहीं भले श्याम पहिचाने ॥
तब हँसि कह्यो सखिन सुनि प्यारी। तैं जो लखे सु हैं बनवारी ॥
प्रातहि ते जो आज निहारे । गये कान्ह वे मेघनकारे ॥
मोर मकुट शिरमोरन न होई । कटि पटपीत न दामिन सोई ॥

१ कालेबादल । २ श्यामवर्ण कृष्णजी । ३ बगुला । ४ बिजली । ५ इन्द्रका धनुष।

मुक्तमाल बनमाल सुबेसू । नहिं बकपाँति न धनुष सुरेसू ॥
पगनूपुरध्वनि गर्जन[1] नाहीं । मत राखौ धोखो मनमाहीं ॥
देखे तैं भातहिं गिरिधारी । काहेको शोचति मन: प्यारी ॥

दो०-धनि धनि ब्रजकी नागरी, हरि छबि लखति अनूप ॥
मोहिं होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥

सो०-तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब ॥
मोपै लख्यो न जात, करिहारी केतौ यतन ॥

तुम दरशन पावति री कैसे । मोहू श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तौ अतिछबि चपल कन्हाई । तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसो रूप हृदयमें राख्यो । मोसों सखी सांच सब भाख्यो ॥
मैं देखत पावति हरिनीके । रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू वृषभानु दुलारी । धनि तुम पिता धन्य महतारी ॥
धनि सो दिवस रैनि सो बारा । जब तैं लीनो री अवतारा ॥
धनि तेरे बश कंजविहारी । धनि तैं वश कीन्हे गिरिधारी ॥
भाव भक्ति मति रति घन सोऊ । एक सुभाव धन्य तुम दोऊ ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं । तू हरिको हरि तोको भावैं ॥
एक जीव द्वैदेह तुम्हारी । वे तो में तू उनमें प्यारी ॥
उनकी पटतरको[2] तू दीजै । तेरी पटतर उनको लीजै ॥
सुधा सुधागुण क्यों बिलगाई । गूंगेको गुरु कह्यो न जाई ॥

दो०-तू उनके उरमें बसो, वे तेरे उर माहिं ॥
अरस परस ज्यों देखिये, दर्पण दर्पण छाहिं ॥

सो०-कहो कौनपैं जाहिं, तुम दोउ निर्मलगात अति ॥
वे तेरे रँग माहिं, तू उनके रँगमें रँगी ॥

नीलाम्बर श्यामा छबि तेरे । तुम छबि पीतवसन[3] उ[illegible] ॥
घन[4] भीतर दामिनी बिराजै । दामिनि घनके चहुँ [illegible]हीं ॥

---

१ इच्छा । २ बराबरी । ३ पीताम्बर । ४ [illegible] [illegible] प्रकार [illegible]

तुम अनूप दोऊ समजोरी। नंदनँदन वृषभानु किशोरी॥
सुनि २ सखियनके मुखबानी। बोली राधाकुँवरि सयानी॥
सुनि ललतासांची कहिमोसों। मैं बूझति सकुचतहौं तोसों॥
मोसों मानत नेह कन्हाई। मेरीसों कहि मोहिं सुनाई॥
तुमतौ रहत श्यामसँग नितही। मिलति जाय उनसों जित तितही॥
उनके मनकी सब तुम जानौ। हाहा मोसों साँच बखानौ॥
सुनि राधा इतरात कहारी। तोते और कौन है प्यारी॥
तेरे बश नँन्दनन्दन ऐसे। रहत पवन [1]पंखा बश जैसे॥
ज्यों चकोर [2]शशिके बश माहीं। है शरीरके बश परछाहीं॥
[3]नादे बिवस मृग देखिय जैसे। मन मोहन तेरे बश तैसे॥

दो०–मिली खिरक तू श्यामको, दई धेनु दुहितोहिं॥
तेरे बश हरि तबहिंते, कहा भुलावति मोहिं॥
सो०–वरणौं कहा सनेह, नेकहु तुमन्यारे नहीं॥
हौतु एकहि देह, [4]दक्षिण तुम [5]वामे अँग॥

अथ गर्वव्याजबिरह लीला॥

सुनि प्यारी ललता मुख बानी। मैं ऐसी जिय में यह आनी॥
और नहीं कोऊ मो सरकी। हों राधा आधा अँग हरिकी॥
अपनेही बश पिय को करि हौं। अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं॥
ऐसे गर्ब किये जिय प्यारी। घर घर गई सकल ब्रजनारी॥
इह अन्तर आये गिरिधारी। गर्भ बिभंजन जन सुखकारी॥
हरि अन्तर्यामी अविनासी। जानी प्यारी गर्ब उदासी॥
उझकि झाँकि प्यारी तन हेर्यो। प्यारी देखतही मुख फेर्यो॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं। उझकत फिरत घरन ब्रज माहीं॥
मिसही मिस युवतिन को हेरो। नेक नहीं छांड़त घन] घेरो॥
[6]ठौर जैसे तैसे अपने घर। तुम आवत मानत] नाहीं डर॥
[illegible] प्रेम गर्व करि प्यारी। प्राणनाथ तन नाहिं निहारी॥

१ अद्भुत। २ चन्द्रमा। ३ शब्द। ४ दाहिना। ५ बांया। ६ दूसरी जगह।

जान्यो द्वारे लगे कन्हाई । बैठि रही अभिमान जनाई ॥
दो०–हृदय श्याम मुख घाममें, राख्यो गर्व बसाय ॥
ठौर तहां पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय ॥
सो०–जहां रहत अपिमान, तहां वास मेरो नहीं ॥
सोराधा उरजान, आप लगे पछितान हरि ॥
तुरतहि गमन तहांते कीनों । नहीं दरश प्यारीको दीनों ॥
चकित भई प्यारी मनमाहीं । यहां श्याम आये क्यों नाहीं ॥
आपन आप द्वार पुनि देख्यो । तहां नाहिं नँदलालहि पेख्यो ॥
झांकतही फिरगये कन्हाई । मनहीं मन श्यामा पछिताई ॥
मोते चूकपरी अति भारी । ताते मोहन मोंहि विसारी ॥
एक तौ बैठि रही गर्वानी । दूजे मैं हरि सों इहरानी ॥
मेरी बुद्धि जानि कै हीनी । मोसों श्याम निठुरतौ कीनी ॥
वे बहुनायक कुंज बिहारी । मोसों उनके कोटिकनारी ॥
कासे कहौं हरिहि को लावै । को अब मोको हरिहि मिलावै ॥
भई बिरह व्याकुल अकुलाई । बदन सरोजगयो कुम्हलाई ॥
तब आपुनको निठुर कहावै । सुमिरि प्रीति उर भरि २ आवै ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै । नैन सरोजनसों जल ढारै ॥
दो०–भई बिकल अति नागरी, विरह व्यथाकी पीर ॥
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥
सो०–घर बाहरन सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ॥
रह्यो शोच उरछाय, ब्रजवासी प्रभु मिलनको ॥
राधा सदन सखी पुनि आई । देखि दशा मन अति भरमाई ॥
अति व्याकुल तनु बदन मलीना । नीर विहीन मीन जिमिदीना ॥
कर गहि २ बूझति ब्रजनारी । कहा भयो तोकहँरी प्यारी ॥
ऐसे विवश भई तू जाहै । हमैं सुनाय कहत नाहिं काहै ॥
अति प्रसन्न देख्यों तोहिं तबहीं । क्यों मुरझाय गई है अबहीं ॥

१ घमण्ड । २ क्रुद्ध हुई । ३ कठोरता ।

बहुरि लखेधौं कतहु कन्हाई। उनहू तोहिं ठगौरी लाई॥
श्याम नाम सुनि श्रवणन जागी। जान्यो हरि आये अनुरागी॥
आतुर सखी कंठ लपटानी। चूक परी मोते कहि बानी॥
अब अपराध क्षमो रिसत्यागी। करुणा करि मोहिं करहु सभागी॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी। रहीं शोचि राधिकहि निहारी॥
शीतल जलसों मुख पखरायो। पोंछि आँचरन वचन सुनायो॥
आज भई कैसी गति तेरी। परम चतुर ब्रजमें तू हेरी॥
दोहा-भयो अलिनके वचन सुनि, कछूचेत उर आय॥
तब जानीएतो सखी, गई हृदय सकुचाय॥
सो०-क्यों तुम वदन मलीन, काहे तू ऐसि भई॥
कहु प्यारी परवीन, बार बार बूझेत सखी॥

बोली तब सखियन सों प्यारी। तुमसों कहो दुराव कहारी॥
मैं तो हरिके हाथ बिकानी। उन मोहिं तजी कुटिलमतिजानी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी। प्रगट कहों तुमसों सब बरनी॥
बैठीही मैं सदन अकेली। झांके आय द्वार हरि हेली॥
मैं मनमें कछु गर्व बढ़ायो। आदर करि नाहिं भवन बुलायो॥
उन मेरे मनकी सब जानी। अन्तर्यामी सारंग पानी॥
कमलनैन वे गर्व प्रहारी। जाति रहे सखि मोहिं बिसारी॥
तबते विरह विकल अति कीनो। अहंकार यह फल मोहिं दीनो॥
चित न रहै कितनो समझाऊं। अब कैसे करि दरशन पाऊं॥
भयो भवन बन मो कहँ आली। नहीं सुहात बिना बनमाली॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊ। अब हरि मिलै सो करहु उपाऊ॥
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई। भये सुखद सब मो दुखदाई॥
दोहा-गिरिकन्यापति तिलककर, दाहत अनल समान॥
शिवसुत वाहन भखनको, भयो हलाहलपान॥

१ कानोंमें। २ धुलाया। ३ सखी। ४ हरनेवाले। ५ घमण्ड। ६ चिराजी।

सो०-चलधि सुतासुत[1] हार, भयो इंद्र आयुध[2] सखी ॥
मलयज[3] मनहुँ अँगार, शाखाँमृगरिपु वसनवर ॥

सखी दशा मेरी यह हेरी। भयो काम अब मोको बैरी॥
बारिज भव सुत प्रियकी चाली। अब नाहिं हरिसों करिहों आली॥
ऋतु विचारि जो मानहिं करिये। सोइ जरि जाहु न उरमें धरिये॥
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा। मोहिं मिलावहु सखि ब्रजनाथा॥
सुनि राधे करनी यह तेरी। हमसोंभेद कियो तैं एरी॥
उनके गुण जैसे नहिं जाने। अबहींते ऐसे ढँग ठाने॥
एकहि बार मिली तू धाई। नहिं राखी मर्याद बड़ाई॥
तैंही उनको मूंड चढ़ायो। तब नहिं हमको भेद जनायो॥
भवन विपिनै[5] सँग डोलन लागी। वे बहु तरुणि रमण अनुरागी॥
निज कर अपनो महत[6] गँवायो। परबश परि कौने सुखपायो॥
मेरो कह्यो अजहुँ मन माहीं। हित करि मानेगी धौं नाहीं॥
धीरज धरि कत मरत वृथाहीं। तू हू मान करति क्यों नाहीं॥

दोहा०-बात आपनी आपने, कर है देखु विचार ॥
भई कहा ऐसी बिवस, ऐरी एकहिबार ॥

सो०-पुरुष भँवरजियजान, भोगी बहुत प्रसून को ॥
बिना किये बहु मान, कौने पिय निज वश किये ॥

कहति सखी तुम तौ यह बाता। कंप होत सुनि मेरे गाता॥
मैंतौ मान श्यामसों कीनो। ताते इतनो दुख मोहिं दीनो॥
अबतौ भूलि मान नहिं करिहौं। श्याम मिलहि तौ पाँयन परिहौं॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊं। यह अपनो अपराध क्षमाऊं॥
चूकपरी मोते मैं जानौं। उनको यह अपराध न मानौं॥
वे आवतिहैं मेरे नीके। मैंही गर्वधर्यो सखि जीके॥
मेर गर्वते कहा सर्योरी। मिट्यो हृदय सुख दुःख भयोरी॥
जाते हानि आपनी होई। कहौ सखी कीजै क्यों सोई॥

१ मोतियोंकाहार। २ वज्र। ३ चन्दन। ४ बंधन। ५ बन। ६ बड़प्पन।

मानबिना नहिं प्रीति रहैरी । प्रगट देखि मोहिं कहा कहैरी ॥
धाय मिलेकी गति तेरीसी । भई अधीन फिरति चेरीसी ॥
अपनो भेद उन्हैं तैं दीनो । तब दुरावे हमहूं सों कीनो ॥
भयबिन प्रीति होति नहिं प्यारी। सच मानहिं सखि सीख हमारी ॥
दो०—पुनि २ सिखवति तुम सखी, मान करनको मोहिं ॥
मनतौ मेरे हाथ नहिं, मान कौन विधि होहिं ॥
सो०—उमगभरत दिनरात, श्यामगुणन अभिलाषकरि ॥
मन नाहिं मानत बात, मान सजौं कैसे सखी ॥
मन मोसों अब बामे भयोरी । कहा करौं हरि संग गयोरी ॥
अब अपनो हित उनहिं न जानौं । मुदित मूढ अपमान न मानौं ॥
इन्द्रिय सब स्वारथ रस पागी । गई संग मनहीके लागी ॥
घर फूटे क्यों रह्यो परैरी । मनहिं बिना को मान करैरी ॥
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं । रही अकेली मैं तनै माही ॥
तापर भयो काम अब वैरी । बिरहे अग्नि तनु जारत हैरी ॥
इतने पर तुम मान करावति । कहौ कौन सखि यह कहनावति॥
मैं तौ चूक आपनी मानी । मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी॥
अबतौ क्योंहू मान न करिहौं । ऐसी बात कहे तिहि लरिहौं ॥
आली मोहिं नँदनंदन भावै । सोइ हितू जो आनि मिलावै ॥
अब जो मिलहिं श्याम बड़भागी।फिरति रहौं संगहिसँग लागी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी । दारुण बिरह बिथा उर जागी ॥
दो०—देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय ॥
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये बेगि उपाय ॥
सो०—कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ॥
दीजै याहि मिलाय,झुरि झुरि अति पीरी परी ॥
सखिन कह्यो तब सुनरी प्यारी । मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी ॥
अबहिं जाय हम श्यामहि लावैं। नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं ॥

१ छिपाव । २ इच्छा । ३ प्रतिकूल । ४ देह । ५ वियोगकी ज्वाला ।

पटसों पोंछि बदन बैठाई । तरक बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेक नहीं धीरज उर धारै । वार वार मुख कान्ह उचारै ॥
सावधानकरि सखी सयानी । दौरी गई यहै अतुरानी ॥
लखि हरि मुख ललता मुसकानी।हरि लखि हँसे दुहूं मन जानी ॥
तब हरि ललतासों मुसकाई । बूझत चितवत नैन चुराई ॥
अति आतुर आई कत धाई । काहे बदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललता तब मुसिकाई । सुनहु चतुर नँदनंद कन्हाई ॥
आज एक अचरज लख पायो। परम विचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी । वर्णत बनत भांति नाह ताकी ॥
रीझरही मैं ताहि निहारी । रीझौगे लखि कुंजविहारी ॥

दो०—मैं आई तुम सौं कहन, चलहु दिखाऊं नैन ॥
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मो बैन ॥

सो०—एक अनूपम बाग, स्वर्ण वर्ण नहिं जाय कहीं ॥
उपजतलखि अनुराग अतिविचित्रबानकबन्यो ॥

युगल कमल अति अमल विराजै।तापर राजहंस छवि छाजै ॥
द्वै कदली तरु तापरसोहैं । विनदल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर मृगपति करत विहारू । मृगपति पर सरवर इकचारू ॥
द्वै गिरिवर सरवर पर राजै । तिन परएक कपोत विराजै ॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले । शोभितते अधिदिसकोझूले ॥
फूल्या पुनि कपोत परनीको । एक सरोज भावतो जीको ॥
तापर एक अमीफललाग्यो । कीर एक तापर अनुराग्यो ॥
तहां एककोयल द्वैखंजन । तिनपर धनुष शुभगमन रंजन ॥
धनुपर शशि द्वैनागिनकारी । मणि धरि एक नागिनीभारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो । घटत नेहजल कछु कुम्हलायो ॥
चलि घनश्यामसींचसादीजै । शोभा देखि सफल दृग कीजै ॥

---

१ घबड़ाई हुई । २ अचंभा । ३ अतिअद्भुत । ४ अद्भुत । ५ स्नेह । ६ केला।

करि विचार देखो मनमाहीं। बनी ललित सब अंगनिमाहीं॥
दो०-सुनहु श्याम सुंदर नवल, छैल छबीले श्याम॥
तुह्मैं मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है वाम॥
सो०-कहा भयो जो मान, कियो प्रेम के लाडते॥
अति सुंदरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी॥
बरणौं श्रीवृषभानुदुलारी। चित दै सुनौ लाल गिरिधारी॥
कहो प्रथम बेनी रुचिराई। ललित पीठ पाछे छबि छाई॥
अहिनी मनहुं कुटिल गति त्यागी। शशिमुख सुधा चुरावन लागी॥
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई। शोभित शीश न जाति बताई॥
मानहु किरण लाल रविकेरी। तिमिर समूह बिदारि उजेरी॥
शोभित कुटिल भ्रुकुटि अतिनीकी। मन हरिलेति भावती जीकी॥
जगत जीत करि निजवशचारी। मनहुँ मदन धनुधरे उतारी॥
केसर आड ललाट सुहाई। मनहु रूपकी बाड बँधाई॥
चपल नैन बिच नाक सुहाई। शोभित अधरनकी अरुणाई॥
मनौ युगल खंजन शुक शोभा। देखि एक बिंबाफल लोभा॥
दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा। बरणि न जाति महा छबिसीवा॥
शुभग अंग सब भूषण सोहैं। कोटिकाम तिय निरखत मोहैं॥
दोहा-अति कोमल सुकुमार तनु, सकल सुखनकी सीर॥
तुम बिन मोहनलालपिय, व्याकुल अधिक शरीर॥
सो०-भरि भरि लोचन नीर, श्याम श्याम मुख कहि उठति॥
चलहु हरहु यह पीर, मैं आई लखि धायकै॥
प्यारी बिकल सुनत सुखदाई। सहि नाहिं सके उठे अकुलाई॥
चले बिहँसि ललताके साथा। प्रेमहिके वश श्रीब्रजनाथा॥
प्रेम बिवस प्यारी पहँ आये। देखि दशा मन अति पछताये॥
परी बिकल तनु दशा बिसारी। प्यारी मुख देखत गिरिधारी॥
नीलांबर निज करते टारी। लीनों सन्मुख बदन सुधारी॥
जलदपटल मानहु बिलगाई। दियो चंद निकलंक दिखाई॥

१ मनोहर। २ राधिका। ३ सर्पिणी। ४ चन्द्रमुखका अमृत। ५ कामदेव।

भयो चेत परसत पियपानी । सन्मुख दृष्टि परत सकुचानी ॥
लई उमँगिभर अंक कन्हाई । बिकल देखि अँखियां भरिआई ॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये । इतनेहि बिरह दोऊ मुरझाये ॥
कंचन बेलि तमाल सुहायो । मनहु प्रेमवश सुधा सिचायो ॥
हरषि दुहूंदिश मुसकन फूले । परमानंद फलन करिझूले ॥
मुरछन बिरह तुरत बिसराई । लखि यह मिलन सखी हरषाई ॥

दोहा—वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभा सुख भार ॥
भई बिवश ललता निरखि, इकटकरही निहार ॥

सो०—रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छबिहिं ॥
परन न देत निमेख[1], तृप्त न क्योंहू मानहीं ॥

ललता कहत सखिनसों बानी । देखहु सखि राधा अतुरानी ॥
कैसे अंग अंग छबि देई । मिले श्याम मन धीर न लेई ॥
तृषावंत जिम अचवत नीरा । सोऊ तौ धारत पुनि धीरा ॥
यह आतुर छबिलै उर धारै । नेक नहीं दृग[3] इत उत टारै ॥
ज्यों चकोर चंदहिटकलावै । याकी सरै सोऊ नाहिं पावै ॥
होम अग्नि घृतगति है जैसी । याकी दशा देखिये तैसी ॥
यदपि श्याम श्यामा सँग प्यारी । छबि निरखत अति आनँद भारी ॥
हाव भाव करि पियमन मोहै । बिबिध बिलास बदन छबिसोहै ॥
बिरह बिकल मति तदपि भ्रमावै । मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै ॥
तृषा मध्य जिमि सलिलैहि देखी । उपजति अधिक प्यास बिशेखी ॥
चितवत चकित रहत चितमाही । स्वप्नकि सत्य ईश यह आही ॥
बुधि बितर्क बहु भांति बनावैं । देखहु अन देखे ठहरावैं ॥

दोहा—कबहुं कहति हौं कौनहौं, को हरि करत बिचार ॥
यह सुख भावत कौनको, सचकित रहत निहार ॥

सो०—निपट अटपटी बात, समुझि परत नाहिं प्रेमकी ॥
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहींमें सुरझअति ॥

१ गोद । २ पलक मारना । ३ नेत्र । ४ बराबरी । ५ जल । ६ वादविवाद ।

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी । लखि सखि मनहुँ करत हैरारी ॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ । नेकहुहारि न मानत कोऊ ॥
इति सुदृष्टि करिकाम सुहाई । सेना सजि सजि दृगन चलाई ॥
उत अति भूषण जाल अपारा । अंग अंग रचि व्यूह सँवारा ॥
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे । बाराहिं बार हनत रण राखे ॥
उतनहिं बदन बिथा अतिसूरे । पुलकि अंग मानहु सरि पूरे ॥
इत अनुराग उतहि छबि छाई । क्षण क्षण अधिक २ अधिकाई ॥
छबि तरंग[1] सरिता अधिकानी । लोचन जलनिधि[2] तृप्त नसानी ॥
उत उदार छबि अंग श्यामके । इतलोभी अति नेम बामके ॥
ललता संग सखिनको लीने । दंपति सुख देखत दृग दीने ॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी । कहतिकि धनि २ दोउ बड़भागी ॥
धन्य नवल नवला यह जोरी । धनि २ प्रीति नहीं रुचिथोरी ॥

दोहा–धन्य मिलन धनि यहलखन, धनि२ धनि अनुराग ॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥

सो०–धनि २ पुनि २ भाषि, हरखि चलीं सिगरी अली ॥
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल ॥

अथ परस्पर अभिलाषलीला ॥

शोभित श्याम राधिका जोरी । अरस परस निरखत तृणतोरी ॥
हरिरीझे प्यारी छबि देखी । भये बिवस उर हर्ष विशेषी ॥
कबहुँ पीत पट डारत बारी । कबहुँ मुरलि बारत गिरिधारी ॥
कबहुँ माल मुक्तनकी[3] बारैं । कबहुँ तनमन वारि निहारैं ॥
कबहुँ सिहातै[4] देख मनमाहीं । राधा सम शोभा कहुँ नाहीं ॥
इनको पलक ओट नाहिं कीजै । रूप सुधा नैननिपुट पीजै ॥
कबहुँ निरखि मुख हरि सकुचाहीं । कोटि काम जिनके वश माहीं ॥
चपल नैन दीरघ अनियारे । हाव भाव नाना गतिभारे ॥
कोटि कुरंग कमल बलिहारी । खंजन मीनै[5] डारिये बारी ॥

---

१ लहर । २ समुद्र । ३ मोतियोंकीमाला । ४ प्रसन्न होते हैं । ५ मछली ।

लोचन नाहिं ठहरात श्यामके । काहू अँग मुख रंग वामके ॥
भये श्याम प्यारी वश ऐसे । फिरति गुड़ी डोरी वश जैसे ॥
इकटकनैन अंग छबि सोहै । भये विवस लखि रूप विमोहै ॥
दोहा-उठे उठत हैं तुरतही, बैठे बैठत पास ॥
चले चलत सँग वामके, ज्यों तनु छांह विलास ॥
सो०-रही सुरति कछु नाहिं, देहदशा भूली सबै ॥
अभिलाषा मन माहिं, प्यारोही के रूपकी ॥
मगन श्याम श्यामा रस माहीं । निजस्वरूपकी सुधि कछु नाहीं ॥
राधारूप देखि सुख पावै । पुनि २ मन अभिलाष बढ़ावै ॥
मांगलेति भूषण पिय पाहीं । अपने अंग सँवारत जाहीं ॥
सजि तर वन कुण्डलहि उतारैं । वेसरलै नासा पर धारैं ॥
बेनी गूंथ मांग पुनि करहीं । शीश फूल अपने शिर धरहीं ॥
बेंदी भाल सँवारत तैसी । शोभित है प्यारीकी जैसी ॥
प्यारी दृगतें अंजन लेहीं । अति हित करि अपने दृग देहीं ॥
भूषण बसन सजत सब वैसे । प्यारी अंग विराजत जैसे ॥
प्यारीको पियकी छबि भावै । हाहा करि यों वचन सुनावै ॥
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊं । मैं पिय तुमरो रूप बनाऊं ॥
हँसतहि हँसत मांग सब लीनो । पियको भेष नागरी कीनो ॥
गोरे कान्ह साँवरी राधा । निरखि परस्पर पूरत साधा ॥
दोहा-कबहुं मुरलिलै नागरी, अधर धरति मुसकाय ॥
मंद मंद पूरति सुस्वरन, रिझवति पियहि बजाय ॥
सो०-कबहुंव जावत श्याम, अरस परस अधरन धरत ॥
पूरत हैं मन काम, सकल काम पूरण युगल ॥
हरिको अपने रूप निहारी । आपहि हरि स्वरूप लखि प्यारी ॥
यह अभिलाषा उर तब धारी । कहति सुनो पिय गिरिवर धारी ॥
तुम बैठो माननि दृढ ह्वैके । तुमहिं मनाऊं मैं पद छ्वैकै ॥

१ राधा । २ नथनी । ३ नासिका । ४ चतुरराधा । ५ होठ

मोको यह अभिलाष विशेषी। सुख पैहौं नैननि यह देखी॥
सुनत श्याम मन मन मुसकाई। मुरि बैठे करि मान रुखाई॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी। हरिसों मान छुड़ावन लागी॥
कहति मान तजि प्राण पियारी। मोते चूक परी कह भारी॥
कहतिहिं मैं तुम रिस कर मानो। कहा प्रकृति तुव परी सयानी॥
वृथा हठीली मान न कीजै। अबकरि कृपा मोहिं सुख दीजै॥
बार बार कर गहि गहि भाखै। शीश नवाय चरणपर राखै॥
आनन आनन जोरि निहारे। पुनि पुनि बचन अधीन उचारे॥
क्यों इतनो हठ करत नवेली। बोलत क्यों नाहिं गर्व गहेली॥

दोहा–श्याम कियो हठ जानिकै, यह विचार ठहराय॥
प्यारीके उर रसविरह, नेकु देहु उपजाय॥

सो०–बैठि रहे निठुराय, नाहिं बोलत मानत नहीं॥
पुनि २ परसति पाय, हाहा करि २ लाडिली॥

नहीं हँसति नहिं मुखतन जावे। बार बार नख भूमि करोवे॥
लखि यह चरित हँसति मन प्यारी। चकित रहत हँसिवदन निहारी॥
कहति सुनहु पिय अब हँस बोलो। तजहु मान यह घूंघट खोलो॥
मोहन अब यह खेल मिटावो। कोटि चन्द्र छबि बदन दिखावो॥
नागरि हँसति हृदय सुख भारी। सूधे नाहिं चितवत गिरिधारी॥
लखि त्रियरूप पीयको प्यारी। वदनं विलोकति चकृत भारी॥
अपनो रूप पुरुषको देखी। भई मगन रस विरह विशेखी॥
मैं नारी वे पुरुष विहारी। किधौं पुरुष मैं ही वे नारी॥
बढी विरह संभ्रमता भारी। भई विकल तनु दशा बिसारी॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा। बोलत नाहि अधिक मनलोभा॥
कबहुँ कहत यह ख्यालन त्यागत। मान करत नीके नहि लागत॥
कबहुँ अंक भरि उरसों लावति। कबहूं फिर परि पाँय मनावति॥

दोहा–कबहूं पाछे ह्वै रहति, कबहूं आगे जाय॥
कबहुं उठति बैठति कबहुं, कबहुँक लेति बलाय॥

---

१ इच्छा। २ स्वभाव। ३ मुख। ४ मोर।

सो०–कबहुं कहति है पीय, कबहुं प्यारी कह कहति ॥
धीरज धरत न हीय, भई समीपहि विरहवश ॥
भई विरह व्याकुल व्रजबाला। हर्षि हँसे तब पिय नँदलाला॥
लई तुरत प्यारी उरलाई। कहति ख्यालहींमें अकुलाई॥
तुमहीं मान करत मोहि भाख्यो।भई विवसकत धीरज राख्यो॥
मैं तो तुमको भाव बतायो। तुम काहे मनमें डरपायो॥
देखि विरह व्याकुल मुरझाई।बार बार हरि अंकमलाई॥
अमिय[1] वचन कहि शीतल कीनी। विरह ताप उरते हरिलीनी॥
तव नागरि मन लखि सुखपायो।मिट्यो विरह मन हर्ष बढ़ायो॥
कहति भलो पियमान दिखायो। मेरे मन अभिलाष पुरायो॥
त्रियके रूप श्याम छवि देखी। पुनि[2]पुलकित मुदित विशेखी॥
दंपति हर्ष मनहिं मन कीनो। तव नव कुंज चलन चित दीनो॥
प्यारी मुकुर[3] पाणि लै देख्यो।नटवर रूप आपनो पेख्यो॥
हँसतहि हँसत मेटि सब डार्यो। सहज रूप अपनो पुनि धार्यो॥
दोहा–चले हर्षि वन कुंजको, युगल नारिके रूप ॥
इक गोरी इक साँवरी, शोभा परम अनूप ॥
सो०–अंग अंग छवि जाल, अति विचित्र भूषणवसन ॥
श्रीराधा नँदलाल, शोभा अँवधि[4] विलासनिधि ॥
जात चले व्रज वीथिनै[5] दोऊ। लखि नाहसकत नारिनर कोऊ॥
नंदनँदन त्रिय छबितनु काछे। शोभित हैं राधा सँग आछे॥
बार बार पिय रूप निहारी। मनहीं मन रीझतिहै प्यारी॥
कहति सखी देखे जिन इनको। बूझेते कहिहौं कह तिनको॥
तिहू भुवन शोभा सुखकी निधि। करिहौं तिनको गाप कवनविधि॥
पगनुपुर बिछियां छवि छाजैं। गजगति चलत परस्पर बाजैं॥
श्याम गौर सुंदर सुख जोरी। मर्कत मणिकंचन छवि थोरी॥
भुज भुज कंठ परस्पर राजै। या छविकी उपमा नहिं छाजै॥

१ अमृतवचन। २ प्रचन्न। ३ दर्पण। ४ सीमा। ५ वृजकी गलियां।

जात युगल बनको सुखपाई । उतते चंद्रावलि सखि आई ॥
दूरहिते लखि रही निहारी । इकटकनैन निमेष[1] निवारी ॥
पुनि पुनि मन बिचार करं जोहै । एक राधिका दूसरि कोहै ॥
ब्रज युवतिन इक२कर जानैं । यह धौं कौन नहीं पहिचानैं ॥
दो०—और गांवते यह कहूं, आई है ब्रज माहिं ॥
अतिहि सलोनी सांवरी, अबलौं देखी नाहिं ॥
सो०—राधे मन सकुचाहि, चंद्रावलि आवति निरखि ॥
रही श्याम मुख चाहि, ब्रजहीको फेरति हरिहि ॥
कहति जाहु पिय फिर सुख वाही । करते कर छूटत है नाहीं ॥
उत आवति लखि सखिहिलजानी । इतहि श्यामके नेह भुलानी ॥
दुख सुख हर्ष न हरिरस माती । उत चंद्रावलि इन रँगराती ॥
कहति निकट देखहुधौं जाई । बूझौं याहि कहांते आई ॥
देख श्याम मुख छबि मुसकानी । करी चतुरई इन पहिचानी ॥
इनते निधरक और न कोऊ । कैसी बुद्धि रची इन दोऊ ॥
ये दोऊ अति चतुर सयाने । निज करि इन्हैं बिधाता जाने ॥
और कहा इनको कोउ जानैं । मोसों नहीं परत पहिचानैं ॥
सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं । जान बूझ काहे निदराऊं ॥
जो इनको मैं टोकत नाहीं । जैहैं जीत मनाहिं मनमाहीं ॥
यह चतुरई चले छबिदोऊ । प्रगट करौं इनके गुणसोऊ ॥
ऐसे बहुरि इन्हैं नाहि पाऊं । आज प्रगट कहि लाजलजाऊं ॥
दोहा–कहु राधे यह कौनहै, संग सांवरी नारि ॥
कबहुं इन्हैं देख्यो नहीं, अति सुन्दरि सुकुमारि[2] ॥
सो०–कोहै इनको नाथ, कौन गोपकी ये सुता ॥
भलो बन्योहै साथ, जैसी यह तैसी तुमहुं ॥
मथुराते यह आजहि आई । है इनते कछु प्रीति सगाई[3] ॥
एक दिना ललता सँग माहीं । दधि बेचन हम गई तहांहीं ॥

---

१ पलक मारन । २ लावण्यवती । ३ बेटी ।

उनहीके सँग भई चिन्हारी। तबहीकी पहिंचान हमारी ॥
वही सनेह जानिकै आई। ऐसीशील स्वभाव सुहाई ॥
मैं गृहते इत आवन लागी। येऊ सँग आय अनुरागी ॥
सुनि राधा यह सहज सुहाई। शील सनेह रूप अधिकाई ॥
इनकों ब्रजमें क्यों न बुलायो। अपने निकटहि आन बसायो ॥
कैवृषभानु पुराकै गोकुल। राखहु इनहिं बुलाय सहित कुल ॥
तुमहौ नवल नवल हैं येऊ। दोऊ मिलि श्यामहिं सुखदेऊ ॥
ऐसीहै यह नारि सुहाई। और नारि मनलेति चुराई ॥
हमहूँ को अब इनहि मिलावो। नीके इनके बदन दिखावो ॥
हमहिं देखि सकुचतकत प्यारी। हमसों घुंघट करत कहारी ॥

दोहा–ऐसे कहि चंद्रावली. गह्यो श्याम कर जाय ॥
यह कहुँ अबलौं नहिं सुनी, तियसों तिय सकुचाय ॥

सो०–आपहि वदन उघारि, घूंघट पट हातो कियो ॥
मुख छवि रही निहारि, माने करि लोचन सफल ॥

बारहि वार कहति मुसकाई। चितवत क्यों नहिं वदन उठाई ॥
मथुरामें है बास तुह्मारो। कहा नाम मुख वचन उचारो ॥
कियो राधिका यह उपकारो। दुर्लभ दर्शन भयो तिह्मारो ॥
कछु इक मैं पहिंचानत तुमको। काहे को सकुचतिहौ हमको ॥
कबहुँ चिबुक गहि वदन उठावैं। कबहुँ कपोल परम सुख पावैं ॥
कबहूं चुटकि कहति मुख फेरौ। नैन उठाय नेकु इतहेरौ ॥
नैन नैन सों हरि नहिं जोरैं। रहेलजाय भावसों भोरैं ॥
चंद्रावली देखि मुसकानी। हँसि बोली राधासों बानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमको। तौ काहेन विसारौ हमको ॥
जबसों इनसे प्रीति लगाई। बहुत भई तुमको चतुराई ॥
अबलौं इनको कहां दुरायो। हमसों कबहूं नाहिं जनायो ॥
त्रिभुवनकी सुखमा सब गुणनिधि। एकहि इन्हैं बनाई है विधि ॥

१ पास। २ हाथ। ३ अबतक। ४ मुख। ५ आंखैं। ६ ठोढ़ी।

दोहा—तुमहुँ कुशल येहु कुशल, क्यों न प्रीति दृढ़ होय ॥
जानेहौं चलि जाहुवन, आप स्वारथी दोय ॥
सो०—दंपति कियो विचार, सुनि चंद्रावलिके बचन ॥
यासों नाहिं उवार, हर्षि मिले उरलाय तब ॥
चले कुंजगृह हरषि विशाला। उभय बामबिच मदनगुपाला ॥
वाम भाग प्यारी को लीने। दक्षिण भुजा सखी पर दीने ॥
द्विवि दौमिनिविच नवघन मानौ। रतिसमेत लखि मदन लजानौ ॥
कैधौं कंचन लता सुहाई। ललित तमाल विटप लपटाई ॥
गय कुंजवन घन छबिछाई। सुमन पुंज अलि गुंज सुहाई ॥
वर्ण वर्ण कुसुमित तरु नाना। करती कोकिल मंगल गाना ॥
बहत समीर त्रिविध सुखदाई। पावन मंगल भूमि सुहाई ॥
लखि छबि पुंज कुंज अनुरागे। सहचरि सहित युगल बड़ भागे ॥
नवदल कुसुम तुल्य कमनीया। बैठे नवल रमण रमणीया ॥
करत बिलास विविध मन माने। कोटि कोटि रति काम लजाने ॥
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी। निरखत छबिह सखी तृण तोरी ॥
सने रसिक दोऊ रसकाई। बसेनिशाबन कुंज सुहाई ॥
दोहा—तैसोइ विपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगन्ध ॥
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोई सुख संबन्ध ॥
सो०—तैसोइ कुंज निवास, तैसोइ यमुना पुलिन ॥
सकल सुखन की रास, तैसेइ रँगभीने युगल ॥
बनहिं धाम सुख रैनि बिहाई। उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई ॥
बैठे युगल रंग रस भीने। आलस युत अंगन भुज दीने ॥
अरस परस दोउ छबिहि निहारैं। रीझ परस्पर तन मन वारैं ॥
अरुण नैन नख रेख सुहाई। बिन गुण माल हृदय छबि छाई ॥
लट पटि पाग रसमसी भौंहैं। कुंडल झलक कपोलन सोहैं ॥
प्रिया बदन छबि श्याम निहारत। उरझीलट मुक्तन निरवारत ॥

१ पक्षी। २ सोनों। ३ बिजली। ४ भ्रमर। ५ पवन।

आलस नैन सुरति रस पागे । नंदँनदन पियसँग निशि जागे ॥
टूटे हार मरगजी सारी । नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी ॥
चले कुंज ते युगल विहारी । ब्रजबासी लखि लखि बलिहारी ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा । जीते सुन्दर रतिपति कामा ॥
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि । सुन्दर चालि डगमगी डोलनि ॥
सब विधि सुन्दर सुख निधि दोऊ । सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ ॥
दोहा–अति विचित्र नँदलालकी, लीला ललित रसाल[२] ॥
जो सुख दुर्लभ शिव सनक, सो विलसत ब्रजबाल ॥
सो०–गये युगल ब्रजधाम, सखीसहित निशिरस विलसि ॥
बसत प्रिया उर श्याम, श्याम हृदयप्यारी सदा ॥

अथ शृंगारभूषण वर्णन लीला ॥

बैठी भवन शृंगार किशोरी । बहुरो अंग शृंगारत गोरी ॥
मानहु सबन देति पहिराये । रति रणजीति पियासों आये ॥
कटि तटि किंकिणि बसन नवीने । बाजूबंद भुजन को दीने ॥
कर कंकण उर हार सुहाये । तरुवनि चारु[३] श्रवण पहिराये ॥
नकबेसर अंजन दृग[४] दीनों । बेंदी ललित भाल पर कीनों ॥
रची मांग सम भाग सुहाई । तामधिरेख सिंदूर बनाई ॥
प्रभु सों विमुख जानिके कादर । बांधति कुच मनो किये निरादर ॥
दियो विहँसि अधरनको बीरा । सन्मुख रहे महारसधीरा ॥
शोभित सदन शृंगार सुहाई श्रीवृषभानु कुवरि छबि छाई ॥
नख शिख कुसुमबिशिखकी सैना । किये कान्ह वश पंकज नैना ॥
शीशफूल शिर अति छबि छाजै । मनहुँ भाग मणि प्रगट विराजै ॥
सुभी जराव फूल अरुणाई । हरति प्रात रविकी छबि ताई ॥
दोहा–चंद्रबदन मृगशिशुनयन, भ्रुकुटी[५] कुटिलकलंक ॥
अलक झलकछबिदेति जनु, शोभित रजनी अंक ॥
सो०–कुन्द कलीसमदाँत, तिलप्रसून[६] नाशा सुभग ॥

१ कामदेव । २ रसीली । ३ सुन्दर । ४ आंख । ५ भौंह । ६ तिलका पुष्प ।

जीवबन्धुकी भाँति, अधर अनूपम चिबुकतिल ॥

लखि कलकंठ कपोतलजाहीं। पीकलीक झलकति जेहि माहीं ॥
बांहु मृणाल लाल छवि छाये। कोमल पाणि सरोज सुहाये ॥
कुच युग चक्रवाक जनु नीके। लसत रोमावलि तट २ नीके ॥
त्रिवली तरल तरंग सुहाई। अति गति नाभि मनोहरताई ॥
कृषकटिकिंकिणियुतै छवि छाई। पृथु नितंब शोभा अधिकाई ॥
रंभ खंभ युग जंघ निकाई। पग नूपुर झनकार सुहाई ॥
चाल विलोकि काम गज लाजैं। मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजैं ॥
वरणे को पद पंकज शोभा। हरि मन भ्रमर रहत जहँ लोभा ॥
निगम नेति नित गावत जाको। राधा वश कीनो हो ताको ॥
ज्यों चकोर चंदाको आतुर। त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर ॥
देखे विन क्षण रह्यो न जाई। सदा प्रेम वश त्रिभुवन राई ॥
उझकिझरोखा झांके आई। करति श्रृंगार प्रिया मन भाई ॥

दोहा—अंग अंग भूषण बसन, रुचि रुचि सकल श्रृंगारि ॥
लै दर्पण देखति छविहि, श्रीवृषभानुदुलारि ॥

सो०—दीठ झरोखालाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
उर आनंद बढ़ाय, देखत प्यारीको छविहि ॥

इककर दर्पण इककर अंचरा। पुनि पुनि दृगन सवाँरतकजरा ॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारें। कबहूं कुटिल अलैंक निरवारैं ॥
कबहूं आड रचति केसरिकी। कबहूं छवि देखति वेसरिकी ॥
कबहूं रचति सुमन सों वेणी। कबहुँ मांग मुक्तनकी श्रेणी ॥
कबहूं रिस करि भौंह सिकोरैं। कबहूं नैन नैन सों जोरैं ॥
इकटक दर्पण ओर निहारैं। नेक बदन इत उत नहिं टारैं ॥
निरखि आपनी छवि सुकुमारी। रही विवस प्रतिबिंब निहारी ॥
अति आनंद भई मति भोरी। बिसरी सुरति देहकी गोरी ॥
कहति मनहि मन अति सकुचाई। यह सुंदरी कहांते आई ॥

१ दैदा। २ कबूतर। ३ कमल। ४ केला। ५ जुल्फ। ६ छाया।

करते मुकुर दूरि नहिं टारैं । कछू रोषकरि हृदय विचारैं ॥
कहूं श्याम देखे जोयाहीं । तुरत होंय याके वशमाहीं ॥
जो मोहन यासा अनुरागे । कहा चले मेरी या आगे ॥
दोहा-यह आई किहि लोकते, अति सुन्दर वर नारि ॥
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि ॥
सो०-कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही ॥
सो वैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि ॥
सुनी कहूं इन हरिकी शोभा । आई है ताहीके लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुँवर कन्हाई । तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई ॥
मनहीं मन पुनि २ पछिताई । पूंछति मतिविवहि सकुचाई ॥
तूहै कौन कहांते आई । यहां कौन तोको ल आई ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो । तुम जहँ रहत कौनसो खेरो ॥
कहौ न मुख ते बचन सुनाई । मति संकुचौ कहि सौंहँ दिवाई ॥
हम तुम दिननि एकहैं गोरी । तू कछु रूप अधिक नहिं थोरी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई । काहू संग और नहिं लाई ॥
सुन्यो नहीं अन्याव इहांको । ऐसे कहि डरपावति ताको ॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी । लेति तियनके भूषण छोरी ॥
जो अपनी पैति चहत सयानी । तौ घर जाहु मांनि मम बानी ॥
लेहु बसनते अंग छिपाई । देखै नाहिं कहुँ श्याम कन्हाई ॥
दोहा-तेरे हितकी कहतिहौं, मानचहै मतिमान ॥
आईहै ब्रज आजही, तू उनको कह जान ॥
सो०-ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवनमें कोऊ कहूं ॥
जैसो ब्रजमें कान्ह, मनभायो सबसों करत ॥
नैक नहीं काहू डरमाने । मथुरापति जेहि रहति सकाने ॥
उनके गुणनीके मैं जानों । तोसों अपनी दशा बखानों ॥
हम मथुरा दधि बेचन जाहीं । घेरि लईं उन मगके माहीं ॥

१ मेरा । २ शपथ । ३ अनीति । ४ जबरदस्ती । ५ लाज । ६ कंस ।

गोरस लियो छोरि बरिआई। हार तोरि दीन्हो बगराई ॥
हम अनेक तू एक किशोरी। ताते जाहु वेगि गृह गोरी ॥
सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी। मनही मन बिहँसत सुखमानी ॥
प्यारी चकित रूप निज देखी। श्याम चकित सुन वचन विशेखी ॥
जान दूसरी तिय प्रिय पाहीं। जात निकट मोहन सकुचाहीं ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै। बोलत नाहिं उर हर्ष विचारै ॥
देखत मुकर प्रिया कर माहीं। अंकमलेवे को ललचाहीं ॥
प्यारीके रसवश गिरिधारी। लेति दृगन भर भर छबि भारी ॥
सुनि २ वचन हृदय सुख पावै। पुलकि अंग आनंद बढ़ावै ॥
छंद—वचन सुन आनंद अति मन, निरखि छबि सुख पावहीं॥
धनि धन्य राधा रूप धनि, हरि नैन इकटकलावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छबि, धन्य मुकुर निहारहीं ॥
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण, धन्य तन मन वारहीं ॥
धन्य मुख जेहि लागि राधा, कान्ह ब्रज तनु धारहीं ॥
रमा सहित विलास नित, वैकुंठ वास बिसारहीं ॥
मिलन बिछुरन सुख विरह रस, क्षणहिं प्रति उपजावहीं॥
ब्रजविलास हुलास हरिको, नित नयो श्रुति गावहीं ॥
दोहा—नवल प्रीति नित नवल सुख, नित नवरूप रसाल ॥
नित नवरस विलसत नवल, श्रीराधा नँदलाल ॥
सो०—कहत रसीली बात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिंबसों ॥
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजबासी प्रभुरस भरे ॥
प्यारी निज प्रतिबिंब निहारे। भई बिवस नाहिं सुरति सँवारे ॥
बारबार पूछति तापाहीं। क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं ॥
हँसे हँसति हेरति है हेरे। फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हम सों हांसी। अपनो नाम न कहत प्रकासी ॥

१ दर्पण। २ गोद। ३ लक्ष्मी। ४ वियोग। ५ आनंद।

परमचतुर तुमको मैं जानी । हमसों तुम कछु करत सयानी ॥
अतिही सुन्दर रूप तिहारो । देखि होत मन मुदित हमारो ॥
शोभित बेसरि नाक सुहाई । अति अनूप अधरन अरुणाई ॥
दशनें दमकें दामिनिहिं लजावति । चिबुकनीलकण अति छबिपावति
काहे ऐसे मुख की बानी । हमैं सुनावति नाहिं सयानी ॥
कहौ बचन काको हौ घरनी । काकी सुता सहज मन हरनी ॥
कै रिस कै रस कै इत हेरति । मेरे सन्मुख लोचन जोरति ॥
कछु रिस कछु घरको मनमाहीं । धीर धरत नागरि जिय नाहीं ॥
दोहा–यह तौ बोलनिहै नहीं, अति गरबीली बाम ॥
देखत ही यहि रीझिहैं, छैल छबीले श्याम ॥
सो०–भई सौति यह आय, अब हरि याके वश भये ॥
यों वियोग उपजाय, उपजायो उर विरह दुख ॥
रही दीठ दर्पणहिं लगाई । टरति नहीं छबिकी अधिकाई ॥
उरमें भयो बिरह दुख भारी । देखि दशा रीझे गिरिधारी ॥
कबहुँ चलत तिय ढिगहि कन्हाई । कबहुँ रहत लखि छबिहि भुलाई ॥
औचकि पाछे ते सुखदाई । मूंदे नयन कमल कर आई ॥
चौंकि चकित भइ मनमें प्यारी । जाने आये छैल बिहारी ॥
डरतिरही मनमें भैं जाको । मिले आय सुंदर हरि ताको ॥
तब कछु सुरति भई मन माहीं । वह तौहै मेरी परछाहीं ॥
सकुच दुरावै करति पिय पाहीं । मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं ॥
जान बूझके पिय घनश्यामाहिं । लेति विपुल सखियनके नामहिं ॥
श्याम प्रिया लोचन करि लायो । अति हित वेनी कर परसायो ॥
शोभा कहा कहै कवि कोऊ । मेचक मणि सुमेरु अँग दोऊ ॥
ताबिच मनहुँ पन्नगी आई । रही कनकके गिरिसों लपटाई ॥
दोहा–वेष्टित भुज मूंदे करन, दीरघ खंजन नैन ॥
जनु भख लीनो धाय अहि, नहिं समात फणि ऐन ॥

१ उपमारहित । २ दांत । ३ बिजली । ४ स्त्री । ५ छिपाव । ६ सर्पिणी । ७ सर्प ।

सो०-करति सखिन सों रोष, मन हर्षत खीझत बदन ॥
भरी चतुरई कोष, लूटति मनकामन फलन ॥

अति आनंद भरे दोउ राजैं। उपमा कहत कवीश्वर लाजैं ॥
मर्कतमणि कुंदन सँग मेली। किधौं लिये घन तडितै अकेली ॥
कैशोभा सुख तनु धरि सोहै। ब्रजवासीभक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई। रहे मूंदि छवि बरणि न जाई ॥
अतिहि विशाल चपल अनियारे। नाहिं समात प्रिय पाणि पसारे ॥
खिन खोलत खिनढकत बिहारी। मुख रिस मन मुसकात पियारी ॥
ज्यों मणिधर मणि प्रगट कन्हाई। फिरिफिरि फणतर धरत छिपाई ॥
श्याम उँगरियन अंतर माहीं। चंचल नैन दुरे दरशाहीं ॥
मर्कत मणि पिंजरा में मानौं। तरफरात बिब खंजन जानौं ॥
करकपोल ढिग तरलतरौना। शोभा सहज सुभाय करौना ॥
मनुयुग कमल मिलन शशि आये। विवरविषंग सहायक लाये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक। उपमा काहि कहौं को लायक ॥

दो०-अपने कर प्रिय कर पकरि, लीन्हें नैन छुडाय ॥
रवि शशि चार सरोजजनु, द्वैचकोरमिलिआय ॥

सो०-कीन्हें सन्मुख आन, पाणि पकरि कै लाडिली ॥
भले भलेजू कान्ह, मैं सखियन धोखे रही ॥

भले आय औचक बिन जाने। मूंदि रहे दृग अतिहि पराने ॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये। नेकहु आवत जान न पाये ॥
तुमहौ तिय मन हरन कन्हाई। तुम्हरी गति कछु जानि न जाई ॥
तब हरि हर्षि प्रिया उर लाई। मुकुर कथा सब भाषि सुनाई ॥
सुनि नागँरि हरि तन मुसकानी। चितैनयन कछु मनहिं लजानी ॥
मैं तौ अपने मन्दिर माहीं। सहज लखत दर्पणमें छाहीं ॥
तुम्हरी महिमा पियको जाने। इक सुंदर अरु परम सयाने ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई। रसिक पुरंदर जन सुखदाई ॥

---

१ खजाना। २ बिजली। ३ सर्प। ४ राधिका। ५ इन्द्र।

हर्षित गये सदन नँदलाला। इत नागरि उर हर्ष विशाला ॥
जब प्रतिबिंब सुरत जिय आवै। समझ सुदृष्ट सकुच तब पावै ॥
तिहि अंतर सँग सखिन लिवाई। चंद्रावलि राधा ढिग आई ॥
लखि प्यारी अति आदर कीनो। तुरतसवनको बैठक दीनो ॥
दो०-सादर सनमानी सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
पिय सँग सुख चाहत करन, रहति सकुचपुनिमान ॥
सो०-गदगद स्वर मुख बैन, बार बार भाषति हरषि ॥
झलक प्रेम जलनैन, पुलकि गात पूरे सबै ॥
कहति सखी सुन राधा गोरी। आज कहा अति हर्षकिशोरी ॥
हम तेरे नितही प्रति आवैं। इतनो आदर कबहुँ न पावैं ॥
पायो:आज परयो कछु तैरी। कैधौं मिले श्याम कहुँ हरी ॥
उमग्यो प्रेम हर्ष उर माहीं। हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी। बोली पिया हर्षिकै बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे। कहे जात नहिं गुण उन केरे ॥
जैसी भांति मिले हरि हमसों। सोहित कहौं सुनहु सखि तुमसों ॥
मैं अपने सब अंग शृंगारति। लिये मुकुरकर बदन निहारति ॥
पाछे आनि भये हरिठाढे। चतुर शिरोमणि छबिसों बाढे ॥
भाव एक भोरे मैं साजा। ताहि कहत सखि आवत लाजा ॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी। जानि औरतियमनहिं डरानी ॥
पाछ ते यह जान कन्हाई। मूंदे नैन औचकहि आई ॥
दो०-तबहिं चौंकि चकृत भई, मैं समझी निज भोर ॥
लगी देन उरहन तुम्हैं, भई फिरतिहौ चोर ॥
सो०-सुनि राधा मुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ॥
पुलकि प्रफुल्लित गात, कहत धन्यतू लाडिली ॥
श्याम संग सुख लूटति हैरी। अब उनसों नहिं छूटति हैरी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी। भली भई तू हरि रसपागी ॥

१ परछांई । २ हाथमें दर्पण । ३ रोमांच होना । ४ प्रेम

अब हरि तोते अति रति माने । तेरो अन्तर हित पहिचाने ॥
आवत जात रहत घर तेरे । क्षण नाहिं रहत तोहिं बिनेहेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउनीके । परम भावते हौ सबहीके[१] ॥
आज लाल मेरे गृह आये । बड़े भाग्य मैं हितकरि पाये ॥
देखि दरश नैनन सुख पायो । करौ आज आनंद बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली । मोहिं मनायदिये बनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहिं मिलायो । मै अपने अपराध क्षमायो ॥
नंदनँदन पिय नैन समाये । भावत नहीं नेक बिसराये ॥
सुनि यह राधाकी रसवानी । देति अशीष सखी हरषानी ॥
नंद नँदन वृषभानु किशोरी । चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी ॥

दो०–प्रेम भरे छविसों भरे, भरे आनंद हुलास ।
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत विलास ॥

सो०–करत अनेक विहार, रूप रसिक गुण निधि युगल
राधा नंदकुमार, ब्रजवासी जन सुख करन ।

अथ नयनअनुराग लीला ॥

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी । लोक सकुच कुलकानि बिसारी ॥
सासु ननँद गारी दै हारी । सुनत नाहिं कोउ कहत कहारी ॥
सुत पति नेह जगत यह छोरयो । ब्रज तरुणिन तिनका सम तोरयो ॥
वेद लोक मर्यादा डारी । ज्यों अहिकेंचुरि फिरत निहारी ॥
ज्यों जलधार परै तृण नाहीं । जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसें सुभट खेत चढ़ि धावै । जैसे सती बहुरि नाहिं आवै ॥
जैसे भये नन्दनन्दनको । निकहुडर पुनि नाहिं गुरु जनको ॥
तैसइ प्रेम बिवस गिरिधारी । ज्यों गज पंकज सकहिं निहारी ॥
ब्रज बनिता मन नाहिं बिसरावैं । क्षण प्रति तिन्हें देखि सुखपावैं ॥
आये पुनि तेहि ओर बिहारी । सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी ॥
भीर देखि सकुचे मन माहीं । ताते निकट गये हरिनाहीं ॥

---

१ देखे । २ क्षमाकराया । ३ दोनो कृष्णराधिका ।४ माधुर्य । ५ सर्पकी कांचली ।

ताही मग निकसे सुखदाई । सुंदर नटवर रूप दिखाई ॥

दो०–शीश मुकुट कुंडल श्रवण, उर चटकीली माल ।
पीतबसन कटिकाछनी, तनद्युति श्यामतमाल ॥

सो०–चलत लटकनी चाल बंक विलोकनिमृदु हँसनि ॥
अंग अंग छबिजाल, रसिक नवल नागरि छयल ॥

औचक देखि श्याम ब्रजनारी । भई चकित तनुदशा बिसारी ॥
जात चले ब्रज खोरि अकेले । कोटि कामकी छबि परेहेले ॥
पगद्वै चलत बहुरि फिरिहेरैं । कमल सनाल कमल कर फेरैं ॥
मृगमद तिलक अलक घुंघरारी । तन बन धात चित्र रुचि कारी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं । नैन सैन दैदै मन मोहैं ॥
निरखत ब्रज युवती बिथकानी । दुखसुखव्याकुलमन अकुलानी ॥
गये कल्पतरु छांह कन्हाई । रूपठगौरी तियन लगाई ॥
लागी कहन परस्पर बानी । लोचन मन अनुराग कहानी ॥
सुनहु सखी यह नंददुलारो । हठि कर यह मनलेत हमारो ॥
क्षण २ प्रति छबि और बनावे । शोभा कछु कहत नाहिं आवे ॥
मनतो इनहीं हाथ बिकानो । हम सखि यहकछु भेद न जानो ॥
नैननिसौंट करी नैननिसो । कियो मोल सैननि बैननिसो ॥

दो०–बेंचि दियो मन आपुही, मृदु मुसकन धन पाय ।
परी रही हौं बीचही, नयना बडी बलाय ॥

सो०–भये श्यामको जाय, अब रुचि मानी मनहि मन
मैं पचिहारि बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥

अब मनहित हरिहीसों कीनो । भेद हमारो सब कहि दीनो ॥
मनतो गयो नैनहूँ मेरे । तिनहूं बोलि किये हरिचेरे ॥
अब यह रहत वहां सब जाई । सोई करतजु कहत कन्हाई ॥
जितहि चलत वे तितही जाहीं । हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये व जाय गुलाम श्यामके । रहे न काहू और [illegible] रसपागी ॥

१ टेडी । २ निन्दाकरते हुये । ३ कस्तूरी । ४ थ[illegible]
[illegible]च होना । ४ प्रेम

ताको कछु अपमान न जाने । फूले रहत अधिक सुखमाने ॥
जग उपहास सुनत बहु तेरो । लाज शंक दीनो सब डेरो ॥
आरर्ज पथ मर्याद बड़ाई । लोकवेद कुलकान गँवाई ॥
मैं समुझाय रही बहुतेरो । नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छबिपर अटके । मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अब छोडत तिनकों नाहीं । बैठे रहत आप तिन माहीं ॥
राखे बांधि अलक की डोरी । भाज जाहिं मति कबहुँक दौरी ॥

दोहा–अब ये लोचन श्यामके, सखी हमारे नाहिं ॥
बसें श्याम रस रूपये, श्याम बसे इन माहिं ॥

सो०–कहा करैं सखि श्याम, नैननहीं को दोष यह ॥
हठ करि भये गुलाम, तनक मंद मुकसान पर ॥

बोली अपर एक ब्रजनारी । सखिलोचन लोभी अति भारी ॥
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई । तबहिं संग लागत उठि धाई ॥
मेरो हटक्यो नेकुन मानैं । लखत जाय वह छबि ललचानैं ॥
ज्यों खगं छूटत फंद बधिकते । भागचलत उड़ि बेग अधिकते ॥
पाछो फेरि न फिरत डराई । जाय सघन बन मांझ समाई ॥
त्यों दृगभीते छूटि पराने । हरि छबि बिन घनजाय समाने ॥
अब वे इतको नाहिं निकारें । वह छबि निरखि हरषि उरधारें ॥
यदपि सुधा छबि पियत अघाई । तदपि तृप्ति नहिं मानतराई ॥
भई सखी नैनन गति ऐसी । भरे भवन तस्करकी जैसी ॥
देखि श्याम छबितन अधिकाई । अति लालची रहे ललचाई ॥
लेत न बने तजो नहिं जाई । चकित भये निज सुधि बिसराई ॥
रहे बिचारहि मांझ भुलाने । नाहिं कछु लियो न त्याग पराने ॥

दोहा–नैन चोर हरि मुख सदन, छबि धन भांति अनेक ॥
तजतबनतनाहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक ॥

सो०–सखि ये नैना चोर, हरि मुख छबि चोरन गये ॥

१ श्रेष्ठ, सुन्दर । २ सुन्दर । ३ पक्षी । ४ शिकारी । ५ चोर ।

बांधे अलकनिडोर, हरिकी चितवन पाहरू ॥

भली भई हरि इनहिं बँधायो । निदरि गये तैसो फल पायो ॥
ये नहिं मानत कह्यो हमारो । सखि इनहीं सब काज बिगारो ॥
कहति और यक गोपकुमारी । सखि ये नैनकिधौं वटपारी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी । करी हमैं गुरुजनते न्यारी ॥
श्याम दरश लाडू कर दीनो । हमैं आपने बश करलीनो ॥
प्रेम ठगौरी शिरपर छाई । फिरति संगही संग लगाई ॥
बिरह फांस गरडारि हमारे । करी बिकल नाहिं अंग सँभारे ॥
कुल लज्जा संपदा हमारी । सोइन लूटि लई सखि सारी ॥
कहँरति परी मोह बन माहीं । लगन गांठ दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहू नेह जीव नहिं जाई । सुमिरि नैन गुण मन पछिताई ॥
कासों कहें सखी यह बाता । भये नैन हमको दुखदाता ॥
हमको बिरह दुसह दुख देहीं । आप सदा दरशन सुख लेहीं ॥

दोहा–इहिबिधि निदरति दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि ॥
होत मग्न सुख बिरह रस, नयननिश्यामनिहारि ॥

सो०–यही भजन यह ध्यान, श्याम रूप रस गुण कथा ॥
नाहिं जानति कछु आन, निशिदिन ब्रजकी सुंदरी ॥

कोऊ कहति नैन खग मेरे । फँसे अलक फंदा हरि केरे ॥
छबि कण चारा लखि ललचाने । फंद गये चितवन लपटाने ॥
हरि छबि अटकि परे दृग आई । अतिहि बिलाप भये बिबसाई ॥
रहत दीन सन्मुख टकलाये । दुख सुख समुझ सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बड़े सयाने । वह छबि लेन गये अतुराने ॥
सोतो कछू हाथ नहिं आयो । आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसो को त्रिभुवन जो जाई । आवै सखी समुद्र अथाई ॥
हार जीत ये नैन न जानैं । मानपमान कछू नाहिं मानैं ॥
परे रहत शोभाके द्वारे । नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥

१ चौकीदार । २ ठग तथा डाकू । ३ तलफतीहुई । ४ परवश ।

जाकी बान परी सखि जैसी । धरी टेक उरमें तिन तैसी ॥
इन अँखियन यह टेक परीरी । लुबधं तज्यों कमलन भ्रमरीरी ॥
जो शुक नलैनीके बश आई । जिमि कपि मुठी छोडि नहीं जाई॥
दोहा—लोभे वश जिमि मीन मृग, आप बँधावत आय ॥
रूपलालची नैन तिमि, भये श्यामबश जाय ॥
सो०—सकै न काहू छिंधु, लोकलाज कुलकानिगिर ॥
श्याम सलोने सिंधु, मिले त्रिबेनीह्वै नयन ॥
सखी नैन अब हरि सँग लागे । मन क्रम बच उनसे अनुरागे ॥
सन्मुख रहत सदा सुख पाये । भूल गये मग दहने बाये ॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पावैं । ज्यों चकोर चंदहि लटकावैं ॥
मुदित रंक जैसे धन पाई । तैसी इनकी गति अब माई ॥
अब ये नैन फिरत नहि फेरे । किये सखी हम यत्न घनेरे ॥
देखे सुभग श्याम इन जबते । निठुर भये हमसों ये तबते ॥
जब मैं घूंघट पटहि घेरी । तबये शिशुंकी अरनै अरेरी ॥
हरि अँग संग लागि उठि धाये। मनहुँउनहिं प्रतिपाल कराये ॥
मृदु मुसकन रस पाय मिठाई । क्षणहींमें मति गति बिसराई ॥
अति हठ परे न नेक बिसारैं । निमिष रुदन बल धीर न धारैं ॥
लाज लकुट उरमें डर पाये । वेसखि एकहु डर न डराये ॥
फिरेन मैं बहु भांति बुलाये । गये तनक हरिके फुसलाये ॥
दोहा—अब हम तलफत उन बिना, मरत यही अफसोस ॥
गथ खोटो सखि आपनो, कहा पारखिहि दोस॥
सो०—प्रेमबिबस त्रिय वृन्द, ऐसे दोषति दृगनको ॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द, टेर सुनाई बांसुरी ॥

अथ मुरली लीला ॥

कृष्ण प्रेमरस पूरण तातें । करत हुती नयननकी बातें ॥
परी श्रवण इहि अंतरजाई । हरिकी मुरली टेर सुनाई ॥

१ टेव । २ लोभी । ३ कमलिनी । ४ बालक । ५ अड, हठ ।

भई चकृत सुनिसवँ ब्रजगोरी। परी आय मनु शीश ठगोरी॥
भूलि गई सुधि अँखियन केरी। ह्वैगई मानौं चित्र चितेरी॥
दुख सुख मनको वरणि न जाई। इकटकरहीं पलक विसराई॥
देह दशा सब तुरत भुलानी। स्वेद चल्यो बहि मानहुँ पानी॥
भई विवस मतिकी गति भूली। मनहि डोरि गोपिका झूली॥
कबहूँ सुधि कबहूं सुधिनाहीं। कबहूं मुरलीनाद सुनाहीं॥
कछुकसँभारि धीर उरधारी। कहति परस्पर गोपकुमारी॥
अँखियनते मुरली हरिप्यारी। मै वैरिन यह सौत हमारी॥
ब्रजमें धौं कितते यह आई। भई कठिन हमको दुखदाई॥
आवतही ऐसे ढंग जाके। भये श्याम तुरतहि वश ताके॥
दोहा–जारसकोहम तप कियो, षट्ऋतु सब ब्रजवाम॥
सोरस मुरलीलेति अब, सहजहिवशकरि श्याम॥
सो०–गावत मीठी तान, मुरली सँग अधरन धरे॥
अब याके वश कान्ह, औरन विवस करी वही॥
ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी। जो न मोहि सुनि याकी बानी॥
यहतौ भलीनहीं ब्रज आई। नई सौति हरिके मनभाई॥
अब याके वश गिरिवरधारी। नेक अधरते करत न न्यारी॥
याहीके अब रंगरँगेरी। मधुर वचन सुनि रीझगयेरी॥
करपल्लवन माहिं बैठाई। रहत ग्रीव तापर लटकाई॥
बारहि बार अधर रस प्यावै। तासों अति अनुराग जनावै॥
देखहुरी याकी अधिकाई। पियत सुधारस हमहि दिखाई॥
परी रहत बनमें धौंकैसी। भई ढीठ आवतही ऐसी॥
दिनही दिन अधिकात जातरी। सखी नहीं यह भलीबातरी॥
आवतही हमरो धनलीनो। चाहत और कहा धौं कीनो॥
मैं जो कहत सुनौरी गोरी। सजगरहौसब नवल किशोरी॥
मुरली दूरिकराये बनिहै। कछू दिननमें हमैं न गिनिहै॥

१ ओठोंपर। २ अंगुलियां।

दोहा-फिरि हैं याके सँगलगिं, लोक लाज गृह त्यागि ॥
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुंह लागि ॥
सो०-करिहै नानारंग, यहजानति टोना कछू ॥
यामुरलीके संग, देखहु हरि कैसेभये ॥

यह सुनि कहत एक ब्रजनारी। सखी बात यह कहति कहारी ॥
अब यह दूरि होति है कैसे। जाके वश नँदनन्दन ऐसे ॥
एक पांय ठाढे ता आगे। रहत त्रिभंग अंग अनुरागे ॥
अधर सेजपर शयन कराई। करपल्लव न पैलोटत पांई ॥
कबहुँ कमिल गावतहैं तासों। होति बिवस पुहुमी सब जासों ॥
मुरली अति मोहनको भावै। ताके गुण न सखी को पावै ॥
जानत रागरागिनी जेते। हरि सँग मिलि गावतिहैं तेते ॥
नाना बिधिकी गति न बजावैं। तान तरंग अमित उपजावैं ॥
जैसेही रीझत मन मोहन। तैसिय भांति रिझावत गोहन ॥
रहति सदा मुखही सों लागी। अधर पियूष स्वाद रसपागी ॥
मधुर मधुर कल बचन सुनाये। पुनि पुनि हरिके मनाहिं चुराये ॥
ऐसो को अब हरिके करते। दूर करै याको निज बरते ॥

दोहा-अब मुरली छूटै नहीं, याके वश भये श्याम ॥
प्रगट कियो सब जगतमें, मुरलीधर निजनाम ॥
सो०-हरिको करि वश माहिं, मुरली लूटत अधर रस ॥
डर डर मानति नाहिं, हम सबते बोलति निठुर ॥

निठुर बचन अब हमहिं सुनावै। हरिको मन हमते उचटावै ॥
आरज पथ कुल कान छुडावै। हम सबहिनको निलज करावै ॥
ऐसे ढँग मुरलीके आली। हमते निठुर किये बनमाली ॥
यह तौ निठुर काठकी जाई। प्रगट किये अपने गुण आई ॥
अपनोही स्वारथै यह जानै। कपट राग हरिके संग गानै ॥
मुरली निठुर किये बनवारी। मुरली ते हरि हमहिं बिसारी ॥

१चापतीहै। २ पाँव। ३ मतलब।

बनकी व्याधि कहां यह आई । ऐसे कहि कहि तिय पछताई ॥
कहा भयो मोहन मुखलागी । अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे । मुरली प्रगट भई यह कैसे ॥
कहां रहत काकीहै जाई । कौन जात कैसे इत आई ॥
मात पिताहैं याके कैसे । जैसी यह तेऊहैं ऐसे ॥
बोली अरु इक तिया सयानी । अबलों तुम यह बात न जानी ॥

दोहा–सखि तुम अबलौं नाहिं सुन्यो, मुरलीको कुलधर्म ॥
सुनो सुनाऊं मैं तुम्हैं, याकि जाति अरु कर्म ॥

सो०–तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन ॥
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरलीकी कुल कथा ॥

बनमें रहति बांस कुल जाई । यह तौ याकी जाति सुहाई ॥
जलधर¹पिता धरणि²है माता । तिनके गुणन करौं विख्याता ॥
बनहूंते तिनको घर न्यारो । निपटहि जहां उजाड़ अपारो ॥
गुणन एकते एक उजागरि । मात पिता अरु मुरली नागरि ॥
पर अकाज बिश्वास न जानै । येहैं इनके कुलहि बखानै ॥
ना जानिये कौन फल आली । कृपा करी या पर बनमाली ॥
सुनहु सखी याके कुलवर्मा । प्रथम कहौं मेघनके कर्मा ॥
वेबर्षत जल सब जगमाहीं । गिरि बन सर सरिता सब ठाहीं ॥
चातक सदा रहत करि आसा । एक बूंदको मरत पियासा ॥
धरणी सबहीको उपजावै । आपन सदा कुमारि कहावै ॥
उपजत पुनि बिनशत जाहीमें । सो कछुछोहनहीं ताहीमें ॥
ताकुल सुता मुरलिका जानौं । अब आगे गुण प्रगट बखानौं ॥

दोहा–तनुहीते प्रगटत अनल, ऐसी याको झार ॥
प्रगट भई जा वंशमें, करति जारि तिहिं छार ॥

सो०–ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बांसकी ॥

---

१ स्वभाव । २ मेघ । ३ पृथ्वी । ४ बेटी । ५ अग्नि । ६ भस्म ।

आई निज कुल दाहि, और कौन याते निठुर ॥
याकी जाति श्याम नहिं जानी। बिन जाने कीनी पटरानी ॥
कहिये चलौ श्याम सों जाई। सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहा यह बात बखानो। श्यामहिं कहा भलो तुम जानो ॥
निज कुल जारत बिलँम न लाई। ह्वैहै तासों कौन भलाई ॥
जाको हम षट् ऋतु तपकीनो। सोफल तुरत मुरलि यह दीनो ॥
जेसन्मुखते विमुख कहावैं। विमुख तुरत उत्तम फल पावैं ॥
घरके बन बनके घर कीन्हे। कपटी परम श्यामको चीन्हे ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी। वे कपटी बहुतरुण बिहारी ॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानैं। चन्द्र नहीं नेकहु उर आनैं ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै। जलको तनक दया नहिं लागै ॥
ज्यों पतंग रुडजोति जरैरी। जोति नहीं कछु कृपा करैरी ॥
चातक एक मेघको जानैं। वह कछु ताकी प्रीति न मानैं॥
दोहा–इन सबहिनते हरि निठुर, तैसिय मिली सहाय ॥
अब मुरली अरु श्यामकी, जोरी बनी बनाय ॥
सो०–ये अहीर वह बैन, काहे न प्रीति बढावहीं ॥
दुहुँअनको मन ऐन, जैसे वे तैसी वहू ॥
मुरलीने हरिको पहिचान्यो। हरिको मन मुरली सों मान्यो॥
निठुर निठुर मिल बात बनावैं। याहीके बल धेनु चरावैं ॥
वाहीकी लकुटी कर धारी। वाही की वंशी अति प्यारी ॥
हम सों वैर सदा हरिकीनों। दधिले मारग जान न दीनों ॥
पुनि भेदहि मन हर्‌यो हमारो। कीनो कुल कुटुंबते न्यारो ॥
बहुरि बोलि अँखियनको लीनी। तापर सौति मुरलिया कीनी ॥
सुनि सजनी विन काज जरोरी। कर्म करे सो कोउ न करोरी ॥
यह महिमा करता सब करई। कौने विधि धौं कापर परई ॥
हम तपकर इतनो पचिहारी। सो घर कुलते भई नियारी ॥

१ जलाकर। २ वेर ३ सखी। ४ भगवान।

वनकी घास इतो सुख पावे । श्याम अधर शिर छत्र धरावे ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी । और नारि हरिको न सुहानी ॥
वनते लाय सुहागनि कीन्ही । जाति पांति कुल कछू न चीन्ही ॥
दोहा–तप तीरथ जो पूरवहि, कठिन किये हरि हेत ॥
अव मुरली ताकटको, वैठि अधर फल लेत ॥
सो०–मेटत पिछलो दाग, जो तपकरितायोतनहिं ॥
धनि २ मुरली भाग, अब गरजति अघरन चढी ॥
मुरली कौन सुकृत फल पायो । सब कलंक हरि परशिगँवायो ॥
तनु कठोर मन जड रस हीनी । अंतर सूनो सार बिहीनी ॥
लघुता अंग न कछु गरवाई । बाँस वंश कछु नाहिं निकाई ॥
छिद्र विशाल विपुल तनु छाये । हरिहि परशि सब भये सुहाये ॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली । हरि मुख कमल बरासन जुरली ॥
चार वेद विधि श्रुति मति भाखे।नीति सहित जड चेतन राखे ॥
आठ वदन मुरली कहि नादा । उलटि दई हरिकी मर्यादा ॥
जडन चेत चेतन जडकीने । थिर चर करचर थिर कर दीने ॥
एकबार श्रीपति सिखरायो । तवते ज्ञान विधाता पायो ॥
याको तो नँदसुवन कन्हाई । लगे रहत हैं कान सदाई ॥
याते को अरु प्रबलप्रवीना । कियोसकलजग निजआधीना ॥
कहिये काहि औरको ऐसी । भई श्यामसँग मुरली जैसी ॥
दोहा–अति सुरनर मुनि सूरशशि, खग मृग सलिल समीर ॥
या मुरलीके वश सवै, धुनिसुनि धरत न धीर ॥
सो०–रही विश्वंभर जीति, मोहन मुख लगि बांसुरी ॥
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी ॥
सखि मुरली को दोष न देहों । करि विचार अपने मन लेहों ॥
हरि हित इन श्रमकीनों जोई । सो श्रम और कौन पै होई ॥

१ राजा । २ तपाया दुखदिया । ३ शुभकर्म । ४ पाप । ५ मूर्ख ।

जो अंकुलीन[1] तऊ बड़भागी । कियो कठिन व्रत हरि हितलागी॥
जब अतिदृढ याको हरि जान्यो । तब बन भीतरते गृह आन्यो ॥
जब याकी करतूत सुनोगी । तब धनि २ करि याहि गनोगी॥
जन्मतहीते करमति गाढी । बनमें रही एक पग ठाढी ॥
शीत उष्ण वर्षा सह लीनी । नेकहु मनसा मलिन न कीनी ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी । पत्र मूल शाखा जब छांटी ॥
राखी डार घाम में आनी । शीश शोच सब देह सुखानी ॥
मुरयो न मन तन अंगदगाये । बिंधे बेहँ[3] अँग अँग कर वाये ॥
ताय सुखाय परखि हरि लीनी । तब मुरली पटरानी कीनी ॥
मुरली सही इती कठिनाई । तब पाई ऐसी ठकुराई ॥

दो०-मुरली तप फल भोगवै, वृथा करत तुम आर ॥
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणीपियार ॥
सो०-तुम ते यह नाहिं होय, जो करनी मुरली करी ॥
ताको सम नहिं कोय, अतिश्रम करि हरि बश करे ॥

परम पुनीत मीत जब जानी । तब मुरली हरिके मन मानी ॥
देखहुरी याकी अधिकाई । कहँ लगि याकी करहिं बड़ाई ॥
जबहीं श्याम अधर को परसै । तब अति हर्षि नादरस बरसै ॥
तान तरंग रंग उपजावै । अति आनँद सब जगत जनावै ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई । छूटत मौन रहत मुरझाई ॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको। अधरामृत जीवन है जाको ॥
मुरली जो हरि हित तप कीनो । परम चतुर पूरण तप लीनो ॥
तब लगि हरिको नाहिं पतियानी । सहे कष्ट बोली नहि बानी ॥
जब लग जीवन करि नहिं पायो । अधरामृत रस मनको भायो॥
जब हरि सों वांछित फल पायो । तब सबपर अधिकार जनायो ॥
या सम और चतुर को आली। जिनबश किये श्याम बनमाली ॥
क्यों नहिं त्रिभुवन को मन मोहै। जाके बश त्रिभुवन पति को है ॥

---

१ नीच कुलकी । २ जड । ३ छेद ।

दो०-मुरलीकी सरे मत करौ, कह्यो हमारो मान ॥
धनि धनि ताहि बखानिहै, सुनताको यश कान ॥
सो०-अधरामृत करि पान, अमर भई अब मुरलिका ॥
तिहुँपुर होत बखान, शारदादि यशगावहीं ॥
हमहूंसबमिलके तप कीनो। ताको फल हम को हरि दीनो ॥
लीने भूषण बसन चुराई। युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई ॥
तब अम्बर दे धन्य बखानो। हम भोरी इतनोइ सुखमानो ॥
अपनो अपनो भाग्य दखौरी। मुरली सों बिनकाजखिजौरी ॥
अब मुरली सों हेत करौरी। नहिं जीतोगी मतहि लरौरी ॥
मुरली हम ते तप अधिकाई। मुरलीके वश कुवर कन्हाई ॥
तनक आश दरशन की हैरी। सोऊ पुनि करते जैहैरी ॥
हैं बहुतेरी रमणि कन्हाई। यहू मिली इकतिनमें आई ॥
मुरली को जिन डाह करौरी। तुम नहिं अपने प्रेम टरौरी ॥
प्रेमहि ते हरि मानरहैंगे। वे सुजान सबजानि रहैंगे ॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताही। तज्यो जात कैसे अब वाही ॥
मुरली सों कह काज हमारो। जीवहु मोहन नन्ददुलारो ॥
दो०-हम हित कीन्हों श्यामसों, मेटि लोक कुल कान ॥
ताही सों हित चाहिये, जासों है पहँचान ॥
सो०-हमकोहै वह आश, वेहैं अंतर्यामि हरि ॥
करिहैं नाहिं निराश, उर अंतरकी जानिकै ॥
कहा भयो मुरली हरि राखी। अपने कर सों ताहि सुलाखी ॥
गुणके काज क्षणक दुख पाई। दे अधरामृत तुरत जिवाई ॥
हमते अधिक कियो उन नाहीं। करि बिचार देखहु मनमाहीं ॥
वर्ष पांच सातक के जबते। कियो सनेह श्याम सों तबते ॥
पुनि षट् ऋतु तपसों मन लायो। अबलौं बिरहानले तनु तायो ॥
कैसे ये सब फलन फलैंगे। क्यों नहिं हमसों श्याम मिलैंगे ॥

१ बराबरी । २ सरस्वती । ३ वस्त्र । ४ प्रेम । ५ बिरहकी आग ।

तब यों कह्यो एक व्रजनारी। मुरली श्याम अधरपर धारी॥
जो अवगुण होतो या माहीं। तो याको हरि छुवते नाहीं॥
सुनो सखी यहहै इहलायक। अतिही भली श्रवण सुखदायक॥
तुमको कहति वृथा जोइ सोई। जसी यह ऐसी नाहिं कोई॥
जो यह भली बुरी गुण केरी। तो याको हरि श्याम मिलेरी॥
काहिन प्रीति करें हरि ऐसी। है यह तिहूं भुवन में जैसी॥
दो०-एक युवति अरु गुण भरी, बोलति मधुरे बैन॥
श्रवण सुधाप्यावततहूं, क्यों हरि अधर धरैन॥
सो०-हरि बरजो मति कोय, देहु बजावन बांसुरी॥
विरह विरससे होय, रसकीने रस होत है॥
आप भलेतौ जगत भलोई। नातर सखी भलो नाहिं कोई॥
मुरली लगी श्यामके मुखरी। तौहूहै हमसों सन्मुखरी॥
सुनहु कान दे कहति कहारी। श्रीराधा श्रीराधा प्यारी॥
तुमजानति हरि हमाहें बिसारी। तुम हरिसों नाहिंनेक नियारी॥
जब जब मुरली श्याम बजावैं। तब तब नाम तुम्हारोइ गावें॥
मुरली भई सौति जो आई। तो हरि तेरिहि टहल कराई॥
तू अर्द्धंगिनि वह है दासी। मेरे मन यह बात प्रकासी॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावैं। वाके मुखहरि तुमहिं बुलावैं॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे। मुरली यह यश कहत पुकारे॥
हर्षी सकल सुनत यह बानी। हम मुरली ऐसी नाहिं जानी॥
वृथा वैर यासों हम मान्यो। याको शील अबै हम जान्यो॥
मुरलीसों ऐसे सुखपाई। करति सकल व्रज नारि बड़ाई॥
दो०-धनि धनि वंशी वांसकी, धनियाके मृदुबोल॥
धनिल्याये गुणयाचिकै, बनते श्याम अमोल॥
सो०-धनि धनियाको वंश, धनि मुरली हरिमुख लगी॥
सखिन सहित परशंस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो॥

१ स्त्री। २ नम्रभाव। ३ मीठे बैन। ४ परखकर। ५ बहुत उत्तम। ६ प्रसंसा।

मुरली श्रीमुरलीधर केरी । महिमा कापै जात निवेरी ॥
जाको यश गुण गंधरब गावैं । वेद भेद जाको नाहिं पावैं ॥
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहै । देव दनुज नर खग मृग जोहै ॥
वाणी ललित श्रवण सुखदाई । बाजति हरि मुख लाग सुहाई ॥
ब्रह्मादिक मनमोह करावै । शिव सनकादि समाधि भुलावै ॥
माया योग कृष्णकी जोई । शोभित अधर मुरलिका सोई ॥
हरिकी श्वास जासुकी बानी । ताके गुण को सकै बखानी ॥
जब मुरली नँदनंद बजावैं । ब्रज ललना सुनिकै सुखपावैं ॥
चकृत होत तनु दशा भुलावैं । प्रेम बिवश सुधि बुधि बिसरावैं ॥
जकी थकी जहँ तहँ रह जाहीं । मानहुँ लिखी चित्रकी आहीं ॥
कबहूं दुख कबहूं सुख मानैं । कबहूँ निंदहिं कबहुं बखानैं ॥
ऐसी दशा होत घर घर की । बाजति मुरली जब नटबरकी ॥

छं०-जबहिंमुरली श्यामकरगहि, अधरराखिबजावहीं ।
तरलतानतरंग अगणित, गति अमित उपजावहीं ॥
रहत सुनि धुनि मगनजलथल, जीवजहँसोतहँसही ।
कहत ब्रह्मानंद जासों, पाय सँग पूजत नहीं ॥
सब सयान समान ज्ञान, गुमानतबहींलै अहैं ॥
लोक वेद मर्याद पतिव्रत, चार फल जबलौंचहैं ॥
तबहिंलौं मन चपल बुधिबल, सकल रुचि धन धामकी ॥
सुनी स्वप्नेहु नाहिं जबलौं, श्रवण मुरली श्यामकी ॥

दो०-धनि धनि ते नरनारि जग, धनि धनि तिनके भाग ।
ब्रजवासी प्रभु बाँसुरी, जिनके मनमें लाग ॥

सो०-राखत हैं यह आस, जन ब्रजवासी दासहूं ।
करहु हिये मम वास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

---

१ राक्षस । २ सुन्दर । ३ स्त्री । ४ बहुत ।

अथ रासलीला ।

वंदौं युगल चरण सुखदायक । श्रीरस रास नायकौ नायकं ॥
नन्द नँदन वृषभानु नन्दनी । सुर नर मुनि ब्रह्मादि वन्दनी ॥
रास रसिक रस रास बिलासी । नित्य धाम वृन्दावनबासी ॥
रूपराशि आनन्द निधाना । मंगलमद सुन्दर भगवाना ॥
बहुरि रासपैति पद शिर नाऊं । रासचरित मंगल अब गाऊं ॥
वेदव्यास जो रास बखानो । सो गन्धर्व व्याह बिधि जानो ॥
ब्रज गोपिन हरि हित तप कीनों। श्याम होंय पति यह ब्रतलीनों॥
नन्दनँदन तिनको बर दीनो । चीरहरण लीला तब कीनो ॥
करिहैं तुम्हरे मनकी भाई । शरदरैनि शुभ लग्न धराई ॥
सो जब शरद सुखद ऋतु आई । राकाँ रजनी परम सुहाई ॥
भक्त मनोरथ पूरण कारी । गावति विरद विदित श्रुतिचारी ॥
गये श्याम वृन्दावन माहीं । जहँ वसंतऋतु रहत सदाहीं ॥

दोहा–श्रीवृन्दावन धामकी, शोभा परम पुनीत ॥
वरणि सकै कवि कौन विधि, मन बुधि वचन अतीत ॥

सो०–सब चैतन्य स्वरूप, भूमिलता द्रुम गुल्म तृण ॥
धारि रह्यो जड रूप, सुन्दर श्याम बिहार हित ॥

जाकी महिमा शिव मनि गावैं । ब्रह्मादिकरजः छुवन न पावैं ॥
जाकी महिमा श्रीमुखबानी । संकर्षणै अति श्याम बखानी ॥
चिंतामणिमय भूमि सुहाई । कोमल बिमल रम्य सुखदाई ॥
सकल सुमंगलकी जननीसी । कृष्ण चरण पंकज रमणीसी ॥
फिरत श्याम जहँ नांगे पायन । चरण चिह्न अंकित सब ठायन ॥
पावनहूकी पावन कारी । ब्रजबासी प्रभुकी अति प्यारी ॥
वर्ण वर्ण वर विटप सुहाये । परम अनूपम जाहि बनाये ॥
सदा सुमन फल संयुत सोहैं । अमित सुगंध स्वाद मन मोहैं ॥
नंवल्लव दल परम सुहाये । जगमगात नग जोतिलजाये ॥

१ राधिकाजी । २ कृष्ण । ३ कृष्ण । ४ शरदकी पूर्णिमा । ५ पर । ६ बलदेवजी ।

विपुल कांति शोभित बहु रंगा । अति विचित्र छबि उठति तरंगा ॥
परमप्रकाश दशहु दिशि माहीं । कोटि सूर्य शशि पटतर नाहीं ॥
पत्र पत्र प्रतिबिंब श्यामको । मोहति लखि मन कोटि कामको॥
दोहा–ठौर ठौर शोभित परम, तैसिय लता वितानि ॥
वृन्दावन तरु वेलि सब, नख शिख छविकी खानि ॥
सो०–और सकल सुख धाम, वैकुंठादिक श्यामके ॥
यह बिहार बिश्राम, ताते अति सुंदर सुखद ॥
विपुल कुंज मंजुल छबि छाई । जिन्हैं सँवारत काम सदाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई । शीतल परम सुगंध सुहाई ॥
चित्र विचित्र विहंग मृग नाना । बोलत डोलत विविध बिधाना ॥
गुंजत भृंग लुब्ध मकरंदा । अति छबि पुंज मंजुवन वृंदा ॥
तैसिय यमुना परम सुहाई । पुलिनि पुनीतैं बरणि नहिं जाई ॥
देति महाछबि झलकनरेती । मानहुँ परम कांतिकी खेती ॥
फूले बनज विपुल बहु रंगा । गुंज करत मधुमाते भृंगा ॥
श्रीवृन्दावन छबि समुदाई । सम्यकै बरणि कौन प जाई ॥
जाकी पटतरको नाहिं आना । वन अनूप अद्वैत बखाना ॥
ऐसी कछू परतहै हेरी । है अस्थूलवपुषै प्रभुकेरी ॥
गोपीजन इन्द्रियगण तामें । है चैतन्य आप हरि जामें ॥
नित्य धाम ताही ते गायो । यह पटतर मेरे मन भायो ॥
दोहा–सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि, वृन्दाविपिन उदार ॥
शारद नारद शेष शिव, बरणत विधि श्रुति चार ॥
सो०–सुखद न कोऊ आन, वृन्दाबन सम दूसरो ॥
सकल विश्व सुखदान, सुख पावत मोहन जहां ॥
तहँ वितस्तिइक शंख सुहायो । मणिमय शुभग श्रुतिनमें गायो ॥
तापर अद्भुत कमल बिराजै । षोडश पत्र चक्र सम राजै ॥

१ लहर । २ सूर्य । ३ मंडप । ४ पवित्र । ५ कमल । ६ अच्छीतरह ।

योजन पंच तासु परमाना । रास स्थान सुवेद बखाना ॥
मध्य करणिका अति रमणीया । बैठे तहां कान्ह कमनीया ॥
शोभा अमित नेति श्रुति बानी । ताते गिरा कहति सकुचानी ॥
कोमल श्यामल अंग सुहाये । निरखि कोटि शत कामलजाये ॥
नटवर वेष साज सब साजे । अंग अंग भषण छबि छाजे ॥
सखी शिखंड मनोहर माथे । बीच बीच मुक्तामणि गाथे ॥
जलजमाल बनमाल सुहाई । कुंडल अलक झलक छबि छाई ॥
कटि पट पीत काछिनी काछे । ललित शृंगार सुभग तनु आछे ॥
मणिन जटित नूपुर पग नीके । चरण कमल भावत जन जीके ॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते । नख उपमा पूजत नहिं तेते ॥

दोहा—अति अद्भुत लावण्यनिधि, श्रीवृन्दावन चन्द ॥
निगम नेति किमि बरणिये, रसिक नवल नँदनन्द ॥

सो०—जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूर्णानन्द हरि ॥
सो पूरण अवतार, वृन्दावन रस रासपति ॥

देखि श्याम बन धाम कन्हाई । तैसिय शरदरैनि छबिछाई ॥
प्रफुलित कुमुदिनि बन चहुँपासा। ललित मालती करत सुवासा ॥
जैसोइ यमुना पुलनि सुहाया । तैसोइ पूरण शशि छबि छायो ॥
तैसिय जग मग ज्योतिद्रुमनकी । तैसिय ललित सुगंध सुमनकी ॥
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई । हर्षि रास रुचि मन उपजाई ॥
तब कर लई सकल गुण मुरली । ललित योग मायासी मुरली ॥
नाद ब्रह्मकी उत्पति जासों । निगम अगम उपजै पुनि तासों ॥
विश्वविमोहन मंत्र कलासी । हरिमुख कमल लसति कमलासी
राग रंग रस रास बिलासी । सकल गुणनिमें आनँद रासी ॥
श्यामअधर धर ताहि बजाई । त्रिभुवन मनमोहन ध्वनि छाई ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे । नभ सुरगण सुर सुनत विमोहे ॥
चकित चंद मृग मारग भूले । बरषत अमृत कनक अनुकूले ॥

१ सुंदर । २ वेद । ३ सरस्वती । ४ चंद्र । ५ वृक्षोंकी । ६ पुष्पोंकी ।

दोहा–शिवविरंचि सनकादि मुनि, तजि तजि ब्रह्मसमाधि ॥
भये नाद मुरलीमगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥
सो०–रहे सबै मन भूल, सिध चारण गंधर्व सुर ॥
तनु सुधि रही न मूल, सुनि मुरली नँदनन्दकी ॥
थकित पवन गति गवन भुलानी। रह्यो प्रवाह न दिन थकि पानी ॥
झरना झरहिं पषाण कठोरा। नाचि उठे चहुँदिशि बन मोरा ॥
थकित बिलोकत मृग सब ठाढे। खगै रहे मौन मनहुँ लिखि काढे ॥
रही धेनु तृण गहि मुख माहीं। थकित वत्स पय पीवत नाहीं ॥
सरकि सकत नहिं अहि ध्वनि मोहैं। उकठे बिपट रहत सब सोहैं ॥
तरु बेली सब चंचल पाता। नव अंकुर दल प्रफुलितगाता ॥
सुनि ध्वनि शेषनाग अकुलाने। नाग सकल सोवतते जाने ॥
जड चेतन गति भइ विपरीता। हरिमुख मुरली सुनत पुनीता ॥
जो नर नारि तिहूं पुर माहीं। भये नादवश तनु सुधि नाहीं ॥
सुनि ध्वनि चकित भई अति भारी। जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी ॥
यदपि मुरलिध्वनि त्रिभुवन परशी। तदपि यथा विधि तिनहीं दरशी ॥
या रसकी तेई अधिकारी। नंदनँदन प्रियकी अति प्यारी ॥
दो०–सुनतहि बौरीसी भई, विसरी सबी सयान ॥
लगी ठगौरीसी मनहुँ, मुरलीकी ध्वनि कान ॥
सो०–रह्यो न उरमें धीर, वाजी वाजी कहि उठीं ॥
आकुल विकल शरीर, सुनि मुरली ब्रजकी तरुणि ॥
षट्दशै सहस गोपिका गोरी। मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गगन निहारैं। कोउ मनहीं मन बुद्धि विचारैं ॥
घर घर तरुणि सब वितताती आरज पंथ गृहकाज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं मुरलीमें हरि सबन बुलावैं ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई। जो जैसे तैसेइ उठि धाई ॥

१ ब्रह्मा। २ चाल। ३ पक्षी। ४ वृक्ष। ५ उल्टी। ६ सोलहहजार।

लोक लाज गुरुजन डर डारयो । चलीं सकल गृह काज बिसारयो ॥
काहू दूध उफनते छांडे । काहू दधिहि जमावत भांडे ॥
काहू करति रसोंई त्यागी । कोऊ पतिहि जिमावत भागी ॥
बालक गोद सँभारन लीनो । दूध पियावतही तजि दीनो ॥
कोउ शृंगार करति उठि धाई । उलटे भूषण[1] वसन बनाई ॥
बाजूंद पगनसों बांधे । लै मंजीर उरनमें सांधे ॥
किंकिणि डारि लई गरमाहीं । हार लपेटत करसों जाहीं ॥

दो०–शीश फूल काननधरे, करणफूल धरेभाल[2] ॥
चलीं सकल मुरली सुनत, भ्रमतें ब्रजकी बाल ॥

सो०–अंजन करि दृग एक, रह्यो एक अंजन बिना ॥
रह्यो न कछू बिवेक[3], भईं बिवस मुरली सुनत ॥

मुरलीसों हरि टेर बुलाई । उपजी प्रीति सकल उठि धाई ॥
मुरली ध्वनि मारग[4] गहि लीनो । और कछू उर शोच न कीनो ॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रजनारी । पंच भूत अवगुण ते न्यारी ॥
रोंकि रहे सुत पति पितु माता । तेकिमि रुकहिं अगम यह बाता ॥
चलीं ध्यान धरि हरि उर माहीं । गृह वन कुंज रुकी कहुँ नाहीं ॥
जो प्रारब्ध कर्म वश कोई । राखी रोकि पतिन गृह सोई ॥
भयो विरह दुख तिनको ऐसो । कोटिन जन्म कर्म फल जैसो ॥
पुनि धरिध्यान हरिहि उरलायो । कोटि स्वर्ग फल मानहुँ पायो ॥
यों करि भोग त्याग तनु बाला । दिव्य देह धरि मिलीं गुपाला ॥
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी । लोक वेद[5] मर्यादा तोरी ॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे । जरत भवन तजियत है जैसे ॥
एक एककी सुधि कछु नाहीं । झुंडन चलीं श्याम पहँ जाहीं ॥

दो०–गृह गुरुजन तजि लाजतजि, ब्रजसुन्दरी निकाय ॥
मुरली ध्वनि रस[6] रँगरलीं, मिलीं श्याम बनजाय ॥

---

१ वस्त्राभूषण । २ मस्तक । ३ ज्ञान । ४ रस्ता । ५ वेद । ६ कान ।

सो०-नटवर वपु गोपाल, अधरसधर मुरलीधरे ॥
सन्मुख सब ब्रजवाल, देखि श्याम आनँदभरी ॥
ब्रज युवतिन लखि मुदित बिहारी मोर मनहु छबि घटा निहारी ॥
कनक वर्ण शशि मुख सब बाला। पहुँची निकट जाय नँदलाला ॥
विपिन सुहावन अति छबि बाढी। भई जाय सन्मुख सब ठाढी ॥
रहे चकित हरि छबि अवलोकी। अटपट तनु शृंगार बिलोकी ॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो। मनहीं मन अति हर्ष बढ़ायो ॥
अति आदर करि कुँवर कन्हाई। बोले मंद मधुर मुसकाई ॥
वाके: वचन प्रेमरस साने। प्रेम प्रतीत कसौटी माने ॥
कहो अहो तिय ब्रज कुशलाई। निशि काहे बनको उठि धाई ॥
अर्द्धरात कछु डर नहिं कीनो। ऐसो कहा काज मनदीनो ॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं। निज पति तजि धाई वन माहीं ॥
वेदपंथ निदरयो तुम भारी। जाहु अजहुँ घर वेगि सवारी ॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं। बहुरौ तुमको त्रास दिखैहैं ॥
दो०-निज पति तजि परपतिभजै, तिय कुलीननहिं होय ॥
मरे नरक जीवत जगत, भलो कहै नहिं कोय ॥
सो०-युवतिनको पति देव, कहत वेद हमहूं कहत ॥
करहु तिनहिंकोसेव, जो तुम चाहो सुख लह्यो ॥
और कछू जियमें जिन राखो। करिये वेद वचन जो भाखो ॥
तजिकै कपट करहु पति सेवा। तियको पति तजि और न देवा ॥
क्रूर कुपूत भाग बिन रोगी। वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी ॥
ऐसेहु पतिको तिय जो त्यागै। बड़ो दोष ताके शिर लागै ॥
तातें मानहु कही हमारी। जाहु सकल घरको ब्रजनारी ॥
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। ऐसे कहि कहि हरि पछिताहीं ॥
कैसे उन तुम आवन दीनी। कैसीधौं यह विधि तुम कीनी ॥
कैधौं कहि आई उन पाहीं। कै वै व जानत हैं नाहीं ॥
नव यौवन तुम सब सुकुमारी। निशि बसबो वन अनुचित भारी ॥

१ शरीर। २ जल्दी। ३ बड़ा बुरा।

जो यह बात सुने ब्रज कोऊ । हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ ॥
अब ऐसी कीजौ, मति कबहूं । करि विचार देखौ मन तुमहूं ॥
बार बार युवतिन भरमाई । ऐसे सबसों कहत कन्हाई ॥
दोहा–निठुर वचन सुनि श्यामके, युवति उठीं अकुलाय ॥
चकित भईं मन गुनिरहीं, मुख कछु वचन न आय ॥
सो०–वदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलनपरो ॥
शोच रहीं शिरनाय, खोइ निधि जनु पाइके ॥
विरह विकल चिंता अति बाढी । रहीं चित्र पुतरीसी ठाढी ॥
कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो । प्रेम विवस युवतिन नहिं जान्यो ॥
मनही मन विहँसत नँदलाला । भईं विरह व्याकुल ब्रजबाला ॥
सहि नहिं सकीं दुसह यह पीरा । बोलीं गद्गद गिरा अधीरा ॥
सुनहु श्याम सुंदर बर नायक । यह जिन कहो नाहिं तुम लायक ॥
कोमल सुभग कमल मुख ताते । कैसे कहत कटुक यह बाते ॥
लैलै नाम बुलायो सबको । धर्म सिखावतहौ अब हमको ॥
छांडि देहु पिय यह चतुराई । करहु हेत जेहि भांति बुलाई ॥
कर्म धर्म श्रुति नाहिं बखाने । जो कोउ कर्म धर्म विधिजाने ॥
हम तो लोक वेद विधि त्यागी । चरणकमल तुम्हरे अनुरागी ॥
सकल धर्म मय चरण तिहारे । बसत सदा सो हृदय हमारे ॥
कहवावतहो अन्तर्यामी । काहे यह समझत नहिं स्वामी ॥
दोहा–अब यह तुमको उचित नाहिं, सुनहु श्याम सुखरास ॥
मन हमरो अपनाइके, हमको करत निरास ॥
सो०–पाप पुण्य कहनाथ, यह तो हम जाने नहीं ॥
बिकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभलगि ॥
अरु यह मृदु मुसकान तुम्हारी । सकल धर्मकी मोहनहारी ॥
ऐसीको तिय ब्रजके माहीं । जाको मन इन मोह्यो नाहीं ॥
जैसिय मुरली मिली सहाई । जिनि विधिकी मर्याद मिटाई ॥

१ धोखादिया । २ विचार । ३ पाला । ४ वाणी । ५ विधाता ।

अब तो मृदु मुसकन मन मोहै । पाप पुण्य जानति नहिं कोहै ॥
हमतो पति इक तुमको जानैं । धृक जो और दूसरो मानैं ॥
कोटि करो अब भवन न जाहीं । तुम तजि हमहिं और पिय नाहीं ॥
जानतहो सब अन्तर्यामी । काहे यह समुझत नाहिं स्वामी ॥
मन वच कर्म तुम्हारी दासी । मृदु मुकसान तुम्हारी प्यासी ॥
जरत सकल विरहानल ज्वाला । सींचहु अधरामृत नँदलाला ॥
दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो । हमते दीन न और विचारो ॥
मृदु मुसकान दान अब दीजै । दारुण विरह दूर पिय कीजै ॥
जो नहिं मानत विनय हमारी । तो यह तनु करिहैं बलिहारी ॥

दोहा–विरह विकल लखि गोपिकन, कृपासिंध भगवान ॥
उमँगि उठे दृग भरि लिये, दीन वचन सुनि कान ॥

सो०–धनि धनि धनि ब्रज बाल, कहत मनहिं मनहर्षहरि ॥
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुँ कर जोरि तब ॥

बोले प्रभुता डारि गोपाला । धन्य धन्य तुम ब्रजकी बाला ॥
तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारे । दूर करो यह दोष हमारे ॥
मैं निर्दय बहु वचन बखाने । तुम अपने जिय एक न आने ॥
मो कारण गृह कुटँब बिसारो । धनि धनि धनि यह नेम तुम्हारो ॥
लोकलाज शंका सब त्यागी । मनवचक्रम मोसों अनुरागी ॥
यों कहि विहँसि मिले नँदलाला । अंकमें भरि लीनी सब बाला ॥
यदपि अकाम सदा सुखरासी । तदपि भये रस प्रेम विलासी ॥
एकहि बार युवति सब भेटी । दुसह ताप विरहानल मेटी ॥
कह्यो विहँसि सबसों गिरिधारी । करहु रासरस मिलि सुखकारी ॥
कृपादृष्टि अवलोकत नयनन । हँसिहँसि सींचत अमृत बयनन ॥
चहुँदिशि हर्ष भरी सब ग्वारी । मध्य श्याम सुन्दर बनवारी ॥
विरहत बन बिहार सुखदाई । नवल गोपिका नवल कन्हाई ॥

दो०–हँसत करत बहुरस चरित, युवति वृन्द लिये संग भारा ॥

१ कठिन २ । न्यौछावर । ३ गोदमें । ४ कामनारहित

गये यमुन तट श्याम तव, क्रीडत कोटि अनंग ॥
सो०—सोहति अतिकमनीय, कोमल उज्ज्वलरेत तहँ।
करी परम रमणीय, यमुनाजी निज पाणि रचि ॥
बहत समीर त्रिविध सुखदाई। कुसुम धूरि घुंघरि छबि छाई॥
उड़त सुगंध लपटचहुँओरा। गुंजत भँवरचारु चितचोरा॥
बैठे तहां श्याम सुखसागर। कोटि काम मनमथन उजागर॥
करत विलास हास रसलीला। कोटि अनंग रंग सुखशीला॥
परिरंभन चुंबन कुच परसत। हिय हुलास आनँदरस बरसत॥
काम भाव गोपिन हरिधायो। कियो सबनके मनको भायो॥
अस अद्भुत रस प्रेम बढ़ायो। बहुरि रासरस रँग उपजायो॥
सुनिपिय वचन सकल अनुरागी। भूषण बसन सँवारन लागी॥
लखि उलटे भूषण सकुचानी। निरखि परस्पर तिय मुसकानी॥
नवसत साज भई सब ठाढी। परम प्रेम आनँद रस बाढी॥
वंशीवट छवि धाम अनूपा। कोटि कल्पतरु सम सुखरूपा॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई। भइ कपूरमय भूमि सुहाई॥
छं०—भई भूमि कपूर मय रज, वरषि जल कुमकुमसिंची।
परम कोमल सुभग शीतल, ज्योति मणिकंचनखिची॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुंदर, रास मंडल विधि रची।
वर्णिकापँजायसो छवि, निरखि शारदगतिलची॥
एक एकहि युवतिके विच, मधुर मूरति श्यामकी।
तिन मध्यजोरीरासनायक, राधिकाघनश्यामकी॥
एक रूप अनेक वपुधरि, सबनिके विचराजहीं।
करी यह लीला प्रगटप्रभु, मरम कोउ न जानहीं॥
जासव भईं मंडल जोरि ठाढी, जात नहिं मुख छबिभनी।

१ धोखादिया। २ देव। २ हाथ। ३ सरस्वती। ४ कही।

सहसवत्तिसं उदित मानौ, मध्य घनदामिनिवनी ॥
दो०–तेहि अवसर ललना सहित, आये सुर मुनि सर्व ।
देवनटी किन्नर वधू, तुंबुरादि गंधर्व ॥
सो०–देखत चढे विमान, हर्षि हर्षि बरसैं सुमन ।
करत मुदित मनगान, धन्य धन्य ब्रजयुवतिकह ॥
सुरगण सब बाजंत्र बजावैं। निरखत ब्रज सुंदरि छबिपावैं ॥
नूपुर कंकण किंकिणि बाजैं। मन्दमधुर मुरली सुरगाजैं ॥
ताल मृदंग बीन मुँहचंगा। सुर मंडल सारंग उपंगा ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजैं। मिलि एक सुरसों सब बाजैं ॥
निर्तत पियसँग चंचल बाला। जनु क्रीडत घन दामिन जाला ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रजगोरी। मर्कत मणि कंचनकी जोरी ॥
सुभग तमाल तरुण नँदलाला। कनकलता सम सब ब्रजबाला ॥
करसों कर जोरें छबि छाजैं। कोटि काम छबि निरखत लाजैं ॥
वृन्दावन उर मनहुँ बिशाला। लसत रास मंडलकी माला ॥
हरि ब्रज नारि परस्पर सोहैं। कोटि काम रतिको मनमोहैं ॥
मटक चलत गति नागर नटकी। लटकन मुकुट लटक घूंघटकी ॥
जनु वन घन दामिनी वरूथा। निरख नचत मोरनके यूथा ॥

छं०–नचत मानौ मोरयुथन, मुकुट लटकन यों फवै ॥
चलत गतिलै नागरिन संग, श्याम नटनागर जवै ॥
धरणिपगपटकनिझटकिकर, भौंहमटकनिकहिपरे ॥
ग्रीव चालन हलन कुंडल, कर जु फेरन मनहरे ॥
मणि कंठ मुक्तामाल उर, बनमाल चरणनलौंबनी ।
बदन पंकज अलकश्रमकण, झलकछबिसकै कोभनी ॥
पटपीत फरकनकाछनी, कटिलालकिंकणिसोहई ॥

१ बत्तिसहजार । २ बाजे । ३ समूह । ४ गोपियें । ५ गोपियें ।

मलयं चित्रित बाहु भूषण, श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहत नँदलाल तियछबि, बिबिधबिधिवेणीगुही ॥
सुभग पाटी मांग मुक्ता, शीश फूलनि छबिरही ॥
जटित माल जरावबेंदी, उदित द्युति भ्रुववंककी ॥
ललित बेसरिनाक अंजन, नैन श्रुतिताटंककी ॥
अधर दशन कपोल चिबुकन, कंठ भूषण अतिबने ॥
करत रास बिलास अद्भुत, हरत मनमोहन मने ॥
दोहा—कबहुँ ललितगति लै चलत, नवलसुघर नँदनन्द ॥
निरख हर्षि तैसेंइचलत, नवल नागरीवृन्द ॥
सो०—कबहुँ विचक्षण बाम, लटकि लेतिनूतनं गतिहिं ॥
रीझरसिक घनश्याम, तापर तन मन बारहीं ॥
निरतत अरस परस पियप्यारी । बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलध्वनि पियके गुण गावै। कोउ अभिनय करि भाव बतावै॥
कोउ संगीतकला गुण धारी । कोउ उघटत चटकत कर तारी ॥
निर्तत ताल भेद गति लीना । सुघर एकते एक नवीना ॥
जात रसिक पिय बिक बिन मोलैं। जब थेइ ताथेइ ताथेइ बोलैं ॥
तान तरंग रंग उपजावैं । लेत उपज अति रस बरषावैं ॥
कबहुँक उघटत छैल कन्हाई । फिरत लुब्ध जिमि बाल सुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते । झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
लटकि २ निर्तत अलबेली । ग्रीव ग्रीव मंजुल भुजमेली ॥
कोउ पियके सँग मिल करिगावै। कोउ मुरलीको छीन बजावै ॥
काहू श्याम लेत भुज भरिके । तजैं कमलमुख चुंबन करिके ॥
रमत रास पिय संग छबीली । परम प्रेम रसरंग रँगीली ॥
छं०—रस रँगरँगीली प्रेमके वश, रास रस पिय सँगकरैं ॥

१ चन्दन । २ टेढ़ा भौंह । ३ ठोढ़ी ४ । चतुर । ५ नई । ६ सुन्दरबाणी ।

निरखि देव प्रसून[1] बरषांहिं, हरषि उर आनँद भरैं ॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजको, धन्य बन पुनि२ कहैं ॥
करत रास विलास पूरण, ब्रह्म जहँ परगट अहैं ॥
शंभु अज सनकादि नारद, मुदित गुण गण गावहीं ॥
निरखि छवि निधि श्यामश्यामा, ब्रह्म सुख विसरावहीं ॥
देव नारि विसारि पति गति, परस्पर कह शोचाहिं ॥
ब्रजवधू विधि[2] हमनकीना, निरखि सुखमन लोभहीं ॥
कह भयो जो ऊरधवसी[3], अरु अमरपदवी जो लही ॥
करत सुख जो श्याम सँग, ब्रजनारिसो त्रिभुवननहीं ॥
वार वार मनाय विधना, कहति यह वर दीजिये ॥
होय दासी ब्रजवधुनकी, कृष्ण पदरति कीजिये ॥
दो०–धनि २ कहि वरषाहिं सुमन, मुदित सकलसुरनारि ॥
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रज गोपकुमारि ॥
सो०–धनि धनि रास विलास, धनि सुंदरता धन्य सुख ॥
धनि वृन्दावन वास, सुर ललना विथकी कहत ॥
रमत रासरस गोपकुमारी। नन्दनँदन पियकी सब प्यारी ॥
करति गान कोकिला लजावैं। हावभाव करि पियहि रिझावैं ॥
राग रागिनी समय सुहाये। सहज बचन जिनके मनभाये ॥
गति सुगंध निर्तत सब गोरी। सहज रूपनिधि नवल किशोरी ॥
पगियह पटकि भुजन लटकावें। फंदा करन अनूप बनावें ॥
निरखि लेत उपजत छबिभारी। रीझ रहत लखि छवि गिरिधारी ॥
वेनी छुटी लटैं बगराहीं। अलकें वेसरसों उरझाहीं ॥
श्रम जलबिंदु बदन द्युतिकारी। मनहुं सुधाकण चंदमझारी ॥
अति वश होत निरखि[5] मोहन। फिरत सबनके गोहनें गोहन ॥

१ फूल। २ ब्रह्मा। ३ ऊंचो। ४ बिपुरी। ५ मनतन्की बेर [illegible]

नारि नारि प्रति रूप प्रकासे। एकहि रूप सबनको भासे ॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो। कियो सबनके मनको भायो ॥
निर्तत अंग थकित भई नागरि। रूप प्रेमगुण परम उजागरि ॥

छं०-भई निर्तत थकित तरुणी, रूप गुणन उजागरी ॥
उमँगि तब उर लाय लीनो, श्याम लखि नवनागरी ॥
गिरत उरते हार टूटे, निरखि प्रभुहि जनावहीं ॥
लेति बीचहि गहि तिन्हैं, महिमांश परन न पावहीं ॥
अति प्रीति श्रम जलपीत पटसों, पोंछि पवन डुलावहीं ॥
उरझि बेसरिसों रही लट, कमल कर सुरझावहीं ॥
देखि विह्वल गात भूषण, शिथिल अंग सँवारहीं ॥
कहि २ वचनमृदु परस्पर, निज पाणि श्रमहिंनिवारहीं ॥

दो०-ऐसी विधि ब्रज सुंदरिन, देत परम सुख श्याम ॥
लखि पति गति स्वाधीन अति, भई गर्विता वाम ॥

सो०-परम प्रेमकी खान, रूप शील गुण आगरी ॥
क्योंन करें अभिमाम, जिनके वश त्रिभुवन धनी ॥

कहति भई निज निज मन माहीं। हमसम अरु न युवति जग माहीं ॥
अब गिरिधर हम वश करिपाये। करत हमारे मनके भाये ॥
अब हमते नाहिं है हैं न्यारे। रहिहैं सदा समीप हमारे ॥
जोइ जोइ हमकहिहैं सोइ करिहैं। सदा हमार संग बिचरिहैं ॥
कोउ पिय अंश भुजनको दीनो। कहति वचन यों गर्वहि लीनों ॥
सुनो श्याम मैं अति श्रमपायो। अब तो मोपै जात न गायो ॥
एक कहति मम पाँय पिराही। मोपै नृत्य होत अब नाहीं ॥
एक कंठ भुजमेलि सयानी। रही लटक बोलत नहिंबानी ॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हे। अंतर्यामी हरि सब चीन्हें ॥

१ पृथ्वी। २ गर्वीली। ३ स्त्रिया। ४ चेष्टा।

गर्व देखि मोहन मुसकाने । मैं अवगति मोको नहिं जाने ॥
करत सदा भक्तनमन भाई । एक गर्व श्यामहिं न सुहाई ॥
सो युवतिनके मनमें जानी । दूरि करन हित यह जिय आनी ॥
दो०-प्रेम अभूषन कनकसम, मलिन गर्व ते होय ॥
विरह अग्नि तायें विना, निर्मल होय न सोय ॥
सो०-यह विचार जिय आन, ले वृषभानुकुमारि सँग ॥
ह्वैगये अन्तरद्धान, व्रजवासी प्रभु संगते ॥

अथ अन्तर्द्धानलीला ॥

प्रेम बढ़ावनहित सुखदाई । अन्तर कर वनदुरे कन्हाई ॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं । चकित भई तब सब मन माहीं ॥
कहति एक कित कुँवर कन्हाई। उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई ॥
भई विकल कछु मरम न पायो । पाय महाधन मनहुँ गमायो ॥
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारें । अति आतुर चहुँ ओर निहारें ॥
तब सबहिनमिलिकै यह जानी । लैगई हरिको कुँवरिसयानी ॥
कछू हर्ष कछुरिस उर धारी । देति भई हँसि रसकी गारी ॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं । करत सदा दुविधा हम पाहीं ॥
चलहु खोज कुंजनमें लैहैं । जान कहां हमते बन पैहैं ॥
ढूंढन चलीं सकल बन माहीं । चरण चिन्ह खोजत सब जाहीं ॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा । कोउ बन घन कोउ यमुनातीरा ॥
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरैं । श्याम श्याम करि कोऊ टेरैं ॥
दो०-इहि विधि सब खोजत फिरे, विरहातुर व्रजबाल ॥
भईं विकल पावत नहीं, कछु खोजत नँदलाल ॥
सो०-यद्पिकियो हरि ख्याल, नेक दुरे वन कुंजमें ॥
तदपि भईं बेहाल, युवतिश्याम देखे विना ॥
प्रेम जंजर विधिको दिन जिनको। वन अंतर अतिबढ दुख तिनको॥
अति बश है

१ फूल । २ जिसकी गतिजानीनजाय । ३ सोना । ४ राधिका । ५

भई विरह व्याकुल चितजबहीं । हरिपद चिह्न लखति भई तबहीं ॥
कुलिश कमल ध्वज अंकश जामें। जगमगान बन घन महि तामें ॥
निकट चिह्न प्यारी चरणनके । अरुण कमल दल सुभग वरणके ॥
वन्दन करन लगीं रज जोई । शिव विरंचि याचतहैं सोई ॥
कछु यह धीर धरयो मन माहीं । खोजलेति ताही मग जाहीं ॥
कुँवर कान्ह प्यारी सँगलीन्हे । फिरत सकल कुंजन रसभीने ॥
कबहुँ कुसुम वनमाल बनावैं । निरखि हर्षि प्यारिहि पहिरावैं ॥
कबहूं सुमन सवाँरत वेणी । परम सुभग शोभाकी श्रेणी ॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुँघावैं । नागरिमन अभिलाष बढावैं ॥
कंठ कंठ भुज दोऊ जोरैं । घनदामिनि छूटति नहिं छोरैं ॥
अति प्यारीके रसबश मोहन । भौंह निहारत डोलत गोहन ॥

दोहा–पतिहित लखि अनुकूल अति, हरषि लाडिलीहीय[1] ॥
तातें उपज्यो गर्व जिय, मैं अति प्यारी पीय ॥

सो०–एक प्राण द्वै देह, तहाँ गर्व कहँ पाइये ॥
यामें नाहिं सन्देह, देहधरेको भाव यह ॥

तब प्यारीके मन यह आई । मेरेही वश कुँवर कन्हाई ॥
मेरे हित बांसुरी बजाई । मेरे हित सब तियन बुलाई ॥
मेरे हित रस रास उपायो । सबहिन तजि मोसों मन लायो ॥
मोसम सुन्दर चतुर उजागरि । और नहीं युवती कोउ नागरि ॥
ऐसे गुर्णति[2] मनहि मन माहीं । ठिठुकि[3] रहति गहि पिय की बांहीं ॥
बैठि जात कबहू मग माहीं । कहति कि मेरे पांय पिराहीं ॥
चलन कहत तुम जहां कन्हाई । मोपै पगन चल्यो नहिं जाई ॥
नृत्य करत मैं अति श्रम पायो । ताते पग नहिं जात उठायो ॥
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई । कंध लेहु पिय मोहिं चढाई ॥
ऐसे तिय जब वचन बखाने । गर्व जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहां गर्व तहँ रहत न कबहीं । अंतर्द्धान भये हरि तबहीं ॥

१ हृदय । २ विचार करते । ३ अडके खडी रहजाना ।

तुरतहि बिकल भई अति प्यारी । देखत दुरे चरित गिरिधारी ॥
दोहा–चकित भई तबनागरी, गये किते भजि श्याम ॥
मनहीं मन पछितात अति, भूली तनसुधि वाम ॥
सो०–मैं कीनों अभिमान, नारि बुद्धि ओछी सदा ॥
वे पिय परम सुजान, जान लई मो जीवकी ॥
भई विकल,समुझत निज करनी । सो वह दशा जाय नाहिं बरनी ॥
बिरह विथा बाढी अति तनमें । परम अकेली रोवति बनमें ॥
नैन सलिल भीजत तनु सारी । कॅासि कासि पिय कहति पुकारी ॥
हाहा नाथ अनाथ न कीजै । वेगि श्याम मोहि दरशन दीजै ॥
मैं तुम कृपा पाय गर वानी । ताते सकी सँभार न बानी ॥
सो अपराध क्षमा प्रभु कीजै । यह दूषण मन माहिं न लीजै ॥
वेगि कृपा करि मिलहु दयाला । अहो कमल दल नयन रसाला ॥
विरह बिकल यों वदत अकेली । रोवत सुन खग मृग द्रुम बेली ॥
तहँ खोजति आई सब नारी । दूरिहि ते देखी तिन प्यारी ॥
मुख शशि ज्योति रूपकी राशी । जनु घन ते बिजुली चपलासी ॥
द्रुम शाखा अविलंबिन ठाढी । रुदन करति विरहा दुख बाढी ॥
व्याकुल चकित चहूं दिशि जोवैं । कमल चरण नख भूमि करोवैं ॥
दोहा–जिततितते धाईं सबै, ब्रज सुंदरि अकुलाय ॥
व्याकुल अति लखिलाडिली, लीन्हींकंठ लगाय ॥
सो०–कहां गये गोपाल, बार बार बूझति सबै ॥
मुरछि परी तब बाल, मुखते बचन न आवई ॥
देखि दशा सब तिय अकुलानी । बैठारी अकम गहि पानी ॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं । काहे मुरछि परी महिमाहीं ॥
या वनमें कैसे तू आई । कहां गये तजि तोहिं कन्हाई ॥
निरखि वदन सबहिन दुखकीनो । मनहु अमी निधि अमृत दीनो ॥
कोऊ लगी सँवारन अलकैं । कोउ अंचरते पोंछति पलकैं ॥

१ छिपे २ आंसू ।३ कहां हो २ । ४ शीघ्रही । ५ वृक्ष । ६ सहारालिये

नयन नीर कछु सुधि नहिं देही। अतिव्याकुल बिन श्याम सनेही ॥
बूझति युवति कहां बनवारी। चलिहैं तहां तोहिं लै प्यारी ॥
सुनत नाम पियको अनुरागी। बिरह मोह निद्राते जागी ॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई। नयन उघारि मिलनको धाई ॥
जो देखे तौ सब ब्रजबामा। अतिही बिलखि उठी तब श्यामा ॥
कहत मोहिं त्यागी नँदनन्दन। तुमहूं नहीं मिले जगवन्दन ॥
मैं अपने जिय गर्ब भुलानी। नहिं उनकी महिमा कछु जानी ॥

दोहा–बोली पियसों मन्दमति, मैं अभिमान बढाय ॥
लीजै कंध चढाय मुहिं, मोपै चल्यो न जाय ॥

सो०–वे प्रभु[1] परमसुजान, बिहँसि कह्यो मोहिं चढनको ॥
ह्वैगये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहैं ॥

गये श्याम धौं कितबनमाहीं। मेरी दृष्टिपरे कहुँ नाहीं ॥
कहति बिकल नयननजलढारी। मोको त्याग गये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई। श्याम बिरह दुख सह्यो नजाई ॥
देखि दशा व्याकुल सबनारी। कहति निठुररी अति बनवारी ॥
त्रिया पुरुषसों मान जु करहीं। पुरुष नहीं ऐसी उरधरहीं ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे। नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिकासों ब्रजनारी। मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी ॥
चली आप खोजन सब बनमें। बिरह विकल कछु सुधिनाहितनमें ॥
टेरत जहँ तहँ घोष[3]कुमारी। अहो रासपति कुंजविहारी ॥
कहां दुरे पिय हमते भजिकै। जात प्राण तुमबिन तनु तजिकै ॥
क्षमाकरो प्रभु चूक हमारी। मिलहु कृपा करि बेग मुरारी ॥
तुमबिन हमको सुनहु कन्हाई। क्षण क्षण कल्पसमान बिहाई[4] ॥

दोहा–जरत सकल तुम दरश बिन, बिरहअग्नि तनुधाम ॥
मंद मधुर मुसकनिसुधा[5], बरषि बुझावो श्याम ॥

सो०–सकल विश्वसुख धाम, गावत तुमको जगत सब ॥

१ भगवान। २ मूर्ख। ३ गोपकुमारी। ४ बीतताहै। ५ अमृतरूपी मधुर हास्य।

तिन्हैं होत कत वाम, जो दासीविन मोलकी ॥

सदा हमारी रक्षा कीनी । गरल अनल जलते रखलीनी ॥
अबकत निठुर होत हो प्यारे । विरह जरावत गात हमारे ॥
कतहि फिरत बन चरण उघारे । गड़िहैं कुश कंटक अनियारे ॥
तुम पद बसत हमारे हियमें । ते कंटक शालतहैं जियमें ॥
अहो नाथ यह कह जिय धारी । सुखदेके दुख देत मुरारी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोलैं । अलबल बचन वदनतें बोलैं ॥
अति अकुलाय गई मन माहीं । जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं ॥
बूझति बन विटपनसों धाई । तुम कहुँ देखे कुँवर कन्हाई ॥
अहो कदम अहो अंब तमाला । हमहिं बताओ कित नँदलाला ॥
अहो जुही मालती निवारी । लखे कहूं इतजात विहारी ॥
हे चंपक हे श्रीफल कदली । हे दाड़िम हे जामुनवदली ॥
तुम देखे मनमोहन लाला । श्याम कमलदल नयन विशाला ॥
हे पलाश हम दासि तुम्हारी । कहो कहां सुखरास विहारी ॥

दोहा–हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निज नाम ॥
लेत नहीं यश हेपनसें, क्यों न कहत कित श्याम ॥

सो०–हे मन्दार उदार, हे पीपर हर पीर मम ॥
कहु कित नन्दकुमार, सुन्दर घन तन सांवरो ॥

हे चन्दन तनु जरत जुड़ावो । नन्दनँदन पिय हमहिं बतावो ॥
हे अवनी चितचोर हमारे । कितराखे नवनीत पियारे ॥
तुमते दूरि कहूं हरिनाहीं । क्यों न मिलाय देत हम पाहीं ॥
कहि धौं कुंद मुकुंद कहांहैं । हमको देहु बताय जहांहैं ॥
हेवट नटनागरहि बतावो । कहूं निकट नँदसुवन दिखाओ ॥
कहु धौं मृगी दया करि हमको । पूछति हम हाहाकरि तुमको ॥
देखियत डह डहे नयन तुम्हारे । तुमकहुँ मोहन लालनिहारे ॥
हे दुखदमन परम सुखकारी । कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी ॥

१ विष । २ अग्नि । ३ केला । ४ अनार । ५ कटहल । ६ शीतल करो ।

जहां होइँ बलबीर विहारी। कहति जाय किन विथा हमारी॥
हे तुलसी तुमतौ सब जानो। क्यों नहिं हरिसों प्रगट बखानो॥
तुमतौ सदा श्यामकी प्यारी। कहत नहीं यह दशा हमारी॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुनको। लेगये श्याम इनहुँके मनको॥
दोहा-इहि विधि वन घन ढूंढ़ि सब, ब्रजतिय विरहउदास॥
इत उतते फिर आवहीं, कुँवरि राधिका पास॥
सो०-मनहुँनीर विन मीन, अति व्याकुल तलफत परी॥
श्याम विरह अति दीन, कनक लतासी नागरी॥
व्याकुल कहति सकल व्रजबाला। अजहूं नहिं आये नँदलाला॥
कहा करें अब कितको जैये। श्याम विना कैसे सुख पैये॥
तब सब बहुरि यमुनतट आई। जहां रसिक पियरास रमाई॥
बैठीं सब राधा ढिग बामा। कहन लगीं हरिके गुण ग्रामा॥
सबके ढिग हरि सोहत कैसे। दृष्ट वन्द करि नटवर जैसे॥
युवति नहीं कोउ उनको देखें। हरि सबहीकी लीला पेखें॥
देखि देखि मन अति सुख पावैं। परमप्रीति रस रीति बढावैं॥
करत चरित्र विचित्र विहारी। सदा श्याम भक्तन सुखकारी॥
विरह अग्नि तनु गर्व जरावें। निर्मल प्रेम भक्ति उपजावें॥
गोपी जन सब हरिकी प्यारी। नेक नहीं कहुँ हरिते न्यारी॥
कहति श्याम व्रज प्रगटे जबते। देत सबनको सब सुख तबते॥
तिनमें हम सब उनकी दासी। क्यों हमतज हरिभये उदासी॥
दोहा-व्याधहुते करनी कठिन, हमते ठानी श्याम॥
वेणु वजाय बुलाय सब, वधतँमृगीज्यों वाम॥
सो०-कीजै कौन उपाय, मोहनमुख देखे विना॥
मरति मसोसा खाय, यह मन गीध्यो माधुरी॥
सदा हमारे मनको भावे। तिरछी चितवनचितहि चुरावे॥
जब अति बालक हुते मुरारी। बालविनोदे किये सुखकारी॥

१ समूह। २ जैसे नट नजरबंदका खेल करता है। ३ शिकारी। ४ हरिनी ५खेल

खेलतमें बहु असुर सँहारे। विघन अनेकन ब्रजके टारे॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनो। गिरिवरधर ब्रजको रख लीनो॥
हलधर सखन संग मुरली धरि। गोचारन बन जात जबहिं हरि॥
तब हमको बीतत दिन जैसे। जानतहै हमरो मन तैसे॥
कुंडल मुकुट केश घुंघरारे। गोरज रंजित दृग अनियारे॥
पीत बसन बनमाल विशाला। वेणु बजावत मधुर रसाला॥
सखन मध्य गौअनके पाछे। चंदन चित्र शुभगतनु आछे॥
सांझ समय आवत जब देखें। तब हम जन्म सफल करि लेखें॥
ऐसे कथत सकल ब्रजनारी। हरि गुण रूप कथा विस्तारी॥
समुझत कहत श्याम गुणरूपा। उपजी उर अति प्रीति अनूपा॥

दोहा–भूलि गई सुधि देहकी, भयो विरह दुख औन॥
केवल तनुमय ह्वै गई, नाहिं जानति हम कौन॥
सो०–भृंगी कीट समान, मगन ध्यान रस नागरी॥
बिसरो सकल सयान, भई आपुही कृष्णतनु॥

लागीं करन चरित सब हरिके। पूरण प्रेम भईं गिरिधरके॥
ये लीला उनहींको सोहैं। नेक नहीं जानति हम कोहैं॥
एक भई दधि चोर कन्हाई। एक पकरि गहि भुजलै आई॥
एक यशोमतिको वपु धरिके। बांधतिहै ऊखलसों हरिके॥
इक भई गाय एक गोपाला। बोलति वैसेइ बचनरसाला॥
कारी धोरी धूमरि कहिके। हटकत फिरत लकुटकर गहिके॥
कहति एक अंबर गिरिधारी। गाय गोप सब रहौ सुखारी॥
कहति एक मूंदो सब लोचन। मैं करिहौं दावानल मोचन॥
एक यमल अर्जुन तरु भंजे। एक बकासुर वदन विभंजे॥
एक वस्त्रको नाग बनाई। तापर निरत करत हरषाई॥
एक दहीको दान चुकावै। एक त्रिभंग ह्वै वेणु बजावै॥
मगन भई सब या रस माहीं। तनु अभिमान रह्यो कछु नाहीं॥

१ राक्षस। २ मारे। ३ पैने ४ भौंरी। ५ नाश। ६ फाड़ना।

दोहा-अंतर नेकु रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रज बाम ॥
तब अंतर नाहिं करि सके, भये निरंतर[1] श्याम ॥
सो०-प्रगट भये ततकाल, तिनहीं मधि नँद लाडिले ॥
सुन्दर नयन विशाल, गोपीजन वल्लभ सुखद ॥

प्रेम मगन अति आतुरताई । श्रीवृषभानु कुँवरि उर लाई ॥
देखि प्रगट दरशन गोपाला । मिलीं धाय आतुर ब्रजबाला ॥
जो धन राशि परी कहुँ पावै । लोभी जन लूटनको धावै ॥
लपटी एक धाय उर माहीं । एक मिलत ग्रीवा दे बाहीं ॥
कोऊ परी चरण पर आई । कोऊ अंग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि उर पंकज लावैं । तन विरहकी ताप नशावैं ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली । जनु शृंगार विटप छबि बेली ॥
कोऊ मुख छबि रही निहारी । कोऊ रही चरण उर धारी ॥
कोऊ दग भरि कहत भले हरि एक पीत पट छोर रही धरि ॥
हरिसों मिली लसैं[2] ति यो भामिन । जनु बन घन घेरयो बहु दामिन ॥
कहुँ अंजन कहुँ कुंकुम रेखा कहूँ पीककी लीक सुबेखा ॥
युवतिन मध्य लसैं हरि प्यारे । कृपा दृष्टि सब ओर निहारे ॥

दोहा-पुनि बैठे हरि हार्षे तहँ, युवति वृन्द चहुँ पास ॥
सबके सन्मुख राजहीं, सुन्दर छबि घनरास[3] ॥
सो०-बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्यालहम ॥
कतहि भई बेहाल, तुम प्राणन ते मोहिं प्रिय ॥

सकुचीं सुनि प्यारी यह बानी । मन जान्यो नहि प्रगट बखानी ॥
कहि २ कोमल बचन कन्हाई । सबको दुख डारयो बिसराई ॥
अति आनंद सबनको दीनो । सफल मनोरथ सबको कीनो ॥
जाके साध हुती जिय जैसी । पूरन करी श्याम मन तैसी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनकूले । बढ़यो अनंद सकल दुख भूले ॥
तब हरिसों सब नवलकिशोरी । पूछन लगीं विहँसि कर जोरी ॥
प्रेम प्रीति की रीति सुहाई । हमें कहो समुझाय कन्हाई ॥

१ बिना अंतर अर्थात् प्रगट । २ शोभा देती है । ३ बादलोंका समूह ।

इक जो प्रीति परस्पर कहिये । एक एक ही दिशि ते लहिये ॥
एक दुहुनको मानत नाहीं । ताको कहा कहत जग माहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति सोई । कहहु श्याम हमसों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं । ताते पूछति हैं तुम पाहीं ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला । भये प्रेम वश परम कृपाला ॥

दोहा—यद्पि जगत गुरु अजित प्रभु, ज्ञानरायव्रजचंद ॥
प्रेम विवस हारे तदपि, अपने मुख नँदनन्द ॥

सो०—कहत भये तव कान्ह, सुनहु प्राणवल्लभ प्रिया ॥
नहिं तुम सम कोउ आन, निपुण प्रेमके पंथमें ॥

तदपि तुम पूछति हो जैसे । प्रगट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई । स्वारथ हेतु करत सब कोई ॥
जैसे पशू पशूको जाने । आपुसमें अतिहित करमाने ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावे । जासों सब संसार बँधावे ॥
दूजी प्रीति एक दिशि जोई । करति धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसे मात पिता चित धरिके । रक्षत हैं सुतके हित करिके ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत । उत्तमगति ताते जन पावत ॥
जो यह दोउनको नहिं जाने । गुण दूषण कछु उर नहिं आने ॥
तिन्हैं सुनो मैं कहत बखानी । कै कृतज्ञ कै पुनि अज्ञानी ॥
उत्तम प्रीति, जानिये सोई । अनायास उपजत उर सोई ॥
दुहुँदिशि हठिकरि प्रीति बढ़ावे । नहिं निमित्ततामें कछु आवे ॥
अन्तर नेक परै नहिं कोई । प्रीति पुनीत जानिये सोई ॥

छं०—नहीं अंतर नेक जा मधि, प्रीति उत्तम सो कही ॥
करी मोसों तुम सबन सोइ, मैं ऋणी तुह्मरो सही ॥
करहुँ जो उपकार तुम प्रति, कोटि कोटिनजगभरी ॥
कबहुँ होहुन उऋण तुमते, हे प्रिया ब्रज सुंदरी ॥

---

१ सुन्दर । २ मार्ग । ३ नीच । ४ अकस्मात । ५ मतलब । ६ बीच ।

करै ऐसो कौन जैसी, तुमन जो करनी करी ॥
लोक वेद मर्याद ममहित, तोरितृण सम परिहँरी ॥
करहु मनते दूर अब यह, दोष मैं तुमते कियो ॥
प्रिया अंतर परम सुखमें, विरह दुख तुमको दियो ॥
दोहा–ऐसे प्रेमाधीनह्वै, कहि कहि वचन रसाल ॥
दूरकरी युवतीनके, मनते गांस गुपाल ॥
सो०–बाढ्यो परमानंद, व्रज बासिन प्रभु वचन सुनि ॥
परम मुदित तिय वृंद, प्यारी प्रिय नँदनन्दकी ॥

अथ महामंगल रासलीला ॥

सुनि पियके मुखकी रसबानी। गोपी जन सब मन हरषानी ॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाय। मनते सब सन्देह मिटाये ॥
देखि सबनकी प्रीति कन्हाई। बहुरिरासरस रुचि उपजाई ॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो। वही भाव सबके मन भायो ॥
यह जान्यो सबहिन तबहीते। करतरासरस पिय सबहीते ॥
अन्तर्धान चरित सब भूली। वेसेइ आनँदके रस फूली ॥
बहुरि रास मंडल विधि जोरी। बिच बिच श्याम बीच बिचगोरी ॥
वैसेइमधि नायक हरि राधा। वहै परस्पर प्रीति अगाधा ॥
वैसेइ मुरली श्याम बजाई। वैसेइ थकित भयो उडुँराई ॥
वैसेइ सुर बिमान नभ सोहैं। वैसेइ सुर मुनि गँधरब मोहैं ॥
वैसेइ खग मृग नव द्रुम वेली। वैसेइ यमुना पुलिनँ सुहेली ॥
वैसेइ पवन त्रिविध सुखदाई। वही रास रसरूप निकाई ॥
छं०–करै वैसोइ रासरसपुनि, युवति अति छवि छाजहीं ॥
गार अंग किशोर वेष, सुदेखमुख शशि राजहीं ॥
जोरि पंकज पाणि बाहु, मृणाल मंडल साजहीं ॥
मध्य सबके श्याम श्यामा, रूपराशि विराजहीं ॥

१ त्यागकी। २ खटक। ३ चन्द्रमा। ४ किनारा।

मुकुट कुंडल बसन भूषण, बरण अंगन राजहीं ॥
अंग अंग अनंगरतिलखि, कोटि कोटिन लाजहीं ॥
चरणनूपुराकिंकिणी कटि, वलयनूपुर वाजहीं ॥
बीन ताल मृदंग चंग, उपंग सुर सुख साजहीं ॥

दोहा—अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनन्द ॥
नवल नागरी ब्रजबधू, नव नागर नंदनन्द ॥

सो०—रहे निरखि सुर भूल, सहित सुन्दरी मग्न सुख ॥
पुनि पुनि वरषत फूल, धन्य२ब्रजकहि मुखन ॥

सोहति हरिमुख मुरली कैसे । करि दिग्विजय[1] नृपतिवर जैसे ॥
बैठि पाणि सिंहासन गाजैं । अधर छत्र शिर ऊपर राजैं ॥
चमर चहूं दिशि चिकुर सुहाये । त्रेत पाणि कुंडल छबि छाये ॥
बलि बलि बरजतहैं सब काहू । कहत निकट कोऊ मति जाहू ॥
दूरहिते सब करत जुहारैं । सन्मुख आदर सहित निहारैं ॥
मधुकर पिक[2] बंदी गुण गावैं । मागध मदन प्रशंसि सुनावैं ॥
मान महीपति बलनाथि मान्यो । युवती यूथ जीत गहि आन्यो ॥
बिनाहि पनच[3] बिनही कोदंडों[4] । सुर शर भेद कियो ब्रह्मंडा ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी । बोलत हैं सब जय जय वानी ॥
नारि पुरुष जड जंगम जेते । किये सकल अपने वश तेते ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी। विधि कृत मेटि आपनी ठानी ॥
निज निज ठकुरायनकी रेखा । बांचि सकल वश भये विशेखा ॥

दोहा—रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास विपिन शुभधाम ॥
तहँ अधिकारी साँवरो, मोहन सुन्दरश्याम ॥

सो०—सवहिनको सुख देत, दान मान रस प्रेमको ॥
बढ्यो माधुरी हेत, परमानंदित लोग सव ॥

गावत गोपी सँग सब जुरली । बाजत मधुर मधुर सुर मुरली ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावैं । जे सब रूप अनूपम गावैं ॥

---

१ दिशाओंको जीतकर । २ कोयल । ३ प्रत्यंचा । ४ धनुस । ५ ब्रह्म ...

अति प्रवीन पियको मन मोहैं। नृत्य करति सुन्दर सब सोहैं॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा। रीझत निरखि सकल ब्रज बामा॥
लै गति चलत परस्पर दोऊ। सो छबि बरणि सके कवि कोऊ॥
होडा होडी रंग बढ़ावैं। तडपलेत शोभा अति पावैं॥
उरझी कुंडल बेसर सों लट। पीत वसनवन माल रही सट॥
उरझे मन मन वैनन वैना। लटकीली छवि उरझे नैना॥
नाचत युगल चपल गिरिधारी। प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी॥
उरझी गोपी जन लखि शोभा। नाहि निरवार सकत मन लोभा॥
अति रस रंग बढ़्यो सुख भारी। थेइ थेइ बदति मुदित ब्रज नारी॥
मगन सकल रस सिंधु निहारैं। रीझ रीझ तन मन धन वारैं॥

छं०-मगन सब रसरास सुखनिधि, हर्षि तन मनवारहीं॥
हिय हुलास न जायकहि छवि, राजयुगल निहारहीं॥
कीन्होजु तप जिहिं हेतु बारह, मास सो पति पाइयो॥
तब मंत्रकीनो व्याहको, सब सखिन मंगल गाइयो॥
ललित कुंज वितान सुभग, लतान मंडप द्युतिबनी॥
बहु रंग बदनवार चहुं दिशि, चारु सुमननछविघनी॥
अति विचित्र पवित्र यमुना पुलिन शुभ वेदीरची॥
वर्णन सकै छवि कौन बिधि, तिहुं लोक शोभाकीसची॥

दोहा-तहँ नँदनन्दन लाडिलो, श्रीवृषभानु कुमारि॥
दूलह दुलहिनि राजहीं, शोभा अमित अपारि॥

सो०-भरीं परम उत्साह, ललतादिक ब्रजसुन्दरी॥
प्रीति रीतिकी चाह, लागीं करन विवाह विधि॥

मोर मुकुट रचि मौर बनायो। सोशिर धर गिरिवर धर आयो॥
तनु घनश्याम पीत पट सोहै। घन दामिनि ताके ढिग मोहै॥

---

१ चतुर। २ न्यौछावरकरैं। ३ चदोवा।

वनमाला गरमाँहि बिराजे । निरखत इंद्र धनुष द्युतिलाजे ॥
ललित अंग तनु भूषण जाला । कुंडल झलकन नयन विशाला ॥
सकल कला गुण रूप निधाना । त्रिभुवन सुन्दर परमसुजाना ॥
जाके मन्मथ सैन बराती । फूले विटप सुमन बहु भांती ॥
करिकोलाहल पिक शुक बोलैं । मंजुमोरँ निर्तत सँग डोलैं ॥
नभसुरपति दुंदुभी बजावैं । नाचत किन्नर गँधरब गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये । ब्रजतिय करति सकल मन भाये ॥
कुँवर लाडिली शुभग सँवारी । गोरे अंग चूनरी सारी ॥
नखशिख मणि भूषण छबिछाजैं । मुख शोभा लखि उडुपति लाजैं ॥
प्रीतिरीति जहँ हित करि मानी। सोशुभ घरी विधाता बानी ॥
छं०—शुभ घरी सो बानी विधाता, हेतु जिहि दृढ व्रतलियो॥
शरद् निशि पून्योविमल शशि, निरखिअति प्रफुलितहियो ॥
अधर मधु मधुपर्क कहिकै, पाणिग्रहणसु विधिकरी ॥
पढत नभ विधि वेद वाणी, सुरन जय धुनि उच्चरी ॥
तब अलिनहँसिकै गांठि जोरी, प्रेम गांठि हिये परी ॥
सहस सोलह संग सखियां, बिरति भांवरि रस भरी ॥
बढ्यो अति आनंद उरमांध, साद सब पूरण भई ॥
मदन मोहनलाल दूलह, राधिका दुलहिनि नई ॥
दोहा—निरखि देव बरषैं सुमन, हरष न हिये समात ॥
वृन्दावन रस रास सुख, लखि सुर वधू सिहात ॥
सो०—हमसों यह सुख दूरि, कहत परस्पर सुरन गण ॥
क्यों उडि लागै धूरि, धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज ॥
सोहति युवति वृन्द मधि जोरी । नवनागर वर नवल किशोरी ॥
शोभा अमित पारको पावै । निरखत बनै कहत नहिं आवै ॥

१ कामदेव । २ हलागुल्ला । ३ तोता । ४ सुन्दर । ५ चन्द्रमा ।

दूलह श्याम दुलहनी राधा। रूपसिंधु दोउ परम अगाधा ॥
रागभीनि रँगभीने दोऊ। अति आनंद उमँगि सब कोऊ ॥
प्रेमरंग भीनी ब्रजनारी। निरखि युगल छबिहोहिं सुखारी ॥
भरी प्रीतिरस गारी गावैं। लखि पिय २ प्यारी सुख पावैं ॥
हाव विलास मोह उपजावैं। बार बार दंपति गुणगावैं ॥
विविध भांति दुंदुभि नभ बाजैं। निरत कला रंभादिक साजैं ॥
हंस मोर पिक चातक बोलैं। बनमृग निकट संग सब डोलैं ॥
वारति तिय भूषण हरषाई। बनके मृगन देति पहराई ॥
तब इक सखी भई नँदराई। इक वृषभानु रूप धरि आई ॥
अतिहित मिले महर दोउ धाई। तब विनती वृषभानु सुनाई ॥

छं०—तब जोरिकर वृषभानु विनयो, सुनहु श्रीनँदरायजू ॥
हम भये सकल सनाथ अब, सब कृपा तुम्हरी पायजू ॥
अतिबडे पुण्यते मिले तुमसे, सगे सुखके सिंधुजू ॥
शिरमोर गोकुल चंद, आनँद कंद सब जग बंदजू ॥
तुमगेह मंजनहेत कन्या, हम न तुम समयोगजू ॥
निज दासकरि सबजानिये, वृषभानु पुरके लोगजू ॥
अष्टसिधि नवनिद्धि संपति, सकल सुखके खानजू ॥
ऐसे विनयकरि नंदके, चरणन गहे वृषभानुजू ॥
तबनंद अति आनंद भरि, बोले सहित अनुरागजू ॥
सुनहु श्रीवृषभानुजू, तुम धन्य अति बडभागजू ॥
तुमसे समुद्र न सो सुनहु, संबंध मांगि न पाइये ॥
परम निर्मल यश तुम्हारो, लोक लोकन गाइये ॥
अति नेह कान्हरसों तुम्हारो, प्रीति पहिली यह भई ॥
दई कन्या करि कृपा, गुण रूप सुख शोभामई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम, बडे सब भांतिन भये ॥

वृषभानु नंद अनंद प्रमुदित, परस्पर चरणन नये ॥
दो०-मन मन हरषित नागरी, नागर नवलकिशोर ॥
लखिरसरीति सखीनकी, प्रेमप्रमोद न थोर ॥
सो०-विलसत अति आनंद, ब्रजविलास ब्रज नागरी ॥
प्रीति विवस ब्रजचंद, को कहिसकै सुहाग सुख ॥
करत मनोरथ सब मन भाये । त्रिभुवन पति दूलह करि पाये ॥
व्याहरीति सब करि ब्रजनारी । गावति यशुमति को रस गारी ॥
तब कंकण छोरन विधि कीनी । रचि पचि गांठि चतुर तिय दीनी ॥
कहत श्याम सों छोरौ कंकन । परमानंद मुदित गोपीजन ॥
बड़े चतुर तौ खोलहु गिरिधर । यह न होय धरिवो गिरिको कर ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरौ । दुलहनि के परि पांय निहोरौ ॥
बड़े कहावत हौ ब्रजनाथा । काहे कँपन लगे दोउ हाथा ॥
छोरहु वेगि कि सुनहु कन्हाई । पठवहु यशुमति माय बुलाई ॥
दोउ परस्पर कंकण छोरैं । प्रेम उमँग उर हर्ष न थोरैं ॥
पचिहारे कंकण नहिं छूटत । निरखि हर्ष ब्रज तिय सुख लूटत ॥
कहत सहाय करो जिन कोऊ । कंकण छोरहिं आपहि दोऊ ॥
दुलहनि दूलह कंकण खोलैं । कै वृषभानु बबाको बोलैं ॥
दो०-कमल कमल परशो जनो, पाणि लाडिली लाल ॥
लखि कविकुल सांचेलगत, रोम कटीली नाल ॥
सो०-दूलह नंदकुमार, दुलहन श्रीराधा कुँवरि ॥
सन्तन प्राण अधार, अविचल यह जोरी सदा ॥
यह रस रास चरित हरि कीनो । ब्रज युवतिन वांछित फल दीनो ॥
ब्रजतिय सुख हित कुंजविहारी । करी मास निशिपट उजियारी ॥
सोइ नहीं युवतिन मन राखो । श्रीभागवत कह्यो शुक भाखो ॥
वेद उपनिषद साख बतावैं । ब्रह्मा शंभु सहस मुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषिय अनंता । कहत सुनत गावत सब संता ॥

१ इच्छा । २ अन गिनती ,

सोरह सहस गोप सुकुमारी। तिनके संग लाल गिरिधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा। पूरण करी सबन की साधा ॥
हाव भाव रस रास बिलासा। नैन सैन मुख बचन प्रकासा ॥
भुज भरिमिलन अधर रस चाखन। नृत्य गान रस रुचि संभाषन[१] ॥
क्षण क्षण बढति अधिक रस रीती। इह विधि रैनि करत सुख बीती ॥
भयो समय ब्रह्मी[२] शुभ काला। रास रमत भईं श्रम सब बाला ॥
तब श्री यमुना गे नँदलाला। सोहत संग सकल ब्रजबाला ॥

छं०–सोहत सकलब्रज बालसँग, नँदलाल तब यमुनागये ॥
शरदनिशिरसरास करि, पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महा मद मत्तगंज[३], वरयूथकँरिणिन[४]सँगलिये ॥
फिरत वनसरसरित[५]क्रीडत, निदरिअतिनिर्मलहिये ॥
जिमिनंदसुतजगवंद आनंद, कंदरसनिधिश्यामये ॥
मेटि श्रुतिमर्याद ब्रज तिय, प्रेम सब आनँद भये ॥
रमत वृन्दावन यमुनरस, केलि अति सुख मानई ॥
दास ब्रजवासी प्रभू गुण, नागनर सुर गानई ॥

दोहा–धनि वृन्दावन धन्य सुख, धन्यश्याम धनि रास ॥
धनि धनि मोहन गोपिका, नितनव करत विलास ॥

सो०–नाहिं सुरपुरसमतूल, वृन्दावन सुख एक पल ॥
कहि कहि बरषैं फूल, सुरगण मन आनँद भरे

यमुना जल क्रीडत नँदलाला। सोलह सहस संग ब्रजबाला ॥
मधि राजत दोऊ बहँ जोरी। दंपति गौर सांवरी गोरी ॥
कोऊ कटिलौं जल सुख साजे। कोउ उर ग्रीवांलौं छबि छाजे ॥
ताकी उपमा कवि किमि कहहीं। अति आदर छबि पार न लहहीं ॥
छिरकत पाणि परस्पर सोहैं। नंद नँदन पियको मन मोहैं ॥

१ बातचीतकरना। २ ब्रह्ममूहूर्त। ३ मतवाला। ४ हथिनी। ५ सरोवर।

सलिल शिथिल सोहत नँदनन्दन। सुन्दर भाल कुमकुमो चन्दन ॥
पँचरँग भयो यमुनजल जाते । छबि मय लहरि उठतिहै ताते ॥
रूप छटासी तिय गण जामैं । करत विहार लिये घनश्यामैं ॥
एक एक अँग भरि भरि लेहीं । हास विलास करत छबि देहीं ॥
एकनले अथाह जल डारैं । मुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥
इक भाजत इक पाछे धावैं । एक श्याम ढिग पकरिले आवैं ॥
कंठ लगाय लेत पियताही । सो सुख कविसो कह्यो न जाई ॥

दोहा–करत केलियमुना सलिल, ब्रज ललना सँगश्याम ॥
निशि श्रम मिटि आलस गयो, भये सुखी सुखधाम ॥

सो०–अलख लखी नाहिं जाय, अविगतिकी गतिको कहै ॥
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रजतियनको ॥

जल बिहार विहरत सुख पाई । रास रंग मनते नाहिं जाई ॥
युवती मंडल करि कर जोरैं । श्यामा श्याम मध्य करि खोरैं ॥
वही भाव मनमें उपजावे । निरखि निरखि मोहन सुख पावें ॥
विहरति नारि हँसत नँदनन्दन । अंकम भरि भरि लेत अनन्दन ॥
प्यारी श्याम अंजली डारे । सा छबि तिय सुख पाय निहारे ॥
मानहु कमल और इन्द्रियबर । छिरकतहै मकरंद परस्पर ॥
जल क्रीडा सुख करत कन्हाई । वर्षत सुमन देव झरि लाई ॥
लीला सागर परम अपारा । कवि किहिविधि कर पावे पारा ॥
करिजल संग केलि ब्रजनारी । आय जलतट निकसि बिहारी ॥
भीजेपट लपटे तनु माहीं । पट अंतर लट चीरचुचाहीं ॥
ठाढे यमुनातीर कन्हाई । पुलिन पवित्र परम छबि छाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा । अरसपरसविहँसत मन लोभा ॥

दोहा–तब इकतरुको विहँसिके, आयसुदीनो श्याम ॥
नाना भूषण बसन वर, तिन वर्षे अभिराम ॥

सो०–निज निज रुचि अनुहार, लैलै ब्रजकी सुन्दरिन ॥

१, रोली । २ वस्त्र । ३ सुन्दर । ४ अनुसार ।

कीनो नवल शृँगार, उर आनंद नाहिं जाय कहि ॥
करि शृँगार तनु नवल किशोरी । हरि सन्मुख ठाढीं सब गोरी ॥
निरखि श्याम छबि मन ललचाहीं । विदा करत घरको सकुचाहीं ॥
हँसि बोले तब मदनगुपाला । जाहु सदन अब सब व्रजबाला ॥
अति आदर दैदै सुखदाई । पाणि परस सब सदन पठाई ॥
निशि सुखटरत न काहू मनते । चलीं सदन सब वृन्दावनते ॥
अति आनंद रह्यो उर भरिकै । भांवरिदे आईं सँग हरिकै ॥
मनके सफल मनोरथ कीने । नंदसुवन हित पति करि लीने ॥
गईं सदन सब हर्ष बढ़ाये । घर घर लोगन सोवत पाये ॥
जगस्वामी हरि यह मति ठानी । व्रज युवतिन सबहिन गर मानी॥
प्रातकाल सब व्रजजन जागे । निज निज कारजमें सब लागे ॥
नँद धामगये नँदके लाला । काहू नांहि जान्यो यह ख्याला॥
यहरहस्य लीला गिरि नारी । संत जनन मन आनँद कारी ॥
छं०–यह रहस लीला श्यामकी, सब संत सुर मुनि भावनी॥
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मति, सार परम सुहावनी ॥
यह मंत्र यंत्र अनंत व्रत फल, ध्यान दंपतिको[1] रहै ॥
भाव करि नित भावमन विनु, भाव यह सुखही लहै ॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि, भावगत यह रस गाइये ॥
निगम[2] नेति अगाध श्री, गुरु कृपाविन नहिं पाइये ॥
सरुचि[3] कहि जे सुने सीखें, प्रीतिकरि जे गावहीं ॥
ऋद्धि सिधि सब कह गनाऊं, भक्ति अनुपम पावहीं ॥
उरवढै रसनेम दृढपद, प्रेम राधा श्यामको
अहहि अचल निवास वृन्दाविपिन, घननिजधामको ॥
यहै आशा राखिकै उर, दास व्रजवासी कही ॥
कृपा कीजै श्याम श्यामा, शरण पदपंकज गही ॥

१ श्रीकृष्णराधिका । २ वेद । ३ हितपूर्वक ।

दो०—चरित ललित गोपालके, रास विलास अनेक ॥
काप वरणे जात सब, इतनो कहां विवेक ॥
सो०—निकसीतरे अथाय, ज्यों पिपीलिका सिंधुत ॥
कह्यो यथामति गाय, तिमि ब्रजवासी दासहू ॥

अथ मानचरित्र लीला ॥

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी । करत नित्य नव चरित बिहारी ॥
निर्गुण निर्विकार अविनासी । भक्त मनोरथ सदा विलासी ॥
नित वृन्दावन धाम सुहायो । नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तन हेतु विविध तनुधारें । भक्तन हित लीला विस्तारें ॥
सदा भक्त वश कृष्ण कृपाला । दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शरदरैनि रसरास उपायो । युवतिन प्रति निजरूप बनायो ॥
सफल मनोरथ सबको कीनों । पतिहित करि सबको सुखदीनो ॥
तब कृपालु उरमें यह आनी । सदा भक्त वांछित फलदानी ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों । सो मैं अन्तर करि हरि लीनों ॥
रही साध इनके मन माहीं । हमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते ब्रज भक्त परम हित मेरी । करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मान चरित्र उपाऊं । पाँयन परि परि सबन मनाऊं ॥
दो०—करिविभेदरसरीतिमें, देहुं मान उपजाय ॥
इनके मुख मंडित वचन, कहवाऊं सुखदाय ॥
सो०—सकल गुणनके धाम, परम विचक्षणरसिकमणि ॥
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रस वश सदा ॥
श्रीराधा मनमोहन प्यारी । नव नागरि नवरूप उजारी ॥
रास नृत्य रिझये गोपाला । तारस मगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार पियारी । औचक तहां गये गिरिधारी ॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो । हर्षि श्याम अंकम भरि लीनों ॥
रहे थकित छवि अंग निहारी । जात कमल मुख पर बलिहारी ॥

१ ज्ञान । २ चींटी । ३ विकाररहित । चतुर ।

इहि अंतर पियके उर माहीं । देखी तिय निज तनु परछाहीं ॥
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी । अति सनेह भ्रम सुरत बिसारी ॥
और नारि पियके उर जानी । आपुन विषे प्रीति घटिमानी ॥
राखत सदा हियेमें याही । ल्याये मोहिं दिखावन ताही ॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई । कहत वचन पियसों अनखाई ॥
अब जानी पिय बात तुह्मारी । ऊपरहीकी प्रीति हमारी ॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत । यह प्यारी उरमाहिं बसावत ॥

दो०—धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे होय ॥
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय ॥

सो०—भलीकरी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिके ॥
यह प्यारी सुख दानि, उरते जनि न्यारी करौ ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी । कछु रिसकर जिय भौंहसिकोरी ॥
चकित श्याम लखि सन्मुख बानी । कहत कहा नागरी सयानी ॥
सांच कहति कैधौं करि हांसी । कत रिस करि तियहोत उदासी ॥
समझी नहीं कहा जिय आई । झझकि उठी कै अति भ्रमपाई ॥
हँसि भुजे गहन लगे मन मोहन । बैठत क्यों नहिं मम प्रिय गोहन॥
मोहिं लखो जनि दूर रहोजू । बसत हिये किन ताहि गहोजू ॥
तुह्मीं चतुर अरु सबै सयानी । हम दासी अरु ये पटरानी ॥
उरमें मनभावती बसाई । हँसी करनको हमैं बताई ॥
लखि लखि प्रिया बदन सुखकारी। हँसत मनहिं मन कुंजविहारी ॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी । तोबिन उरको बसत किशोरी ॥
तू मम श्रवण नयन मुखबानी । जीवन प्राण अधारै सयानी ॥
वृथा क्रोधकर जियमें आनै । मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै ॥

दो०—सुनौ श्याम हिरदे बसत, सो छिपिये न छिपाय ॥
ज्यों शोशीके माहिं जल, परगट परत लखाय ॥

सो०—बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत ॥

१ हाथ । २ हमारे साथ । ३ सहारा ।

जैहैं कहुँ अनखाय, उरते तब पछितायहै ॥
जो वह कहै करौ तुम सोऊ । वह नागरि तुम नागर दोऊ ॥
मतहिं खिझावो मोहि कन्हाई । भली करी लै सौत दिखाई ॥
जाहु चले अब मैं सुखपायो । ऐसे कहि मन मान बढायो ॥
रिस करि मौन रही गहि प्यारी । देत मनहिं मन वाको गारी ॥
शोचत श्याम देखि मन माहीं । बोल सकत नहि पियहि डराहीं ॥
कहत वृथा जिय मान न कीजै । नहिं अपराध जान जियलीजै ॥
क्यों रिस करति पिया मन माहीं । मेरे उर तेरी परछाहीं ॥
यह सुनि कुँवरि राधिका रानी । बोली रिसकरि पियसों बानी ॥
कहा बनावत बातैं हमसों । जाहु चले बोलों नहिं तुमसों ॥
यह कहि ओढगई है प्यारी । भये बिरहवश तब गिरिधारी ॥
अति व्याकुल तन मन अकुलाहीं । वार वार शोचत मन माहीं ॥
गयो सरोज बदन कुम्हलाई । तहां एक सखि दूती आई ॥
दो०–सो हरिसों बूझति भई, कहहु न मोहि सुनाय ॥
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय ॥
सो०–क्यों तनु रहे भुलाय, अति व्याकुल देखत तुम्हैं ॥
रह्यो बदन कुम्हिलाय, ऐसो शोच कहा परचो ॥
बोले श्याम सखी हित जानी । विरह विकल कहिजात न बानी ॥
कियो मान वृषभानु किशोरी । मैं कछु नाहिं अपराध कियोरी ॥
लखि मेरे उर निज परछाहीं । रूसरही करिकोप वृथाहीं ॥
मैं कहिकै बहुभांति मनाई । नहिं प्रतीति राधा उर आई ॥
बिन समुझे इतनो हठ कीनो । तबते मोह मदन दुखदीनो ।
ऐसे कहि शोचत बलवीरा । लेत नयन भरि सांस अधीरा ॥
परम चतुर दूतिका सयानी । विरह विकलता पिय जियजानी ॥
कह्यो धीर धरिये बनवारी । चलिये बनको कुंजविहारी ॥
मैं प्यारीलै तुमहिं मिलाऊं । आज कहातौ तुमसों पाऊं ॥
गई सदनते ले बन धामहिं । तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहि ॥

मैं ले आवति राधाप्यारी। कितक बात यह सुनहु बिहारी ॥
मेरे आगेकी वह बारी। कहा मान करिहै सुकुमारी ॥
दो०–ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम ॥
श्रीवृषभानु लली जहां, चपळ चली व्रजधाम ॥
सो०–मन मन रचत सयान, नई बनाऊं बातइक ॥
अबहिं छुडाऊं मान, मोसों धौं कहिहै कहा ॥
हरिसों रूस मान करि वैसी। अबही कहा भई यह ऐसी ॥
करत बिचार यहै मन माहीं। गई सखी राधाके पाहीं ॥
कुंवरि किशोरी परम सयानी। मुख देखतहि दूतिका जानी ॥
सहजहि बोल ताहि ढिगलीनी। सहजहि कह्यो मया कितकीनी ॥
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो। तुमको बन घनश्याम बुलायो ॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई। काहेको मुहिं श्याम बुलाई ॥
तू आई याही के लीन्हें। मैं अब श्याम भले करिचीन्हें ॥
कहा कहौं तोकोरी आली। तुहूं भली अरु वे बनमाली ॥
उनकी महिमा कहत न आवै। अब इक नई नारि मनभावै ॥
ताको ले उरमाहिं बसाई। तोहिं उहांते दौरि पठाई ॥
आज कहा कछु कलह भयोरी। कैधौं कछु तैं मान ठयोरी ॥
तबहिं आज अनमनी बतानी। यह तौ कछु मैं बात न जानी ॥
दो०–मोसों नहिं कछु हरिकह्यो, सहज पठाई सैन ॥
कहुँ धौं परी पुकार वहँ, तुम चलि देखहु नैन ॥
सो०–कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब ॥
तैं धौं लियो छुडाय, कहिकाके काके गथहि ॥
काहेको गथ लियो परायो। अपनो नाम कुनाम धरायो ॥
डारि देहु जाको जो लीनो। तेरे बहुत दईको दीनो ॥
तबहीं ते उन शोर लगायो। ता कारण हरि तोहि बुलायो ॥
हरि तेरी दिशित झगरेरी। तू कत उनसों रोष करैरी ॥

१ सखी। २ जल्दासे। ३ पास। ४ कृपा। ५ दूर करी। ६ द्रव्यरूपी मन।

यह कछु नोखी बात सुनाई । मैं काको धनलियो छिपाई ॥
काहेको हरि झगरत माई । इती मया मापै कहँ आई ॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने । नाहि उनके गुण परत बखाने ॥
बैठि किधौं तू घर जा अपने । मैं उनपै अब जाउँ न सपने ॥
हौं कह तोहि मनावन आई । मान करो तुम और सवाई ॥
परधन लै सबको ब्रज बैठी । कहा करत बातें यों ऐंठी ॥
देति जवाब सबनि किन जाई । मोपै कह इतनो सतेराई ॥
तबते सबसों लरत कन्हाई । जब मैं तोहिं बुलावन आई ॥

दो०—बार बार कह कहतरी, तू मोको डरपाय ॥
मैंनहिं काहूको लियो, झूठहि दोष लगाय ॥

सो०—लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार अब ॥
कहै न तिनको नाम, सांचतबहिं मैं मानिहौं ॥

तब बदिहौं ऐसे कहि हेरी । श्याम निकट बैठे जब बैरी ॥
कहँ लगि सबके नाम बताऊं । एक एक करि तोहिं गिनाऊं ॥
नभ जल धरणि बनहु में आये । कहँ लगि मोते जात सुनाये ॥
जो नाहि तिनकी गथहि चुराई । तौ तू कत बन चलत डराई ॥
परी बान तोको यह कैसी । भली कहत अलिलगति अनैसी ॥
श्याम विना क्यों न्याव चुकेरी । तिनही सों तू रोष करेरी ॥
कोटि करो एकै पुनि ह्वैहो । वे अरु तुम कछु जियके द्वैहो ॥
मानकही चलु श्याम बुलाई । श्रवण लागि हरि मोहिं पठाई ॥
जिनकी यह सब सौंज तुम्हारे । ते-जन हरि पहँ जाय पुकारे ॥
इंदु[२] कहत मोवदन विगोयो । अलिकुल[३] अलकनको दुखरोयो ॥
हरिण मीन छवि दृगन दुराई । खंजन हूं तहँ देत दुहाई ॥
शुककी छविनासौं हरिलीनी । बैनन करी कोकिला हीनी ॥

दो०—अधर बिंब दाडिमदशन, लूटे कंठ कपोत[६] ॥
दई तरणि छवि छोनिकै, तरल तरोना जोत ॥

---

१ कुढ़ई । २ चन्द्रमा । ३ भ्रमरकुल । ४ छिपाई । ५ नासिका । ६ कबूतर ।

सो०—चक्रवाक कुच दोय, कटि हरि कदली जंघलिय ॥
गज मराल गनि जोय, चरण पाणि पंकज हरे ॥
ये सब हरिसों करत लराई । तैं जु करी इनसों अधिकाई ॥
अति अनीत लखि कुँवर कन्हाई। पठई मोहिं लेन तोंह आई ॥
प्रतिउत्तर अपनो करु चलिकै । इहां रही कह बैठ मचलिकै ॥
सुनि पियके गुण तिय हँसि दीनें। कछु सकुची मन मान जु लीन ॥
चतुर सखी जियकी सब जानी । तबहीं हरषि कही यह बानी ॥
बानि कहा अब तोहिं परीरी । जब तब लखि निज छांह डरीरी ॥
तादिन दर्पण लखि भ्रमकीनो । सो दृग मूंदि मेटि हरि दीनो ॥
आज देखि पिय निज उरछाहीं । कियो इतोहठ कुँवरि वृथाहीं ॥
यह सुनि समुझ मनहिं सकुचाई। सहचरि कंठ बिहँसि लपटाई ॥
रसकरि तुरत मान विसरायो । सुनि वनधाम श्याम सुख पायो ॥
हँसिकै कह्यो सखी सों जारी । तू हरि सों कहि आवत प्यारी ॥
मैं अँग भूषण वसन संवारी । आवति वनहि जहां वनवारी ॥
दो०—यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहां वनश्याम ॥
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विव्हल कीन्हों काम ॥
सो०—बैठत उठत अधोर, क्योंहूं सुख पावत नहीं ॥
बढति विरहकी पीर, श्रीराधा राधा रटत ॥
राधाविकल विरह गिरिधारी । कहूं माल कहुँ मुरली डारी ॥
कहूँ मुकुट कहुँ पीत पिछोरी । नाहि कछु सुरति भई मति भोरी ॥
कबहुं मूंदि दृग ध्यान लगावें । कबहूं प्यारीके गुण गावें ॥
कबहूं लोटत कुंजन माहीं । कबहूं बैठि द्रुमनकी छाहीं ॥
ठाढे टेकि कबहुँ द्रुम डारी । तकतपियापथ पलक बिसारी ॥
देखि दशा दूतिका सयानी । कही श्याम सों आतुर बानी ॥
काहिको कदरात विहारी । मैं ल्याई वृषभानु दुलारी ॥
विरह विषाद दूरि कर डारो । नेकधीर अपने मन धारो ॥

१ सिंह । २ केला । ३ हंस । ४ पछिताई । ५ पीताम्बर । ६ पकड़कर ।

सुनि प्यारीको नाम कन्हाई । मिले दूतिका सों उठि धाई ॥
कहांप्रिया कहि अति अकुलाये। नयन सरोज नीर भरि आये ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी । आवत प्रिया अबहिं बनवारी ॥
मैंजु प्रतिज्ञा तुमते कीनी । विधना आज राखि सो लीनी ॥

दो०-अब अपने मन हर्षि करि, दूरि करो सन्देहु ॥
आवतिहै वृषभानुजा, भुजभरि अंकम लेहु ॥

सो०-मुख शोभाको खान, नहीं कुँवरि वृषभानुसी ॥
तुम सम धन्य न आन, बडभागिन तुम वश भये ॥

रसिक पुरंदर प्रभु सुखदानी । सुनत सिहात दूतिका बानी ॥
पुलकत अंग धीर नाहिं धारें । पुनि पुनि प्यारी पंथ निहारें ॥
निज करि सुमन सुगंध लगावे । कुंज भवन रुचिसेज बनावे ॥
अति कोमल तनु जान पियारी । सेज कली चुनि करत नियारी ॥
जो द्रुम लता लटकि तनु लागें । तेऊपर धरि मन अनुरागें ॥
प्रेम प्रीति रस वश जग स्वामी । करत चरित मानहुँ अति कामी ॥
देखि श्यामकी आतुर ताई । हँसति सखी मन हर्ष बढ़ाई ॥
जान प्रेम वश हरि सुखरासा । गई बहुरि प्यारीके पासा ॥
करि शृंगार नवल तनु गोरी । राजतश्री वृषभानु किशोरी ॥
सहज रूपकी राशि कुमारी । भई अधिकछवि भूषण भारी ॥
अंग अंग छबि पुंज विराजे । निरखि मदन तिय कोटिकलाजें ॥
त्रिभुवनकी छबि मनहुँ बटोरी । विधिकीनी वृषभानु किशोरी ॥

दो०-देखि रूप मन मगन सखि, बोली वचन सँभार ॥
धन्य धन्य राधा कुँवर, तुव गुण रूप अपार ॥

सो०-तासमान नाहिं तोय, तिहुँपुर सुन्दरि नागरी ॥
बसत सदापिय जीय, तू मोहन मन भावती ॥

चलहु वेगि अब सहित हुलासा। लाग रही पियकी इत आसा ॥
तेरोइनाम जपत मन लाई । गावत तुव गुण कुँवर कन्हाई ॥

१ राधिका । २ रसिक जनोंमें इन्द्र.। ३ कामदेवकी स्त्री रती। ... ...था। ६ कबूतर।

तुम तनु परस पवन जो जाही। उठि आतुर परिरंभत ताही॥
तेरो रूप आनि उर अन्तर। धरत ध्यान दृग मूंदि निरंतर॥
रमी श्याम तन मन तू जाते। राधा रमण नाम है ताते॥
सुनि सहचरिके मुखकी बानी। पुलकि प्रफुल्लित मृदु मुसिकानी॥
पियको प्रेम समुझि सुखपाई। चली मिलन गजगति हर्षाई॥
मुखशशि कनकलतासी गोरी। बाल हरण छबि नयनकिशोरी॥
भूषण वसन अनूप सुहाई। अंग अंग शोभित छबि छाई॥
अंग सुगंध मनोहर ताई। भँवर भीर चहुँ ओर सुहाई॥
हँसि हँसि कहत सखीसों वातें। झरत सुमन जनु रूप लतातें॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी। गई जहां पिय कुंज विहारी॥

दो०—परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नँदनंद॥
गुण आगर नागर युगल, छबि सागर सुखकन्द॥

सो०—जो प्रभु परम अपार, वेद भेद जानत नहीं॥
सो ब्रज करत बिहार, बर्णि पार को पावही॥

कुंजन मंजु सुफल छबि छाई। भँवर गुंज सुख पुंज सुहाई॥
फूलनसेज रुचिर रचि कीनी। चित्र विचित्र रंग रस भीनी॥
फूले खँग गण करत कलोलैं। जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं॥
फूली बृन्दावन तरु डारी। तन मन फूले पिय अरु प्यारी॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी। राजत युगल किशोर किशोरी॥
हाव भाव करि रस उपजावैं। हासविलास करत सुख पावैं॥
सखी कह्यो तब कै अबनीके। सकुचि हँसी प्यारी सँग पीके॥
नयन कोर पियको हिय ताक्यो। तबहिं श्याम पीतांवर ढांक्यो॥
यह छबि निरखि सखी बलि जाई। अचल रहो जोरी सुखदाई॥
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई। धन्य मान रस केलि सुहाई॥
धन्य कुंजबन धनि महि पावन। धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन॥

१ बसी। २ स्वर्णलता। ३ शोभाके समुद्र। ४ पक्षी। ५ पृथ्वी। ६ वृक्ष।

धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी । तिनसँग विरहत प्रभु सुखरासी ॥

दोहा—गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहित सुखपाय ॥
मान चरित रस केलि करि, ब्रजवासी बलि जाय ॥

सो०—मान चरित्र अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं ॥
ते न परैं भवकूप, राधा कृष्ण प्रतापते ॥

करत चरित नाना गिरिधारी । सुखसागर भक्तन हितकारी ॥
जाको शिव अज[१] ध्यान लगावैं । सनकादिक मुनि जप कर ध्यावैं ॥
जा प्रभु को यश परम विशारद । गावत अहिपति[२] नारद शारद ॥
अखिल अनीह[३] अकाम अभोगी । योग समाधि न पावत योगी ॥
सो प्रभु सबके अन्तर्यामी । युवतिन प्रेम भक्तिवश कामी ॥
बहु नायक ह्वै करत विहारा । ब्रजपुर घर घर नन्दकुमारा ॥
रस लीला नाना उपजावैं । काहु रुठावैं काहु मनावैं ॥
अरस परस तिय सब यह जानैं । हरि हैं सबके धाम लुभानैं ॥
अवधि वदत काहू सों जाई । काहूके घर बसत कन्हाई ॥
सांझ कहत जाके घर आवन । जात प्रात ताके मनभावन ॥
ब्रज गोपी जिनको पति जानें । कोउ आदरहिं कोउ अपमाने ॥
खंडित वचन सुनत सुखदाई । यह लीला हरिके मन भाई ॥

दोहा—ब्रजमें करत विहार हरि, ब्रजवनितनके संग ॥
अखिल[४] काम पूरण करण, भरे प्रेम रस रंग ॥

सो०—कोटि काम कमनीय, सुंदर सुख सागर नवल ॥
रमणी[५] मन रमणीय, ब्रजभूषण ब्रजलाडिलो ॥

ब्रज[६] बीथिन नँदनन्दन ठाढे । अंग अंग सुन्दर छवि बाढे ॥
ललता आइ गई तिहिं पैंडे । मन मोहन रोकी मग वैंडे ॥
देखत छबि ललता ललचानी । बोली विहँसि श्यामसों बानी ॥
कत रोकत मग में बिन काजें । जाहु चले जितहीं हित साजें ॥
झूंठहि इतौं सनेह जनावो । कबहु हमारे धाम न आवो ॥

---

१ ब्रह्मा । २ शेषनाग । ३ इच्छारहित । ४ सब । ५ स्त्री । ६ गली ।

हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं। तेरीसों हम अनत न जैहैं॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई। छोड़ि दई मग छैल कन्हाई॥
ललता गई सदन सुख मानी। ऐहैं श्याम आज यह जानी॥
सांझहिते हरिपंथ निहारै। धाम आपने सेज सँवारै॥
भूषण वसन नवल तनु साजैं। खंजनसे दृग अंजन आँजैं॥
सुमन सुगंध अनूपम गाई। रचि रुचि राखति माल बनाई॥
कबहूं ठाढी होति दुवारे। कबहूं लखति गगनके तारे॥

दोहा–कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात॥
गये आंस दे मोहिं पुनि, कहाधरी जिय बात॥

सो०–वे बहु नायक श्याम, किधौं लुभाने अनतकहुँ॥
मन मन शोचत वाम, कारण कह आये नहीं॥

कैधौं कछु ख्यालहि चितदीनों कैधौं मात पिता डर कीनों॥
कैधौं सोय रहे अलसाने। कै मोवर आवत सकुचाने॥
ऐसे शोचत रैनि बिहानी। जहँ तहँ बोले तमचर बानी॥
तब बैठी अपनो मन मारी। कछु शोच कछु रिस उर धारी॥
हरि निशि गये सखी शीलाके। सुन्दर श्याम धाम लीलाके॥
तहँ सुख सोवति रैनिगमाई। प्रात होत ललता सुधि आई॥
चले सहज शीलासों कहिके। जिय सँकोच ललताको गहिके॥
आये ललता सदन बिहारी। चितै रही मुखकी छबि प्यारी॥
अंजन रेख अधर पर राजैं। पीक लीक नयनन छबि छाजैं॥
सोहत ललित कपोलन नीको। लाग्यो अंजन काहू तीको॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी। दिखरायो मुख सन्मुख आनी॥
कहति देखि निज वदन सुधारो। लाल कहूं तब प्रात सिधारो॥

दोहा–पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय॥
रहे निंचो हैं नयन करि, बचन कह्यो नाहिं जाय॥

सो०–ज्यों ज्यों सकुचत श्याम, त्योंत्यों हट नागरि करत॥

१ भरोसा। २ मुर्गा। ३ दर्पण। ४ नीचे।

देखहु छबि अभिरामं, हाहामुख कत फेरियत ॥
सकुचत कहा बोलिके सांचे। आये तो मो गृह रँग राचे ॥
रैनि नहीं तो प्रातहि आये। धनि धनि वह जिन स्वांग बनाये॥
तुम जिन मानहु बिलग कन्हाई। मैंतो करति आनन्द बधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहीं देख्यो। सूधे मोतन काहे न पेख्यो ॥
ठाढे कत बैठत क्यों नाहीं। कछु कछु चक परी हम पाहीं ॥
रहे मूकं ह्वै कहा ठगेसे। सोहत हो अलसात जगेसे ॥
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं। मैं तबही तें बकत बृथाहीं ॥
तब चितये दृग कोरें कन्हाई। भाव अतिहि आधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रवीण जानि सब लीनों। तुरत रोष उरते तजि दीनों ॥
हँसि करि मोहन कंठ लगाये। भले श्याम ऐसेहू आये ॥
श्रमित अंग जागे निशि जाने। अति सनेह मनहीं मन माने ॥
अंग सुगंध मर्द अन्हवाये। बसन अभूषण दे बैठाये ॥
दोहा–रुचि भोजन दे सेजपर, पौढाये घनश्याम ॥
रस बश करि नवनागरी, किये सफल मनकाम ॥
सो०–सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजवासी दासको ॥
प्रेम प्रीति बश आय, सो गोपीवल्लभ भये ॥
कहत सोंह करि रसिक बिहारी। तुम प्रिय मोहिं प्राणते प्यारी ॥
सदा बसत तुम मोमन माहीं। तुम बिन लहत अनंत सुख नाहीं॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावें। चतुर बचन कहि चितहि चुरावें॥
यहै भाव युवतिनसों भाखें। सबहिनके मनकी रुचि राखें ॥
कुल मर्याद लोक डर त्यागी। सब गोपी हरिसों अनुरागी ॥
बिन देखे रसभाव बढ़ावें। नयनन देखतही सुखपावें ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी। यह लीला ब्रजमें बिस्तारी ॥
ललताको सुखदे सुखसागर। चले सदन अपने नटनागर ॥
उतते मग आवति चंद्रावलि। देखि रही सुंदरि छबि सांवलि ॥

१ आनंद। २ गूंगे। ३ बांके नेत्रोंसे। ४ और जगे। ५ कबूतर।

वने:विशाल कमल दल लोचन । चितवन चारु काम मदमोचन ॥
इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी । खोरि सांकरी भइ भट भेरी ॥
विहँसि:कह्यो चंद्रावलि प्यारी । कहां रहत हरि हमहिं बिसारी ॥
दो०-तुम कैसे बिसरत प्रिया, हँस बोले घनश्याम ॥
आज आय सुख लेहिंगे, रैन तुम्हारे धाम ॥
सो०-सुनि हरषी जिय बाम, चली सदन मुसकायके ॥
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन ॥
चंद्रावलि मन अधिक उछाहू । फूली फिरत कहत नाहिं काहू ॥
सुखके करत मनोरथ नाना । बासर कलप समान बिहाना ॥
भये अस्त रवि निशि नियरानी । उडुगण ज्योति देखि हरषानी ॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये । चंद्रावलिके भवन न आये ॥
सूने घर देखी सो ग्वाली । आतुर गये तहां वनमाली ॥
सुखमा लखि हरिको सुखपायो । अतिही आदर करि बैठायो ॥
कोक कला कोविद वर नारी । हाव भाव मोहे गिरिधारी ॥
बस तहां मोहन सुखपाई । चंद्रावलिकी सुरति भुलाई ॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारै । बार बार हरि पंथ निहारै ॥
कबहूं भवन कबहुं अँगनाई । कबहूं रहति द्वार ढकलाई ॥
कबहूं शोच करत मन माही । आवहिंगे मोहन कै नाही ॥
कबहूं आलस कलु जिय जानी । धांवतिहै नयनन लै पानी ॥
दो०-कबहुँ कहत हरि आयहैं, उरमें हर्ष बढाय ॥
कबहुं विरह व्याकुल जरति, अति आकुल अकुलाय ॥
सो०-कबहुँ कहत सुखपाय, बहुरमणी रमणीय पिय ॥
बसे अनत कहुं जाय, मोसों झूंठो अवधि बदि ॥
ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी । सुनी श्रवण वायसकी बानी ॥
भई काम सुख वाम उदासी । जाने श्याम कपटकी रासी ॥
कहति बाम कर मनके माहीं । श्याम नाम खोटो सब आहीं ॥

१ मिलाप । २ उत्साह । ३ दिन । ४ चतुर पंडित । ५ इकरार ।

कोकिल श्याम श्यम अलि देखौ । श्याम जलेद अहि श्याम विशेखौ ॥
तिनहींकी करनी हरि लीनी । मोसों प्रीति कपटकी कीनी ॥
ऐसे क्रोध विरह सब बाला । सुखमा सदन गये नँदलाला ॥
प्रात भये उठि चले तहांते । आलस भरे नयन रँगराते ॥
चंद्रावली सदन चलि आये । ठाढे अजिरे रहे सकुचाये ॥
मन्दिर ते रिसभरी गुवारी । नखते शिखलौं रही निहारी ॥
मन मन कहत कुटिल अति गिरिधर । प्रात होत आये मेरे घर ॥
कियो मान मनमें अति भारी । आंगनमें ठाढे बनवारी ॥
और नारिके चिह्न विलोकी । रोकति रिसहि रुकत नाहिं रोकी ॥

दो०–तब बोली करि मान तिय, कहा काम ममधाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहां निशि श्याम ॥
सो०–प्रात दिखावन मोहिं, आये रंग बनायके ॥
मैं सुख पायो जोहि, भले बनेहौ लाल अब ॥

बिन गुण शोभित है उरमाला । बीच रेख मुख चन्द्र रसाला ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई । नागबेलि रँग पलक रँगाई ॥
लटपटि पाग महावर लाये । आलस नयन अरुण जल छाये ॥
चंदन भाल मिल्यो कहुँ वन्दन । यह छवि अधिक बनी नँदनन्दन ॥
बलय गाढ वर पीठ धरेहौ । जान्यो नागरि अंक भरिहौ ॥
इतेन वर डाहन मुहिं आये । सौंह करन को इत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो । जैसेहो तैसे मैं जान्यो ॥
विहँसि कह्यो तब लाल विहारी । तुमते और कौन मुहिं प्यारी ॥
तुमबिन मोहिं कहुं कल नाहीं । बसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुरई कहां पढि आई । चीन्हे हो गुण राशि कन्हाई ॥
यह कहि गई भवनमें भामिन । रीझे श्याम देखि छवि कामिन ॥
सन्मुख जाय भये पुनि ठाढे । द्वारकपाट दिये पुनि गाढे ॥

दो०–पौढि रही तिय सेजपर, बदन मूंद अनखाय ॥

१ कालाबादल । २ कालासर्प । ३ आँगन । ४ पान । ५ मोतीका रंग ।

हरि तन पुनि चितयो नहीं, उरमें प्रेम बढ़ाय ॥
सो०-प्रभु गति लखी न जाय, जो चाहैं सोई करें ॥
पौढ़ि रहे सँग जाय, पौढ़ी तिय जहँ मानकर ॥
जो देखी सो संग कन्हाई । चली भ्रकुटि तिय उठि अहराई ॥
खोलि किंवार अजिरमें आई । देखे ठाढ़े तहां कन्हाई ॥
विनय करत नयननकी सैनन । चकित भई देखत तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पुनि प्यारी । तहां अंक भर लई मुरारी ॥
तब नागरि रिससबै भुलाई । नैटक करि वश करी कन्हाई ॥
मान कुशाप हुलास बढ़ायो । तियको मुख दीनो सुखपायो ॥
तब निज धाम गये गिरिधारी । चंद्रावलि उर आनँद भारी ॥
तहां सखी दश पांचक आई । चंद्रावलि बैठी जेहि ठाई ॥
औरे बदन और अँग शोभा । निरखि रही दृग द्वै मन लोभा ॥
कहत पिया कछु हर्ष बढ़ायो । कहो न लूट कहूं कछु पायो ॥
क्यों अंग शिथिल मरगजी सारी। यह छवि कही न जाय तुम्हारी॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी । हमजाने तोहि मिले बिहारी ॥
दोहा-चंद्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह
रही मूंद मुख मंद हँसि, भीजी श्याम सनेह ॥
सो०-रह्यो ध्यान उरछाय, वह लीला बिसरै नहीं ॥
मुखसों कह्यो न जाय, गूँगेको गुडसों भयो ॥
तब बोली बूझति कह आली । युवती मनमोहन वनमाली ॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी । कही न जात बात सखि तिनकी॥
हाहा कहि चद्रावलि हमसों । हमहूं सुने श्याम गुण तुमसों ॥
कैतोहिं मिले यमुनके तीरा । कैतोहि मिले भवन बलवीरा ॥
तब चंद्रावलि गद्गद वानी । हर्ष सहित हरिकथा बखानी ॥
सुनि हरि चरित ललित सुखकारी। भई प्रेमवश सब व्रजनारी ॥
चंद्रावलि धनि धन्य कही तब । कहन लगी हरिके गुणगण सब ॥

नंदनंदन सब लायकहैंरी । सबहिनके सुखदायकहैंरी ॥
बसे रैनि काहूके जाई । काहू देत भात सुख आई ॥
काहूको मन आय चुरावें । काहूसों अपनों मन लावें ॥
काहूके जागत सिगरी निशि । काहूको उपजावतहैं रिशि ॥
ब्रजवासी प्रभुके मन भावें । तैसेइ तैसे चरित उपावें ॥

दोहा–यह लीला आनँद भरी, सकल रसनको सार ॥
भक्तनहित हरि करतहैं, गाय तरत संसार ॥

सो०–घर घर करत बिहार, व्रज युवतिनके संग हरि ॥
गावतिहैं श्रुति[१] चार, ब्रजवासी प्रभुके यशहिं ॥

श्रीराधा वृषभानु दुलारी । नन्दनँदन पियकी अति प्यारी ॥
सहज रहै अपने मनमाहीं । नन्द सुवन निशि अन्त न जाहीं ॥
नन्द भवनके मेरे गेहा । रहे सदा चित यही[२] सनेहा ॥
श्याम बसे काहू नारीके । आये सदन भात प्यारीके ॥
रति रँग चिह्न अंग परवाने । सोहत नयन अरुण अलसाने ॥
प्यारी देखि रही मख पियको । जान्यों रँग लग्यो कहुँ तियको ॥
तब मन बिहँसि कह्यो श्रीराधा । आज बन्यो पियरूप अगाधा ॥
पर उपकार हेतु तनु धार्यो । पुरवन सबकी साधे[३] बिचार्यो ॥
कहां पढी यह नीति बतावो । हमहूंको सो ठाम सुनावो ॥
कहो कहां काको सुखदीनों । धनिधनि यह उपकार जु कीनों ॥
धनि यह बात आज मैं जानी । क्यों नाहिं कहियत प्रगट बखानी ॥
धन्य मोहि यह दरश दिखायो । धनि धनि जासों नेह लगायो ॥

दोहा–भलो दिखाई आज यह, अद्भुत[४] छबि अभिराम ॥
सूर उदय लोचन कमल, चन्द उदै पर श्याम ॥

सो०–उर कुच कुंकुम दाग, अधर दशन छबि राजइ ॥
रँगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम बनी ॥

क्यों उठि भोर यहांको आये । कौहके[५] इतने सरमाये ॥

१ चारौं वेद । २ अथाह । ३ इच्छा । ४ अद्भुत । ५ ...को रंग ।

तुमहूं भले भलीहैं वेऊ। कीनो भलो भले मिलि दोऊ॥
कीनोहै इतनो हित जिनते। तौ अब कित बिछुरेहो तिनते॥
जाहुतहीं वे सुनि दुख पैहैं। बहुरो तुमसौं मन न मिलैहैं॥
तिनहींको सुख दीजै मोहन। जिनसा निशि बिलसे मिलि गोहन॥
तिय सन्मुख नाहिं लखत कन्हाई। वदन नवाय रहे सकुचाई॥
कबहुं नयनकी कोर निहारैं। कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं॥
प्रगट त्रसित मनमन मुसकाई। खंडित वचन सुनत हरषाई॥
पियको सुख प्यारी नाहिं जानै। रोष करतहू पिय मनमानै॥
जोइ आवत सोइ कहत वदनते। जाहु जाहु पिय कहत सदनते॥
तुम जानतजिय हमहि सयाने। और बसत सब लोग अयाने॥
रैनि बसत कहुं भोर हमारे। आवत नाहिं लजात ललारे॥
दोहा–तबहिं श्याम बाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय॥
किन देख्यो कौने कह्यो, झूंठहि तुमसों आय॥
सो०–कहति झूठ यह बात, खोटी व्रजनारी सबै॥
तुमते प्रियको आन, सौंह करौं जो मानिये॥
बिनहीं बोले रहिये जू पिय। कत ऐसे वचनन दहिये हिय॥
झूठी सबै एक तुम सांचे। नीके लाज छांडिकै नांचे॥
सौंह कहूं सुनिबो करि पायो। सो अब इहां काम है आयो॥
ऐसे खिजत पीयसों प्यारी। आई तहां और व्रजनारी॥
सखियन देखि कुँवरि मुसुकाई। उर अन्तर है रिस अधिकाई॥
तिन्हैं कह्यो सैनन में प्यारी। देखहु हरिकी छबिहि निहारी॥
मौनहि रहे श्याम सकुचाई। युवति विलोकति छबि अधिकाई॥
कहति सबै हँसि हसि व्रजबाला। कहँ पाई छबि यह नँदलाला॥
तबहि सखिन सों कह्यो किशोरी। करत इत पर सौंह लखोरी॥
निशि औरनके चित्तहि चुरावत। दरशन देन प्रात इत आवत॥
तुमही अंग चिह्न पहिचानो। सही परै, सो बात बँखानो॥
कृपाकरैं तहं हीं पग धारैं। नहीं काज इहं बेगि सिधारैं॥
दोहा–प्यारीउरअतिरोपलखि, अरुसखियनकी भीर॥

तब बहँते बहरायके, द्वारे गये बलबीर ॥

सो०-शोच करत उरमाहिं, भरे विरह आनन्दरस ॥
जाय सकत कहुं नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत ॥

अथ मध्यममानलीला ॥

जबहीं श्याम गये द्वारे तन । कियो मान प्यारी अपने मन ॥
कहति सखिन सों देखो तुम अब। बहुरि दोष देती मोको तब ॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर । चोरत चित्त फिरत अतिनागर ॥
ऐसे ख्याल मोहिं दिखरावैं । जान देहु अब यहँ जिन आवैं ॥
इहां काज उनको कछु नाहीं । मैं बैठी अपने घर माहीं ॥
जाव तुमहुं अपने सब कामहिं। यों कहि प्रिया गई उठि धामहिं॥
नख शिख रोष भरी पियप्यारी । योवन रूप गर्व उर भारी ॥
चली सखी बहु दशा निहारी । द्वारे पर देखे बनवारी ॥
कहति सुनौ मोहन पिय हमसों। प्रिया रोष कीन्हों अति तुमसों ॥
तुम्हरे आवत अति रिसपाई । यह तुम कहा करी चतुराई ॥
सुनत बात यह कुँवर कन्हाई । भये चकित अति गये झुराई[१] ॥
जान्यो मान कियो फिरप्यारी । भये विरहव्याकुल तनु भारी ॥

दोहा-तब सखियन हरि सों कह्यो, चतुर कहावत नाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कचात[२] कत श्याम ॥

सो०-तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखायकै ॥
अब लागे पछितान, प्रथम विचार[३] कर्‍यो नहीं ॥

यह सुनि धीरज कियो कन्हाई । तब इकयुवती आर बुलाई ॥
तासों कहि सब बात जनाई । दूती करि हरि ताहि पठाई ॥
कहत श्याम तोसों यह बानी । बेगि मिटै जिय मान सयानी ॥
दूती गई करति मन साधा । बैठी तहां जाय जहँ राधा ॥
प्यारी मान ठान दृग बैठी । हृदय रोष भौंहैं करि ऐंठी[४] ॥

१ मुरझा गये । २ सकुचाना तथा हारना । ३ विचार । ४ टेढी ।

उरमें सौति शाल अति शाले । नैक नहीं इत उत कहुँ हाले ॥
दूती कछू थाह नाहिं पावे । बिना भीत कहँ चित्र बनावे ॥
मनहीं मन दूती पछिताई । अति आतुर मोहिं श्याम पठाई ॥
यह इत उत कहुँ नाहिं निहारै । कहा करौं मन मांझ बिचारै ॥
तब कहि उठी दूतिका नारी । मान कियो वृषभानुदुलारी ॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही । उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे म उनको नाहिं जाने । अब कैसे उनसों मन माने ॥

दोहा–घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगत न लाज ॥
आय दिखाये प्रात मुख, नटके रतिरँग साज ॥
सो०–मैं आई अब बाज, जित चाहो तितही फिरो ॥
उनको यहां न काज, राजकरो ब्रजमें सदा ॥

दूती सुनि प्यारी की बानी । अन्तर प्रेम रोष लपटानी ॥
कह्यो यमुनत मैं गृहआई । सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सकी घरमाहीं । भली प्रकृति हरिकी यहनाहीं ॥
अब द्वारे ते हरि न टरतहैं । पर घर जानकि सोह करतहैं ॥
मन पछितात कहत घनश्यामा । भूले हुँ ऐसो करहुँ नकामा ॥
तू जिनमान तजै सुन मोसों । यहै कहन आइ मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावैं । परघर जानकि बात मिटावैं ॥
अब मोको यह बात लखाई । जाहन परघर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी । द्वारेहैं हरि तब यह जानी ॥
उमगि,उठ्यो रससुनि मनमाहीं । बाहर प्रगट कियो सो नाहीं ॥
काहेको हरि द्वार खरेरी । कौने राखे जाय घेरेरी ॥
तू रहि मान कितहि रिस पावति । यह हरिसों मैंही कहि आवति ॥

दोहा–लई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान ॥
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥
सो०–कही मनाऊं लाल, नेकु मरम नाहिं पाइये ॥

---

१ खटकै । २ स्वभाव । ३ हृदय । ४ भेद ।

दीठन जोरति बाल, सूधे मुख बोलति नहीं ॥
अपनी सी बहुतै मैं भाषी । सुनि उनमौन हृदय धरराखी ॥
नेक नहीं उत्तर मुख बोलै । अति रिस कंपत इत उत डोलै ॥
मैं ज कही सो सुनहु कन्हाई । भई बूंद बारूद किनाई ॥
भरि भरि लेत नयन दृगकोरैं । नहीं डरत बैठी मुखमोरैं ॥
तिरछी करि करि भौहन तानै । कोटि कोटि अवगुण मुखगानै ॥
ऐसीहै यह दीठ तुम्हारी । कहा बेसीठि करै कोउ नारी ॥
सुनहु रसिक बर कुँवरकन्हाई । आपहि लीजे जाय मनाई ॥
याको नाम भयो गढवाई । लीजें ताहि सुरंग लगाई ॥
यह सुनि बिरह भरे बनवारी । मुरछिपरे धरसुरति बिसारी ॥
सखी उठाय लये अँकवारी । योंकत विकल होत बलिहारी ॥
नागर बड़े कहावत होजू । धीर धरो सुखपावत होजू ॥
बातन नेकु तोहि गहि पाऊं । तो तबही म तुमाहिं मिलाऊं ॥
दोहा–धीरज दे घनश्यामकों, दूति गई उताल ॥
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल ॥
सो०–मुख नाहिं बोलत बयन, अति व्याकुल तेरेबिरह ॥
भरि भरि डारत नयन, कहा कहौं न सँभारकछु ॥
बारहि बार कहति पछितानी । देसुख जोतू कुँवरि सयानी ॥
तूही पिया भावती हरिकी । और नहीं कोऊ तो सँरकी ॥
तेरेहि रसवश कुँवर कन्हाई । तेरे तनक बिरह कुम्हलाई ॥
तेरेहि रूप अधीन खरेरी । तेरेहि चितवनके चेरेरी ॥
तेरेइरंग बसन तनुधारैं । तेरेइरंगको तिलक सँवारैं ॥
चन्द्रबदन तेरो लखि गोरी । मोरचन्द्र शिर मुकुट कियोरी ॥
तेरोइ चरित सुने अरु गाने । तू माने भावे जिनमाने ॥
अति अनुराग श्यामको तेरो । करि विचार नीके मैं हेरो ॥
जो जाको नीकेकरि जानें । सो तासों तैसो हित मानें ॥

१ दृष्टि नहीं जोडती । २ दूतपन । ३ जल्दीसे । ४ बराबर की ।

यह प्रीतिकी रीति पियारी। कहंतु बोलि लेहुँ गिरिधारी॥
त कहँगई कहन कह आई। मैं जानति हरि तोहि पठाई॥
मानत कौन कही अब तेरी। जानतिहौ हरि चरित बडेरी॥
दो०-अवधौं को तिनसों मिलै, जिन्हैं परी यह बान॥
उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछुआन॥
सो०-हैं वे कपटनिधान, बहु नायक पूरे गुणन॥
जिनको करत बखान, जिन बामन ह्वै बलिछल्यो॥
मान किये अब नाहिं बनेरी। देखु विचार हिये अपनेरी॥
जाके गुणगण सुर मुनि माहैं। सो तेरे गुण गणि मणि पोहैं॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावैं। सो तेरे दरशन सुख पावैं॥
शिव विधि, जाके द्वार खरेरी। सो प्रभु तेरे द्वार परेरी॥
जाके पद कमलाकर लीने। सो प्रभु पद चिंतत मनदीने॥
अति आतुर नँदलाल हियेरी। सौंह करति हौं शीशछुयेरी॥
सुनु प्यारी अति हठ नाहिं कीजै। सर्वस वारि श्यामपर दीजै॥
यह यौवन वर्षाको पानी। गर्व नकीजै याहि सयानी॥
सब सुख हरिके संग कियेरी। कृष्ण विमुख कै काज जियेरी॥
पूरुब पुण्य सुकृत फल तेरो। भामिनि मान कह्यो करमेरो॥
हरिके रस रँग जो मनभीजै। रूपसुधा जो नयनन पीजै॥
सौंह चरण तेरेकी कीजै। सफल दरश दिय ता यों जीजै॥
दो०-वृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करिकै मान॥
उठति वैसके दिननको, सुन तिय यहै सयान॥
सो०-हिलि मिलि करहिं कलोल, मैं तेरे हितकी कहति॥
लेहिं श्यामको बोल, परे द्वार विलपत दई॥
सोई चतुर सुलक्षण नीकी। सदा भावती जो पियजीकी॥
यौवन गुण द्युति अरुहित पीको। है सुन्दर तेरे शिर टीको॥
तेर हित सब ब्रजकी बाला। कियो बुलाय रास नँदलाला॥
तू तनु श्याम प्राणरी प्यारी। परछांई अरु सब ब्रजनारी॥

१ लक्ष्मी। २ अवस्था। ३ विलापकरते।

तोसी और नहीं ब्रजगोपी । तेरेइ रूप बसे तिय ओपी ॥
सुंदर श्याम सकल सुखदायक । कहा भयोरी जो बहुनायक ॥
तो समान वृषभानु ललीको । शशिहि कहा डर कुमुदकलीको ॥
ऐसे जब दूती समुझाई । तब बोली तिय कछु मुसुकाई ॥
वादहि बकति आय मेरे घर । वेधति है ऐसे वचनन शर ॥
उतकी इत इतकी उत जाई । मिलवत झूंठी बात बनाई ॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं । सौंह करैं औ हाहाखैहैं ॥
प्रीति रीति कछु जानत नाहीं । जोइ आवत सोइ कहत वृथाही ॥
दो०-जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लीयो तब जान ॥
मानत नाहीं लाडिली, श्याम मिलाऊं आन ॥
सो०-कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानत मेरो कह्यो ॥
श्याम मनावे आय, मैं जानी तब मानिहैं ॥
अरी मानवे बहुतें तेरे । लगत माननी कोई हेरे ॥
हांसी खेल औरको माई । तुलत न तेरे विरस रुखाई ॥
ऐसही रहि जो लगि जाऊं । यह सुख हरिको आन दिखाऊं ॥
पिय मन नूतन चोप बढाऊं । अतिरस रूप अनूप उपाऊं ॥
यह कह गई श्याम पै आली । कहत आज सुनिये बनमाली ॥
मानति नाहिं मनायो प्यारी । को जानें जियमें कह धारी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई । सुनितैं अधिकहोत रिसहाई ॥
तुम आतुर वैसी गति वाकी । आवति जाति बीचमें थाकी ॥
आपहि चलि लीजिय मनाई । और भांति नहिं बनत बनाई ॥
वहै बयारि जैसिये जबहीं । पीठ आडिये तैसी तबहीं ॥
मोसी जो पठवहु तुम कोरी । नहिं मानत वृषभानु किशोरी ॥
हौंतो कहति तुम्हारे हितकी । पाई है कछु वाके चितकी ॥
दोहा-चले बनतहै लाल अब, और यत्न नहिं कोय ॥
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय ॥

१ वृथा । २ नया । ३ उपाय । ४ भेषबनाके । ५ बराबर की ।

सो०–आप काज महकाज, बडे कहिगये बात यह ॥
तजहु श्याम उर लाज, करि विनती तियसों मिलहु ॥

चलो चले तुह्मरे हठ जैहैं। देखत प्रेम उमँग उर ऐहैं ॥
सखी संग तब नवल विहारी। गये भवन बैठी जहँ प्यारी ॥
आगे भये संकुचिकै ठाढे। अति आधीन प्रेम रस बाढे ॥
नेक नहीं इत उत कहुँ डोलैं। चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलैं ॥
यद्दपि लाल गाढे अति जीके। सकल सयानप भूले नीके ॥
प्यारी देखि पियहि मुसकानी। जिय डरपे मोते यह जानी ॥
अति आनन्द भयो मन माहा। चुपही रही कह्यो कछु नाही ॥
मन मन कहत न अब उचटाऊं। आदर कर पियको बैठाऊं ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने। अब नहिं जैहैं धाम बिराने ॥
सहचरि कह्यो देखुरी प्यारी। कबके ठाढेहैं गिरिधारी ॥
मान मनायो प्यारी पियको। तूपिय जिय पिय जीवन जीको ॥
प्राणहिं तनुहिं रूसिबो कैसो। यह कहुँ भयो सुन्यों नहिं ऐसो॥

दोहा–करि आदर बैठारि पिय, हँसिले कंठ लगाय ॥
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी कित सकुचाय ॥

सो०–है तू नागरि वाम, मनमें कह ऐसी धरी ॥
वे ठाढेहैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं ॥

तब हँसि कह्यो भलो पिय वैसो। अबजिन काम करहु कहुँ ऐसो ॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी। और दिनाको रहिये जानी ॥
मेरी सौंह करो मो आगे। तज सँकोच बोलो डर त्यागे ॥
कह्यो सौंहकर मोहन तबहीं। और तियन पर जात न कबहीं ॥
नंद भवन ते अबहीं आये। तुम्हरो रोष देखि सकुचाये ॥
ऐसी अब काहेको बोलो। अबलोंकी करनी नहिं खोलो ॥
अब जु कालिते अनत सिधारे। तौ तुमही जानोगे प्यारे ॥
तब हरि हँसि कर शिरपर राखे। बारहि बार सौंह कर भाखे ॥
सहचरि हँसि कर साखि रहीजू। सखी आज ते बात यहीजू ॥

१ लाजकर। २ परायेघर। ३ स्त्री।

पानदिये प्यारी तब लालहि । आई सखी सकल तेहि कालहि ॥
सौंह करी सबहिन यह जानी । हँसे श्याम श्यामा मुसकानी ॥
आदर कर सबको बैठायो । निरखि युगल सबहिन सुख पायो ॥

दो०–कह्यो सखिनसों हँसि प्रिया, भरि आनँद उत्साह ॥
तुमहूं सब मिलिके कह्यो, भये श्याम अब साह ॥

सो०–लखिलखि सखी सिहात, यह सुख लाडिलि लालको ॥
बसे श्याम तहँ रात, प्रात चले अपने सदन ॥

चले धामनिज श्याम सकारे । देखे ठाढे नन्द दुवारे ॥
सकुच फिरे घर जात लजाने । प्रमुदाके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे। कहत लाल यह ख्याल तुम्हारे ॥
कहां हुते गवने कित माहीं । कबहूं दरशदेति हौ नाहीं ॥
रहत कहां हौ सकल लुभाने । आयपरे इत कहां भुलाने ॥
कहौ कहाहौ कछू डरेसे । आलस भरे जम्हात खरेसे ॥
बसेकहूं निशि तिय संग जागे । नयन अरुण अतिरस रँगपागे ॥
मलयज उरज छाप उर धारे । द्वैशशि मनहुं उदित उजियारे ॥
नयन कछू सकुचतसे ऐसे । शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतरी अलि उडसकै न जानो । उरझरहे अंग गात न मानो ॥
डगमगातसे डग पग डोलो । रसभस गात श्रृंगार अमोलो ॥
अंग अंग शोभाके सागर । धनि धनि बसे जहां रतनागर ॥

दोहा–बिहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुमबात ॥
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥

सो०–सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनंद उर ॥
ऐहैं आज मुरारि, सांझ परे मेरे सदन ॥

मातहिते मन हर्ष बढ़ायो । नवशत साज श्रृंगारबनायो ॥
बार बार दर्पण मुख देखे । भूषण बसन अंग अवरेखे ॥

---

१ देखि । २ लाल । ३ चन्दन । ४ कमल । ५ भौंरा । ६ सोलह ।

कद्रू सुत छवि छाजत वेणी। मांग सुधारत दधि सुत श्रेणी ॥
भुवन तीय सुत रेख सँवारे। धनपति पुरको नाम सुधारे ॥
हीरावलि उर पर लै धारे। श्याम मिलन सुख मनहिं विचारे ॥
रचि रचि सुमनन सेज बनावें। केसर चन्दन अगर मिलावें ॥
बहु नायक नँदसुवन कन्हाई। गये अनत याको बिसराई ॥
बांसर ऐसे करत बिहानो। एक यौम निशिको नियरानो ॥
पर्‍यो शोच विरहा अकुलानी। श्याम न आये कहँ धौं जानी ॥
गये सांझहीको कहि आवन। अजहूं नाहि आय मनभावन ॥
कैधों आवत हैं अब धाये। किधों परे कहुँ फंद पराये ॥
वे बहु रमणी रमण बिहारी। कैधों मेरी सुरत बिसारी ॥

दोहा–कुमुदाके घर हरि रहे, बढ्यो अधिक उरहेत ॥
भीजे दोऊ प्रेमरस, अरसपरस सुखलेत ॥

सो०–मुदित श्यामसँग वाम, क्षण सम बीततयामतिह ॥
याकोयुग समयाम, बीतत नभतारे गनत ॥

वैसे वहां याहि इहि रीती। भयो भोर रजेना सब बीती ॥
मनहीं मन युवती पछितानी। मोसों श्याम कुटिलई ठानी ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई। रही बैठि सदनहीं मुरझाई ॥
आई तहां सहज इक आली। देखी विरह विकल तनु ग्वाली
लोचन जलज भरे जल ढारें। मन मारे मैहिनखन बिदारें ॥
बूझत लगी निकट सो जाई। कहा भयो तोकोरी माई ॥
आनँद रहित आज मुख तेरो। देखत होत विकल मन मेरो ॥
सोतौ बात भई है कैसी। मोहिं सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी। अंचर पोंछ नयन को पानी ॥
कहा कहौं तोसोंरी आली। कपटी कुटिल कठिन वनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई। अनतहि लुब्ध रहे कहुँ जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन। भये सखी नयना दोउ सावन ॥

१ नागिन। २ दिन। ३ पहर। ४ कामदेव। ५ कमल। ६ पृथ्वी।

दो०-ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपटकी खान ॥
अब उनसों मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥
सो०-तोहिं मिलें जो आज, मेरीसों कहियो उन्हें ॥
गहौ कछू जियलाज, बचननके सांचे बड़े ॥

उन्हें गई मैं कछू बुलावन। आपहि अजिर गये करि पावन ॥
मोपै कृपा आप यह कीन्ही। तोसों कहौं तबहि मैं चीन्ही ॥
कालिह कहूं जागे तिय गोहन। जात हुते अपने घर मोहन ॥
द्वार नन्दहि देखि डराने। मेर गृह आये सकुचाने ॥
डग मग पग दृग नींद भेररी। बारहि बार जम्हात खरेरी ॥
जब मैं कही कहांते आये। तब मोतन सन्मुख मुसकाये ॥
उत्तर नहा दियो सकुचाई। श्याम करी तब यह चतुराई ॥
कह्यो धाम मेरे निशि आवन। आपहि श्रीमुख वचन सुहावन ॥
रैनि जागि मैं सेज सँवारी। ताते जरी रिसहिकी मारी ॥
इतनी कहत द्वार हरि आये। ग्वालिनि भीतरते लखिपाये ॥
देखतही रिसमें झहरानी। कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी विधाता। आये मेरेजू सुखदाता ॥

दोहा०-ऐसे कहि चुपह्वै रही, मुरि बैठी रिसगात ॥
मधुरे बचननसों कहति, निकट सखीसों बात ॥
सो०-आयेहैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ॥
इनसों मिलिहै कौन, फिरत कहा कोऊ वही ॥

कृपा कराह अब इतहि न आवैं। उतही जाँय जहां सुख पावैं ॥
सखी लखे सब अंग श्यामके। जागे कहुँ निशि संग बामके ॥
कहुं चंदन कहुँ बन्दन रेखा। कहुँ काजर कहुँ पीक सुवेखा ॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई। मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई। परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी। मान कियो मोसों फिर बैठी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई। सैननही सी सखी बुलाई ॥

१ आंगन। २ आंख। ३ दैव।

सो कहि चली जाति घरमाई । तू बैठी जो मान दृढाई ॥
अनतहि ठाढे भये कन्हाई । तहां सखी सहजहि चलि आई ॥
निरखि वदन दोउन हँसि दीनो । सखी कह्यो तुम यह कहकीनो ॥
तब हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर। मैं मनाय लेहों तू जा घर ॥
यह सुनि विहँसि गई कहि आली। जाय मनाय लेहु बनमाली ॥

दो०—रसिकनकेमणिजान मणि, विद्या मणि गुणपाय ॥
आपनहूं तहँ ते गये, तिनको दरश दिखाय ॥

सो०—रही अकेली बाम, फिरिकै चितयो द्वारतन ॥
तहाँ न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो ॥

तब जानी फिरि गये कन्हाई । रही तिया मनमें पछिताई ॥
भई बिरह व्याकुल अति नारी । मिटगयो मान हृदय दुख भारी ॥
कहत कहा मैं यह मति ठानी । आवतही हरिसों झहरानी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीनों । कहा क्रोध मोको वह कीनों ॥
ज्यों त्यों कर मेरे घर आये । सो देखतही मैं उचटाये ॥
बार बार ऐसे पछिताई । मनही रही मसोसो खाई ॥
श्याम गये निहचै जब जानी । न्हान चली तब यमुना पानी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई। कोऊ सखी न संग बुलाई ॥
पहुँची यमुना तुरत अन्हाई । चली बहुरि घरको अतुराई ॥
भये श्याम मारगमें ठाढे । पांच बर्षके है छबि बाढे ॥
आगे ह्वै नागरिसों बोले । सुन्दर कोमल बचन अमोले ॥
कहां जाति है री तू नारी । चलु बोलति जाकी तू प्यारी ॥

दो०—बनहिं बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं ॥
सुनत बचन चकृत भई, रही बाल मुख जोहि ॥

सो०—श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमें भयो ॥
अगम चरितको जान, ब्रजवासी प्रभु कान्हके ॥

करगहि लियो चली हरषाई । गोप कुमार जान गृहलाई ॥

१ खमु । २ पश्चाताप । ३ देखरही । ४ अथाह ।

कहत श्याम बन धाम बुलाई । या बालकको लेन पठाई ॥
पूछौं याहि भेद बनको सब । कहा कह्यो है हरि यासों अब ॥
अति आनंद भयो मन बालहि । अंतहपुर लेगई गुपालहि ॥
तहां चरित्र कियो नँदलाला । भये तरुण सुन्दर ततकाला ॥
भुज गहि लई हर्षि उर लाई । चकित भई नागरि सकुचाई ॥
छांडि देहु मन मुदितै कहत तिय। ऐसे चरित करत धन धन पिय ॥
ऐसे हरि भामिनी मनाई । सुख दे गये सदन सुखदाई ॥
परम हर्ष मन भई गुवारी । रैनि बिरह तनु ताप निवारी ॥
समुझि समुझि कै पिय गुण मनमें। पुनि पुनि हर्षित पुलकित तनमें ॥
हरि ये चरित करत ब्रज डोलैं । यशुमति ढिग बालक जिमि बोलैं ॥
निजगृह गये सदा नँदलाला । परम विचित्र श्यामके ख्याला ॥

दो०–ब्रजवासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुखखान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हरषत संत सुजान ॥

सो०–ब्रज नायक घनश्याम, नट नागर गुण आगरे ॥
ब्रजवासी सुख धाम, गोपीपति नँद लाडिले ॥

अथ गुरुमानलीला ॥

सखिन संग वृषभानु किशोरी । चली न्हान प्रातहि उठि गोरी ॥
जाके घर निशि बसे कन्हाई । ता घर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढ़ी भई द्वारपर आई । कढे तहांते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ । रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनको तुरतहि प्यारी । न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥
भई बिकल तनु रिस अति बाढ़ी । रहगई सखी निरखि सब ठाढ़ी ॥
रह गये ठाढे श्याम ठगेसे । सकुचाने उर शोच पगेसे ॥
जब देखे हरि अति मुरझाये । तब सखियन भुज गहि समुझाये॥
उलटि भई सब हरिकी घाई । दैकै बांह प्रिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आय तहँ राधा । बैठी मान दृढ़ाय अगाधा ॥

१ प्रबन्ध । २ घर । ३ धान । ४ अपार ।

रिसहीके रस मगन किशोरी । भई श्याम मति देखत भोरी ॥
ठाढे चकित चित्त अकुलाहीं । मुखते वचन कहे नहिं जाहीं ॥
दो०—व्याकुललखिनँदलालको, सखियन कियो बिचार ॥
अब दोऊ जैसे मिलें, करिये सो उपचार ॥
सो०—अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासों कहैं ॥
इत ये धरत न चेत, परी रुठावनबानइन ॥
प्यारी निकट गईं सब आली । ठाढे पौर रहे बनमाली ॥
कहत मानकीनों तैं प्यारी । न्हान जात तैं फिरी कहारी ॥
तोहिं लखत हैरी गिरिधारी । अतिही डर तनु सुरति बिसारी ॥
मुरछि परे धरणी अकुलाई । तरुतमाल जनु गयो झुराई ॥
तेरी सौं कछु चितयो उनको । नेकहु चैन रह्यो नाहिं तिनको ॥
तेरे नयन अरी अनियारे । किधौं बान खर सान सँवारे ॥
भौंहकमान तान यों मारे । क्यों कर राखे प्राणपियारे ॥
घायल जिमि मूर्छित गिरिधारी । ऐसी बचन अब सींचत प्यारी ॥
बहुनायक वे तू नाहिं जानें । तिनसों कहा इतो दुख मानें ॥
बाँह गहो हरिको ढिग लावैं । अब वे निज अपराध क्षमावैं ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई । मोसों कहा गहावन आई ॥
कालिहिसोंह मोहिं उनदीनी । आजहि यह करणी पुनि कीनी ॥
दोहा—देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुखपाय ॥
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बांहगहावति आय ॥
सो०—मिलौं न तिनसों भूल, अब जो लौं जीवन जिवहुँ ॥
सहौं बिरहकी शूल, बरुताकी ज्वाला जरौं ॥
मैं अब अपने मन यह ठानी । उनके पंथ न पीऊं पानी ॥
कबहूं नयन न अंजन लाऊं । मृगमद भूलि न अंग चढाऊं ॥
हस्तबलै पटनील न धारौं । नयनन कारे घन न निहारौं ॥
सुनौं न श्रवणन अलि पिकबानी। नीले तनुपरसों नहिं पानी ॥

१ उपाय । २ टेव । ३ शरीरकी सुधि । ४ तमालवृक्ष । ५ अमृतबचन ।

सुनत सियाकी बात सुहाई । हर्षत ठाढे पौरि कन्हाई ॥
सखी कहति यों हठ नाहिं लीजै । हरिसों ऐसो मान न कीजै ॥
तूहै नवल नवल गिरिधारी । यह योवन हैरी दिन चारी ॥
क्षण क्षण जों करंको जलछीजै । सुनरी याको गर्व न कीजै ॥
नंदनँदन पिय मुख सुखकारी । तूकरि नयन चकोर पियारी ॥
हुतो प्रेम घन यह तौ प्यारी । सो अब कहु तैं कियो कहारी ॥
कहति हुती रूसों नाहिं कबही । सो अब रूसतिहै जब तबहीं ॥
सुनिहैं सुघर नारि जो कोई । करिहैं हँसी प्रेमकी सोई ॥

दोहा–मान कियो जो भावते, सोन भावतो होय ॥
उरते रिसवत प्रेम कित, अंत भावतो सोय ॥
सो०–लाख कहै किन कोय, पिय सनेह जो गाइहै ॥
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचौ किनहुँ ॥

तुम वे एक न होय पियारी । जलते तरँग होति नहिं न्यारी ॥
रस रूसनो ओसकन जैसो । सदा न रहिये चहिये तैसो ॥
तजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी । मान राधिका कही हमारी ॥
चुप न रहत कह करत मनावन । तुम आईहो बात बनावन ॥
बहुत सखी घर आई यातें । सुर्गत दिवावत पिछली बातें ॥
मोसों बात कहतहौ काकी । जाहु घरन अब कछुहै बाकी ॥
को उनकी यह बात चलावत । हैं वे अब तुमहीं को भावत ॥
तुम पुनीत अरु वे अति पावन । आई हो सब मोहिं मनावन ॥
यह कहि रही रोष भरि भारी । गई सखी लै जहां बिहारी ॥
कह्यो जाय हरिसों हरषाई । आज चतुरई कहां गँवाई ॥
बिन निज जांघन चलहि ललारे । कैसे चहत कियो सुख प्यारे ॥
हौ मनमोहन तुम बहु नायक । नागर नवल सकल गुण लायक ॥

दोहा–मान तजै नहिं लाडिली, थाकीं सबै मनाय ॥
बेगि यत्न कछुकीजिये, रचिये आप उपाय ॥

१ अंजलीका पानी । २ लहर । ३ ओसकी बूंद । ४ पवित्र । ५ योग्य ।

सो०-रच्यो दूतिका¹ रूप, तब मनमोहन आपही ॥
करितिय स्वांग अनूप², गये जहां प्रियमानिनी ॥

बैठे निकट सखी मिसजाई । कहत श्रवण ढिग बात सुहाई ॥
बन घनश्याम धाम तू प्यारी । करि बैठा यों मान कहारी ॥
मैं उतगई तोहिं नाहिं पाई । हरिकी दशा देखि फिरि आई ॥
अति आरति मन कुंजबिहारी । इकले खड़े गहे द्रुमै³ डारी ॥
तेरोइनामरटत मुख माहीं । और कछू तिनको सुधिनाहीं ॥
देखत बिथा⁴ भई मुहिं गाढी । चल तू होहि नेक ढिग ठाढी ॥
कुंज भवन ठाढे दोउ देखों । तब मैं नयन सफल करिलेखों ॥
अब हरि कहत कृपा मोहिं कीजे। जो बूझिये दंडसो दीजे ॥
अति आतुर मीतमको लेरी । हठतजि हाहाकहि सुनिमेरी ॥
तुव कारण वृषभानु दुलारी । मेरे पांय परत गिरिधारी ॥
अब मैं पांय परतिहौं तेरे । करु अपराध क्षमा हरि केरे ॥
चाहत कियो श्यामको जोई । उन्हें जानि मोसों करि सोई ॥

दोहा-क्षण क्षण परशत चरणकर, क्षणक्षण लेत बलाय ॥
कहत प्रिया अब मानतजु, पुनिपुनि हाहाखाय ॥

सो०-लखिलखिसखी सिहात, चरित ललितनंदलालके ॥
मनहीं मन मुसुकात, भरी प्रेम आनन्द रस ॥

तब चितयो प्यारी नयनन भर । आयो उघरि लाल लीलाधर ॥
श्याम चतुरई मोसों माडत । वे गुण तुम अजहूं नहिं छांडत ॥
इन छंदन में मानत हौं जू । नीके सब गुण जानतहौं जू ॥
रस वा दिन मोको करि पाई । वे बातैं सब देहु भुलाई ॥
यह कहि बहुरि भई रिस हाई । रहे श्याम ठाढे सकुचाई ॥
गहे ग्रीव पट अति आधीना । जलके निकट दीन जनु मीनों⁵ ॥
फिरि पौढी दै पीठ श्यामको । हृदय बिरह दुख अधिक वामको ॥
कर आरसी अग्रो लै धारैं । पट⁶ अंतर हरि बदन निहारैं ॥

१ दूती । २ अद्भुत । ३ वृक्ष । ४ वेदना । ५ मछली । ६ वस्त्र ।

रिसवश धरत नहीं मन धीरा । तलफत हिये बिरहकी पीरा ॥
इत नागरि उत नागर ओऊ । भली चतुरई बाढ़े दोऊ ॥
जिते जिते मुख फेरति प्यारी । तितही ढ़रि आवत गिरिधारी ॥
जोइ जोइ बात भावतिहि भावैं । सोइ सोइ बातें श्याम चलावैं ॥

दोहा–करि हारे छलछंद सब, छुवन न पावत छांह ॥
हठ छांडत नहिं लाडिली, हरि शोचत मनमाँह ॥

सो०–देखि श्यामको दीन, बिरह बिवस प्यारी निकट ॥
सखियाँ परम प्रवीन, तब सब समझावन लगीं ॥

लखुरी कमल नयन तो आगे । कबके हहा करत अनुरागे ॥
तेरे भयते कुँवर कन्हाई । आये तियको रूप बनाई ॥
मधुर मधुर वचनन बनवारी । तोहिं मनावति हैं री प्यारी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे । कियो कहा चाहति है आगे ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये । आदर नहिं चुकिये घर आये ॥
वेतौ वनके भवँर बिहारी । तोसी और वेलिको प्यारी ॥
करि सन्मान बिहँसिकर वैसो । कीनो कहा निठुर मन ऐसो ॥
पावत कहा मान के कीने । कहा गमावत आदर[2] दीने ॥
होत कहा घूंघट पट खोले । कहा नशात तनकमन बोले ॥
ऐसी कहा कीजियत है री । प्रीतम छांड़ि राखियत बैरी ॥
निज बश मदन गुपालहि जानी । ऐसी कहा अधिक इतरानी ॥
सिखकी कहत अनसिखी आवै । कहातोहि कोई समुझावै ॥

दोहा–जो नहिं मानति श्यामसों, मानहि रहिहै हाथ ॥
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ[3] ॥

सो०–ऐसे कहिहै कौन, मान प्रिया हम कहतिहैं ॥
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सो तेरे वशह्वै परयो ॥

ऐसो समय बहुरि नाहिं पैहै । सुनुरी फिरि पाछे पछितैहै ॥
यह योवन है धन स्वमेको । मान मनायो पिय अपनेको ॥

१ चतुर । २ आदर । ३ कामदेव ।

अब ये दिन रूसनके नाहीं । प्रिया विचार देखु मनमाहीं ॥
पावस ऋतु कीयोरी फेरो । गर्जत गगन भयो घनघेरो ॥
बोलत दादुर चातक मोरा । चहुं दिश करति पवन झकझोरा ॥
बरषत मेघ भूमि हित लागी । नारि सकल पीतम अनुरागी ॥
जे बेली ग्रीषमऋतु दाहीं । ते हुलसी तरुसों लपटाहीं ॥
सरिता उमंगि सिंधुको जाहीं । मिलत सरी सर आपसमाहीं ॥
भयो समो यह दिवस चारको । नंदनंदन प्रिय संग विहारको ॥
सुनि सखियनके वचन किशोरी । उमग्यो प्रेम रही रिस गोरी ॥
रिस करि कह्यो जाहु उठि ताके । रस कर हाथ बिकाने जाके ॥
मुख सों भलो मनावत मेरो । रहत सदा अनतहि चितघेरो ॥
दो०-सांच बखानत जगत सब, बिरद तुम्हारो लाल ॥
गहे रहत मनतियनके, बिहँसि कह्यो यों बाल ॥
सो०-भये प्रफुल्लित श्याम, बिरह ताप तनुको गयो ॥
हर्षि उठीं तब बाम, प्यारी मुखविहँसत निरखि ॥
तब बोले हरि दोउ कर जोरी । तेरी सौं वृषभानु किशोरी ॥
तूही हित चित जीवन मोको । सदा करत आराधन तोको ॥
तू ममतिलक तूही आभूषण । पोषण तेरेइ वचन पियूषण ॥
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊं । अब तज मान हृदय सुख पाऊं ॥
कर जोरे विनती करि भाख्यो । कहत शीश चरणनपर राख्यो ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी । तब बोलीं उठि सखी सयानी ॥
सुनहु श्याम तुमहो रस सागर । रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥
तुमते प्रिया नेकनाहिं न्यारी । एक प्राण द्वैदेह तुम्हारी ॥
प्यारीमें तुम तुममें प्यारी । जैसे दर्पण छांह निहारी ॥
रसमें परे विरस जहँ आई । होय परति तहँ अति कठिनाई ॥
अबके हमसब देति मनाई । परसो प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रुठायहो जो गिरिधारी । राम रामतो बहुरि हमारी ॥

---

१ आकाश । २ बादल । ३ मेंढक । ४ अमृतरूपी वचन । ५ स्पर्शकरो ।

दो०–जब परशे प्यारी चरण, परम प्रीति नँदनन्द ॥
छुट्यो मान हरषी प्रिया, मिट्यो विरह दुखद्वन्द ॥
सो०–उर आनन्द बढाय, प्रेम कसौटीकसि पियहिं ॥
अवगुणमन विसराय, मिली प्रियाउठिश्यामसों ॥
हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी । भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाये। रुचिर शृंगार शृंगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट भोजन मन भाये । दोउन एकहीं थार जिमाये ॥
दिये पान अचवन करवाये । सुमन सुगंध माल्र पहिराये ॥
लैबीरा अपने कर प्यारी । दीनो वदन विहँसि गिरिधारी ॥
तबहिं सफल यौवन हरि जान्यो। परमहर्ष उर अन्तर मान्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी । तब सखियन आरती उतारी ॥
अतिआनन्द भरे दोउ राजैं । अरस परस निरखत छवि छाजैं ॥
पाये वश करि कुंज विहारी । विहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी॥
सुनहु श्याम वर्षाऋतु आई । रचहु हिंडोला शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारे । सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुन तियवचन श्याम सुख पायो। ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥
छं०–तिय मान हरि ऐसे छुडायो, भक्तहित लीला करी ॥
निगम नेति अपार गुण सुख, सिंधु नट नागर हरी ॥
यह मानचरित पवित्रहरिको, प्रेमसहितजोगावहीं ॥
करहिं आदर मान तिनको, संत जन सुख पावहीं ॥
दो०–राधा रसिक गोपालको, कौतूहल रस केलि ॥
ब्रजवासी प्रभु जननको, सुखद कामतरुवेलि ॥
सो०–सफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत ॥
तिनको सदा हुलास, ब्रजवासी प्रभुकी कृपा ॥

अथ हिंडोरावर्णनलीला ॥

भक्त वश्य प्रभु कुंजविहारी । भक्तन हित लीला अवतारी ॥

१ मीना । २ मुख । ३ स्त्री । ४ कल्पवृक्षकी बेल । ५ प्रतिदिन ।

सदा सदा भक्तन सुखदाई। करत सदा भक्तन मन भाई॥
प्रेम भक्ति दृढ ब्रजकी बाला। भये बश्य तिनके नँदलाला॥
जो जो सुख तिनके मन भावें। सोसो ब्रजमें श्याम बनावें॥
समय समयके सुखद बिहारा। करें तियन सँग नन्दकुमारा॥
ग्रीषम गत पावसऋतु आई। परम सुहावन जन सुखदाई॥
श्रीराधा मनकी रुचि जानी। तबहिंडोल लीला मन आनी॥
यमुना पुलिन गये मनभावन। वृन्दाबन घन परम सुहावन॥
सखिन सहित सोहति सँगप्यारी। कोटिक करत मनोज बिहारी॥
अति आनन्द उमँगि चहुँ ओरा। घुमड़ि रहे पावस घन घोरा॥
जहां तहां बगपांति[1] उड़ाहीं। चपला[2] चमक रहीं घन माहीं॥
गर्जत मधुर श्रवण सुखदाई। शैसिय बहत समीर[3] सुहाई॥

दो०—नाना रँग खगफूल फल, लगे नगनके चार ॥
गज मुक्तनके झूमका, झालर झबा अपार ॥

सो०—शोभित लता बितान, अति उतंग तरु सुमनयुत ॥
रहे पान मिलपान, विविध नगन मानहुँ जडे ॥

कनकबर्णमय[4] भूमि सुहाई। छबिहिंडोर नहिं बर्णि सिराई॥
तापर रसिक छबीले दोऊ। उपमा को त्रिभुवन नहिं कोऊ॥
नन्दनँदन वृषभानु किशोरी। गौर श्याम सुन्दर छबिजोरी॥
चढे उमँगि आनँद उर भारी। निरखत छबि नभ सुर नरनारी॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहैं। श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहैं॥
प्यारी अंग बैंजनी सारी। शोभित चहुँ दिशि चारु किनारी॥
युगल अंग भूषण छबि छाये। रुचि रुचि सखि शृंगार बनाये॥
उर रत्ननके हार बिराजैं। सुमन हार अतिशय[5] छबि छाजैं॥
उत कुंडल इत तर वनकी छबि। रह्योलजाय निरखि छबि को रवि॥
सखि गण क्षण तृण तोर निहारें। वारत प्राण रीझ रिझवारें॥
भरि उछाह ऊंचे सुर गावें। पिय प्यारीको हर्ष झुलावें॥

१ बगुलाओंकीपंक्ति। २ बिजुली। ३ पवन। ४ स्वर्णवर्ण। ५ अत्यंत

ताल मृदंग बांसुरी बीना । बाजत सरसमधुर सुरलीना ॥
दो०-यह सुख सुनि ब्रज सुन्दरी, अपरसकल नव बाल ॥
वृन्दावन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल ॥
सो०-चलीं सकल अनुराय, नवसत साजि शृंगार तन ॥
गृहकारज बिसराय, मनमोहन के रस पगी ॥
चुनि करि पहिरि चूनरी सारी । अरुण चुहचही कोर किनारी ॥
यूथ यूथ मिलि हरि पै आवें । तिन्हें प्रिया पिय निकट बुलावें ॥
आदर बचन सप्रेम सुनावें । सबके मनकी साद पुरावें ॥
एकन लेत निकट बैठाई । एकै चढत पींग पर धाई ॥
एक बुलावति अति सचुपाई । गावति एक मलार सुहाई ॥
राग रंग सुख बरणि न जाई । रह्यो छाय घन निधि बन जाई ॥
युवति वृन्द चहुँ ओर सुहाई । भूषण भीर वर्णि नहिं जाई ॥
बसन सुगध सने बहुरंगा । भवँर भीर छांडतनहि संगा ॥
हरि मुख शशि लखि शुभग अनंगो।उमगि मनो छबिसिंधतरंगा ॥
देत चाव भरि जब झकझोरा । होति अधिक छबि बढतहिंडोरा ॥
ऊंचो मिलत द्रुमन सों जाई । लेत जहां ते सुमन कन्हाई ॥
ज्यों ज्यों पैंगबढति अति भारी । त्यों त्यों डरति कुँवरि सुकुमारी॥
दोहा-राखु राखु सखियन सहित, सौंह दिवावत जात ॥
जब नाहिं सकत सँभारि तन, तब पियसों लपटात ॥
सो०-हँसत परस्पर बाल, तब हिंडोल राखत पकरि ॥
करति चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रस भरे ॥
इक उतरत इक चढत हिंडोरे । इक आतुर चढिबेकोदोरे ॥
एक कहति मोहि देहु उतारी । एक चढनको बिनवति नारी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखें । मधुर वचन सबसों हँसि भाषें ॥
कबहुँ अकेले झूलत मोहन । गावति युवती सब मिल गोहन ॥
कबहूं युवतिन देत चढ़ाई । आप झलावत कुँवर कन्हाई ॥

१ जल्दी जल्दी । २ लीन । ३ लाल । ४ झुंडझुंड । ५ कामदेव ।

कबहूं मुरली मन्दे बजावें। कबहूं संग सबनके गावें॥
बिच बिच देत कोकिला टेरे। रहे सजल घन झुकि अतिनेरे॥
परत फुवार मंद श्रमहारी। बहत त्रिविध अति सुखद बयारी॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी। राधा नाम रटत बनवारी॥
ऐसे गोपिनसों मन मोहन। करत केलि कौतूहल गोहन॥
अति आनन्द सबन उपजावें। निरखि सुमन सुरगण बरषावें॥
जय जय जय ध्वनि बोलत बानी। धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी॥

छं०—कहत ब्रजधनि अमर अंबर, सकल मन आनँद भरे॥
कहत मन मन इहे चाहत, हमन बिधिब्रज द्रुमे करे॥
भक्त हित प्रभु अजे सनातन, ब्रह्म तनु धरि अवतरे॥
बर्णि कापै जातसो सुख, करत जो नित ब्रज हरे॥

दोहा—नित लीला आनन्दनित, नित नव मंगल गान॥
धनि धनि जिनके चित रहत, ब्रजबासी प्रभु ध्यान॥

सो०—हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत॥
रहत सदा नँदलाल, ब्रजबासी तिनके निकट॥

अथ फाल्गुनवर्णनलीला॥

जय जय जय श्रीनित्य विहारी। नित्यानन्द भक्त हितकारी॥
ब्रह्मरूप अवतरे मुरारी। नितनव करत बिहार बिहारी॥
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा। नित्य रूप राधा ब्रज वामा॥
नित्य रास जल केलि बिहारा। नित्य मानखण्डन व्यवहारा॥
नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोरा। नित्य प्रेम सुख सिंधु हिलोरा॥
नित्य नवल हितहरि सँगजोरी। नित्य नवल छबि मन्मँथ चोरी॥
नित वृन्दावन घन सुखदाई। सदा वसंत रहत जहँछाई॥
सदा सुमँन नवपल्लव डारी। सदा त्रिविध मारुत सुखकारी॥
सदा मधुप मधुमाते डोलें। कोकिल कीर सदा कलिबोलैं॥

१ धीरे धीरे। २ षंड, वृक्ष। ३ अजन्मा। ४ कामदेव। ५ फूल। ६ पवन

सुनि सुनि नारि हृदय सुख पावैं । मनहीं मन अभिलाष बढावैं ॥
वारि वारि कहि हियसुख पावैं । ऋतु वसन्त आई समुझावैं ॥
फागु चरित अतिसाद हमारे । खेलैं मिलि सब संगतुम्हारे ॥
दोहा—ब्रज वनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहुं ब्रजराज ॥
देखहु वन शोभा निरखि, अतिहि विराजत आज ॥
सो०—खेलतहैं दोउ फाग, मानहुँ मदन वसन्त मिलि ॥
लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो ॥
द्रुमन[1] मध्य टेसूतरु फूले । करत प्रकाश अग्निसम तूले ॥
मानहु निज निज मेरु सुहाई । हर्षि सवन होलिका लगाई ॥
कुंज कुंज कोकिल सुखदानी । बोलति विमल मनोहर वानी ॥
निलज भई जनु ब्रजकी नारी । गावति गृहपति चढी अटारी ॥
नाना खग[2] ककी शुकनारी । जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहु परस्पर नर अरुनारी । देत दिवावत हैं सबगारी ॥
प्रफुलित लताबिलोकतजितहीं । अलि मधुमत्त जातचलि तितहीं ॥
मानहु गणिका[3] देखि सुहाई । मतवारे लपटतहैं धाई ॥
पुहुप पराग अबीर सुहाई । लिये समीर[4] फिरतहैं धाई ॥
संयोगिन रस अनरस विरहन । कर छोड़तमनभायो सबहिन ॥
नवपल्लवदल सुमन सुहाये । वर्ण वर्ण विटपन छबिछाये ॥
जनु ऋतुराज[5] संग छवि बाढ । बहुरंग भरे लसतजनुठाढे ॥
दोहा—भँवर गुंज निरझरशवद, वजत दुंदुभी चारु ॥
रची मण्डलीमदन जनु, जहँ तहँवि बधविहारु ॥
सो०—वृन्दा बिपिन समाज, कहँ लगि वर्णि वखानिये ॥
कान्ह तुम्हारे राज, क्रीडत सब आनँद भरे ॥
रचहु फाग सुख अब नँदलाला । कर जोरे विनवति सब बाला ॥
सुनि गोपिनके वचन कन्हाई । रची फागलीला सुखदाई ॥
विहँसि कह्यो तब श्री गिरिधारी । सजहु समाज जाय तुम प्यारी ॥
हमहुं सखन संगलै आवैं । फागु रंग ब्रजमाहिं मचावैं ॥

१ वृक्षोंके बीच । २ पक्षी । ३ वेश्या । ४ पवन । ५ वसन्तऋतु ।

यह सुनि मुदित भई ब्रजबाला। गये सदनको मदन गोपाला॥
सखा वृन्द सब श्याम बुलाये। सुतन सकल आतुर जुर आये॥
हँसि हँसि उन्हें श्याम समुझायो। आयो फागुन मास सोहायो॥
भैया हो सब खेलैं होरी। भरो अबीर गुलालन झोरी॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे। होरी साज सजन सब लागे॥
कंचन कलश अनेक सुहाये। केसर टेसू रंग भराये॥
अतर अरगजा विविध बिधाना। लिय सुगंध भाजन भरनाना॥
पीत अरुण बर बसन बनाये। नेह सुगन्धन अति मन भाये॥

दोहा—अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल॥
नयन सैन शोभा हरण, बनी मण्डली ग्वाल॥

सो०—पान भरे मुख लाल, उसकाये बाँहें झँगा॥
फेंटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चन बरन॥

फेंटा पीत श्याम शिर सोहै। तुर्रा की झलकन मन मोहै॥
तापर मोर चंद्र छबि न्यारी। कोटि चंद्र रबि छबि बलिहारी॥
केसर खौर भाले शुभकारी। बीच तिलक की रेख शृंगारी॥
भौहैं कुटिल नयन रतनारे। कुण्डल झलक केश घुंघरारे॥
चारु कपोल मनोहर नाशा। मन्द हँसनि द्युति दशन प्रकाशा॥
अधरे अरुण चिबुक छबिसीवां। कटि अति ललित कंबुकलग्रीवां॥
झँगा झीन रँग पीत सुहायो। शोभित तनु छबिसों लपटायो॥
घेरदार संजाफ जरीकी। झमकि रही छबि उमँग भरीकी॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं। कंचन मणिमय मोहत मनहीं॥
कर चूडामणि जटित अँगूठी। लसत अँगुरियन भांति अनूठी॥
बाहु बिजौटा जटित रतनको। चन्दन चित्रित श्याम ललनको॥
झलकत झीन झँगाके माहीं। सो छबि कहत बनत मुख नाहीं॥

दोहा—कटि पर पट पीरो कसे, कनक किनारे चार॥

---

१ प्रसन्न। २ सुवर्णका कलश। ३ पात्र। ४ मनोहर। ५ मस्तक।

तापरखोंसे मुरलिका, उर मुक्तनके हार ॥
सो०–तापर ललित बिशाल, माल गुलाब प्रसूनकी ॥
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँद लाडिलो ॥
बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो । मधि नायक नँदनंद छबीलो ॥
खेलत श्याम चले ब्रजहोरी । उड़त अबीर गुलालन झोरी ॥
बाजत ताल मृदंग सुहाई । डफ मुहचंग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी कल जोरी । बीच बीच मुरली सुरबोरी ॥
कोउ नाचैं कोउ भाव बतावैं । होरी गीत मिले सुरगावैं ॥
ब्रज बीथिन बीथिन सब डोलैं । होहो होरी मुखते बोलैं ॥
मिलत गलिनमें जा नरनारी । बचत नही दीन्हें बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डारैं । भरि भरि पिचकारिन रँग मारैं ॥
बोलत होरी बचन सुहाई । करि छांडत सब मनकी भाई ॥
गोरस केसर माते डोलैं । घरन घरनके फटका खोलैं ॥
जो कोउ भाजि रहति घर बैठी । बरिआई आनत तिहि पैठी ॥
अटन चढी देखैं ब्रजनारी । छज्जन ते छुटाहिं पिचकारी ॥
दोहा–गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहिं गारि ॥
डारत अबिर गुलालकी, झोरी भरि भरि नारि ॥
सो०–इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उडावहीं ॥
पिचकारिनके जाल, बर्षत भरि केशर ललित ॥
होत कुलाहल आनँद भारी । रंग अबीरन महल अटारी ॥
ह्वै गइ ब्रजकी बीथिन बीचा । अबिर गुलाल कुंकुमाकीचा ॥
ऐसे संगलिये सब ग्वाला । करत फागु कौतुक नँदलाला ॥
भीज रहे केसरि रँग बागे । नख ते शिख गुलाल ते पागे ॥
आनँद भरे मुदित सब गावत । गुणी जननके बाल नचावत ॥
बरसानेको चले कन्हाई । यह सुधि कुवँरि राधिका पाई ॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई । सुरत सकल आतुर उठि धाई ॥

१ मोतियोंकी माला । २ फूल । ३ गलियोंमें । ४ शीघ्र ।

नवसतं सकल मनोरथ साजैं। बरण बरण वर बसन बिराजैं॥
वेंदी भालं बिराजत रोरी। मुख तँबोल तनुकी छबि गोरी॥
होरी खेल सुनत सब चोपी। आई प्रिया निकट सब गोपी॥
हँसि हँसि सबसों कहति किशोरी। चलौ श्याम सँग खेलैं होरी॥
पकरि आज मोहनको लीजे। मन भाई तिनसों सब कीजे॥

दो०ललितादिक ब्रज नागरी, मिलि सब सजो समाज॥
तिनमें श्रीकीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज॥

सो०–परमरूप की रास, गुणागार नवनागरी॥
राजति भरी हुलास, मनमोहन मनभावनो॥

नख शिखलों तव सुन्दर ताई। रही छाय छबि पुंजनिकाई॥
भूषण जाल लाल नग केरे। शोभित अंगन सुभग घनेरे॥
मुखछबि बर्णि सकै सो को है। जाहि देखि मोहन मन मोहै॥
लसति नवल तनु सुंदर सारी। केसरिया कीनी जरतारी॥
गुलगचको लहँगा चटकीलो। घेर घनो अति छबि न छबीलो॥
कंकण किंकिणि नुपूर बाजैं। होरी साज सजे सब राजैं॥
रंग गुलाल संग सब लीनो। सोहति युवति यूथ रँग भीनो॥
मृगमद केसर मेल मिलाई। मथि मथि लीने कलश भराई॥
हाथनमें लीने नवलासी। चलीं श्याम घन पै चपलासी॥
युवति यूथ लै संग किशोरी। वही जाय आगे ब्रज खोरी॥
उतते आये मदनगुपाला। सोहत संग भीर नव बाला॥
देखि परस्पर आनँद बाढ्यो। दुहुँदिशि गोलभयो हकिठाढ्यो॥

दो०–भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल॥
नवलासी लैलै करन, सिमिटि चलीं उतवाल॥

सो०–भो भटभेरो आन, परी मार बिच रंगकी॥
करत न कोऊ कान, मन भाई मुखते कहत॥

भरि भरि मूंठि गुलाल चलावैं। होहो होरी बचन सुनावैं॥

१ सोलहशृंगार। २ मस्तक। ३ बिजुलीसी। ४ मिलाप। ५ लाज।

केसरि रँग लै लै पिचकारी । तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी । भइ गुलालकी घटा अँधेरी ॥
आय परत जाके जो बैडैं । सो केसरिके कलश उलेडैं ॥
लगि लगि रहे चीर अंगनसों । पहिचाने नहिं परत रँगनसों ॥
मुखशोभा कछु कहति न जाई । रही गुलाल झलक छबिछाई ॥
कबि उपमा कहि कहा बखाने । शशि सरोज दोऊ सकुचाने ॥
सकुच रहित गारी सब गावैं । दुहुँ दिशि लै लै नाम चुकावैं ॥
बाजत बीन रबाब तँबूरा । ताल पखावज ढोलक तूरा ॥
नवलासी चपलासी गोरी । मारति ग्वालन कहि कहि होरी ॥
यक भागे यक ढंढन लागे । एक अबीर डारि मुख भागे ॥
मच्यो खेल रँग रस अति भारी । सखियन बोलि कह्यो तब प्यारी ॥

दो०—छल बल कर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ॥
आंख आंजि मुख मांडितब, छांड्यो हहाकराय ॥

सो०—हैं अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नाहिं मानिहैं ॥
वसन चुराये आन, लेहिं दाँव सो आपनो ॥

तब यक तिय हलधर वपु काछ्यो । चली ओढि नीलांबर आछ्यो ॥
निकस यूथ ते ह्वै कै न्यारी । निकसी जित ठाढ़े बनवारी ॥
हरि जान्यो आये बलदाऊ । चले अकेले लेन अगाऊ ॥
गये निकट ताके हरि जबहीं । धरे जाय औचक तिन तबहीं ॥
आईं धाय और सब नारी । लीने पकरि श्याम अँकवारी ॥
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला । ढीठो बहुत दई तुम लाला ॥
सोफल आज तुम्हें सब देहैं । दांव आपनो नीको लेहैं ॥
ठाढे हँसत दूर सब ग्वाला । कहत गये पकरे नँदलाला ॥
हँसति कुँवरि राधा दुर ठाढ़ी । पिय मुख निरखि सकुच उरै बाढ़ी ॥
किनहूँ लियो पीत पट छोरी । काजर दियो किनहुँ बरजोरी ॥
काहू बेनी शीश सँवारी । मुख गुलाल लावति कोउ नारी ॥

१ चंद्रमा । २ कमल । ३ वस्त्र । ४ वेषवनाया । ५ लाज भेई ।

काहू उर अरगजा लगायो । काहू रंग शीश ढरकायो ॥
दोहा-गये छूटि मोहन तबै, गोहन चले पराय ॥
आन मिले निज सखनमें, रही नारि पछिताय ॥
सो०-करमींजति पछितात, कहति परस्पर बाल सब ॥
भली बनीथी घात, दांवलेन पाई नहीं ॥
गये आजु तुम भजि नँदलाला । जैहौ कहां काल्हि गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हमसों । सो हम दांव लेइगी तुमसों ॥
पीताम्बर अपनो यह मीजे । पठै ग्वाल काहूको दीजे ॥
कै आपही आय लै जाहू । अब हम नहीं पकरिहैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दैकै । बेनी छोरत हैं कर लैकै ॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई । पीताम्बर लै आवहु जाई ॥
भाजत हार हियेते टूटे । पीताम्बर गहनेदै छूटे ॥
तबहि कह्यो हरि नंददुहाई । अबहि पीतपट लेत मँगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो । युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो सुमिलि युवतिनके माही । हँसत जाय ठाढ़ो पट पाही ॥
कहत देहु पट धरैं दुराई । अब नहि पावहि कुँवर कन्हाई ॥
अब यह पट हरिको तब देहैं । दांव आपनो जब हम लेहैं ॥
दोहा-ऐसी कहि पटलै लियो, आयो चमकि गुवाल ॥
फेरयो करसों श्यामलै, चकित भई सब बाल ॥
सो०-लखि हरिकी चतुराय, भई थकित ब्रजबाल सब ॥
धिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम ॥
गये आज बचिकर चतुराई । अब बदिहैं जो बचहु कन्हाई ॥
अब तो लाग लगीहै हमसों । जब लगि दाँवलेति नहि तुमसों ॥
पकरि नचावहि तुमहि बिहारी । तब कहिहौ हमको ब्रजनारी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने । इन बातन कछु भय नहि माने ॥
जान लियो हम कपट तुम्हारो । अब तुम कह कर सकत हमारो ॥
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई । छांडौ अपनी विनय कराई ॥

१ पीताम्बर । १ स्त्रीकारूप । ३ बिनती ।

नेक कान मानतहौं तिनकी । सखी कहावति हौ तुम जिनकी ॥
यह सुनि तब युवती मुसकानी । कहा करत हो श्याम सयानी ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह कन्हाई । जो नहिं विनय करावहु आई ॥
सखन सहित तब मोहन करषैं । लैलै पिचकारिन रँग बरषैं ॥
उत सब युवती ह्वै इक ठौरी । लैलै नवलासी सब दौरी ॥
दियो सबको मारि हटाई । भाजि चले तब कुँवर कन्हाई ॥

दोहा–भाजे भाजे कहत सब, तारीदै ब्रजबाल ॥
जो तुम जाये नंदके, ठाढे रहौ गुपाल ॥

सो०–फिरे बहुरि घनश्याम, सखा वृन्द सब फेरिकै ॥
शिथिल करी ब्रज बाम, झोरी मारि अबीरकी ॥

ऐसे खेलत रस मिलि होरी । इत मोहन उत कुँवरिकिशोरी ॥
गोपी ग्वाल संग सब लीने । मोहन सकल रंग रस भीने ॥
कबहुँ परस्पर गावत गारी । कबहुँ करत रस वाद विहारी ॥
कबहुँ अबीर गुलाल उड़ावैं । कबहूं रंग सलिल वरषावैं ॥
अरस परस छबि निरखत दोऊ । परमानन्द मगन सब कोऊ ॥
चढे बिमानन नभ सुर देखैं । जन्म सफल ब्रजको करि लेखैं ॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन वर्षावैं । जय जय करि प्रभुको यश गावैं ॥
ऐसे श्याम रंग रस राख्यो । ललता आय बीच तब भाष्यो ॥
आज श्याम तुम औचक आये । हम काहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई । भई सांझ अब कुँवरकन्हाई ॥
काल्हि मात है बार हमारी । देखैंगी मनसाय तुम्हारी ॥
ऐहैं नन्द गांवलौं प्यारी । रहियोसजग लाल गिरिधारी ॥

दोहा–प्यारी करते पानलै, दीन्हें सखी सुजान ॥
मात अवधि वदि खेलकी, राख्यो दुहुंदिशि मान ॥

सो०–घर आये घनश्याम, सखन संग गावत हँसत ॥
गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनँदभरी ॥

---

१ राधिकाजीकी । २ राधा । ३ जल । ४ आकाश । ५ पुरुषार्थ । ६ कृष्ण ।

परमानन्द सकल ब्रजनारी। कृष्ण केलि सुखकी अधिकारी ॥
लोक लाजको भय नहिं मानैं। कृष्ण बिलास सदा उर आनैं॥
श्रीराधिका कुँवरि सुखदाई। मात सखी सब बोलि पठाई ॥
कियो विचार सबन मिलि गोरी। नन्द गांव खेलैं चलि होरी ॥
मिलि मोहन सों यह सुखकीजै। फगुवा नन्दमहर सों लीजै ॥
सामा सकल खेलकी लीनी। रंग गुलालन सों बहु कीनी ॥
मथि मथि विविध सुगंधन लीन्हे। भांति अनेक अरगजाकीन्हे ॥
भरि भरि भाजन कनक[1] सुहाये। अमित सुगंध न जाहिं गनाये ॥
ले कांवरिन अनेक अपारा। चले संग सजि सुभग शृँगारा ॥
ग्वालिनि यौवन गर्व गहेली। श्रीराधा सँग चली सहेली ॥
कुंकुम उवटि कनक तनु गोरी। रूप राशि सब नवलकिशोरी ॥
एक बयसं सुन्दर सब राजैं। निरखत कोटि मदन तिय लाजैं ॥

दोहा–नवसत साज शृंगार तनु, अंग अंग सब ग्वारि ॥
चंद्रावलि ललितादि सब, अमित[3] गोप सुकुमारि ॥
सो०–को कवि वरणै पार, प्यारी सब नँदलालकी ॥
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवननहीं ॥

सुमन सुगंधन गूंथी वेणी। लटकत कनक छबी छबि श्रेणी ॥
मोतिन मांग बनी अतिनीकी। केसरि आड़ जड़ाऊ टीकी ॥
कुटिल[4] भौंह अलकैं, घुंघरारी। मन मोहन मन मोहनहारी ॥
खंजन नयन मधुप मृग हारे। अंजन रेख सुभग अनियारे ॥
श्रवणनतरवण रवि सम ज्योती। नकबेसरिलटके गज मोती ॥
दशन कुंद बिंबाधर सोहैं। चिबुकनीलकण छबि मन मोहैं ॥
कंठ कपोत मोति उर हारा। जनुयुग गिरि बिच सुरसरि[5] धारा॥
कुचचकवा मुख शशिभ्रमभूले। बैठे बिछुरि मनहुँ दुहुँकूले ॥
कर कंकण चूरी गजदंती। नखमणि माणिकमेटत कंती ॥
नाभी हृदय कहा कवि वरणै। कटि मृगराज लेत जनु निरणै ॥

---

१ सुवर्णके पात्र। २ उमर। ३ असंख्य। ४ टेढी। ५ गंगा।

चरणन नूपुर बिछिया बाजैं। चालमराल चलत कल राजैं॥
लहँगा कसब पीतरँग सारी। चमक चहूं दिशि लाल किनारी॥

दोहा–नख शिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम॥
तिनमें श्रीराधा कुवरि, राजत अति अभिराम॥

सो०–लईं सबन गहि हाथ, पीरे सुमननकी छरी॥
होरी हरिके साथ, नँदगाँव खेलन चलीं॥

प्रेम प्रीतिके रसबश पागीं। नंदनँदन पियकी अनुरागीं॥
करतिकेलि कौतुक मन माहीं। अबिर गुलाल उड़ावत जाहीं॥
लीनोघेरे नंदगृह जाई। बसत तहां मन हरन कन्हाई॥
शोभित रूप लतासी गोरी। गावत फाग नंदकी पोरी॥
सुनि सुन्दर वर बाहेर आये। हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये॥
एकन एक भई सब नारी। होरी खेल मच्यो अति भारी॥
मृगमद कुंकुम चंदन घोरे। लैलै पिचकारी करदोरे॥
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी। अबिर गुलालन मारहिं गोरी॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई। महिकेसरिकी कीच सुहाई॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजैं। गान सुनत गण गंध्रव लाजैं॥
पकरत एक एक छुटि भाजैं। गारी देत एक तजि लाजैं॥

दोहा–हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद॥
सखिन संग उत लाडिली, इतै सखा नँदनंद॥

सो०–औचक धाईं बाम, गहनै हेतु नँदनंद तब॥
गहि पाये बलराम, निकसिगये हरि भाजिके॥

अति निशंक सब ब्रजकी गोरी। तामें अवसर पायो होरी॥
भरि भरि केसरिरंग कमोरी। लैलै हलधरके शिरढोरी॥
अबिर उडाय अँधेरो कीनो। ललतागहि दृगकाजर दीनो॥
व्यंग बचन सब कहत सुहाई। लेहु रोहिणी मात बुलाई॥

---

१ हंस। २ मनोहर। ३ बलराम। ४ पृथ्वी। ५ पकड़नेको।

हास विलास विविध कहिगावैं । इत उत बल कहुँ जान न पावैं ॥
फगुआ मन भावतो मँगाई । हलधर झांड़े विनय कराई ॥
हँसत सखन मिलि कुँवर कन्हाई। आये दोऊ आंख अँजाई ॥
तब हलधर दुचिते हरि कीने । युवतिन धाय श्याम गहिलीने ॥
सिमटे सखा छुडावन धाये । युवतिनसे हरि छुटन न पाये ॥
लैलै नवलासी नव बाला । दिये हटाय मारि सब ग्वाला ॥
श्यामहिं जीत यूथमें लाई । भई सबनके मनकी भाई ॥
रस लम्पट नँदनंद कन्हाई । दीनो आपुन आनि गहाई ॥
दो०–लेआई प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल ॥
कहिये अब कैसो बनी, बहुत करत हो गाल ॥
सो०–एक कहति मुसकाय, वसन हरेते आपुहो ॥
हमहूं वसनछुडाय, लेहिं दांव अब आपनो ॥
कान्ह कह्यो करिहो कह मेरो । सोई पाय भयो अबनेरो ॥
ऐसे कहति रूप अनुरागीं । मुरली छीनि बजावन लागीं ॥
एकनि लियो पीतपट छोरी । एक रंग गागरि लै दौरी ॥
हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि । कज्जल लै आई संजावलि ॥
ललता लोचन अंजन लागी । एक श्रवणे लगि कछुकहि भागी॥
एक चिबुक गहि बदन उठावै । एक गुलाल कपोलन लावै ॥
घेरि रहीं परिखाकी नाई । करति सबै निजनिज मनभाई ॥
काहू बेणी गूँथि सँवारी । काहू मोतिन भांग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा कोउ सारी । काहू लैं अँगिया उर धारी ॥
निरखि निरखि प्यारी मुसुकाई । राखत आपन कृष्ण बडाई ॥
काहू बदन अभूषण लीन्हें । नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हें ॥
बधू बधू कहि सबहिन गायो । प्यारी निकट आनि बैठायो ॥
दो०–निरखि बदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ॥
गहिं प्यारी निज पाणि तब, दीन्हों पान खवाय ॥

---

१ पीतांबर। २ कानमें। ३ बहबड़। ४ मुख।

सो०-सखियां करत कलोल, गांठि जो रआँचर दई ॥
ब्रजमें रहै अडोल यह जोरी युग युग सदा ॥
लीन्हे मध्य श्याम सब ग्वारैं । मग्न भई अब वपु न सँभारैं ॥
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहैं । अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
रंगन भरे रँगीले दोऊ । त्रिभुवन छवि पटतर नाहिं सोऊ ॥
एक नयनकी सैन मिलावैं । एक युगल छवि लखि सुख पावैं ॥
गावति एक महरिको गारी । बजै मँजीरा डफ करतारी ॥
भरि भरि मूठ गुलाल उड़ावैं । ग्वालनिकटकहुँ लगन न पावैं ॥
रही गुलाल घटा छबि छाई । फूली मानहुँ सांझ सुहाई ॥
तब ललताको यशुमति माई । घर भीतरसे बोलि पठाई ॥
हँसिकै महरि बहुत सनमानी । विनती करी बहुरि मृदुबानी ॥
आज भई भोजनकी बिरियां । देखहु अब राधाकी उरियां ॥
खानपान करि श्रमहि निवारो । बहुरि खेलियो निकट सवारो ॥
ल्यावहु अब लाडलिहि लिवाई । कीरति जीकी सौंह दिवाई ॥
दो०-तब यशुमति पहँराधिकहि ललता चलीलिवाय ॥
सकुच जानि घनश्याम अति, छूटे हाहा खाय ॥
सो०-हँसे ग्वाल मुखहेरि, तनु शोभा देखत खरे ॥
बलको लीन्होटेरि, बन्यो आजु अति साँवरो ॥
कहत सखा सब दै दै सोहन । ऐसेहि चलौ नंदपै मोहन ॥
चले भुजागहि तहां लिवाई । छबि अनूप वह बरणि न जाई ॥
उत सब युवतिनके चितचोरे । चले लाल इतके अति भोरे ॥
अति छबि देखि हँसे नँदराई । जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरषि लीन्हे उरलाई । अति आनंद हृदय न समाई ॥
बार बार कर लेत बलैया । किन यह कीनो हाल कन्हैया ॥
ये ऐसीं सब ब्रजकी बाला । सकुच हँसे मनहीं नँदलाला ॥
तुरत श्याम सोइ वेष उतारयो । कटि पट पीत मुकुट शिर धारयो ॥

---

१ क्रीड़ा । २ निश्चय तथा अचल । ३ तह । ४ हाथपकड़ । ५ माता ।

युवतिनसहित कुँवरि श्री श्यामा । आई नंद महरिके धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये । यशुमतिले सबको पहिराये ॥
अति सनेह वृषभानु दुलारी । अपने हाथ शृंगार सँवारी ॥
निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी । वारति राई नोन सिहानी ॥
दोहा-विविध भांति मेवा मधुर, और मिठाई आनि ॥
सादर सबकी गोदमें, भरे हरषि नदरानि ॥
सो०-रह्यो नंदगृह छाय, होरीको आनंद अति ॥
कहति यशोमति माय, फगुआकहोसोदोजिये ॥
ललकि कह्यो और कछु नाहीं । ले हैं कान्हर फगुआमाहीं ॥
देखे बिन रहि सकहिं जु उनको । तौ मांगे देहैं हम तुमको ॥
बाढ़ौ वंश महर नँदराई । चिरजीवहु बलराम कन्हाई ॥
जिनसे यह सुख व्रजमें लीजत । यह अशीश सबही मिलि दीजत ॥
अति आनंद मगन व्रजवासी । अष्ट सिद्धि नव निधिसबदासी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला । न्हान चले यमुनाके कूला ॥
जहँ बर बिटप विविध रँग फले । गुंजत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
शीतल सुखद छांह छबिछाई । फल डोल तहँ रच्यो कन्हाई ॥
झूलत रंग भरे पियप्यारी । गावत मिले गोप अरुनारी ॥
ऐसे दूर खेल श्रम कीनो । अति आनंद सबनको दीनो ॥
तब यमुनाजल श्याम नहाये । महिदेवन शिर तिलक बनाये ॥
दियो दान तिनको नँदलाला । वर्षत सुर सुमननकी माला ॥
छं०-बरषतमालप्रसूँनसुरगण, निरखि छबिआनँदभरे ॥
श्रीनंद सुत सुख धाम पूरण, काम सब व्रजजनकरे ॥
लूटि सुखरस फागको सब, मुदित निजनिजगृहगये ॥
गोप बाल गोपाल बल निज धाम आये छबि छये ॥
दो०-कियो जो फाग बिहार हरि, शारद लहैं न पार ॥
व्रजवासी सो किमि कहै, लीला सिंधु अपार ॥

१ प्रसन्नहुई । २ वृक्ष । ३ ब्राह्मण । ४ देवगण । ५ समुद्र ।

सो०–जन मनके सुखदान, चरित ललित गोपालके ॥
गावत सुनत सुजान, ब्रजवासी जन रति सहत ॥

॥ अथ सुदर्शनशापमोचनलीला ॥

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना । ब्रज विलास जो कीन्हे नाना ॥
शिव विधि शारद नारद शेषा । कहि नाहिं सकहिं गणेश अशेषा॥
कीन्हे चरित रहस्य अपारा । ब्रज युवतिन मिलि रस शृंगारा ॥
साध नहीं काहू मन राखी । करी सकल जो जाने भाषी ॥
ब्रजविलास रस केलि बड़ाई । भांति अनेक मुनीजन गाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुणनायक । जो कछु करहिं सो सबही लायक
सखा संग सबको सुख दीनो । मन भायो गोपिन को कीनो ॥
महरि नंद पितु मात कहाये । तिनके हेत देह धरि आये ॥
बालकेलि रस सुख करि भारी । दियो परमआनंद मुरारी ॥
गिरिधर ब्रज जन सगरे राखे । इंद्रादिक सुर जय जय भाषे ॥
गाय बच्छ बन माहिं चराये । कालीनाग नाथि लै आये॥
करे चरित्र अनेक कृपाला । भक्तन हित प्रभु दीनदयाला ॥
दो०–भक्तनके हित लेतहैं, प्रभु युग युग अवतार ॥
असुर मारि थामत सुरन, हरत भूमिभव भार ॥
सो०–गावत संत अपार, यशपुनीत पावन करन ॥
पूरि रह्यो संसार, करता हरता आप हरि ॥
इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई । नंद हृदय यह मति उपजाई ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा । पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बलमोहन दोऊ । गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनँद भारी । पहुँचे तहां सकल नरनारी ॥
सरित पुनीत कियो अस्नाना । महिदेवनदीन्हं सब दाना ॥
देखि देव थल अति सुखमानी । सादर पूजे शंभुभवानी ॥
पूजा करत सांझ है आई । भ्रमित भये सब लोग लोगाई ॥

---

१ सम्पूर्ण । २ गूढ़ लीला । ३ पृथ्वीका । ४ नदी । ५ थकित ।

खान पान करि सहित हुलासा। कियो रैनि तहँ बनमें बासा॥
सोये हरि हलधर सुखराशी। तब सोय सब ब्रजके बासी॥
आधी निशि अजगर यक आयो। नंद महरके पग लपटायो॥
उठे पुकारि चौंकि नँदराई। आये ब्रजबासी सब धाई॥
अजगर देखि डरे सबकाई। लगे छुड़ावन छुटत न सोई॥
दो०हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोडै पांय॥
कृष्ण कृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय॥
सो०–अति ब्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायकै॥
कह्यो महायक ब्याल, लपटानो पग नंदके॥
सुनत उठे आतुर गोपाला। निकट जाय देख्यो स्वइव्याला॥
परश्यो ताहि कमल पद पावन। पाप शाप संताप नशावन॥
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई। धन्यो दिव्यतनु बरणि नजाई॥
लाग्यो हाथजोरि गुणगावन। जय जय जगतईश जगपावन॥
सब देवनके देव मुरारी। जय जय जय ब्रजगोप बिहारी॥
ऋषि अंगिरा शाप मोहि दीन्हो। सोवह बहुत अनुग्रह कीन्हो॥
जाते प्रभुको दर्शन पायों। जन्म जन्मको पाप नशायों॥
ऐसी विनती प्रभुहि सुधाई। आयसुपाय चल्यो शिरनाई॥
बहुरि नन्दको शीश नवायो। देखि महर अति अचरजपायो॥
पूंछ्यो जाय नन्द तब भेवा। तुमतो दिव्यरूप कोउ देवा॥
सर्प शरीर धन्यो क्यों आई। सो सब हमसों कहौ बुझाई॥
नन्द वचन सुनि मन सुखपाई। तब उन अपनी कथा सुनाई॥
दो०–हौं यश गायकं श्यामको, नाम सुदर्शन होय॥
सुन्दर विद्याधरनमें, मोते और न कोय॥
सो०–इकदिन ऋषिके धाम, गयो धरे अभिमान मन॥
कियो न तिन्हैं प्रणाम, रूप द्रव्यके गर्व्वसे॥
ऋषि अंगिरा बड़े विज्ञानी। जानि मोहिं जड अति अभिमानी॥

१ एकबहा। २ दुःख। ३ संवत्सर। ४ क्या। ५ गानेवाला।

दीनो शाप कोप करि येहा। जाय होहु शठ अजगरदेहा॥
ऐसे कह्यो मोहिं ऋषि जबहीं। अजगर भयो तुरत मैं तबहीं॥
देखि दुखित म्वहिं परम कृपाला। भये बहुरि मुनिराय दयाला॥
तब करिकृपा कह्यो यहमोहीं। कृष्ण दरश हैहै जब तोहीं॥
परशि चरण रज पाप नशैहै। बहुरि आपनो तनु तब पैहै॥
तेपद आजु परशि सुखदाई। भयो पुनीत रूप निजपाई॥
जोपदरज ब्रह्मा नहिं पावैं। शिव सनकादि सदा चितलावैं॥
मुनि प्रसाद सोरज मैंपाई। कहँ लगि मुनिकी करौं बड़ाई॥
दीनदयालु जगत हितकारी। सन्त समान कौन उपकारी॥
ऐसे विद्याधर सुखमानी। नन्दहि अपनी कथा बखानी॥
बहुरिकाल चरणन शिरनाई। गयो लोकनिज बहु हर्षाई॥

दो०–नंदादिक आनंदसब, महिमा देखि पुनीत॥
कहत परस्पर कृष्ण गुण, गई तहांनिशि बीत॥

सो०–आये सब ब्रज धाम, प्रात होत आनंद सों॥
संग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजवासी दासके॥

अथ शंखचूडवध लीला॥

यकदिन सुन्दर मदन गोपाला। श्रीबलदेव और सँग ग्वाला॥
दिवस अन्त निशि समय सुहाई। उदित उडपे उडगणँ छबिछाई॥
प्रफुलित चारु मालती सोहै। कुमुद सुगंध पवन मनमोहै॥
गुंजत भँवर मत्तरस लोभा। चले तहां देखन बनशोभा॥
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई। कबहुँ बजावत बेणुँ कन्हाई॥
ब्रजवनितागण चहुँदिशि घेरे। चले सुनत बंशी की टेरे॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई। मग्न भई छवि लखि अधिकाई॥
पहुँचीं श्रीवृन्दावन जाई। गोपी ग्वाल संग समुदाई॥
विहरत वन विहार दोउ भाई। गोपी ग्वाल साथ सुखदाई॥
मंद मंद गति इत उत डोलैं। मृदु मुसकाय लेत मन मोलैं॥

१ पवित्र। २ माहात्म्य। ३ चन्द्र। ४ नक्षत्र। ५ वंशी।

रूप राशि निधि छवि दोउ वीरा । बैठे जाय यमुनके तीरा ॥
पाछे सखा वृन्द सब सोहैं । सन्मुख गोपी जन मनमोहैं ॥
दोहा—करत सबै मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रस माँहिं ॥
भये मगन उनमत्त जिमि, रही देह सुधि नाहिं ॥
सो०—बाजत ताल मृदंग, बीन चंग मुरली मधुर ॥
छाय रह्यो रस रंग, उठत तरंगैं तानकी ॥
प्रेम मगन सब घोष कुमारी । हरिछवि निरखति सुरति बिसारी ॥
शिथिल वदन कचै शीश सुहाये । विह्वल तनमन श्याम सोहाये ॥
को हम कहां नहीं कछु जाने । नयन श्यामके रूप लोभाने ॥
रही श्रवण मुरली ध्वनि छाई । गृह वनकी कछु सुधि नाहिं राई ॥
चन्द्रवदन चपलासी गोरी । हरि मुख नाद सुनत भई भोरी ॥
तहाँ यक्ष औचक इक आयो । शंखचूड नामी तिहि गायो ॥
सो नर धनद अनुग अभिमानी । प्रभु प्रभाव नाहिं जान अज्ञानी ॥
देखतही बलराम कन्हाई । सब गोपिन लीनो अगवाई ॥
घेरलेत जिमि गाय अहीरा । उत्तर दिशिले चल्यो अभीरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं । भयो चेत तब कछु मन माहीं ॥
कहाँ जाति हम काके साथा । भई विकल जिमि परम अनाथा ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागी । महादुखित अति भयसों भागी ॥
दोहा—सुनत श्रवण आरतवचन, उठि आतुर दोउ भाय ॥
अति समीप गोपीनके, तुरतहि पहुँचे जाय ॥
सो०—मैं आयों हौं धाय, मति डरपौ तिनसों कह्यो ॥
अबहीं लेत छुडाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको ॥
शंखचूड फिरिकै तब देख्यो । काल मृत्यु सम दुहुँन पेख्यो ॥
भयो त्रसित तब मूढ अभागो । युवतिन छांडि जीवलै भागो ॥
गोपिन पास राखि बलभाई । ता पाछे पुनि चले कन्हाई ॥
अतिही निकट धाय कै लीनो । मूका एक तासु शिर दीनो ॥

१ मतवाला । २ लहरैं । ३ बाल । ४ बिजलीसी । ५ निरभय । ६ दुःखके वचन ।

भयो प्राण विन अधम अन्याई । प्रभु प्रताप उत्तम गतिपाई ॥
हती एक मणि ताके शीशा । सो लै आये हरि जगदीशा ॥
दीनी सो बलको नँदलाला । प्रमुदित भई देखि ब्रजबाला ॥
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई । बहुरि कियो सुख बनमें आई ॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो । परमानन्द सबन उपजायो ॥
करत विविध विधि हास बिलासा । गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नव किशोर सुन्दर सुखदाई । ब्रज जीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वाल बाल गायनके साथा । क्रीडा करत ललित ब्रजनाथा ॥

दोहा–देखि देखि हरिके चरित[1], परम बिचित्र उदारि ॥
निशि दिन सब प्रमुदित रहत, ब्रजबासी नर नारि ॥

सो०–हरण सकल भय भीर, दुष्टदलन[2] जनहितकरन ॥
नँदनंदन बलबीर, ब्रजवासी प्रभु सांवरो ॥

अथ वृषभासुरबधलीला ॥

नंदनँदन संतन हितकारी । कमल नयन प्रभु कुंज बिहारी ॥
मुरली मुकुट धरे ब्रजराजैं । कोटि काम निरखत छबिलाजैं ॥
नित नवसुख ब्रजमें उपजावैं । सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं ॥
सुनि सुनि अगम कृष्ण गुणगाहा । कंस असुर उर दारुण दाहा ॥
जो जिहि भाव ताहि हरि तैसे । हितको हित जैसे को तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभुकी लीला । सदा श्याम सुन्दर सुख शीला ॥
रीझ खीझ हरिको जो ध्यावैं । परमानन्द अभय पद पावैं ॥
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं । नँदनंदनपल बिसरत नाहीं ॥
शत्रु भाव शोचत दिन राती । नन्दसुवन मारों किहि भांती ॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी । एक दिवस नृप लियो हँकारी ॥
तासों कहि सब मर्म बुझायो । बल सराहि ब्रज ताहि पठायो ॥
नंदनँदन मारनके काजा । चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥

दोहा–नृपको शीश नवायकै, कह्यो अरिष्ट सुनाय ॥

---

१ लीला । २ दुष्टोंकानाशकरनेवाला ।

कितक काज महाराज यह, मैं करि आवत जाय ॥
सो०–तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा ॥
पलमें मारौं आज, बालक नंद अहीरके ॥
वृषभ¹ रूप सोइ असुर बनाई । आयो तुरत ब्रजहि समुहाई ॥
गिरि समान तनु अति बिकराला । महाकठिन दोउ सींग बिशाला ॥
पूंछ उठाय डकारत आवै । खोदि खुरन सों क्षार उड़ावै ॥
दृग आरक्त³ फेन मुख डारै । कबहुँ सींगसे भूमि बिदारै ॥
कबहुँ तरुनसों रगरत जाई । इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीवँ चहूं दिशि धावै । जहां तहां गैयन बिडरावै ॥
बार बार गर्जंत अति भारी । सुनत डरे सब ब्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे । कृष्ण कृष्ण कहि टेरन लागे ॥
कालस्वरूप वृषभ इक आयो । सबन कृष्णसों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिचान्यो । वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो मोहन सब पाहीं । मत डरपौ चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मन मोहन । गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दोहा–आगेहै हरि हांकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ का तनु तरुघसत, फिरत बिडारत गाय ॥
सो०–मोहिं न लख इत आय, तब तनु उपजो कंडुजो ॥
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नंदकी सौंह करि ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी बानी । मनमें गर्ब किया यह जानी ॥
याही बालकके बध काजा । आदरदै पठयो म्वहि राजा ॥
भले शकुन मैं ब्रजमें आयो । जो याको तुरतहि लखि पायों ॥
अबहीं याहि पलैकमें मारों । नृपति काज करि जाय जुहारों ॥
ऐसे अपने जिय अनुमानो । चल्यो श्याम सन्मुख अभिमानी ॥
टूटि परयो हरि ऊपर आई । लिये सींग गहि कुंवर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिशि धाई । हरि पाछे लै जात हटाई ॥

१ बैल । २ धल । ३ लाल । ४ गर्दन । ५ क्षणभरमें ।

पाछे पेलि श्याम तिहि दीनों। बहुरो वृषभासुर बल कीनो॥
आवत जात असुर जब हारयो। ग्रीव मोडि तब धरणि पछारयो॥
परयो असुर पर्वत आकारा। मुखते चली रुधिरकी धारा॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी। जय जय ध्वनि देवन न भकीनी॥
भये सुखी सब सुर समुदाई। बरषि सुमन सस्तुति मुख गाई॥
दोहा—चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजवाल॥
हम जान्यो कोउ वृषभहै, यह तो असुरकराल॥
सो०—दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब॥
भक्तनको रक्षपाल, ब्रजबासी नंद लाडिलो॥
जब अरिष्ट मारयो गिरिधारी। भयो कंस सुनि बहुत दुखारी॥
आये ऋषि नारद तिहि काला। कह्यो कंस सों सुन भूपाला॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे। ते नहिं होहिं नंदके बारे॥
मैं जान्यों निश्चय यह भेऊ। हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई। सोवह हती यशोमति जाई॥
भयो कलू यह सुनु छल राजा। को जानै कर्ता[3] के काजा॥
यह तौ पुत्र भयोहो जबहीं। कही हुती तोसों मैं तबहीं॥
अपनी सों बहुतै तुम कीनों। सो क्यों मिटै जो बिधि लिखि दीनों॥
करहु यत्न तुम अबहुँ सबारे। यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे॥
उठयो कंस सुनि मुनिको बानी। भयो शोच वश मूढ अज्ञानी॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ। छोड़े हुते वंदिते दोऊ॥
बहुतबुरो मान्यों तिन पाहीं। राखे बहुरि वन्दिके माहीं॥
दोहा—कैसे मारों कह करौं, निशि दिन यहै बिचार॥
शालि रहे नृप कंस उर, हलधर नंदकुमार॥
सो०—अब धौं पठऊँ काहि, मनहीं मन शोचत खरो॥
काहुन मारयो ताहि, असुर गयेते सब मरे॥

---

१ लोहू। २ बैल। ३ विधाता।

अथ केशीवधलीला ॥

असुरन माहिं बड़ो बलधारी । केशी असुर बीर अति भारी ॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो । अति आदर करि ढिग बैठायो ॥
कहत कंस केशी सुनु मोसों । जीकी बात कहत मैं तोसों ॥
मो समान राजा कोउ नाहीं । मेरी आन सकल जग माहीं ॥
ये सेवक मेर नहिं ऐसे । जैसे मैं चाहत हौं तैसे ॥
जासों कहौं बात मैं जोई । करि आवै कारज वह सोई ॥
ताते मोहिं यही पछितायो । तब केशी कहि बचन सुनायो ॥
ऐसो कहा कठिन प्रभु काजा । जाको तुम शोचतहो राजा ॥
तुमहो सब असुरनके नायक । और कौन दूजो तुम लायक ॥
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं । ताको नाश होय नृप तबहीं ॥
आयसु कहा मोहिं किन दीजै । सो कारज अबहीं हम कीजै ॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो । केशी को बहु भांति बखान्यो ॥

दोहा–असुर बंश[1] सबही हते, काहि कहौं ब्रजजान ॥
नंदमहरके छोहरा, करि आवै बिन प्रान ॥

सो०–कियो न तिन कछुकाय, आगे जे पठये असुर ॥
यह सुनिकै अति लाज, मारे[2] सब नँद बालकन ॥

ताते कछु ह्वै है मैं जानत । बड़ो बीर तोको मैं मानत ॥
ता कारण ब्रज तोहिं पठाऊं । बहुत और कहि कहा सिखाऊं ॥
जिहि तिहि बिधि छलबल करि कोऊ । मारि आव नँद बालक दोऊ ॥
कै लै आव बांधि दोउ भैया । कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया ॥
यह सुनि गर्ब असुर भटकीनों । चल्यो ब्रजहि नृप आयसु दीनों ॥
मनहिं कहत देखौं धौं ताही । कंस नृपति डरपत सब जाही ॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो । अति बल गरजि चहूं दिशि धायो ॥
बेगवन्त अति वपुष[3] बिशाला । झारत ग्रीव पूंछ बिकराला ॥
बारहि बारहि सो ध्वनि करही । ब्रजके लोगन मारत फिरही ॥

---

१ राक्षसकुल । २ मारे । ३ शरीर

जित तित भाजि चले नरनारी । भये बिकल सब अति भय भारी ॥
कह्यो जाय आतुर हरिपाहीं । अश्व एक आयो ब्रजमाहीं ॥
अति बिकराल न जात बतायो । कै धौं बहुरि असुर कोउ आयो ॥

दोहा–ब्रज आयो केशी असुर, जान लियो नँदलाल ॥
सन्मुखताके हरषिकै, चले कंसके काल ॥

सो०–शीश मुकुट बनमाल, कटि कसिबांध्यो पीतपट ॥
उरभुजनयन विशाल, असुर विदारन सुर सुखद ॥

जब केशी देखे हरि आवत । भयो क्रोध करि सन्मुख धावत ॥
अति बल दोऊ चरण उठाये । प्रभुके उरको चपल चलाये ॥
देखत डरे सकल ब्रजबासी । गहे बीचहीं हरि अविनाशी ॥
छूटन असुर बहुत बल कीनों । ठेलि श्याम पाछे तब दीनों ॥
गिरो धरणिपर मूर्च्छित भारी । उठ्यो क्रोधकरि बहुरि सँभारी ॥
दावँ घात करिकै बहु धावै । पुनि पुनि चरण चपेट चलावै ॥
अतिहि बेग हरि जात बचाई । करत युद्ध कौतुक सुखदाई ॥
देखत सुर मुनि चढे अकाशा । कछु हर्ष मन कछु इक त्रासा ॥
तकत गोप, गोपी भय बाढे । चक्रित चित्र लिखेसे ठाढे ॥
बदन पसारि असुर तब धायो । चाहत हरिको मुखमें नायो ॥
तबहिं श्याम यह बुद्धि उपाई । दियो हाथ ताके मुखनाई ॥
दांत न दाबि सक्यो सो नाहीं । वृक्ष समान भयो मुख माहीं ॥

दोहा–एक हाथ मुख नाइकै, तुरत केश गहि धाय ॥
बली सुवन नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय ॥

सो०–शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको ॥
नंदमहरके तात, जान्यो केशी को हन्यो ॥

देखत सुरगण भये सुखारी । बर्षे सुमन सुमंगलकारी ॥
प्रफुलित भये सकल ब्रजबासी । बढ्यो हर्ष उर मिटी उदासी ॥
गावत जय, यश प्रभुहि सुनाई । असुर निकंदन जन सुखदाई ॥

---

१ कृष्णकेपास । २ भय । ३ पुत्र । ४ हृदय ।

धाय धाय हरिको सब भेटैं। धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटैं॥
बड़ो दुष्ट मोहन तुम माऱ्यो। ब्रजबासिनको प्राण उबाऱ्यो॥
कान्हहिं सदा सहाय हमारी। धन्य धन्य मोहन गिरिधारी॥
लिये लाय उर यशुमति मैया। पुनि पुनि मुखकी लेत बलैया॥
नंद देखि आनँद अति कीनों। बहुत दान विप्रनको दीनों॥
हरिको लै पुनि पुनि उर लावत। मुख चूंबत लखि छबि सुख पावत॥
केशी मारि श्याम गृह आये। भये सकल आनन्द बधाये॥
घर घर सब ब्रजलोग लुगाई। नंद नँदनकी करत बड़ाई॥
ब्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक[1]। संतन सुखद[2] असुर कुल घालक॥

दोहा—धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तनकेहित आय॥
सुखसागर शोभा अधिक, बलनिधि त्रिभुवनराय॥

सो०—बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल॥
देत अशीश मनाय, ब्रजबासी प्रभुको सबै॥

अथ व्योमासुरबधलीला॥

दूजे दिन सुंदर ब्रजनाथा। गये बनहिं गायनके साथा॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये। शोभितसंग सुभग मन भाये॥
गईं गाय बनमें अगुवाई। जहँ तहँ चरन लगीं सुखपाई॥
ग्वालन संग श्याम अनुरागे। चोर मिहिचेनी[3] खेलन लागे॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं। दौरत दुरत फिरत मनमाहीं॥
तबहि कंस केशीवध सुनिकै। बार बार शोचत शिर धुनिकै॥
व्योमासर इक अति बलवाना। माया चरित बहुत सो जाना॥
पठयो ताको तब ब्रज माहीं। मारन कह्यो श्यामको ताहीं॥
गोप वेष धरि सो ब्रज आयो। ढूंढत हरिको बनमें पायो॥
गयो समाय सखनके माहीं। ताको किनहूं जान्यों नाहीं॥
व्योमासुर इक बुद्धि उपाई[4]। प्रथम बालकनलेहु चुराई॥
इकलो करि जब हरिको पाऊं। तब मारौं के गहिलैजाऊं॥

१ रक्षक। २ सुखदायक। ३ आंखमिचौनी। ४ बनाई।

दोहा–दुरने जाहिं बालक जहाँ, तहां असुर सँग जाय ॥
आवहि एकहि एकलै, पर्वत माहिं दुराय ॥
सो०–रहि गये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे ॥
तब जान्यों नँदलाल, व्योमासुरके कपटको ॥
धरयो ध्यान तब कुँवर कन्हाई। हरिसों ताकी कहा बसाई ॥
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो । प्राणदेह तजि स्वर्गहि सटक्यो ॥
असुर मारिकै दीनदयाला । बालक शोधन चले गोपाला ॥
ऋषि नारद आये तेहि काला । देखि श्यामसुखलख्योविशाला ॥
उपज्यो प्रेम हर्ष उर पावन । बीन बजाय लगे यश गावन ॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी । आदि पुरुष प्रभु अन्तर्यामी ॥
अलख अनीहै अनन्त अपारा । को जानै प्रभु रूप तुम्हारा ॥
सकल सृष्टिके सिरजनहारे । पालन लय सब ख्याल तुम्हारे ॥
युग युग यह अवतार गुसाई । भक्तनहित प्रभु लेत सदाई ॥
धरणीभार पाप भइ भारी । सुरन संग लै आय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी । राखि लेहु प्रभु शरण उबारी ॥
राज अनीति सुरन तब भाखी । शशि अरु सूर भये सब साखी ॥
दोहा–क्षीरसिन्धु अहि फेणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यो सुरसन्त मोह, दुखित दनुजके भार ॥
सो०–कह्यो भूमि अवतार, सिंधु मध्य वाणी प्रकट ॥
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्राता दाता अभय ॥
मथुरा जन्मि गोकुलहि आये । मात पिता सोवतही पाये ॥
नन्द यशोदा बालक जान्यों । गोपिन काम रूप करि मान्यों ॥
पय पीवतही बकी विनाशी । भयो असुर सुनि कंस उदासी ॥
यहि अंतर जे दनुज पठाये । ते प्रभु सब कौतुकहि नशाये ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके बासी । जिन बश किये ब्रह्म सुखरासी ॥
मन बुधि बचन तर्क ते न्यारे । निगमहुं अगम न परत विचारे ॥

१ छिपन । २ पृथ्वीपर । ३ चेष्टारहित । ४ रक्षाकरो । ५ जगरक्षक ।

ते ब्रज युवतिन बनहिं विहारे। कमल नयन प्रभु नन्ददुलारे ॥
नील जलज तनु सुन्दर श्यामा। मोर मुकुट कुण्डल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी। बनमाला धर कुंजविहारी ॥
बसहु रूप यह उर धर पाऊं। बहुरि नाथ प्रभु विनय सुनाऊं ॥
यह अवतार जबहि प्रभु लीनो। आयसु सुरन यहै प्रभु दीनो ॥
दैत्य दहन सन्तन सुखकारी। अब मारहु प्रभु कंस प्रचारी ॥
दोहा–जब यह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय ॥
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधावचन मुसकाय ॥
सो०–जाहु बेगि मुनिराय, करहु सुरनको काज यह ॥
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसुते मधुपुरी ॥
जब प्रभु हँसि यह आयसु दीनो। तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीनों ॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा। यहै बुद्धि मन करत प्रकाशा ॥
यहैं बात हलधर समुझाई। जो वाणी ऋषि गये सुनाई ॥
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन। जन्मे हौ भुव भार उतारन ॥
परमपुरुष अविगति अविकारा। अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिन्धु रूप जनहित सुखकारी। त्रिभुवन पति श्रीपति असुरारी ॥
संकर्षण जब ऐसो भाष्यो। सुनि सुनि श्याम हृदय सब राख्यो ॥
तब हँसि कही भ्रातसों बानी। जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंसनिकन्दन नाम कहाऊं। केश गहौं पुहुमी घसिटाऊं ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये। बालक बहुरि शोधि सब लाये ॥
व्योमासुर मारयो नँदलाला। भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभुको भाषे। कहत आज तुम हम सब राखे ॥
दोहा–गाय गोप हलधर सहित, भये परम आनंद ॥
सांझ समय बनसे चले, ब्रजको श्रीनँदनंद ॥
सो०–आये नंद अवास, प्रभु ब्रजवासी दासके ॥
गये कंसके पास, ऋषि नारद मथुरापुरी ॥

१ नीलकमल। २ अमृतवाणी। ३ आज्ञा। ४ विष्णु। ५ पृथ्वी।

नारद गये संकसे पासा । मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये । हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे । कह चिन्ता मन बढ़ी तुम्हारे ॥
नारद कही सुनो हो राऊ । कह बैठे कछु करौ उपाऊ ॥
त्रिभुवनमें नाहीं कोउ ऐसो । देख्यो नन्दसुवन मैं जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी । उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहु भारी । हम सब हितकी कहत तुम्हारी ॥
तब बोल्यो नृप गर्वित बानी । यह नारद तुम कहा बखानी ॥
यदपि कहत हौ तुम हित केरी । तदपि बराबरि नाहिं वह मेरी ॥
कोटि दनुज मोसम मो पासा । जिनको देखि सुरन मन त्रासा ॥
कोटि कोटि जिनके सँग योधा । जीतसके को जिनको क्रोधा ॥
तिनके बल कहँ कहूं बताई । देखत जिनको काल डराई ॥
दोहा—रहत द्वार संतत खरी, कोटि भटनकी भीर ॥
अति प्रचंड कोदंडधर, महाबली रणधीर ॥
सो०—महामत्त गज एक, त्रिभुवनगामी कुवलिया ॥
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गन ॥
कहा ग्वालके बालक दोऊ । तदपि बली उपजेहैं वोऊ ॥
प्रजालोग ब्रजके सब मेरे । सेवा करत सदा रहे नेरे ॥
तातेसकुचत हौं उन काजा । बालक सुनत होत मोहिं लाजा ॥
भलीकरी यह बात बुझाई । मनकी डारौं खटक मिटाई ॥
सुनहु और नारद मुनि हमसों । कहत मतेकी बाणी तुमसों ॥
उनपर सैना कहा पठाऊं । नन्द सहित सहजहि बुलवाऊं ॥
डारौं गजके चरण खुदाई । और प्रजा ब्रज देउँ बसाई ॥
यहै बात मेरे मन आई । तब सुनि मुनि बोले मुसुकाई ॥
जो तुम अपनो गर्व सँभारो । तो जानो अब तुम उन मारो ॥
त्रिभुवनपें को बलहि तुम्हारे । यह कहि मुनिविधिधामें पधारे ॥

१-धनुर्धारी । २ योद्धा । ३ स्वर्ग पाताल मृत्यु । ४ ब्रह्मलोक ।

कंस आपने जिय यह जानी । नारद हितकी बात बखानी ॥
अब मारों नहिं गहर लगाऊं । मथुराजिहि तिहि भांति बुलाऊं ॥
दोहा—यहै शोच उरमें परयो, नहिं विचार कछु और ॥
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥
सो०—कबहुँ विचारत हीय, आपहि चढि धाऊं ब्रजहि ॥
पुनि सकुचतहै जोय, ब्रजबासी प्रभु गुण समुझि ॥
जन्महिते वैहै असुरारी । सातहि दिनके बैकी सँहारी ॥
कागासुर बल गयो बढाई । सो मुरझाय गिरयो फिर आई ॥
शकट तृणा क्षणहीमें मारे । ख्यालहि और असुर संहारे ॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई । आयो नाहिं जीवत फिरि कोई ॥
अब उनको सहजही बुलाऊं । ऐसो को जिहि लेन पठाऊं ॥
जाय नन्दसों कहै बुझाई । श्याम राम सुन्दर दोउ भाई ॥
सुनि सुनि अति नृपके मन भाये । देखनको मधुपुरी बुलाये ॥
ऐसे करि जब वे ह्यां ऐहैं । बहुरो जियत जान नहिं पैहैं ॥
यह विचार उरमें ठहरायो । तब आतुर अक्रूर बुलायो ॥
सुनि अक्रूर मनमें भय पायो । किहि कारण नृप बेगि बुलायो ॥
आतुर गयो पवँरि पर धाई । जाय पवँरिया खबरि जनाई ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीनो । सकुचि गमन सुफलक सुतकीनो ॥
दोहा—कछु डर कछु जिय धीर धरि, गयोनृपतिकेपास ॥
देखि डरयो मुख शोचवश, उरते लेत उसास ॥
सो०—हाथ जोरि शिरनाय, अनबोल्यो सन्मुखरह्यो ॥
लीन्हों ढिग बैठाय, मर्म बचन कहि कंस तब ॥
आपहि और तहां कोउ नाहीं । बोल्यो नृप सुफलक सुत पाहीं ॥
कहि जु गये नारदऋषि बानी । सो सब कहिके प्रगट बखानी ॥
सुनि अक्रूर कहत सत तोको । श्याम राम शालत उर मोको ॥
ज्यहि त्यहि बिधि अब उनको मारौं । यह कछ दोष हृदय नहिं धारौं ॥

१ बैर । २ पूतना । ३ मथुरा । ४ अक्रूर ।

पठवौ काहि जाहि ब्रज जोई । कहै प्रीति करि नंदहि सोई ॥
बल मोहन तुव तनय सुहाये । तुमहिं सहित नृपराज बुलाये ॥
सुन गुण रूपहि अगम अगाधा । है नृप को देखन की साधा ॥
काली पीठ कमल लै आये । तब ते नृपके मनमें भाये ॥
सो बखसीस इन्हैं अब दैहैं । इनके बचन सुनत सुख पैहैं ॥
यह कहिकै उनको लै आवै । भेद सुकोऊ जान न पावै ॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो । तब अक्रूरहि धीरज आयो ॥
मन मन कहत कहा यह भावै । आपुहि अपनो काल बुलावै ॥

दोहा०—कियो बिचार अक्रूरतब, कहतजु कछु मैं और ॥
तौ मारैगौ मोहिं यह, अबहीं याही ठौर ॥

सो०—कह्यो मानिहै नाहिं, कालग्राहि आयो निकट ॥
यह बिचारि मन माहिं, सुफलकसुत बोल्यो हरषि ॥

सुनहु नृपति नीके मन आनी । धनि धनि नारद सत्य बखानी ॥
बड़े शत्रु हमको वे दोऊ । उपजे नंदभवन मैं कोऊ ॥
कीजै बेग नृपति यह काजा । तुम सरै और कौन महि राजा ॥
मुखते आयसु जो करि पाऊं । भोर बेगि तिहि ब्रजहि पठाऊं ॥
सुफल्क सुत यह कही सयानी । तब हर्ष्यो नृप सुनि यह बानी ॥
फिर फिर कहत हिये गरबाई । प्रात बोलि मारौं दोउ भाई ॥
आधी निशि लों यह मन कीनो । तब अक्रूर बिदा करि दीनो ॥
पर्‌यो सेज आलस जिय जानी । सेवाकरन लगीं सब रानी ॥
नेक पलक लागी झपकाई । लखे स्वप्न बलराम कन्हाई ॥
काल सरिस दोउ देख डरानो । झिझकि उठ्यो भरन्यो ससकानो ॥
देखे जागत ह्वां नहिं दोऊ । चकित भईं रानी सब कोऊ ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई । कह झिझके स्वप्ने नृपराई ॥

दो०—महाराज झिझके कहा, स्वप्ने आज सकाय ॥
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय ॥

१ अक्रूर । २ बराबर । ३ घमंड करके । ४ समान ।

सो०—तब मनमें सकुचाय, सहजहि रानिनसों कह्यो ॥
भेद न भयो जनाय, मन शंका उर धकधको ॥
सावधान प्रतिपाल कराये । जहँ तहँ योधा सकल जगाये ॥
श्याम राम भय पलक न लावै । अंतर शोच न प्रगट जनावै ॥
जाग्यो आप संग सब नारी । भई यामेनिशि युगते भारी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई । ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥
घरियाली सों पूछि पठावै । बार बार निशि खबर मँगावै ॥
शोचत सब प्रातहि कह करिहै । क्रोध भरयो नृपका शिर परिहै ॥
कही घरी निशि गणिकन बाकी। इक इक क्षण युग यह गति ताकी॥
कहत ब्रजहि धौं काहि पठाऊं । जासों कहि नँदसुवन मँगाऊं ॥
पठवों अक्रूरहिको जाई । ल्यावैं ब्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नँदराई । बल मोहन कहुँ गये हिराई ॥
ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं । कहत श्याम तौ अब ब्रज नाहीं ॥
संगहि खेलत रहे हमारे । निठुर होय कहुँ अन्त सिधारे ॥
दो०—दूत एक कोउ आयकै, सँगलै गयो लिवाय ॥
वाहीके दोउ है गये, ब्रजवासिन बिसराय ॥
सो०—अति व्याकुल नँदराय, मुरझि परे धरणी सुमन ॥
विवश यशोदा माय, श्याम बिरह व्याकुल खरी ॥
व्याकुल नरनारी ब्रजवासी । पशु पक्षी सब परमउदासी ॥
रोवत गिरत धरणि दुख पागे । अति अकुलाय नंद तब जागे ॥
धक धकात उर श्रवत नयन जल। सुत अंग परसन लागे शीतल ॥
ससकत सुनत अतिहि अतुरानी। कह भरमें पूंछत नँदरानी ॥
नन्दनहीं कछु भेद जनायो । श्यामहिं लखि धीरज उर आयो ॥
अति प्रभात रवि उवन न पायो । सुफलकै सुत उत कंस बुलायो ॥
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो । सोवतते अक्रूर जगायो ॥
कह्यो वेगि चलिये नृपपासा । समुझि मंत्र निशि चल्यो उदासा ॥

१ पहरदान । २ नयनोंसे पानी टपकता है । ३ अक्रूर ।

ठाढे नृपति द्वारहीं पायो । देखत दुरिहिते शिरनायो ॥
अति आदर करि निकट बुलायो। शिरोपाव नृप तुरत मँगायो ॥
अक्रूरहि निजकर पहिरायो । बहुत कृपाकरि वचन सुनायो ॥
ल्यावहु नन्द महरि सुत दोऊ । तुम सम और चतुर नहिं कोऊ ॥

दोहा–मुख हरप्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलखाय ॥
असुर त्रास जियमें परयो, वचन कह्यो नहिं जाय ॥

सो०–दीनो रथहि चढ़ाय जाहु वेगि ब्रज नृप कह्यो ॥
लै आवहु दोउ भायँ, अबहिं विलम्ब न कीजिये ॥

तब अक्रूर कह्यो कर जोरी । सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भैया । बनको जायँ चरावन गैया ॥
जो उनको घरमें नहिं पाऊं । ताते प्रभु यह बात सुनाऊं ॥
आज नन्द गृह बसिहों जाई । प्रातहि लै आवहुँ दोउ भाई ॥
ऐसे जब अक्रूर जनायो । कंस बात यह मानि पठायो ॥
शीशनाय तब रथ चढि हांक्यो । सुफल्क सुत ब्रज सन्मुख ताक्यो॥
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये । चाणूरादि सकल चलि आये ॥
तिनसों कह्यो सुनौ सब बीरा । ब्रजमें रहत जु नन्द अहीरा ॥
कहियत बली तासुसुत दोऊ । राम कृष्ण जिनकह सब कोऊ ॥
बहुत असुर नेर उन मारे । तातेहैं वे शत्रु हमारे ॥
उनको मैं मधुपुरी बुलायों । सुफल्क सुतको लेन पठायों ॥
उनको मति जानो तुम बारे । हैंवे महाकठिन बल भारे ॥

दोहा–रँगभूमि ताते रचौ, चित्र विचित्र बनाय ॥
सावधान ह्वैकें तहाँ, रहौ मल्ल सब जाय ॥

सो०–ऊँचो एक मचान, तहाँ और सुन्दर रचौ ॥
जहाँ असुर परधान, बैठैं सब मेरे निकट

---

१ पगडी । दुपट्टा । २ डर । ३ भाइयोंको । ४ मुख्य मुख्य राक्षस ।

राखा द्वार तीसरे जाई । गरुवे कठिन अति धनुष धराई ॥
बहुभट तहां रहैं रखवारी । अस्त्र अस्त्र धारी बलभारी ॥
ऐसे सजगे रहौ सब कोऊ । जब आवैं वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुष उनसों चढ़वावो । उन्हैं कहौ यह धनुष उठावो ॥
जब वे धनुष उठावैं नाहीं । घेरि लेहु उनको तिहिठाही ॥
ताही ठौर मारि दोउ लीज्यो । भीतरलौ आवन नहिं दीज्यो ॥
जो कदापि ह्वांते चलि आवैं । तौ गजते आवन नहिंपावैं ॥
डारौ गजके चरण रुँदाई । तुमको राखत अबहिं जनाई ॥
जो छलबल करिकै बचि आवैं । रंगभूमि आवन नहिंपावैं ॥
तौ सब मल्ल मारि उनलेहू । मोससमीपै आवन नहिं देहू ॥

दोहा-ठौरहि ठौर सजायकै, सजगरहौ यहि भांत ॥
जिहि तिहि विधि मारौ उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥

सो०-मन मन मौज बढाय, ऐसे आयसुदे सबन ॥
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥

अथ अक्रूरआगमन लीला ॥

सुफलकसुत मनशोच अपारा । हैनृप कंस बड़ो हत्यारा ॥
मंत्र कियो मिलि मेर साथा । पठयो मोहि लेन ब्रजनाथा ॥
कैसे आनिदेउँ मैं जाई । मो देखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथकीनो ठाढो । पर्‍यो विचार हृदय अति गाढो ॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै । आयो नीरै लोचन ढरिकै ॥
अति बालक बलराम कन्हाई । कहा करौं कछु नाहिं बसाई ॥
मोहिं मारि वरु वन्दि करावे । यह विचारकरि रथ न चलावे ॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावे । चलत फिरत कछु बनि नहिं आवे ॥
प्रभु कृपालु सब अंतर्यामी । सुफलकसुतमन पूरण कामी ॥
सुमिरत कृष्णहृदय यह आई । वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवन राई ॥
अखिल जगतके कारण कर्ता । उत्पति पालन अरु संहर्त्ता ॥
भूमि भार कारण अवतारा । को जानै गुणरूप अपारा ॥

१ भारी । २ सावधान । ३ निकट । ४ आज्ञा । ५ घर । ६ जल ७ नाश कर्त्ता ।

दोहा–धन्य कंस जिन मोहिं ब्रज, पठयो लेन गोपाल ॥
जाय रूप वह देखिहौं, निगम नेति नँदलाल ॥
सो०–यह विचार उर आनि, रथ हांक्यो अक्रूर तव ॥
भयो शकुन शुभवानि, मृगगण आये दाहिने ॥
दाहिने देखि मृगनकी माला । सुफलकसुत उरहर्ष विशाला ॥
कहत आज इन शकुन न जाई । भुज भरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई ॥
श्याम सुभग तनु परमसुहावन । इंदुबदन त्रयताप नशावन ॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला । सारसहूते नयन विशाला ॥
मोर मुकुट कुण्डल बनमाला । कटिकछनी पट पीत विशाला ॥
तनु चंदनकी खौर बनाये । नटवरवेष मनोज लजाये ॥
ह्वैहैं गैयनके सँगठाढे । ग्वालन मध्य महाछवि बाढे ॥
सो दरशन लखि होव सनाथा । धरिहौं जाय चरण पर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं । महिमा जिनकी वेदबतावैं ॥
जिन चरणन कमलौ रतिमानी । शंभु धऱ्यो शिर जिनको पानी ॥
सनकादिक नारद यशगावैं । जिन चरणनयोगी चितल्यावैं ॥
बलि जिनकी मर्याद न पाई । हारि मानि निजपीठ नपाई ॥
दोहा–शिला शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर ॥
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखन की सीर ॥
सो०–अरुण कंजके रंग, अंकित अंकुश कुलिश ध्वज ॥
गोप बालकन संग, गो चारत बन पाइहौं ॥
परिहौं जाय चरणपर जबहीं । भुजन उठाय भेटिहौ तबहीं ॥
परसत उर आनँद उपजैहै । अंगन पुलकि तनोरुह एहैं ॥
देखत दरश परश सुख ह्वैहै । प्रेम सलिल लोचन भरिजैहैं ॥
कुशल पूछि हैं म्वहिं सुखदानी । कहि नहिं सकिहौं गद्गद बानी ॥
बारहि बार वचन मृदु कैहैं । सुनि सुनि श्रवण परम सुखपैहैं ॥

१ वेद । २ हरिणोंकेयूथ । ३ चन्द्र मुख ४ ब्रह्मा । ५ लक्ष्मी ६ अहिल्या ।

यों अक्रूर ध्यानमें अटक्यो । भूल्यो पंथ फिरत रथ भटक्यो ॥
हरि अनुराग भर्यो उर माहीं । रही देहकी सुधि कछु नाहीं ॥
सांझ भई गोकुल नहिं पायो । नहि जानत कोहौं कहँ आयो ॥
किन पठ्यो कहँ जात न जानी । रथ बाहनकी सुरति भुलानी ॥
भयो हर्ष उर प्रेम विशाला । दशहूं दिशि पूरण गोपाला ॥
हरि अंतर्यामी सब जानी । भक्त बछल[1] है जिनकी बानी ॥
भक्त भाव करि जो कोउ ध्यावै । मिलत तिन्हैं नहिं बिलम लगावैं ॥

दोहा–ग्वाल संग वृन्दा[2] विपिन, चारन धेनु सुजान ॥
चले हर्षि हलधर सहित, भक्त हेतु जिय जान ॥
सो०–यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ॥
गायन तहाँ मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥

गायन दुहन लगे सब ग्वाला । आपहु दुहत भये नँदलाला ॥
भक्त हेतु यह सुख उपजायो । तहां दरश सुफलकसुत पायो ॥
रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल । उतरि पर्यो भूपर अति आकुल ॥
भयो मनोरथ मनको भायो । दौरि श्याम चरणन शिरनायो ॥
पुलकि गात लोचन जल धारा । हृदय प्रेम आनंद अपारा ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो । भक्त हेतु मिलि कंठ लगायो ॥
भयोजु सुख सो सोई जाने । ब्रजबासी किहि भांति बखाने ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनो । तैसिय भाँति दरश हरिदीनो ॥
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई । पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई ॥
आनन[3] चारु निरखि सुखकारी । तब बोल्यो अक्रूर सँभारी ॥
कुशल नाथ अब दरश निहारी । दैत्य दलन भक्तनहितकारी ॥
भेदहि भेद कंसकी बानी । सुफलकसुत सब प्रगट बखानी ॥

दोहा–सुनत बचन अक्रूरके, मुसकाने ब्रजचन्द ॥
फरकि भुजा भू भार[4]की, टारन असुर निकन्द ॥
सो०–मिले राम पुनि आय, परम प्रीति अक्रूरसों ॥

१ भक्तवत्सल । २ वृन्दावन । ३ शोभायमानमुख । ४ पृथ्वीकाबोझा ।

उर आनँद न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥

कहि कहि उठत इहै नँदलाला । हमहिं बुलायो कंस भुआला ॥
लेबेको अक्रूर पठाये । कालहि करि अति कृपा मँगाये ॥
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला। कहा कहतहैं मदन गोपाला ॥
भये प्रेम वश मति अकुलानी । भरि आयो नयननमें पानी ॥
निरखि सबनको मुख सुखदानी । तब बोले करि श्याम सयानी ॥
चलहु काल्हि देखहि नृप कंसा। मति आनौ नियमें कछु संसा ॥
यह कहि चले हर्षि ब्रज बालन। कछु हर्ष कछु संशय ग्वालन ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई । हँसि लीन्हें अक्रूर उठाई ॥
सुमनहुते हरुवे सुख दनियां । दोउ लसत सुफलक सुत कनियां ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी । पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रज लोग चकाने। कंस दूत सुनि नन्द सकाने ॥
स्वमो समुझि शोच उर छायो । मन नन कहत कहाँ धौं आयो ॥

दोहा–आतुरे उठि आगे चले, लेन नन्द उपनन्द ॥
देखन धाये बरनतें, सुनत नारि नर वृन्द ॥

सो०–श्याम राम उरलाय, स्यंदनतजि सुफलक सुवन ॥
आवत लखि नँदराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥

सादर तिनको शीश नवाये । कुशल प्रश्नकरि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीनी । विविध भाँति भोजन विधि कीनी
संकर्षण अरु कुँवर कन्हैया । मिलिगये अक्रूरहिं दोउ भैया ॥
क्षणक होत नहि नेक नियारे । मनहुँ दुलार उनाहिं प्रतिपारे ॥
तब अक्रूर संग ल दाऊ । भोजन कियो लसत सब कोऊ ॥
हरि इत उत फेरत नहिं आखैं । सब ब्रजलोग मनहिं मन भाखैं ॥
उठे अँचै तब पान खवाये । आदर सहित पलँग बैठाये ॥
पुनि करजोरि नंद यों भाख्यो । कहा कृपा करि पग इतराख्यो ॥
तब ऐसे अक्रूर सुनायो । बल मोहनको नृपहि बुलायो ॥
तुमको कह्यो संगलै आवैं । सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥

---

१ गोदी । २ जल्दी । ३ रथ । ४ संदेह । ५ बलराम ।

देखनको अभिलाष जनायो । ताते वेगहि मात बुलायो ॥
ब्रजके लोग सुनत यह बानी । भये चकित सुधि बुद्धिहिरानी ॥
दोहा०—चकित नन्द यशुमतिचकित, मनहींमन अकुलात ॥
हरि हलधरको सैनदे, सबै बुलावत जात ॥
सो०—माया रहित मुकुंद, जाके योग बियोग नहिं ॥
सदा एक आनंद, अविगति अविनाशी पुरुष ॥
प्रेम भक्तकी कछु उर लाजा । कीनो चहैं भूमि सुर काजा ॥
जात नाहिं काहू तनु हेरत[1] । बोलत नहीं नयन नाहिं फेरत ॥
जनु पहिचान कबहुं की नाहीं । लखि लखि सब डरपत मन माहीं ॥
हरि सुफलकसुतसो[2] मन लायो । यहै कहत नृप हमहिं बुलायो ॥
हुती साध हमहू मन माहीं । कबहुं नृपति बोल्योक्यों नाहीं ॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी । यह सुनि बिकल सकल नरनारी ॥
श्याम नहीं कछु मनमें आने । भये नेहतजि तुरत बिराने ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई । कितते आयो यह दुखदाई ॥
महाक्रूर अक्रूर नामको । जैहै मात लिवाय श्यामको ॥
जान कहत या संग कन्हाई । कैसे प्राण रहैंगे माई ॥
बिलखि वचन शोचति सब ठाढी । मनहुं विचित्र चित्र लिख काढी ॥
अब हम संग तुम्हारे जैहैं । भली भांति नृप देखन पैहैं ॥
दोहा—ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बयन ॥
बढ़ी श्यामविछुरन व्यथा, ढरत उमँगजलनयन ॥
सो०—फिरत बिकल सब ग्वाल, पूछत[3]कहि एकसों ॥
चलन कहत नँदलाल, मन मलीन व्याकुल सबै ॥
ब्रजके लोग विकल सब देखैं । तब अक्रूर सबन परितोखैं[5] ॥
चिन्ता मतिहि करो मन माहीं । इनको कछू और डर नाहीं ॥
भंजन धनुष यज्ञके काजा । मधुपुरि इनहिं बुलायो राजा ॥

१ किसीकी तरफ नहीं देखा । २ अक्रूर । ३ कृष्ण । ४ प्रीति । ५ समझावै ।

व्याकुल महरि यशोमति धाई । आतुर परी चरण पर आई ॥
सुफलकसुत मैं दासि तुम्हारी । सुनौ कृपाकरि विनय हमारी ॥
सन्तन धाम परम उपकारी । सुनियत कीरति बड़ी तिहारी ॥
बडे दुखनमें यह प्रतिपारे । राम श्याम प्राणन ते प्यारे ॥
धनुष तोर कहँ जानें बारे । इन कब देखे मल्ल अखारे ॥
राजसभाको यह कह जाने । कब इन-नृप जुहार पहिचाने ॥
राज अंश अपनो सब लीजै । और कहौ बरु अधिको दीजै ॥
जाहु नंद उपनंदहि लैके । मैं कह करों सुतनको दैके ॥
है अक्रूर तुम्हारो नामा । नगर कहा लरिकनको कामा ॥

दोहा–कहा धनुष यह देखि हैं, बालक अति अज्ञानं ॥
किधोनृपति कछुकपट यह, परत मोहिं यों जान ॥

सो०–देहुँ नहीं हौं जान, मैं निर्धनी के श्यामधन ॥
लेहि कंस बरु प्रान, को जीवै नँदनंदन बिन ॥

कहति बिलखिहरिसों दुख भारी। क्यों मोहन मन छोह बिसारी ॥
दुखित जानि अपनी महतारी । मथुराजाहु न मैं बलिहारी ॥
ये अक्रूर क्रूर कृत रचिकै । आये तुम्हैं लेन रथ सजिकै ॥
तिरछी भई करम गति आई । यह धौ विधनौ कहा बनाई ॥
मोसी मात महर सो ताता । कहत रहत क्षणक्षण दोउ भ्राता ॥
तिहि मुख जान कहत हौ प्यारे। कैसे रहिहैं प्राण हमारे ॥
मैं बलि ऐसी जिय मति धारी । मथुरामें कहकाज तिहारो ॥
निरखि रूप यशुमति अकुलाई। व्याकुल परी धरणि मुरझाई ॥
कहि अब लेवैं प्राण कन्हैया । ह्वैकै निठुर जातहैं मैया ॥
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो । मेरे प्राण लेनको धायो ॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारा । करिहौ सूनो भवन हमारा ॥
रोवत बदन रोहिणी मैया । ब्रजके जीवन ये दोउ भैया ॥

दोहा–भये निठुर अक्रूर मिलि, घरहू आवत नाहिं ॥

---

१ अज्ञान । २ दरिद्रन । ३ विधाता । ४ दुष्ट । ५ गृह ।

कहा करौं कासों कहौं, को राखै गहि बाहिं ॥
सो०-अतिव्याकुल व्रज वाम, जहांतहांविलखो कहैं ॥
चलन चहत घनश्याम, धृक जु रहैं सखि प्राणतनु ॥
कहँ वह सुख हरिको सँग सजनी। विविध विलास शरदकी रजनी ॥
हरिमुख शशि शीतल सुखकारी। चख चकोर लखि रहत सुखारी ॥
कहँ वह सुंदरि हरि गरबाहीं। पियते अधर रस मन न अघाहीं ॥
जग उपहास सह्यो जिहि लागी। कुल अभिमान लाज सब त्यागी ॥
छुट्यो चहत सो हमसों आली। करी कठिन विधि करम कुचाली॥
कहूं सखी फिरि कबहूं ऐसे। मिलि हैं अब मिलियत हैं जैसे ॥
कहिहैं बहुरि बात हँसि कबहीं। लागत परम निठुर म्वहिं अबहीं ॥
विरहानल अग्निहुते ताती। बिछुरत श्याम पीर अति छाती ॥
न्यायहि सखी नागरी नारी। जरत बिरह उर अमित प्रचारी ॥
अब सहिहैं ऐसो दुख भाना। निशिदिन करि उर वज्र समाना ॥
एक कहति कैसे हरि जैहैं। यशुमति पै सखि जान न पैहैं ॥
कह करि है अक्रूर हमारो। फिरि जैहैं करि मुख निजकारो ॥
दो०-हम तजि हरि नाहिं जाइहैं, मोहिं जीय विश्वास ॥
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छांडि यशोमति पास ॥
सो०-धरचो तनक जब धीर, सुनिताकी बाणी सवन ॥
सो जानै यह पीर, जो रँगराती श्यामके ॥
करत नन्द उपनन्द बिचारा। करिये कहा कौन उपचारा ॥
को जाने कह नृप मनमाहीं। नृप आयसु मेट्यो नहिं जाहीं ॥
अति बालक बलराम कन्हाई। भये शोच बश अब नँदराई ॥
तब बोल्यो यक गोप पुरानो। प्रभु प्रभाव उर राखि सयानो ॥
कहत कि मो मनमें यह आवै। सोई करो जो श्यामहि भावै ॥
इनको बालक करि मति जानो। कह्यो गर्ग सोई परमानो ॥
ये करता हरता सबहीके। भार उतारन हार मैहीके ॥

१ दुःखित। २ चारदनिया। ३ अधरामृत। ४ वियोगाग्नि। ५ पृथ्वी।

जिन गिरि करधरि व्रजहि बचायो। बहुरि हमैं वैकुंठ दिखायो ॥
जांहि गयो सुरपति शिरनाई। ल्यायो नाथि कालि अहि जाई ॥
वरुणधाम देखी प्रभुताई। करति हते सब तुमहिं बड़ाई ॥
कहा कंस ताको भय मानैं। इनकी महिमा येही जानैं ॥
कितक धनुष हरि तुरत चढैहैं। देखत इनहिं कंस सुख पैहैं ॥
दो०–जो करि है कछु कपट तौ, सब समरथ गोपाल ॥
हरि हलधर भैया उभय, येकालहुके काल ॥
सो०–हर्षे सबै अहीर, हरि प्रताप उरमें समुझि ॥
सब लायक बल वीर, धीर धरौ यह जानिकै ॥
बार बार यशुमति अकुलाई। कहत रहौ सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहीं तात बहुत तुम बारे। मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं। तुमबिन लाल मात मरि जाहीं ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया। तू मतिबारी जान कन्हैया ॥
मतिहि कंसभय व्याकुल होहीं। एक भरोसो हरिको मोहीं ॥
प्रथमहिं बँकी कपट करि आई। अतिहि प्रबल बिष कुच लपटाई ॥
चारहि दिनके तबहिं कन्हाई। तो देखतही ताहि नशाई ॥
शकट तृणावृत बत्स अन्याई। अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमें सकल सँहारे। विषै जलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्द्धन जिन करपर धारयो। महा प्रलयको जल सब टारयो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं। तू मत शोच करै मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहिं सिखावैं। धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं ॥
दो०–सुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अवरोहि ॥
जो कछु करैं सो सत्य प्रभु आवत है सबसोहि ॥
सो०–कह्यो नंद तब आय, मैं लैजैहौं संग हरि ॥
धनुषयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥

१ कालीनाग । २ माहात्म्य । ३ लड़का । ४ पूतना । ५ काली दह ।

अथमथुरागमनलीला ॥

ऐसेहि सबको रात बिहानी । भयो प्रात चिरिया चुहचानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई । दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेंट हित करहु सँजोई । हरिके संग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने । चहत श्याम मधुपुरि निज जाने ॥
परचो शोर ब्रज घर जहँ ताईं । हरि मुख देखनको सब धाइ ॥
सजत ग्वाल चलबेको साजा । गैया फिरत दुहनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं । जोतहु तात तुरत रथ अबहीं ॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो । सहित सँकोच रथहि पलनायो ॥
सुफलक ढिगते दोऊ भाई । होत नहीं न्यारे कहुँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी । परीं धरणि विलपति बिललानी ॥
विकल कहति मोहिं तजो दुलारे । जात किये सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई । मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥

दोहा—यह सुफलकसुत बूझिये, तुह्मीं हरे मो बाल ॥
बृद्ध समयकी लकुटियाँ, मेरे मदनगोपाल ॥
सो०—देखहु मनहिं विचारि, लाभ कछू यामें तुह्मैं ॥
दियो धरम डरडारि, क्रूर भये इत आयके ॥

चलत जात चितवत ब्रजनारी । विरह विकल तनु सुरत बिसारी ॥
जहँ तहँ चित्र लिखीसी ठाढ़ी । नयनन नीरनदी जिमि बाढ़ी ॥
लगत निमेष कूल दोउ नाहीं । भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं ॥
ऊरध श्वास समीर झकोरत । चित्र कपोल तीरतरुतोरत ॥
काजलकीच कुचील किये तट । अधर कपोल उरज अंचलपट ॥
रहँ जहां तहँ पथिक जकेसे । चरण हस्त मुख वचन थकेसे ॥
श्याम विरह व्याकुल ब्रजबाला । नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सखत अधर मदन मुरझाने । जनु हिमै परस कमल कुम्हिलाने ॥
कहति परस्पर बचन अधीरा । गद्गद बचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवन धन प्राणनको प्यारो । लिये जात अक्रूर हमारो ॥

१ लाठी । २ पलक । ३ हवा । ४ घुंघट । ५ पाला ।

सुनहु सखी अब कीजै सोई । जाते बहुरि शूल नहिं होई ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहै । पुनि पाछे पछितायो ऐहै ॥
दोहा–परिहरि यश आशा जियन, लाज पंचकी कान ॥
करिये विनती श्यामसों, सखी समय पहिंचान ॥
सो०–होनी होय सो होय, पायँ परशि हरि राखिये ॥
नातरु मरि हैं रोय, समय चूक उर शालिहै ॥
प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी । विरह विकल गोपी जन जानी ॥
चितये नयन कमल दल लोचन । सकल शोच संताप विमोचन ॥
मृदु मुसकानि ठगोरी डारी । श्यामं ठगी सब ब्रजकी नारी ॥
रहि गईं चितवत वचन नआयो । चढ़े श्याम रथ अवसर पायो ॥
हरिको नाम सुमिरि मन माहीं । चढे अक्रूर तुरंत तहांहीं ॥
देखत महरि यशोमति धाई । पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई ॥
मोहन नेकु देखि इत लैहो । बिछुरत लाल भेंटम्वहि दैहो ॥
राखहु तात बोध करि मैया । बहुरौ चढ़हु विमान कन्हैया ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो । बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो । अपनी गाय जाय सब घेरो ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई । किये यत्न बहु प्राण न जाई ॥
बिलपति बिकल राम महॅतारी । अति व्याकुल सब ब्रजकी नारी ॥
दोहा–देखि दुखित ब्रज लोग सब, और यशोदा माय ॥
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय ॥
सो०–धरणी के हितकारि, मथुरातनचितये बहुरि ॥
कह्यो दृगन सनकारि, रथ हांकन अक्रूर सों ॥
बार बार यशुदा यों भाखै । कोऊ चलत गोपालहि राखै ॥
सुफलकसुत बैरी भयो आई । हर प्राण धन बाल कन्हाई ॥
करहु कंस बहु गोधन सारो । कै हरि मोहिं बन्दिमें डारो ॥
ऐसेहू दुख श्याम सभागे । खेलहिं मों नयननके आगे ॥
यह कहि महि लोटत अकुलानी । अतिही दुखित नन्दकी रानी ॥

१ नहींतो । २ रोहिणी ।

गोपी जन विरहानल डाढीं । रहि गईं प्रेम वियोगनि ठाढीं ॥
जिमि कुमुदिनि गण नीर विहीना। रविहि प्रकाश त्रासते दीना ॥
श्यामविमुख क्षणक्षण कुम्हिलानी। बहुरो मिलन कठिन जियजानी॥
बल बुधि थकित श्रवत जल लोचन। चलि नहि सकीं रहीं मदमोचन॥
गँवैडेलौं सब गईं बिहाला । ब्रज तजि गमन कियो गोपाला ॥
लै गये मधु अक्रूर निकारी । माखी ज्यों सब दीन बिडारी ॥
देखत रहीं थकीं टकलाईं । जब लगि धूरि दृष्टिमें आई ॥

दोहा—भये ओट जब दृगनते, मुर्च्छि परीं बिलखाय ॥
कहति गयो रथ दूरि अब, धूरि न परति लखाय ॥

सो०—कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो साँवरो ॥
परत न आगे पाय, पाछेही लोचन लगत ॥

बदन बिकल बिरहारसमातीं । भईं न पवन संग उडि जातीं ॥
रजहू नहीं बिधाता बानी । जाती चरण कमल लपटानी ॥
भईं नहीं यक रथको अङ्गा । जाती चली तहांलगि सङ्गा ॥
बिछुरे आज श्याम सुखराशी । तौ परतीति दृगनकी नाशी ॥
उड़ि नाहि गये श्याम सँग लागे । कृष्णमयी नहि भये अभागे ॥
रसिक प्रेमके जगत बखाने । रूप लालची सब कोउ जाने ॥
सो करनी कछु इन नहि कीनी । वृथा मीनकी छबि हरि लीनी ॥
धनि धनि मीन प्रीतिपँथ सांचे । सखि ये नयन हमारे काचे ॥
अब ये शूल सहत जिय शोचत । उमँगि उमँगि भरि भरि जल मोचत
हरिबिन अब लखिये ब्रज सूनो । समय चूक सहिये दुख दूनो ॥
भईं अजान सबै मनमाहीं । काहू चलत गह्यो रथनाहीं ॥
वृथा लाज करि काज बिगार्यो । सह्यो दुसह बिरहा दुख भार्यो ॥

दोहा—यौं ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहिदीन ॥
लै आईं सब नंदगृह, कृश तनु बदन मलीन ॥

सो०—ब्रजतिय परम उदास, हरि बिन सुख संपतिसपन ॥

१ ग्रामके किनारेतक । २ कमोदनी । ३ नेत्र ।

रहैं प्राण इहि आश, श्याम कह्यो मिलिहौं बहुरि ॥
खग मृग बिकल जहां तहँ बोलैं । गाय वत्स राँभत सब डोलैं ॥
तरुवेली पल्लव कुम्हिलानी । ब्रजकी दशा न परति बखानी ॥
चले नंद गोपनसँग लैकै । ब्रजबासिनको धीरज दैकै ॥
बाल सखा हरिके सुख दाई । दरशन लागि चले सब धाई ॥
उत अक्रूर शोच मन माहीं । कियो काज मैं नीको नाहीं ॥
बल मोहन भैया दोउ बारे । अति कोमल नवनीत पियारे ॥
करिकै जननी जनक दुखारी । व्याकुल सबै गोपकी नारी ॥
मैं लै जात कंसपै तिनको । मो देखत मारैगो इनको ॥
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी । जाहुँ लिवाय इन्हैं ब्रज फेरी ॥
कंस आज मारे बरु मोहीं । हरिको जाय देहुँ नाहैं ओहीं ॥
यहि अंतर यमुना नियराई । ठाढो कियो तहां रथ जाई ॥
अंतर्यामी हरि भगवाना । भक्तहृदय संशय पहिचाना ॥
दोहा-भूख लगी तव हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु ॥
करि यमुना अस्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु ॥
सो०-सुनत वचन मृदुकान, सुफलकसुत सुनितुरतही ॥
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहुँ भैयन दियो ॥
आपहु लाग करन मन दीनों । यमुना पैठि संकलप कीन्हों ॥
जबहीं शीश नीरमें डारयो । तब अचरज यक भाव निहारयो ॥
राम कृष्ण रथपर सुखदाई । जल भीतर शोभित दोउ भाई ॥
चकित भयो जलतेंशिरकाढ्यो । देख्यो रथ बाहर सो ठाढ्यो ॥
बहुरो बूडि सलिलमें पेख्यो । वैसोइ फेरि तहां रथ देख्यो ॥
क्षण जलमें क्षण प्रकट निहारै । पुनि पुनि संभ्रमें बुद्धि बिचारै ॥
स्वप्नकिधौं जाग्रत यह होई । कैधौं मों मतिमें भ्रम कोई ॥
कैधौं जलमें रथकी छाया । कैधौं यह हरिकी कछु माया ॥
भयो विकलमति थिर कछु नाहीं । देखन लग्यो बहुरि जल माहीं ॥

१ नाश्ता । २ संदेह । ३ दृष्टिमें आये । ४ पानी । ५ सहितभ्रम ।

तब अक्रूर बहुत अकुलायो । निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो ॥
देखत भयो तहां जलमाहीं । सकल देव ठाढे हरि पाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने । नमित कंधपर सम्पुट कीने ॥

दोहा–शेष सहस फणि मणिनयुत, जग मग ज्योति अनूप ॥
श्वेत चरण पटपीत युत, राजत हलधर रूप ॥

सो०–नव नीरद[१] तनु श्याम, पीत वास लावण्यनिधि ॥
भुज प्रलम्ब अभिराम, शेषें[२] अंक हरि सोहहीं ॥

चारु अरुण पङ्कजदलनयना । चितवन चारु चारु मृदुबयना ॥
चारु तिलक बर वाल बिराजें । चारु कुटिलकुन्तल छबि छाजें ॥
चारु तिलक नासिका सुहाई । चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवणचिबुकः[३] दरग्रीवा[४] । चारु बसन बिहसनछबि सीवा ॥
उर विशाल श्री चिन्ह विराजें । उदर सुघर रोमावलि राजें ॥
नाभि गँभीर क्षीण कटि देशू । भुज विशाल बरचारु सुबेशू ॥
जंघ गुल्फ अति चारु सुहाई । पद कमलन नख शशि छबिछाई ॥
नख शिख अनुपम रूप बिराजें । दिव्याभरण सकल अँग छाजें ॥
कुंडल मुकुट जटित मणिमाला । मुक्तमाल वनमाल विशाला ॥
यज्ञोपवीत पीताम्बर काँधे । कौस्तुभ मणि अङ्गन बरबाँधे ॥
कर पल्लवन मुद्रिका[५] राजें । शङ्ख चक्र गद पद्म बिराजें ॥
क्षुद्रघंटिका अति द्युति कारी । मणिन जटित नूपुर छबि भारी ॥

दोहा–नन्दसनन्दादिकनते, दिव्य पारषद आहिं ॥
कर जोरे ठाढे सबै, परिचर्य्याके माहिं ॥

सो०–ठाढी जोरे हाथ, माया निज माया सहित ॥
भक्ति भक्तके साथ, अंबरीष प्रहलाद बलि ॥

शिव अज सहित शिवा अरुबानी । सनकादिक नारद अरु ज्ञानी ॥
भक्तन सहित सुरासुर जेते । कर जोरे ठाढे सब तेते ॥
चन्द्र कुबेर वरुण दिक्पाला । मनु विश्वकर्म धर्म यमकाला ॥

१ मेघ । २ शेषशय्यापर । ३ ठोडी । ४ शंखकीसीग्रीवा । अंगुठी ।

बंदन करत चरण धरि माथा । गावत वेद सकल गुणगाथा ॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो । कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो ॥
चिंता सकल चित्तकी नाशी । जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी ॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो । तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो ॥
अति आनंद बढ्यो मन माहीं । अस्तुति करन लग्यो तिहि ठाहीं ॥
धन्य धन्य प्रभु अंतर्यामी । नारायण त्रिभुवनके स्वामी ॥
सकल विश्व तुमहीं बिस्तारो । बिश्वरूप है रूप तुम्हारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी । लीला सगुण गुणनकी राशी ॥
प्रभु तुम सब देवनके देवा । जानै कौन तुम्हारो भेवा ॥

छं०–कोजान तुह्मरो भेवहरि, तुमसकलदेवमयीप्रभो ॥
आदि कारण सबहिके तुम, विश्व सब तुह्मरो विभो ॥
नाग नर सुर असुर अग जग, दास सब तुह्मरो हरी ॥
रहति माया वश तुह्मारी, जाहितुम ज्यहि विधि करी ॥
योग यज्ञ अनेक कर्मन करि, तुह्मैं सब ध्यावहीं ॥
जैसो जाको भाव तैसो, तुमहिं ते फल पावहिं ॥
अति अगाध अपार तुम गति, पार काहू नाहिं लह्यो ॥
शंभु शेष गणेश बिधना, नेति निगमनहू कह्यो ॥
भक्तहित धरि विविध तनु तुम, चरित अद्भुत विस्तरो ॥
मच्छ कच्छ वराह वपु है, वेद गिरि तुम उद्धरो ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि, शरण हित वामन भये ॥
भृगुवंश मणि अभिराम तनु धरि, मान मय क्षत्रियहये ॥
रामरूप निपाति रावण, अरु विभीषण नृप कियो ॥
कंस अरि यदुवंश भूषण, कृष्ण वपु छवि निधि लियो ॥
बौद्ध रूप दयालु कलिकिहिंसादि, कर्मन भावहीं ॥

१ समूह । २ संसार । ३ वेद । ४ अनेक अवतार । ५ शत्रु ।

निःकलंकमलेच्छहा[1], दश रूप श्रुति तव गावहीं ॥
दोहा–तव गुण रूप अनंत प्रभु, हौं अजान जगदीश ॥
यों अस्तुति अक्रूर करि, नायो पदपर शीश ॥
सो०–तबहिं श्याम सुखदाय, अंतर हित जलते भये ॥
निकरयो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥
लखी कृष्णाकी जब प्रभुताई। बढ्यो हर्ष अति उर न समाई ॥
भूले नेम न कछु कहिजाई। मगन ध्यान बलराम कन्हाई ॥
कहत मनहिं मन यह अविनाशी। पूरण ब्रह्म सकल गुणराशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना। नाहिंन इन समान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर सन्शा। ये करिहैं ताको निरवन्शा ॥
चल्यो हांकि रथ तब हर्षाई। नँद उपनंद मिले तहँ आई ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं। करि सयानमन मन मुसकाहीं ॥
कही तात तुम अब हरषाने। प्रथमाहिं कछू बहुत मुरझाने ॥
कहौ सांच हमसों सोइ बानी। तब स्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धान श्रीकंता[2]। गुणन अगाघ अनादि अनंता ॥
निगम नेति कहि जाहि बखानैं। सहसाननैं नित नव गुण गानैं ॥
करिकै कृपा जानि निज दासा। दियो दरश संशय सब नासा ॥
दोहा–अब मोहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ॥
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुम्हारे हाथ ॥
सो०–कहा बापुरो[4]कंस, कहा मल्ल कह कुबलिया ॥
अब करिये निर्वंश, वेगि नाथ ऐसे खलन ॥
सुनि मोहन सुफलक सुत बानी। भये प्रसन्न भक्तसुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई। सन्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणि किरण महलन छबि छाई। जगमगात नभ सुंदरताई ॥
अक्रूरहि बूझत घनश्यामा। कहियतहै मधुपुर ये नामा ॥
श्रवणन सुनत रहत है जाही। देख्यो आजु दृगनते ताही ॥

१ म्लेच्छोंके मारनेवाले। २ विष्णु तथा लक्ष्मीपति। ३ इन्द्र। ४ तुच्छ।

कंचन कोटि कंगूरासोहै । बैठे मनहु मैदन मन मोहै ॥
बन उपवन पुरके चहुँ पाहीं । अति भावत मेरे मन माहीं ॥
लखि लखि हरि मथुराकीशोभा। पुनि पुनि पुलकत करि मन लोभा
तहां जन्म जियमें करि जाने । ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
बाजतिनौबति नृपति दुवारा । होत शब्द घरियाल उदारा ॥
सुनि सुनि मन आनंद बढावैं । नगर शोर सुनि रुचि उपजावैं ॥
कनक खचित मणि जटित अटारी।धवल नवल अति ऊंचि सवाँरी ॥

दोहा—ध्वजपताक तोरण कलश, जहँ तहँ ललितवितान ॥
मुक्ता झालरि झलमलै, कोकरिसकै बखान ॥
सो०—निरखि निरखि हर्षात, मनमोहन अक्रूरको ॥
वलहि दिखावत जात, लसित टालकर पल्लवन ॥

कह अक्रूर सुनहु ब्रजनाथा । भई आजु मधुपुरी सनाथा ॥
तुमहिं विलोकि विराजति ऐसी । पति आगमतिय सोहति जैसी ॥
कसी कोट कटि किंकिणि मानो। उपवन वसन विविध रँग जानो ॥
मंदिर चित्र विचित्र सुहाये । जनु भूषण रचि रंग बनाये ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं । मनहु चरण नूपुर ध्वनि साजैं ॥
धामन ध्वजा विराजतहैं जिनि । संभ्रम गति अंचल चंचल तिमि॥
उच्च अटन षट ऋतु छबि छाजै । जनु उर आनंद उमँगि विराजै ॥
भूली अति सुख संभ्रम ताते । प्रगटे कनक कलश कुँच जाते ॥
मोखा द्वार दरीची द्वारा । लागे विद्रुमे कुलिश किवारा ॥
मनहु तुम्हारे दरशन लागी । नयननरही निमेषनत्यागी ॥
मुक्ता झालरि खिरकि विराजैं । हँसति मनो आनन्दन साजैं ॥
जगमगि ज्योतिरही छबि झूली । जनु तुम पंथ निहारत भूली ॥

दोहा—नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप ॥
असुर कंसको जीतिकै, होहु इहांके भूप ॥
सो०—सुनि बिहँसे नँदलाल, ललित वचन अक्रूरके ॥
पहुँच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरा पुरी ॥

१ कामदेव । २ स्वर्णजडित । ३ चंदोवा ।४ स्तन ।५ मूंगा ।६ पलक लगाना ।

नगर निकट पहुँचे जब जाई। सुफलक सुवन सहित दोउ भाई ॥
गौर श्याम रथ पर दोउ राजैं। कोटिनकाम निरखि छबिछाजैं ॥
कंस दूत लखि जहँ तहँ धाये। समाचार सब नृपति सुनाये ॥
आये बल मोहन दोउ भाई। सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई ॥
गहि कर खड्ग[१] चर्मलै धायो। रंगभूमि के महलन आयो ॥
गज मुष्टिक चाणूर, बुलाये। औंर सुभट[२] सब बोलि पठाये ॥
तिन सन कह्यो सजग सब होऊ। ठावँहि ठावँ रहौ सब कोऊ ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये। धनुषपास बहु सुभट पठाये ॥
पठवत दूत दूत परधाई। आये कहँ लगि देखौ जाई ॥
गर्जै कंस सेन सब साजे। द्वारे विविध[३] बाजने बाजे ॥
पीरो भयो हृदय डर मानो। सूखत अधर बदन कुम्हिलानो ॥
नंदमहरके सुत सुनि आवत। मन मन मारन गर्व बढावत ॥

दोहा-पर्‌यो शोर मथुरा नगर, आवत नंदकुमार ॥
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काम बिसार ॥

सो०-लाजकानडरडार, कोउ खिरकिन कोउ अटनपर॥
कोऊ खडी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥

कियो प्रवेश नगरमें जाई। असुर निकन्दन जन सुखदाई ॥
इन्दुँवरण[४] रथपर दोउ वीरा। सुभग श्यामबर गौर शरीरा ॥
शीश मुकुट कुण्डल छबिछाजै। कुण्डल एक राम श्रुति राजै ॥
नीलपीत बर बसन निकाई। मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे। धाय धाय रथके सँगलागे ॥
युगल रूपलखि होहिं सुखारे। यकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
चढी अटारिन देखहिं नारी। बढ्यो प्रेम आनँद उरभारी ॥
निशिदिन सुनि गुणगण अभिलासी। अति आरत दरशनकी प्यासी ॥
शशि आनन मृदु[५] वेष किशोरा। भये निरखि दोउ नयन चकोरा ॥

१ तलवार। २ योद्धा। ३ अनेकप्रकारके बाजे। ४ चन्द्रवर्ण। ५ कोमल।

पुलकि गात दृग आनँद पानी। कहत सप्रेम परस्पर बानी॥
येई सखि बलराम कन्हाई। सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई॥
नन्द गोपके ये दोउ ढोटा। गौर श्याम सुन्दर बरजोटा॥

दोहा-मणिकंचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस॥
कै प्रगटे व्रजदेन सुख, त्रिभुवनके अवतंस॥

सो०-धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्यश्यामबलराम धनि॥
धनि धनि व्रजकी वाम, प्रगट प्रीतिपाली जिन्हन॥

सुनति हुती पुरुषारथ जिनके। देखहु रूप नयन भरि तिनके॥
अतिहि अनूप वेष नटसोहै। कहहु सो को छबि देख न मोहै॥
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो। सो विधि यह नयननफल दीनो॥
अति अभिराम श्याम छबि धारी। इनहीं प्रथम पूतना मारी॥
शटका तृण इनही संहारे। वत्स बका अघ पुनि इनमारे॥
इन्द्रकोप वर्षन व्रजकीनो। इनहीं गिरिकर धरि नख लीनो॥
जलते काली इनहिं निकान्यो। पुनि अरिष्ट केशी इन मान्यो॥
गौर शरीर नाम बल सोई। धेनुक अरु प्रलम्बा सोई॥
अब अक्रूर पठै नृपराई। इहां बोलि पठये दोउ भाई॥
रंगभूमि रचिकियो अखारो। कहा करन धौं हृदय विचारो॥
जननी धीर धन्यो धौं कैसे। जिन बालक पठयेहैं ऐसे॥
देहिं अशीश मांगि विधिपाहीं। न्हातहु बार खसहु तनुनाहीं॥

दोहा-लेत बलैया वारिकै, आंचर यह कहिनार॥
करिहै इनसों कपट, नृप, तौ ह्वै हैं जरिछाँर॥

सो०-सफल भये मनकाम, देखि दरश इनको सखी॥
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीस सुनाय सब॥

कहत युवति यक सुनहु सयानी। मैं जो सुन्यो सो कहत बखानी॥
ये वसुदेव कुवँर सखि दोऊ। ऐसे लोग कहत सब कोऊ॥
कंस त्रास करि मात पठाये। नन्द सखा गृह जाय दुराये॥

१ भूषण। २ पुन्य। ३ माता। ४ राख।

करि दुलार यशुमति पय प्याये। हित करि तिनके बाल कहाये॥
गौर अंग नयनन रतनारे। जो प्रलम्बको मारन हारे॥
कुंडल एक बाम श्रुति धारी। ते रोहिणी सुवर्न सुखकारी॥
अति अभिराम महाबल धामा। ताते नाम धरयो बलरामा॥
श्याम सुभगतनु उर बनमाला। शीश मुकुट दो नयन विशाला॥
जिन्हैं हेत करि सँग व्रज बामा। मान्यो नाहँ सकल सुखधामा॥
जिनके चरण छुवत बड़ पापी। पाई सुगति सु दर्शन शापी॥
अमितँ प्रभाव कृष्ण सब कहहीं। जिनके नाम अधमगति लहहीं॥
कहत देवकी सुत सब तिनसों। कंस राज भय मानत जिनसों॥

दोहा—आयेहैं अक्रूर सँग, तात मात सुख दैन॥
रंग भूमि रिपु जीतिकै, करिहैं यदुकुल चैन॥

सो०—सुनिसुनि मुदित सुनारि, अतिप्रिय बानी तासुकी॥
माँगत गोद पसारि, विधिसों ऐसो होय सब॥

देत सबन सुख यों मन भावन। उतरे जाय बाग इक पावन॥
गोपन सहित नन्दतहँ राख्यो। तब सुफलकसुत सों हरि भाख्यो॥
कहहु तात आगे तुम जाई। आये श्याम राम दोउ भाई॥
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं। करि विश्राम हमहुँ तब ऐहैं॥
तब अक्रूर जोरि युग पाणी। बोल्यो सुनत श्यामकी वाणी॥
मोहिं न्यारो क्यों करत गोसाईं। राखो निकट दासकी नाईं॥
कंस दूत मोको जनि मानो। निज सेवक अपनो करि जानो॥
अरु मेरे मनमें यह आसा। चलिपावन कीजै मो बासा॥
तब हँसिकै बोले घनश्यामा। ऐहौं एक दिना तुम धामा॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये। बिदा होय नृप पास सिधाये॥
रथते उतरि परे दोउ भाई। ग्वाल बाल सब लिये बुलाई॥
सखा भ्रात सँग सहज हुलासा। गये यमुनतट नगर निवासा॥

दोहा—बाल वयस शोभित सुभग, बाल सखनके संग॥

१ अरुण। २ पुत्र। ३ पतिमाने। ४ असंख्य।

गौर श्याम शोभा निरखि, लज्जित कोटि अनंग ॥
सो०-अति विचित्रको जान, ब्रजवासी प्रभुके चरित ॥
अमित गुणनकी खान, जनरंजन दुष्टनदलन ॥

अथ रजकवध लीला ॥

नृपतिरजकके अम्बर नृप धोवै । आवत देखि श्याम तनु जोवै ॥
हँसत गर्व बातें यों चालै । कंसराजके उर ये शालै ॥
लघु लघु वयसें गोपके जाये । बहुत अचगरी करि ये आये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो । इनहीं ताहि शिला पर मारो ॥
अति खोटो जिहि नाम कन्हाई। प्रथम ताहि डारैं मर वाई ॥
है बलभद्र तैसई खोटो । गोरो अंग महाबल मोटो ॥
ताहू को मारैगो राजा । बोले हैं याही के काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर बानी । प्रभु अंतर्यामी सब जानी ॥
ग्वालन सहित गये तँहि पाहैं । कह्यो कछू अंबर हम चाहैं ॥
तिनको पहिरि नृपति पै जैहैं । देहैं बहुरि तुम्हैं जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृप सों पैहैं । तामें कछु तुमहूं को दैहैं ॥
कै पहिलेही लेहौ हम सों । बूझत हैं तैसी हम तुम सों ॥
दोहा-हँस्यो बचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ॥
बलिके बकरा ह्वै रहे, आयेहैं पट लैन ॥
सो०-राखैं वरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वारलौं ॥
तब लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो ॥
वन वन फिरत चरावत गैया । अहिर जाति कामरी उढैया ॥
नटको भेष साजके आये । नृप अम्बर पहिरन मन भाये॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा । पहिरावन लेबेकी आसा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ । खोवन चहत अबहि पुनि सोऊ ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई । देहु वसनहै तुमहि भलाई ॥
हम माँगतहै सहजहि तुमसों । तुमकत करत इती रिस हमसों ॥

१ कामदेव । २ लीला । ३ धोबी । ४ वस्त्र । ५ छोटी छोटी उमर ।

सहज बातको रिस नहिं कीजै । मांगे देहु मानि गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठ तब रजक रिसानो । ये नृप बसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारैं । नन्दहिपकरि बन्दिमें डारैं ॥
जाहु चले ह्यांते अबनीके । कैहैहो अबहीं विनजीके ॥
करत अचंगरी मोसा आई । दुहुँन मारिहौं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो श्यामसो ख्याला । भुजापकरि पटक्यो ततकाला ॥

दोहा—तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कीन्हों रजक निहाल ॥
जन्म मरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥

सो०—लखिकै गये पराय, संगी ताके सब रजकै ॥
लीन्हे बसन लुटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके ॥

रजक मारि सब बसन लुटाये । आप पहिरि ग्वालन पहिराये ॥
विविध रङ्ग बहु भांति नवीने । निज निजरुचि ग्वालनसबलीने ॥
चले तहांते सब हरषाई । मिल्यो एक दरजी पुनि आई ॥
प्रभुको देखि बहुत सुख पायो । चरण कमलको माथ नवायो ॥
घाट बाट जो बसन सुहाये । ते उनकरि सम तुरत बनाये ॥
ताको कृतहि मान प्रभु लीन्हो । अभय दानदै निज पद दीन्हो ॥
पुनि यक माली हुतो सुदामा । ताके द्वार गये घनश्यामा ॥
तुरत आइ तिन पद शिरनायो । हरि हलधरलखि हर्ष बढायो ॥
आदर सहित सदनमें आने । चरण धोय निज भाग्य बखाने ॥
नृपतिहेतु जो हार बनाये । ते सप्रेम प्रभु को पहिराये ॥
हाथ जोरि बहु विनय सुनाई । जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई ॥
मोको बहुत अनुग्रह कीन्हो । दीन जानि अपनो करि लीन्हो ॥

दोहा—सुनि सप्रेम ताके बचन, रीझे श्याम सुजान ॥
मालीं पूरणकाम करि, दियो भक्ति बरदान ॥

सो०—सखन सहित दोउ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले ॥
तहां पंथमें आय, कुबिजालै चन्दन मिली ॥

---

१ अकपलाइट । २ भागगये । ३ धोबी । ४ कृपा । ५ गुणमाना ।

निरखि श्याम छवितनु सुधि भूली । बोली हर्षि प्रेम रस फूली ॥
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई । तुम्हें नाथ चंदन मैं ल्याई ॥
मोहिं कल्पनो यह जगवन्दन । चरचौं अंग तुम्हारे चन्दन ॥
दासी कुल कुबिजा ममनाऊं । नृपके उर चन्दन नितलाऊं ॥
तुमहिं जानिकै प्रभु तिहिं ठाहीं । अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं ॥
आजहि दरश प्रकट प्रभु पायो । मोजियकी संताप नशायो ॥
अब यह मलय कृपा करि लीजै । पूरण काम नाथ मम कीजै ॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी । भाव भक्ति कुबिजा पहिचानी ॥
भावहिक वश त्रिभुवन राई । हित करि कुबिजानिकट बुलाई ॥
चन्दन करि पूजे दोउ भाई । रही श्याम छवि निरखि भुलाई ॥
तब हरि हलधरसों हँसि भाष्यो । हित बहुत इन हमसों राख्यो ॥
हमहूं कछु याको हित कीजे । सूधे अङ्ग नेक करि दीजे ॥

दोहा—पगराख्यो पग पीठपर, धरेउ शीशकर श्याम ॥
नेक उठाई चिबुकगँहि, भई सुन्दरी बाम ॥

सो०—को करिसकै बखान, जाहि बनाई आपुहरि ॥
भई रूप गुणखान, कुबिजामन आनन्द अति ॥

महाकुरूप कूबरी तैसी । परसैत तुरत भई रति जैसी ॥
तब कुबिजा अपने मन मान्यो । मिले मोहिं मोहन पति जान्यो ॥
पुनि पुनि कमल चरण शिरनाई । हाथ जोरि बहु विनय सुनाई ॥
जिमिकीनी न्वाहिं कृपा कृपाला । तिमि ममसदनै चलहु नँदलाला ॥
अपने चरण कमल तहँ धरिये । सफल मनोरथ मेरो करिये ॥
तासों विहँसि कह्यो घनश्यामा । कंस देखि अइहौं तव धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई । चले धनुष देखन दोउ भाई ॥
ग्वाल सखा सँग सुभग सुहाये । कामसेन बर रूप बनाये ॥
पुरजन भीर चहूंदिशि भारी । चढीं अटारिन देखहिं नारी ॥
निरखि श्याम मुख इन्दु उदारा । जनुपुर उदधि तरङ्ग अपारा ॥

---

१ अभिलाषा । २ शत्रु । ३ बलदेवजी । ४ ठोढ़ी । ५ छुवत । ६ घर ।

जहँ तहँ कहत सकल पुरबासी । भई सुन्दरी कुबिजा दासी ॥
श्याम कछु चेटकसो कीन्हो । अंग सुधारि रूप बर दीन्हो ॥
दोहा–रजकमारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु ॥
बाल भाव सोहत मनहिं, हैं कोउ देव उदारु ॥
सो०–सुनत रहे दिन रैन, पुरुषारथ इनको भवन ॥
तैसे देखे नैन, व्रजवासी प्रभु नन्दसुत ॥
गये धनुषशाला दोउ बीरा । देखत चकित भये भटभीरा ॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई । देखि थके सुन्दर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सब ठाढे । अति बलवन्त धीर नर गाढे ॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया । बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया ॥
सुनियत अतिबल भुजा तुह्मारी । यह कोदण्ड चढावहु भारी ॥
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखराशी । कहा करत हमसों यह हासी ॥
कहां बाल हम बैस किशोरा । कहां धनुष अति गरुअ कठोरा ॥
शूरवीर ठाढे सब लहिये । तिनसों धनुष चढावन कहिये ॥
खेलन कहौ खेल कछु हमको । सोहम खेल दिखावैं तुमको ॥
ऐसे श्याम हँसत तिनमाहीं । अरु अक्रूर गये नृप पाहीं ॥
समाचार सब जाय सुनाये । नन्द सहित बल मोहन आये ॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे । रजक जाय तिहि काल पुकारे ॥
दोहा–मारे विन दूषण हमैं, नन्द गोपके बाल ॥
लीन्हे बसन लुटायकै पहिराये सब ग्वाल ॥
सो०–सुनतहि उठ्यो रिसाय, बोल्यो सबन बुलायनृप ॥
करी प्रथमहीं आय, देखौ इन ढीठे बडे ॥
अब मारिहौं अवेशि दोउ भाई । लेहुँ आज सब व्रजहि लुटाई ॥
देहु बन्दिमें नन्दहि ल्याई । गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहिं बुलायो । आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखहु कोउ जान नहिं पावैं । असुर जाय सबको गहिल्यावैं ॥

---

१ मंत्रतंत्र । २ सुन्दर । ३ धनुष । ४ भारी । ५ अवश्य ।

ऐसे कंस कहत रिसयाई । तबहीं दूतन खबरि जनाई ॥
कुविजासों चन्दन हरि लीन्हो । ताको रूप अनूपम दीन्हो ॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई । यह सुनतहि कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये । ते यह कहत श्याम पहँ आये ॥
पहिले तोरि धनुष गोपाला । बहुरि बुलायो निकट भुवाला ॥
सुनि असुरनके वचन कन्हाई । बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याहीको नृप हमहिं बुलायो । जोरेउ वैर जानि यह पायो ॥
गहनै लगे ते बालक जानी । तबहिं श्याम कछु रिस उर आनी

छं०—उर आनिरिस गहिपानि तुरतहि, असुरलै मारे सबै ॥
अतिहि बेगि उठाय धनुषहि, तोरि महिडारेउ तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा, मार मार पुकारहीं ॥
नंदसुत रणवीरहो, धर धीर असुर सँहारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत, तेन मटकत फिरतहीं ॥
एक अटकत एक लटकन, एक सटकत जहँ तहीं ॥
ताल चटकत चमकि छटकत, देखि भटकत नट भले ॥
एक पकरि फिराय पटकत, जातते नृप पहँ चले ॥

दोहा—ख्यालहिमारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ॥
चले सामुहें पवरितकि, जहां कुवलिया व्याल ॥

सो०—देखत चढे विमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि ॥
डारत सुमन सुजान, ब्रजवासी प्रभुपद हरषि ॥

रंगभूमि हरि हलधर आये । संग सखा सब ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छवि सब छाये । रवि शशि उडगणै उदित सुहाये ॥
देख्यो द्विरद द्वार पर ठाढो । मनहुँ गर्वको गिरिवर गाढो ॥
कंधकेशरी गर्व महारी । बल तन हँसे गयन्द निहारी ॥

१ असुत । २ पकडनेलगे । ३ हाथी । ४ फूल । ५ नक्षत्र । ६ नाशक ।

ताक्षणकी छबि कही न जाई । कसत पीत पट कटि लपटाई ॥
श्याम सुभग लट घूंघुर वारी । पाग पेच मिलि पाग सँवारी ॥
मधुपुरकी युवती सब बाढी । कहत परस्पर महलन ठाढी ॥
लखहु सखी अँग अंग लुनाई । रूप राशि मन हरण कन्हाई ॥
कोटि मदन छबि विधि लुनलीनी । तब यह मूरति सांवरि कीनी ॥
अतिहि कुशल ये लखि सुखदाता । हम अभागिके कूर विधाता ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागी । निशिदिन रहत प्रेम रस पागी ॥
बनवीथिन कुंजन विच डोलैं । रास हास रस करत कलोलैं ॥

दोहा–होयँ हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज ॥
जैसे तोरेउ धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज ॥

सो०–सुरन मनावतजात, अति कोमलनँदलाललखि ॥
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते ॥

देखि मतंग द्वार मतवारो । गजपालहि बलराम हँकारो ॥
सुनहु महावत बात हमारी । लेहु द्वारते बारण टारी ॥
जान देहु हमको नृप पासा । नातरहैहै गजको नासा ॥
कहे देत नहि दोष हमारो । मति जानै तू हरिको बारो ॥
त्रिभुवन पति दुष्टन संहारी । धरणी भार उतारन कारी ॥
सुनत बोल गजपाल रिसानो । रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो ॥
त्रिभुवन पति अब गाय चराये । गांडे खान गजनसों आये ॥
बादत बडे शूरकी नाई । जैहैं प्राण अबहि क्षण माई ॥
तोरेउ धनुष भयो अति गारो । नहि जानत यह गज अति भारो ॥
दश सहस्र गजको बल याही । डरपत है ऐरापति ताही ॥
जब लगि यासों लरि नहि लैहो । तब लगि कैसे भीतर जैहो ॥
ऐसे कहि अंकुश कर लीन्हो । गज गजपाल सामुहे कीन्हो ॥

दोहा–तबहिं कोपि हलधर कह्यो, सुनुरे मूढकुजात ॥
गज समेत पटकौं अबहिं, मुँह सँभारि कहु बात ॥

---

१ मथुरापुरी । २ लावण्य । ३ हाथी । ४ बोलताहै ।

सो०–नेक न लगिहै वार, वारणं मरि जैहै अवहिं ॥
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो ॥
यह सुनि गज गजपालचलायो । झटकि सूंड बहुरो गज धायो ॥
लीन्हो लपटि सूंडके माहीं । देखत शूरबीर चहुँघाहीं ॥
तब बलरामकोपकरि भारी । वज्र समान थाप यकमारी ॥
तनुसमेटिकर करि सकुचान्यो । दईकूक मदरंध्र सुखान्यो ॥
तबहीं उचटि भये बलन्यारे । असुर सेन देखत हियहारे ॥
हँसत निकट ठाढे दोउ भाई । देखि महावत रहेउ लजाई ॥
थकित रहेउ हाथी जब जान्यो । तब मनमें गजपाल डेरान्यो ॥
जो ये बालक बधे न जाहीं । मारै कंस मोहिं पलमाहीं ॥
अंकुश मसक शीश परदीन्हो । बहुरि गयन्दहि ताताहि कीन्हो ॥
भयो क्रोध हाथी मनमाहीं । गंडस्थल मद अंबु चुचाहीं ॥
पवन वेगते आतुर धायो । गरजि घुमरि दोउनपर आयो ॥
महा कोप करि गहे कन्हाई । परेउ दशन दै धरणि धसाई ॥
दोहा–डरपि उठे तेहि काल, सब सुर मुनि पुर नरनारि ॥
दुहूं दशन विच है कढे, बलनिधि प्रभु दैत्यारि ॥
सो०–उठे गजहिके साथ, बहुरी ख्यालहोहांकदै ॥
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके ॥
हांक सुनत अति कोप बढायो । झटकि सूंड बहुरो गजधायो ॥
रहे उदरतर दबकि मुरारी । गये जान गजरहेउ निहारी ॥
पाछे प्रगट बहुरि हरि टेरेउ । बलदाऊ आगे ते घेरेउ ॥
लागे गजहि खेलावन दोऊ । चकित भये देखत सब कोऊ ॥
चहुंघा फिरत चक्रकी नांई । सूंड पूछ क्षण क्षण छ्वै जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावै । चारों दिशि हरि फिरत नचावै ॥
घात करत प्रभही मन माहीं । गजरिसबिकल इन्हैं रिसनाहीं ॥
कबहूं पूंछ पकरिकै झेलैं । ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं ॥

---

१ हाथी । २ हाथी । ३ मदचूनको छिद्र । ४ हाथी । ५ पेटके नीचे ।

कबहूं इत उत ते दोउ बीरा। भजत मारिके मुष्टि गँभीरा॥
कबहुँ उदरतर ह्वै कढि जाहीं। नेक छुवन पावत गज नाहीं॥
नीलपीत पट कटि फहराहीं। चपल नयन दीरघ बरबाहीं॥
खेलत गज चंचल सँगराजैं। निर्तत मदन मनहुंगति साजैं॥
छं०–जनु मदन निर्तत साजि गति, इमि श्याम अरुगजखेलहीं॥
पूंछ कर गहि कबहुँ आगे, कबहुँ पाछे पेलहीं॥
गजहि लखि पुर नारि नर सब, बिकल बिधिहि मनावहीं॥
बेगिमारैं श्याम गजको, हम निरखि सुख पावहीं॥
दीन्हो महावत बहुरि अंकुश, क्रोध करि हाथी चल्यो॥
जबहिं हरि गहि पूंछ पटक्यो, नेकनहिं भूपरंहल्यो॥
दये खैंच मृणाल ज्योंरदँ, सुमन झरि देवन करी॥
दास ब्रजवासी हरषि सब, असुरकी सेना डरी॥
दोहा–हँसत हँसत मारेउ प्रबल, दिरदँ कुबलिया श्याम॥
सखन सहित ठाढे मुदित, छबि निरखत ब्रजबाम॥
सो०–मारेउ गज बल तात, जहँ तहँ सब कोऊ कहत॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजबासी दासके॥

अथ मल्लयुद्ध लीला॥

चले जहां सब मल्ल गोपाला। द्विरद दंत धरि कंध विशाला॥
गौर श्याम सुंदर दोउ भाई। श्रमसीकर मुख कमल सुहाई॥
छबि अपार बलनिधि गंभीरा। संग गोप बालककी भीरा॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो। नव खग ज्यों पिंजर अकुलान्यो
भाजनको मन मांझ विचारा। भाजि न सक्यो लाजको मारा॥
गये रंग महि मोहन जबही। ज्यहिजस भाव दरशतेहि तसही॥
उठे शंक सब मल्ल अधीरा। बल समूह देखे दोउ बीरा॥

१ लंबी। २ पृथ्वी। ३ कमलनाल। ४ दांत। ५ हाथी। ६ पक्षी।

दुष्टी दैत्य हते तहँ जेते । रूप भयानक दरशे तेते ॥
कंस समीप भूप जे आये । तिन्ह राजवंशी दरशाये ॥
साधु सिद्ध देखहिं शुभ धामा । इष्ट देव पूरण सब कामा ॥
देखे सुरगण गगन सुखारी । सब देवनके देव मुरारी ॥
ग्वाल बाल सब देखत ऐसे । सदा संग खेलत ब्रज जैसे ॥

दोहा–महलनते देखैं प्रभुहि, सकल सुंदरी वाम ॥
कोटि काम शोभा हरण, नवकिशोर सुखधाम ॥

सो०–देखत अति विपरीति, कंस नृपति नँदलालको ॥
कंपि उठ्यो भय भीति, प्रगट कालदरशन भयो ॥

सर्व भाव पूरण भगवाना । अबलहिं अवल बलहिं बलवाना ॥
ललितहि ललित साधुको साधू । छलन छली सब गुणन अगाधू ॥
जो जन जैसो ध्यान लगावैं । ताको तिहि विधि दरश दिखावैं ॥
कहत देखि सब सुन्दर जोटा । येई नंद महरके ढोटा ॥
रजक मारि नृप बसन लुटाये । कीन्हे कुबिजा अंग सुहाये ॥
इनहीं असुर समूह सँहारेउ । धनुष तोरि हाथी इन मारेउ ॥
धरे कंध गजदंत बिराजैं । बालक गोप सखा सँग राजैं ॥
देखत असुर भीर चहुँपासा । जिनके वशमें भूमि अकाशा ॥
लीन्हे घेरि कंस भय मानी । तब चाणूर कहत हँसि बानी ॥
आवहु श्याम इतहि पग धारो । सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो ॥
सब कोउ तुम्हरे बलहि बखानै । हारि जीत काकी को जानै ॥
कहा भयो जो गज तुम मारो । लरहु आज हम संग अखारो ॥

दोहा–कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमैं खेलसों काम ॥

सो०–कहिये बात विचार, हमैं तुम्हैं लरि वो कहा ॥
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हमैं ॥

जान देहु हमको नृप पाहीं । काहे को रोकत मग माही ॥

---

१ आकाश । २ बलहीन (सबलन बल निर्बल बलदाई) । ३ राह ।

नृप हमको करि हेत बुलायो । तुम यह हमको कहा सुनायो ॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे । तुमको बालक कहिये कैसे ॥
किये कर्म व्रजमें तुम जैसे । देखे सुने नहीं कहुँ तैसे ॥
गिरि गोबर्द्धन कर पै धारेउ । जलते कालीनाग निकारेउ ॥
औरो असुर बीर बल भारे । सुनियत खेलतही तुम मारे ॥
सोबल आज देखि हम लेहैं । आगे जाय तुम्हैं तब देहैं ॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई । त्यों त्यों भय ब्याकुल अकुलाई॥
कहि कहि बारहि बार पठावै । मल्लनको बहु त्रास सुनावै ॥
क्यों रे सकुच करत मनमाहीं । मारत शत्रु बेग क्यों नाहीं ॥
जो दोउ बालक आज न मारो । करौं सकुल तो नाश तुम्हारो ॥
नृप सँदेश सुनि मल्लडराने । कहत परस्पर मन सकुचाने ॥

दोहा–लोनै नृपतिको मानकै, नंदसुवनसों आज ॥
लर मरिये कै मारिये, करैं कंसको काज ॥

सो०–लेहु सुयश नृपपास, अब बिलंब नहिं कीजिये ॥
कछु क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब ॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं । घाटि न कछु हम ते बल माहीं ॥
पशुपालक तुम कुँवर कन्हाई । जीते बहुतक पशु न खिलाई ॥
अबलगि नहीं मल्ल कोउ भेंट्यो । अबतौ हम सँग परयो चपेट्यो ॥
मल्लयुद्ध तुम सों हम लरिहैं । अब नरपतिको कारज करिहैं ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावै । भुजा ऐंठि रज अंग चढ़ावैं ॥
ठोंकैं ताल गाज ज्यों गरजैं । गहैं गाँसै हरि तनतकि तरजैं ॥
आपुसमें सब करत बिचारा । डारहु मारि उभय सुकुमारा ॥
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं । बोले बहुरि बिहँसि तिहि पाहीं ॥
सुनिये सकल मल्ल समुदाई । यहै तुह्मारे मन अब आई ॥
नृपपै हमैं जाय नहिं देहौ । बड़ो सुयश हमसों लरिलेहौ ॥
निपट खोज अब परे हमारे । यह न बसी उर भली तुह्मारे ॥

---

१ डर । २ निमक राजाका खायाहै । ३ कृष्ण । ४ कंस । ५ दांव ।

हम न कहें तौ तुम चित जैसी । कहत कहा कीजे अब तैसी ॥
दोहा-जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सबनार ॥
देखौरी मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार ॥
सो०-अति कोमल अति चारु, बाचैं कैसे हू दई ॥
कहत नयन जलढार, क्यों जननी पठये इहां ॥
अतिहि निठुर उर जाति अहीरा । लोभ लागि पठये दोउ वीरा ॥
ये तौ बालक अतिहि अजाना । कियो कहा उन यह अज्ञाना ॥
होन चहत अब धौं यह कैसी । कहत कंस यह बात अनैसी ॥
कहत सबै हमको यह भावै । करि सहाय विधि इनहिं बचावै ॥
तोरयो धनुष हन्यो गज जैसे । जीतहि श्याम इनहुंको तैसे ॥
जोरि जोरि कर विधिके आगे । अंचर छोरि छोरि सब मांगे ॥
तब चाणूर कृष्णपै आयो । सहज श्याम कटिपट लपटायो ॥
भुज भुज जोरि भये भिडि ठाढे । तकि तकि दाँव चलावत गाढे ॥
ऐसेई मुष्टिकं बलरामा । भिड़े बढाय बाद बलधामा ॥
दोऊ वीर लरत अति सोहैं । देखत सुर नरके मन मोहैं ॥
दीरघ नयन कमलते आछे । ललित लाल कछनी कटि काछे ॥
तनु चन्दन चित्रित छवि जाला । वृषभ कन्ध उर बाहु विशाला ॥
दोहा-शिरसों शिर भुजसों भुजा, दृष्टिदृष्टि सों जोरि ॥
चरण चरण गहि झपटिकै, लपटझपट झकझोरि ॥
सो०-गहन न पावत घात, छूटि जात लपटात पुनि ॥
शिव विधि पै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहन ॥
श्याम सहज मल्लन सों खेलैं । पकरि पकरि भुज दण्डन पेलैं ॥
भये प्रथम कोमल तनु ताहीं । शिथिल रूप पबिवत मनमाहीं ॥
तब चाणूर मनहिं गरबान्यो । हरिके बलहि तुच्छ करि मान्यो ॥
कोटि कुलिशसम तनुतिहि काला । तुरतहि होय गये नँदलाला ॥
करिकै कोप मुष्टि यक मारी । फूलसमान श्याम उर पारी ॥

१ माना । २ बैल । ३ पकड़ना चाहते हैं । ४ ब्रजकेसनान । ५ क्रोध ।

पुहुपहुँते कोमल तिहि मान्यो । तिन मारयो अपने जिय जान्यो ॥
भयो वेगि अति हर्षि नियारो । कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो ॥
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढो । परयो शोच प्राणन अति गाढो ॥
नंदसुवन महिमा तब जानी । निश्चय मीच आपनी मानी ॥
तब मोहन करिकोप हँकारयो । जनुगज को मृगराज पुकारयो ॥
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो । थर थराइ चाणूर डरानो ॥
धरयो धाय तब झपट कन्हाई । पटक्यो महि गहि चरण फिराई ॥

छं०-पटक्यो चरणगहि फेरि महि, चाणूर अति बल साँवरे ॥
धँसि गयो धरणीमसकिअँग सब विकटभूल्योदाँवरो ॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप, कंस उरधसको परयो ॥
निरखि पुर नर नारि नभसुर, हर्षि हिय आनँद भरयो ॥
पकरि ऐसिय भांति तब, बलराम मुष्टिक मारियो ॥
कहैं धनि धनि लोग सब, जय जयति सुरन उचारियो ॥
शल्ल अरु अति शल्ल आदिक, मल्ल तहँ जितने हते ॥
लपटि झपटि पछारि कै, पुनि नंदसुत मारे तिते ॥

दोहा-जब मारे हरि मल्ल सब, परयो कटक में शोर ॥
जिमि तारागण रँवि उदय, छिपे असुर चहुंओर ॥

सो०-सखन सहित दोउ बीर, रंगभूमि राजत खरे ॥
हरण भक्त भय पीर, ब्रजबासी प्रभु नंदके ॥

अथ कंसासुर वध लीला ॥

जबहीं श्याम मल्ल सब मारे । चपे असुर सब लखि हिय हारे ॥
देखि कंस अति भयो दुखारी । सेनापतिन कहत दै गारी ॥
कांपतलिये खड्ग बहु क्रोधा । कहत गये कितरे सब योधा ॥
लैतरवार ढाल सब कोऊ । डारहु मारि नंदसुत दोऊ ॥

---

१ फूल । २ गिरके लगनेका शब्द । ३ 'सिं' । ४ सूर्य । ५ तलवार ।

डारे मारि मल्ल सब मेरे। तनक छोहरा अहिरन केरे॥
डर नहिं करत चले इत आवैं। देखहु जीवत जान न पावैं॥
असुर वीर अपनी सर जेते। लैलै नाम पठाये तेते॥
कहा द्वारपालन भय बाढो। करहु कपाट पँवरिको गाढो॥
नृप भय मानि असुर सब धाये। अस्त्र शस्त्रलै हरिपर आये॥
भये विकल लखि पुर नर नारी। मनमन देत कंसको गारी॥
कहतकि भई कठिन यह बाता। बचहिं श्यामसो करै विधाता॥
आवत लखी असुरकी भीरा। भिरे हांक दैदै दोउ वीरा॥

छं०–अवलोकि असुर समूँह आवत, हांक दै दोऊ भिरे॥
मनहुँ गज गण निरखि केहरि[3], धाय तिनऊपरपरे॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको, हहँरि सेनापति गये॥
लपकि गहिभहिपटकि जहँ तहँ, क्रोधकर बळजू हँये[6]॥
श्याम गौर किशोर सुन्दर, असुर गण बिच यों लरैं॥
जनु शांत अरु शृंगार धरि तन, वीरकी करनी करैं॥
जात नहिं बरणी चटक गहि, पटक इत उत धावहीं॥
भूमिभार अपार अर्वनिधि, असुरनिकर नशावहीं॥

दोहा–परचो नगर खळ भळ सकल, अति भयव्याकुलकंस॥
पुनि पुनि मंत्रिनसों कहत, बढ्यो अधिक उरसंस॥

सो०–कीजै कछु उपाय, जियत जाहिं नहिं बंधु दोउ॥
मारहु नंद बुलाय, व्रज कोउ रहन न पावहीं॥

पुनि वसुदेव देवकी दोऊ। मारहु कठिन बन्धुते सोऊ॥
बहुरों उग्रसेनको मारौ। पिता दोष कछु उरनहिं धारौ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे। कंपित रिसन खड्ग कर धारे॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा। मारे असुर सकल दोउ वीरा॥

---

१ तुल्य। २ झुंड। ३ सिंह। ४ भयभीत। ५ मारडाले। ६ पाप।

अति बलवन्त नन्दके बारे । तब संकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढि दोऊ । बाज झपट देखत सब कोऊ ॥
ह्वै गयो चकित नृपति भय मान्यो। आयो काल निकट यह जान्यो ॥
रहि गयो लिये खड्ग कर माहीं । हरिको मारिसक्यो सो नाहीं ॥
तबहीं श्याम लात यक मारी । गिरि गयो मुकुट शीशते भारी ॥
दीन ढकेलि मंचते भूपर । कूद परे हरि ताके ऊपर ॥
तहां चतुर्भुज रूप दिखायो । सो स्वरूपदै स्वर्ग पठायो ॥
मारचो कंस कहत सब बानी । जय ध्वनि सुरगण गगन बखानी ॥
छं०—जय ध्वनि गगन सुरगण बखानी, सुमनकी वर्षा भई ॥
कहत सब हरि कंस मारचो, हांक यह त्रिभुवन गई ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि सिद्ध गंधर्व, मुदित मन अस्तुति भनी ॥
भूमि सुर उपकार हित, अवतार धनि त्रिभुवन धनी ॥
धन्य गज धनि मल्लमारे, धन्य कंसासुर अनी ॥
परशि तनु अनुपम लहीगति, जात नहिं महिमा गनी ॥
धनि अखिलब्रह्मांड नायक, भक्तहित नर तनु धरयो ॥
धन्यव्रजवासी सकल जिन, प्रेमकरि तुम वश करयो ॥
दोहा—करि अस्तुति पुनि पुनि हरषि, सुमन बर्षि सुरवृंद ॥
मुदित बजावत दुन्दुभी, कहि जय जय नँदनन्द ॥
सो०—मथुरा पुर नर नारि, अति प्रफुलितसबको हियो ॥
मनहु कुमुद बन चारि, बिकसत हरि शशि मुख निरखि ॥
मारयो कंस जबहिं भगवाना । भ्राता अष्ट तासु बलवाना ॥
करि करि कोप युद्धको धाये । ते पुनि सब बलदेव नशाये ॥
बहुरि केशगहि कंस मुरारी । दियो घसीट यमुन जलडारी ॥
कीन्हो कछुक तहां विश्रामा । भयो विश्राम घाट तिहि नामा ॥

१ क्रोधितहो । २ श्रीकृष्ण ।३आकाश । ४ तीनोंलोक ।५जिसका उपमा नहीं ।

सुनिकै मरन कंसकी नारी । और सकल भ्राताकी प्यारी ॥
रोदन करि करि विविध विलापा । सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा ॥
निजहित समुझि भयो दुख भारी । चहत मरण पति नेह विचारी ॥
गये तहां बहुरो दोउ भ्राता । करुणामय कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोलीं सब रानी । रहीं मरण ते सुनि प्रभुबानी ॥
बहुत भांति तिनको समुझाई । आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेमिके वंश सुहायो । उग्रसेन सुनिकै उठि धायो ॥
तिन प्रभुचरण आय शिर नायो । त्राहि त्राहि कहि बचन सुनायो ॥

छं०–त्राहि त्राहि सुनाय आरत[३], वचन प्रभु चरणन गिरयो॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा, अपराध यह हमते परयो॥
असुर मारे कंस भाइन, सहित सो उचितै करी ॥
परद्रोह रत[४] खल दलन हित, अवतार यह तुह्मरो हरी ॥
करिकै कृपा अब प्रजा पालन, हेत प्रभुचित दीजिये ॥
वर बैठि सिंहासन सुभंग[५], यह राज्य मधुपुरि कीजिये ॥
सुनि दीन वचनन हर्षिहार, तब उग्रसेन उठायकै ॥
बहुभांति करि सनमान पुनि पुनि, लिये हृदय लगायकै॥

दोहा–श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज ॥
यदुवंशिनको शापहै, हमैं उचित नाहिं राज ॥

सो०–करहु देव तुम राज, दूरि करौ सन्देह सब ॥
हम करिहैं सब काज, जो आयसु[६] देहौ हमैं ॥

जो नहिं मानै आनि तुह्मारी । ताहि दण्ड करिहैं हम भारी ॥
और कछू चित शोच न कीजै । नीति सहित परजहि सुखदीजै ॥
यादवजिते कंसकी त्रासा । गृह तजि तजि भजिगये प्रवासा ॥
तिन सबको अब खोज बुलावो । सुख दै मथुरा मांझ बसावो ॥
विप्र धेनु सुर पूजन कीजै । इनकी रक्षामें चित दीजै ॥

१ ज्ञान । २ रक्षाकरो । ३ दुखित । ४ दुष्टोंके नाशकेलिये । ५ उत्तम । ६ आज्ञा ।

यों प्रभु उग्रसेन समुझाये। राज सिंहासन पुनि बैठाये॥
शिरपर मंजुल छत्र फिराई। निजकर चँवर लिये दोउ भाई॥
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई। राखत जनकी सदा बड़ाई॥
बरषि सुमन सुर कहत सुखारी। जय जय जय भक्तन हितकारी॥
उग्रसेन नृप करि बैठायो। लखि मथुरा लोगन सुख पायो॥
धनि धनि कहत सकल नरनारी। अब करिहैं पितु मातु सुखारी॥
यहै बात सब घर घरमाही। इनसम और जगत कोउ नाहीं॥

छं०-नर नारि सब यह कहत घर घर, और नहिंइनते बियो॥
धनि मातु पितु दिनराति धनि,सो जन्म जग जब हरि लियो
गहि कंस सहित सहायमार्‌यो, मरननहिंरानिनदियो॥
उग्रसेन नरेश करि पुनि, चँवर कर अपने कियो॥
विबुध हर्षे सुमन वर्षे, सुथिर सब यदुकुल भयो॥
अब पावहीं पितु मातुसुनिसुख, सकलदुख उनको गयो॥
हम जिये अब सब निरखि मुख छबि, जन्मको फल जगलह्यो॥
जियहु युगयुग भ्रात दोऊ, हरषि पुरवासिन कह्यो॥

दोहा-कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप॥
कहाँ हमारे मातु पितु, तब बोले सुखरूप॥

सो०-संगहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब॥
राम कृष्ण दोउ भाय, ब्रजबासी जन दुखहरन॥

उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो। हृदय हर्षि देवकी सुनायो॥
रामकृष्ण जनु मधुपुर आये। सुफल्कसुत संगनृपति बुलाये॥
असुर सेन हति कंसहि मार्‌यो। उग्रसेन नृपकरि बैठार्‌यो॥
सुनि तियकहै नयन भरिपानी। कहत कहा पिय ऐसी बानी॥
सुनिहै दूत कोउ दुखदाई। कहिहै अबहिं कंससों जाई॥
हम करिपाप जन्म जगलीन्हो। सोफल हमैं विधाता दीन्हो॥

---

१ पवित्र-श्वेत। २ देवता। ३ स्थिर। ४ पृथ्वीकाबोझ। ५ दूसरा नहीं। ६ रात्रि।

बधे सात सुत देखत आगे । बच्यो एकडरि ब्रजलै भागे ॥
तापर बंदिकिये हम दोऊ । धृग जीवन परवश जगकोऊ ॥
हमको मांच नीचविधि भल्यो । होहु कंसको वंशनिर्मूल्यो ॥
कह वसुदेव रोउ मति नारी । धावौ बदनै दीन्ह जल झारी ॥
कहियतहै दुखहरण गोपाला । गर्व प्रहारी दीनदयाला ॥
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई । तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥
दोहा—अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीर सुखपाय ॥
आयुँ तुलानो कंसको, देखत जाय विलाय ॥
सो०—स्वप्न वृथा नहिं जाय, मानु कह्यो मेरो प्रिया ॥
आज कालि्ह में आय, तोहिं मिलैं तेरे सुवन ॥
यहि अन्तर द्वार हरि आये । वज्र कपाट जहां जडिलाये ॥
करुणाकरि हरि तिन्हैं निहारा । गये सहज सब उघरि केवारा ॥
लखि वसुदेव सामुहे पाये । कहत कुँवर काके दोउ आये ॥
दियो दरशतिहि मैन सुहायो । जन्मसमय जो दरशन पायो ॥
मिले धाय पितु मातु निहारे । कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दम्पति । सुनै न कंस मनहिंमन कम्पति ॥
तबही कृष्ण कह्यो सुनु माता । मार्‍यो कंसअसुर हमताता ॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे । द्विरद कुबलिया दन्त उखारे ॥
यह कहकरि पितु मातु सुखारे । तुरत तोरि पगबन्धन डारे ॥
तब जननी निश्चय करिजानी । रोवन लगी कण्ठ लपटानी ॥
बारहि बार कहत उरलाये । मैनहिं कबहूं गोद खिलाये ॥
द्वादशवर्ष कहां रहप्यारे । माता पिता जाहिं बलिहारे ॥
दोहा—सुनि जननी के वचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय ॥
भये प्रेम बश दुखित लखि, बोले अति सकुचाय ॥
सो०—लिख्यो न मेट्यो जाय, मतिकरुमातविषादचित ॥
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब ॥

१ कैद । २ निर्मुल । ३ मुख । ४ उमर । ५ नाना । ६ शोक ।

पुत्रजन्म जगमें सुखकारी। तुमपायो हमते दुखभारी॥
मात पिता जाते दुखपावैं। वृथा जन्म सुत तासु बतावैं॥
सो अब दोष न मनमें दीजै। होनहार ताकी कह कीजै॥
अब जननी सब शोच निवारो। तजो शोक आनँद उर धारो॥
सकल मनोरथ तुमरो करिहौं। स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं॥
अष्टसिद्धि नव निधि ले आऊं। घर घर मथुरा मांझ बसाऊं॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुखपायो। बार बार गहि कण्ठ लगायो॥
अति आनन्द भयो मन माहीं। सो कहि सकत शारदानाहीं॥
कहत तात तुम वदन निहारो। सफल भयो अब जन्म हमारो॥
सुत हित श्रवते पयोधर क्षीरा। मिटी सकल उर अन्तर पीरा॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो। सिद्ध लाभ साधक जनु पायो॥
पूरबपुण्य फल्यो सुखकारी। पायो सुत हित करि दैत्यारी॥

अथ वसुदेवगृह उत्सवलीला॥

दोहा–तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीति सहित परि पाँय॥
प्रथमहि संकल्पी हती, दई लक्षते गाय॥

सो०–और दियो बहु दान, बन्दीजन आये सुनत॥
परितोषे सन्मान, अति उछाह वसुदेव मन॥

तब देवकी कह्यो पति पासा। भरी परम आनंद हुलासा॥
प्रगटो आज सुवन मम धामा। करहु जन्म उत्सवकी सामा॥
सुनि वसुदेव परमसुखपावा। हर्ष द्वार दुंदुभी बजावा॥
यदुवंशी सगरे जुरि आये। ध्वज पताक मंदिरन बँधाये॥
रोपे कदली खंभ रसाला। बांधी रचि रुचि बंदनमाला॥
लखि हरि जन्म अनंद बधाई। ऋद्धि सिद्ध प्रकटी सब आई॥
हाटक कलश अनेकविधाना। मंगल द्रव्य रचे विधि नाना॥
गज मुक्तनके चौक बनाये। मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये॥

१ माता। २ उपकत। ३ दूध। ४ हर्ष। ५ केला। ६ आम्र।

सुनि सब मथुरा पुर नर नारी । उमगि उठीं आनँद उर भारी ॥
घरघर सबहिन मंगल साजे । द्वार द्वार भति बाजन बाजे ॥
नौसत साज सकल बरनारी । सजि सजि मंगल कंचन थारी ॥
गान करत कलकंठ लजावैं । श्रीवसुदेव धामको आवैं ॥
दोहा–जाति पांति परिजन प्रजा, बंधुहितू सब लोग ॥
लैलै आवत भेंट सजि, हरषत निज निज योग ॥
सो०–भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ॥
धरि धरि मनुज शरीर, मानहुँ सुख आये सकल ॥
तब जननी मन अति सुखपाये । उबटनकरि दोउ सुत अन्हवाये ॥
निज कर अंग अँगौछि सुहायो । तन द्युति लखि दृग ताप नशायो ॥
केसरि मलय मिलिय रुचिकारी । कियो तिलकबर भाल सुधारी ॥
भूषण बसन शृंगारत कैसे । राजकुवँर बर पहरत जैसे ॥
कंचन मणि मय खचित नवीनो । क्रीट मुकुट शोभित शिर कीनो ॥
कलँगी ललित जडाव जडाई । तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ॥
गज मुक्तनके कुण्डल कानन । अति बिशाल छबि शोभित आनन
कंठपदिकके हार बिराजैं । उर बिशाल पर अति छबि छाजैं ॥
पंच रत्नके अंगद नीके । शोभित भुजन भावते जीके ॥
कर चूरा नव रतन निकाई । पाणि पल्लवन छाप सुहाई ॥
किंकिणिललित कलित रवकारी। कटिकेहरि पर बलित सवाँरी ॥
चूरा चारु मनोहर पाँयन । चरण कमल भक्तन सुखदायन ॥
दो०–नील पीत बर बसन तनु, दोउ सुतन शृंगार ॥
चारु अलक मुख शशि झलक, निरखिजात बलिहार ॥
सो०–हते श्यामके साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी ॥
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्ण प्रीतम सबै ॥
ग्वाल बाल सब चकित निहारें । कहि न सकत कछु मनहिं विचारें॥
येतो कृष्ण देवकी जाये । झूठहि यशुमति सुवन कहाये ॥

१ कोकिला । २ चन्दन । ३ मुख । ४ श्रेष्ठ । ५ केश । ६ चंद्र ।

करत शोच मनहीं मन माहीं । अब हरि ब्रज चलिहै कै नाहीं ॥
तब दोउ कुवँर चौक बैठारे । विप्र वृन्द वसुदेव हँकारे ॥
विधिवत पूजि तिलक करावाये। दान बहुत हरि हाथ दिवाये ॥
बहुरि आरती मात उतारी । लखि छबि मुदित सकल नरनारी
वेदध्वनि महिदेवन कीन्हीं । द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हीं ॥
वरुण सहित सुरनभ यश गावैं । बरषि कुसुम दुंदुभी बजावैं ॥
परमानन्द सकल पुरवासी । निधि सिधि सब गृह गृहको दासी॥
बहुरो सखन सहित दोउ भैया । निजकर परसि जिमाये मैया ॥
पूजी सकल कामना जीकी । मिटी कल्पना दारुण हीकी ॥
यहि विधि कंस मारि यदुराई । मात पिताकी वंदि छुड़ाई ॥

छं–इहिभाँतिकंसनिपातियदुपति, मातुपितुकोसुखदयो ॥
हर्षि अति नर नारिमथुरा, घरनघर आनँद भयो ॥
परम पावन यश सुहावन, पलहि में त्रिभुवन गयो ॥
जीव जल थल नाग नर सुर, सरसरस जहँ तहँ भयो ॥
यह कंसहतन पुनीत यश, नितनर सुनैं जे गांवहीं ॥
ते न भव बंधन परहिं, फिरि अघ समूह नशावहीं ॥
मिटहिं दारिद्दोष दुरमति, विपतिनिकट न आवहीं ॥
सकल मन बांछित लहैं अरु, भक्ति अविचल पावहीं ॥

दो०–कठिन शूल संकट हरण, मंगल करण अशेष ॥
राम कृष्णके चरित वर, गावत सुनत विशेष ॥

सो०–नरतनु पाय सुजान, अनुदिन गावत हरि कथा ॥
सकल सुखनकी खान, ब्रजवासी प्रभुके सुयश ॥

अथ कुबिजागृह प्रवेशलीला ॥

श्रीयदुकुल कुल कमल तमारी। दीनबन्धु भक्तन हितकारी ॥
करिकै जननी जनक सुखारी । तब कुबिजाकी सुरति सबाँरी ॥

---

१ ब्राह्मण । २ पुष्प । ३ पाप । ४ अंधकारके दूरकरनेवाले ।

नृपति भवन तजिके अभिरामा। चले ललन कुबिजाके धामा ॥
कृष्ण कृपा सबही पै न्यारी । भाव भजन कबिजा भइ प्यारी ॥
सांचो भाव हृदय जहँ जाने विवश होय तेहि हाथ बिकाने ॥
नारि पुरुष कछु नाहिन भेदा । नीच ऊंच नहिं करत निषेदा ॥
मथमहि आय मिली मग पाई । सोहित मानि लियो यदुराई ॥
चन्दन चर्चि तनक तनु दीन्हो । मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हा ॥
अति अकुलीन कंसकी दासी परसत पावन भई रमासी ॥
आये पुनि प्रभुताके धामा भक्त वत्सहै जिनको नामा ॥
जब कबिजा जान्यो हरि आये। पाटम्बर पाँवड़े बिछाये ॥
अति आँनंद लियो उठि आगे पूरण पुण्य पुंज सब जागे ॥

दो० --टेढ़ीते सूधी करी, दियो रूप अभिराम ॥
दासी ते रानी भई, पूरे, सब मन काम ॥

सो०--कोकरसिकै प्रकास, अति विचित्र हरिके गुणन ॥
सदा दासको दास, भयो रहै प्रभु जननके ॥

पुरवासिन सबहिन यह जानी । राजा हरि कुबिजा पटरानी ॥
घर घर कहत सकल नर नारी कियो कहा धौं इन तप भारी ॥
मिली तनक चंदनदै मगमें भई विदित अति पावन जगमें ॥
यह महिमा कछु कहत न आवै ।कोताकी पटतर अब भावै ॥
भूलि कहत कुबिजा जो कोऊ । ताहि रिसाय उठत सब कोऊ ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी । दासी कहत डरत नर नारी ॥
करत त्रास मनमें सब प्राणी । डारहि मारि सुनै जो रानी ॥
जापर कृपा करैं यदुराई । ताहिनहीं यह कछु अधिकाई ॥
सदा सदा हरिकी यह रीती । मानत एक भक्तसों प्रीती ॥
धनि धनि कुबिजा हरिकी रानी। धनि धनि कृष्ण प्रीति करिमानी॥
धनि धनि चन्दन अंग लगायो। धनि धनि भवन जहां हरि आयो
कहि कहि सब सुर नारि सिहाहीं।आज कूबरी सम कोउ नाहीं ॥

---

१ आनन्ददाता । २ पवित्र । ३ भय ।

दोहा—बसे श्याम कुबिजा सदन, तहँ करि कछु विश्राम ॥
पुनि आये वसुदेव गृह, जन मन पूरण काम ॥
सो०—तब श्री नन्दकुमार, ब्रज बासिनकी सुरति करि ॥
मनमें कियो बिचार, अब सब चलिये नंदपै ॥
लै वसुदेव संग दोउ भाई । गे जहँ उग्रसेन नृपराई ॥
तहां बहुरि यादव सब आये । पुनि उद्धव अक्रूर बुलाये ॥
तब हरि ऐसे बचन सुनाये । मम हित ब्रजबासी सब आये ॥
नंदादिक सब गोप जितेका । रह्यो नहीं ब्रजम कोउ एका ॥
गाय बत्स सब तजे अनर । हैं सूने मंदिर सब केर ॥
ह्वै है दुखित यशोमति मैया । जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया ॥
बहुत हेत उन हमसों कीन्हों । बिबिधि भांति अबलों सुख दीन्हों ॥
सकुचत हौं अपने मन माहीं । उनसों उऋण कबहुँ मै नाहीं ॥
पलटो नहिं जो उनको दीजै । अब चलि बिदा उन्हें ब्रजकीजै ॥
सुन हरि बचन परम सुख पाई । सब मिलि चले जहां नंदराई ॥
सुनी नंद गोपन यह बाता । मारी कंस जाय दोउ भ्राता ॥
साँच नहीं मनमें कछु माने । प्रजा भाव सब रहे सकाने ॥
दोहा—मनहीं मन शोचत खड़े, नाहिं आये बलराम ॥
ब्रज में आये ह्वैगयो, तिन्हैं आयबो बाम ॥
सो०—अब कैसे ब्रज जाहिं, बल मोहन दोऊ बिना ॥
अति व्याकुल मन माहिं, कबधौं नयनन देखि हैं ॥

अथ नन्द बिदालीला ॥

आये तबहीं कुँवर कन्हाई । नृप बसुदेव सहित दोउ भाई ॥
देखत नन्द मिले उठि धाई । लिये लगाय कण्ठ सुखदाई ॥
अब चलि हैं ब्रजको यह जान्यो । अति आनन्द हृदय हरषान्यो ॥
लखि बसुदेव बहुत सुखपाई । मिले नन्दसों सादर धाई ॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे । आदर सहित सकल बैठारे ॥
उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत । सुफलक सुत अरु यादव गण युत ॥

१ अनेक । २ अनन्तर तथा सदैव ऋणी हूं । ३ प्रतिकूल ।

बैठे मिलि हरि हलधर भाई । नन्दहि मिले निकट बैठाई ॥
और गोप ठाढे सब पेखैं । यशुमति सुतको भाव न देखैं ॥
नंद मनहि मन अति अकुलाहीं । चलत बेगि अब व्रज क्यों नाहीं ॥
सबहीके मनमें यह आई । हरि अब हम सों प्रीति घटाई ॥
करत बिचार श्याम मनमाहीं । प्रीति विबश बोलत सकुचाहीं ॥
तब हरि यों मुख बचन उचारे । बहुत कियो प्रतिपाल हमारे ॥

दोहा–झझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल ॥
मोसों कहत कि आनसों, किन कीन्हों प्रतिपाल ॥

सो०–चौंकत जिय नँदराय, प्रति मोसों ऐसे कहौ ॥
गद्गद हिय भरि आय, डारिसकत नहिं नयनजल ॥

तब हरि मधुर कह्यो नँदराई । सुनहु तात हम कहत लजाई ॥
कही गर्ग तुमसों जो बानी । सो तुम तब निश्चय नहिं जानी ॥
पुत्र हेतु हमको प्रतिपारे । तात मात जिमि अधिक दुलारे ॥
खेलत हँसत बसत व्रज माहीं । जात इते दिन जाने नाहीं ॥
हमको तुम दीन्हों सुख जितनो । कह्यो न जात बदन ते तितनो ॥
तुमसम मात पिता न हमारे । जहाँ रहे तहँ तात तुह्मारे ॥
बिछुरन मिलन मोह अरु माया । यह प्रपंच जग विधि उपजाया ॥
है है दुखित यशोमति मैया । मोबिन व्रज तिय अरु सब गैया ॥
ताते गमन बेगि व्रज कीजे । जाय सबनको धीरज दीजे ॥
यशुमति सों बिनती मम कहियो । मान सदा पुत्रहित रहियो ॥
मेरी सुरति न उर ते टारो । मैं तुम ते कबहूं नहिं न्यारो ॥
हरि यों नन्दहि बचन सुनाई । बहुरो रहे सकुचि अरगाई ॥

दोहा–निठुर बचन सुनि श्यामके, भये विकल अतिनंद ॥
उमगि नीरनयनन चल्यो, परि गये दुखके फंद ॥

सो०–दुखित सखा अरु गोप, चकित रहे हरि मुखनिरखि ॥
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूरके ॥

रक्षा । २ विव्हल होके छातीभर गई । ३ व्यवहार । ४ शीघ्र । ५ कठोर ।

परे नन्द तब चरणन धाई । कहत न ऐसी कबहुं कन्हाई ॥
हौं तजि मोहन चरण न जैहौं । तुमबिन जाय कहा ब्रज लैहौं ॥
मधुबन तुमहिं छांड़ि जो जाऊं । यशुदै उत्तर कहा सुनाऊं ॥
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहै । तुमबिन काहि गोद भरि लैहै ॥
पंथ निहारत ह्वैहै मैया । चलहु वेगि ब्रज कुवँर कन्हैया ॥
सद माखन मथि कीन्हो ह्वैहै । कहो सो तुम बिन काहि खवैहै ॥
क्यों जीहै बिन दरशन पाये । होत निठुर कित मथुरा आये ॥
बारह बर्ष कियो हम गारो । नहिं जान्यो परताप तुम्हारो ॥
अब प्रकटे वसुदेव कुमारा । कीन्हो वचन गर्ग निरधारा ॥
कत हम काज महारिपुमारे । कत दरिद्र दुख हरे हमारे ॥
डारि न दियो कमल कर गिरिवर। दबि मरते ब्रज जन ताकेतर ॥
कहैं नंद यों बिकल अधीरा । भई कठिन बिछुरनकी पीरा ॥

दोहा–देखि प्रीति अति नंदकी, मन वसुदेव सिहात ॥
सकुचि रहे सब प्रेम बश, कहि न सकत कछु बात ॥

सो०–व्याकुल सबै अहीर, मानहुँ पन्नगके डसे ॥
हरि मुख लखत अधीर, ठाढे काढे चित्रसे ॥

तब हलधर नंदै समुझावत । कहत तात तुम कत दुख पावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं। तुमबिन और कहाँ सुख पावैं ॥
हरि प्रगटे भूभार उतारन । कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ । तुम्हरे सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमैं तुम्हैं सुत पितुको नातो । और परे अब होत न हातो ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो । जाय कहां उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है । तुम्हैं गये धीरज कछु पैहै ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी । पुनि पुनि कहत जोरि युग पानी ॥
अब के चलहु श्याम मम गोहन। ब्रजमें मिलि आवहु फिरि मोहन ॥
मारेउ कंस कियो सुर काजा । दीन्हो उग्रसेनको राजा ॥

१ मार्ग । २ ताजी । ३ सर्प । ४ पालन । ५ साथ ।

सुख वसुदेव देवकी पायो । भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
यदपि यशोमति विन गिरिधारी । को जानै प्रभु टेक तुम्हारी ॥
दोहा–ऐसे कहि अति विकलह्वै, रहे नंद गहि पांय ॥
भई क्षीण द्युतिहीन मति, नयनन जल न रहाय ॥
सो०–माया रहित मुकुन्द, नहीं विरह संयोग तिहिं ॥
ब्रह्म पूरणानन्द, सब घटवासी एकरस ॥
देखि विरह अति कादर नंदहि । सखा वृंद अरु सब उपनन्दहि ॥
बिछुरत तजन चलतहैं प्राना । तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तरहै माया । जिनकर जीवविमुख भरमाया ॥
तिन कछु द्वन्द कियो जगमाहीं । तब हरि बोध करत नँद पाहीं ॥
कत पछितात तातहौ एतो । ब्रज अरु मथुरा अंतरकेतो ॥
कहा दूरि तुमते कहुँ जाहीं । करि विचार देखौ मन माहीं ॥
हैं ब्रजके नरनारि दुखारी । ताते कीजत विदा तुम्हारी ॥
ऐसे बोधकियो ब्रजनाथा । तब नँद कह्यो जोरि युग हाथा ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई । तौ अब मेरो कहा बसाई ॥
जैहों ब्रज प्रभुकहे तुम्हारे । जात वचन नोपै नहिं टारे ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई । नीच दशाते ऊंच चढाई ॥
परमगँवार ग्वाल पशुपाला । भयो धन्य सब जगत विशाला ॥
दोहा–मेटि पाप संताप सब, कियो सुकृतको खान ॥
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो०–ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरिके चरण ॥
लीन्हें श्याम उठाय, कह्यो जान सनमान तव ॥
तब वसुदेव विनय बहु भाषी । आगे बहुत संपदा राखी ॥
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा। ताको बदलो नाह संसारा ॥
बालक ये अपनेही जानो । इहाँ उहां कछु भद न आनो ॥
सुनि सुनि नंद महर पछिताई । रहे ठगे तनु दशा भुलाई ॥
ऊरधश्वास नयन बह पानी । कंपित तनु कहि जात न बानी ॥

१ कांतिहीन । २ दुख । ३ विनती । ४ द्रव्य वगैरह सन्मुख धरे ।

सो कछु संपति नंद न लीनी । बिनती बहुरि श्याम सों कीनी ॥
मांगतहौं प्रभु यह कर जोरी । ब्रजपर कृपा होय नहिं थोरी ॥
तब सब गोप नृपति पहँ आये । बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये ॥
गोप सखा बांधे हरि सबहीं । बिदा किये आदर दै तबहीं ॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी । हारे सरबस मनहुँ जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं । लटपट चरण परत मग माहीं ॥
ब्रजतन जात बिलोकत मधुबन । बिरह व्यथा बाढ़ी व्याकुल तन ॥

दोहा-भये बिरह बारिधिमगन, अति अचेत अकुलाय ॥
श्यामराय तजि मधुपुरी, आये ब्रज नियराय ॥

सो०-उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेव युत ॥
ब्रज वासिनको नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत ॥

पुनि पुनि नंद कहत पछिताई । चूकपरी हरिकी सेवकाई ॥
कहँ लगि गनिये यह अपराधू । किये कर्म हम परम असाधू ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई । तहँ हरि पै हम गाय चराई ॥
किंचक दधिके काज रिसाई । बांधे यशुमति ऊखल लाई ॥
इंद्रकोप ब्रजलोग बचाये । बरुण लोक ममहित उठि धाये ॥
हम मतिमन्द न उनहा जाने । निकट बसत नाहिन पहिचाने ॥
तन धन लाभ कंस भयपाई । करि दीन्हे आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निज करनी । परे मुरछि व्याकुल अति धरनी ॥
बार बार जोवतमग माता । व्याकुल बिन मोहन बल ताता ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी । हरषि हृदय आतुर उठि दोरी ॥
धाई धेनु बत्सको जैसे । माखन प्यारेहैं धौं कैसे ॥
कैनियां लेवेको अतुरानी । आये बल मोहन यह जानी ॥

दोहा-धाइ अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास ॥
दरश आश आईं सबै, ब्रजतियहिये हुलास ॥

सो०-त्यहि क्षण अति आनन्द, ब्रजबासी ब्रजतिय सबै ॥
अति सकोच बश नंद, सो दुख कापै जातकहि ॥

१ धनदौलत । २ समुद्र । ३ थोड़ा । ४ मार्ग । ५ गोद ।

अथ ब्रजकी विरहलीला ॥

आतुर सकल गईं नँदपासा। मनमोहन दर्शनकी आशा ॥
पेखे नन्द गोप सब देखे। श्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई[1]। कहँ मम श्याम राम दोउ भाई ॥
सुनत बचन व्याकुल नँदराई। नयन नीर भरि नारि न वाई ॥
देखत सूखि गईं ब्रजनारी। जनु प्रफुलित कुमुदिनि हिमहारी[2]॥
जान्यो आन भई बिधि सोई। कहि गये बचन गर्ग मुनि जोई ॥
अति व्याकुल सब बिन ब्रजनाथा। भये सकल नरनारि अनाथा ॥
परे भूमि सब टेर लगाई। कौन दोप प्रभु हम बिसराई ॥
यशुमति अति बिलपति बिलखानी। कहत सरोष[3] नंदसों बानी ॥
धिग धिग महर कहा यह कीनो। मथुरा तजि सुत ब्रज पग दीनो ॥
मारग सूझि परेउ केहि भांती। बिदा होत फाटी नहिं छाती ॥
अर्द्ध बचन सुनतहि उठि धाये। कहा लेन सुख ब्रजमें आये ॥

दोहा–कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँद कन्द ॥
सुनी नहीं दशरथ कथा, कहूं श्रवण मतिमन्द ॥
सो०–मैं मधुरपुरको जाय, रहिहौं हरिकी धायह्वै ॥
लीजै ढोंकि बजाय, अब अपनो ब्रज नंद यह ॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई। अति व्याकुल ब्रज लोग लुगाई ॥
पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे। कहँ छांडे दोऊ सुत मेरे ॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो। छीनि लियो बसुदेव हमारो ॥
सुफलक सुत वैरी भयो भारी। लै गयो जीवन मूरि हमारी ॥
हौं न गई हरि संग अभागी। सिखये इन लोगनके लागी ॥
जो मैं जानि पावती गोहन। तो क्यों छाँडि आवती मोहन ॥
ऐसे रोवत करत बिलापू। कहि न जात यशुमति परितापू ॥
हरिबिन सब नरनारि उदासी। आये जबहिं सकल ब्रजबासी ॥

---

१ घबड़ाईहुई। २ पालाकीमारी। ३ क्रोधकरके।

नहीं श्याम बिन सदन सुहाई । मनहुं मशान भूमि घरि खाई ॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया । कहाँ नंद कहकह्यो कन्हैया ॥
तुमको बिदा ब्रजहि जब कीन्हो । हरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हो ॥
तुम कछु हरिसों बिनय न भाषी । कहा श्याम मनमें यह राखी ॥
दोहा-मैं अपनोसों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ ॥
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ ॥
सो०-कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो ॥
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आय ब्रज ॥
पुनि बोले ऐसे बल भैया । दुखी होंनपावै नहिं मैया ॥
धीरज देहु तात तुम जाई । कछु दिनमें हम मिलिहैं आई ॥
पठयो मोहिं तोहि हितलागी । तबमैं वचन सक्यों नहिं त्यागी ॥
सुनि सँदेश यशुमति दुखपागी । रहे प्राण हरि चरणलागी ॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं । गहि रहि मिलन आश मन माहीं
ब्रज घरघर सब कहत गुवाला । कियो कृष्ण मथुरा जो ख्याल ॥
मारेउ रजकजाय हरि जबहीं । नहिं निबहै जान्यो हम तबहीं ॥
चन्दन बहुरि कंसको लीन्हो । रूप अनपम कूबरि दीन्हो ॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डारेउ । फिरि दोउ भाइन गजको मारेउ ॥
रङ्गभूमि सब मल्ल पछारे । असुर अनेक युद्ध करि मारे ॥
कहत हते ब्रजमें हरि जैसे । कियो जाय कंसहि पुनि तैसे ॥
केश पकरि महि तुरत गिरायो । मारि यमुन जल माहिं बहायो ॥
दोहा-उग्रसेन राजा कियो, निज कर चमर ढुराय ॥
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुख पाय ॥
सो०-पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेवसों ॥
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ ॥
तहां भयो उत्सवँ अति भारी । दियो दान बहु विप्र हँकारी ॥
हरिहि बसन भूषण पहिराये । मंगल सब नर नारिन गाये ॥

१ घर । २ मरघट । ३ धोबी । ४ आनन्द ।

मथुरा घर घर बजी बधाई। बहु सम्पति वसुदेव लुटाई ॥
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं। वासुदेव सब नाम बुलावैं ॥
यदुकुल कमल सकल जगनायक। विरद बात वर्णन गुण गायक॥
भये कृष्ण मथुरा के राजा। अहिरन देखि लगति अति लाजा॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई। बसे श्याम कुबिजा गृह जाई ॥
भये जासुवश अति हित मानी। कीन्ही ताहि आपनी रानी ॥
राजा हरि कुबिजा भइ रानी। गोपिन सुनि जबही यह बानी ॥
गई बिरहतन तपत सिराई। सौति शाल[2] शाल्यो उर आई ॥
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा। मिटी श्याम आवन की आशा ॥
नयनन जल फारा अति बाढी। रहीशोच बैठीं कोउ ठाढी ॥

दोहा—जुरि आईं ब्रज तिय सबै, सुनि कुबिजाकी बात ॥
लागीं आपस में कहन, मन दुख मुख हर्षात ॥
सो०—करी सुहागिनि श्याम, कुबिजा दासी कंसकी ॥
आपुन पति वह वाम, कियो नाम तिहुँपुर बिदित ॥

लै श्रीखण्ड[3] मिली मग माई। सुनियत ताते अति मन भाई ॥
भली बुरी कछु जात न चीन्ही। बहुत रूप दै सम कर लीन्ही ॥
वे बहु रमण नगर की सोऊ। बन्यो संग अब नीको ओऊ ॥
कहत जु वह सोई अब मानैं। निशि दिन वाके गुणहि बखानैं ॥
जानि अनोखी[4] नेह बढावैं। अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं ॥
अपर कह्यो कछु रोष जनाई। श्याम सदाके ऐसेइ माई ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो। कान लागि तब यहै सुनायो ॥
नई कूबरी नारि बताई। तबहि गये ताके सँग धाई ॥
बोली और एक तिन माहीं। कुबिजा तुम देखी कै नाहीं ॥
दधि बेचन जब जात तहांरी। तब नीके हम ताहि निहारी ॥
अँगेठी मालिनकी जोई। हँसत जाहिं सब लोग लोगाई ॥
बसत ढिगन नृप महलन जोई। सुनियत करी सुन्दरी सोई ॥

१ लेरं। २ सौतिका दुःख। ३ चंदन। ४ अद्भुत। ५ उत्पन्नकी।

दोहा–कोटि बार दाहौ अनल, कोटिकसौकिन सोय ॥
तौकत पीतरते कहूं, कैसे सोनो होय ॥
सो०–हरि तजि दीन्हीं लाज, हमैं होत सुनिकै हँसी ॥
जाय कूबरी काज, मथुरा मारेउ कंस नृप ॥
बोली सखी और इक बानी । अलि यह बात नहीं तुम जानी ॥
कुबिजा सदा श्यामकी प्यारी । वे भर्त्ता उनकी वह नारी ॥
तैसे वहां ताहि करि दासी । राखी ये अवगति गुणराशी ॥
रूप रतन कूबर में राख्यो । जिमि मोती सीपनमें भाष्यो ॥
कंस मारिकै सो अब लीन्ही । ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्ही ॥
ब्रज बनितो त्यागी अब तातें । बूझी सकल श्यामकी बातें ॥
कहत एक तब सुनु सखिएरी । वेदिन हरिको बिसरि गयेरी ॥
लिये फिरतहीं जब सब कनियां । पहिरावन सिखये हमतनियां ॥
घर घर डोलत माखन खाते । यशुदहि उरहन देतलजाते ॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने । बाट घाट अवगुण बहु ठाने ॥
जो जो उन हमसों गुण ठान्यो। हम सब ताही में सुख मान्यो ॥
जिमि भजि आप गोकुलै आये। गोप भेष करिरहे छिपाये ॥
दोहा–देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ॥
बडे भये तब यह कियो, बसे कूबरो पास ॥
सो०–यशुमति लाड लडाय, बारेते सेवा करी ॥
ताहूको बिसराय, भये देवकी पुत्र अब ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो । नहिं कीजै तिनको पतियारो ॥
जो जन जगमें कृतहि न मानै । निज स्वारथ लगि बहु गुणठानै॥
ज्यों भँवरा कल कुंज स्वहाई । बैठन चाहि सुमनपर आई ॥
रसहि चाखि पुनि हित नहिं मानै।तहीं जात जहँ नूतन जानै ॥
पालत काग पिकहि हितमाने । मिलत कुलहि जब होत सयाने ॥
सोई भई हमहिं अरु नन्दहि । कहिये कहा सखी गोविन्दहि ॥

१ अग्नि । हेसखी । ब्रजयुवती । कियेकाउपकार । ५ नवीन ।

जे खोटे मन कपट सयाने । औसर परे परैं पहिचाने ॥
बैठत अब नृप आसन माहीं । सुनियत मुरली देखि लजाहीं ॥
मोर पंख देखत नहिं भावैं । ब्रजको नाम लेत बहरावैं ॥
सुरभी[1] चित्रहुमें जो हेरत । तोलजाय इतउत मुख फेरत ॥
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं । सुरत करत ग्वालनकी नाहीं ॥
वे कह जानैं पीर पराई । जिनकी प्रकृति परी यह आई ॥

दोहा-भयो नयो अब राजह्वां, नये मात पित गेह ॥
नई नारि कुविजा मिली, भये सखानवनेह ॥

सो०-विसरे ब्रजको बात, कुंजकेलि रस रासको ॥
गये आपनी घात, दिन दिन दुख दूनो लहौ ॥

कौन बातको करैं परेखो । सखि अपने जिय शोच न देखो ॥
नाहरि जाति न पांति हमारी । तिनको दुख मानिये कहारी ॥
गोपीनाथ नन्दके लाला । अब न कहावत कान्ह गुवाला ॥
वासुदेव अब उहाँ कहावत । यदुकुलदीप भाट वर गावत ॥
नहिं वनमाल गुंज उर माहीं । मोर पच्छ माथेपर नाहीं ॥
गृह बनकी सब प्रीति भुलाई । वा मुरली सँग गई सगाई ॥
अब वह सुरति होत कतराजन । दिनदश प्रीति करी निजकाजन ॥
सबै अजान[2] भई तिहि काला । सुनि मुरलीको शब्द रसाला ॥
अब मन जलनिधि[3] खगज्यों थाकै । फिरिफिरि शरण जहां जिहिताकै ॥
कहत एक सुनुरी ब्रजनाथा । ब्रज अब मानों कियो अनाथा ॥
तब वह कृपा हुती ब्रज पाहीं । राख्यो गिरिवर[4] करतले माहीं ॥
बहुरो और प्रताप कियोरी । हमहित दावानल अँचयोरी ॥

दोहा-अब यह दोष लगै हमैं, समुझत सकुचत जीय ॥
भयो वज्रहूते कठिन, विछुरत फट्यो न हीय ॥

सो०-अवलागे दिन जान, सुनु सखि मोहन लालविन ॥
रहत देहमें प्रान, विन वह सूरति सांवरी ॥

---

१ गौ । २ स्वभान । ३ समुद्र । ४-गोवर्द्धन । छगुनियांपर । अग्निकी ज्वाला ।

रहत वदन देखे बिन नयना । श्रवण न रहत सुने बिन बयना ॥
रहतहियो बिन हरि कर परसे । बेधत बाण मनोभव बरसे ॥
अब सखि यों सहियत दुख भारो । मनहुँ नयन तन प्राण हमारो ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये । तब हरि तैसेइ और बनाये ॥
अनु वैसेई कुवँर कन्हाई । विरह वृष्टि ब्रज ओर चलाई ॥
ऐसेमन गुण गुणि गोपाला । भई विरह वश सब ब्रजबाला ॥
अतिही कठिन भयोदुख मनमें । व्यापी दशई अवस्था तनमें ॥
कोउ कह लोचन दीन हमारे । क्यों जीवहिं बिनश्याम निहारे ॥
ज्यों चकोर बिन चन्द्र दुखारी । जैसे री वारिजबिन वारी ॥
विवरन जिमि ग्रीषम के खंजन । जैसे दुखी भ्रमर बिन कंजन ॥
श्याम सिंधुते बिछुरि परेरी । तडफडात ज्यों मीनै खेरी ॥
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं । हरिबिन धरत धीर दृग नाहीं ॥
दोहा–देख्यो नहीं सुहात कछु, गृहवन बिन नँदनन्द ॥
विरह व्यथा जारत नहीं, भयो तपनि अति चन्द ॥
सो०–बिन श्वासाकी देह, और रूपह्वै जात जिमि ॥
तिमि लागत ब्रज गेह, हरि तिन सखी भयावनो ॥
ईह विरियां बनते हरि आवत । दूरिहिते कलवेणु बजावत ॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला । गावत ऊंचे स्वरन रसाला ॥
कबहुँक लैलै नाम सुनावत । धौरी धूमरि धेनु बुलावत ॥
देत दृगन सुख बनते आई । वह मनमोहन रूप दिखाई ॥
और सखी बोली यक ऐसे । बहुरो कबहुँ देखिये वैसे ॥
बैठे ग्वाल बालकनसाथा । बांटत खात अशन ब्रजनाथा ॥
यकदिन दधि चोरत मम धामा । मैं दुरिदेखि रही छबिश्यामा ॥
वे भाजे मम लखि परछाहीं । तब मैं धाय लई गहिबाहीं ॥
मुख करपोंछि लिये गहि कनियां । प्रेम प्रीतिरसके सुख दनियां ॥
रहेलागि छातीसों जैसे । सोवह कहो जातसुख कैसे ॥

१ ब्रछरा । २ कमल । ३ उदास । ४ कमल । ५ मछली । ६ सुंदरवंशी । ७भोजन ।

जिन धामन वे सुख अवलोके । ते अब घरि घरि खात विलोके ॥
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना । हरिबिन रहत अधम तनुप्राना ॥
दोहा-कहँ लगि कहिये येसखी, मनमोहनके खेल ॥
उन विन अब गोकुल भयो, ज्योंदीपक विनतेल ॥
सो०-रहत नयन जल छाय, सुमिरि सुमिरि गुण श्यामके ॥
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब ॥
एक प्रलाप करत मन माहीं । कहै जाय कोऊ हरि पाहीं ॥
लेहु आय निज गायन घेरी । फिरत नहीं ग्वालनकी फेरी ॥
बिडरी फिरत सकल घनमाहीं । तुमबिन नाहिं काहु पतियाहीं ॥
अपनो जानि सँभारहुआई । मति बिसरौ ब्रजहेत कन्हाई ॥
बिलखत गाय वत्स सवग्वाला । नेकुसुनावहु वेणु रसाला ॥
बूड़त विरह सिंधुमें नारी । लेहु आय गहि भुजानिकारी ॥
कोऊ कहत कहै कोउजाई । वसौ फेरि ब्रज कुवँर कन्हाई ॥
अबनहिं तुमसों गाय चरावैं । नहिं जगाय वन मात पठावैं ॥
माखन खात बरजिहैं नाहीं । नहिं उरहन यशुदहि लैजाहीं ॥
नहिं दाँवरि यशुमतिको देहैं । नहिं अब ऊखल सों बँधवैहैं ॥
चोरी प्रगट करैं नहिं काहू । नहीं जनावहिं अवगुण ताहू ॥
बेनी फूल गुहन नहिं कैहैं । नहीं महावर चरण दिवैहैं ॥
दोहा-माँगत दान न वरजिहैं, हठ नाहिं करिहैं मान ॥
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुमविन प्रान ॥
सो०-ऐसे कहिगहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि ॥
वसहिं बहुरि ब्रज आय, तौब्रजनंद न साँवरो ॥
एक कहत अब हरिनाहिं आवैं । नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावैं ॥
वहँ गजरथ चढि चलत कन्हाई । इहँ क्यों गाय चरावहिं आई ॥
उहां पटम्बर पहिरि दिखावैं । इहांकि क्यों अब कामरि भावैं ॥
अब उन यशुमति मातु बिसारी । कौन चलावै बात हमारी ॥

---

१ अनेकप्रकार । २ व्यर्थबकवाद । ३ भागी । ४ रस्सी । ५ राज्य

बोली अपर सखी बिलखाई । भये निठुर अब कुँवर कन्हाई ॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी । सुनु सखी सलिल मीनकी जैसी ॥
तलफत मीन निपट अकुलाने । नीरे कछू उर पीर न जाने ॥
इतनी दूर दया नहिं कीन्ही । बीती अवधि खबरि नहिं लीन्ही ॥
दै गये बिहँसि चलत परतीती । मिलि हौं आय बहुरि रिपुजीती ॥
हारे नयन उतहि मग जोवत । रोय रोय उर कंचुकि धोवत ॥
जैसा दिन निशि तैसी जाई । पलभर नींद परत नहिं आई ॥
मंद समीर चंद दुखदाई । इनते जरत सेज अधिकाई ॥

दोहा–स्वप्नेहूतो देखिये, नींद परै जो नैन ॥
कीन्हे बिबिध उपाय मन, क्योंहू लहै न चैन ॥

सो०–बोलि उठी इकबाम, सुन सखि हौं तोसों कहौं ॥
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वप्नमें ॥

आये जनु मम सदन गोपाला । हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला ॥
कहा कहौं अरि नींद भईरी । एकहु क्षण नहिं और रहीरी ॥
ज्यों चकई लखि निज परछाहीं । पतिहि जानि हरषी मनमाहीं ॥
तबहीं निठुर बिधाता आई । दियो पवन मिस सलिल डुलाई ॥
मेरी दशा भई सखि सोई । जो जागों तो ढिग नहिं कोई ॥
देखहु कहा अधिक अकुलाई । बिरह जरी अरु काम जराई ॥
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊं । अपनी चूक समुझि पछिताऊं ॥
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा । समुझि परी तबहीं यह पीरा ॥
महा दुखित अब अंग हमारे । भये सखी दोउ नयन पनारे ॥
अतिही भ्रम माते बिन देखे । चाहत रूप श्यामको पेखे ॥
रसना यही नेम गहि राख्यो । हरिबिन और न चाहत भाष्यो ॥
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई । तबते भये सबै दुखदाई ॥

दोहा–वोई निशि वोई दिवस, वोई ऋतु वइ मास ॥
बदले सबै सुभाव जनु, बिन हरि मदन बिलास ॥

१ जल । २ पानी । ३ भरोसा । ४ शत्रु । ५ घेरी । ६ राति

सो०-चली औरही चाल, अब या ब्रजमें ऐसखी ॥
विमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब ॥
गृह कंन्दरा सेज भइ शूली। शशिकी किरणि अग्निसम तूली ॥
सींचत अली मलय घसिनीरा। होत अधिक ताते उर पीरा ॥
फूली अरुण फूल बन डारी। झरत देखियत मनहुँ अँगारी ॥
हरि बिन फूल लगत सब कैसे। मनहुँ त्रिशूल शूल उर जैसे ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे। अबते फल सब विष रस पागे ॥
त्रिविध समीर तीरसम लागे। कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे ॥
तप्त तेल सम वारिद पानी। उठत दाह सुनि चातक बानी ॥
सुनु सखि चातक दोष न दीजे। ज्याये या पक्षीके जीजै ॥
जैसे पिय पिय हम रट लावत। तैसेही कहि कहि वह गावत ॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी। क्षण नहिं रहत रटत पिय बानी ॥
आप सुधारेस पी सुख पावैं। टेरि टेरि बिरहिनको ज्यावैं ॥
जो यह खग नहिं करत सहाई। लहत प्राण तो दुख अधिकाई ॥
दोहा-या पक्षी सम औरको, सुनु सखि सुकृत समाज ॥
सफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥
सो०-मगन सकल ब्रजबाल, ऐसे हरिके विरह वश ॥
नहिं विसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवस निशि ॥
पथिक जात मधुबनतन हेरैं। ताहि धाय ब्रजतिय सबघेरैं ॥
कहत परहिं हम पाय तुह्मारे। सुनहु बटोही बचन हमारे ॥
उतहैं बसत कृष्ण ब्रजनाथा। कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा ॥
तुम जु इन्द्रको यज्ञ नशायो। पुनि गिरि कर धर ब्रजै बचायो ॥
सो अब वह बिरहा है आयो। चाहत है ब्रज फेरि बहायो ॥
बरषत निशिदिन दृग घनकारे। बहत कुचन बिच सलिल पनारे ॥
ऊरध श्वास पवन झक झोरे। गर्जत शब्द पीर घन घोरे ॥
महा वज्र दुख सुख द्रुम डारे। व्याकुल अंग सकल अति मारे ॥

१ पर्वतकी गुफा। २ चन्दन। ३ वायु। ४ मेघ। ५ अमृतरस।

व्यथा प्रवाह बढ्यो अति भारी। बूडत बिकल सकल ब्रजनारी॥
चितवत मग सब नाथ तुम्हारो। जानि आपनो आइ उबारो॥
गये मिलन कहि श्रीमुख बानी। अवधि बदीते सबै सिरानी॥
तुम बिन तलफत प्राण हमारे। जैसे मीन सलिलते न्यारे॥
दोहा-एक बार फिर आयकै, देहु सुदर्शन श्याम॥
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपकबिन धाम॥
सो०-मिलते बेणु बजाय, अब वह कृपा भई कहा॥
पुनि का करिहौ आय, प्राण गये ब्रज आयकै॥
सुनहु पथिक त्वहिं राम दुहाई। कहियो यह मोहनते जाई॥
तुम बिन राधेके तनु आई। भई सबै बिपरीत बनाई॥
बदन छपाकर प्रीति छिपानी। अब रहगई कलंक निशानी॥
अँखियांहुतीं कमल पखुरीसी। सो अब मनहुँ रंग निचुरीसी॥
आँच लगे कंचन जिमि काचो। तिमि तनु बिरहानलको ताचो॥
कदली दलसी पीठ सुहाई। सो अब मानों उलटि बनाई॥
सुखकी संपति सकल नशानी। जारत भई कोकिला बानी॥
अब सब साद मानकी नासी। है रहि तुम्हरे दरश पियासी॥
चातक पिक मृग अति कुल जाती। तब इनको देखत अनखाती॥
अब तिनसों पूछत हैं धाई। तुम्हरे चरण कमल कुम्हिलाई॥
ललतादिक सखियां लखि धाई। जानि अटा चढि गर्ब बढाई॥
अब कहि सखी तिन्हें अकुलाई। मिले रायकै कंठ लगाई॥
दोहा-सुधि बुधि सब तनुकी गई, रह्यो बिरह दुख छाय॥
होन चहत दशईं दिशा, बेगि मिलहु तिहि आय॥
सो०-ऐसे निज निज हेत, कहत सँदेशो श्यामसों॥
पथिकहि चलन न देत, होत साँझ ताको तहां॥
विरह बिकल सब ब्रजकी बाला। हरि वियोग उरपीर विशाला॥
हरि दरशन बिनकल नहिपावैं। ज्यहि त्यहि कहि उर व्यथा जनावैं

१ बेग। २ पानी। ३ चन्द्र। ४ केला। ५ दुःख।

जब पपिहा बोलत निशि आई । कहत ताहि कोऊ अनखाई ॥
हौं तो बिरह जरी संतापी । तुकत जारत रेखग पापी ॥
पिय पिय कहि अधरात पुकारै । मूढ मृतक अबलन कत मारै ॥
तूनहिं सुखित दुखित बिन नीरा । तेउ न समुझत शठ परपीरा ॥
करत कहा इतनी कठिनाई । हरिबिन बोलत ब्रजपर आई ॥
उपजावत बिरहिन उर आरत । काहे अगिलो जन्म बिगारत ॥
एक कहत चातक सों टेरी । हैं सारंग चेरि हम तेरी ॥
पैठे होहिं जहां सुखदाई । ऊंचे टेरि सुनावहु जाई ॥
गइ ग्रीषम पावस ऋतु आयो । सब काहू चित चाव बढायो ॥
तुम बिन ब्रजतिय डोलत ऐसे । नाव बिना केरयाकी जैसे ॥

दोहा—मानैंगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम ॥
लेहु सुयश चातक बडो, लै आवहु सुखधाम ॥

सो०—सुनि चातकके बैन, कोऊ सखि ऐसे कहत ॥
यह विहंग सुख दैन, सखि मोहिं प्यारो पीवते ॥

निशिदिन पिय पिय रटत विचारो । पियके विरह भयो जरि कारो ॥
स्वाति बूंद लगि रहत दुखारो । तज्यों सिंधुको जल करि खारो ॥
आप पीर पर पीरहि पावै । जियको जीवन नाम सुनावै ॥
प्रेम बाण लाग्यो जेहि होई । जानै व्यथा प्रेमकी सोई ॥
कोऊ कहत कोकिलहिटेरी । सुनरी सखी सीख यक मेरी ॥
बसत जहां हित कुँवर कन्हाई । फिरि आवहिं बारेक तहँ जाई ॥
तू कुलीन कोकिला सयानी । सबहिं सुनावत मीठी बानी ॥
तोसम कोउ नहीं उपकारी । जानतहौ विरहिन दुखभारी ॥
उपबन बैठि श्यामको टेरी । कहियो अबलन मैन्मथ घेरी ॥
श्रवण सुनाय मधुर कल बानी । ब्रजलै आव श्याम सुखदानी ॥
प्राणहुँ पलट मिलत नहिं एरी । सैंतहु विकत सुयशकी ढेरी ॥
ह्वै हैं विन मोलन हम चेरी । गावहिं गोकुल कीरति तेरी ॥

१ मरीइई । २ दुख । ३ खेवट । ४ श्रीकृष्ण । ५ कामदेव ।

दोहा-कोऊ ऐसे कहि उठत, बरजहु बोलत मोर ॥
रह्यो परत नहिं टेर सुनि; बिन श्रीनन्दकिशोर ॥
सो०-बोलत करत विहाल, मोरहु सखि बैरी भये ॥
वसेविदेश गोपाल, ये बनते न टरैं मरैं ॥
विरह मग्न यों ब्रजकी नारी। नहीं कृष्णसों पलभर न्यारी ॥
रही कृष्ण छबि दृगन समाई। रसना कृष्ण नाम रट लाई ॥
मनमें गुणहिं सदा गुण हरिके। श्रवण रहे हरिको यश भरिके ॥
बसी श्याम मूरति उर माहीं। बिसरतसुरत एक पल नाहीं ॥
बैठत उठत चलत घर बाहर। श्याम सनेह गुप्त अरु जाहर ॥
सोवत जागत दिन अरु राती। प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती ॥
सब अँग कृष्ण प्रेम रस पागी। भई कृष्णमय सकल सभागी ॥
धनिसो प्रीति कृष्णसों लागी। धनिसो सुरति कृष्ण रस पागी ॥
धनिसो सुख हरि संग विहारी। धनिसोदुख हरि बिरह बिचारी ॥
धनिसु परेखो हरिसों जोई। धन्य सरेखो हरिको होई ॥
धनिसो ज्ञान ध्यान धनिसोई। जप तप धन्य जो हरि हित होई॥
धन्यजन्म जो हरिको दासा। सब विधि धन्य जिन्हें हरि आशा
दोहा-नंद यशोति गोपिकन, निशि बासरँ हरि ध्यान ॥
ब्रजवासी प्रभु दासकी, आश रहे लगि प्रान ॥
सो०-बिसरे सब व्यवहार, और न दूजे गति कछू ॥
अंधलकुटियों धार, एक सुरति नँदनन्दकी ॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीत लीला ॥

रहे जाय मथुरा हरि जबते। नितनव मोद होत तहँ तबते ॥
देवकि मन अभिलाष पुरावैं। निरखि निरखि दोउ सुत सुख पावैं॥
परमानंद मगन वसुदेऊ। सुखी सकल यादव गण तेऊ ॥
मुदित सकल मथुरा पुरबासी। देत सबन सुख प्रभु सुखरासी॥
एक दिवस वसुदेव सुजाना। बोले जेकुल मध्य प्रधाना ॥
करि आदर मानता बड़ाई। तिनसों कहि यह बात सुनाई ॥

१ आंखोंमें। २ जीभ। ३ वियोग। ४ दिन। ५ अंधेके हातकी लकड़ी।

राम कृष्ण अबलों दोउ भाई । ग्वालन मध्य रहे ब्रजजाई ॥
यदुवंशिन की रीति न जाने । हैं अबहीं कुलधर्म अयाने ॥
ताते यह विचार अब कीजै । यज्ञोपवीत दुहुनको दीजै ॥
सुनि ये वचन सबन मन भाये । गर्ग आदि सब विप्र बुलाये ॥
पूंछि सुदिन शुभ लग्न धराई । यज्ञकाज सब सौंज मँगाई ॥
सकल तीरथन ते जल आये । राम कृष्ण तासों अन्हवाये ॥

दोहा—सकल वेद विधि मंत्रपढि, करि अभिषेक पुनीत ॥
दोउ भाइन तव गर्ग मुनि, दियो यज्ञ उपवीत ॥

सो०—अन्त न पावैं शेष, वेद श्वास जाको सकल ॥
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्ग मुनि ॥

दियो दान वसुदेव अनेका । पूजे सब द्विज सहित विवेका ॥
सब नर नारी मङ्गलगायो । वन्दी जनन द्रव्य बहु पायो ॥
लखि कौतुक सुर गण सुख पावें। बरषि सुमन दुन्दुभी बजावें ॥
अति आनंद भयो सब काहू । तात मात उर परम उछाहू ॥
पुनि यक दिन बसुदेव सज्ञानी । यह इच्छा अपने मन जानी ॥
पण्डित भलो कहूं जो पैये । तो विद्या सब सुतन पढ़ैये ॥
काहू तब यह बात बखानी । संदीपन पण्डित बड़ ज्ञानी ॥
रहैं अवन्ती पुरके माहीं । तासम जग पण्डित कोउ नाहीं ॥
यह सुनि कृष्ण सकल गुणखानी। पितुके मनकी रुचि पहिचानी ॥
ह्वैकैनेमसहित दोउ भाई । विद्या पढन गये यदुराई ॥
वेद विदित सेवा हरि कीन्ही । अल्प काल विद्या सब लीन्ही ॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो।जानि जगतपति मन हर्षायो ॥

दोहा—तव हरि गुरुसों जोरिकर, बोले सहित सनेहु ॥
गुरु दक्षिणा कछु चाहिये, मांगिसो हम सों लेहु ॥

सो०—तव गुरु कह्यो विचारि, तुम प्रभु कर्त्ता जगतके ॥
बूझि लेहुँ निज नारि, जो वह कहै सो दीजिये ॥

---

१ अज्ञान । २ मंत्रपूर्वक स्नान । ३ जनेऊ । ४ नगारे । ५ प्रताप ।

तब संदीपन तिय पहँ आये । बचन कृष्णके ताहि सुनाये ॥
देन कहत हरि दक्षिणा हमको । माँगैं कहा सो बूझें तुमको ॥
मरे हुते ताके सुत[1] दोई । तिन मांगे हरिसों पुनि सोई ॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी । जल थल सब जिनके अनुगामी[2] ॥
गये बहुरि भक्तन सुखकारी । जग उतपति पालन लयकारी ॥
चाहैं कियो होय सब सोई । आनि दिये गुरुके सुत वोई ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विज नारी । सुत संताप मिट्यो दुख भारी ॥
ह्वै प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हों । नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हो ॥
गुरु आयसु[3] ले पुनि दोउ भाई । आये मधुपुरि जन सुखदाई ॥
तात मात लखि अति सुख पायो । भयो मनोरथ सब मन भायो ॥
राज काज पुनि प्रभु सब करई । उग्रसेन आयसु अनुसरई ॥
हित जन परिजन नर अरु नारी । सुखी सकल हरि बदन निहारी ॥

दोहा—उद्धव अरु अक्रूरजे, सखा श्यामके साथ ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥

सो०—व्रज बासिनको ध्यान, ब्रजबासी प्रभुके सदा ॥
यदपि ब्रह्म सुख खान, तदपि भक्त वश प्रेमरस ॥

अथ उद्धवजीकीविदा लीला ॥

उद्धव यदुपति सखा सज्ञानी । एक ब्रह्म सुखसों रति मानी ॥
हरिको त्रिगुण रूप करि मानैं । प्रेम कथा कछु उर नहिं आनैं ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावैं । तब उद्धव हँसि कै उचटावैं ॥
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं । भली बानि याकी यह नाहीं ॥
रूप रेख जाके नहिं कोई । धर्यो नेम उरमें इन सोई ॥
निर्गुण कथा योगकी गावै । जामें कछु रस स्वाद न आवै ॥
मानत एक ब्रह्म अबिनाशी । ज्ञान गर्बमें[4] रहत उदासी ॥
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाही । नहीं प्रेम उपजत तनु माहीं ॥
कनकके कलश[5] पानी बिन जैसे । याको रूप बन्योहै तैसे ॥

१ पुत्र । २ सेवक । ३ हुक्म । ४ घमंड । ५ सुवर्णका घट ।

जोहौं कहौं कहा यह मानै । निंदा और हमारी ठानै ॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा । वन्यो हंस बायसको साथा ॥
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे । प्रेम भजन याके नहिं नेरे ॥

दोहा–कहा यशोदा नंदसे, सुखद तात अरु मात ॥
कह वह सुख ब्रज धामको, नाहिं बिसरत दिनरात ॥

सो०–कहां सखनको संग, कहां केलि वृन्दाबिपिन ॥
कहँ वह प्रेमतरंग, वंशीवट यमुना निकट ॥

कहां नवल ब्रजगोप कुमारी । कहँ राधा वृषभानु दुलारी ॥
कहँ वह प्रीति रीति सुख संगा । कहां रासरस हासतरंगा ॥
कहँ कुंजन बनकेलि निकाई । कहां मान लीला सुखदाई ॥
कहँ लगि ब्रजके सुखन सँभारो । जिहिं लगि पुर वैकुंठ बिसारौं ॥
कहिये यह रस वाके आगे । उद्धव सुनत प्रेमको भागे ॥
कैसे प्रेम होय या माहीं । मेरेकहे मानिहै नाहीं ॥
ब्रजको याको देउँ पठाई । पैहै प्रेम तहां यह जाई ॥
याके मन अभिमान बढ़ाऊं । कहि युवतिनकी प्रीति सुनाऊं ॥
यहै बात यदुपति उर आनी । पठऊं ब्रजयहि थापत ज्ञानी ॥
कहौं बोध तिनको करि आवो। प्रेममिटाय ज्ञान समुझावो ॥
जैहैं तुरत सुनत यह बाता । कहिहैं हरि जानत म्वहिं ज्ञाता ॥
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहैं । ह्वांते जाय साध ह्वै ऐहैं ॥

दोहा–ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान ॥
उद्धवके उरते करो, दूर ज्ञान अभिमान ॥

सो०–आय गये तिहि काल, उद्धवजी हरिके निकट ॥
बिहँसि मिले नँदलाल, सखा सखा करि अंक भरि ॥

अति सुंदर सांवलि छबिछायो । जब हरिको प्रतिबिम्ब सुहायो ॥
अंश भुजा दैकै यदुराई । उद्धवसे ब्रजबात चलाई ॥
उद्धव सुनो कहौं तुमपाहीं । ब्रजको सुखम्वहिं बिसरत नाहीं ॥

१ वार्ता । २ कौवा । ३ हिलोरे । ४ छातीसेलगायके ।

नेकहु नहीं यहां मन लागत । उठि उठि पुनि उतहीको भागत ॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये । गोपी ग्वालनमें सुखपैये ॥
कहँवह हेत यशोमति मैया । दै दै माखन लेत बलैया ॥
नहिं बिसरत मनते बिसराई । वह राधाकी प्रीति सुहाई ॥
गोप सखा वृन्दाबन गैयां । नहिं भूलत वंशीवटछैयां ॥
त्यागत तिन्हैं बहुत दुखपाये । मिटत नहीं मनते पछिताये ॥
उद्धव सुनि बोले मुसकाई । कहा कहत हरियों अकुलाई ॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं । जगव्यबहार सकल मिथ्याहीं ॥
मोसों सुनो बात यदुराई । एकै ब्रह्म सदा सुखदाई ॥
दोहा–जब उद्धव ऐसे कही, बिहँसि ज्ञानकी बात ॥
तब यदुपति सुख पायकै, पुनि बोले हर्षात ॥
सो०–भाई मो मन माहिं, उद्धव कहि जो बात तुम ॥
तुम समान कोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू[1] ॥
उद्धव तुम ब्रजवेग सिधारो । करि आवहु यह काज हमारो ॥
पूरण ब्रह्म अलख अर्जे[2] जोई । मात पिता ताके नहिं कोई ॥
रूप न रेख जाति कुलनाहीं । व्यापिरह्यो सब घट घट माहीं ॥
हौ ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी । गोपी सकल प्रीतिरत मानी ॥
यह मत तिन्हैं बोधकरि आवो । प्रेममेटिकै ज्ञान दृढावो ॥
मेरे प्रेम बिबश वे बाला[3] । सहत बिरह दुख दुसह बिशाला ॥
काम अग्नि तनु तूलै[4] समाना । शोच श्वास मारुतै[5] बलवाना ॥
भस्म होन पावत सो नाहीं । भीज रहत नयनन जल माहीं ॥
इहै आज लोंपै इहि भांती । बिरह व्यथा व्याकुल दिनराती ॥
एतेपै कैसे वे न्यारे । समाधान बिन धीरज धारे ॥
ताते सखा वेगि तुम जाहू । मैंटो तिनके उरको दाहू ॥
पठऊं नारिनके ढिग सोई । जो तुमहीं सों लायक होई ॥
दोहा–यक प्रवीण[6] गुरु सखामम, तुमते ज्ञानी कौन ॥

१ हितकारी । २ अजन्म । ३ गोपी । ४ रुई । ५ वायु । ६ चतुर ।

सो कीजै ज्यहि ब्रजवधू,साधन सीखैं पौन ॥
सो०—जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञान योग उपदेशते ॥
डारैं मोहिं विसारि, ब्रह्म अलख परचौकैरैं ॥
उद्धव सुनो कहत मैं तुमको । तुमसम हितू कौर नहिं हमको ॥
कैसेहु उन गोपिन सां मोहीं । उऋण कीजिये विनवत तोहीं ॥
निशिदिन भक्ति मेरिये उनको । नाहिं आनि रुचिकै सिद्धुतिनको ॥
सर्बस तिनन मोहिं सब दीन्हों । तन मन प्राण समर्पण कीन्हों ॥
मुक्ति तीन तिनको मैं दीन्हीं । सोउनहित एकहु नहिं कीन्हीं ॥
रही एक सो योजन कहिये । सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये ॥
सो अब देहु तिनहीं तुम क्षानू । जिहि पावैं पद पदनिरबानू ॥
जो अंगीकत करैं न तासू । तौ मैं हौं उनको ऋणदासू ॥
गाय चरावत उनकी रैहौं । ब्रजतजिनहीं अनत कहुँ जैहौं ॥
यहै बात मेरे मन भावै । और न कछु मोपै बनि आवै ॥
जाहु बिलम्ब करौ जिन । उनको युग बीततमोबिन छिन ॥
समाधान तिनको करि आवो । ब्रजमें जाय बिलम्बन न लावो ॥
दोहा—उद्धव ब्रजमें जायकै, विलँबि न रहियो जाइ ॥
तुम बिन हम अकुलहिं, श्याम करत चतुराइ ॥
सो०—तुमहो सखा प्रवीन, बार बार सिखऊं कहा ॥
जिय ज्यों जल बिन मीन, सोई मतौ विचारिये ॥
कही श्याम ऐसे जब बानी । तब उद्धव अपने जिय जानी ॥
यदुपति योग साँच अब जान्यो। ज्ञान गर्व अपने मन आन्यो ॥
बोल्यो अति अभिमान बढाई । तुम आयसु शिर पर यदुराई ॥
तुम पठवत गोपिनके माहीं । मैं कैसे प्रभु करौं कि नाहीं ॥
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं । ज्ञान कथा ब्रज लोगन कैहौं ॥
जो मानि ब्रह्म उपदेशू । तौ कहि हौं समुझाय सँदेशू ॥
दिन द्वै रहि ब्रजमें सुख देहौं । प्रहुरो आय चरण पुनि गैहौं ॥

१ उनके ऋणसे मुक्त । २ निर्वेदन । ३ मोक्ष । ४ समझायबुझाय आवो।

यह सुनि विहँसि कह्यो हरि तवहीं । जाहु उपंगसुत व्रजको अवहीं ॥
ज्ञान दृढ़ाय खवरि तिन दीजे । एक पन्थ द्वैकारज कीजै ॥
आये भ्रात इतै हम दोऊ । तव ते व्रज पठयो नहिं कोऊ ॥
जाय नन्द यशुमति परितोषो । ज्ञान कथा कहि युवतिनपोषो ॥
सकुचो मतिहि जानि व्रजनारी। कहियो ज्ञान योग विस्तारी ॥
दोहा-वचन कहतही समुझिहैं, वेहैं परम प्रवीन ॥
वेहैंहैं शीतल विरहते, ज्यों जल पायो मीन ॥
सो०-पठवत थापि महन्त, उद्धव को यहि काज हरि ॥
वेहै आवेंगे सन्त, व्रज भक्तनके दरशते ॥
अपनोही रथ तुरत मँगायो । दैउपंगसुत को पलनायो ॥
अपनेइ भूषण वसन सुहाये । निज कर उद्धव[1] को पहिराये ॥
अपनइ मुकुट आपनीं माला । पहिराई उर विहँसि विशाला ॥
उद्धव तव हरि रूप स्वहाये । यक भृगुपदके चिन्ह बराये ॥
लिख्यो पत्रिका श्री यदुराई । नन्द बबाको विनय बड़ाई ॥
पालागन कहियो कर जोरी । यशुमतिसे यहि भांति करोरी ॥
बालक ग्वाल सखा समुदाई । लिख्यो मिलन सबहीं उरलाई ॥
अरु नर नारि सकल व्रज जेते । प्रीति जनाय लिखे सब तेते ॥
लिखि गोपिनको योग पठायो। भाव जानि काहू नहिं पायो ॥
लेहु दृढ़ाय प्रीति व्रजवाला । यह आनी उरमें नँदलाला ॥
नीके रहियो यशुमति मैया । कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया ॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्ही । और मुखागर विनती कीन्ही ॥
दोहा-कहा कहौं कछु दिवसते, जननी विछुरेउँ तोहिं ॥
तादिनते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं ॥
सो०-कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मात तुम ॥
अव मोको निजतात, वसुदेव रु देवकि कहत ॥
कहियो नन्द ववासों जाई । कह मन धरी इती निठुराई ॥

१ उद्धव । २ समाधान ३ मछली । ४ माता ।

जबते दियो इतै पहुँचाई । बहुरो सोध लियो नहिं आई ॥
बारेक बरसानेलौं जैयो । समाचार तहँके सब लैयो ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे । ह्वैहैं वे मम बिरह दुखारे ॥
तिन्हैं जाय मम दिशिते भेंटो । कहि सँदेश तिनको दुख मेटो ॥
ब्रजवासी जेते नरनारी । गोप बत्स खग मृग बनचारी ॥
जोजिहि विधि तासों तिहि भांती। अरस परस कहियो कुशलाती ॥
मित्र एक मम दरशन पैहो । देखत ताहि परम सुख लहिहो ॥
वृंदावनमें रहत निरंतर । होत नहीं कबहूं उर अन्तर ॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई । मिलियो ताको शीशनवाई ॥
इहि विधि उद्धवसों यदुराई । कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
बल करि ताको प्रेम जनायो । ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

दोहा–ऐसे उद्धवसों करी, प्रगट श्याम ब्रज प्रीति ॥
उद्धव तिनको ज्ञानलै, चले करनविपरीति ॥

सो०–लखि उद्धवको जात, हलधर लिये बुलाय ढिग ॥
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरिनैन पुनि ॥

कहा कहौं उद्धवमैं तुमसों । यशुमति करत हेतजो हमसों ॥
एक दिवस खेलत मो साथा । खेल कियो झगरो यदुनाथा ॥
मोकों दौरि गोद तब लीन्हो । करसों ठेलि श्यामकों दीन्हों ॥
नन्द बबा तब बनते आये । इन्हैं गोदलै मोहि खिझाये ॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई । तोको छोह: लगत नहिं राई ॥
वह हित नाहिं भूलत है हमको । कहत सँदेश बनत नाहिं तिनको॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई । अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ॥
कहियो हमैंह तनय तुह्मारे । मात पिता नहिं आन हमारे ॥
मिलिहैं आय धायकै तुमको । कारज कछुक औरहै हमको ॥
नाहिं बिसरत क्षण गोकुल गाई । तुम तजि सुखको हमैं देखाई ॥
सुनि वसुदेव देवकी पायो । उद्धव ब्रजको जात पठायो ॥

दोहा-नंद यशोमति हित समुझि, लिखी पाँति वसुदेव ॥
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥
सो०-मति सकुचो जिय माहिं, राम कृष्ण तुह्मरे तनय ॥
हम कहिवेको आहिं, मात पिता तुम दुहुनके ॥

बालपने तुम पालनहारे। बालकेलिरस तुम्हैं दुलारे ॥
हमतो पाये बैस कुमारा। सो यह सब उपकार तुम्हारा ॥
मति कल्पो अपने मनमाहीं। हरिसों मिलि किन जात इहांहीं॥
श्याम राम नहिं तुम्हैं भुलावैं। दिवस रैनि तुम्हरे यश गावैं ॥
ऐसे लिखि पाती सुखदाई। उद्धव कर बसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव बेगि पठायो। तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसुलियो बिदा हरि कीन्हों। चले उपँगसुत ब्रजपथ लीन्हों ॥
उद्धव चले गर्व मन धारी। कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी ॥
देखौं हौं ब्रजलोगन धाई। मानत इतो तिन्हैं यदुराई ॥
चले उपँगसुत जब हर्षाई। गोपिनमन तब गयो जनाई ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगिजाई। भयो कछुक दुख कछु हर्षाई ॥
समुझिसो शकुन दरश अनुरागी। जहँ तहँ काग उड़ावन लागी ॥

दोहा-जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उडरे काग ॥
दधि ओदन त्वहिं देहिंगी, अरु अंचलकी पाग ॥
सो०-सुनि गोपिनके बैन, उठि बैठत बायस अनत ॥
लखि पावत सब चैन, कहत परस्पर आपसे ॥

सखी आज गोकुल हरि आवैं। कैधौं काहू ब्रजहि पठावैं ॥
नीकी बात सुनावै कोऊ। फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयारि अम्बर फहराई। टूटि टूटि कंचुकि बँदजाई ॥
उठि उठि बैठत काग कहेते। उमगत मन आनंद लहेते ॥
भ्रमर एक चहुँ दिशि मडराई। पुनि पुनि कान लगत है आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ काला। आवन - हार भये नँदलाला ॥

१ चिट्ठी। २ उनन्तर। ३ भात। ४ काग। ५ अँगियाके बंद।

जानत भाग्य दशा विधि फेरी । दूर करो अब दुख मन तेरी ॥
बहुरि गोपाल मिलै जो आई । सुख सनेह करिलीजै माई ॥
आसन हृदय कमलमें दीजे । नयनन निरखि वदन छविलीजै ॥
देखत रूप मान तजिदीजे । प्रेम भजन अपनो करिलीजे ॥
आवैं जो ब्रज कुंजबिहारी । बड़ि भागिनी सबै ब्रजनारी ॥
नंद यशोमति सखि सुख पावैं । अति बडिभागिनि बहुरि कहावैं ॥
दोहा—घर घर शकुन विचारहीं, ब्रजकी तिय बड भाग ॥
ब्रजवासी प्रभु दरशको, सबके मन अनुराग ॥
सो०—मथुरातन टक लाय, अनुदिन पंथ निहारहीं ॥
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब ॥

अथ उद्धवजीकी ब्रजागमन लीला ॥

उद्धव चले ब्रजहि समुहाये । मथुरातजि गोकुल नियराये ॥
रथपर बैठे शोभित कैसे । दूजे नंदनँदन मनु जैसे ॥
वहै मुकुट पीतांबर काछे । श्याम रूप शोभित अँग आछे ॥
दूरहिते रथकी उजियारी । देखत हरषीं ब्रजकी नारी ॥
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई । आतुर जहँ तहँते उठिधाई ॥
कहत परस्पर देखहु आली । मधुवनते आवत बनमाली ॥
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं । तैसो रथ आवत मगमाहीं ॥
तैसोइ मुकुट मनोहर राजे । तैसोइ पट कुंडल छवि छाजे ॥
रथ तन सब देखत अनुरागा । स्वप्नेको सुख लूटन लागी ॥
ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै । त्यों त्यों पीतांबर फहरावै ॥
भई सकल सुख व्याकुल नारी । प्रेम विवश आनंद उर भारी ॥
जब लगि रथ आवत नियराई । तब लगि मानहु कल्प बिहाई ॥
दोहा—यहै शोच ब्रज घर बरन, आवत हैं नँदलाल ॥
देखनको निकसे हरषि, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥
सो०—सुनत यशोदा नंद, लेन चले आगे हरषि ॥
भये परम आनंद, तिहि क्षण ब्रजके लोग सब ॥

जब कछु रथ आगे नियरायो। तब संदेह सबन मन आयो॥
श्याम अकेले रथके माहीं। हलधर संग देखियत नाहीं॥
कोऊ कहत न हैं व्रजनाथा। जोपै हलधर नाहिन साथा॥
इतना कहत निकट रथ आयो। उद्धव निरखि नयन जल छायो॥
रहीं ठगीसी सब व्रजबाला। नूतन बिरह भई बेहाला॥
मनहुँ गई निधि कहूँपाई। बहुरि हाथते तुरत गँवाई॥
ह्वैगइ सपने की रजधानी। जागत कछू नहीं पछितानी॥
जबहीं कह्यो श्यामतो नाहीं। यशुमति मुरछि परी महिमाहीं॥
परी बिकल यशुमति ज्यहिठाईं। व्रजतियधाय तहां चलिआईं॥
श्याम बिना रथलखि अकुलानी। जहाँ सो तहां रहीं मुरझानी॥
रुदन करत व्याकुल अति भारी। लई उठाय पोंछि दृगबारी॥
यह कहि बोध करत सबबाला। उद्धवको पठयो गोपाला॥
दोहा–भली भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम॥
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम॥
सो०–सुफलं धरोहै आज, करहु जानि यह मन हरष॥
आवनको व्रजराज, इनके करह्वैहै लिख्यो॥
यह सुनि उठीं कछुक सुखपाई। उद्धव निकटहि पहुंची आई॥
हरिके रूप निरखि सुखपायो। श्यामसखा कहि सबन सुनायो॥
उद्धव निरखि कहत व्रजनारी। सुंदर सलज सुशील महारी॥
ताहीते हरि याहि पठायो। लैसँदेश मोहनको आयो॥
नीके नीके बचन सुनैहै। सुनि सुनि श्रवण न हियो सिरैहै॥
यह जानिये बेगि हरि अइहैं। याके मुख अब यह सुनिपैहैं॥
चहुँदिशि घेरिलियो रथजाई। नंद गोप व्रजलोग लुगाई॥
गये लिवाय नंद निजद्वारे। उद्धव रथते हर्षि उतारे॥
अर्घ्य देय भीतर घरलीन्हो। धनि धनि तिन कहि आदरकीन्हो॥
चरण धोय आसन बैठाये। बहुप्रकार भोजन करवाये॥

१ नेत्रोंकाजल। २ यशोदा। ३ उत्तम फल देनेवाली।

विविध भांति करिके पहुनाई । नंद श्यामकी बात चलाई ॥
उद्धव कह्यो कुशल दोउ भैया । अरु वसुदेव देवकीमैया ॥
दोहा–करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु उद्धव बलवीर ॥
पुलकि गात गदगद बचन, पूछत नंद अधीर ॥
सो०–चूकपरी अनजान, कह पछिताने आजके ॥
घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर करि ॥
प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी । भूल्यो सङ्गदोष हितजानी ॥
अब उद्धव बिछुरे गिरिधारी । मरियत समुझि शूल स्वइभारी ॥
कह्यो यशोमति दृग भरिपानी । उद्धव हम ऐसी नहिजानी ॥
सुतको हितकरिकै हममाने । हरिबै वासुदेव भगटाने ॥
ज्यहि विरंञ्चि शिवध्यान लगावैं । निशिदिन अङ्ग बिभूति चढ़ावैं ॥
सोबालकहम अतिहि अयान्यो । ऊखल सों बांध्यो गहिपान्यो ॥
फाटत नहीं बज्र सम छाती । अब यह समुझि हृदय पछिताती ॥
वैसे भाग कबहुँ अब अइहैं । बहुरि श्यामको गोद खिलैहैं ॥
जबतेहरि मधुपुरी सिधारे । तबते उद्धव प्राण दुखारे ॥
तलफत मीन नीर बिन जैसे । देख्यो श्याम मनोहर तैसे ॥
उठिकै प्रात जातिहों खरिका । देखत दुहत और के लरिका ॥
उठत शूल उद्धव मनमाहीं । क्यों ये प्राण निकसि नहिं जाहीं ॥
दोहा–ग्वाल सखा सँग जोरि अब, को गैया लै जाय ॥
को आवै संध्या समय, बनते गाय चराय ॥
सो०–काहि लेहुँ उर लाय, आंचर सों रज झारिकै ॥
काकी लेहुँ बलाय, चूमि मनोहर कमलमुख ॥
मैं बलि सांची कहियो ऊधो । कैसे श्याम रहत हां सूधो ॥
दही मही माखन नित जाई । खात कौनके धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वाल बालनके साथा । भोजन करत तहां ब्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे सँग डोलैं । खेलत हँसत कौनसे बोलैं ॥

१ ब्रह्मा । २ धूलिके कण ।

काको माखन चोरें जाई । देन उरहनोको अब आई ॥
बनमें यमुनातीर कन्हाई । किन गोपिनको रोंकत जाई ॥
किनको दूध दही ढरकावैं । किनसों दधिको दान चुकावैं ॥
इतनी बूझति यशुमति माई । भई बिकल गुण सुमिरि कन्हाई ॥
बोले नंद बिलखि तब बानी । कहियो उद्धव साँच बखानी ॥
श्याम कबहुँ बहुरो व्रज अइहैं । व्रजबासिनकी ताप नशैहैं ॥
मोहिं तात यशुमतिसों माता । सदा कहत हैं हरि सुखदाता ॥
कहि गये चलती बार मुरारी । मिलिहौं बहुरि तात यक बारी ॥

दोहा–करिहैं सो अपनो वचन, कबहुँ श्याम प्रतिपाल ॥
कह उद्धव तुमसों कछु, कह्यो कि नहीं गोपाल ॥

सो०–भये सकल कृशगात[1], श्याम बिरह व्रज नारि नर ॥
युग सम दिवस विहात[2], उद्धव हमको हरि बिना ॥

लखि उद्धव व्रज रीति सुहाई । रहे कछुक मनमें सकुचाई ॥
सुनत नन्द यशुमतिकी बानी । बोल्यो हृदय परम सुखमानी ॥
कहि दोउ भाइनकी कुशलाती । दई श्याम दीन्ही सो पाती ॥
हरिको कह्यो सँदेश सुनायो । हलधरको सब कह्यो सुहायो ॥
पाती बांचि नन्द उर लाई । भेटे मानहुँ कुँवर कन्हाई ॥
लिखी श्यामके करकी पाती । यशुमति लै लै लावति छाती ॥
दुसह बिरहकी ताप नशावै । हरि सँदेश सुनि सुनि सुख पावै ॥
पुनि बसुदेव लिख्यो है जोई । उद्धव दियो नंदको सोई ॥
बाँचत नयन नीरभरि आये । कहत श्याम अब भये पराये ॥
पुनि बसुदेव लिखीका बाता । बोली बिलखि यशोदा माता ॥
यद्यपि हरि बसुदेव कुमारा । उदरें देवकी के अवतारा ॥
तद्यपि म्वहिं धायहुकेनाते । एक बार मोहन मिलि जाते ॥

दोहा–उद्धव यद्यपि हम सबै, समझावत व्रज लोक ॥
उठत शूल तद्यपि निरखि, माखन हरि मुख योग[3] ॥

---

१ दुर्बल । २ बीततेहैं । ३ पेद ।

सो०-रोटी अरु नवनीत, नित मांगत उठि प्रातही ॥
कोदेहै करि प्रीत, तिन्हैं वानि जाने विना ॥

यदपि देवगृह सब सुख भोगा। है वसुदेव सदन सब योगा ॥
हम पशुपाल ग्वाल व्रजबासी। दही मही धन घोष निवासी ॥
राज सुख न कोउ कोटि लडावै। विन माखन नहिं हरि सुख पावै ॥
निशिदिन रहत यहै जिय शोचू। है है हरिजा करत सकोचू ॥
एकबार गोकुल फिरि आवैं। मनकरि माखन भोग लगावैं ॥
अधिक रहैं गोकुलमें नाहीं। उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति विलखाई। उद्धव चरण रही शिरनाई ॥
तब उद्धव बोले सुखपाई। धन्य यशोमति धनि नंदराई ॥
धन्य धन्यहैं भाग्य तुह्मारे। जिनको कृष्ण प्राणते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखराशी। जगत आत्मा सब घट बासी ॥
हैं व्यापक पूरण सब पाहीं। जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मतिजानो हरि हमते न्यारे। वे हैं सब जनके रखवारे ॥

दोहा-मति जानो सुत करि तिन्हैं, वे सबके करतार ॥
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥

सो०-हम हैं सब अज्ञान, प्रभुमहिमा जानै नहीं ॥
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्म कर्म करिके रहित ॥

हम सब अपने भ्रमहि भुलाने। नर समान हरिको करि जाने ॥
ज्यों शिशु आप चक्र सम फिरई। ताको फिरत जानि सब परई ॥
ताते प्रभुहि जानि हरि ध्यावो। जाते मुक्ति पदारथ पावो ॥
उद्धव जो तुम हमहि सिखावत। हमहूं बहुत मनहि समझावत ॥
तद्यपि वह मृदु रूप कन्हाई। देखे बिना रह्यो नहि जाई ॥
सब व्रजके जीवन हरि वारे। उद्धव कैसे जात बिसारे ॥
जादिन मोहन बनहि न जाते। तादिन वन खग मृग अकुलाते ॥
नहि अघाते देखे वह मूरति। रूपनिधान साँवरी सूरति ॥

१ माखन। २ माहात्म्य। ३ मोक्ष। ४ तृप्ति।

सो मृग तृण भरि उदर न खाहीं। भय रहत कृशै श्याम बिनाहीं॥
मुरली ध्वनि खग मोहे जोई। सो अब मुख फल खात न कोई॥
जे बन सदा नवल सुखदाता। ते अब सूखे जीरणै पाता॥
कोकिल कीर मोर नहिं बोलैं। व्याकुल भये सकल बन डोलैं॥

दोहा—जिन्हैं चरावत श्यामजु, फिरत दुखारी गाय॥
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूंघत तहँ तहँ जाय॥

सो०—सब व्रज बिरह अधीर, युग सम बीतत पल हमैं॥
धरै कौन विधि धीर, उद्धव मनमोहन बिना॥

ऐस्यहि कहत सुनत गुण हरिके। बैठे बीति गई निशि भरिके॥
ठाढे यशुदहि रैनि बिहानी। भरि भरि लोचन ढारत पानी॥
व्रज घर घर सब होत बधाई। कहत कान्हकी पाती आई॥
निपट समीपी सखा स्वहायो। उद्धवको हरि व्रजहि पठायो॥
कंचन कलश दूध दधि रोरी। नन्दसदन लै आवत गोरी॥
गोपसखा सब कृष्ण उपासी। आये धाय सकल व्रजवासी॥
उद्धवको हरि रूप निहारी। भये सुखी सब नर अरु नारी॥
व्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं। करि परदक्षिण शीश नवावैं॥
कहत पायकै दरश तुम्हारो। भयो जन्म अब सफल हमारो॥
बूझत कुशल सकल नर नारी। नन्द अवासै भीर भइ भारी॥
उद्धव लखि व्रज प्रेम जकेसे। बोलि सकत नहिं रहे थकेसे॥
हकबकात चहुँ दिशि सब ठाढे। उद्धव रहे मौन गहि गाढे॥

दोहा—उद्धव की लखिकै दशा, व्रज जन मन अकुलात॥
क्यों उद्धव तुम कहत नाहिं, राम कृष्ण कुशलात॥

सो०—इक क्षण युग सम जाहि, हमैं सुने बिन प्रीति हरि॥
आवन कह्योकि नाहिं, व्रजहि कृपा करि सांवरे॥

तब उद्धव बोले धरि धीरा। सदा कुशल हरि हलधर बीरा॥
दियो तुम्हैं लिखि पत्र सँदेशू। अरु श्रीमुखै यह कह्यो सँदेशू॥

१ दुर्बल। २ पुराने। ३ घर। ४ अपने मुखसे। ५ आज्ञा।

करि समाधि अन्तर म्वहिं ध्यावो । गोप सखा करि मति चितलावो ॥
हौं अनादि अविगति अविनाशी । सदा एक रस सब घटवासी ॥
निर्गुणज्ञान बिन मुक्ति न होई । वेद पुराण कहत हैं सोई ॥
ताते दृढ़ करि यह मन धारो । सगुण रूप तजि निगुण बिचारो ॥
तुरत तापत्रय[१] टरि दुखदाई । मिलि हौ ब्रह्म सुखहि सब जाई ॥
उद्धव कही जबहि यह बानी । गोपी जन सुनिकै बिलखानी ॥
इतनी दूर बसत सुनि आली । अब कछु और भये बनमाली ॥
रहीं विरहकी बात विचारी । बूड़ीं सकल मनहुँ बिनवारी[२] ॥
मिलन आश गइ सुनत सँदेशू । उपज्यो उर अति कठिन अँदेशू ॥
फैल गई जहँ तहँ यह बानी । करत परस्पर सब अकुलानी ॥

दोहा–यह सब दोष लगै हमैं, करमरेख को जान ॥
प्रेम सुधा रस सानि कै, अब लिखि पठयो ज्ञान ॥

सो०–इक ऐसे यह देह, रही झरसि विरहा अनल ॥
कैलाहूते खेह[३], अब आयो उद्धव करन ॥

रूपराशि जो सब सुखदाई । ब्रजके जीवन मूरि कन्हाई ॥
बिछुरे जिन्हैं इतो दुखपायो । सो अब हिरदय माहिं बतायो ॥
तिन्हैं कहत चितवो मन माहीं । वेहैं पूरण भरि सब ठाहीं ॥
जाको यत्न करतहैं योगी । निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो करि कृपा आइकै ऊधो । बीथिन मांझ बहायो सूधो ॥
अबलन कारण श्याम पठायो । व्यापक अगहै[५] गहावनआयो ॥
भयो आय विरहन सब कोई । गायो निर्गुण निगमन जोई ॥
जो सम दृष्टि एक रस मोहन । तो कित चित्त चुरायो गोहन[४] ॥
उद्धव यह हित लागै काहै । जोपै इष्ट कृष्ण हिय माहै ॥
निशिदिन नयन दरशहितजागत । कल नहिंपरत पलक नहिंलागत ॥
चहुँ दिशि चितवत बिरह अधीरा । बिलखि बिलखि भरि डारत नीरा ॥
ऐस्यहु दुख भकटत क्यों नाहीं । जोपै श्यामहि कहत इहाहीं ॥

दोहा–रहन देहु ऐसेहि हमहिं, अवधि आशकी थाह ॥

१ तीन ताप । २ बिनाजल । ३ राख । ४ गली । ५ जो पकड़नेमें न आवै ।

फिरि चाहै नहिं पाय हौ, डारे अगुण अथाह ॥
सो०-ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ॥
हम तनभरेउ वियोग, भयो अधिक दुख श्रवण सुनि ॥
एक कहत दूषण नहिं याको। यह आयो पठयो कुबिजाको ॥
वानेजो कहि याहि पठायो। सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुबिजा जो जाहि सिखावै। सोई ताको गायो गावै ॥
कबहुँ श्याम कैहैं नहि ऐसी। कही आय व्रजमें इन जैसी ॥
ऐसी बात सुनैको माई। उठै शूल सुनि सहि नहि जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो। ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जप तप संयमै नेम अचारा। यह सब विधवनोको व्यवहारा॥
युग युग जीवहु कुँवर कन्हाई। शीश हमारे पर सुखदाई ॥
अच्छेत पति विभूति किनलाई। कहो कहां की रीति चलाई ॥
हमरे योग नेम व्रत एहा। नंदनँदन पद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोषको लावै। यह सब कुबिजा नाच नचावै ॥
जब युवतिन यह बात सुनाई। उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ॥
दोहा-योग कथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय ॥
प्रेम वचन तिनके सुनत, रहि गयो शीश नवाय ॥
सो०-तब जान्यो मन माहिं, ये गुणहैं सब श्यामके ॥
म्वाहिं पठयो इहि ठाहिं, याही कारण के लिये ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी। गुरु करि तिन्हैं प्रथमही मानी ॥
मन मन करि प्रणाम हर्षाने। उद्धव चले बहुरि बरसाने ॥
श्री वृषभानु कुँवरि हरि प्यारी। और सकल व्रज गोप कुमारी ॥
जिनके मनमोहन नँदलाला। सुनी सबन यह बात रसाला ॥
कोऊहै मधुबनते आयो। हित करि श्रीनँदलाल पठायो ॥
यथ यूथँ मिलि अति अतुराई। पिय सँदेश सुनतै उठि धाई ॥

१ इन्द्रियोंकादमन। २ रांड। ३ पति होते हुये। ४ झुंडकेझुंड।

मिले उपँगसुत पंथ मझारी । रथ लखि कहत परस्पर नारी ॥
बहुरि सखी सुफलक सुत आयो। वैसोई रथ परत लखायो ॥
लैगयो प्रथमहिं प्राण हमारो । अबधौं कहा काज जिय धारो ॥
तिहि क्षण उद्धव दरश देखायो । तब धीरज सबके मन आयो ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों । सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हों ॥
उद्धव लखि अति भये सुखारी । मनहुँ विकल झखै पायो बारी ॥

दोहा–तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाहिं ॥
भई भीर गोपीनकी, अति आनँद मनमाहिं ॥
सो०–अति प्रिय पाहुनै जान, सुधिल्याये ब्रजराजकी ॥
करिकै अति सनमान, प्रेमसहित पूजे सबनि ॥

हाथ जोरि पुनि विनयै सुनाई । कहिये उद्धव निज कुशलाई ॥
बहुरि कहो मधुबन कुशलाता । हैं वसुदेव देवकी माता ॥
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ । अरु अक्रूर कुशल कुबिजाऊ ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलानी । नयन नीर मुख गदगद बानी ॥
लखि गोपिनकी प्रीति स्वहाई । प्रेम मगनभे उद्धवराई ॥
पुलकि गात अँखियन जल छाई । गयो ज्ञानको गर्ब हिराई ॥
पुनि पुनि यहै कहत मन माहीं। ऐसी हरिको बूझिय नाहीं ॥
ब्रज नारिन को योग पठावैं । चितते ब्रजकी प्रीति मिटावैं ॥
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा । बोले शोधि नयनको नीरा ॥
सब विधि कहि हरिकी कुशलाती। दीन्ही प्रथम श्यामकी पाती ॥
लै लै करन मिलति सब पाती । कोउ नयन कोउ लावति छाती॥
काहू लैकर शीश चढ़ाई । बूझत आपन लिखी कन्हाई ॥

दोहा–अतिहित पाती श्यामकी, सब मिलि मिलि सुख पाय ॥
उद्धव कर दीन्ही बहुरि, दीजै बांचि सुनाय ॥
सो०–उद्धव सबन सबोध, बांचि श्यामकी पत्रिका ॥
लागे करन प्रबोध, ज्ञान कथा बिस्तारिकै ॥

मोको हरि तुम पास पठायो । आतमज्ञान सिखावन आयो ॥

१-मछली । २-महमान । ३-विनती ।

जाते पाप नहीं नियराई। मनते विषय देहु बिसराई ॥
हरि आपहि नर आपुहि नारी। आपहि गृही आप ब्रह्मचारी ॥
आपहि पिता आपही माता। आपहि पुत्र आपही भ्राता ॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी। आपहि राजा आपहि रानी ॥
आपहि धरती आप अकाशा। आपहि स्वामी आपहि दासा ॥
आपहि ग्वाल आपही गाई। आपहि गाय दुहावन जाई ॥
आपहि भ्रमर आपही फूला। आपहि ज्ञान बिना जग भूला ॥
राँव रंक दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरन्तर होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू। तैस्वइ जानों ब्रह्म विवेकू ॥
यहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरण संशय भ्रम भागै ॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै। ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै ॥

दोहा—सुनतहि उद्धवके वचन, रहीं सबै शिरनाय ॥
मानहुं मांगत सुधारस, दीन्हों गरल पियाय ॥

सो०—रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत ॥
बोलीं बहुरि सँभारि, उद्धवसों करजोरिकै ॥

भले मिले तुम उद्धवराई। भली आय कुशलात सुनाई ॥
कछु यक हती मिलनकी आशा। कियो आय ताको तुम नाशा ॥
इन बातन कैसे मन दीजै। श्याम बिरह तनु पल पल छीजै ॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी। कुंडल मुकुट पीत पट धारी ॥
ऊद्धव कहौ कौन बिधि जीजै। योग युक्ति लैकै कह कीजै ॥
छांडि अछत नँदनंदन प्यारो। को लिखि पूजै भीति पगारो ॥
हम अहीर गोरसके भोगी। योग युक्ति जानै कोउ योगी ॥
उद्धव तुमसों सांच बखानै। प्रेम भक्ति हमरे मन मानै ॥
हमको भजनानंद पियारो। ब्रह्मानंद सुख कहा बिचारो ॥
व्यावरि व्यथा न वंध्या जानै। ये दृग हरि दरशन सुखमानै ॥
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै। कृष्णरूप बिन और न भावै ॥

---

१ गृहस्थी। २ राजा। ३ दरिद्री। ४ अमृत। ५ विष। ६ बांझ।

नव किशोरको नयन निहारैं । कोटि ज्योति ता ऊपर वारैं ॥
दोहा–अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल ॥
क्यों विसरत उद्धवहमैं, मोहन मदन गोपाल ॥
सो०–सजल मेघतनु श्याम, रूपराशि आनँद भरयो ॥
मोहीं सब ब्रज बाम, और न जानत ब्रह्म हम ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी । बोले बहुरो साजि सयानी ॥
जौ लगि हृदय ज्ञान नहिँनीकैं । तौलौं सब पानीकी लीकैं ॥
बूझे बिन स्वमो सब होई । बिन विवेक सुख पाव न कोई ॥
रूप रेख जाके कछु नाहीं । नयन मूंदि चितवो मन माहीं ॥
हृदय कमलमें ज्योति विराजै । अनहदनाद निरंतर बाजै ॥
इडा पिंगला सुखमन नारी । सहज शून्यमें बसत मुरारी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको बासा । धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा ॥
क्रम क्रम योग पंथ अनुसरहू । इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू ॥
उद्धव हम गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हाँसी ॥
जो वै रूप रेख नहिं चीन्हा । हाथ पांव मुख नयन विहीना ॥
तौ यशुदा करि काको जायो । काको पलना घालि झुलायो ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो । चोरि चोरि कैसे दधि खायो ॥
दोहा–कौन खिलाये गोदकरि, कहे न तुतरे बैन ॥
उध्दव ताको ध्यावहे, जाहि न सूझै नैन ॥
सो०–नटवर वेश प्रकाश, श्रीवृंदावन चंद्र तजि ॥
को खोजै आकाश, शून्य समाधि लगायकै ॥
जानि बूझि मति होहु अयानी । मानहु सत्य हमारी बानी ॥
भजौ ब्रह्म ब्रह्मै सब होहू । छांडि देहु ममता अरु मोहू ॥
मायानित आँधरी न बूझै । ज्ञान अनन्त नयन सब सूझै ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी । देखहु बूझि वेद सब साखी ॥
लगे आगि घर घूर जरावै । कोनिज गृह तजि घूर बुझावै ॥

१ नेत्र । २ ज्ञान । ३ माया ।

घरी करौ बलयोग सँवारो। भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥
योग कहा सब ओढि बिछावैं। दुसह बचन हमको नहिं भावैं ॥
अवलन आनि सिखावत योगू। हम भूली कैधौं तुम लोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी। मनमें श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो। सहज निकट ह्वै बचन सुनायो ॥
तासों कहि सब बात सुनावैं। उद्धव प्रति बहु व्यंग बनावैं ॥
बचन स्वभाव त्रिगुण अनुसारी। लागीं कहन सकल ब्रजनारी ॥

दोहा—कोऊ उद्धव सों कहत, कोइ आली प्रति बात ॥
निज निज मनकी उक्ति करि, अपनी अपनीघात ॥

सो०—उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोलि न आवहीं ॥
रहे मौनसों मान, सुनत बचन नारीनके ॥

बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी। आय सुनोरी सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पदनीको। लीन्हे शशी सुयश को टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा। सुतपति बाँधव सजन सनेहा ॥
शीश जटा अरु भस्म लगावो। सगुण छाँडि निर्गुण मनलावो ॥
आये करन तियन परछोहा। वस्ती छाँडि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरुबाला। ये मधुपुरि दोउ बसत मराला ॥
वे अक्रूर और ये ऊधो। निरवारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गांसकी बाता। इनही कंस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई। प्रगट उजागर वंश सदाई ॥
अबकरि कृपा ब्रजहि उठिधाये। अवलनयोग सिखावन आये ॥
ऐसे एक कहत अरु ग्वाली। येदोउ इकमन सुनरी आली ॥
तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो। ब्रज आखेट कीन इनसूधो ॥

दोहा—बचनफाँसि फँसिहँसि हरन, उनलिय रथ बैठाय ॥
हर लीन्हीं इन गोपिका, हती ज्ञान शर[3] आय ॥

सो०—देखहु लीन्हीं लाय, चहुँ दिशि दावा[4] योगकी ॥

[1] दया। [2] शिकार। [3] बाण। [4] दावाग्नि।

भई कठिन अति आय, अवधौं काचा हत कियो ॥
लागी कहन और इक ग्वारी । मधुकरे जानी बात तुम्हारी ॥
तुम जो हमैं योग यह आन्यो । करी भली करनीसो जान्यो ॥
इक हरि बिरह रही हम जरिकै । सुनतै अधिक उठी अब बरिकै ॥
तापर अब जनि लोन लगावो । मतै पराई बात चलावो ॥
दई श्याम तुम्हरे करपाती । सुनिके बहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई । बहेजात मांगत उतराई ॥
इकहम दुसह बिरह दुखपावैं । दूजे लिखि लिखि योग पठावैं ॥
मधुकर श्याम भेद अब पायो । नेहरत्न उनकहूं गँवायो ॥
पहिले अधर सुधारसप्यायो । कियो पोष बहु लाड़ लड़ायो ॥
बहुरोशिशुको खेल बनायो । गृहरचनारचि चलत मिटायो ॥
साँप कंचुकी ज्यों लपटाई । ऐसी हित की रीति दिखाई ॥
बहुरो सुरतिलई नहिं जैसे । तजी श्याम हमको अब ऐसे ॥
दोहा–करहु राजजहँजाउतहँ, लेहु अपन शिरभार ॥
दीजत सबै अशीश यह, न्हातहु खसो न बार ॥
सो०–बहुरङ्गी सुखतूल, जितहिंजात तितहीं सदा ॥
इक रंगी दुखमूल, चातक मीन पतंग गति ॥
मधुपै कहा कहि तुम्हैं सुनैये । करिकै प्रीति सबै पछितैये ॥
निबहैगी ऐसे हम जानी । उनलैके कछु औरै ठानी ॥
कारे तनुको कहा पत्यारो । मृदु मुसकनि मनहरो हमारो ॥
तब काहू मन हरत न जान्यो । हँसि हँसि सब लोगन सुख मान्यो
बरुवहि कुबिजा कीन्हों नीको । सुनि सुनि मधुप मिटत दुखजीको ॥
चंदन तनक श्याम उर धरिकै । श्रीसरबस्यपियो सब भरिकै ॥
जैसो छल हमसों हरिकीन्हो । ताको दावँ कूबरी लीन्हों ॥
बोली और एक या नारी । भाग दशा उद्धवकिन जारी ॥
विलपत रहत सकल ब्रजनारी । कुबिजा भई श्यामकी प्यारी ॥

१ भ्रमर । २ चिठी । ३ ठंढी हुई । ४ भौंरा ।

खात बच्यो असुरनको जोई । अब कुलबधू कहावत सोई ॥
राज कुवँरि कोऊ हरि बरते । तो कछु हम चितमें नहिं धरते ॥
बन्यो साथ अब अतिही आगर। कागा और मराल उजागर ॥
दोहा–अब खेलत दोउ लाजतजि, बारहमासी फाग ॥
लौंडी की डौंड़ी बजी, हाँसी अरु अनुराग ॥
सो०–हमैं देत बैराग, आपन दासीबश भये ॥
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बडो ॥
उद्धव हरि ऐसे काजनकरि । सुयश रह्यो त्रिभुवन माहींभरि ॥
आये असुर जिते ब्रजमाहीं । मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं ॥
विष जलसों सब ग्वाल जिवाये । कालीनाग नाथिले आये ॥
इन्द्रमान दलि ब्रजहि बचायो । गोबर्द्धन कर बाम उठायो ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये । करिकै यत्न आप उपजाये ॥
धनुष तोरि गजभबल सँहारो । मल्लन सहित कंस नृप मारो ॥
कीन्हों उग्रसेन को राजा । भये सकल देवनके काजा ॥
ऐसी कीरति करि सब नासी । कीन्ही नारि कूबरी दासी ॥
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक । अखिल लोक ब्रह्मांडके नायक ॥
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा । करत निरंतर जाकी सेवा ॥
उद्धव कहाँ कंसकी दासी । यह सुनि होत सकल ब्रजहाँसी ॥
कत मारत यदुकुलको लाजन । अब करिकै हरि ऐसे काजन ॥
दोहा–गावत जग सब गीत अब, वा चेरीके काज ॥
उद्धव यह अनुचित बडो, चेरीपति ब्रजराज ॥
सो०–उद्धव कहिये जाय, अबहूँ चेरी परि हरैं ॥
यह दुख सह्यो न जाय, सवँति कहावति कूबरी ॥
बोली और बाम यक ऐसे । उद्धव हरि रीझे धौं कैसे ॥
यक चेरी अरु कूबर पाछे । सोवत नहीं उताने आछे ॥
कुटिल कुरूप जाति कुल हीनी । ताको श्याम सुहागिनि कीनी ॥

१ हस । २ सम्पूर्ण । ३ त्यागवें । ४ सौत ।

कहा सिद्धि धौं कूबर माहीं। हमको लिखि पठवत क्यों नाहीं॥
हमहूं कूबर यत्न बनावैं। चलिकै टेढ़ी चाल दिखावैं॥
कहैं श्याम सोई अब कीजै। लोक लाज भामिनि तजिदीजै॥
होहिं आय गोकुलके बासी। तजैं निगोडी कबिजादासी॥
मधुकर जो हरि हमैं बिसारयो। गोपीनाथ नाम क्यों धारयो॥
जो नहिं काज हमारे आवत। तौ कलंक कत हमहिं लगावत॥
जोपै प्रीति करी कुबिजाकी। तौ अब बिरद बुलावहि ताकी॥
करतहि सुगम सबन करि पाई। प्रीति निबाहन अति कठिनाई॥
अब परतीति कौन विधि माने। क्षणमें होगये श्याम बिराने॥

दोहा–ज्यों गजकोरद त्यों करि, हरि हमसों पहिंचान॥
दिखरावनको आनही, काज करनको आन॥

सो०–विषकीरा विष खात, छांडि छुहारा दाख फल॥
मन मन कीजै बात, उद्धव कहिये काहिसों॥

उद्धव कहि कह तुम्हैं सुनावैं। जैसे हरि बिन हम दुख पावैं॥
बरु रहते मथुरा घनश्यामा। कित आये यशुदाके धामा॥
कत करि गोप वेष सुख दीन्हों। कत गोवर्द्धन कर पर लीन्हों॥
कतहि रासरस रचि बनमाहीं। किये विविध सुख बरणि न जाहीं॥
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई। अब मन धरी इती निठुराई॥
जबते ब्रजतजि गये बिहारी। तबते ऐसी दशा हमारी॥
घटे अहार विहार हर्ष हिय। भोग सँयोग आश आवन जिय॥
बाढ़ी निशा बलयै आभूषण। लोचन जल अंचल प्रति अंजन॥
उर चिन्ता कुंचुकी उसासा। जीवन रह्यो अवधिकी आसा॥
बीतत निशा गनत नभतारे। दिवस तकत पथ लोचन हारे॥
रही नहीं सुधि बुधि मन माहीं। बिरहानल तनु जरत सदाहीं॥
सुमिरि सुमिरि कै हरिगुणग्रामा। दुख अधिकात सुहात न धामा॥

दोहा–कहँलगि कहिये निज व्यथा, अरु हरिकी निठुराय॥

१ स्त्री। २ दांत। ३ कंकण। ४ आकाशके तारे।

तापर लाये योग अलि, अबलन करत सहाय ॥
सो०-कठिन बिरहकी पोर, जिहि व्यापै सो जानही ॥
क्यों धरिये मन धीर, सुनि अलि बचन भयावने ॥
जेकच[1] फूल फूलेल सँवारे। निज कर हरि गूँथे निरवारे ॥
कहि पठयो तिनको मन भावन। भस्म सानिकै जटा बनावन ॥
रत्न जटित ताटंक[2] सुहाये। जिन कानन मोहन पहिराये ॥
तिनको अब मुद्रा माटीके। ल्याये हैं उद्धव गढ़िनीके ॥
भाल तिलक अंजन नकबेसर[3]। मृगमद[4] मलयैज[5] कुंकुम केसर ॥
उर कंचुकी मणिनके हारा। सब तजि कहत लगावहुक्षारा ॥
ज्यहिगर श्याम सुभग भुज मेली। पठई त्यहि आँगी अरु सेली ॥
पहिरे जातनु चीर सुहावन। ताहि भगोहें कहत रँगावन ॥
जामुख पान, सुगन्ध सुहाये। निज हाथन ब्रजराज खवाये ॥
रस बिवाद बहुतान तरंगा। गावत कहत रहत हरिसंगा ॥
सदन विलास हासरस भाष्यो। हरि मुख अधर सुधारस चाख्यो॥
निज मुख मौन कौन विधि कीजै। ऊरध श्वास घूंटिकिमिजीजै ॥
दोहा-वेतो हरि अतिही कठिन, जानी तिनकी घात ॥
मधुप तुम्हें नहिं चाहिये, कहत कठिन यों बात ॥
सो०-तब बजाय मृदु बैन, अधरातन बोली नहीं ॥
किये रास रसऐन, अब कटु बचन सुनावहीं ॥
मधुकर मधु माधवकी बानी। हम सब जिमि माखी लपटानी ॥
उड़ि नहिं सकी फँसी हैं तामें। आवत शोच कहे अब कामें ॥
जिमि अहार बशमीन विचारे। क़ंटक गिलत कठिन अनियारे ॥
अटकत कुटिल हृदय दुख बाढै। बहुरि कौन बिधि तिनको काढै ॥
जैसे बधिक सुनाद सुनावै। मृग मन मोहि समीप बुलावै ॥
बहुरि करत धनु शर संधाना। तुरतहि मारि हरतहै प्राना ॥
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै। रजनी[6]के तमको दुख नाशै ॥

१ बाल। २ कर्णफूल। ३ नथुनी। ४ कस्तूरी। ५ चंदन। ६ रात्रि।

रूप लोभ शर मनहिं दिखाई । क्षणमें तिनको देत जराई ॥
जिमि ठगमद मोदकन खवावै । पथिक जननसों प्रीति जनावै ॥
रस विश्वास बढ़ावत भारी । प्राण सहित गर्थ हरत पिछारी ॥
तिमि मृदु मुसकनि मनहिंचुराई । खगजिमि हम ब्रजनाथबुझाई ॥
पाछे अब करनी यह कीनी । योगछुरी सबके गरदीनी ॥
दोहा–हरि हमसों ऐसो करी, कपट प्रीति बिस्तार ॥
भई बिरह बिष बेलि ब्रज, रसकी ऊख उखार ॥
सो०–कहिये कहा बखान, जिनसों हित यह मति तिन्हैं ॥
हरिजू हमरे प्रान, हम हरिके भावैं नहीं ॥
यह सुनि कह्यो और इक ग्वाली। कहतकहा मधुकरसों आली ॥
उनहींको संगी यह जोऊ । चंचल चित्त श्याम तनु दोऊ ॥
वे मुरली ध्वनि जग मन मोहन । इनकी गुंज सुमन दलजोहन ॥
वेनिशि अनत प्रात कहुँ आनैं। ये बसि कमल अनत रुचिमानैं ॥
वे द्वै चरण शुभग भुज चारी । ये षटपद दोउ बिपिन बिहारी ॥
वे पटपीत मंजु तनु काछे । इनके पीतपंख दोउ आछे ॥
वे माधव ये मधुप कहावत । काहू भाँति भेद नहिं आवत ॥
वे ठाकुर ये सेवक उनके । दोऊ मिले एकही गुनके ॥
कहा प्रतीति कीजिये इनकी । परी प्रकृति ऐसी है जिनकी ॥
निरस जानि भाजत पलमाहीं । दया धर्म इनके कछु नाहीं ॥
मनदै सरबस प्रथम चुरावैं । बहुरो ताके काम न आवै ॥
इनकी प्रीति किये यों माई । ज्यों भुस परकी भीति उठाई ॥
दोहा–कह्यो एकतिय सुन सखी, कारे सब इक सार ॥
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिनकी चटसार ॥
सो०–देखौ करि अनुमान, कारे अहि कारे जलद ॥
कबि जन करत बखान, भ्रमर काग कोयल कपट ॥
राखि पिटारे जो अहिकारो । पयै पियाय अतिहितप्र तिपारो ॥

१ लड्डू । २ पूंजी । ३ पाठशाला । ४ दूध ।

कुल स्वभावसों डसि भजिजाहीं। यद्यपि तिन्हैं लाभ कछु नाहीं॥
जलद सलिल बरषत चहुँपाहीं। भरत सकल सरसरिता माहीं॥
निशिदिन ताहि पपीहा ध्यावै। भाँवरि दैदै प्रीतिबढ़ावै॥
एक बूंदको त्यहि तरसावै। भ्रमर मालती सों मन लावै॥
जब रसहीन होत वा माहीं। निर्मोही तजिजाहिं पराहीं॥
सुनियत कथा काग पिककेरी। अंडनसेव करावत हेरी॥
बड़ेहोत निजकुल उड़जाहीं। बैठत निजमाता पितुपाहीं॥
ये सब कारे हरि पर वारे। सबहिनमें अतिही अनियारे॥
सबकी उपमा अरु गुण योगू। न्यायदेत पटतर कवि लोगू॥
अलिकुल अलक कोकिलाबानी। भुज भुजंग तनु जलद बखानी॥
समझी बात आज यहसारी। खानि कपटकी कुंजबिहारी॥

दोहा–मृदु मुसकनिविष डारिकै, गये भुजँग लौं भाग॥
नंद यशोदा यों तज्यो, जो कोकिल सुत काग॥

सो०–गये प्रीति यों तोर, जिमि अलि रस लै सुमनसों॥
घनलें भये कठोर, चातक सों हम रटत सब॥

उद्धव सुनो एक उपखानो। बाजी ताँत राग पहिंचानो॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी। क्योंनहिं दुखपावैं ब्रजनारी॥
कहत सुनत लागतहौ ऐसे। मीठो कहत गरलसों जैसे॥
पायो छोर लपटको तबही। लिखि आयो निर्गुण पद जबही॥
योगतहां अधिकारहि पाये। क्यों नहिं तूंबा यहां बोवाये॥
सुनिलीजे उद्धवजी हमसों। राज काज चलिहै नहिं तुमसों॥
करिये पोष आपनी काया। आये इतै करी बड़ि माया॥
जो तुमहौ हमेरहित आन्यो। सोहम शिरचढाय सुखमान्यो॥
सुनिकै सब ब्रजलोग अनंद्यो। नरनारी परच्यो करवंद्यो॥
अब सँभारि अपनो यहलीजे। जिन तुम पठये तिनहीं दीजे॥
उनहिंनमें यह याग समैहै। इहां न काहूपै निरबैहै॥

हम ब्रज बसत अहीर गँवारी । योग सोगकी नहिं अधिकारी ॥
दोहा-अंध आरसी बधिर ध्वनि, रोग ग्रसित तनु भोग ॥
उद्धव तिनको ल्यावहे, हमैं सिखावत योग ॥
सो०-हमैं योग जो योग, सोई योग मिलाइये ॥
कहे न जाने रोग, कहा कीजिये वैद्यसों ॥
उद्धव जाउभले तुम ओऊ । अपने स्वारथके सब कोऊ ॥
निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो । कौने याब्रज तुम्हैं पठायो ॥
औरं कह्यो संदेशो कोऊ । कहि निबरै अब सुनिये सोऊ ॥
तब अक्रूर आय वह कीन्हों । सगरे ब्रजको सुख हरि लीन्हों ॥
तुम आये उद्धव यहिठाटी । अन्न छुडाय खवावत माटी ॥
जोपै हती ज्ञानकी गाथा । तौकत रास नचे ब्रजनाथा ॥
मन हरिलीन्हों बेणु[1] बजाई । आधी नि[2]शि सबनारि बुलाई ॥
रसलीला वृन्दावन ठानी । अब मथुरा ह्वै बैठे ज्ञानी ॥
तब ममता क्योंनहिं उरधारी । मातुल[3] मान्यो कंस पछारी ॥
बूझि परे नीके सब कोई । हुती कछुक आशा सोउ खोई ॥
पढे सबै एकै परिपाटी । अधिक एकते एक न घाटी ॥
हम बावरी चलीनहिं त्योंही । ज्यों जगचलत आपनी गोही ॥
दोहा-मनकी मनहीं में रही, करिये कहा विचार ॥
हम गुहारि जिततें चहत, तितते आई धार ॥
सो०-जानतहै सब कोय, जैसी तुम हमसों करी ॥
हम सहिलोनी सोय, पावोगे अपनो कियो ॥
उद्धवजी पूंछत हम तुमको । जो हरियोग सिखावत हमको ॥
तौ करि कृपा आप किन आवैं । योग ज्ञान कहि प्रगट जनावैं ॥
जो उपदेशी निकट[4] न आवै । तौ आता क्यहि वि[5]धि मनलावै ॥
अबलग सुनी न काहू आनन[6] । मंत्रदेन लागे बिन कानन ॥
जबलगि युक्ति न सिद्ध बतावै । तब लगि साधक कैसे पावै ॥

१ बांसुरी । २ रात्रि । ३ मामा । ४ पास । ५ तरह । ६ मुख ।

हम गोकुल वे मथुरा माहीं । खेती होत संदेशन नाहीं ॥
जोपै करी श्याम यह माया । करें और तो इतनी दाया ॥
दरशन प्रथम दिखावैं आई । करहिं पवित्र चरण पखराई ॥
योग जानिके नगर तियागैं । सघन कुंजवन मन अनुरागैं ॥
आसन मौन नेम आचारा । जप तप संयम व्रत व्यवहारा ॥
योग अंग कहियतहैं जेते । बनहींमें बनिआवैं तेते ॥
करि प्रबोध कर माथ छुवावैं । होहिं सिद्धफल तौ सुखपावैं ॥

दोहा-तवतो खेदत सौंह करि, राख्यो कछु न सुहाय ॥
अब यह योग मिल्यो कहां, उद्धव कहियो जाय ॥

सो०-हमको निर्गुण ज्ञान, जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं ॥
लिखि पठये निर्वान, चोटं शहत लगायकै ॥

बोली और एक रिस मानी । मधुकर समुझ कहत किनबानी ॥
परमधुपियें जात नाहिं दीजै । मुख देखेको न्याय न कीजै ॥
बीचहि परै सत्यसों भाखै । राव रककी शंक न राखै ॥
सूझ न परत दिवस अरु राती । बात कहत हौ ठकुर सुहाती ॥
व्रज युवतिनको योग सिखावत। वृषभ जोति सुरभीन गनावत ॥
ऐकृतघ्न लंपटै व्यभिचारी । कीरति इहै आनि विस्तारी ॥
हम जान्यो अलिहै रस भोगी । कत सीख्यो यह योग कुयोगी ॥
जे भयभीत होहिं लखि माला । ते क्यों छुवैं भयानक व्याला ॥
क्यों शठ बकत छांड़ि लज्जाडर । कहँ अबला कहँ देश दिगम्बर ॥
साधु होयतो उत्तर दीजै । कहातोहिं कहि अपयश लीजै ॥
भई बायसी देखियत तोहीं । इन बातन डर लागत मोहीं ॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै । तापाछे औरन शिख दीजै ॥

दोहा-कत श्रम करि बकबक करत, कौन सुनत तुव बात ॥
वन कारो यों होतहै, उठिकिन ह्यांते जात ॥

सो०-देखि मूढ़ चित चाय, कहँ परमारथ कहँ विरह ॥

१ छोड़ै । २ राजा । ३ दरिद्री । ४ जो उपकार कियेको न मानै । ५ कपटी ।

राजरोग कफ जाय, ताहि खवावतहौ दही ॥

बोली और एक कोउ नारी । उद्धव सुनिये बात हमारी ॥
प्रथमहिं ब्रजकी कथा विचारो । पाछेः योग सिद्ध विस्तारो ॥
जाकारण पठये हैं माधो । सो विचार कछु जियमें साधो ॥
केतिक बीच विरह परमारथ । देखौ जियमें समुझि यथारथ ॥
परम चतुर हरिके निजदासा । रहत सदा संतनके पासा ॥
जल बूडत पुनि पुनि अकुलाई । कहा फेन पकरत हौ धाई ॥
सुंदर श्याम कमलदललोचन । सब विधि सुखद सकल दुखमोचन ॥
ब्रजको जीवन नंददुलारो । कैसे उरते जात बिसारो ॥
योगयुक्ति किहि काज हमारे । वाकी मुरली पर सब वारे ॥
तुम निर्गुणकी कीरति गाई । करै कहा सो बहुत बडाई ॥
अति अगाध पैहैं नहिं पारा । मन बुधि कर्म सबनके सारा ॥
रूप रेख वपु वर्ण न जासों । कैसे नेह निवाहैं तासों ॥

दोहा—बिनहीं तोय तरंग अरु, बिन चेतन चतुराय ॥
अबलों ब्रजमें नाहिं हुती, मधुप करी तुम आय ॥

सो०—कहो विविध विध कोय, नाहिं सुहात नँदनंदबिन ॥
अन्नक्षुधारत जोय, स्रक चंदन क्यों सुखलहै ॥

लागी कहन औरयक ग्वाली । कित बेकाज कहत है आली ॥
कहिये त्यहि जो होय विवेकी । यह अलि निजबातन को टेकी ॥
बकियासों को मूड पचावै । फटकै भुसी हाथ कह आवै ॥
तजि रसगेह नेह हरि पीको । सिखवत नीरस निर्गुण फीको ॥
देखत प्रगट नयन कछु नाहीं । ज्योति ज्योति खोजत तनु माहीं ॥
श्रवण सुनत जाकी मुरली धुन । भूलि रहे शिवसे योगीजन ॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी । बन बन लाज छुड़ाय बिहारी ॥
रास विलास विविध उपजायो । संग हमारे नाच दिखायो ॥
लोक लाज कुलकानि नशाई । हम सब तिनके हाथ बिकाई ॥

काटि सुहाग प्रेम को हेली । बोवत योग जहरकी बेली ॥
चौपद[1] होय ताहि समुझैये । कौन भांति षटपदहि[2] सिखैये ॥
लागै कौन कहे अब याके । छाँछौ दूध बराबर जाके ॥
दोहा–हम बिरहिनि विरहों जरी, जारी और अनंग[3] ॥
सुखतौ तबहीं पाइहैं, जब नाँचै फिरसंग ॥
सो०–छाँडि जगत उपहास, दृग ब्रत कीन्हों श्यामसों ॥
सोई हमैं सुपास, और युक्ति चाहैं नहीं ॥
सुनुरे मधुप कुटिल कुबिचारी । ये ब्रजलोग कृष्णाव्रतधारी ॥
सुन्दर श्याम रूप रस साने । श्रीगोपाल तजि और न जाने ॥
जो तजि[4] श्याम और[5]को ध्यावैं । व्यभिचारीते भक्त कहावैं ॥
विद्यमान तजि सुरसरि तीरा । चाहत कूप खोदिकै नीरा ॥
सुनै कौन यह सीख तुह्मारी । अति अनन्य मण्डली हमारी ॥
योग मोट तुम शिर धरि आनी । सो नहिं ब्रजबासिन मनमानी ॥
इतनी दूर जाहु लै कासी । चाहत मुक्ति तहांके बासी ॥
हम कह करैं मुक्तिलै रूखी । अबलौं श्यामसंगकी भूखी ॥
ओसन प्यास कौन विधि जाई । जब लगि नीर न पियै अघाई ॥
ऐसी बात कहौ अलि हमसों । तजहु शोच मिलिहैं हरि तुमसों ॥
हेतु हमारे जो पगु धारे । तौ हितकरि दुख हरो हमारे ॥
करहु सो यत्न श्याम जिमि आवैं। प्रगट देखि छबि हम सुख पावै ॥
दोहा–सत्य ज्ञान औ ध्यान अलि, सांचो योग उपाय ॥
हमको सांचो नन्दसुत, गर्ग कह्यो समुझाय ॥
सो०–बश कीन्ही मृदुहास, हमप्यारी[6] नँदनंदकी ॥
नख शिख अंग बिलास, तिनहीं देखे जीजिये ॥
इतनेहीं सों काज हमारो । मिलिहि फेरि ब्रजनंददुलारो ॥
और अनेक उपाय तिहारो । राज करहु अलि हमहिं न प्यारो॥

१ चारपांय । २ छापांय । ३ कामदेव । ४ छोडि । ५ गंगाजी । ६ स्त्री ।

तुम तो मधुप प्रीति रस जानो । हमं काजै कत होत अयानो ॥
सर्ब सुमनमें फिरि फिरि आवत । क्यों कमलनमें आप बँधावत ॥
ज्यहि बल काठ फोरि घर करहू । क्यों न कमलदल टारत तबहू ॥
रँगे श्याम रँग जे पहिलेसे । चढत और रँग तिनपर कैसे ॥
पारस परसि जो लोह सुहायो । सो किमि बहुरि चुँबक लपटायो॥
सुनी जिनन मुरली ध्वनि कानन । सो किमि सुनत कींगरी तानन ॥
बसे जासु उर सगुण कन्हाई । कैसे निर्गुण तहां समाई ॥
यह मन श्याम स्वरूप भुलानो । कहा करैं लै योग बिरानो ॥
सिंह सदा आमिष रुचि मानै । तृण न भखै पुनि तजै परानै ॥
हरि तजि हमैं न और सुहाई । कोटि भांति कोउ कहै बुझाई ॥

दोहा–द्वैदग रूप विराटके, कहियत एक समान ॥
ताहू में हित चन्द्रमा, नहीं चकोरहि भान ॥

सो०–लोचन रूप अधीन, सगुण सलोने श्यामके ॥
क्यों सुख पावै मीन, जल बिन डारे दूधमें ॥

नहिं मानत ये नयन हमारे । सुख न लहत बिन कान्ह निहारे ॥
भये श्याम छबि जलके मीना । मुरली ध्वनिके मृग आधीना ॥
अलि लोभी पंकज पद करके । कोकि कोकि नद द्युति दिन करके
बदन इन्दुके कुमुद चकोरा । तन घन छबिके चातक मोरा ॥
वहे रूप परगट जब देखैं । जीवन सफल तबहिं करि लेखैं ॥
बिगरि परे मन मधुप हमारे । ज्ञान बचन नहिं सुनत तुम्हारे ॥
ललित अनङ्ग रूप रस साने । खरे चकित ताते जग जाने ॥
श्वान पूंछ लौं सम नहिं होई । जो कोउ यत्न करै पचि कोई ॥
सो मन गयो श्यामके साथा । सुनै कौन अब निर्गुण गाथा ॥
एकै मन एकै वह मूरति । अटकौ ताहि न तजौ महूरति ॥
जो होतो दूजो मन कोऊ । तो हम लै धरतीं तहँ सोऊ ॥

उद्धव हरि है ईश हमारे। ते अब कैसे जात बिसारे॥
दोहा—योग दीजिये लै तिन्हैं, जिनके मन दशवीश॥
कित डारत निर्गुण इतै, उद्धव ब्रजमें खीश॥
सो०—गुण कर मोही श्याम, को निबाही निर्गुणहि॥
किये जन्मके काम, क्योंतजिये नँदनन्द अब॥
कहत मधुप तुम बात सुहाई। कहतहि सुगम करत कठिनाई॥
प्रथम अग्नि चन्दन सी जानी। सती होन उमहै सुखमानी॥
ताकी तपत और सियराई। कहै कौन पाछे पुनि आई॥
पैठत सुभट यथा रण जाई। कुसुमलता सम खड्ग सुहाई॥
दियो अपनपौ शूर उदारा। को अब करै तासु निरबारा॥
ये मनमोहन सों उरझाने। दुख सुख लाभ हानि नहिं जाने॥
प्रेम पंथ सूधो अति ऊधो। मति निर्गुण कंटक लै रूंधो॥
नेह न होइ पुरानो क्योंही। सरित प्रवाह नयोनित ज्योंही॥
निरखहिं आनँद रूप छको जल। रबि प्रतीति नहिं मान चढै थल॥
बूड़न उमहिं सिन्धुके माहीं। येतउनीर न पियत अघाहीं॥
दिनांदिन बढ़त कमल दल जैसे। हरि छबि दृगन लालसा तैसे॥
बसे गुपाल हृदय अम्बुज अलि। निकसत नाहिं सनेह रहे रलि॥
दोहा—योग कथा अब मति कहौ, उद्धव बारहिं बार॥
भजै आन नँदनंद तजि, ताको जननी छार॥
सो०—यहै हमारे भाव, अब कोऊ कछुवै कहौ॥
जैवो होय सुजाव, रही प्रीति नँदलालकी॥
रहै प्राण तनु प्रेमहि खोई। कौन काज आवै पुनि सोई॥
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै। निशा गये जिमि शशि न सुहावै॥
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे। चातक यश गावत सब टेरे॥
प्रेमसहित मीननकी करणी। नयन अछत देखहु जग बरणी॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो। दुहूं भांति हम तो यश लीन्हो॥

मिलैं श्याम तो अधिक स्वहायो । नातर सकल जगत यश गायो ॥
कहँ हम यह गोकुलकी ग्वारी । वर्णहीन घट जाति हमारी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा । बैठे पाँति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता । सो व्रज भये हमारे मीता ॥
तिन्हैं संगलै रास विलासी । मुक्ति इतै पर काकी दासी ॥
यह सुनि बोलि उठी इक आनै । मेरो बुरो न कोऊ मानै ॥
रसकी बात रसिकही जानै । निरस कहा रसकी पहिचानै ॥

दोहा-दादुर कमलन ढिग वसत, जन्म मरण पहिचानि ॥
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आनि ॥

सो०-जानैं कहा मिठास, गूँगो वात सवादको ॥
मानहुँ काट्यो वास, इनसों कहिवो प्रेम रस ॥

धनि धनि उद्धव तुम बड़भागी । हरिसों हित नाहिं मन अनुरागी ॥
पुरइन वसत यथा जल माहीं । जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं ॥
गागर नेहनीरमें जैसे । अपरस रहत न भीजत तैसे ॥
पैरत नदी बूंद नहिं लागी । नेक रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब व्रजकी नारि अयानी । ज्यों गुडसों चींटी लपटानी ॥
अब कासों वह लगत बखानैं । लागे बिन उद्धवको जानैं ॥
हृदय दहै नित शोचत रहिये । पशु वेदन ज्यों मन मन दहिये ॥
सबते पीर लगनकी भारी । यत्न रहित दुख सुखते न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावैं । वेद कहांलगि ताहि बतावैं ॥
घायल पीर जानिहै सोई । लाग्यो घाव जाहिके होई ॥
प्रेम न रुकत हमारे बूते । गज कहुँ बँधत कमलके सूते ॥
कैसे विरह समुद्र सुखाई । योग अग्निकी तनकलुकाई ॥

दोहा-यद्यपि समुझाये बहुत, हम करि मनहिं कठोर ॥
तदपि न कवहूं भूलईं, उद्धव नन्दकिशोर ॥

सो०-क्योंसुख पावै प्रान, पलक लगत तब सहत नहिं ॥

लागे वर्ष बिहान, अब बिन देखे श्यामके ॥
तब षटमास रासके माहीं। एक निमिष सम जाने नाहीं ॥
अब और गति बिना कन्हाई। एक एक पल कलप बिहाई ॥
तब बन बन हरि संग बिहारी। अब ब्रजमें यह दशा हमारी ॥
ज्यों देवी उजारि पुर माहीं। को पूजै कोउ मानत नाही ॥
कहत और यौवन अब ऐसो। चित्र अंधेरे घरको जैसो ॥
नवशशि अति सीरो अब तातौ। भयो सकल सुख करि तनु हातौ ॥
कतकरि प्रीति गये मनभावन। जासों हम लागी दुख पावन ॥
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताहीं। कह्यो हतो आवन हम पाहीं ॥
याही आश प्राण तनु माहैं। बारेक बहुरि मिल्योही चाहैं ॥
उद्धव हृदय कठोर हमारे। फटै न बिछुरत नंददुलारे ॥
हमते भली जलचरी होई। अपनो नेह निबाहत जोई ॥
जो हम प्रीति रीति नहिं जानी। तो ब्रजनाथ तजी दुख मानी ॥
दोहा–कहँ लगि कहिये आपनी, उद्धव तुमसों चूक ॥
हम ब्रजबास बसी मनहुँ, सबै दाहिने शूक ॥
सो०–उद्धव कह्यो न जाय, मोहन मदन गोपालसों ॥
नयनन देखो आय, एक बार ब्रजकी दशा ॥
बोली और एक ब्रजबाला। उद्धव भली करी गोपाला ॥
अब ब्रज कबहूं आवैं नाहीं। मथुरहि रहैं सदा सुखमाहीं ॥
इहां चली अब उलटी चाली। देखत दुख अइहैं बनमाली ॥
तपत इन्दु सूरजकी भांती। चंदन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण बसन अनल समदागै। गृहबन कुंज भयावन लागै ॥
जिततितमार द्रुमनकी डारन। धनुशरलिये करतहैं मारन ॥
हमतौ न्याय सहैं दुखयेतो। ब्रजबासिनी ग्वाल जड तेतो ॥
वे प्रभु भोग संयोग भुवाला। क्यों सहिहैं कोमल तनु ज्वाला ॥
उद्धव कह्यो सँदेश सिधारो। जान्यो सब परपंच तिहारो ॥

१ छामहीने। २ पल। ३ कठिन। ४ छोडदिया। ५ चन्द्रमा। ६ हवा।

बातन कहा हमैं भरमावत । जलमथि सुन्यो न माखन आवत ॥
सगुण निकट दर्शतहै जिनको । निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जोपै निज तुम यहै बखानो । प्रभु पूरण सबमें समजानो ॥
दोहा-तो तुम कापै करतहौ, उद्धव आवागौन ॥
को नेरे को दूरहै, कहां कौन ह्याँ कौन ॥
सो०-खोज्यहु पावत नाहिं, योगी योग समुद्रमें ॥
इहां बँधावत बाहिं, सो यशुदाके प्रेमवश ॥
हम गुवाल गोकुलके बासी । गोपनाम गोपाल उपासी ॥
राजानंद यशोदा रानी । यमुना नदी परम सुखदानी ॥
गिरिवरधारी मित्र हमारे । वृन्दावन मिलि संग विहारे ॥
अष्टे सिद्धि नव निधि सब दासी । इहां न योग विराग उदासी ॥
बहै प्रेम रसकी सब भूखी । कीजै कहां मुक्ति लै रूखी ॥
निर्गुण कहा प्रेमरस जानै । उपदेशहु जे लोग सयानै ॥
हम ऐसेहि अपनी रुचिमाने । रहिहैं विरह वायु बौराने ॥
निशिदिन सपने सोवत जागे । वहै श्याम छबिसों दृगपागे ॥
बालचरित्र किशोरी लीला । सुधा समुद्रसकल सुखशीला ॥
सुमिरि सुमिरि सोई सुखधामा । रटिरटि मरिहैं माधवनामा ॥
विरहा मधुप प्रेमको करई । ज्योंपट पुष्ट रंगगहि धरई ॥
ज्यों घट प्रथम अनल तनु तावै । बहुरि उमहि रस भरि सुखपावै ॥
दोहा-सन्मुख सरसहि शूर जब, रवि रथ बेधत जाय ॥
प्रथम बीज अंकुरनमहि, पुनि फल फरत अघाय ॥
सो०-को दुख सुखहिडेराय, कृष्णप्रेमके पंथ चलि ॥
और न कछू उपाय, उद्धव मीनन नीर बिन ॥
बोली एक सखी सुनि लीजै । अपने काज कहा नहिं कीज ॥
दिनाचारि यहहू सब करिये । जा हरिमिलैं योगहू धरिये ॥

१ अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ।

जटा बनाय भस्म तनु साजैं। मूँदे रहैं नयन बिन आँजैं॥
सिंगी दंड लेहिं मृगछाला। पहिरैं कंठा सेली माला॥
धरिधीरज सन्मुख शर सहिये। भाजे आज उवार न लहिये॥
विरह ज्ञान बिच बिनहीं काजे। मरियतहै यह दुसह दुराजै॥
एकसखी ऐसे कह दीन्हों। उद्धव तुम जु कह्यो सब कीन्हों॥
नयन मूंदिकै ध्यान लगायो। इतउत मनको बहुत चलायो॥
उरझि रह्यो नँदलाल प्रेमवश। नेक न चलत गयो गाढे फँस॥
जोहरि मिलत जानिहू परते। तोले योग शीशपर धरते॥
पहिले देहु तिन्हहिं फिरजाई। जिनपठये तुम इतहि सिखाई॥
लेहिं न वेऊ नान हमारे। देखियत माथे परेउ तुम्हारे॥

दोहा–भूले योगी योग जिहिं, तुमसे कियो बखान॥
जान्यो गयो न पंच मुख, ब्रह्मरंध तजि प्रान॥

सो०–हम उर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योतिसो॥
निपटहि छूछो ज्ञान, उद्धव कहा सुनावहू॥

उद्धव जबते श्याम निहारे। तबते योगी नयन हमारे॥
शिखासीख गुरुजनकी टारी। धरेउ जनेउ लाज उतारी॥
पलक बसन घुंघुट गृह त्यागे। दिशा दिगम्बर मन अनुरागे॥
सगत समाधि रूप टकलाये। भये सिद्ध नहिं डिगत डिगाये॥
ताके बीच विघ्नके कर्ता। पचि पचि रहे मातु पितु भर्ता॥
अब ये और योग नहिं जाने। वही श्याम छबि साधुभुलाने॥
भये कृष्णमय नयन हमारे। नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे॥
हम सों कहत कौनकी बातैं। गयो कौन तजि हम को ह्वातैं॥
मथुरा जाय रजक किन मारेउ। धनुष तोरि किन द्विरद पछारेउ॥
किन मल्लुनं मथि कंस बहायो। उग्रसेन किन बन्दि छुड़ायो॥
को वसुदेव देवकी जाये। तुम किनके पठये ब्रज आये॥
कुंडल मुकुट गुंज उरराजैं। गोकुल यशुदा नंद विराजैं॥

दोहा–को पूरण को अलख गति, को गुण रहित अपार ॥
करत वृथा बकवाद कत, यहि ब्रज नंदकुमार ॥
सो०–जात चरावत धेनु, दिन उठि ग्वालन संगमिलि ॥
मधुर बजावत वेनु, आवत संध्याके समय ॥
जिन उद्धव मथुरा तब देख्यो । ब्रजबसि जन्म सफल करि लेख्यो
लैहौकहा जाय प्रभु तामें । परिहौ जाय राज्य बिपतामें ॥
निरख्यो गोकुल बाल कन्हाई । घरघर माखन खात चुराई ॥
जन्म कर्म गुण गावो नीके । परम मधुर सुखदायक जीके ॥
नन्दराय उत्सव किमि कीन्हों । कैसे दान द्विजनको दीन्हो ॥
कैसे गोपी जन सुनि धाई । कैसे पट भूषण पहिराई ॥
कैसे गोप ग्वाल सब आये । नृत्यत भेष विचित्र बनाये ॥
कैसे दधिकी कीच मचाई । ब्रज सब भई अनन्द बधाई ॥
बाल विनोद कौन विधि कीन्हो । कैसे गोवर्द्धन कर लीन्हो ॥
कैसे दधिको दान चुकायो । शरद रास सुख किन उपजायो ॥
यह रस प्रेम कथा चित लावो । अपनी नीरस कथा बहावो ॥
निगमनेति निर्गुण को ध्यावै । क्यों नहिं प्रगट दरश चितलावै ॥
दोहा–भावतहै जो कृष्णको, योग सो हमसों देखि ॥
उद्धव सब तनु खेहकरि, सुमति होय करिपेखि ॥
सो०–सब अँग करिकै कान, बैठहु मनहिं बटोरिकै ॥
तजहु ज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं ॥
नहीं जटा नहिं भस्मलगावैं । रूँधं श्वास न शृंग बजावैं ॥
नहीं वेद नहिं पढहिं पुराना । शम दम नेम न संयम ध्याना ॥
हम श्री गोकुल चन्द्र अराध्यो । प्रेम योग तप तिन सों साध्यो ॥
मन वच कर्म्म और नहिं जानैं । लोक वेद दुख सुख भ्रममानैं ॥
मानपमान निंद कुल करसी । अग्नि अंचै गुरु जन बच सरसी ॥
हनतितापचहुँ दिशि तनु देखो । पियत धूम उपहास विशेषो ॥

करि सुप्रेम वंदन जगवंदन। कर्म धर्म कामना निकंदन ॥
हम जु समाधि प्रीति बानिकहरि।अंग माधुरी हृदय रही धरि ॥
निरखत रहत निमेष न त्यागत। यह अनुराग योग नित जागत ॥
सगुण रूप रंग रस रागे। भ्रकुटि नैन नैनन लगि लागे ॥
हँसनप्रकाश सुमुख कुंडल द्युति। शशि अरु सूर देखियेउद्युति ॥
मुरली अधर मधुर सुर गाजै। शब्द अनाद स्वई ध्वनि बाजै ॥
दोहा-वरषत रस रुचि मन अँचै, रह्यो परम सचमान ॥
अति अगाध सुख संगको, पद आनंद समान ॥
सो०-मंत्र दियो रतिऐन, भजन ज्ञान हरिको हमैं ॥
गुरूकरैं अब कौन, कौन सुनै फीकोमतो ॥
उद्धव ब्रजकी रीति निहारी। भये विवश निज नेम बिसारी ॥
लाग्यो कहन धन्य ब्रजबाला। जिनके सर्वस मदनगोपाला ॥
धन्य धन्य यह प्रेम तुह्मारो। भक्ति सिखाय मोहिं निस्तारो ॥
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो। धन्य कृष्णपद दृढ ब्रत धारो ॥
मैं जड कीन्हो और उपाई। अब तुम दरश भक्तिनिजपाई ॥
उद्धव आयो योग सिखावन। सीखे प्रेम भक्ति अति पावन ॥
भये मग्न रस प्रेम विशाला। लागे गावन गुणगोपाला ॥
लोटत कबहुँ कुंजमें जाई। कबहूं विटपन भेंटत धाई ॥
कबहूं ब्रज रज शीश चढ़ावैं। कबहूं गोपिन पद शिर नावैं ॥
पुनि पनि कहत धन्य ब्रजनारी। धन्य ग्वाल गैया वनचारी ॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन। धन्य धाम वृंदावन पावन ॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो। को हौं कित आयों सुधि भूल्यो ॥
दोहा-उद्धव मन आनन्द अति, लखिकै प्रेम विलास ॥
आयो हौं दिन दोयको, बीति गये षटमास ॥
सो०-जब उपज्यो उरशोच, वचन कृष्ण के सुरति करि ॥
मनमें भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु वेग ग्वाहिं ॥

तब उपंगसुत रथहि पलान्यो । मथुरा चलवेको अनुरान्यो ॥
उद्धव जात गोपिकनजानी । आई धाय सकल अकुलानी ॥
तब उद्धव सबको शिरनाई । हाथ जोरिकै विनय सुनाई ॥
अब मोहिं देवि अनुग्रह कीजै । जाउँ कृष्णपै आयसु दीजै ॥
मैं सेवक जैसो उनकेरो । त्यों जानिये आपनो चेरो ॥
कह्यो जो मैं कछु तुमसों आई । कृष्ण कहेते करी ढिठाई ॥
सो अपराध क्षमा अब कीजै । ह्वै प्रसन्न यह आशिष दीजै ॥
जासों कृष्ण करैं मोहिं दाया । रहै प्रीति तुम चरण अमाया ॥
करौं बडाई कहा तुम्हारी । ऐसी बिमल न बुद्धि हमारी ॥
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं । जाको अंत वेद नहिं पावैं ॥
कबहुँक सुरतकरत मम रहियो । जानि आपनो जनहित गहियो ॥
सुनि उद्धवकी निर्मल बानी । भई विवश ब्रज तिय सुखमानी ॥

दोहा–क्यों नाहिं उद्धवजी कहो, ऐसे वचन विचारि ॥
अन्तबडे सब भांति तुम, हम निदान जडग्वारि ॥
सो०–होय न शील समान, लघु दीरघ ताते भये ॥
भृगु कीन्हों अपमान, श्रीपति करि भूषण लियो ॥

कहां गरलसे बचन हमारे । कहँ अतिशीतल मृदुलतुम्हारे ॥
तुम हित कह्यो हमैं सुखमानी । तरन उपाय वेद विधि बानी ॥
हम गँवारि उलटी सब बूझी । कही कटुक तुमसों जो सूझी ॥
लोक बेद छोड्यो हम जैसो । ताको फल भुजतें हैं तैसो ॥
कहा करै मन बहु समझावैं । श्याम दरशबिन सुख नहिं पावैं ॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको । कहिये जानकौनविधि तुमको ॥
करिकै कृपा कीजियो सोई । जैसे दरश श्यामको होई ॥
देखतहौ या तनुको दहिबो । समय पाय हरि आगे कहिबो ॥
घोष बसतकी चूक हमारी । मन नहिं धरे लाल गिरिधारी ॥
जानि हमैं अति दीन दुखारी । कराहिं कृपामन गुणहिं बिचारी ॥

---

१ निर्मल । २ नम्रता । ३ विषसे । ४ गरीब ।

आवन अवधि कहीही जोई। धरिहैं सुरति बचनकी सोई॥
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहि। करिहैं बांह गहेकी लाजहि॥
दो०–प्रभु दीननपति दीन हित, यही हमारे आस॥
कबहुँक दर्श दिखायके, हरिहैं लोचन-प्यास॥
सो०–ऐसे कहि ब्रजबाम, भईं विरह सागर मगन॥
उद्धव करि परणाम, आये यशुमति नन्दपै॥
माँगी बिदा जोरिकर दोऊ। तुमसम धन्य और नहिं कोऊ॥
रामकृष्ण करिसुत जिनपाये। बाल भावकरि गोद खिलाये॥
धनि गोकुल धनि गोकुलबासी। किये प्रेमवश जिन अविनाशी॥
कृपाकरी ह्वाहिं कृष्ण पठायो। जाते दरश सबनको पायो॥
अब तुम मोको देहु निदेशू। जाय कृष्णसों कहौं सँदेशू॥
सुनि सप्रीति उद्धव की बाता। नंद बबा अरु यशुमति माता॥
उमग्यो प्रेम नयन जलबाढे। भये जोरिकर आगे ठाढे॥
उर बल श्याम बिरहकी पीरा। कहत सँदेश बहत दृगनीरा॥
उद्धव हरिसों कहियो जाई। यशुदाकी आशीष सुनाई॥
कमलनयन सुंदर सुखदाई। कोटि युगन जीवहु दोउ भाई॥
कहियो बहुरि इती समुझाई। तुमबिन दुखित यशोमति माई॥
इतनी दया मात पै कीजै। एक बार दरशन फिर दीजै॥
दो०–नंद दोहनी भरि दई, कह्यो नयन भरि नीर॥
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलबीर॥
सो०–दई यशोमति माय, मुरली ललित गोपालकी॥
उद्धव दीजो जाय, प्यारीही अति लालकी॥

॥ अथ उद्धवजीकी मथुरागमन लीला॥

उद्धव लै माथे धरलीनी। लखि शुभप्रीति दंडवत कीनी॥
चल्यो योगकी नाव बुडाई। ह्वैगयो आप गोप ब्रज आई॥
जाय कृष्णपद शीश नवायो। प्रभु सादरव्है कंठलगायो॥

कहियो सखा कुशलसों आये। ब्रजमें जाय बहुतदिन लाये ॥
नंदबबा अरु यशुमति माई। कहौ कौनविधि देखे जाई ॥
बसत प्राण मोहींमें जिनके। कैसे दिन बीततहैं तिनके ॥
कहा दशा ब्रजगोपिन केरी। जिनके प्रीति निरंतर मेरी ॥
उद्धव समुझत ब्रजकीबाता। भये प्रेमवश पुलकित गाता ॥
भूल्यो यदुपति नाम बड़ाई। कह्यो सुनौ गोपाल गुसांई ॥
कहौं कहा प्रभु तुह्मैं सुनाई। ब्रजकी रीति कही नहिं जाई ॥
कृपाकरी म्वहिं तहां पठायो। ब्रजबासिनको दरश दिखायो ॥
जादिन गयो तुम्हैं शिरनाई। पहुँच्यो सांझ गोकुलहि जाई ॥
दो०–दूरिहिते लखि रथ ध्वजा, अरु पट पीत रसाल ॥
जानि तुह्मैं आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल ॥
सो०–रथपर मोहिं निहार, रहे ठगेसे थकि सबै ॥
चली दृगनभरिधार[1], रहे मुरछिव्याकुल धरणि ॥
भये बिकल सब आशाटूटे। बिरह घात सुरझे फिर फूटे ॥
जब तुम्हरो पठयो म्वहिजान्यो। लैनँद सदनमाहि सनमान्यो ॥
तुमबिन यशुमति परम दुखारी। बूझी कुशल सराम तुम्हारी ॥
तृषित चातकी ज्यों अकुलानी। कृष्ण कृष्ण लागी जकबानी ॥
बारहि बार यहै पछिताहीं। प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं ॥
बांधे ऊखल तनक दहीको। अब कसकत कसना सोहीको ॥
ब्रज अब शून्य बिना मनमोहन। परम अभागी गई न गोहन ॥
ठाढीरहीं ठगोरी लाई। बिरध बयेस[2] तजिगये कन्हाई ॥
दशरथ प्राणतजे सुतलागी। मैं देखतही रही अभागी ॥
अब जनु ऐसेही मरि जैहौं। बहुरि न श्यामहिं कनियां लैहौं ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता। अतिहिदीन दुःखित बिलखाता ॥
नंदहु सुमिरत तुम गुण ग्रामा। बीती निशा[3] चारहू यामा[4] ॥
दो०–यद्यपि मैं बोधे बहुत, तुम बिन कछु न सुहात ॥

१ आंखोंसे आंशूकीधार । २ वृद्धावस्था । ३ रात्रि । ४ प्रहर ।

तिनकी दशा बिलोकि म्वोहिं, युगसमबीती रात ॥

सो०-नंदयशोदहि पाय, गयो भात वृषभानुपुर ॥
सुनि अब आईं धाय, धाम काम तजि बाम तहँ ॥

मोहिं तुह्मारो निज जन जानी। सन्मान्यो सबही सुख मानी ॥
लखिपट भूषण चिह्न तुम्हारे। भई प्रेमवश सुरत संह्मारे ॥
शिथिल अंग भरि आये नयना। पूंछी कुशल सुगदगदबयना ॥
जब मैं कह्यो सँदेश तुम्हारो। सुनतहि आयो सबन पत्यारो ॥
बीती घरिक धीर उर आन्यो। मेरो कह्यो साँच नहिं मान्यो ॥
दूषण सब कुबिजाको दीन्हों। कछुक परेखो तुमसों कीन्हों ॥
तिनकी बात न जात बखानी। प्रेम पन्थ वे सकल सयानी ॥
वह रसरीति देखि उनकेरी। कटुक कथा लागी म्वहिं फेरी ॥
यद्यपि मैं बहु विधि समुझाई। ग्रंथ युक्ति सब कथा सुनाई ॥
कहिबे में न कछू सक राख्यो। भयो पवन ज्यों भुसमें भाष्यो ॥
ज्ञान पंथ जो श्री मुख बानी। सोसँवै तिनको भई कँहानी ॥
कइइक कही बनाइ अनेका। उनके दृढ व्रत पतिव्रतएका ॥

दो०-गही एकही गहन उन, मेटि वेद बिधि नीति ॥
गोप भेष भजि साँवरे, रही बिश्वभरि जीति ॥

सो०-नहिं सीखैंशिख आन, जो बिधि जाहिसिखावहीं ॥
तुमहु बडे सुजान, उहाँ जाहु तो जानहू ॥

क्षमा करो आयसु जो पाऊं। तौ अपनी सब विपति सुनाऊं ॥
योग कथा कहि अबलन माहीं। होवैइतौ दुःख क्यों नाहीं ॥
मैं निर्गुण गुण एक बखानो। सोऊ पूरो कहि नहि जानो ॥
वे सब उमगे वारिधि ज्योंही। जामें थाह न पाऊं क्योंही ॥
कहौं एक मैं पहरक माहीं। वेकोटिक क्षणमें कहि जाहीं ॥
कौन कौनको उत्तर आवै। सुनत सबै उनहींको भावै ॥

प्रेम प्रीति उनकी लखि बाँकी । धरी रही सब बात यहांकी ॥
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलैं । जैसे हरिण चौकरी भूलैं ॥
वे पारत पटिया मो शीशा । सिखवों काहि योग जगदीशा ॥
वे षटवेत्ता सकल स्वभाऊ । मैं शठ बारह खड़ी पढाऊं ॥
अबलन वचन सुनतही मेरे । भई अग्नि ज्यों घृतके गेरे ॥
बहुत भांति करि मैं सब यांची । एकै अंग न कोऊ कांची ॥

दो०—सगुण प्रेम दृढ उन गह्यो, यथा पपीहा पैद ॥
जानि लेहु प्रभु तुम यहाँ, कहा निरोगहिं बैद ॥

सो०—तिन्हैं निरन्तर ध्यान, श्याम राम अंबुज नयन ॥
लागत फीको ज्ञान, अवलोकत उनको भजन ॥

मैं देख्यों षटमास खोजकर । एकैरीति सबै ब्रज घरघर ॥
ज्यों कुरुखेत दिये वाढत धन । त्यों अधिकात प्रेमनित तुम तन ॥
प्रकट तुह्मारे गुणन्वित दीन्हे । देह गेह अर्पण सब कीन्हे ॥
कोऊ कहत गये गोचारन । कोउ कहगये अघासुर मारन ॥
कोऊ कहत इंद्रजल जाई । गोवर्द्धन करलियो कन्हाई ॥
कोऊ कहत यमुन सुनिकाली । नाथन गये ताहि बनमाली ॥
घरघर दुहत कहतकोउबाला । कोउ कहै बन खेलत नँदलाला ॥
कोऊ कहत कुटिल लंपट हरि । बसे जायरी धौं काके घरि ॥
एक कहत बन बेणु बजावैं । चलौ सुनत यों कहि उठि धावैं ॥
ऐसी लीला प्रकट बखानैं । मेरो कह्यो न कोऊ मानैं ॥
हरि मानों निजमति षट्ज्ञानी । सुनि लीन्ही उनकी मैं बानी ॥
प्रीति रीति लखि तहां डुलान्यो । नाथ तुह्मारी सुरति भुलान्यो ॥

दोहा—तुमसों आवन कहिगयो, बेगहि ब्रजते नाथ ॥
उन लखि उनसों ह्वैलग्यो, गावन उनके साथ ॥

सो०—बीत गये षट् मास, समुझि परी आयो कहां ॥
तब उपज्यो जिय त्रास, भाजि चल्यौ दै आन कहि ॥

१ उद्धवजीके मनमें जो निर्गुण ब्रह्मज्ञानको पक्ष था सो कहते हैं महाराज ब्रह्मज्ञान तो मेरेहीमेंरहा परन्तु मैं वहांसे और ज्ञानी होआया ।

बहुरि कहां मोको सुख वैसो। रसलीला विनोद ब्रज कैसो॥
कहत न बनै देखतहि भावैं। यह सुख बड़ भागी स्वइपावैं॥
बस्यो न पांचो दिन उन माहीं। तासु जन्म जग माहिं वृथाहीं॥
नहिं श्रुति शेष ब्रह्म सुख पायो। जोरस ब्रज गोपिन मिलि गायो॥
निरखत यदपि यहां यह सूरत। तदपि जांय उतही मन पूरत॥
बर्ही[1] मुकुट गुंजकी[2] माला। मुख मुरली ध्वनि वेणु विशाला॥
आगे धेनु रेनु मण्डित तन। तिरछी चितवन चारु हरण मन॥
गोपी ग्वालन सों हरि बोलत। खेलत खात हँसत ब्रज डोलत॥
तब वह सुख समुझत मन भावै। इत यह लखि कछु कहत न आवै॥
तुम्हरी अकथ कथा तुम जान्यो। मैं कह समुझों मूढ अयानो॥
हिय में मोहिं बहुत यह शालै। तुम तौ प्रभु करुणाके आलै[3]॥
होत कठोर कठिन मन काहे। बनत कौन विधि बिनानिबाहे॥

दोहा—निगम कहत बश भक्तके, पूरण सब सुख साज॥
करि सुदृष्टि ब्रजपेखिये, गहोबिरह की लाज॥

सो०—अतिहिदुखिततनुक्षीण, ब्रजबासी तुमबिरहवश॥
तुम तन मन धन लीन, रटत चातकी लौं सबैं॥

कहौं कहा गति प्रभु राधाकी। जैसी विरह व्यथा बाधाकी॥
भूषण बिन अति क्षीण शरीरा। बसन मलीन श्रवत दृग नीरा॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं। रहत बावरी ज्यों घर माहीं॥
कबहुँक कृष्ण कृष्ण रट लावैं। कबहुँक नाम आपनो गावैं॥
बिवदिशि अग्नि काठ कृमि जैसे। सहत विरह दुख दुहुँदिशि तैसे॥
लहत न क्योंहू शीतल ताई। कबहू रहत मौन शिरनाई॥
गृहजन देखि देखि दुख पावैं। नहिं कछु सुनति कोटि समुझावैं॥
सूखी जिमि नलनी[4] बिनपानी। जुगवत यत्न न सखी सयानी॥
तृणके अग्र ओसकण जैसे। आशा अवधि प्राण तनु तैसे॥

१ मोर। २ घुँघची। ३ स्थान। ४ कमलिनी।

अचरजमोहिं बड़ो यह आवै । प्रभ तुमको कैसो यह भावै ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्य्यामी । भक्तन हित तनुधारौ स्वामी ॥
वेगि कृपाकरि दर्शन दीजै । व्रज जन मरत ज्याय सब लीजै ॥

दो०-यह मुरली दै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय ॥
एक बार हित नंदके, दरश दिखावहिं आय ॥

सो०-जिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि ॥
बहुरिन आई धाम, बिडरी कुंजन में फिरत ॥

सुनिकै प्रभु उद्धवके बैना । उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ॥
ब्रजजनप्रीति आय उरशाली । भये विवश जन प्रणपतिपाली ॥
लै उठाय मुरली उर लाई । धरि ब्रजध्यान रहे अरगाई ॥
सहज स्वभाव कृपालुहि ऐसे । होत तुरत जैसनको तैसे ॥
पुनिहा ब्रजकहि छांडि उशासू । पोंछ पीत पट जलसौं आंसू ॥
उद्धव सों यों वचन सुनाये । भले सखा शिषदै ब्रज आये ॥
मनमें यों प्रभु कियो विचारा । ब्रज भक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि सोई । सोवैनहीं आदरत कोई ॥
ताते जो जनके मन भावै । सोई मोहिं करत बनि आवै ॥
भक्ताधीन सो प्रारण हमारे । ब्रजवासी मोको अतिप्यारे ॥
सदा बसत ताते ब्रज माहीं । इन सम मोहि और हितु नाहीं ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणनागर । ब्रजबासी जनके सुखसागर ॥

दो०-मनकरि हरि ब्रजमें रहे, मिलि ब्रजजनमनसाथ ॥
तनकहि देवन काज हित, भये द्वारका नाथ ॥

सो०-सदा बसत ब्रज श्याम, नटवर वपु मुरली धरे ॥
ब्रज जन पूरण काम, कोटि काम लावण्य निधि ॥

बसत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई । ब्रजबासी जनके सुखदाई ॥
कृष्ण प्रेम मूरति ब्रजनारी । कबहूं नहीं कृष्णते न्यारी ॥
नित्य नवल नित वनहि विहारी । ब्रजविलास नित नवल उदारा ॥
नित्य धाम वृन्दावन पावन । नित्य रास रस परम सुहावन ॥

शिवसनकादि शेष ज्यहि ध्यावैं। सुर नर मुनि सब ध्यान लगावैं॥
ब्रज गोपिनकी महत बड़ाई। एक समय ब्रह्मा सब गाई॥
भृगु नारद आदिक जे भक्ता। पूछत भये विनय संयुक्ता॥
तिनसों विधि यहि भाँति बखानो। वेद ऋचा सब ब्रजतिय जानो॥
इन सम सत्य कहौं तुम पाहीं। मो शिव शेष लक्ष्मी, नाहीं॥
नहीं कृष्णते इक क्षण न्यारी। इनते और न कोउ अधिकारी॥
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावैं। प्रीति रीति दृढ़ करि मन लावैं॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई। वेद ऋचा पावै गति सोई॥

दो०—परशे इनकी चरण रज, वृन्दावन महि माहिं॥
सोऊ गतिइनकी लहै, यामें संशय नाहिं॥

सो०—यों विधि कही बुझाय, महिमा ब्रज गोपीनकी॥
व्यास कही सो गाय, पावन बृहतपुराणमें॥

ताते भृगु आदिक नारद मुनि। इन्द्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि॥
अरु हरि भक्त जगतते अहहीं। वृन्दावन रज बांछित रहहीं॥
ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावैं। बडभागी जन तेई पावैं॥
चित धरि सोई ब्रज रस रासा। ब्रज विलास गायो ब्रजदासा॥
कृष्ण चरित ब्रजबन निकुंजको। सार सकल सुख सुकृत पुंजको॥
सार ज्ञान विज्ञान ध्यानको। वेद शास्त्र स्मृति पुराणको॥
सार बहुरि इतिहास भजनको। योग जाप अरु यज्ञ जननको॥
सार अमित मुनि संत मतनको। हरि पद पंकज प्रेम यतनको॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको। परमानन्द रुविमल भक्तिको॥
सार सकल रस रसिकाईको। परम मधुर सुन्दरताईको॥
सार सारको परम सुहायो। ब्रजविलास भक्तन मन भायो॥
सहितस्वभाव प्रीति जो गैहैं। तेजन गति गोपिनकी पैहैं॥

छं०—यह ब्रजविलास हुलास सो, नरनारिसुनिजेगाइहैं॥
सीखै सिखावैं पढैं रुचिकर, प्रेम मन उपजाइहैं॥
धरि भाव भरता कृष्णसों, उरकमलपद चितलाइहैं॥

हरि राधिकापरसादते, व्रज गोपिका गति पाईहैं ॥
पूरण सकल मन काम, सव सुखधामयशनँदलालको ॥
दलन दारिद दोष दुख, भय भव हरण यम कालको ॥
यहजानि गावहिंसुजन गायो, जिनन आनँदपदलह्यो ॥
तिनकी कृपा वल पाय कछु, इकदासव्रजवासी कह्यो ॥
दो०–व्रज विलास व्रजराजको, को कहि पावैं पार ॥
भक्त भाव गावत भगत, भजन प्रभाव विचार ॥
सिगरे दोहा आठसौ, और नवासी आहिं ॥
है इतनेहीं सोरठा, व्रजविलास के माहिं ॥
दश सहस्र षटसौ अधिक, चौपाई विस्तारु ॥
छन्द एक शत षट अधिक, मधुर मनोहर चारु ॥
सबको नुष्टुप छंद करि, दश सहस्र परिमाण ॥
खण्डित होन न पावहीं, लिखियो जानसुजान ॥
विधि निषेध जाने नहीं, कछु व्रजवासी दास ॥
ज्यों जाने त्यों राखि हैं, नंदनँदनकी आस ॥
नाहिं तप तीरथ दान वल, नहीं कर्म्मव्यवहार ॥
व्रजवासीके दासको, व्रजवासी आधार ॥
व्रजवासीगाऊँ सदा, जन्म जन्म करि नेह ॥
मेरे जप तप व्रत यहै, फलदीजै पुनि एह ॥

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल
श्यामकाशी प्रेस
मथुरा.

पं. श्रीधर शिवलाल
ज्ञानसागर प्रेस
वम्वई.

दर्शन शास्त्रोंके अनुसार संग्रह करके भाषा टीका समेत छापाहै यह छोटा ग्रन्थ बडा चमत्कारिकहै मूल्य २॥ आ.

कौतुकरत्नभांडागार अर्थात् बृहत् इंद्रजाल.

इस ग्रंथमें अनेकप्रकारके जादूके खेल, तमाशे, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, भैरव देवी आदिके सिद्ध करनेके अनेक प्रकारके मंत्र जंत्र तथा अनेक रोगोंकी दवाभी दीगईहै मूल्य १। रु. डा. म. ४ आ.

योगवासिष्ठ.

मुमुक्षुवैराग्यप्रकर्ण संस्कृत श्लोक और टीका भाषामें ऐसी सुंदर सुललितहै कि जिस्को विद्वान समझैंगे जिस्में तो अधिकताही क्याहै परंतु सर्व साधारणभी समझके ज्ञानप्राप्ति करैं आप लोग इस अपूर्व ग्रंथके लेनेमें न चकिये किमत जिल्दका रु. २ कागदके जिल्दका रु. १॥ और सम्पूर्ण भाषाटीका छपगयाहै मृ. १६ रु.

दुर्गाचरित्रहिंदीभाषाटीकासहित.

अधिकतामें श्रीमाईके चित्र दियेहै यह छोटीसी पुस्तकके बाचनेमें श्रीमाताके भक्तोंको जो आनंद होगा सो पढनेवालेही जान सकैंगे. कि. २ आ. ट. ६ पै.

श्यामलाल [illegible] श्रीधर शिवलाल
श्याम[illegible]शी प्रेस
[illegible]थुरा.

[illegible] चिकित्सा [illegible] उपाय आदि इसके अमो-
[illegible]ट हो जायगे इसमें १४८ विष-
[illegible] भली भांति विस्तारपूर्वक वर्णन है
[illegible]षा—दूसरा भाग इसमें अनेक प्रकारकी
[illegible]सि लिखी गई है. दाम १ रु ट. ॥ आ.
[illegible]का—सहित यह काव्य अतिरोचक
[illegible]योग्य है मूल्य २ आ.